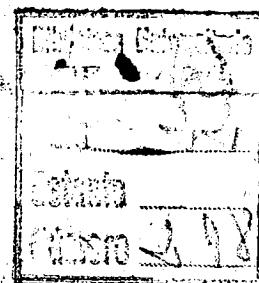


M. F. Pic. & off. amio. Manu



160

0  
1  
2  
3  
4  
5  
6  
7  
8  
9  
10  
11  
12  
13  
14  
15  
16  
17  
18  
19  
20  
21  
22  
23  
24  
25  
26  
27  
28  
29  
30  
31  
32  
33  
34  
35  
36  
37  
38  
39  
40  
41  
42  
43  
44  
45  
46  
47  
48  
49  
50  
51  
52  
53  
54  
55  
56  
57  
58  
59  
60  
61  
62  
63  
64  
65  
66  
67  
68  
69  
70  
71  
72  
73  
74  
75  
76  
77  
78  
79  
80  
81  
82  
83  
84  
85  
86  
87  
88  
89  
90  
91  
92  
93  
94  
95  
96  
97  
98  
99  
100  
101  
102  
103  
104  
105  
106  
107  
108  
109  
110  
111  
112  
113  
114  
115  
116  
117  
118  
119  
120  
121  
122  
123  
124  
125  
126  
127  
128  
129  
130  
131  
132  
133  
134  
135  
136  
137  
138  
139  
140  
141  
142  
143  
144  
145  
146  
147  
148  
149  
150  
151  
152  
153  
154  
155  
156  
157  
158  
159  
160  
161  
162  
163  
164  
165  
166  
167  
168  
169  
170  
171  
172  
173  
174  
175  
176  
177  
178  
179  
180  
181  
182  
183  
184  
185  
186  
187  
188  
189  
190  
191  
192  
193  
194  
195  
196  
197  
198  
199  
200  
201  
202  
203  
204  
205  
206  
207  
208  
209  
210  
211  
212  
213  
214  
215  
216  
217  
218  
219  
220  
221  
222  
223  
224  
225  
226  
227  
228  
229  
230  
231  
232  
233  
234  
235  
236  
237  
238  
239  
240  
241  
242  
243  
244  
245  
246  
247  
248  
249  
250  
251  
252  
253  
254  
255  
256  
257  
258  
259  
260  
261  
262  
263  
264  
265  
266  
267  
268  
269  
270  
271  
272  
273  
274  
275  
276  
277  
278  
279  
280  
281  
282  
283  
284  
285  
286  
287  
288  
289  
290  
291  
292  
293  
294  
295  
296  
297  
298  
299  
300  
301  
302  
303  
304  
305  
306  
307  
308  
309  
310  
311  
312  
313  
314  
315  
316  
317  
318  
319  
320  
321  
322  
323  
324  
325  
326  
327  
328  
329  
330  
331  
332  
333  
334  
335  
336  
337  
338  
339  
340  
341  
342  
343  
344  
345  
346  
347  
348  
349  
350  
351  
352  
353  
354  
355  
356  
357  
358  
359  
360  
361  
362  
363  
364  
365  
366  
367  
368  
369  
370  
371  
372  
373  
374  
375  
376  
377  
378  
379  
380  
381  
382  
383  
384  
385  
386  
387  
388  
389  
390  
391  
392  
393  
394  
395  
396  
397  
398  
399  
400  
401  
402  
403  
404  
405  
406  
407  
408  
409  
410  
411  
412  
413  
414  
415  
416  
417  
418  
419  
420  
421  
422  
423  
424  
425  
426  
427  
428  
429  
430  
431  
432  
433  
434  
435  
436  
437  
438  
439  
440  
441  
442  
443  
444  
445  
446  
447  
448  
449  
450  
451  
452  
453  
454  
455  
456  
457  
458  
459  
460  
461  
462  
463  
464  
465  
466  
467  
468  
469  
470  
471  
472  
473  
474  
475  
476  
477  
478  
479  
480  
481  
482  
483  
484  
485  
486  
487  
488  
489  
490  
491  
492  
493  
494  
495  
496  
497  
498  
499  
500  
501  
502  
503  
504  
505  
506  
507  
508  
509  
510  
511  
512  
513  
514  
515  
516  
517  
518  
519  
520  
521  
522  
523  
524  
525  
526  
527  
528  
529  
530  
531  
532  
533  
534  
535  
536  
537  
538  
539  
540  
541  
542  
543  
544  
545  
546  
547  
548  
549  
550  
551  
552  
553  
554  
555  
556  
557  
558  
559  
550  
551  
552  
553  
554  
555  
556  
557  
558  
559  
560  
561  
562  
563  
564  
565  
566  
567  
568  
569  
560  
561  
562  
563  
564  
565  
566  
567  
568  
569  
570  
571  
572  
573  
574  
575  
576  
577  
578  
579  
580  
581  
582  
583  
584  
585  
586  
587  
588  
589  
590  
591  
592  
593  
594  
595  
596  
597  
598  
599  
590  
591  
592  
593  
594  
595  
596  
597  
598  
599  
600  
601  
602  
603  
604  
605  
606  
607  
608  
609  
600  
601  
602  
603  
604  
605  
606  
607  
608  
609  
610  
611  
612  
613  
614  
615  
616  
617  
618  
619  
610  
611  
612  
613  
614  
615  
616  
617  
618  
619  
620  
621  
622  
623  
624  
625  
626  
627  
628  
629  
620  
621  
622  
623  
624  
625  
626  
627  
628  
629  
630  
631  
632  
633  
634  
635  
636  
637  
638  
639  
630  
631  
632  
633  
634  
635  
636  
637  
638  
639  
640  
641  
642  
643  
644  
645  
646  
647  
648  
649  
640  
641  
642  
643  
644  
645  
646  
647  
648  
649  
650  
651  
652  
653  
654  
655  
656  
657  
658  
659  
650  
651  
652  
653  
654  
655  
656  
657  
658  
659  
660  
661  
662  
663  
664  
665  
666  
667  
668  
669  
660  
661  
662  
663  
664  
665  
666  
667  
668  
669  
670  
671  
672  
673  
674  
675  
676  
677  
678  
679  
670  
671  
672  
673  
674  
675  
676  
677  
678  
679  
680  
681  
682  
683  
684  
685  
686  
687  
688  
689  
680  
681  
682  
683  
684  
685  
686  
687  
688  
689  
690  
691  
692  
693  
694  
695  
696  
697  
698  
699  
690  
691  
692  
693  
694  
695  
696  
697  
698  
699  
700  
701  
702  
703  
704  
705  
706  
707  
708  
709  
700  
701  
702  
703  
704  
705  
706  
707  
708  
709  
710  
711  
712  
713  
714  
715  
716  
717  
718  
719  
710  
711  
712  
713  
714  
715  
716  
717  
718  
719  
720  
721  
722  
723  
724  
725  
726  
727  
728  
729  
720  
721  
722  
723  
724  
725  
726  
727  
728  
729  
730  
731  
732  
733  
734  
735  
736  
737  
738  
739  
730  
731  
732  
733  
734  
735  
736  
737  
738  
739  
740  
741  
742  
743  
744  
745  
746  
747  
748  
749  
740  
741  
742  
743  
744  
745  
746  
747  
748  
749  
750  
751  
752  
753  
754  
755  
756  
757  
758  
759  
750  
751  
752  
753  
754  
755  
756  
757  
758  
759  
760  
761  
762  
763  
764  
765  
766  
767  
768  
769  
760  
761  
762  
763  
764  
765  
766  
767  
768  
769  
770  
771  
772  
773  
774  
775  
776  
777  
778  
779  
770  
771  
772  
773  
774  
775  
776  
777  
778  
779  
780  
781  
782  
783  
784  
785  
786  
787  
788  
789  
780  
781  
782  
783  
784  
785  
786  
787  
788  
789  
790  
791  
792  
793  
794  
795  
796  
797  
798  
799  
790  
791  
792  
793  
794  
795  
796  
797  
798  
799  
800  
801  
802  
803  
804  
805  
806  
807  
808  
809  
800  
801  
802  
803  
804  
805  
806  
807  
808  
809  
810  
811  
812  
813  
814  
815  
816  
817  
818  
819  
810  
811  
812  
813  
814  
815  
816  
817  
818  
819  
820  
821  
822  
823  
824  
825  
826  
827  
828  
829  
820  
821  
822  
823  
824  
825  
826  
827  
828  
829  
830  
831  
832  
833  
834  
835  
836  
837  
838  
839  
830  
831  
832  
833  
834  
835  
836  
837  
838  
839  
840  
841  
842  
843  
844  
845  
846  
847  
848  
849  
840  
841  
842  
843  
844  
845  
846  
847  
848  
849  
850  
851  
852  
853  
854  
855  
856  
857  
858  
859  
850  
851  
852  
853  
854  
855  
856  
857  
858  
859  
860  
861  
862  
863  
864  
865  
866  
867  
868  
869  
860  
861  
862  
863  
864  
865  
866  
867  
868  
869  
870  
871  
872  
873  
874  
875  
876  
877  
878  
879  
870  
871  
872  
873  
874  
875  
876  
877  
878  
879  
880  
881  
882  
883  
884  
885  
886  
887  
888  
889  
880  
881  
882  
883  
884  
885  
886  
887  
888  
889  
890  
891  
892  
893  
894  
895  
896  
897  
898  
899  
890  
891  
892  
893  
894  
895  
896  
897  
898  
899  
900  
901  
902  
903  
904  
905  
906  
907  
908  
909  
900  
901  
902  
903  
904  
905  
906  
907  
908  
909  
910  
911  
912  
913  
914  
915  
916  
917  
918  
919  
910  
911  
912  
913  
914  
915  
916  
917  
918  
919  
920  
921  
922  
923  
924  
925  
926  
927  
928  
929  
920  
921  
922  
923  
924  
925  
926  
927  
928  
929  
930  
931  
932  
933  
934  
935  
936  
937  
938  
939  
930  
931  
932  
933  
934  
935  
936  
937  
938  
939  
940  
941  
942  
943  
944  
945  
946  
947  
948  
949  
940  
941  
942  
943  
944  
945  
946  
947  
948  
949  
950  
951  
952  
953  
954  
955  
956  
957  
958  
959  
950  
951  
952  
953  
954  
955  
956  
957  
958  
959  
960  
961  
962  
963  
964  
965  
966  
967  
968  
969  
960  
961  
962  
963  
964  
965  
966  
967  
968  
969  
970  
971  
972  
973  
974  
975  
976  
977  
978  
979  
970  
971  
972  
973  
974  
975  
976  
977  
978  
979  
980  
981  
982  
983  
984  
985  
986  
987  
988  
989  
980  
981  
982  
983  
984  
985  
986  
987  
988  
989  
990  
991  
992  
993  
994  
995  
996  
997  
998  
999  
990  
991  
992  
993  
994  
995  
996  
997  
998  
999  
1000

125

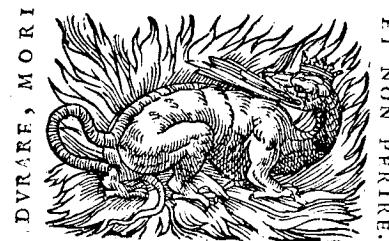
del Colegio de la Comp<sup>a</sup> de Jez<sup>s</sup> de Granada. P.E.  
IN M. T. Q. 9590

CICERONIS  
DE OFFICIIS  
LIBROS TRES,

Aldi Mannuccij, Pauli F. Aldi N.  
Commentarius.

Item in { Dialogos de { Senectute.  
Paradoxa. Amicitia.  
Somnium Scip. ex VI. de Republ.

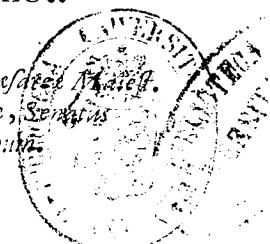
AD ILL. ET EXCEL. VESPASIANVM  
GONZAGAM Columnam Ducem Sablonetæ, &c.



L V G D V N I,  
Apud Carolum Pesnot.

M. D. LXXXII.

Cum Privilegiis Summi Pontificis, Casdece Materij.  
Regis Gallorum, Regis Hispanie, Senator  
Veneti, aliorumq; Principum.



318. D

Aldus Mannuccius hunc suum  
Commentarium in tres libros Cic.  
de Officijs, &c. excludendum, ven-  
dendumq; permisit Carolo Pesnot,  
eique priuilegia, quæ de ea editione  
à variis Principibus lata sunt, vtenda,  
fruenda dedit in Gallia, Germania ac  
Hispania.



MO  
ILL ET EXCELL D.  
VESPASIANO  
GONZAGÆ CO-  
LV MNÆ DV CI  
Sablonetæ, &c.



V M uniuersa philosophia tres  
in partes distribuatur, vnam, quæ  
definiendi, diuidendi, & ratioci-  
nandi præcepta tradit: alteram  
quæ de moribus, vitæq; cōmuniſ officiis diu-  
dicat: postremam, quæ rerum naturæ vim,  
effectus, causasq; inquirit: s̄aþe s̄aþius mecum  
ipſe reputare solitus sum, cū præteritas omnes  
animo memorias euolucrem, Illustriſime, do-  
ctiſimeq; V ESPASIANE GONZAGA,  
ecquis unquam ex aliqua memoria vir ex-  
stiterit, qui pariter differendi acumine, mo-  
ralibus vitæ documentis, physicarum rerum  
cognitione germani philosophi nomen iurè ſi-  
bi vindicarit: tum verò ad hanc sapientiam  
tantum adiunxerit eloquentia, ut ſummus is

quoque, ac perfectus orator non immerito vocari posset. Cumq; ipse Graecos homines sapiētes cunctarū artium, scientiarumq; magistros (pene autores dixerim) memoria recensuerim, affirmare audeo, neminem ex tot, tantisq; in omni tum intelligēdi, tum eloquendi, facultate viris, me reperire potuisse, qui idē & de unaquaque philosophiae parte, quod praecipuum est, acutē sapienter, & verē disputasset, necnō germanā illius eloquentiæ laude in omni dicendi genere floruisse. Sūmam in Socrate sapiētiā, Apollinis quondam oraculo cōtestatā, qui philosophorū princeps, ac velut fons quidam fuit: à quo tam multæ, tamq; inter se dissentientes in philosophandi ratione familiæ processerunt: summam, inquam, in eo sapientiam fuisse intelligimus: excellentem, perfectamq; in eius discipulo Platone, cui cognomen Diuō indidit antiquitas, necnon Aristotele Platonis auditore, Peripateticorum principe: non vulgarem in Xenophane, Carneade, Chrysippo, Theophrasto, ne tam multos alios memorem, plerosque nobiles quidem philosophos, at cum principibus minimè

minimè conferendos. Ex oratoribus in dicendo qui familiam ducant, scimus Isocratem, Lysiam, Demosthenem, Aeschinem, Hyperidem: ex historicis Thucydidem, Herodotum, Xenophonem, Theopompum, omnes equidem in eo, quod profesi sunt, artis, ac disciplinæ genere præstantes: sed, si quæras, in quoniam ex iis vera sapientiæ, perfectæq; & absolutæ eloquentiæ coniuncta laus emtuerit, profecto, qui summus fuerit philosophus, idemq; perfectus orator, inuenias ferē neminem. Nam in Platone quidem utrumque, summam scilicet sapientiā, absolutamq; eloquentiam agnoscī qui dicunt, ii, si ita ut sentiunt loquuntur, se, grandiloquus qui sit, quiq; à vulgari consuetudine remotis, partim etiam poeticis tum vocabulis, tum dicendi formis utatur, quique interdum in dicendo ῥηφόλητος θύντω, quod in Socratis persona de seipso fatetur Plato: hunc, inquam, se verē eloquentem falsò existimare satis demonstrant. Neque ego propterea summo illi viro eloquentiam adimo: οὐχ δύτω μείνομαι: sed absolutam illam, in qua nihil culpandum,

et obelo notandum sit, minimè tribuo. valeat, qui Iouem ipsum, si Cræcè ei loquendum foret, ita locuturum putabant, ut est Plato locutus: quasi verò ex tot oratorum numero nemo sese Ioui obtulisset, qui Platonem sermonis puritate, et elegantiā, verborūmque, ac sententiārū lepore anteiret. quod enim ad eius discipulum Aristotelem attinet, facile mihi ipsos assensuros scio, minimè illū ut sapientia, sic quoq; eloquētia cum magistro cōparandū. Theophrastum diuinitate loquendi nomen inuenisse, noster inquit Cicero, cùm antea Tytamus appellaretur: suauēmque, et dulcē in dicēdo scimus fuisse: verūm, an idem oratoris officiū, quod est de unaquaque re prudenter, ornateq; dicēdi, si ipsi plura, diuersāq; scribendi argumēta proposita essent, implere potuisset, minimè mihi liquere dico, neque id cuiquam cōstare, qui nihil aliud tanti viri aut legerit, aut acceperit, præter ea, quæ supersunt, puto. De ceteris, ne Te pluribus morer, idem à me dictū volo. quod nemini videam Cræcorum adhuc contigisse, (Ciceronis verbis utar) ut idem utroque in genere laboraret, sequente  
turque

turq; illud forense dicendi, et hoc quietum disputandi genus. Transeo nunc ad Latinos, quorum mihi sese primus offert vir ille doctissimus vndecimque Varro. quo nemo vnumquam doctior (aliorum ut testimonio, sic verbis in eius laude libenter utor) ne apud Cræcos quidem, nedum apud Latinos vixit: ut tamen is, quemadmodum ait Fabius, plus fuerit scientiæ collatus, quàm eloquentiæ. Ab hoc cùm discesseris, vix unum aut alterum inuenias, qui Ciceroni doctrina sit exæquandus. Is enim non solum dialecticis, rhetorics, philosophiæ uniuersæ, hoc est, physicæ atque ethicæ: verūm et mathematicis disciplinis: neque his solum, verūm et iuristum ciuilis, tum pontificij prudentie luculentā nauavit operā. Quid? nonne militarem quoque disciplinā, nequid ei de esset, tantopere excusat, ut paullò fortasse magis apud Diodorum, Philonem, Posidonium, Colonem, reliquosq; præceptores suos in schola profecerit, quàm in castris Pompej, cuius in exercitu sociali bello tirocinium militiae fecisse eum accepimus? ut idē summus philosophus, orator disertissimus

Romuli nepotum quot sunt, sicuti ille cecinit,  
quotq; fuerunt, quotq; post aliis erūt in annis,  
optimus senator, strenuus miles, egregie fortis,  
& sapiens imperator, qui res triumpho di-  
gnissimas in provincia gesserit, haud iniuria  
nuncupari possit. Is mihi unus ex omnibus,  
quos in vita legerim doctrina præstatae, cùm  
minime vulgari sapientia perfecta eloquentia  
coniunxiss, latiniisque Romani terminos elo-  
qui, quām alij fines imperij, protulisse vide-  
tur. Hic igitur patriæ, non urbis modo, verūm  
etiam linguae, Pater salutandus, aliove au-  
gustiori, atque honestiori nomine, si modo ul-  
lum reperiatur honestius, nobis iure copellan-  
dus est. Hic nobis summas opes, & ornamen-  
ta Latini sermonis labore summo, vigiliis-  
que, & lucubrationibus peperit suis: hic mā-  
suetiores musas antea sub Romano caelo non  
mis transmarino habitu, Græco inquam, con-  
spectas, cognitisque, peregrino illo detracto,  
patrioq; Romanae urbis habitu indutas, com-  
psit, ornauit, iisq; artis coloribus, pigmentisq;  
cohonestauit, ut hoc opus ex omnibus omnium  
ingeniorū operibus, ac monumentis immortaliter  
laude

9

laude dignissimū fateri cogamur: cuius ea glo-  
ria, atque is splendor est, ut ei nullius futuraru  
atatu operis claritudo tenebras obducere vilas  
posse videatur. atque id ipsum longè admirabilius  
accidet cogitanci quæ ipse cū in toga  
quaestor, & dilis, prætor, consul, tum in armis,  
reliquoq; omni reip. munere singulari virtute  
gesserit, simulq; id, quod ab eodem accepimus,  
ipsum plura, & quidem subsecuuis temporibus,  
quām omnino ex Latinis quemquā, conscrip-  
psisse. Quid enim ille non mādauit litteris? De  
Rhetorica arte quām multa, item de Phi-  
losophia, cùm quorū tum nō dīcūt. ut neq; Dia-  
lecticā prætermisserit, quippe qui partē illam,  
quæ loca argumētorū suppeditat, quā Græci  
tomiq; vocat, eruditè, & copinse nobis descri-  
ptā reliquerit. Orationes verò in omni dicēdi  
genere tā multas fecit, ut quotquot hodie su-  
persunt, quæ nobis satis multæ videtur, sextā  
vix partē absoluat earū, quas ab ipso vel ha-  
bitas, vel scriptas esse, ex eiusdē verbis in Ora-  
tore didicimus. Nā de tot eius epistolis, quarū  
volum. omnī manib. quotidie terūt, nihil  
dicā, nisi ipsū in hoc scrib. genere lōgē post se

*Græcos, Latinosque omnes reliquisse. Idemq;  
ut iuris consultissimum fateare, quām diser-  
tē, quām prudenter disputat de legum origi-  
ne, deq; legibus xy. Tabularum, in iis libris,  
quos de Legibus inscriptos longè plures edidit  
iis, qui hodieq; à nobis leguntur. Quid ait  
ne à poesi quidem abhorruit. testantur id eius  
poemata, quæ tametsi temporum iniuria vel  
penitus, vel certè maxima ex parte perierūt  
de nomine saltem nota sunt, ut Aratus ab  
eo Latino carmine redditus, Pontius Clau-  
cuss tetrametro versu ab adolescente conditus,  
Marius Poema de consulatu, tres libri de  
temporibus, & alia. Quo in genere scriben-  
di, quamvis is, ex iis, qui post se fuerunt,  
multis impar videatur, ante se tamen omnes  
eum poetas sine controversia viciisse intelligi-  
mus. Ac ne ipsum vnius linguae finibus coer-  
cuisse se, atque ex una laudem quæsiſſe pu-  
temus, non ignoras cōmentarium ab eo Græ-  
cè conscriptum de rebus à se in consulatu ge-  
stis, quo Posidonius non solum non excitatus  
ad scribendum est de rebus iisdem, sed etiam  
planè perterritus. i, nunc, & grande cū Cicerone  
conferre*

conferre Græcorū aliquem, vel Latinorum:  
aut dico cum nonnullis, à Cicerone merā e-  
loquētiam, nihil præterea aliud, addisci pos-  
se. Ego verò, quod ad mores attinet, & vitæ  
cōunis officia, me ex hac vna de Officiis di-  
spiratione, quā ad Te nouis auctam, atq; il-  
lustratā cōmentariis mittere decreui, l'ogè plu-  
ra didicisse scio, sapientissime Vespasiane,  
quām ex multis multorū philosophorū dispu-  
tationibus, cōmentariisq; antehac vñquā didi-  
cerim. Nolo autem nunc actū agere. cūm e-  
nim hos libros quām multis, verisq; laudibus,  
quamq; elegāter alijs Lectoribus cōmedarint,  
non ignorē. superuacaneā iudicij mei laudem  
fore omnem puto. tātum illud adiiciā, que tri-  
bus his de Officijs libris à Cicerone docentur,  
paucissimis immutatis, quæ à nostræ Religio-  
nis præceptis planè abhorret, nihil magis in-  
stitutis Christianæ fidei consentaneum, nihil  
Christiano homini utilius ex Ethnicæ philo-  
sophiae fontib. hauriri posse me iudicare. eosq;  
libros tāquam officij nostri monitores nunquā  
de manibus deponendos, immo verò in omni  
nostra tum publica tum etiā priuata actione

consiliarios esse nobis adiungendos. Atque ego  
cùm hoc tēpore nouis eos excudarem cōmen-  
tariis illustratos: quos tum ex aliorū, quae non  
ita facile comparari, aut haberi ab omnibus  
possent, tum ex meis lucubrationibus cōpositos  
in vnum corpus redigi, ut, quae antea longè  
dissita, aut ab aliis explicata pluribus, seor-  
simq; diuersis voluminibus, non sine aliqua  
tēporis iactura, cognosci poterant, pleraq; hoc  
uno volumine studiosus Lector haberet: cùm  
inquā hoc tēpore sub prælo liber hic esset, mi-  
hiq; saepius eadem Ciceronis verba legēti sese  
Officij nomen non semel offerret, de meo ipsius  
officio cogitare incepi: quantū ego principibus  
nobilitate, & fortuna viris, à quibus docti ho-  
mines magni, ut par est, fierent, quantum iis,  
qui tum nobilitate, tum etiā doctrina præsta-  
rent, quantū denique iis, qui cum ultraquere  
excellerent, tum meipsum quoque incredibili  
quadā benevolentia cōplete p̄f se ferrent,  
qualē tē esse cognoui, deuinctus forē. E quidē,  
nobilissime Vespasiane, (quod tu nō ignoras)  
ea demū vera nobilitas est, quae nūquā abest  
ab humanitate, nūquam à modestia sciūcta  
est,

est: comites ubique habet affabilitatē, atque  
urbanitatē. Hāc in te esse uno omnes ore præ-  
dicat, qui nobilitatē illā generis, à parentibus  
tuis cum vita simul acceptā, ex illustr. inter  
Italicas omnes editus familia, multò maiore  
tuis moribus, multoq; clariorem reddideris. &  
cùm ceteras animi tui virtutes summis laudi-  
bus extollant homines minimè inepti, quiq;  
numquā mentiri norunt: nihilō sanè minores  
eruditioni tribuūt: quā in te minimè vulgare,  
sed eximiam, & rerum maximè reconditarū  
esse dictitant. Quid plura? in te omnia dicunt  
esse, quae quidē in mortalem bona cadere pos-  
sunt: te nobilissimo genere ortum, summorum  
Principum amicitiis, atque affinitatibus, non  
exiguis opibus, amplissimis clientelis, incredi-  
bili omnium gratia florere: simul optimis qui-  
busque tū corporis, tum animi dotib. ornatis.  
si quemquā denique, te ipsum sapientē, vereq;  
beatū appellari posse existimat. Quid igitur  
erit caussæ, cur ego, me tibi in clientelam, ac  
fidem tradere nolim? &, cùm optimam mei  
partem optimo Principi dicandam censeam,  
quaq; quidem absque ulla cōtrouersia in nobis

est animus, cuius etiā pars est vis illa, quae ad inueniendū maximè valet, ingeniu, inquā: quid satius, quam ut mei, licet nō admodum acutis, atque feracis ingenij monumenta, quae possum hoc tēpore, in tuam fidem cōmendem, ac sub tuo felicissimo nomine producā in lumen? Quod cūm mīhi iam agere decretū fit, te precor, atque obtestor, Illustr. Vespaſiane, si te patronum ego meum optauī, si meum omne studium in te contuli, ne deficias obsequium, atque obſeruantia in te meā, meiq; ipsius patrocinii ne dedigneris: atque hos meos in Ciceronis de Officijs disputationē commentarios, à me tibi, summo philoſopho, & aquifimo Principi, iure nūcupatos, hilari fronte ſufcipias, iisq; tua humanitate, ac ſapiētia patrocinere. Quo ex munere (ſi modō munus dicēdū id erit, quod dum alicuius auctoritate cōmendamus, beneficium potius accipimus, quam damus) noli ſpectare quantū velim, ſed potius quid ego poſſim praefare. Vale etiam atque etiam. Venetiis, Kal. Mai. 1581.

Illss. D. T. Ald. Mannuccius.

IN M. T. CICERONIS  
DE OFFICIIS  
LIBROS TRES

Aldi Mannuccij, Pauli F. Aldi N.  
Commentarius.

ARGUMENTVM LIB. I.

**V**ERSA rep. ciuili bello Cæſaris, & Pompeij, rebus omnibus ex unius arbitrio, nutiūq; pēdētibus, cūm leges, & iudicia iacerent, non in curia, non in foro locus eſſet: retulit animū Cicero, quaſi medicinam doloris, & ſolatium aduerſa fortune querens, ad intermisſa philoſophia ſtudia: nec vero tantum, vt unus, ipſe ſibi legendo prodeſſet: verū etiam, vt Latinorum hominum ingenia quantum in ipſo eſſet, ad earum artium, quarum plerique rudes, ignariq; adhuc erant, ſcribendo excitaret. Explicata igitur, & magna iam ex parte Latinis litteris illuſtrata philoſophia, contulit ſe ad pulcherrimam omniumq; nobilitatim de Officijs commentationem: viptote qua nec ad commodum humanae vite, nec ad ornamentum quaſto magis villa pertineat. Que vero ſcribendi potiſſimum cauſa fuit, vt abſenti filio, & Athenis liberales disciplinas coleti, prodeſſet, ab ea initium ſumit. Et, quoniam duas personas ſuinet, patris unam, preceptoris alteram; orditur à paterno iure, hortatūq; filium, atque admonet, vt, quamquam philoſopho clarissimo, eiſuq; etatis Peripateticorum



principi, Cratippo operam det: nec dubitandum sit, quin, eo doctore, annuo præsertim iam studio, tantum profecerit ut iis preceptis, atque institutis, quibus ad sapientiam vita dirigitur, non modo nō egeat, verum etiam abundet: sua tamen Latina scripta non aspernetur: idq. non tamen propter doctrinam, à Peripateticorum preceptis interdum, sed tamen haud ita multum dissidentem, quam ut, dum Grecas tractat artes, Latinæ simul facultatem augeat orationis. Atque hoc loco, ipse sibi videlicet egregie notus, in suas laudes dreditur: parum modestè, dicet aliquis ita, si cum aliis loqueretur: sed, quia cum filio, excusationem laudatio, vera præsertim, habere iustam videtur. certè enim hoc neque negabit quisquam, neque negare iure possit, viciisse eum in oratoria laude Latinos omnes, Grecos adequasse. Grecis quidem ipsis in eo etiam preffit, quod illi uno tantum industria genere floruerant, ut Plato, Aristoteles, Theophrastus tradendis philosophia preceptis, Demosthenes, Aeschines, Isocrates oratoria facultate: ipse autem cum in forensi genere dicendi ita versatus est, ut omnium concessu palam tulerit: tum etiam, oppressa rep. otium in communi calamitate natus, ne prorsus nihil ageret, suis in villulis, omissa planè rerum urbanarum cura, scripsit egregios de philosophia libros: quorum alij nunc exstant, terunturq. manibus eorum, quibus & sapere, & bene dicere simul cura est: alios vel temporum, vel hominum iniuria consumpsit. Hoc igitur, quod ad Grecos attinet, nam Latinos quin utroque pariter genere, & agendis causis, & preceptis de philosophia tradendis, longo post se omnes intervallo reliquerit, esse neminem arbitror, qui negare andeat, aut possit. Hac absoluta parte, causas exponit, quibus hoc potissimum argumen-

argumentum delegerit. eæ due sunt, una, quod adolescentem iis maximè deceat præceptis erudiri, præsertim à patre, quibus instructus, in reliqua aetate decus, ac turpitudinem vicerit, laudem, ac dignitatem sequatur: altera, quod sibi maximis in rebus, causisq. reip. versato, summis magistratibus, & honoribus perfuncto, nulla magis questio, quam quæ ad inuestigandam officij notitiam pertinet, conuenire videbatur. si quidem hac notitia nihil esse fructuosum, aut præstans, ex eo constet, quod nulla prorsus, quæ officio vacet, vita pars est: ut, si quis officium ignoret, is nec amicitiam, nec villam plane virtutē colere possit. Territo loco aggreditur ad id, quod ei propositum est, ut de officio dispetat: & eo quidem ordine narrationem instuit, ut nihil illustrius, nihil commodius, nihil omnino ad intelligentiam aptius esse videatur. Quod quisque velit, sentiar: liberum est enim: ego ne ipsius quidem Aristotelis ordinem, quem seruauit in Ethicis, cum hoc Ciceronis ordine contulerim: aut, si contulerim, nō prætulerim certe. Hic quatuor initio virtutes ponuntur, Prudentia, Iustitia, Fortitudo, Temperantia. ex his deinde, tamquam ex quatuor fontibus, honestum, & ex honesto officium deducitur, ac derinatur. Quid eleganter? quid etiam huicse doctrinae cupido lectori incundius? Ipsas vero virtutes ita ornata singulas, ita suis quasi coloribus pingit, atque illustrat, non modo ut formam cuiusque, ac speciem, sed vim etiam, atque utilitatem separatim liceat intueri. Neque hac diligentia contentus, adiuuat doctrinam exemplis. quæ, quis est, qui non cum voluptate legat, sumpta præsertim à claris viris, aut à notis gentibus? Hoc in genere, si necessarium est, parcus, & siccus Aristoteles: si non est, granis, & magnificus, qui torus

bareat in rebus ipsis, reliqua tāquam inania contemnat. sed tamen varietatem interdum aliquam, ad vietandam satietatem, subtilior quoque doctrina desiderat: & eo magis, quod obscuriore sua natura rem illustrari sāpe videmus exemplo. quod quia prater ceteros unus animaduertisse, ac nouisse Cicero videtur, propterea non vnum, aut alterum amatorem habet, sed omnibus ferè, qui elegantiore sunt ingenio, in delicys est: omnium sēnu excipitur, omnibus in otio pericundus, nemini ne in negotio quidem grauis, aut molestus est. Hanc disputationem excipit illa dubitatio, duabus propositis honestis, utrum sit anteponendū. de quo ita statuitur: si honestum illud, quod ad omnes, aut ad multos pertinet, cum eo concurrat, quod ad vnum, aut ad paucos: non esse dubitandum, quin communis honesti maior habenda ratio sit, quam priuata: quod si communia plura sint, in ipsa communitate cautionem quādam requiri, & gradus obseruari quosdam officiorum oportere: ne, si parta putentur, peccetur in delectu, & honestum illud commune, alteri communi honesto iniuria antelatum, honestum esse desinat, & quod per se laudabile est, ex comparatione vitiosum, ac turpe videatur, nam, ut inter communies, priuatāq. res, euenit sāpe, ut honesta duo concurrant: sic in ipsa communitate potest honestorum duorum exoriri eadem illa contentio. Sed, si cogitabitur, primam à nobis caritatem, benevolentiamque diis immortalibus, alteram patriæ, tertiam parentibus, gradatim deinde reliquis deberi: erroris occasio penitus auferetur omnis, licebit enim perficere, qua cuiusque dignitas officij sit, & qui cuique locus in ipsa etiā communitate debeatur. Atque hoc libro primo, distincta partibus, exornata verbis, ancta, & amplificata sententijs, Cicero p̄sequitur.

## ΠΡΟΛΕΓΟΜΕΝΑ.



ILITARIS industria primas partes, alteras litterarum scientia Romæ tulit. armorum studiū, vt alia ferè ex alijs bella oriebantur, aut numquam, aut raro admodum intermissum, tanto in honore fuit, quanto decuit esse illam artem, cuius manere ceteræ coluntur artes, & quæ nisi sit, reliquæ, quæ sunt, diutius esse non possint. Nec sua litteris adiumenta defuerūt, cùm enim post Punica bella, sublato iam hostili metu, pax, & otium ad elegantiam doctrinarum, & ad mitiora studia ciuium animos conuertisset, extitit præclarus ille mos, vt adolescentes erudiendi gratia Athenas mitterentur: quemadmodum hodie Patarium, Bononiām aliōve confluere multos videmus, vt mox, pulcherrimarum artium scientia ornati, atque instructi, ad suos redeant, sibique, ac familia rem, decūsq. parent. Hæc igitur Ciceroni præter ceteros mens, cupiditāsque fuit, vt Marcum filium studijs philosophiæ, sine quibus eloquentiam esse nullam, aut certè debilem, aut mancam intelligebat, summis doctoribus erudiendum traderet. itaque misit eum Athenas paullo ante bellum Hispaniense, quod inter Cæarem, & Pompeij liberos gestum est. nam civilis belli principijs, cùm in Pharsalia duce Pompeio Magno pugnatum est, non interfuisse tantum Ciceronem filium, sed turmis etiā equitum

præfuisse, facile est ex ijs verbis intelligere lib. ii.  
Off. Tūa ætas incidit in id bellum , cuius altera pars sceleris nimium habuit , altera felicitatis pa-  
rum. quō tamen in bello , cūm te Pompeius alē  
alteri præfecisset , magnam laudem & à summo  
viro , & ab exercitu consequebare , equitando , ia-  
culando , omnia militari labore tolerando. Iuisse  
autem Athenas Ciceronem adolescentem paulò  
antè , quām Cæsar contra Pompeij liberos in  
Hispaniam proficisceretur ; satis illa ipsa prima  
verba declarant lib. i. Annum iam audientem  
Cratippum. Antium enim spatiū intercedit ab  
initio Hispaniensis belli ad illud tempus , quo Ci-  
cero hos Officiorum libros cœpit scribere. cœ-  
pit enim statim post Cæsaris necem. nam , vbi de  
Iniustitia loquitur , Declarauit , inquit , id modò  
temeritas C. Cæsaris , qui omnia iura diuina , &  
humana peruerit , propter eum , quem sibi ipse  
opinionis errore finxerat , principatum. Accedūt  
epistolarum ad Att. testimonia : quæ quia sunt in  
promptu , omnibusque patent , omittantur. Misso  
igitur Athenas filio , dabat operam scribendis de  
philosophia libris , abiecta prorsus & senatorij  
muneris , & forensium cauſarum cura. Interim ,  
orta ciuium nobilissimorum coniuratione , in  
Pompeij curia Cæsar est interfactus : & facta sunt ,  
M. Antonio consule senatum habente , S. C. duo ,  
vnū in sententiam Ciceronis , vt omnis veterū  
discordiarum memoria , pacis inter ciues constitu-  
endæ gratia , oblituione sempiterna deleteret : al-  
terum , ipso referente Antonio , vt Dictatoris no-  
men , quod s̄a pe iustum fuerat , ob recentem per-  
pet

petuæ dictature memoriam funditus è rep. tolle-  
retur. mutata publicarum rerum forma videba-  
tur , sic , vt in spem libertatis antiquæ minimè du-  
biā erigerentur animi ciuium bene dērap. sen-  
tentium. sed eam breui spem eripuit Antonij cō-  
fusilis concordiae publicæ semper infensa , dissimu-  
lata paucis diebus improbitas. nam , cūm se in illo  
S. C. patronum libertatis , potentia verò , singula-  
ris , ad quam , recenti C. Cæsaris exemplo ; tacitè  
viam affectabat , aduersarium acerrimum profes-  
sus iam esset : postea , orationis in funere Cæsaris  
habendæ munere suscepto , commemoratis eius  
rebus gestis , maximisq. erga populum Romanum  
meritis , veste demum C. Cæsaris , multis gladio-  
rum ictibus , perfossa ; ad commouendam mife-  
rationem , explicata , in eum furentem populum  
impulit , vt ad ædes coniuratorum per vniuersam  
vrbem cum facibus , telisq. statim discurreret. ita ,  
rerum omnium tamquam orbe répentè conuer-  
fo , M. Antonius , & reliqui Cæsarianarum partiū  
duces , in vrbe dominabantur , ita contemptis le-  
gibus , ac iudicijs , vt , sublato tyranno , tyrannidis  
tamen omnia signa cernerentur. Brutus , & Caſ-  
tius , quiq. cum eis præclarum illud facinus con-  
sciuerant , concitati populi metu , ex vrbe profu-  
gerunt : boni ciues in senatum venire , & senten-  
tiā prō rep. dicere , magna militum manu ipsam  
curiam , iussu Antonij consulī , obſidente , non au-  
debāt. Tum Cicero , desperata libertate , primū  
in Græciam ad filium nauigare cœpit : deinde , ex  
medio cursu ab ipsa rep. reuocatus : poſtremo ,  
rursus amissa communis concordiae spe , totus ad

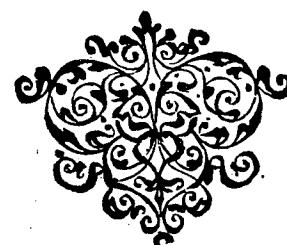
litteras conuersus, libros Officiorum composuit, ita sanè diligenter: vt ne inter Græcos quidē præstantius quidquam, aut moribus hominum conformandis accommodatus esse videatur. Quid autem acciderit, vt, mutata sententia, Cicero in vrbe redierit, ipso narrante ostendam. Phil. I. sic: Cùm Brundisium, itérq. illud, quod tritum in Græciam est, non sine caussa vitauissim, Kalendis Sext. veni Syracusas, quòd ab ea vrbe trāsmisso in Græciam laudabatur. quæ tamen vrbs, mihi coniunctissima, plus vna me nocte cupiens retinere non potuit. veritus sum, ne meus repentinus ad meos necessarios aduentus suspicionis alii quid afferret, si essem commoratus. Cùm autem me ex Sicilia ad Leucopetram, quod est promontorium Regini agri, venti detulissent, ab eo loco conscendi, vt transmitterem: nec ita multūm prouectus, reiectus Austro sum in eum ipsum locum, vnde consenderam. cùmq. intempesta nox esset, mansissimq. in villa P. Valerij, comitis, & familiaris mei, postridiéq. apud eundem, ventum exspectans, manerem, municipes Regini cōplures ad me venerunt, ex ijs quidam Roma recentes: à quibus primūm accipio M. Antonij cognitionem: quæ mihi ita placuit, vt, ea lecta, de reuer sione primūm cooperim cogitare. Nec ita multò post, edictum Bruti affertur, & Cassij: quod mihi, fortasse, quòd eos plus etiam reip. quam familiaritatis gratia, diligo, plenum æquitatis videbatur. Addebat præterea (fit enim plerumque, vt iij, qui boni quid volunt afferre, affigant aliquid, quo faciant id, quod nunciant, lætius) rem conuentu-

ram,

ram, Kalendis Sext. senatum frequentem fore, Antonium, repudiatis malis suasoribus, remissis prouincijs Gallijs, ad auctoritatem senatus esse redditum. Tum verò tanta sum cupiditate incensus ad redditum, vt mihi nulli neque remi, neque venti satisfaceret. Et in ep. ad Cornificium: Ego tuorum consiliorum auctor, dignitatiss. fautor, iratus temporibus, in Græciam, desperata libertate, rapiebar: cùm me Etesiæ, quasi boni ciues relinquenter remp. prosequi noluerunt: Austér que aduersus maximo flatu me ad tribules tuos Rhegium retulit: at que inde ventis, remisque in patriam omni festinatione properauit: postridiéq. in summa reliquorum seruitute liber vnum fui. Et ad M. Brutum: Cùm teneri yrbum à parcidis viderem, nec te in ea, nec Cassium tutò esse posse, cámq. armis oppressam ab Antonio: mihi quoque ipsi excedendum putauit. tætrum enim spectaculum, oppressa ab impijs ciuitas, opitulandi potestate præcisa. sed animus idem, qui semper, infixus in patriæ caritate, discessum ab eius periculis ferre nō potuit. itaque in medio Achæo cursu cùm Etesiarum diebus Auster me in Italiam, quasi dissuasor mei consilij retulisset, te vi di Velia. Et, vt erat gloriæ cupidus, amplificatione interdum vtens, reip. voce se dicit esse reuocatum. ad Plancum enim cùm scriberet, Abfui, inquit, proficiscens in Græciam: &, postequam de medio cursu sum reip. voce reuocatus, numquam per M. Antonium quietus fui. In extremo autem lib. III. Off. ita cum filio loquitur: Sed vt, si ipse venissim Athenas: quod quidem

esset factū, nisi me de medio cursu clara voce patria reuocasset; aliquando me quoque audires: sic, quoniā his voluminibus ad te profecta vox mea est, tribues his temporis, quantum poteris, poteris autem, quantum voles. Reuersus igitur in urbem Cicero, anima duersa, vt dixi, contrā quām sperauerat, recip. perturbatione, rursus vrbe egressus, in villis suis libros hos de Officiis, vt reliquos de philosophia, composuit. Misit autem eos ad filium, vt, quem carissimum, vnicūmq. habebat, eius animum saluberrimis ad omnem honestatem, omnēmq. laudem præceptis imbueret. Sed nescio quo pñè communi filiorum morbo, à præclaris parentibus degenerantium, Cicero filius, siue id naturæ vitio, siue voluntatis accidit, à patris gloria longè deflexit. Pater à prima adolescentia sobriè, continentérq. vixit, diu, notwithstanding. studiis deditus bonarum artium, nihil omnino gulæ, aut in honestis voluptatibus indulgēs, totus virtutis amore flagrans. filius, quasi ad eum simul cum re familiari paternæ virtutis gloria, nullo suo labore, peruentura esset, imitatione domesticæ industriæ neglecta, vino, ebrietatibus, luxuriæ se totum tradidit. Et, vt alia omissantur, uno Plinij maioris exemplo contentus ero. Tergilla, inquit, M. Ciceronem filium binos con gios simul haurire solitum ipsi obiicit, Marcoq. Agrippæ à temulento scyphum impactum, etenim hæc sunt ebrietatis opera. sed nimirum hanc gloriā auferre. Cicero voluit intersectori patris sui M. Antonio, is enim ante eum audidissimè apprehenderat hanc palmam. Hæc Plinius. Pater tamen

tamen, quod ad eum atrinuit, filij gloriæ, quantum in ipso fuit, dum viueret, consuluit: vt etiam blanditiis, ac ferè præcibus cum ipso de sua laude agat. in extremo enim tertio libro, Vale, inquit, mi Cicero, tibiq. persuade, te mihi quidem esse carissimum, sed multò fore cariorcm, si talibus monumentis, præceptisq. latabere. Iam in epistolis quām diligenter eum, Athenis operam Cratip po dantem, Attico commēdet, ne quid ei decesset, quod ad victum, & cultum spectaret, omnibus intelligere facile est, qui epistolas ipsas legerint. Non optimè tamen, vt erat in primis acuto, longeq. in posterum prospicente ingenio, de filij indole videtur existimasse. cuius dubitationis existat signum illud, ep. 46. lib. xiiii. ad Att. Turpe est nobis, illum, qualiscumque est, hoc primo anno egere. Et ep. 16. lib. xv. Leonidas retinet illud suum, Adhuc quod est dubitantis, non fidentis, testimonium. Sed hæc quasi πάρεπτα.





**N**SCRIPTI<sup>E</sup>ONEM, de Officiis, quia plenior esse videtur, quam de Officio, propterea magis probavit: licet Panætius, quem se fatetur imitari, cum in eodem versaretur argumento, suos libros inscripsisset, *et* *τεκμηρίων*: quod est, de Oficio. quia de re Ciceronem ipsum audiamus, ad Attic. epist. 13. lib.xv. Nos hic φιλοσοφεύμεθα: quid enim aliud? & τὰ θεῖα τὰ κερδίσαντα magnificè explicamus; περιφέρειμενq. Ciceroni: quia de re enim potius pater filio? Et ep. xli. lib. xvi. τὰ θεῖα τὰ κερδίσαντα, quatenus Panætius, absolui duobus illius tres sunt. Ibidem, infrà: Quod de inscriptione queris: non dubito, quin ταχεῖαι officiā sit: nisi quid tu aliud: sed inscriptio plenior, de Officiis. περιφέρει αυtem Ciceroni filio. Hæc ille. Sed accedit illa quoque ratio: quod, ut sepe ipse gloriatur, plura tractat officiorum genera, quam Panætius. rectè igitur, de Officiis, ob ea, quæ persecutus est, à Panætio prætermissa. quamquam (ut aliquid pro Panætio dicam) nisi me fallit aurium iudicium, in Graeco sonat aptius, & omnino videtur elegantius, *et* *τεκμηρίων*, quam, *τεκμηρίων*. nam, quod ad significationem attinet, æque omnia, quanvis multa, complecti singularis numeris & potest, & soler. itaque, cum essent plura diuinandi genera, de diuinatione tamē inscribere Cicero maluit, quam, de diuinationibus: quæ plenior inscriptio fuisset.

Officiale libros appellat Lactantius lib. vi. cap. xi. & 18.  
De Panætio autem vide Plinium in Praefatione, & Agellium.  
Scriperat & Brutus librum ~~σεβεταινοντος~~. auctor Seneca  
Epist. lib. xv. & Chrysippus libros ~~σεβεταινοντωντος~~. Plut. in  
Opusci. & alibi. Citat & eundem Chrysippum εν τη ~~σεβεταινοντος~~  
τυμ alibi, tum in septimo. Cleanthes scripsit lib. tres  
~~σεβεταινοντος~~. Citatur & Posidonius εν τη ~~σεβεταινοντος~~  
τυμ. Laertius. & Hecato Rhodius. idem Laertius. Sed pri-  
mus scripsit Zeno Cittæus, auctore eodem Laertio, & Suda.  
Sed & Epictetus in Enchiridio quiddam scripti. Et Aristote-  
lem de Officiis scripsisse, D. Ambrosius tradit: qui totam  
hanc materiam Christianis exemplis mirificè illustrauit.



M. TULLI  
CICERONIS  
DE OFFICIIS,

*Ad Marcum Filium,*

LIBER I.

C I C E R O.



**V**AM QVAM te, Marce fili,  
annum iam audientem Cratip-  
pum, idq. Athenis, abundare o-  
poriet praeceptis, institutisq. phi-  
losophie, propter summam &  
doctoris auctoritatem, & urbis:  
quorum alter te scientia angere  
potest, altera exemplis: tamen, ut ipse ad meam utili-  
tatem semper cum Gracis Latina coniunxi: neque id  
in philosophia solum, sed etiam in dicendi exercitatio-  
ne feci: idem tibi censeo faciendum: ut pars in virtus  
que orationis facultate, quam quidem ad rem nos, ut  
videmur, magnum attulimus adiumentum hominibus

nostris: ut non modò Gracarum litterarum rudes, sed etiam docti aliquantulum sè arburentur adeptos & ad dicendum, & ad indicandum. Quamobrem disces tu quidem à principe huīus etatis philosophorum, & disces, quam diu voles: (tam diu autem velle debabis, quo ad te, quantum proficiat, non penitebit) sed tamen, nostra le. ens, non multum à Peripateticis dissidentia, (quoniam utrique Socratice, & Platonici esse volumus) de rebus ipsis uteret tuo iudicio: nihil enim impedio: orationem autem Latinam profectò legendis nostris efficies pleniorēm. nec verò hoc arroganter dictum existinari velim. nam, philosophandi scientiam concedens multis: quod est oratoris proprium, apie, distinctè, ornatèq. dicere, quoniam in eo studio etatem consumpsi. si id mihi assumo, videor id meo iure quodam modo vindicare. Quamobrem magnopere te hortor, mi Cicero, ut non solum orationes meas, sed hos etiam de philosophia libros, qui iam se illis ferè aquarunt, studiose legas. vis enim dicendi maior est in illis: sed hoc quoque colendum est equabile, & temperatum orationis genus. & id quidem nemini video Grecorum adhuc contigisse: ut idem utroque in genere laboraret, sequereturq. & illud forense dicendi, & hoc quietum disputandi genus. nisi forte Demetrius Phalereus in hoc numero haberi potest, disputator subtilis, orator parùm vehemens, dulcis tamen, ut Theophrasti discipulum possis agnosce-re. nos autem quantum in utroque profecerimus, aliorum sit iudicium: utrumque certè secutis sumus. equidem & Platonem existimo, si genus id forense dicendi tractare voluisse, granissime, & copiosissime potuisse dicere: & Demosthenem, si illa, qua à Platone didi-  
cerat

cerat, tenuisset, & pronunciare voluisse, ornatae, splen-dideq. facere posse. eodemq. modo de Aristotele, & Isocrate iudico: quorum uterque, suo studio delectatus, contemp̄s̄it alterum.

## EXPLANATIO.



V A M Q V A M te Marce fili, } paucis verbis  
egregium artificium in cohortādo ad phi-  
losophiam filio licet animaduertere. nam  
& Cratippum, & Athenas ideo nominat,  
ac laudat, vt ostendat, qui talem doctō-  
rem sit natus, in ea præfertim vrbe, que  
præstantissimorum philosophorum copia  
semper floruerit, clarosq. viros, liberalibus disciplinis excultos, in omnes ferè orbis terræ partes diversis temporibus e-  
misserit, & turpe admundum esse, vertiq. virtio iure posse, si  
tam præclaris non commotus exemplis, optimarum doctri-  
narum expers, inanisque domum redeat. His duabus caussis  
tertiam adiungit, sparium temporis, quo eum doctorem, in  
ea vrbe audiat. nam, cūm ait, Annū iam, admonitione quæ-  
dam est, quid annuo studio præstare debuerit. Ex quibus tri-  
bus caussis intulit verbum, Oportet. non enim, Arbitror, aut  
simile quippiam, satis esse duxit, sed, Oportet: cūm antece-  
dant illa, Audire Cratippum, Audire Athenis, Audire multis  
mensibus. quo efficitur, nisi valde iam profecerit, culpam, &  
infamiam vitare non posse. Athenas, & Cratippum coniungit etiam in procemi lib. IIII. ANNVM iam } annuum  
tempus conficiebat post Kal. Apr. vt patet ex lib. x v. ep.  
ad Att. AVDIENTEM } quod magis est, quām priuatim  
studere. Proverbium est: ζώντες φωνή μητρώον εἰπόμενον.  
id est: Viuæ voci maiorem vim inesse. CRATIPPVM, &  
hic Peripatetica scientia claruit. Infrā: Disces tu quidem à  
principe huīus etatis philosophorum. Et lib. II. In anti-  
quisima, nobilissimāque philosophia Cratippo auctore ver-  
saris, iis finillimo, qui ista præclara pepererant. Et lib. III. A  
Cratippo nostro, principe huīus etatis philosophorum, hoc

te audire, atque accipere confido. Hic Mitylenæus fuit: prò que eo Cicero apud Cæsarem egit, cùm rerum potitus esset; vt ciuius R. adscriberetur: perfusitq. sénatū Areopagitarum apud Athenienses, vt instituenda iuuentuti præficere tur. De eovide, quid dicat Cicero filius in ep. ad Tironem lib. xvi. Pompeium, è Pharsalica clade aufugientem, apud Mitylenem occurrens, solatus est argumentis è philosophia deppromptis. A T H E N I S } olim ciuitate libera nec indigavilius præconij ampliùs, tanta claritas superfluit, vt inquit Plinius. Plato φιλόλογος, & πολύτονος appellat. Cicero pro Flacco ab ea aithumanitatem, doctrinam, fruges, iura, leges ortas, atque in omnes terras distributas. Vide Xenophonitem in dictis, & factis Socratis, Illocratem in Panegyrico, Cicero de Fato, de Leg. ii. de Oratore, Iustinum libro secundo. Florum lib. iii. capite quinto. Plutar chum in Cimone, Pausaniam in Atticis. A B V N D A R E } non modò non egere, sed etiam abundare.

O P O R T E T } par est, credibile est: prorsus ratio postulat, vt abundes: nec aliter credendum videtur.

P R A E C E P T I S , i n s t i t u i s q u e p h i l o s o p h i a } perpendenda interdum singula sunt verba: ne Ciceronis elocutio, aptam sententijs, utilemque copiam suppeditans, non intelligentibus inanis, & superuacanea videatur. Instituere plus est, quām Præcipere. præcepta enim docent, quid agendum sit: nec tamen omnes, quibus præcipitur, ita se gerunt, vt præceptorum sententiam vita, & moribus exprimant. instituta verò planè formant, & singunt eorum animos, quibus præcepta traduntur, sic, vt à præceptorum regula nihil aut minimū discedant. quo maior in Ciceronis cohortatione vis est, qui filium admoneat, nou eum nosse tantum oportere, quę philosophia præcipiat, sed ita etiam institutum esse, vt ea, quę nouerit, simul agenda sibi esse constituant. P R O P T E R summat̄ & doctoris auctoritatem, & urbis: } Vrbis, ob exempla. Doctoris, ob scientiam. Auctoritas eam vim habet, vt ipsa per se, vel si ratio nulla, cur aliquid agamus, afferatur, nostamen ad agendum impellat. ratio autem, si auctoritate careat, sēpe languet. Est enim auctoritas in eo, de cuius virtute, prudentia, bonitate sic existimamus, vt eum in delectu rerum haudquam falli posse iudicemus. Inanimata rei

rei auctoritas non est: sed eam urbi Cicero tribuit, propter illos viros qui, cultis in ea philosophiæ studiis, doctrinæ, ac sapientiæ laude præstiterant. Mouere te'debet inquit, & doctoris, & urbis auctoritas, cogitantem, quid Cratippo doctore, quid in urbe Athenarum præstare te deceat. Nicias apud Platонem in Lachete, à bono tantum præceptore, Socrate maxime, institui voluit, ne, perpetuò discens, θυμασθε, hoc est dediscens, videretur. Philippus Macedo diis gratias agebat, quod sibi Alexander Aristotelis tempore natus esset. Plato etiam iisdem gratias agebat, primū, quod homo potius, quām brutum natus esset: secundò, quod Athenis: tertio, quod temporibus Socratis. A V G E R E } augent nos ea, vnde fructum capimus: itaque, augeri scientia, honoribus, re familiari, propriè dicimus: malis rebus augeri aliquem, non dicimus. nam, si quis improborum consilii, & confuetudine deprauatur, quis eum vitiis auctum esse dixerit? cùm ea minuātur potius, quibus, Augere, verbum, adiungimus, res domestica, existimatio, virtus. E X E M P L I S : } Se necca verba sunt epistolarum lib. xv. Nulla res magis animos honestate induit, dubioſisque & in prauum inclinabiles reuocat ad rectum, quām boniorum virorum conuersatio. paullatim enim descendit in pectora, & vim præceptorum obtinet, frequenter audiri, adspici frequenter. occursus merecle ipse sapientium iuuat: & est aliiquid, quod ex magno viro vel tacente proficias. V t ipse ad meam utilitatem semper cum Græcis Latina coniunxi, } monet filium, exemplo suo, ne Latinam linguam à Græca disiungat: (cùm id maximè conduceat: vt in ipso Cicerone intueri licet, & locus est ab utili: nam in genere deliberatiuo utilitatem proponere debemus, & sine Græca eruditione, qua de philosophia scripta sunt, intelligi perfetè non possunt:) veritus, ne, cùm assidue Cratippum audiat Græco sermone philosophia præcepta explicantem, Latinæ studium negligat orationis. hoc eo pertinet, vt sua scripta legenda sibi putet, si minus ob res ipsas, in quibus eum Cratippo tradiderat excolendum: cui scientiam philosophandi non concedere arrogantis esse videbatur. saltem ob Latinam linguam: in qua satis eum constabat ceteris antecellere: nec eam ipse laudem respuit, sed iure quodam suo, nihil metuens arrogantie suspicionem, sibi vindicat.

Ob. meam vtilitatem, dicit, quia semper id spectauit, vt in eloquentia palmam obtineret: quod astutus est, numquam intermisso, ne cum philosophia quidem operam dabat, Latinis sermonis exercitatione. Ad Atticum scribens, lib. i. gloriatitur, se prater ceteros φιλόσοφους & esse, & haberet. Et i. de Oratore: Suminorum oratorum Græcas orationes explicabam: quibus lectis, hoc assequebar, vt , cum ea quæ legem Græcè, Latinè redderem, non solum optimis verbis veterer, & tamen visitatis: sed etiam exprimerem quædam verba imitando, quæ rara nostris essent, dummodo essent idonea. Plutarchus in eius vita ait, cum Græcè apud Rhodum declararet, eum Apollonij Molonis F. maximum in oratoria præceptorem Græcis eloquentiæ, & doctrinæ palmarum præripuisse, dixisse. Quintilianus studiorum auspicio à Græcis fieri voluit: sed de iis loquebatur, qui Latinam linguam vñ cum lacte materno imbibebant. nos tum Græcam dicere debemus, cum Latinè analogiam per nos callere incipimus. S E M P E R : } non tantum adolescentis. N E Q U E id in philosophia solum, sed etiam in dicendi exercitatione feci: } ambigua sententia. querri enim potest, vitrum Latinam , an Græcam linguam, & in philosophia, & in dicendi exercitatione à se cultam esse dicat. Si Græcam: aduersiatur ea, quæ sequuntur: in quibus apertissimè filium ad Latinam amplectendam hortatur: vt cum ait: Orationem autem Latinam profectò legendis nostris efficies pleniorēm. Si Latinam: ordo non placet: dicendum enim potius videbatur: Neque id in dicendi exercitatione solum, sed etiam in philosophia feci: vt ostenderet, non in modo se fecisse, quod ab iis fieri necesse est, qui ad eloquentiæ laudem spectant, sed etiam, quod necesse minus erat. exerceri enim Romano sermone in ea philosophia, quæ tum Græcis litteris tota continebatur, quis neget, multò minus, quam in oratoriæ studio facultatis, utile fuisset. Veritas igitur sententiaz quærenda: quam quidem hanc esse non dubito. Ita cum Græcis Latina coniungere mihi semper curæ fuit, vt Latinis sermonis vñsum, ne cum philosophia quidem operam dabam: Græci, ne cum Latinè quidem exercebar, vñquam dimiserim. Et, quia minus mirum videri potuisset, pluris à se factam esse patriam linguam, quam Græcam: ideoque & in philosophia, & in dicendi exercitatione cultam esse: non, inquit, id modo feci, vt Latinam.

Latinā linguam in philosophia exercerem, sed illud etiam, vt in Latina exercitatione Græcam non omittarem. Quinque Etilianus in Præfatione oratorem, & philosophum cuandem esse tradit. Cicero in Oratore, non tantum se debere scholis rhetorum testatur, quantu*m* Academiæ spatijs. Idem Quintil. Lib. xii. cap. 2. oratorem philosophia instructum esse vult: cum non intelligi possit eloquentia hominis optima nescientis, sicque. Periclem Anaxagoræ, Demosthenem Platoni operam dedisse. In philosopho quoque eloquentiam requiri, affirmat Cicero in Præfatione Tusculanarum, cum ait: Hanc perfecta philosophiam semper iudicaui, quæ de maximis questionibus copiosè posset, ornataque dicere. in quam exercitationem ita nos studiosè operam dedimus, vt iam etiam scholas Græcorum more habere audeamus. D I C E N D I exercitatione } quales declamationes existant, de Latinis, Quintilianis, Sene- ca: de Græcis, Libanijs, Aristotele: & aliorum. C E N S O } pa-ternam auctoritatem redoler hoc verbum. nam, Arbitror, aut simile quiddam, leuius erat. Censo, autem, qui dicit, non modo suader, verum etiam pronunc*t* iubet. Fecit autem filius, quod pater iussit. ad Tironem enim scribens, se apud Cassium Græcè, apud Brutum Latinè declamare. V T R I V S - Q U E orationis } Græcae, & Latinæ: philosophicæ, & orato- rix. Q U A M quidem ad rem } quam: nimur eam, de qua proximi locutus est: pares vt esse possent Romani homines in vtriusque orationis facultate. quod aliqua dubitatione non caret, longè enim pauciora Græcæ, quam Latinæ. Cicero composuit: vt gloriari proflus ei non liceat, æquè se magnum in vtraque lingua Romanis hominibus adiumentum attulisse. Quærenda igitur est, quæ cum Ciceronis mente consentiat, interpretatio. Et fortasse dicit hoc de Libris, quos de arte oratoria & de rep. & postremo de philosophia multos edidit, sic à se locupletata esse Latinam linguam, vt, ex ea Romani homines Græcae iam æquata, non minorem in posterum sperare gloriam possent; quasi excellerent in Græca, tot sæculorum spatijs, tot summorum oratorum laboribus absoluta. pares igitur esse poterant in vtriusque orationis facultate, quod ad Latinam linguam attinebat quæ ne Græcæ concederet, industria sua præstissime sibi Cicero videbatur. nam, si Latina fuisset inferior, quis in vtraque par esse posset, cum pares ipse non essent? Vt videtur, } hoc posuit ad vitam.

dam arrogantiæ suspicionem: parumpérque minuit, quod ait sequentibus verbis. **MAGNUM** atul' **mus adiumentum hominibus nostris, nam, ut videmur, arbitrantis est, non affirmans.** **MAGNUM adiumentum** } in Præfat. Tuſc. Philoſophia latuit vſque in hanc ætatem, nec vllum habuit lumen literarum Latinorum: quæ illastranda & excitanda nobis est, vt, si, occupati, profuimus aliquid cūtib⁹ nostris, proſimus etiam, si poſſimus, otiosi. **HOMINIBVS nostris** } Romanis, & Latinis. **Vt non modo Grecarum litterarum rudes,** } proxima ſuperiora ad Latinam tantum linguam perteſtent: quæ ſequuntur, etiam ad res ipſas: quæ cūm Græcis litteris traditæ eſſent, a ſe tamen ita explicatas oſtendit Latino ſermonē, non modo vt iij, qui Græce nescirent, ſed etiam qui optimè ſcirent, eisque poſſent è Græcis libris cognoscere, inallent ſua ſcripta legere, ex quibus aliquem ſe fructum capere arbitrarentur. nam, ſi & hæc, & ſuperiora equeſtē de Latina tantum lingua diceretur: non conſentire ſibi ipſe Cicero videretur, qui, cūm dixiſſet, **Magnum adiumentum, ſubiungeret, Aliquantulum.** **Docti** } abſolute dictum: non, Docti litterarum: vi incep̄te quidam opinantur. **ALIQVANTULVM** } non, Ad dicendum: quod pertinet ad Latinam linguam: in qua ſe iam dixit non aliquantulum, ſed multum Romanis hominibus profuiffe. Ad iudicandum igitur: quod non ad Latinam linguam, ſed ad philoſophiæ p̄cepta, ab ipſo Latinè tradita, pertinet. in quo ne Græcis philoſophiis, qui ea multis libris egregiè perle cuti erant, detrahere velle videretur, Aliquantulum, dixit: quo modeſtiū dicens non potuit. **Et ad dicendum,** } augetur enim Latina lingua, non modo cūm oratoria p̄clārē træcat, ſed etiam, cūm ad explicanda philoſophiæ ſenſa tranſerſtur: quod ante Ciceronem p̄ſtiterat nemo: vt ipſe dixit loco ſuprà recitat. **Et ad iudicandum,** } philoſophus enim de rebus iudicat, in verbis non immoratur: iudicat autem, quid agendum, vitandum veſt: quæque obſcuriora ſunt, errorib⁹ ſue multis humanas mentes inuoluunt, iudicij ſui p̄ſtantia illuſtrat, ac pareſſat. Poſſunt igitur, inquit, noſtrorum librorum lectione Romani homines non augeri ſolum Latina lingua, ſed iudicandi quoque ſcientiam conſequi: & quamuis Græcos de philoſophia libros legant, aliquem tamen ex induſtria quoque noſtra fructum capere. **Quamobrem** diſceſtu quidem } concludit, quod ei propoſitum

ſtrum eſſe iam diximus, legenda filio ſua ſcripta, ſi non doctrinæ, quæ eius iudicio permittit, orationis certè Latinæ gratia. **HIVS etatis** } huius memoriq; ut lib. III. Ita autem dicit, vt affiſtationem cauere videatur. **Dicoſ,** quam diu voles: quod ſuę potestatis eſt, filio largitur: ut ſtaruit ipſe Cratippi tempus audiendi. Sed, quod largitur, adiſtrigit paullum ſequentibus verbis. Sino tuam voluntatem, inquit, liberam eſſe, cum hoc tamen, ut eam doctrinæ regat, ac moderetur utilitas. quamdiu enim Cratippo maſtro proficere intelliges, tamdiu dandam ei operam eſſe, exiſtimare debebis. Et hic quædam latet admonitio. nam, quem proximè philoſophorum principem nominauit, poſſe, qui eum vel diutifimè audiat, ſemper aliquid diſcere, omnino ſignificat. **Qy AM diu voles:** (tam diu autem velle debet, } Inſri: Quod vitium qui effugere voler (omnes autem velle debebunt) &c. Eodem modo locutus Fam.lib. 2. ep. xi. Quidquid erit, tibi erit. Et ep. 18. e. I. Si quid offendit, ſibi totum, nihil tibi offendit. Lib. III. ep. 2. Quibuscumque rebus potes, (potes autem plurimos,) Lib. VI. ep. 5. Quotiescumque filium tuum video, (video autem ferè quotidie.) Et ep. 6. e. I. Quidquid valebo vel auctoritate, vel gratia, valebo tibi. Et lib. ix. ep. 14. Neminem conueni, (conuenio autem quotidie plurimos.) Et ep. 17. e. I. Fiet, quodcumque volent, qui valebunt: valebunt autem ſemper arma. Et lib. x. ep. 6. Quos adhuc gradus dignitatis conſecutus es, (es autem adeptus ampliſſimos.) Et lib. XII. ep. 41. Quotiescumque me videt, (videt autem ſapientiæ.) Et ep. 53. e. I. Quo ad fides tua, dignitatisque patietur: patietur autem in omnibus. In Pilonem: Vide te volui, vidi. Phil. I. Huc ſi quid acceſſerit, non tam mihi, quam vobis, reique pub. acceſſerit. Simile quid habent & illa. Lib. I. ep. I. Regis cauſa ſi qui ſunt, qui velint: qui pauci ſunt. Lib. 2. ep. 18. Quæ mihi veniebant in mentem, quæ ad te pertinere arbitrabar, &c. Lib. IV. ep. 7. Hoc idem omnes, qui te diligunt, ſentiunt: quorum eſt magna multitudine. **No n penitabit** } Non parum videbitur, Ter. Heaut. Quinteti lianus. Multi ad ſumma peruenient, niſi, ſe iam eo perueniſſe, periuſias habent. Et Biō dixit, *qui in omnibus eis que nō sunt, hoc eſt, Opinionem felicitatem p̄cideſſe.* Prouerbiū eſt: Senex ſemper aliquid addiſet; Solon, apud

Platonem de rep. vii. & in dial. de Philosophia, & in Lachetè: *Τί εγένετο τις πόλις διδούση πόλις;* i. Discipuli assidue multa, senecta venit. Et, apud Agellum: *Vtus me genuit, peperit* mater memoria. Seneca ad Lucilium: Tam diu descendum est, quād diu nescias: & si proverbio credimus, quād diu vias. Demea Terentianus:

Numquam ita quisquam bene subducta ratione ad vitam fuit,

*Quin res, ætas, vtus semper aliquid apportet noui,  
Aliquid moneat, vt illa, quæ te scire credas, nescias,  
Et, quæ tibi putaris prima, in experiendo repudies.*

Et Senecæ versiculus ille: Discipulus est prioris posterior dies. Imitandus ille, (Iuliano iuriconsulto auctore) qui, vel si alterum pedem in sepulcro haberet, tamen adhuc velle disceere profitebarur. Plato quoque cuidam otioso, & voluptatibus dedito, percontanti, Quoad puer esse vellet? quod eum discendo non minus, quād docendo, videret occupari: respondisse fertur: Quoad, quantum doctrina, & virtute augear, me non paenitebit. Non multum à Peripateticis dissidentia, } ostendendum est, in quo dissident, & quantum dissident à Peripatetica doctrina Officiorum libri. Peripatetici virtutem, & honestum ceteris rebus omnibus longè præferri debere iudicabant, sola tamen felicitatem posse confidere nequaquam arbitrabantur. quòd si accederent opes, honores, valetudo, quaq. alia sunt eiusmodi, vt iis destituta humana vita laboraret: tum verò felicitatem absolui, cùm accidere nihil posset, quod molestiam animo, corpori afferret incommodum. Stoici, contrà, felicitatem vna virtute metiebantur: si quis honestè, & cum virtute vitam duceret, nihil præterea desiderare: sapientem, id est virtute præditum, solum esse diuitem, pulchrum, honoratum, omnibus denique rebus, quæ falso vocabulo bona dicentur, solum abundare. Hanc dissensionem paucis verbis attingit Cicero lib. iii. ita scribens: A te postulo, mi Cicero, vt mihi concedas, si potes, nihil, præter id, quod honestum sit, esse propter se experendum: si hoc non licet propter Cratippum: ut illud certè dabis quod honestum sit, id esse maxime propter se experendum. Hæc igitur inter eos dissensio fuit, magna prorsus, & quæ diuersissima virtutem genera induceret. aliud est enim, honesto quidem plurimam tribuere, ceteris tamen rebus, quæ ad commoda

moda corporis, atque ad animi delectationem pertinent, locum relinquere, iisque, si absint, comparandis operari dare: si adsint, frui quantum deceat: aliud, in vno honesto omnia ponere: cetera, si cùm eo iungantur, paupertatem, ignominiam, morbum, tormenta ipsa cara habere, & suauia esse dicere: si disiungantur ab eo, diuitias, gloriam, bonam valetudinem, commoda denique omnia, non modo, quasi ad felicitatem nihil afferant, contemnere, sed etiam, quasi felicitati repugnant, inter mala numerare. Hoc Stoici cùm sentirent, acerrimè q. defenderent: quæri potest, cur Cicero, qui se in his libris potissimum sequi Stoicos profitetur, sua scripta dicat à Peripateticorum sententia non admodum discrepare. Huic dubitationi occurritur hoc modo. Præcepta officiorum Cicero de Stoicorum fontibus hauriebat: ea dicit oriri ab honestate, honestatem ipsam ex quatuor virtutibus, prudentialia, iustitia, fortitudine, temperantia. in hoc nihil à Peripateticis Cicero dissidebat. nulla enim fuit, ad hanc quidem partem quod attinet, inter Stoicos, & Peripateticos, controversia. nam honestum utriusque negabant esse, quod ab harum virtutum aliqua non oriretur. In quo igitur à Peripateticis Cicero dissentit? In honesto: quod è Stoicorum sententia si solum propter se experatur, valde probat. In quo ab iisdem non multum dissentit? In eodem. nam, etsi Stoicorum sententiam probabat, Peripateticorum tamen haud improbabat, omnino. itaque lib. III. cùm honestum Peripateticorum à Stoicorum honesto distinxisset, postulat à filio, quod supra iam ostendit, vt id sibi concedat, quod Stoici probant: si non potest, quod aduerserit Peripatetica doctrinæ, cui tunc Cicero filius operam dabat: concedat saltem id, quod placet Peripateticis. Quo loco subiungit hęc: Mibi vtrumuis sat is est: & cùm hoc, tum illud probabilius videtur, nec præterea quidquam probabile. Aperte demonstrat, Peripateticorum honestum à se non improbari, Stoicorum autem probari vel maximè. Sed in his libris declinat interdum ad peripateticorum sententiam: neque contemnit opes, honores, amicitias, reliqua adiumenta vitae, quamquam ea non iungat ab honesto. itaque verè dixit, disidere se quidem à Peripateticis, non multum tamen: cùm eorum honestum planè non improbarerit, locum relinquens aliquem iis rebus, quas omnino Stoici, vt inanes, excludebant. VTRIQVE Socratis, & Pla-

*tonici esse volumus,* } videtur hoc dicere: Et Stoicos, & Peripateticos sequi volumus: ut ab his non valde dissideamus: cum tamen illos probemus maxime. Negari enim non potest, quin hoc ideo subiungat, ut rationem afferat, cur sua non multum à Peripateticis dissident, sed dissident tamen. Quod si ita est: quarri oportet, cur Socraticos pro Stoicis, Platonicos pro Peripateticis posuerit: quandoquidem verbum, Utique, aperte eos, ut diversa sentientes, distinguit. Socrates idem fere sensisse, quod Stoici, & exemplo sua vita Stoicam sectam peperisse, videri potest: qui etiam perire maluerit, quam iudicibus in bona causa supplicare: cum esse malum probis, innocentibusq. viris mortem negaret: quae Stoicorum postea sententia fuit, nihil omnino malum, nisi quod turpe esset, iudicantium: nihil bonum, nisi quod honestum. Libentius autem, Socraticos, quam Stoicos, dicit: ut videatur, licet Stoica praecepta valde probaret, Socratis tamem philosophiam sequi velle, similem quidem Stoicæ, & ideo dissidentem à Peripateticis, miorem tamen aliquantum, & ideo non multum dissidentem. Platonicos pro Peripateticis usurpat: quia, quod ad mores attinet, de quibus agitur in his libris, nulla videtur inter eos controuerbia fuisse. Quod si Peripateticos, dixisset: omnes Peripateticæ philosophiae partes comprehendisset. omnes autem ipse non tractat: sed, ut dixi, moralem tantum: & Platonis lectione magis quam Aristotelis, eum esse delestatum, Platonicumq. se potius, quam Aristotelicum, profiteri solitum, satis constat. De rebus ipsis vere tuo iudicio: nihil enim impedio: } probes, nec ne, mea scripta, quod attinet ad præcepta, non labore, auocare enim te ab ea doctrina, in qua Cratippo magistro tuuum studium locas, consilijs nostri non est. Ad Atticum scribens, sic ait: Est magnum illud quidem, verum tamen multiplex pueri ingenium: quo ego regendo negotiis habeo sat. PRO FECTO } Quinctil. Is, ait, se profecisse multum existimet, cui Cicero valde placere cœperit. LEGENDIS nostris, } figura Latini sermonis: pro, Dum nostra leges. Sic locutus lib. III. de Rep. apud Nonium: Noster populus, socijs defendendis, terrarum iam omnia potitus est. PLENOREM. } in Oratore, nullum ait esse villo in genere laudem oratoris, cuius in suis orationibus non sit aliqua si non profectio, at conatus tamen, atque adumbratio. ARROGANTER } Arrogantiæ ait esse Aristoteles lib. II. Eth. ad Nicom.

Nicom. οὐ γε τούτον θέτε μείζον, i. plus sibi tribuere, quam par sit. De hoc autem Cicero reprehendit: qui nimium factet, & de rebus quoque gestis suis ea dicat, que aures offendunt, defendit eum Quinctil. lib. XI. SCIENTIAM } rei per causas cognitionem. nam, ut ait Aristotle. οὐδὲ ταῦτα αἴσια, id est, Nihil scimus, si causam ignoramus. CONCEDENS } quasi d. cat, Non repugno, quod minus alij philosophiæ cognitione mihi non modo conferantur, sed etiam preferantur. Facilis autem est concessio, si tibi id serues, quod est, aut habetur praestantius. Qualis est illa apud Virgil. En. VI.

Excedunt alij spirantia mollibus æra:

(Credo equidē) viuos ducent de marmore vulus;  
Orabunt caussas melius, cæliq. meatus  
Desribent radio, & surgentia sidera dicent.  
Turegere imperio populos, Romane, memento,  
(Hæc tibi erunt artes) paciū, imponere morem,  
Parcere subiectis, & debellare superbos.

MULTIS: } Varroni, Catoni, alijs. ORATORIS proprium, } Quinctil. lib. 2. cap. 16. ait, hoc Ciceronē pluribus locis dixisse: Plutarchus q. dicit eum oratoris nomen magis, quam ph. philosophi, fuisse amplexum. APTA, distinctè, ornataq. dicere: } Aptè, ad id, quod orator ager dum suscepit: ut ea dicantur, quæ subiecta materia postulat: Distinctè, ne rerum ordo perturbetur: frustra enim aptè dicit, qui suo quidque loco non dicit: Ornata, exhibitis Latina orationis luminibus, & ornamentis, quorum primum inuentio, alterum dispositio, tertium præstat elocutio. quas omnes partes cum alibi, tum in Oratore illo, numquam satis laudato copiosè in primis, & eruditè Cicero persequitur. Conferendus locus Isocratis in oratione καὶ σοφιῶν. Τὸν καρεῖν μὴ διαμεττίν, ἀλλὰ καὶ τοῖς ἀδυμητέσσι φρεστόντως ἐν τῷ λόγῳ καταπικτάγε. (hoc est, aptè dicere) καὶ ταῦτα καὶ τρέπον. (hoc est, distinctè dicere) καὶ τοῖς ὄντοις προβιβωσ, καὶ μαντοῖς εἰπεῖν, καὶ τὸν τὸν εἰπεῖν τὸν προσχρυστών, τὸν προσθιλατών, καὶ μικράδεις ποσίς αἰλίλας, μὴ διαμεττίν. (hoc est, ornata dicere.) Quæ sic Latinè verti possunt: Non aberrare, neque occasione negligere, aut excedere modum, sed & argumentis totam orationem decenter variare, (hoc est, aptè dicere) & ordine disponere, (hoc est, d. dicere) & verba

ita collocare, ut numerosa sint, & musicum quendam concordum efficiant, & in singulis rebus, quae prius discernenda sunt, & inter se miscenda, non errare. (hoc est, o.d.) Quod autem Cicero hic ait, Oratoris officium esse, aptè, distinctè, ornatè dicere: Crassus de Oratore orationem vult esse, aptam, distinctam, Latinam, & planam, ornatam, & admodum, & raudacem. Quintilianus autem ait haec contineri partibus mouendi, docendi, delectandi. Ad mouendum pertinent Affectus. ad docendum Expositio, & Argumentatio, ad delectandum vtrumque, sed maximè Eloquio. AETATEM consumpsi, } senex enim erat. Si id mihi affuso, } sapit emphasin. MEO iure quodam vindicare, } genus loquendi, ex Iurisconsultorum fontibus deriuatum. Qui primus è seruorum numero libertatem est adeptus, ei notum Vindici fuit. inde Vindiciae, pro Libertate Vindico, pro Libero. inde factum, vt, qui controuersam rem ex aliena potestate, quasi omnino sibi debitam, non expectato iudicio, vel vi, vel alio quoquis modo ad se transferret, is eam rem iure quodam suo vindicare sibi diceretur: quod, in libibus usurpari coepit, ad omnes postea res consuetudo deduxit. Exempla quadam Iurisconsultorum, oratorumque subiugarem, nisi satis essent in promptu, ipsaque per se legentibus occurserent. Hos etiam de philosophia libros, } vtrum hos de Officiis, an suos omnes de philosophia libros dicunt? non dubito, quin omnes, non enim videtur id, quod sequitur. Qui iam se illis ferè equarunt, ad hos de Officiis, qui nondum exierat, posse pertinere. Antiquus liber non habet, Hos. QVI iam se ille ferè equarunt, } nihil muto: cùm & ita sit in plurisque antiquis libris. Vtor autem tredecim, are meo mihi acquisitis, & ex vniuersa Italia in meam haud forsitan contempnendam Bibliothecam accitis, in hoc opere emendando: nullis neque laboribus, neque sumptibus parcens, ut studiosorum commodo consulam. Quorum nouem faciunt cùm vulgata lectione. Quattuor alij, & vnum præter ea perantiquus Alberti Tertii, veteri mihi amicitia coniunctissimi, & pro eximis animi dotibus, nec mediocri, sed præstanti virtute carissimi, habent: Qui iam illis ferè equarunt. Genus autem hoc loquendi exemplis quam plurimis confirmatur. In Lelio: Superiores se equare cū inferioribus debent. In Verr. Aliquid cum aliquo equari, con ferrique posse. Non tamen contemno alteram illam lectio nem. Nam & in Hirtio lib. ix. vbi est in impressis, Colloca tur in

tur in eo turris xi tabulariorum, non equidem quæ in omnibus æquaretur, in quibusdam antiquis est, & equaret. Et illud Pacu: cui apud Agellum lib. xiv. cap. i. eiusdem generis est:

Nam, si qui, quæ euentura sunt, præuideant, æquiparent ioui.

FERE æquarunt, } laude:parem ferè laudem consecuti. Ea, quæ succedunt loqui de oratione Latina, non de rebus. Cicero nem ostendunt. Sunt autem dicendi genera, summum, oratione num: medium, horum librorum de philosophia: infimum, epistoliarum, aut dialogorum. quibus omnibus èquè Cicero excelluit. Ferè, dicit, quia dicendi vis in oratore dominatur. Alijs, Ferè æquarunt: hoc est, orationum numerum, granditatem, & mollem æquarunt, nam Cicero breui tempore multos de philosophia libros scripsit: quod cùm ex aliis locis, tum ex initio Topicorum perspicue apparet, & ex proœmio lib. III. horū librorum. Vt enim dicendi maior est in illis: } orationes enim, forent, præcipue, πολὺ τὸ πονητὸν (ait Dionysius) ἵππος, id est, habere debent multos affectus. AEQUABILE, & temperatum, } ex vtroque multum, summo, & infimo. Vt idem vtroque in genere laboraret, } mira prudentia. nā, si dixisset, Excelleret, potius, quam Laboraret: (quod falsè dictum videri possem non enim nemini Græcorum cōtingerat, vt: vtroque laboraret: sed nemini, vt excelleret: nam laborauerat Phalereus, sed non excelluerat) si dixisset, inquam, Excelleret, adimere Græcis, & ad se transferre videretur laudem vtriusque generis: quod intelligi potius, quam exprimi à se, vult. ita & modestiæ feruit in verbo Laboraret: quod gloriantis non est: & quia dixerat, Nemini Græcorum, quod verum non erat: correxit vitium, exceptio statim illata vnius Phalerei, qui disputandi subtiliter laudem adeptus, quod est philosophi, dicendi vi caruerat, que prima laus oratoris est. FORENSE dicendi, } orationes in fere ad iudices habebantur: & priscis quidem temporibus, in puro comitio, que fori pars fuit exornata autem operibus virbe, in basilicis: exceptis, quæ in senatu, vt Catilinaria. QVIE TVM } caret enim actione forensi, nec illam dicendi vim ad exercitandos animos requirit. Nisi forte, } non sine contemptu aliquo dictum videri potest, hoc sententiæ principio. Nisi forte, quasi dicat. Opponet aliquis Phalereum, qui laborauerit in

vtroque. Quid tum philosophum fuisse concedo, oratorem negotiataque frustra laborauit. DEMETRIVS Phalereus} Quin Quintilib.x.Cic. in bruto in medio dicendi genere eum preferat omnibus. Multa eius scripta commemorat Laërtius. Alio nomine dictus φάρος. Φαλέρος & verò. Δῆμος τῆς φαλήρου, Atticæ portu. Sudas. Post obitum Demosthenis, cùm Macedones Athenas subegressi sunt, multum auctoritate apud ciues suos valuit, apud Macedones etiam gratiosus. Tandem, per inuidiam, & cum ignominia pulsus, Alexandriam ad Ptolemaeum profectus, amplissimæ bibliothecæ prefuit: (quod & D. Hieronymus in Daniele memoria prodidit: ) tandem à serpente occisus. Laërtius genus dicendi Demetrii philosophicum ait esse, cōtentione, & vi oratoria temperatum, Victorinus Afer de Orthographia Grammaticos nominat, Demetrium Phalereum & Hermocratem. Nominatur & a Theophyl. cōto in epist. 34. ad Romænum: in qua meminit libri αἰτίων ἐπιμνείας, qui nunc exstat, his verbis: Εἰ δὲ τὰ περὶ πάπιτην αποδούσεις καὶ τὸν διηγμόνον. Αρεστέα ἀνέχεις, τὸν γλώσσαν ἐπέχεις καὶ δέοντα σ. οὐ τὸ πάπεια, οὐ γάρ εἰσίν τὸ κορυφαῖον τὸ παρόντα. Θιθεαστε, καὶ Δημόσιος, οὗ ὁ μὲν δέοντα τὸ θέριστρον φέρεις εἰσέχεις ὁ δὲ Φαληρεὺς καὶ τὴν ἐπιμνείαν λέγειν συνταχεῖτον αποδεῖν εἰσίνετεν. ORATOR parum vehemens, } defuerunt enim illi τὰ πάθη, & neru: oratorij. DVLCIS tamen, } in lib. de claris orat. Suavis, sicuti fuit, videāt maluit, quam grauis. Et in Oratore: Hic primus inflexit orationem, & eam tenerā, mollēmque reddidit. THEOPHRASTI discipulum} Quid Theophrasto initius? Cicero scriptum reliquit in Hortensio. Laërtius: Ταῦτα τύπτει μόνος λεγάμενος. Θεόρεσσον διὰ τὸ μῆνας θεάσις ποιεῖ Αρεστέα μετανόμαστο. Quæ verba quasi Cicero interpretans, Theophrastus ait, dicendi diuinitate nomen inuenit. Vide Agell.lib.xiii.cpt.5. Quintilib.x, In Theophrasto tam est eloquentiae nitor ille diuinus, ut ex eo nomen quoque traxisse dicatur. POSSIS agnoscere} agnoscuntur sape in discipulis aut virtutes, aut via præceptorum, ut in Phalereo Theophrasti suauitas: in Demosthene Isæi vis. de quo iuuenalis:

Ingenium velox, præceps facundia, sermo  
Promptus, & Isæo torrentior.

Nam in verbo, Torrentior, vis ostenditur: quæ patet etiam  
in eius

in eius, quæ exstant, orationibus. EQVIDEM & Platonem existimo, } præclara correctio. nam, quia nemini Græcorum, parem virtutique generis laudem contigisse iam ostenderat subiungit, alijs id non contigisse, quia, cū vellent, non potuerunt, ut Phalereo: alijs, quia, cū possent, noluerunt, ut Platon, Aristoteles, Demosthenes, Isocrati.

Quintilib.ix, de compos. Platonem, & Demosthenem inter se dissimiles fuisse testatur: Platonemq. compositionis diligētissimum eodem capite fuisse affirmat. Illius copiam, huius vim Cicero effinxit, teste eodem Quintil. lib. x. Asianum lib. xii. vocat. Dum Plato in Gorgia oratoribus illudit, summum agit ipse oratorem. Idem Quintil. Homericam facultatē ei tribuit. Et Panætius apud Cic. Tusc. i. vocat eum philosophorum Homerum. Videāt & Laërtius, qui ex Timone recitat, quod ad hanc rem facit. Infanti illi, in cunis dormienti, apes in labellis confederunt: & responsum est, singulari illum suauitatem orationis fore. Cic. i. de Diu. Pli. lib. xi. cap. 18. Valer. lib. i. cap. de Prodigis. Chrysostomus de sacerdotio lib. iv. Isocrati tersum tenorem tribuit, Demostheni amplam sublimitatem, Thucydidi venerandam maiestatem, Platonem excellentem dignitatem. Plato, Aristocles fuit dictus à parentibus: sed διὰ τὴν πατρότητα εἴτε οὐκ εἴτε τῷ λόγῳ, i. siue ob latos humeros, siue ob orationis amplitudinem, & maiestatem, Platonis nomē inuenit. Louem, aiunt Græci, si loqui more humano voluisse, non alio, quam Platonico genere orationis usursum fuisse. Et Cic. in libris de Oratore, Platonem, in exagitandis oratoribus sumnum oratorem agere, testatur. QVAE à Platone didicerat, } multos annos, Platone magistro, Demosthenes operam philosophique dedit: postea, cùm audiret orantem Callistratum, eius eloquentia delectatus, à philosophique studio ad oratorium artem se transtulit. Plutarchus, Libanius, Agellius lib. iii. cap. 13. Ammianus Marcellinus lib. xx x. aliij. Quanti Demosthenes Platonem fecerit, vide eius epistolam ad Heracleodorum. PRONUNCIARE} proferre, disputare, vel in scholis philosophorum, vel in libris. Vt voluit oratorio verbo, cū de summo oratore loqueretur, quamquam disputante potius ut philosopho, quam agentie ut oratore. nam, si recte animaduertimus, Platonē transfert à gymnasio in forū, Demosthenē à foro in gymnasium: vt id, quod ei propositū est, probet, utrūque

potuisse, si voluisset, in utroque genere excellere. ORNATE, splendideq. } profectò nihil hoc oratore prudentius. philosopho Platoni grauitatem, & copiam, oratori Demostheni ornatum, & splendorem, suum videlicet utriusque tribuit: ut Plato philosophia scientiam in agendis causis cum eloqua coniungeret: Demosthenes in tractanda philosophia oratoriam facultatem adhiberet: effetque, si vellet, eorum alter grauissimus, & copiosissimus orator: alter ornatissimus, & splendidissimus philosophus. DE ARISTOTELE, & ISOCRATIS. De emulatione Aristotelis, & Isocratis, vide Quinti lib. III. cap. I. Hinc diuersæ sectæ. De quibus quid senerit Cicerio, lege Plutarchum in eius vita. Vide & Cic. II. de Oratore, & Tusc. & Laërtium. SVO STUDIO} ille, philosophia; hic, artis oratoria. et si Isocrates suum studium philosophiam saepe dicat: & Socrates apud Platonem, natura philosophiam quendam in anima Isocratis inesse ait.

## C I C E R O

**S**ED, cum statuissent aliquid hoc tempore ad tescire, & multa posthac, ab eo exordiri volui maximè, quod è atati tua esset aptissimum, & auctorati mea grauissimum: nam, cum multa sint in philosophia & grania, & utilia, accurate, copiosiq. à philosophis disputata: latissime patere. videntur ea, que de officijs tradita ab illis, & præcepta sunt nulla enim vi- ta pars neque publicis, neque privatis, neque forensibus, neque domesticis in rebus, neque si tecum agas quid, neque si cum altero contrahas, vacare officio posset: in eaq. colendo sita vita est honestas omnis, & in negligendo turpitudo. Atque hec quidem questio communis est omnium philosophorum. quis est enim, qui nullis officijs præceptis tradendis, philosophum se au-deat dicere? sed sunt nonnulla disciplina, qua, propositis malorum, & bonorum finibus, officiū omne peruer-tunt:

## IN LIB. I. DE OFF.

tunt. nam, qui summum bonum sic instituit, ut nihil habeat cum virtute coniunctum: idq. suis commodis, non honestate, metitur: hic, si sibi ipse consentiat, & nō interdum natura bonitate vincatur: fit, ut neque amicitiam colere possit, nec iustitiam, nec liberalitatem: fortis vero, dolorem summum malum iudicans: aut temperans, voluptatem summum bonum statuens, esse certe nullo modo potest. quæ quamquam ita sunt in promptu, ut res disputatione non egeat: tamen sunt à nobis alio loco disputata. Ha disciplina igitur, si sibi consentanea esse velint, de officio nihil queant dicere: neque villa officij præcepta firma, stabilia, coniuncta natura tradi possunt, nisi aut ab ijs, qui solam, aut ab ijs, qui maximè honestatem propter se dicant exper-tendam. itaque propria est ea præceptio Stoicorum, & Academicorum, & Peripateticorum: quoniam Aristonis, Pyrrhonis, & Herilli iampridem explosa sen-tentia est: qui tamen haberent ius suum disputandi de officio, si rerum aliquem deletum reliquissent, ut ad officij inuentionem aditus esset. Sequemur igitur hec, quidem tempore, & in hac questione, potissimum Stoicos, non ut interpretes: sed, ut solemus, è fontibus eorū, iudicio, arbitrioq. nostro, quantum, quoq. modo videbi-tur, hauriemus. Placet igitur, quoniam omnis disputa-tio de officio futura est, antè definire, quid sit officium: quod à Panatio pretermisum esse miror. omnis enim, que à ratione suscipitur de aliqua re, institutio debet a definitione proficiere: ut intelligatur, quid sit id, de quo disputetur.

## EXPLANATIO.

**A**ETATI tuae esse aptissimum, } decet enim eruditiri adolescentem officiū potissimum colendi notitia: & decet eruditiri à patre. Aeschines praeclarè dixit, adolescentes poetarum sententias ediscere oportere, ut iis, viri cùm sint, ut possint. Imitatus est hoc loco Cicero Isocratem in oratione ad Demonicum, & Nicolem. AVCTORITATI mea grauissimum: } In argomento leui nequaquam versari debuit is, cui magnam auctoritatem honores, magistratusq. pepererūt. est autem officio nihil grauius. Magnificè ait se explicare hanc materiam ad Att. lib. xv. GRAVIA, } quæ auctoritatem habeant. VTRILIA, } ad tranquillitatem animorum. ACCVRATE, } methodicè. COPIOSE } oratione ornata, & quæ splendorem habeat. DISPVTTATA: } quæ, causis vtrinque allatis, vera esse dignouimus. FORENSIBVS, } Forenses Domesticis opposuit: cùm tamen omnes intelligeret, non quæ in foro tantum, sed quæ vbi que prorsus extra domum geruntur. Forense regnum, alicubi se amississe, queritur. NEQVE si tecum agas quid, } multa enim sèpe soli agimus: in quibus ipsis aut officium colitur, honestè: aut negligitur, turpiter. propterea subiungit: In eóque colendo sita vita est honestas omnis, & in negligendo turpitud. Seneca ait, hominem solitarium tum tibi peccatis interdicere, cùm, dignitatem sui reputans, seipsum reueretur. Huc respicit, quod est apud Isocratem ad Nicolem, & in Parænesi. Scipio dicere solitus erat, ut hic ait lib. III. se numquam minus esse otiosum, quam cùm otiosus: neque minus solum, quam cùm solus esset. Ausonius: Turpe quid acturus, te sine teste time. Philolaus autem præcipue ait homines se ipsos timere debere. IN eóq. colendo } sic Cic. Tusc. II. Ut agri non omnes frugiferi sunt, qui coluntur: sic animi non omnes culti fructum ferunt. Tota autem hæc enumeratio per pulchra est, & quæ cùm aliis eiusdem Ciceronis locis utiliter conserfi poscit. Fam. lib. v. ep. 8. Quamobrem velim, ita & ipse ad me scribas, de omnibus minimis, maximis, mediocribusq. rebus, ut ad hominem amicissimum, & tuis præcipias, ut opera, consilio, auctoritate, gratia mea sic vtatur in omnibus publicis, priuatis: forensibus, domesticis: tuis, amicorum

corum: hospitum, clientum tuorum negotiis &c. PHILOSOPHVM se audeat dicere? } Seneca ait Philosophiam esse vitæ legem. NON NVLLAE discipline } ut Epicurea: cui finis malorum est dolor, bonorum voluptas. OFFICIVM omne peruerunt. } officium, in quo bonum omne situm est, prorsus è vita tollunt. QVI summum bonum sic instituit, } ut Epicurus. Si sibi ipse consentiat, & non interdum naturæ bonitate vincatur: } si semper idem sentiat, nec se doceri, & corrigi ab ipsa rerum omnium optima natura patiatur. Natura nihil suadet, nisi bonum: turpe nihil patitur: consuetudine vincitur interdum: sed ipsa nunquam peccat: ideo laudamus eos, qui natura duce vivunt, naturamq. ducem in omnire sequuntur. NEQVE amicitiam colere posst, } de Fin. I. Neque vero hæc oratione solùm, sed et multò magis vita, & moribus comprobauit, amicitiam posse coli in hoc dogmate. Nec iustitiam, nec liberalitatem } tres attingit morales virtutes, iustitiam, Fortitudinem, Temperantiam, quas & Aristoteles agnoscit, omissa quarta, quam infra nominat, Prudentiam. nam Liberalitas iustitiae pars est, infra. ALIO loco } in libris de finibus bonorum, & malorum. FIRMA, stabilitas, } cum vero enim, ut ait Aristoteles, omnia consentiunt: à falsis autem statim discrepat. AVT ab ipsis, quisolum, } Stoicos primùm, deinde Peripateticos indicari, obscurum non est. Solam enim honestatem Stoici: maximè autem, sed non solam, Peripatetici sequebantur. EA preceptio } de officio, quæ carent illæ disciplina. ACADEMICORVM, } qui de honestate sentiebant idem, quod Peripatetici. propterea suprà, Platonicos pro Peripateticis accipi, diximus. fuerat autem veteris Academiarum princeps, & auctor Plato. ARISTONIS, Pyrrhonis, & Herilli iampidem explosa sententia est. Hic cùm Zenonem Citiæcum, Stoicæ sectæ conditorem, audissent, ab eo tamen, & ipsis etiam inter se dissenserunt. quarum opinionum varietatem collectis è Cicerone testimoniis, quam clarissimè fieri poterit ostendemus. Zeno, Polemonis Academicus auditor, cùm Academicorum dogma sequi viseretur, ac planè in aliqua parte sequeretur, ab iis tamen deflexit, Stoicamque disciplinam inituit. nam cùm Academia, id est cùm Platone, ipsius Academiarum auctore grauissimo, ac principe, de summo bono idem sensit:

cum nihil diceret esse bonum, præter virtutem: bonum solum, quod honestum: malum, quod turpe: beatam vitam in una virtute constitutam, in quibus autem ab Academia, id est à Platone, Platonisq. rationem, & auctoritatem sequentibus Speusippo, Xenocrate, & Xenocratis auditore Polemone, magistro suo, dissensit, hæc ferè sunt. Cum nihil aliud, præter honestum, numeraret in bonis, idq. appellaret honestum, quod esset simplex quoddam, & solū, & vnu bonum: cetera, eti nec bona nec mala essent, tamen alia secundum naturam dicebat, alia naturæ esse contraria, his ipsiis alia interiecta, & media numerabat: quæ autem secundum naturam essent, ea sumenda, & quadam estimatione dignanda docebat: contraq. contraria: neutra autem in medijs relinquebat: in quibus ponebat nihil omnino esse momenti: sed, quæ essent sumenda, ex ijs alia pluris esse estimanda, alia minoris. Cūmq. superiores illi non omnes virtutes in ratione esse dicerent, sed quasdam virtutes natura, aut more perfectas: hic omnes in ratione ponebat. Cūmq. illi ea genera virtutum, quæ superò dixi, seungi posse arbitrarentur: hic nec id vlo modo fieri posse disserebat, nec virtutis vsum modò, vt superiores, sed ipsum habitum per se esse præclarum, nec tamen virtutem cuiquam adesse, quin ea semper vteretur. Cūmq. perturbationem animi illi ex homine non tollerent: naturaq. & condolescere, & concupiscere, & extimescere, & efferr latitia dicerent: sed ea contraherent, in angustumq. deducerent: hic omnibus his, quasi morbis, voluit carere sapientem, Cūmq. eas perturbationes antiqui naturales esse dicerent, & rationis expertes: aliq. in parte animi cupiditatem, alia rationem collocarent: ne his quidem assentiebatur: nam & perturbationes voluntarias esse putabat, opinionisq. iudicio suscipi; & omnium perturbationum arbitrabatur esse matrem immoderitam quandam intemperantiam. Hæc ferè de moribus: nam, quod ad naturas attinet, ab iisdem etiam discrepabat. Sed in moribus à Zenone auditor eius Aristo de fine bonorum non dissensit: censuit enim nihil esse bonum, nisi virtutem: neque malum, nisi quod virtuti esset contrarium: quæ verò in medijs momenta Zeno esse voluit, ea ipse nulla esse, iisq. neutram in partem moueri, summum bonum duxit, sic enim Cicero scriptum reliquit in Lucullo. Idemq. lib. iv. de Fin. Vt Aristonis, inquit, esset explosa sententia, dicetis, nihil

tis, nihil differre aliud ab alio, nec esse res vias praeter virtutem, & vitia, inter quas quidquam omnino interesse: sic errare Zenonem, qui nulla in re, nisi in virtute, aut vitio, propensionem ne minimi quidem momenti ad summum bonum adipiscendum esse diceret: & , cum ad beatam vitam nullum momentum ea res haberet, ad appetitionem rerum esse in his momenta diceret. Et lib. i. de Leg. Siue Aristonis difficultem, atque arduam, sed iam tamen fractam, & contumeliam sectam fecuti sunt, vt, virtutibus exceptis, atque vitiis, cetera in summa æqualitate ponerent. Et infra: Si, vt Aristotele Chius solū bonū esse diceret, quod honestū esset, nullumq; quod turpe, ceteras res omnes plane pares, ac ne minimum quidem, vtrum adessent, an abessent, interesse: valde ex Xenocrate, & Aristotele, & ab illa Platonis familia dispreparat. Et lib. ii. de Fin. Tres sunt fines expertes honestatis, vnu Aristippi, vel Epicuri, alter Hieronymi, Carnecidis tertius: tres, in quibus honestas cum aliqua accessione, Polemonis, Calliphonis, Diodori: vna simplex, cuius Zeno auctor, positus in decore totus, id est in honestate. nam Pyrrho, Aristo, Herillus iamdiu abjecti. Et infra: Primum vilissimas res ad virtutem addunt, deinde singulas potius, quam omnia, quæ prima natura conciliauisset. quæ cum Aristoni, & Pyrrhone omnino visa sunt pro nihilo, vt inter optimè valere, & grauiissime agrotare nihil prorsus dicerent interesse: rectè iam pridem contra eos desistum est disputari. dum enim in una virtute sic omnia esse voluerunt, vt eam rerum selectione expoliarent, nec ei quidquam, aut vnde oriretur, daret, aut ubi niteretur, virtutem ipsam, quam amplexabantur, sustulerunt. Herillus autem ad scientiam omnia reuocans, vnum quoddam bonum vidit, sed nec optimum, nec quo vita gubernari possit. itaque hic ipse iam pridem est reiectus, post Chrysippum enim non sancte est disputatum. Et lib. iii. Cum virtutis hoc primum sit, earum rerum, quæ secundum naturam sint, habere delectum: qui omnia sic æquauerunt, vt in utramque partem ita paria redderent, vt nulla selectione veterentur, virtutem ipsam sustulerunt. Hæc M. Cato: qui pauculo post negat à se, Stoicis que reliquis tolli rerum illud discrimen, quod Pyrrho, & Aristo prorsus esse tollendum censebant. nam, cum Cicero subiunxit: Istud quidem optimè dicas: sed quæro, non ne tibi faciendum idem sit, nihil dicisti.

bonum, quod non rectum, honestumque sit, reliquarum rerum discriben omne tollenti: respondet Cato: Siquidem tollerem: sed relinquo. Et lib. v. Hoc unum Aristoteles tenuit: præter virtutem, atque virtutes, negauit rem ullam esse aut fugiendam, aut expetendam. Et in Hortensio: Aristoteles Chius, præfactus, ferreus, nihil bonum, nisi quod rectum, & honestum. Rursus ab Aristotle Pyrrho dissensit in eo, quod illi summum bonum fuit, iis, quæ Zeno inter ea, quæ secundum naturam, contrariae naturam essent, media numerabat, neutraria in partem moueri. Pyrrho autem, ea ne sentire quidem sapientem. Qua tota de re sic lib. iv. de Fin. Mili videtur loquitur ut Academicus omnes quidem illi errasse, qui finem bonorum esse dixerunt, honestè vivere, sed alius alio magis. Pyrrho scilicet maximè, qui, virtute constituta, nihil omnino, quod appetendum sit, relinquat: deinde Aristoteles, qui nihil relinquere est ausus, introduxit autem quibus commotus sapiens appeteret aliquid, quod cuique in mente incidet, & quodcunq[ue] tanquam occurreret. Is hoc melior, quam Pyrrho, quod vel aliquod genus appetendi dedit: deterior, quam ceteri, quod penitus à natura recelsit. Stoici autem, quod finem bonorum in una virtute ponunt, similes sunt illorum: quod autem principium officij querunt, melius, quam Pyrrho: quod ea non occurrentia fingunt, vincent Aristonem: quod autem ea, quae ad naturam accommodata, & per se assumenda esse dicunt, non adiungunt ad finem bonorum, desciscunt à natura, & quodam modo sunt non dissimiles Aristonem. illa enim occurrentia nescio quæ comminiscerentur: hi autem ponunt illi quidem prima naturæ, sed ea sciungunt à finibus, & à summa bonorum, quæ cùm proponunt, ut sit aliqua rerum selectio, naturam videntur sequi: cùm autem negant, ea quidquam ad beatam vitam pertinere, rursus naturam relinquunt. Herillus autem, cùm Zenonem audisset, ab eo tamen, ceterisque Stoicis, de fine bonorum in eo discrepabat, quod in cognitione, & scientia summum bonum posuit. Omitto illa, inquit in Lucullo, quæ relicta iam videtur, & Herillum, qui in cognitione, & scientia summum bonum ponit: qui cùm Zenonis fuisse auditor, vides, quantum ab eo dissenserit. Et lib. ii. de Fin. Herillus ad scientiam omnia reuocans, unum quoddam bonum vidit, sed nec optimum, nec quo vita gubernari possit. ita que

que hic ipse iampridem est reiectus. post Chrysippum enim non sanè est disputatum. Et lib. iv. de Fin. Vtrique idem faciunt, vt si laevam partem negligenter, dexteram tuerentur: aut ipsius animi, vt fecit Herillus, cognitionem amplexantur, actionem relinquerent. Et lib. v. Iuncte, & duplices expositiones summi boni, tres omnino fuerunt, nam aut voluptas adiungi potest ad honestatem, vt Calliphoni, Clitomachique placuit: aut doloris vacuitas, vt Diodoro: aut prima natura, vt antiquis, quos eosdem Academicos, & Peripateticos nominamus. Restant Stoici, qui cùm à Peripateticis, & Academicis omnia translatisse, nominibus alius easdem res secuti sunt. Iam explosæ, ciecta, q[ui]e sententiae Pyrrhonis, Aristonis, Herilli, quod in huc orbem, quem circumscripsimus, incidere non possunt, adhibenda omnino non fuerunt. Nam, cùm omnis hæc quæstio de finibus, & quasi de extremitatibus bonorum, & malorum ab eo proficiatur, quod diximus naturæ esse aptum, atque accommodatum, quodque ipsum per se primum appetatur: hoc totum & i[n] tollunt, qui in rebus iis, in quibus nihil aut honestum, aut turpe sit, negant esse ullam caussam, cur aliud alij anteponatur, nec inter eas res quidquam omnino putant interessere: & Herillus, si ita sensit, nihil esse bonum præter scientiam, omnem consilij capienda caussam, inuentioneque officij sustulit. Et infra: Sæpe ab Aristotele, & Theophrasto mirabiliter est laudata per se ipsa rerum scientia: hoc uno captus Herillus, scientiam summum bonum esse defendit, nec rem ullam aliam per se expetendam. Hoc ex Cicerone. Laertius autem Pyrrhonis, & Herilli vitam litteris mandauit, Aristonis omisit: quædam tamen de eis sparsim tradidit, ut hæc in Menedemii vita. Placet Cynicis, rationalem, naturalēmque philosophiam tolli, ab Aristotle Chio non discedentibus, moralēmque solam coli. Ibidem in extremo: Quæ inter virtutem, & virtus sunt, indifferentia, ut Aristoteles Chius, appellant. Et in Zenone Cito Aristo Chius finem esse dixit ad aliquid, inter virtutes, ac virtus indifferenter vivere, varietatem vel modicam nullam relinquens, sed æqualitatem seruans omnibus in rebus: esse autem sapientem præclaro similem histrioni, qui sive Theristis, sive Agamemnonis personam sumat, utrumque decentissimo gestu imitatur. Naturalem, ac rationalem philosophiam sustulit, alteram dicens est.

supra nos, alteram nihil ad nos, quæ verò mores corrigat, solā ad nos pertinere. Virtutes neque multis, vt Zeno, neque vñā, vt Megarici, quæ multis appelletur nominibus, induxit. De Pyrrhone, & Herillo nihil addemus ex Laertio: cū vtriusque ab eo scripta vita extet. Legendum quoque Gellium lib. 11. cap. 5. de Pyrrhonis opinione, & ea, quæ inter illum, & Academicos fuit, dissensione, lectorem admonemus. Ex **PLOSA sententia est**: audita displicere, gestus quidem, & vox, sed maximè plausus indicat, nā in explosa re videtur inesse turpitudino quædam. est autem plausus multitudinis proprius, histrioni malo plaudentis in theatro. Paradoxo 111. Histrion si paulo se mouit extra numerum, aut si versus pronunciatus est syllaba vna brevior, aut longior, exsiblatur, & exploditur. Explosa igitur est, vt absurdæ officiæ que, deest humanæ societati, contraria, Aristonis, Pyrrhonis, & Herilli sententia, sic, vt indigna prorsus haberetur contra quam vlla philosophorum sententia disputaret: neque post Chrysippum, qui ad refellendam Aristonem opinionem rationibus multis visus, contra quisquam disputauit, vnde illa lib. iv. de Fin. Gloriosa ostentatio in constitudo summo bono, cū enim, quod honestum sit, id solum bonum confirmatur: tollitur cura valetudinis, diligentia rei familiaris, administratio reip. ordo gerendorum negotiorum, officia vitæ, ipsum denique illud honestum, in quo vno vultis esse omnia, deferendum est. quæ diligenterissimè contra Aristonem dicuntur à Chrysippo. Hæc sunt, quibus & Aristonis, & reliquorum officia, discrimenque tollentium, explosa sententia est, quod idem lib. 11. de Fin. Pyrrho, inquit, Aristo, Herillus, iamdiu abiecti. Et paulo post: Quæ cū Aristoni, & Pyrroni visa sunt pro nihilo, vt inter optimè valere, & grauiissimè agrotare nihil prorsus diceret interesse: rectè iampridem contra eos defitum est disputari. Ibidem de Herillo: Hic ipse iampridem est reiectus. Et Tusc. v. Aristonis, Pyrrhonis, Herilli, non nullorūmque aliorum sententiaz euanuerunt. Hos autem, (Aristonem scilicet, Pyrrhonom, & Herillum) ait Cicero, nullum rerum delectum reliquiss, id est, delectum rerum omnii sustulisse, negasse quidquā in vita deligi debere opinantes, & afferentes, nullam esse rē, quæ probari magis, quam alia, posset: propterea nō patuisse illis aditum ad inuentione officij, emergit enim officium ex delectu, & ex eo, quod proba-

probamus: qui vero nihil diligit, nihil probat, officium inuenire qui poterit? Iure igitur corum explosa sententia est, utpote quæ à communi sensu nimium abhorret, neque dogma vllum haberet: cū nulla præterea philosophorum sententia suo dogmate careret. Laertius de Aristone nihil, vt diximus, numerat enim Aristones aliquot, opinionibus eorum omisis: inter quos non fuisse videtur hic Aristo, quem cum Pyrrhone, & Herillo, quasi vnum & idem omnes senserint, Cicero coniungit. Vnum ait musicum fuisse, alterum poetam, tertium artis oratoria scriptorem: è quibus certè hic non fuit. cū philosophus haberi vellet: tres Peripateticos addit. & Peripateticis aditus erat ad inuentionem officij, Aristoni verò huic Pyrrhoni, & Herillo non erat. Herillum autem eti Laertius nominet, non hunc esse opinor, nam Carthaginieus, quem nominat, qui finem dicebat esse scientiam, & ad viuendum cum scientia cuncta referebat, hic certè non est. Eorum igitur opinio, à Laertio prætermissa, ex Pyrrhonis opinione colligitur. is autem, vt in eius vita testis est Laertius, dogma nullum habuit, res omnes pariter contemplit, nullam ex infinita vniuersitate probauit, nihil inter eas affirmans interesse: non differre honestum à turpi, iustum ab iniusto, diutias à paupertate, voluptatem à dolore: & opinionem vita comprobasse: nam, currente aduersus euin curru, & cane, loco non cessisse, sed à familiaribus cum sequentibus retractum: eundem Anaxarcho, magistro suo, in scrobum prolapsò, opem non tulisse. Rectè igitur Cicero dixit, nullum eos rerum delectum reliquiss. Quid tamen haberent ius suum disputandi de officio, si rerum aliquem delectum reliquissent,} quo modo enim disputare de officio possunt, qui ei tollunt, vnde oritur officium: tollunt enim delectum, discriminique rerum: cum paria omnia esse putent, solum autem bonum esse, quod honestum sit. Illustrant hunc locum verba illa lib. iv. de Fin. Cū, honestum quod sit, id solum esse bonum confirmatur: tollitur cura valetudinis, diligentia rei familiaris, administratio reip. ordo gerendorum negotiorum, officia vitæ: ipsum denique illud honestum, in quo vno vultis esse omnia, deferendum est. Et quæ proxime sequuntur: Officia tolluntur, delebuntur omni, & discriminem remoto: quæ enim esse poterant, rebus omnibus sic æquatatis,

vt inter eas nihil interesset. Vt ad officij inuentionem adiutus esset. } delectu rerum peruenitur ad officium: delectu autem sublato, quem tres illi tollebant, aditus ad officij inuentionem præcluditur. Hoc quidem tempore, & in hac questione, } germanum Stoicum non fuisse, haec verba declarant, et enim perpicuum, hoc dici: se quidem hoc tempore, & in hac quaſtione addictum esse vele Stoicorum doctrinæ: alio tempore, & in hac quaſtione non item. POTISSIMUM Stoicos, } Stoicos potius, quam alios, quod ea disciplina honestatem, & officium in primis coleret, rectè igitur, cum de moribus ageret, eos maximè, qui moribus excellerent, imitandos filio proponit: vt, si minus ad summum perueniat, laudem tamen, in medio consistens, haud paruam essequeatur. Hos Tusc.iamicos suos dicit. Non ut interpretes, } interpretes nullam eius libri, quem interpretantur, fententiam prætermittunt. id enim eorum munus est, eam Cicero exiguum laudem putat: ideo subiungit. Sed, vt solemus: quia, cum veterum Græcorum scientiam Latinè referret, de suo multa solitus esset addere: ne alienat tantum seruire videretur industria: nullius addictus iurare in verba magistri. E fontibus eorum, } Cicero Acad. I. Meos, inquit, amicos, in quibus est studium, in Græciam mitto: ideo, ad Græcos ire iubeo, vt ea è fontibus potius hauriant, quam riuiulos concententur. Quo modo videtur, } addendo, minuendo: quo sint illa ipsa, quæ de Græco vertuntur, & utilia Latinis hominibus, & incundiora, quam si Græca legerentur. propterea dictum est in prima Proœmij parte: Ut non modò Græcarum litterarum rudes, sed etiam docti, aliquid se arbitrentur adeptos & ad dicendum, & ad iudicandum. A. PANAE TIO } Stoici, clari nominis philosophi: qui in hac potissimum quaſtione sequebatur, Rhodi natus est, vt & Posidonius. docuit minorem Africanum. PRAETERMISSVM. } Miratur Cicero à Panætio officij definitionem præternissam esse: atque ita eum simul reprehendit: in quam quidem reprehensionem ipsummet Ciceronem, qui, quid sit Officium, definire pollicitus est, docti viri incidisse ajunt, non enim subiicit, quid sit Officium, sed diuidit. At dicendum, præclare fecisse Ciceronem, qui, cum sciret, non vnam esse hominum actionem, sed multiplicem: atque etiam varia officiorum genera: siccirco non

potuit

potuit vnam ac simplicem officij definitiōnē tradere. Hac igitur de causa primum ab officij definitione exorsus est, deinde officium ipsum diuidendo definiit. MIROR. } miti verbo vtitur: de magistro loquens. OMNIS INSTITUTIO } omnis disputatio. nam disputatio docet, atque instituit. A. RATIONE } si modo rationem sequi volumus in disputando. quæ potest enim esse, sine ratione, recta institutio? DEBET à definitions proficiat, } initium sumere, hoc seruatur ab Aristotele in omnibus ferè libris. quod si omittatur, incerto quasi grādu procedimus ad id, de quo futura disputatio est. nam post definitionem considerantur partes, ex quibus constat: quibus cognitis, obscuritatis in subiecta re nihil relinquetur.

## C I C E R O .

OMNIS de officio duplex est quaſtio. vnum genus est, quod pertinet ad finem bonorum: alterum, quod positum est in preceptis, quibus in omnes partes vñs vite conformari posſit. Superioris generis huinsmodi exempla sunt: omnia ne officia perfecta sint: numquid officium aliud alio maius sit: & quæ sunt generis eiusdem. Quorum autem officiorum precepta traduntur, ea quenquam pertinent ad finem bonorum, tamen id minus apparet, quia magis ad institutionem vite communis spectare videntur. de quibus est nobis his libris explicandum. Atque etiam alia diuīſio est officij. nam & medium quoddam officium dicitur, & perfectum. perfectum officium rectum (opinor) vocemus, quod Græci οὐτόπωμα, hoc autem, commune, quod ij καθηνον vocant. atque ea sic definiunt, vt, rectum quod sit, id perfectum officium esse definiant: medium autem officium, id esse dicant, quod cur factum sit, ratio probabilis reddi posbit.

## EXPLANATIO.

**O**MNIS de officio duplex est quæstio. } Velle se Officium definire, vt diximus, pollicitus est, & diuidere potius videtur, quam definire. Sed in diuisione continentur ipsa definitio, nam, cum officium ita diuiditur: Officiorum duo genera, vnum, quod pertinet ad finem bonorum, alterum, quod positum est in præceptis, quibus in omnes partes vsus vita conformari poslit: quis non videt, duas oriri definitiones? vnam prioris generis: Officium est illud, quod pertinet ad finem bonorum. alterum posterioris: Officium est illud, quo vita communis instituitur, & conformatur. Hæc igitur est prima diuisione, & prima definitio, simul iunctæ. Altera diuisione, & altera definitio, separatim traditæ, sequuntur infra, in iis verbis: Atque etiam alia diuisione est officij. nam & medium quoddam est officium, & perfectum. atque ea sic definiunt, vt, rectum quod sit, id perfectum esse dicant; medium autem officium id esse dicant, quod cur factum sit, ratio probabilis reddi poslit. Q[uo]d pertinet ad finem bonorum. } quo ignorant, finem bonorum nosse, & consequi non licet. ad finem enim bonorum ducimur officiorum via. V[er]us vita conformari posbit. } mirum est, quam multis in locis, pro Conformare, scripserant imperiti librarij, Confirmare, ignoratione pulcherrimi verbi, quod etiam hic reposuimus: nec veremur, quin periti Latini sermonis nostram coniecturam probent, ac sequantur. Loquitur enim hic Cicero de vita hominum, præceptis emendanda, officiorumque obseruatione ad virtutem dirigenda. quæ si per se esset optima, quid præceptis opus esset? aut cur hos libros de Officiis Cicero conscriberet? Ergo præcepta tradenda fuerunt: vt vsus vita ad honestam, laudabilemque formam redigeretur. In quo non quadrant, aut certè multo minus conuenit, confirmari. Mecum faciunt duo ex meis veteribus libris. **P E R F E C T A** } i. eo & iudicio, & voluntate suscepta, & ad exitum perducta, vt nulla ignorantiae nubecula, nulla prauæ cupiditatis labe admista contamineatur, vt ad verum scopum, citra villas ambages, contendatur, nec usquam ab eo deerretur. N[on] M[al] Q[ui] V[er] I[ust] B[ea]C[us] officiu[m] aliud alio maius. } hæc quæstio ex altera p[ro]cedet. si. n. non omnia officia perfecta sunt: aliud officiu[m] alio esse maius aut minus, satis appetet. perfecta enim

enim, & magnitudine, & dignitate imperfectis præstanti minoraque sunt τα λεπίδια της κατορθωσίας. A T Q U E etiam alia diuisione est officij. } altera officij diuisione: è quaitem o- ritur altera definitio. **P E R F E C T U M** officium, } quod in Tusc. Cic. ostendit, cùm agit de contemnenda morte, de ferēda, paupertate. itaque pertinet ad solum sapientem. Lib. III. Illud quidem honestum, quod propriè, verèq. dicitur, id in sapientibus est solis, neque à virtute diuelli inquam po-test: in ijs autem, in quib. sapientia perfecta non est, ipsum illud quidem perfectum honestum nullo modo esse potest, similitudines honesti esse possunt. **Kατόρθωσις.** } i. officium perfectum, quod vir sapiens facit. **Kαθηναρ.** } i. officium medium, quod facere potest ille, qui perfectè sapiens non est. nam stōici eum sapientem vocant, qui nunquam fuit, neque esse poterit, vel futurus non est. qui vero sapiens non est, perfectum officium facere non potest. **H o c au-tem commune,** } de quo diximus his libris explicandum.

## C I C E R O.

**T**RIPLEX igitur est, ut Panatio videtur, con-silij capiendi deliberatio. Nā, honestū ne facta sit, an turpe, dubitanti; id quod in deliberationem ca-dit, in quo considerando, sepe animi in contrarias sen-tentias distractabuntur. Tum autem inquirunt, aut con-sultant, ad vitæ commoditatem, incunditatēmque, ad facultates rerum, itque copias, ad opes, ad potestiam, quibus & se possint uiuare, & suos, conducat id, nec ne de quo deliberant: quæ deliberatio ornatis in rationem utilitatis audit. Tertium dubitandi genus est, cùm pugnare videtur cum honesto id, quod videtur esse utile. cùm enim utilitas ad se rapere, honestas contraria reuocare ad se videtur; fit ut distractatur in deliberando animus, afferatq. anticipitem curam co-gitandi. Hac in diuisione, cùm præterire aliquid ma-ximum vitium in diuidendo sit, duo prætermissa sunt.

*nec enim solism utrum honestum, an turpe sit, delibera-  
rari solet; sed etiam duobus propositis honestis, utrum  
honestius; itemque, duobus propositis utilibus, utrum  
utilius. ita, quam ille triplicem putauit esse ratio-  
nem, in quinque partes distribui debere reperitur.  
primum igitur est de honesto, sed dupliciter, tum pa-  
ri ratione de utili; post de comparatione eorum dis-  
serendum.*

### EXPLANA T I O.

**T**RIPLEX igitur est, ut Panatio videtur consiliū capiendi de:  
liberatio. } vide Ciceronem ad Att. lib. xvi. Sunt au-  
tem quæstiones de Officijs quinque, i. Honestum, an turpe.  
ii. Honestū honesto honestius. iii. Vtile, an intile. iv. Vtile  
utili utilius. v. de Comparatione. **T**V M autem inquirunt, aut  
consultant, } est quædam ingeniorum procliviitas ad mutan-  
dum, qui morbus multis corruptit Latina lingua partes.  
Aequē Latina verba sunt, Inquiero, & Anquiero: quæ igitur  
in libris retineantur, nisi si consensus omnium veterum li-  
brorum aduersetur: cùm præsertim, vtro modo legatur,  
sententia lucri nihil faciat, alioqui lusus quidam videtur  
si, cùm nihil accedit ad sententiam, verborum mutatione  
delectemur. In meis quatuordecim antiquis libris est, In-  
quirunt, quo libentius, quod receptum iam est, tueor. vnuis  
Tertij habet, Tum autem aut inquirunt, aut consultant. **V**I-  
**TAE** commoditatem, } alias enim alij cominoda sunt, pro  
ingeniorum, corporum, fortunarum, studiorum varietate.  
**I**VCVN DITA TEM, } Aristoteles, qui certa aliqua re dele-  
ctantur, *πενιστής* appellat. **F**ACVLTATES rerum, at-  
que copias, } non tantum, quantum opus est, sed etiam ut su-  
perficit. **O**PES, } i. amici, gratia, auctoritas. inde Ad-  
agium, Vbi amici, ibi opes. non enim pecuniam tantum si-  
gnificat. vnde, Opem ferre, liuare. **P**O TENTIAM, } i. de-  
fensionem sui, & suorum, offenditionemq. aduersariorum:  
non modò ut tuti ab injuria, verùm etiam inimicis formi-  
dabiles, amicis autem solatio, præsidioq. simus. **I**N rationem  
utilitatis calit. } Obsruandum hoc loquendi genus; Ratio-  
cum

cum genitiuo. **V**IDE TVR } hominibus leuiter eruditis,  
populärerq. & sentientibus, & loquentibus. Stoici enim ni-  
hil putabant vtile, quod honestum nou esset. Inde Ausonius:  
Numquam discrepat vtile à decoro. Lib. iii. coniungit utili-  
tatem, & honestatem. **C**VM honesto } quod lucet ipsum per  
se. **I**D, quod videtur esse vtile. } quod falsa specie utilitatis  
blanditur, naturāmq. boni fallaciter imitando adulterat. **R**A-  
**P**E R E } utilitatis maiorem esse vim indicat. **R**EVOCA-  
**R**E } ducere, allucere, persuadere. Reuocare, autem dicit,  
ut ostendat hominem natura esse honestati coniunctum, à  
qua interdum abstrahit specie utilitatis, & illecebris vo-  
luptatis. **A**NCIPITEM curam } Ouidius.  
—aliudque cupido,

Mens alius suadet. Video meliora, proboque,

Deteriora sequor.

Imitatus autem Ouidius Euripidem Medea.

Qui & in Hippolyto Coronato idem dixit.

Demosthenes quoque de suis Atheniensibus queritur, rei  
bene gerendæ plerasque occasiones eos amisisse, non quod  
ignorarent, quid officij sui esset, sed quod id exsequi nollent.  
hæc autem eius sunt: οὐ γέρε πάντας, τὰ πάντα τὸ δεξ-  
γάτων εἰποδόχεις, τῷ μη δύναται τὸ δέντρα παῖς, τῷ μη συσ-  
τημα. **P**RI M V M igitur est de honesto, sed dupliciter; tum pari rati-  
one de utili; post de comparatione eorum videretur. } his verbis  
argumentum horum trium librorum persequitur.

### C I C E R O.

**P**RINCPIO generi animantium omni est à  
natura tributum, ut se, vitam, corpū, tueatur,  
declinetq. ea, que nocitura videantur; omniaque,  
que sint ad viuendum necessaria, inquirat, & paret,  
ut pastum, ut latibula, ut alia eiusdem generis. com-  
mune item animantium omnium est coniunctionis  
appetitus procreandi causa, & cura quadam eorum,  
que procreata sunt. sed inter hominem, & belluam  
hoc maximè interest, quod hec tantum, quantum sen-

su mouetur, ad id solum, quod adest, quodque præsens est, se accommodat, paululum admodum sentiens præteritum aut futurum: homo autem qui rationis est particeps, per quam consequentia cernit, principia, & causas rerum videt, earumq. progressus, & quasi antecessiones non ignorat, similitudines comparat, rebusq. præsentibus adiungit, atque anneclit futuras: facile totius vita cursum videt, ad eamq. degendam præparat res necessarias: Eadémq. natura: vi rationis hominem conciliat homini & ad orationis, & ad vitæ societatem, ingeneratq. in primis precipum quēdam amorem in eos, qui procreati sunt: impellitque, ut hominum cœtus & celebrari inter se, & sibi obædire velit; ob easq. causas studeat parare ea quæ suppeditent ad cultum, & ad victimum, nec sibi soli, sed coniugi, liberis, ceterisque, quos caros habeat, tueriq; debeat. quæ cura exsuscitat etiam animos, & maiores ad rem gerendam facit. in primisque hominis est propria veri inquisitio, atque inuestigatio. itaque, cum sumus necessariis negotijs, curisq. vacui, tum auemus aliquid videre audire, ac discere; cognitionēmq. rerum aut occultarum, aut admirabilium, ad bene, beatēq. vincendum necessariam ducimus. ex quo intelligitur, quod verum, simplex, sincerumq. sit, id esse nature hominis aptissimum. Huic veri videendi cupiditati adiuncta est appetitio quadam principiatus; ut nemini parere animus bene informatus à natura velit, nisi præcipienti, aut decenti, aut utilitatis causa iuste, & legitimè imperanti: ex quo animi magnitudo exsistit, humanarumq. rerum contemptio. Nec verò illa paruavis natura est, rationis que, quod unum hoc animal sentit quid sit ordo, quid sit quod deceat in factis, dictisque, qui modus. itaque

corrum

eorum ipsorum quæ adspicit sentiuntur, nullum aliud animal pulchritudinem, venustatem, conuenientiam partium sentit. quam similitudinem natura, ratioq. ab oculis ad animum transferens, multo etiam magis pulchritudinem, constantiam, ordinem in consilijs, factisq. conseruandum putat; canetque, ne quid indecore, effeminatève faciat, tum, in omnibus & opinioribus, & factis ne quid libidinosè aut faciat, aut cogitet. quibus ex rebus conflatur, & efficitur, id quod querimus, honestum; quod etiam si nobilitatum non sit, tamen honestum sit; quodque vere dicimus, etiam si à nullo laudetur, laudabile esse natura.

## EXPLANTATIO.

**P**RINCPIO generi animalium omni est à natura tributum, &c. Stoicos imitatur, qui initio disputationis prima quæque à natura ducebant. quod Plutarchus de Chrysippo scriptum reliquit. Idémq. tradit Cicero lib.v. de Finibus. Principio: Sic Liuius: Iam primum omnium satis constat. Præclarum autem est scribendi, atque etiam dicendi ratio, cùm à genere ad partes, & à partibus ad vnum illud, quod propositum nobis est, oratio deducitur. Ut se, vitam, corpūsq. tueatur, Taurus apud Agell.lib.2. cap.5. Natura, inquit, omnium rerum, quæ nos genuit, induit nobis, inoleuitq. in ipsis statim principijs, quibus natūsumus, amorem nostri, & caritatem, ita prorūs, vt nihil quidquam esset carius, pésiusque nobis, quām nosmetipſi. Se, totum est. Vitam, id est animal, quæ est vite causa. Tueatur: vim vi repellat. hinc bruta, dentibus, cornibus, vnguisbus, testis, crustis, squamis, spinis, & id genus alijs rebus armata, & munita sunt, vt aut vim propulsare, aut quomodocumque se tueri queant, alia minus, alia magis. Vnde illud Phocylidis: Οπαριστεται νεφεδος. Raro eiusdem generis animantes mutuo se deuorant, aut ledunt, nisi irritatae, quod Plinius tradit lib.vii. & Iuuenalis Sat.xv. Solus homo homini inimicus. Quæ noctura rideantur; Plin.lib.lxxix.cap.4. Nimirum hæc est natura re-

rum, hæc potentia eius, sœuissimas ferarum, maximæque, quæ nunquam vidissent, quod debeant timere, statim intelligere, cur sit timendum. **O M N I A Q U E q u e s i n t a d v i n e n d u m n e c e s s a r i a ,** } Plut. πέντε δὲ οὐρανού μάτια τὰ χερσοῖς, τὰ τρισπόδη. & in Gryllo, siue τὰ τὰ ἀλογα λέγε καὶ θεοί. **C O N I N V C T I O N I S a p p e t i t u s ,** } Aristoteles: φυσικοτάτου εἰς τοντονικόν φαίνεται: Procreare sui similem, est maximè secundum naturam. Plato in Coniuio, partum, fetumque ex congressu viri, & mulieris prouenientem, diuinum opus appellat. **E T c u r a q u e d a m c o r u m q u e p r o c r e a t a s f a n t .** } scilicet, nutriendi. Vide Phaorinum apud Agell. lib. xii. cap. i. Macrobius lib. v. cap. ii. & Plut. in lib. de liberis educandis. **S E D i n t e r h o m i n e m , & b e l l u m h o c m a x i m ē i n t e r f i g t , q u o d h e c t a n t u m , q u a n t u m s e n s a m o u e t u r , a d i d s o l i u m , q u o d a d i s t , q u o d q u e p r e s e n s e s t , s e a c c o m m o d a t ,** } Videtur Aristotelem imitatus in eo loco Pol. 1. καὶ οὐ καταράντων ταῦτα, δοτον αἰδενεῖσθαι. **S e n s u m o u e t u r :** Prouerbiū: Εἴ τε εἰσερχεῖ γῆρας καὶ σπάτε τὸ ἔπειρον: Amor ex adspicere nascitur mortaliibus. **H O M O a u t e n i , q u i r a t i o n i s e s t p a r t i c i p e s , p e r q u a m c o n s e q u e n t i a c o n n i t , & c a u s a s r e r u m v i d e t , e a r ù n q u e p r o g r e s s u s , & q u a s i a n t e c c e s s i o n e s n o n i g n o r a t , & s i m i l i t u d i n e s c o m p a r a t , r e b u s q u e p r e s e n t i b u s a d i u n g i t , a q u e a n n e c l i t f u t u r u s ;** } hoc plane totum sumptum ex Polyb. lib. vi. τὸ δέ πλούτον τὸν αὐτοπόνον, inquit, των διαφορῶν τὸν διατραχεῖν τὸν ζωαν, τὸν πολεμιώντων τὸν πολεμόν, τὴν δυστυχίην τούτην παρεγένεται, καὶ τοὺς πλειονεργούς διαστρεψάν, καὶ διατραχεῖν τὸν αἰτωλὸν ζωαν, αἱ πολιτείαι τούτων πολεμούσαι, τὴν δυστυχίην τούτην παρεγένεται, περισσότερον τὸ πάντα, καὶ συλληγότερον, καὶ τούτην παρεγένεται τὸν εὔρεταινον τούτων τούτους. Quibus tamen in verbis suspicor esse mendum: nec Perotinus interpretem locum recte vertit: qui mihi videtur ex Cicerone posse corrigi, aut egregie saltē intelligi. Quintilianus lib. xi. cap. i. Atque adeò naturalis est homini ratio, vt, sicut aues ad volitum, equi ad cursum, ad sœvitiam feræ gignuntur: ita nobis propria est agitatio mentis, atque follertia, vnde origo animi cœlestis creditur. hebetes vero, & indociles non magis secundum naturam eduntur, quam prodigiosa corpora, & mōstris insignia. Vide Cic. i. de Leg. 17. Lactant. de opificio hominis, ca. 2. eundem Quint. lib. xi. cap. 17. Senecam lib. x. Epist. qui ait, Rationem hominis esse propriam, catena illi cum animalibus communia esse. In quo forte Aristotelem sequitur, i. de hist. anim. Phocylides:

Οπλαν

Οπλαν τοι λόρες αὐδῆς τυμωπερές ιστι σεβίζου.

Id est: Ratio, &amp; oratio sunt arma hominis, acutiora ferro.

Euripides:

Βεργον τοι οδεῖς δίδεσσι, αἰλαν πονητούς πρεπήδων δαμάσκη φύλα πόντους, χθονίαν τ' εανὶ τηγανίζεισθα.

Id est: Exiguae quidem sunt hominis vires: sed ingenio solertia

Domat marinas bellas, &amp; varios terrestrium animalium fetus.

**P R I N C I P I A & c a u s a s r e r u m v i d e t ,** } glosteina suplicor faisse. Principia: nec est in antiquis librīs, nec requirit à sententia: quod tamen valde me mouit, librum habeo veterem, in quo scriptum est, supra verbum Caussas, Id est principia. Ut iam, nisi fallor, de loci sinceritate dubitatio nulla relinquatur. **E A R V M Q . p r o g r e s s u s . & q u a s i a n t e c c e s s i o n e s n o n i g n o r a t ,** } earum rerum, non earum causarum, interpres, homo enim rationis ope intelligit, quo modo res & progressus, & quasi antecedunt. Addidit autem Cicero, Quali, quia propriæ res non antecedunt, sed videntur antecedere, cognitis earum causis, ex quibus ipsæ res oriuntur, & in quibusesse quodam modo videntur. Progressus, nō, Prægressus, & sententia postulat, iam à nobis explicata, & eo libentius retineo, quia testimonio comprobatur meorum omnium veterum librorum. **E T s i m i l i t u d i n e s c o m p a r a t :** ne desciscere videar ab antiquitate, quam sequi me profiteor, addidi copulam: cùm in veteribus cunctis exemplaribus vel ea ipsa sit, vel, Sed: quod minimè placet. **R E B V S Q . p r e s e n t i b u s a d i u n g i t , a q u e a n n e c l i t f u t u r a s ,** } Homerus de Calchante:

Οτι γένδεται τὰ τέλοτα, πατέται τὸν οὐρανόν τούτον εύτα.

Ex quo Virgilius de Proteo:

--- norat,

Quæ sint, quæ fuerint, quæ post ventura trahantur.

**V T h o m i n u s c æ t u s & c e l e b r a r i i n t e r s e , & sibi o b æ d i r e v e l i t ;** } quis non intelligit, ciuitates describi? cætus enim multorum hominum, legibus vtentium, Ciuitas est. Verbum, celebrari, frequentiam congregata multitudinis ostendit: obædire, leges: quæ nisi sint, cætus ille hominū nemini obœdiat; sed ex libidine sua, temerè ferarum more viuat. **C e l e -**

*brari autem, pro Coire, ex quo, Celebris locus, & Desertus, opponuntur. Sy ppeditent* sunt, qui legant, *Suppetitent: ut sit frequentatuum à Suppeto. Ceterisque, quos caros habeat,* In eam sententiam Euripides in tragediæ, quæ *Herculeam* inscribitur, exordio:

Πάλιν πότι ἐστὶ τοῦ ματρός φύσις,  
Ως ὁ δίκαιος τοῖς πέποντις αἴρετο.  
Οὐδὲ εἰς τὸν αρρενεῖον ἔχειν αἰτεῖται περ,  
Πόλεμον ἀγέρνατον, οὐδὲ σωματικῶν βαρύν,  
Αυτὸν δὲ ἀγέρνατον, &c.

**I**d est: Iam olim in ea sententia fui, Virum bonum aliis esse natum. Cuius verò animus pecunia inhiat, is & Rèip. est inutilis, & ad commercia difficultis, & fibi ipsi verò optimus. **E**x vscitat à somno ignauia. Sic Virg. Geo. i. de Ioue:

--curis acuens mortalia corda

Nec torpere gratiæ passus sua regna veterno,  
Vt varias vñs meditando extunderet artes.

**H**OMINIS est propria veri inquisitio, atque investigatio, metaphoræ, à venatoribus, qui è vestigijs lūstra ferarum indagant. Vnde illud apud Comicum: Pedum visa est via. Natura enim haberet quedam sensibus obvia, è quibus concludit ratio, quæ sensus perspicere nullo modo potest. Inde Ouidius è recto statu corporis humani colligit homini res cælestes esse propositas, Metam. i.

Pronaq. cùm spectent animalia cætera terram,  
Os homini sublime dedit, cælumq. videre  
Iusit, & erector ad sidera tollere vultus.

Et Sallustius in Catilinæ procœdio: Omnes homines, qui sese student præstare ceteris animalibus, summa operaniti decet, ne vitam silentio transcant, veluti pecora, que Natura prona, atque ventri obcedentia, finxit. Cicero pro Milone ex humana mente ratiocinatur, Mundi vniuersitatem diuina quadam mente gubernari. eius hæc sunt: Neque in his corporib, atque in hac imbecillitate nostra, ineft quiddam, quod vigeat, & sentiat: & non est in hoc tanto naturæ, & tam præclaro motu. Cic. de Leg. l. i. & de Nat. de l. 2. Naturam, inquit, nos celsos, & rectoros constituisse, vt deorum cognitionem, cælum intuentes, capere possemus. Et Plato in Cratyllo. **I**de *natura hominis aptissimum.* natura enim

omnes

omnes homines scite desiderant. Proverbium est, Veritatis simplex oratio. Mendacia, & simulationem Euripides infestatur, Andromacha:

Ω μηδὲ ἀδράτων ἔχεται βέρετῷ  
Σπάρτης ἔνειναι, δόλαι τε πυλάριστα,  
Ψεύδει ἀριστεῖς, μη περιπέτεια κακῶν,  
Ελαττα, καὶ καθένα οὔτε: δῆλα πάντα πέριξ  
Φεροῦντες, εἰδίκος δύναχεται ἀτέλεια.

**I**d est: O Spartani, omnibus mortalibus inimicissimi, do-losi consoltores, mendaciorum reges, callidi malorum con- cinnatores, sine illo candore, perplexi, & intricatis animis: iniuria felices estis in Græcia. **V**er ividendi cupiditat<sup>i</sup> **V**idendi, participium præsentis passionis est, Linacro. A p e- t i t i o q u a d a p r i n c i p a t u s : hinc Cæsar in parvulo opidulo primus, quam Romæ secundus, esse malebat. Hinc illud:

Πην. δι: μην φερεῖ γέγονον ἡτεράνην,  
Αἰτεισθεν, καὶ τὰ τερεράνην φερεῖναι.

**I**d est: Peleus grandior nato inaudabat Achilli,  
Fortia facta gerens alios superaret vt omnes.

Et apud Lucanum,

--Cæsar non ferre priorem,  
Pompeius ve parem voluit--

**V**t nemini parere animus } Ari totelez iv. Politic. c. ii. Ex quo animi magnitudo exsistit, humanarumque rerum contéptio. } proxime dixit, Vt nemini parere animus bene informatus à natura velit, nisi præcipienti, aut docenti, aut vt utilitatis causa iuste, & legitimè imperato. Quæ verba satis ostendunt, sermonem de virtute subiungi. Est autem virtus, Animi magnitudo, humanarumq. rerum contemptio. non, Humanarumq. rerum contentio: vt alij malunt. Ego, præter sentiam, satis, vt arbitror, perspicuum, vetere, etiam libros, consentientes in, Contemptio, fecutus sum. **E**orū ipso- rum, quæ adspicuntur, } cùm oculorum sensu bruta quo- que vtantur, ordinem tamen in sensilibus non agnoscunt. Gustum, Tactumq. Aristoteles ἀνολάγει, hoc est intempe- rantes, dixit: Gellius, belluinos, quod ex ipsis immodica volu- ptas capiatur. Reliquos, Vistum, Auditum, & Olfactum ho- mini soli tribuunt, A B oculi ad animum. } Inde Plato adspic- tor non tam *περὶ τὸ ἄνθρωπον τὸ θάνατον*, hoc est, à vultu sursum conuerso, quād *περὶ τὸ ἄνθρωπον τὸ θάνατον*, à rebus, quas vide- rit, considerandis dictum putat. Menander:

*Οὐ καὶ εἰς τὸν αὐτὸν τὸν αὐτὸν ἡ.*

*Quām suavis res est homo, si sit homo.*

**I N D E C O R E , }** contra modestiam, sive temperantiam.  
**E F F E M I N A T E V E , }** moliter: mulierum more: contra viri decorum. nam Mulierem diclam, quæ si Mollem aërem, ab animi molliti, Grammatici aiunt: Graciverò Virum, Atex dicunt, quasi *ἄνθρωπος*. **L I B I D I N O S E , }** exclusa ratione. **N O B I L I T A T U M , }** hoc explanatur proximè sequentibus verbis. Nobilitatum: multorum sermonibus, & admiratione celebratum.

### C I C E R O .

**F**ormam quidem ipsam, Marce fili, & tanquam faciem honesti vides: quæ si oculis cernetur, mirabiles amores (vt ait Plato) excitare sapientia. Sed omne, quod honestum est, id quatuor partium oritur ex aliqua: aut enim in perspicientia veri, sollertiaq. versatur: aut in hominum societate tuenda, tribuendo suum cuique, & rerum contractarum fide: aut in animi excelsi, atque inuicti magnitudine, ac robore: aut in omnium, que sunt, queque dicuntur, ordine, & modo, in quo inest modestia, & temperantia. quæ quatuor quanquam inter se colligata, atque implicata sunt: tamen ex singulis certa officiorum genera nascuntur: velut ex ea parte, quæ prima descripta est, in qua sapientiam, & prudentiam ponimus, inest indagatio atque inuictio veri: eiusque virtutis hoc munus est proprium. ut enim quisque maxime perspicit, quid in re quaque verissimum sit, quidq. & acutissime, & celerrime potest & videre, & explicare rationem, is prudentissimus, & sapientissimus ritè haberi solet. quo circa huic, quasi materia, quam tractet, & in qua versetur, subiecta est veritas. reliquis autem tribus virtutibus necessitates propositæ sunt ad eas res parandas.

randas, tuendasque, quibus actio vita continetur; vt societas hominum. cōiunctiōq. seruetur, & animi excellentia, magnitudoq. cum in augendis opibus, utilitatibusq. & sibi, & suis cōparandis, tum multo magis in his ipsis despiciendis eluceat. Ordo autem, & constantia, & moderatio, & ea, quæ sunt his semilia, versantur in eo genere, ad quod adhibenda est actio quadam, non solum menis agitatio. his enim rebus, quæ tractantur in vita, modum quendam adhibentes, & ordinem, honestatem, & decus conservabimus.

### E X P L A N A T I O .

**F**ORMAM quidem ipsam, } Homines ait habere semina quædam, & virtutis igniculos à natura datos, ex quibus conflatur honestum, quod est secundum naturam, & diuiditur in quatuor partes, Prudentiam, Iustitiam, Fortitudinem, Temperantiam: quæ sunt magnæ, & veræ virtutes, quod ex ratione orientur: quia nihil in homine diuinus. De his ergo disputat, quos appellat fontes omnium officiorū. Sed prius de officijs, i. operationibus studio. is, quæ ab ipsa Prudentia oriuntur; inde à Iustitia, & Fortitudine; postremo à Temperantia: ubi declarat, quid sit illud decorum, quod ubique seruandū est. demum, propositis duobus honestis, utrum sit honestius. VT ait Plato, } in Phedro. **M I R A P I L E S** amores excitaret sapientia. } inde natū adagium: Εκ τοῦ σέφεν γάγγραν τὰ σέφεν. Quod Græcorum scriptis celebre est. Sui, pro Sapientia, reponendum quidam putarunt: ex Platone, cuius hæc sunt: Οὐτε ηγετικόν τοῦ δια τὰ σώματα οὐχ θεται αἰδησίων, οὐ φέύγει τούτου. Σενος δοκιμαστηριον λέγεται, ἵπποι πονοντος εἰς τὴν τούτην εἰσερχεται εἰδοντος περιέχοντο εἰς τὴν τούτην. Cicero etiam lib. II. de Fin. Quām illa, inquit, ardentes amores excitaret sui, si videretur. Sed, si retineas, Sapientia, ita explana: **sapientie**: fons enim, unde manat sapientia, honestum est. **C O L L I G A T A , }** vnam enim virtutem qui possidet, reliquas item possidere dicitur. quod Aristotelici, teste Laertio, negant. **S V B I E C T A** est veritas. } quæ animæ tantum oculis cernitur, vt ait Plato. **R E L I Q V I S** autem tribus virtutibus } Aristoteles Prudentiam

omittit. nec enim verè separata quædam virtus est, sed communicatur omnibus virtutibus. PAR ANDA's, tuendisq; non enim minor virtus est. quām querere, parta tueri. DEMOSTHENES Olynth. I. οὐδὲ πολὺς χαρεποτεγνῶν δοκεῖ τὸ φυλασσεῖν ἀρετὴν, τὸ κληροδοτεῖν. Sallust. Cat. Virtus, atque sapientia, maior in illis fuit, qui ex paucis opibus tantum imperium fecere, quām in nobis, qui ea, bene parta, vix retinemus. Et, Iugurtha: Maius dedecus est, parta amittere, quām omnino non paruisse. Et, in concione Marij: Nobilitatem certè perperire, quām acceptam corrupisse, melius est. Thucydides quoque lib. 2. in concione Pericles 2. Αἰχνευ, ἔχεται ἀριστερή, οὐτούργειον ἀνυπόθετη. Demosthenes tamen Olynth. II. & ibi Vlpianus, fallitum hoc ait esse: Πάλιν μέντοι ἔχεται φυλασσεῖν, οὐ κτίσασθαι πάθεται πέμψει. QVIBVS ACTIO VITE COMINETUR: rectè Aristoteles: Αθηναῖον οὐ μηδέποτε πάχειαν ἀχεριστον ὄντα. Inde. Orator: Δέντε δι χρημάτων, καὶ αὖτε τύπον εὑδεῖτεν θεράπευτών. Opus est pecunia, & hinc ea nihil fieri potest ex iis, quæ sunt necessaria. ACTIO VITE: οὐ περιττος βέσθαι. Et hæc est Prudentia. SOCIETAS HOMINUM, Iustitia. ANIMI excellentia. FORTITUDO. ORDO autem, Temperantia.

## C I C E R O.

**E**X quattuor autem locis, in quos honesti naturam, vīm, diuisimū, primus ille, qui in veri cognitione consistit, maxime naturam attingit humanam. omnes enim trahimur, & ducimur ad cognitionis, & scientie cupiditatem, in qua excellere pulchrum putamus: labi autem errare, recedere, & decipi, & malum, & turpe ducimus. In hoc genere & naturali, & honesto duo vitia vitanda sunt: unum, ne incognita pro cognitis habeamus, hisq; temere assentiamus: quod vitium effugere qui volet, ( omnes autem velle debent adhibebit ad considerandas res & temporis, & diligentiam. alterum est vitium, quod quidam nimis magnum studium, multamq; operam in

res

## IN LIB. I. DE OFF. 69

res obscuras, atque difficiles conferunt, easdemq; non necessarias. quibus vitiis declinatis, quod in rebus honestis, & cognitione dignis operare, cureque ponetur, id iure laudabitur: ut in astrologia C. Sulpicius, in diuinitus: in geometria Sex: Pompeium, ipsi cognomus: multos in dialectica: plures in iure ciuili. que omnes artes in veri inuestigatione versantur: cuius studio à rebus agendis abduci, contra officium est. virutis enim laus omnis in actione consistit: à qua tamens sepe fit intermissione, multiq; dantur ad studia redditus: tum agitatio mentis, que numquam acquiescit, potest nos in studijs cogitationis & sine operano stra, continere. omnis autem cogitatio, motusq; animi aut in consilijs capiendis de rebus honestis, & pertinentibus ad bene, beatę, viuendum, aut in studijs sciëtia, cognitionisque versabitur. Ac de primo quidem officij fonte diximus.

## EXPLANATIO.

**N**ATURAM humanam, quæ potissimum in excellētia mentis est posita. Cic. de Fin. l. v. Homo è corpore, animoq; constat: cùm primat sint animi partes: secundæ corporis. Sallust. Cat. Nostra omnis vis in animo, & corpore, sita est. animi imperio, corporis seruitio magis vtimur. II. de rep. ordin. Corpus animo obcedit. Ideo Plato in Clitophonte vocat τὸ άρετὴν, τὸ δέ αἰρετόν. TRAHIMVR, & ducimus ad cognitionis, & scientie cupiditatem, Sopocles, animam iam agens, amicis colloquentibus aures præbuit: semper aliquid addiscendum ratus. Trahimur: quasi vi, etiam iniici. DUCIMUR: natura enim nos cogit: cognitionis vero suauitas maximè delectat. Inde Minographus. Dicunt volentem fata, non lentem trahunt. ET MALUM & TURPE: vt ad damnū accedat infamia. IN HOC GENERE & NATURALI, & HONESTO: DUO, inquit Cicero, sunt hominū genera utrumque reprehendēdū: unū duabus causis, alterū una tātu, nā, qui & in rebus obscuris

e 3

nec necessarii elaborant, & nimium elaborant, duplicit  
peccant: qui verò optimo iudicio ducti, res diligunt & ho-  
nestas, & cognitione dignas, in quibus suum studium po-  
nunt, in eo laudem quidem assequuntur: quod si earum rerum  
studio ita teneantur, ut debitam patrię opeim, vbi tempus  
postulat, non prebeant, aut amicos deferant, aut rem familia-  
rem negligant, in hoc turpiter se gerunt. omnino enim in  
vita cotendum est officium: officium autem desérere scienti-  
æ caussa, turpe est. Quare ita præclarum est, in veri iue-  
stigatione versari, ut rerum actione penitus omittatur: si  
quidē tanti esse nihil debet, ut ab officio nos abducatur. Non  
igitur studium in huiusmodi artibus, sed nimium studium  
vituperatur: obscuris verò, nec necessariis in artibus omnino  
studium omne reprehenditur. **V N V M , ne incognita pro**  
**cognitis habeamus,** } quo vitio laborant adolescentes. **E T**  
**tempus,** } Minographus: Ad pœnitendum properat, citò qui  
iudicat. Socrates: Βαλεύειν μὴ βέβαιος, οὐπίληση δὲ ταχέας τὸ Λέ-  
ξιον. Vide, quæ collegimus ad locum Sallustij, Catilina,  
Prius, quām incipias, consulto; &, vbi consulueris, mature  
facto opus est. Nazianzenus quoque: Σύμβουλος οὐδεὶς ιστι-  
κιον χώρον: Nullus melior consiliarius tempore. **E T diligen-**  
**tiam,** } quod maximè efficit per dialecticam, & rhetor-  
icam. Dialectica namque oculos humanos, in barbarico  
œceno defossos, sensim attollit, atque abstergit, ut in iudican-  
do acutius cernat, vide Plat. vii. de Rep. **A L T E R V M estri-**  
**tium,** } sic Neoptolemus apud Ennium, degustandum ex  
philosophia ait, non in eam ingurgitandum, quod ait Agel.  
l. v.c.16. &c. superiore, philosophandum paucis, nam omni-  
no haud placet. Vide apud eundem Agell. l.x.c.22. quādam  
ex Gorgia Platonico. **I N astrologia C. Sulpicium,** } hic tribu-  
nus mil. cons. Aemilio Paulo contra Macedones bellum ge-  
rente, sua astrologia mirandum in modum profuit, quia  
prædictit Lunę affectionem, qua Romani solebant pertur-  
bari: tum verò, ab eo moniti, nihil timuerunt; contrà Ma-  
cedones ita fuit consernati metu, ut facile victi sint. Liuius  
lib. x. l. iv. Plut. in Paulo Aemilio. De eo meminit Cic.  
de Sen. Val. lib. xii. cap. ii. Plin. lib. 2. cap. 12. Quintil. lib. i.  
cap. 17. **I N Geometria Sex. Pompeium,** } patrum Cn.  
Pompeii Magni: iuris ciuilis, geometricæ, ac Stoicarum  
rerum scientia præstantem. **C V I V S studio à rebus gerendis**  
**abduci,**

**abduci, contra officium est.** } Ita Archimedes, periclitante  
ciuitate, suis ipse puluerib. intentus fuit. **V I R T U T I S enim**  
**laus omnis in actione confitit:** } Idem Cicero: Fructus ingenij,  
& virtutis tum maxime percipitur, cum in proximum  
quemque confertur. Quid, (ait Nazianzenus) manibus alli-  
gatis, linguam armare? Vide Lactantium lib. iii. cap. 16.  
**A D studia reditus:** } Seneca: Tam diu discendum est, quām  
diu nescias: & si proverbio credimus, quām diu viuas. Idem  
pauld asperius Mentiri dicit eos, qui turba negotiorum fie-  
ri dicunt, ut liberalia studia non sequantur. Simulant (ait),  
occupationes, & augent, & ipsi se occupant. **T V M agitatio**  
**mentis potest nos in studiis cogitationis continere.** } inuitus ab  
eruditis hominibus dissentit. Ide in tamen spectro, quid sus-  
cepti muneri ratio postulet, potularat enim certè, ut maiori-  
rem veritatis, publici, commodi, quām cuiuscunus alius rei,  
rationem habeam. Hic omnes libri veteres, ne litteræ quā-  
dem vnius varietate, habent, Cogitationis, hæc est prima  
ratio, cur mihi, Cognitionis, quod alij pro Cognitionis re-  
ponunt, placere nullo modo poscit. At interdum in veteri-  
bus libris mendum deprehenditur. Esto: quid tum agimus?  
sententiam perpendimus; & ex ea de mutatione, aut reti-  
nendo vetere lectione, consilium capimus. Sententiam igi-  
tur videamus. Conferr Cicero virtutis actionem cum cogi-  
tatione. Summa, inquit, laus est, Idque in primis hominem  
decet, in rebus gerendis versari: cum præfertim ipsa virtutis  
actio perpetua non sit, sed ab ea liceat interdum ad studia  
diu estere, vnde cognitio manat: aut agitatione, motuque,  
quondam mentem, animūque exercere. Quemadmodum  
autem studia cognitionem pariunt: sic agitationis, motusq;  
mentis, & animi Cicero fructum ostendit, is porrò duplex  
est, aut enim agitatione illa mentis consequimur, ut recta  
consilia capiamus, quibus omnis vita ratio conformetur;  
aut, verum inuestigantes, occultarum rerum scientiam  
adipiscimur. Ergo prima est virtutis actio; sequuntur stu-  
dia cognitionis; postrema est agitatio mentis, quæ non ad  
vnam cognitionem refertur, sed tum in consilijs, ad bene,  
beatęq; viuendum pertinentibus, versatur; tum etiam que-  
rendo inuenit ea, quæ scitu digna sunt, itaque non omnino  
scientia, cognitioné, caret. Nec verò dubitari potest, quin  
his verbis, Omnis autem cogitatio, motusq; animi; ipsa

mentis agitatio significetur: quæ si ad studia tantum cognitionis attineret; non subiungeret Cicero duplice cognitionis fructum, prudentiam, & cognitionem. Hæc eii huius loci vera, & germana sententia, quam nemini ante a dūplicuisse, id eo possum comijcere, quod nemo aut locum mutatuit, aut aliter est interpretatus. Unus dissensit, quod nolle, cius enim studijs, gloriaeque vehementer favo. Cic. Fam.lib.vi.cap.1.ad.Torquatum: Est tuum, sic agitare animo, ut adhuc beas in confilium cogitationum tuarum &c. siue opera nostra. } quæ nos ab actione abducit. Operam autem intelligit, cum scribimus, disputamus, auditus. C O N S I L I I S capiendo } quod est præcipue mutare ætatis munus. vi. de Arist. in 2. Magn. moralium.

## C I C E R O.

D E tribus autem reliquis. latissimè patet ea ratio, qua societas hominum inter ipsos; & vite quasi communitas continetur. cuius partes duas sunt: iustitia. in qua virtutis splendor est maximus, ex qua boni viri nominantur, & huic coniuncta beneficia, quam eandem vel benignitatem, vel liberalitatem appellare licet. Sed iustitia primum munus est, vt ne cui quis noceat, nisi lacefitius iniuria: deinde, vt communibus pro communibas vtratur, priuatis autem vt suis. sunt autem priuata nulla natura, sed aut veteri occupatione, vt qui quondam in vacua venerunt: aut victoria, vt qui bello potiti sunt, aut lege, aut passione, conditione, sorte. ex quo fit, vt ager Arpinas Arpinatum dicatur, Tusculanus Tusculanorum. similisque est priuatarum possessionum descriptio. ex quo, quia suum cuiusque fit eorum, qua natura fuerant communia, quod cuique obtigit, id quisque teneat. eo si quis sibi plus appetet, violabit ius humanae societatis. sed quoniam, vt preclare scriptum est à Platone,

non

non nobis solum nati sumus, ortusque nostri partem patria, partem parentes vindicant, partem amici: atque placet Stoicis, quæ in terris gignuntur, ad usum hominum omnia creari, homines autem hominum causa esse generatores, ut ipsi inter se alij alius prodefesse possent: in hoc naturam debemus ducem sequi. Et communes utilitates in medium afferre, mutatione officiorum, dando, accipiendo, tum artibus, tum opera, tum facultatibus devincire hominum inter homines societatem. Fundamentum autem iustitia est Fides, id est dictorum, conuentorumque constantia, Et veritas. ex quo, quamquam hoc videbitur fortasse cuiquam durius, tamē audeamus imitari Stoicos, qui studiosè exquirunt, unde verba sint ducta, credamusque, quia fiat quod dictum est, appellatam Fidem. Sed iniustitia duo genera sunt: unum eorum, qui inferunt: alterum eorum, qui ab ipsis, quibus inferuntur, si posse sint, non propulsant iniuriam. nam, qui iniuste imperium in quempiam facit, aut ira, aut aliqua perturbatione excitatus, is quasi manus videtur inferre socio: qui autem non defendit, nec obsegit, si potest, iniurie, tam est in vito, quam si parentes, aut amicos, aut patriam deserat. Atque illa quidem iniuria, quæ nocendi causa de industria inferuntur, sape à metu proficiscuntur, cum is, qui alteri nocere cogitat, timet ne, nisi id alteri fecerit ipse aliquo afficiatur in commode. maximam autem partem ad iniuriam faciendam aggrediuntur, vt adipiscantur ea, quæ concupierunt, in quo vito latissimè patet anaritia. expetuntur autem diutiae tum ad usum vita necessarios, tum ad perfruendas voluptates. in quibus autem maior est animus, in his pecuniae cupiditas spectat ad

opes, & ad gratificādi facultatē, ut nuper *M. Crassus* negabat villam satis magnam pecuniam esse ei, qui in rep. princeps vellet esse qui suis fructibus exercitum alere non posset. Delectant etiam magnifici apparatus, vitaque cultus cum elegantia, & copia, quibus rebus effectum est, ut infinita pecunia cupiditas esset. Nec verò rei familiaris amplificatio nemini nocens, viuperanda est, sed fugienda semper iniuria. Maxime autem adducuntur plerique, ut eos iustitia capiat oblinio, cùm in imperiorum, honorum, gloriae cupiditatē incidenterint. quod enim est apud Ennium,

*N*ulla sancta societas, nec fides regni est, id latius patet. nā, quidquid eiusmodi est, in quo non possint plures excellere, in eo plerisque sit tāta contentio, ut difficillimum sit sanctā seruare societatem: declarauit id modo tempestas *C. Cesaris*, qui omnia iura diuina, & humana peruerit propter eum, quem sibi ipse opinionis errore finxerat, principatum. est autem in hoc genere molestum, quod in maximis animis, splendidisimis ingenis plerumque existunt honoris, imperij, potentiae, glorie cupiditates. quo magis cauendum est, ne quid in eo genere peccetur. Sed in omni iniustitia permultum interest, utrum perturbatione aliqua animi, que plerumque brevis est, & ad tempus, an consulto, & cogitato fiat iniuria. leuiora enim sunt ea, que repentina aliquo motu accidunt, quam ea, que meditata, & preparata inferuntur. Ac de inferenda quidem iniuria satis dictum est.

### EXPLANATIO.

*S*OCIETAS hominum inter ipsos, & vita quasi communitas continetur. } illustrant hunc locum, que sunt de Fin. l. v.

In omni, inquit, honesto nihil est tā illustre, nec quod latius pateat, quam coniunctio inter homines hominum, & quasi quædam societas, & communicatio utilitatum, & ipsa caritas generis humani: quæ nata à primo satu, quo à procreatoriis nati diliguntur, & tota domus coniugio, & stirpe coniungitur, serpit sensim foras cognationibus primū, tum affinitatibus, deinde amicitiis, post vicinitatibus, tum ciuibus, & ijs, qui publicè socij, atque amici sunt, deinde totius complexu gentis humanæ: quæ animi affectio suum cuique tribuens, atque hanc, quam dico, societatem coniunctionis humanæ munificè, & æquè tuens, iustitia dicitur. cui adiunctæ sunt pietas, bonitas, liberalitas, benignitas, comitas, quæque sunt generis eiusdem. Atque hæc ita iustitia propria sunt, ut sunt virtutum reliquarum communia. nam, cùm sic hominis natura generata sit, ut habeat quiddam innatam, quasi ciuile, atque populare, quod Graci πολιτεία vocant: quidquid agit quæque virtus, id à communitate, & ea, quam exposui, caritate, atque societate humana non abhorribit: vicissimque iustitia, vt ipsa se fundet vnu in ceteras virtutes, sic illas expetet. VIRTUTIS splendor } Aristot. v. Eth. ad Nicom. H δικαιωμάτων τῶν ἀρετῶν, οὐδὲ ἄρετος οὐδὲ ταύτης. Excelsum hanc vocant D. Ambr. Beneficentiam verò splendidiorem. BENEFICENTIA, } Beneficentia, alij scribunt. Quidam eandem } pronomen pro adverbio usurpatum: esse, notavit Valla, & Linacer, & alij. Nisi latet iustitia, } vim enim vi repellere licere, ait Modestinus lib. 3. ff. de Iustitia, & iure: insidiari autem non licere. Videntur Agellius lib. vi. cap. 14. Furem nocturnum, Spoliatorem, & Vim inferentem impunè occidi posse, scripsit Plato. Sunt autem priuata nulla natura, } id est, primo ortu. nam natura in medium omnia protulit. vide paullò post. Vt qui bello potiti sunt, } bellū gerentes. Alij legunt: Aut bello, ut qui victoria potiti sunt. fortasse non male. ARPINAS, Tusculanus } exemplo vitur familiari. nam Arpinii Cicero natus in Tusculano vero villam habuit magnificam. DESCRIPTIO, } id est, distributio. Legendum autem hoc loco, Discriptio. IUS HUMANÆ SOCIECATIS, } Ius humanum L. i. dicitur. Ut predare scriptum est à Platone, } in epistola ad Architam Tarentinum. sunt autem hæc verba Platonis: Ανδ επέκεινος εῖναι θεούς, οὐτε θεούς ήμεν οὐχ αὐτῷ μόνοι γέγονεν.

*ānādīs p̄iūcēmū h̄ūmū r̄o p̄iēr n̄ ī t̄r̄ēs m̄eūs̄ ēr̄y. r̄o d̄e m̄īz̄n̄ī r̄w̄t̄e, r̄o d̄e c̄ī r̄s̄t̄c̄l̄ φ̄s̄s̄. De fin. i. idem ait. Inde Adag. iii. Homo homini deus. Seneca. Aliis vivere oportet, qui sibi vivere velit. Tūc. i. Quæ est, ait in hominum genere natura melior, quam corum, qui se natos ad homines seruandos arbitrantur. PARTEM patria, partem parentes vindicant, partem amici, hoc totum, ita ut à Platone scriptum est, rehui. ipse enim Cicero Platonem hoc in loco à se conuerti fatetur. At veteres libri duas voces inducunt, Partem parentes. At ego historiam ipsam, & Platonis verba, sequi malo, quam fluxa, incertamque librariorum fidem. cùm præterim facile potuerit error nasci ex voce Partem, ter repetita. Quod sèpe contingit in similibus locis. Libro etiam de Fin. ii. Non sibi, inquit, se soli natum meminerit, sed patris, sed suis. Nez dubitandum, quin uno verbo suis, parentes primiū, deinde amicos complexus sit. ATQVE, vt placet Stoico, particulam Ut abundate, vt infer. orum verborum ratio consistat, opinor, in eaque opinione confirmor, auctoritate duorum meorum veterum librorum. Chrysippus huius sententia auctorem facit Cicero de Fin. ii. Vide & de nat. de. ii. MVENTATIONE officiorum. sic quatuordecim mei veteres libri, & vnu Tertij, & recte, nam illud, Communes utilitates in medium afferre, nihil aliud significat, quam vt officium pro officio reddatur: ego illud, quo tu indiges: tu, quo indigere me vides, ita fit permutatio quazdam, humanae vitae necessaria, & secundum naturam, quam debemus: ducem sequi. TUM vestibus, tum opera, PLATO, m̄ te abitū agerem. FUNDAMENTVM autem iustitiae est Fides, benevolentia fidei hominem homini mansuetum, mitem reddere, ait Plutarchus. DICTORVM, conuentorūque constantia, AGELL.lib.xx.cap.i. Hanc fidem majores nostri, non modo in officiorum vicibus, sed in negotiorum contractibus sanxerunt, maximèque in pecuniae mutuaticiae vñ, atque commercio. APEAMVS imitari Stoicos, Augustinus in Dialectic. ait, Ciceronem nimis Stoicos irridere, in vocū originibus inquirendis. CREDAMVSQVE, qui frat, quod dictum est, appellatam Fidem, idem ait ad Tironem, lib.xvi. epist. 12. Tu misis nostris para, vt operas reddas. nostra ad diem dictam fient. docui enim te, Fides tuorum quod haberet. Et lib. iv. de rep. apud Nonium: Fides nomine ipsum mihi videtur habere,*

cūm

cum fit, quod dicitur. SE D iustitiae duo genera sunt:} Platonis est hæc diuisio, lib. v. de Leg. AVT IRA, hinc Sallustius in Cesari oratione, Othium, amicitiam, iram, atque misericordiam à consultoribus expellit. NE C obſſit, si potest iniuriar, id etiam ait Vlpianus. Cornelia de faltis. SI parentes aut amicos, aut patriam deferat.} Ces. vi. Bell. Gall. ait, qui militiē fecati non essent, eos in desertorum, & proditorum numero duci. Plutarchus in Agesilao ait iis matrimonio à Lacedemoniis interdicti, omniumque contumeliis exponi. Verbum Socios, hic alij admiscent: Amicos, delentes, contra librorum veterum omnium fidem. Hoc autem dictum est è Stoicorum sententia, qui aiebant, omnia peccata paria esse. Parad. iii. & de Fin. lib. iv. ATQVE ille quidem iurie, Aristoteles lib. v. cap. 3. Pol. Atq. d̄e φ̄s̄īv̄ επ̄īσ̄t̄ōv̄ επ̄īσ̄t̄ōv̄, δεύ̄t̄ōv̄ επ̄īσ̄t̄ōv̄, καὶ δεύ̄t̄ōv̄ επ̄īσ̄t̄ōv̄, επ̄īσ̄t̄ōv̄ επ̄īσ̄t̄ōv̄. MAXIMAM autem partem ad injuriam faciendam a greediatur nonnulli, qui adipiscantur ea, que concupierunt. Maximam partem, valer, Plurimi homines. VT apud Cæstrem, lib. iv. Bell. Gall. Maximam partem lacte, & caseo viuent. Contraria igitur videntur, Maximam partem, & Nonnulli, non enim eadem in sententia significari possunt, & multi, & pauci, quare nulla dubitatio est, quin sequi debcamus eos libros, à quibus best, Nonnulli. Graci, ο: δ̄ιπ̄īτ̄ο̄ν πλέ̄σ̄v̄, ο: επ̄īτ̄v̄ δ̄ēs̄, ο: τ̄īπ̄ōv̄ δ̄ēs̄. VT adipiscantur ea, que concupierunt: apud Liuium Tullia maritum, Tarquinius, & vxorem & Seruum sacerum, regni cupiditate, necant. IN quo visio Latissimè patet auraria, auri sacra famæ, ait Poeta. EXPETVNTVR autem diuitiae, Arist. lib. i. Pol. c. 6. Οοδ̄ē ουγ̄t̄ōv̄ δ̄īσ̄t̄ōv̄ επ̄īσ̄t̄ōv̄, ο: πρ̄ōs̄ r̄ās̄ āt̄ās̄r̄ās̄ r̄ās̄ σαρ̄ḡn̄īs̄ ζ̄n̄t̄ōv̄. SPECIAT ad opes, & ad glorificandi facultatem:} Opes dicuntur, non diuitiae, sed honores, auctoritates, & potestates, quæ ex diuitiis nascuntur: quibus egenos adiuuamus. Diuitiae autem ad vsum humanum pertinent. Hanc differuntiam ponit Cicero in Lælio, vbi ita est: Diuitiae, vt utares opes, vt colare. QYI suis fructibus exercitum alere non posset. Exercitus populi Romani, quattuor legiones erant, binæ singulis consulibus attributa: in singulis autem legionibus, extremis reip. temporibus, peditiū sex millia fuere: quod Plutarchus in vita Ciceronis, epistola ad Atticum, & alia præterea veterū testimonia declarant, nā Africani minoris atate non

amplius quattuor millibus ducentis peditibus in legione fuisse, id est, velites mille ducentos, hastatos totidem, principes totidem, triarios sexcentos, Africani comes Polybius perspicue docet. Quo igitur tempore in quattuor legionibus viginti quatuor millia peditum fuere, tunc menstruum stipendum totius exercitus fuit, centum & octo scutatorum millia. singulis enim diebus denarium pro stipendio singulos pedites accepisse, auctor est Tacitus lib. i. & Plinius lib. xxxiii. cap. 3. Quod si addatur equitum stipendum, qui erant in singulis legionibus trecenti, haud paullò maior summa fiet. Nec centurionum par stipendum cum priuato pedite fuisse, verum aliquanto amplius, verisimile est. Hec ideo collegi, vt M. Crassi pateat immensa cupiditas opum, qui, cum Romanorum ditissimus esset, sibi tamen diues non esse videretur: quando ali suis fructibus non posse populi R. exercitum non intelligeret, quod ei Cicero in Paradoxis quoque obiicit. Multi, inquit, ex te audierunt, cum diceres, neminem esse diutitem, nisi qui exercitum alere posset suis fructibus: quod populus R. tantis vestigalibus iampridem vix potest. ergo, hoc proposito, numquam eris diues antè quam tibi ex tuis possessionibus tantum reficiatur, vt ex eo tueri vi. legiones, & magna equitum, ac peditum auxilia possis. Quo loco, iv. legiones, qui erat integer exercitus populi Romani, non, vi. legendum omnino crediderim. Exercitum in Crassi vita Plutarchus quoque nominat. Plinius lib. xxxiii. cap. 10. hoc dictum ad unam legiōnē restringit, utpote qui non eodem in Crassum, quo Cicero, flagrabit odio. M. Crassus, inquit, negabat locupletem esse, nisi qui redditu anno legiōnē tueri posset in agris suis H. S. vices centena millia possedit. N U L L A fūcta societas, nec fides regni est, } Lucanus lib. i.

Nulla fides regni sociis, omnīsq. potestas

Impatiens consortis erit: --

Cuius rei exempla sunt, Romulus, & Remus: Romulus, & Tatius, Triumviri, M. Crassus, C. Iulius Cæsar, & Cn. Pompeius, Lepidus, Antonius, Augustus. Idem Lucanus subdit hoc exemplum:

Fraterno primi maduerunt sanguine muri.

D E C L A R A V I T id modo tempestus C. Cæsaris, } in quibusdam antiquis libris, Temeritas C. Cæsaris: verum, Tempestas,

pēstas, malim, quasi turbo, & procella: quo respicit, apte quē refertur verbum infra positum, Peruertit. est enim nimis lene verbum, Temeritas, in eum, qui omnia iura diuina, & humana peruerit: cūm sit immanitas potius appellanda, quam temeritas: vt infra, in eūdem Cæsarem: Quo detestabilior est eorum immanitas, qui lacerauerunt omni scelere patriam. C. Cæsari: qui, teste Plutarcho, malebat in parvo o- pidulo primus esse, quam Romæ secundus. hinc illud Luca- ni lib. i.

Nec quemquam iam ferre potest, Cæsar ve priorem, Pompeius ve parem.

I V R A diuina, } ærarium inuadendo, ingentem auri vim è Capitolio furando, templum diuum donis referta expilando. H V M A N A } patriæ armæ inferendo, libertatem reip. op- primendo, societatem, & regna pretio vendendo, vrbes ad deditiōnē paratas diripiendo. O P I N I O N I S errore } pu- rauit enim se beatum fore oppresa rep. quod secus accidit. I N maximis animis, &c. } Plutarchus in Demetrio ex Plato- ne, ὅτι καὶ κακά μεγάλας ὥστε αἱ μεγάλαι φύσεις ἐκφέρουσαν. Idest: Virtus magna, vt & virtutes, ex magnis animis profici- cuntur. C O N S U L T O , & cogitatio } capto confilio, & cu- ra adhibita.

## C I C E R O .

P R A E T E R M I T T E N D A E autem defen-  
sionis deserēdique officiū plures solent esse cau-  
sa. nam aut inimicitiās, aut laborem, aut sumptus  
suscipere nolunt, aut etiam negligentia, pigritia, iner-  
tia, aut suis studiis, quibusdam occupationibus sic  
impediuntur, vt eos, quos tutari debeant, desertos esse  
patiantur. itaque videndum est, ne non satis sit id,  
quod apud Platonem est in philosophos dictū: quod  
in veri inuestigatione versentur, quodq. ea, que plerique  
vehementer expetunt, de quibus inter se digla-  
diari solent, contemnunt, & pro nihil ducant, pro-  
pōpterea iustos esse. nam, cūm alterum iustitia genus

assequuntur, inferenda ne cui noceant iniuria, in alterum incident. discendi enim studio impediti, quos queri debent, deserunt. itaque eos ne ad Remp. quidem accessuros putat, nisi coactos. & quius autem erat id voluntate fieri. nam hoc ipsum ita iustum est, quod recte fit, si est voluntarium. Sunt etiam, qui, aut studio rei familiaris tuende, aut odio quodam hominū, suum se negotium agere dicant, ne facere cuiquā videantur iniuriam. qui, dum aliero iniustitiae genere vacant, in alterum incurront: deserunt enim vita societatem, quia nihil conferunt in eam studij, nihil opere, nihil facultatum. Quoniam igitur, dubius generibus iniustitiae propositis, adiunxitur cassas utriusque generis, & cōsue res ante constitutimus, quibus iniustitia continetur, facile, quod cuiusque temporis officium sit, poterimus, nisi nosmetipso valde amabimus, iudicare. est enim difficilis cura rerum alienarum. quanquam Terentianus ille Chremes humani nihil à se alienum putat. sed tamen, quia magis ea percipiunt, atque sentiunt, que nobis ipsiis aut prospera, aut aduersa eveniunt, quam illa, que ceteris, que quasi longo intervallo interiecto videamus: aliter de illis, ac de nobis, iudicamus. quo circa bene precipiunt, qui vetant quidquam agere, quod dubites, & quum sit, an iniquum. & equitas enim lucet ipsa per se: dubitatio autem cogitationem significat iniuria. sed incident sepe tempora, cum ea, que maximè videantur digna esse iusto homine, & que, quem virum bonum dicimus commutantur, sūntque contraria, vt, non reddere depositum, etiam ne furioso promissum facere queque pertinent ad veritatem, & ad fidem, ea migrare interdum, & non seruare, sit iustum.

iustum. referri enim decet ad ea, quæ proposui in principio, fundamenta iustitiae, primum, vt ne cui noceatur: deinde, vt communī utilitati seruiatur. ea cum tempore commutantur, commutatur officium, vt non semper sit idem, potest enim accidere promissum aliquod, & conuentum, vt id offici sit inutile vel ei, cui promissum sit: vel ei, qui promiserit. nam, si, vt in fabulis est, Neptunus, quod Thesēo promiserat, non fecisset, Thesēus filio Hippolito non esset orbatus. ex tribus enim optatis, vt scribitur, hoc erat tertium, quod de Hippolyti interitu iratus optauit. quo impetrato, in maximos luctus incidit. nec promissa igitur seruanda sunt ea, que sint iis, quibus promiseris, iutilia: nec, si tibi plus ea noceant, quam illi profint, cui quidem promiseris, contra officium est, maius damnum anteponi minori: vt, si constitueris te cuiquam aduocatum in rem presentem esse venturum, atque interim grauitate agrotare filius cōperit, non sit contra officium, non facere, quod dixeris: magisque ille, cui promissum sit, ab officio discedat, si se destitutum queratur. Iam, illis promissis non standum esse, quis non videret, que coetus quis metu, aut deceptus dolo promiserit? que quidem pleraque iure pratorio liberantur, nonnulla legibus. Exsistunt etiam iniuria sape calumnia quadam, & nimis callida, & malitiosa iuris interpretatione: ex quo illud, Summum ius, summa iniuria, factum est iam tritum sermone prouerbium, quo in genere & in rep. multa peccantur: vt ille, qui, cum triginta dierum essent cum hoste pacte indutio, noctu populabatur agros, quod dierum essent pacte, non noctium indutio. nec noster quidem probandus est, si verum est, Q. Fabium Labeonem, seu quē alium, (nihil enim praeter

auditum habeo) arbitrum Nolanis, & Neapolitanis, de finibus agri a senatu datum, cum ad locum venisset, cum utrisque separatim locutum, ne cupidè quid agerent, nec appeterent, atque ut regredi, quam progredi, malent: id cum utrique fecissent, aliquantum agri in medio relictum est: itaque illorum fines, sicut ipsi duxerant, terminauit: in medio relictum quod erat, populo R. adjudicauit. decipere hoc quidem, non indicare, est. quo circa in omni re fugienda est talis follertia. Sunt autem quadam officia etiam aduersus eos seruanda, a quibus iniuriam acceperis. est enim vlciscendi, & puniendi modus: atque haud scio, an sati sit, eum, qui lacescerit, iniuria sua penitere, ut & ipse ne quid tale posthac, & ceteri sint ad iniuriam taxdiiores. Atque in rep. maxime conseruanda sunt iura belli. nam, cum sint duo genera decertandi, unum per disceptationem, alterum per vim, cumque illud proprium sit hominis, hoc belluarum: configiendum est ad posterius, si uti non licet superiore. quare suscipienda quidem bella sunt ob eam caussam, ut sine iniuria in pace vinatur: parta autem victoria, conseruandi sunt ijs, qui non crudeles in bello, nec immanes fuerunt: ut maiores nostri Tusculanos, Aequos, Volscos, Sabinos, Hernicos in cunctatem etiam acceperūt: at Carthaginem, & Numantiam funditus sustulerunt: nollem, Corinthum: sed credo illos secutos opportunitatem loci maxime, ne posset aliquando ad bellum faciendum locus ipse adhortari. Mea quidem sententia, paci, que nihil habitura sit insidiarum, semper est consulendum. in quo si mihi obtemperatum esset, si non optimam, at aliquid remp. que nunc nulla est, haberemus. Et cum iis, quos vi deniceris, consulendum est:

est: tum ijs, qui, armis positis, ad imperatorum fidem configiunt, quamvis murum aries percussit, recipiendi sunt. in quo tatopere apud nostros iustitia culta est, ut ijs, qui ciuitates, aut nationes denicitas bello in fidem receperissent, earum patroni essent more maiorum. ac belli quidem aequitas sanctissime fetiali populi R. iure prescripta est: ex quo intelligi potest, nullum bellum esse iustum, nisi quod aut rebus repetitis geratur, aut denunciatum ante sit, & indictum. Pompilius imperator tenebat prouinciam, in cuius exercitu Catonis filius tiro militabat. cum autem Pompilio videtur unam dimittere legionem, Catonis quoque filium, qui in eadem legione militabat, dimisit: sed, cum, amore pugnandi, in exercitu remansisset, Cato ad Pomplii scriptis, ut, si eum pateretur in exercitu remanere, secundo eum obligaret militia sacramento: quia, priore amissio, iure pugnare cum hostibus non poterat. adeò simma erat obseruatio in bello mouendo. Marci quidem Catonis sensis est epistola ad Marcum filium, in qua scribit, se audisse eum missum factum esse à consule, cum in Macedonia bello Persico miles esset. monet igitur, ut caueat, ne prælumineat: negat enim ius esse, qui miles non sit, pugnare cum hoste. Evidem illud etiam animaduerto, quod, qui proprio nomine perduellis es, si hostis vocaretur, lenitate verbi irritiam rei mitigante. hostis enim apud maiores nostros is dicebatur, quem nunc peregrinum dicimus. indicant duodecim tabula, Aut hatus dies cum hoite: itemque, Aduersus hostem æterna auctoritas. quid ad hanc mansuetudinem addi potest, enī, quicum bella gerat, tam molli nomine appellare? quamquam id nomen durius efficit iam vertutas: à peregrino enim

recessit, & proprie in eo, qui contraferret arma, remansit. Cum verò de imperio decertatur, bellòq. queritur gloria, caussas omnino subesse tamē oportet easdem, quas dixi paulo antè iustas caussas esse bellorum. sed ea bella, quibus imperij gloria proposita est, minus acerbè gerēda sunt. ut enim, cum ciuiliter contēdimus, aliter, si est inimicus, aliter, si competitor, cum altero certamen honoris, & dignitatis est, cum altero capitisi, & fama: si cum Celiberis, cum Cimbris bellū, ut cum inimicis, gerebatur, uter esset, nō uter imperaret: cum Latinis, Sabinis, Samnitibus, Pænis, Pyrrho de imperio dimicabatur. Pæni fædis fragi, crudelis Hannibal, reliqui iustiores. Pyrrhi quidem de captiuis reddendis illa præclara sententia est:

Nec mi aurum posco, nec mi pretium dederitis:

Nec canponantes bellum, sed belligerantes,

Ferro, non auro, vitam cernamus utriusque.

Vosne velit, an me regnare hera, quidue ferat fors,

Virtute experiamur, & hoc simul accipe dictum:

Quorum virtuti belli fortuna pepercit,

Eorundem me libertati parcere certum est.

Dono: ducite: dōque volentibus cum magnis diis.

Regalis sane, & digna Aeacidarum genere sententia.

Atque etiam, si quid singuli, temporibus adducti, hosti promiserint, est in eo ipso fides seruanda: ut primo Punico bello Regulus, captus à pænis, cùm de captiuis commutandis Romanum missus esset, iurassetq. se rediturum, primum, ut venit, captiuios reddendos in senatu non certuit: deinde, cùm retineretur à propinquis, & ab amicis, ad supplicium redire maluit, quam fidem hosti datam fallere. Ac de bellicis quidem officiis satis dictum est.

EX-

IN LIB. I. DE OFF.  
EXPLANATIO.

**I**NIMICITIAS,} quas sustinere, graue est, si inopem contra potentem defendas. LABOREM,} sine quo nil confici potest. SVMPTVS,} qui admodum necessarij sunt & in publicare, & in priuata. VIDENDVM EIS,} modestè dissentit à Platone, Philosophorum sententiam in sexto de rep. cōprobante, vide Cic.lib. III. de Fin. IN philosophos dic̄tum,} In, cum laude. Sic locutus in Bruto, III. de Divin. & I. de Legibus. DISCENDI STUDIO IMPEDITI, quo stueri debent, deserunt,} Beneficentia igitur doctrinæ anteponenda. Huiusmodi philosophos, qui in veri tantum inuestigatione versantur, reprehendit Laetantius lib. I. cap. 16. Epictetus apud Agellium lib. xvii. cap. 19. Areu τοῦ περὶ θεού, μέχρι τοῦ λέγεν. Epictetus autem ipse, teste eodem Agellio lib. xv. cap. II. vrbe eiectus. Et Cicero ad Varronem, Fam. lib. ix. Quis, inquit, hoc non dederit nobis, vt, cùm opera nostra patria siue non possit vti, siue nolit, ad eam vitam reuertamur, quam multi docti homines fortasse non rectè, sed tamen multi etiam reip. præferandam putauerunt. STUDIO REI FAMILIARIS TUENDERE,} quod laudabile esse, non dubium est, pater enim, procreandis, educandisque liberis, reip. seminaria parat: sc̄que, & suos honesta aliqua arte exercendo alit. O DIO QUODAM HOMINUM,} μυστηρίον. NE FACERE CIQUAM VIDEANTUR INIURIAM,} cùm tamen faciant: quia vita societatem deferunt. IN ALTERUM INCURRUNT,} quod stultorum est proprium. NISI NOVETISSIMO VALDE AMABIMUS,} quæ φιλανθράποι εἰσὶν. Idecētor mīzēr, ἀλλοτρίων δὲ οὐ μίλει.

Idest: Propria premunt, aliena non mouent.

DIFFICILIS CURA,} molesta. T R E N T I A N V S ILLI Chremes,} in comedie Heautontimoromeno. Scribit autem D. Augustinus, cùm Romæ in theatro hic versus recitaretur, vniuersum populum reclamasse. A LITER DE illis, ac de nobis, iudicamus,} minus illis consulere studemus, quam nobis. Q UOD DUBITES,} huc pertinet prouerbum illud, apud Senecam: Quod dubites, ne feceris. AEQUITAS LUCET IPSA PER SE,} Aristot. libro 11. Rhet. hoc illustrat exemplo Sapphus, & Alcæi. N O N REDDERE DEPOSITUM,} hoc, & quod de furioso subiungitur, ad il-

§ 3

Iud, infrà positum, referto, Sit iustum. particulam enim, Non, quæ est in plerisque antiquis libris, (nam à duobus abest, tribus autem alis est addita) numquām sustulerim. ea vero si retinetur, non potest hæc sententia pars cum superioribus coniungi, siquidem, non reddere depositum, & promissum non facere, numeranda non videntur inter ea, quæ iusto digna sunt homine. quare infrà referantur: vt dicitur, iustum esse nonnumquam, depositum non reddere, nec promissum facere. Illud autem, Etiam ne furioso, licet aperte corruptum, mutare tamen non audeo: opem libri veteris exspectabo: ( nam omnes mei consentiunt cum impressa lectione, vno excepto, in quo pro Furioso, Furioso legitur) interea placet relinquere, in quo aliorum exercitantur ingenia. sententia quidem satis patet. sed ipsa verba aut abundant, aut certè mendo non vacant. non enim hæc cum eo debent, Promissum facere, sed cum eo, Non reddere depositum. nam libro quoque i. loquitur Cicero, non de promisso furioso non faciendo, sed de deposito furioso non reddendo. cum enim, exemplis aliquot adductis, satis probasse, pæcta, & promissa non esse seruanda, sibi videretur: hæc subiunxit: Ergo & promissa non facienda nonnumquam, neque semper deposita reddenda sunt, si gladium quis apud te sane mentis deposuerit, repeatat insaniens, reddere peccatum sit, non reddere, officium. EA migrare interdum, & non seruare fit iustum. } Migrare, antiquè dixit, pro, mutare. Sic & in decem meis veteribus libris, & in vno Tertij, & in iis, quos primi olim impressores fideliter ex antiquis descriptos, nulla adhibita conjectura, ediderunt, legi animaduerto. Huius autem verbi vim primus olim Pater meus indicauit, in eo loco lib. iii. de Fin. Qui id conferuerat, eum iustum, qui migrarer, iniustum fore. Quod quia durius visum iri suspicabatur, confirmauit duobus exemplis: vno, lib. iii. de Leg. Quod quis earum rerum migrasset, noxiæ poena par esto. Altero, lib. i. de Diu. Ne communia iura migrare videatur, sic enim legit ex antiquis libris, non, Communī iure. NE cui noeatur, } noceretur enim furioso, si ei redderetur gladius depositus. COMMUNI utilitati seruatur. } nam, si Phœbus Phœtonti promissum negasset, non tantum factum fuisset orbis incendium, vide Ouidium Metam. 2. Vt in fabulis est,

līs est, } Cicero de natura de. II. Vide Ouid. Metam. xv. Plutarchum, Hyginum capite 47. & 250. Virgil.lib. viii. & Pind. od. 3. Pyth. & Plutarchum in Theseo. Plato lib. iii. de Leg. καὶ τὰς γένεταις ὡς γένεταις καὶ σφόδρας γένεταις, μηδὲ τῶν καλῶν καὶ τῶν δικαιῶν γνωσθεῖν, οὐχιται γένεταις πεποιημένος ἐντελεχύεσσιν αἰσθάνοντος τὸν γενομένος θυτοῦ πολέμου τὸν δισυγχόνευτον πελευτοντα ἐποίησαν. IRATVS } quod ab ea. Phædram coniugem de interitu appellatam crederet, cùm id à Phædra, quæ se ab Hippolyto reiectam inquisimè ferret, factum crimen esset. Nec promissa igitur seruanda sunt ea, quæ sint ipsis, quibus promiseris inutilia: } duo mei veteres libri: Nec promissa igitur seruanda sunt iis, quibus promiseris, inutilia si sunt. IN rem presentem } in iudicium. Verba Iurisconsultorum. AVT deceptus dolo, } decem mei veteres libri, & unus Tertij, Quæ deceptus dolo. unus omittit Aut, &, Quæ: Metu: Dolo: De metu, Octauius de dolo, Aquilius prætores leges primitulerunt. CALVMNIA quadam, } quæ sit vel falsa accusatione, vel prava interpretatione scripti, aut legis. SVMVM ius, summa iniuria. } ex Terentij Heautontimorumeno: apud quem, Summum ius, summa malitia. apud Columellam de rust. Summum ius, summa crux. Iurisconsulti appellat ius strictum: Aristoteles, ἀριστοτελεῖον, id est ius exactius, duriusque. QVO in genere & in rep. multa peccantur, } miror, hunc locum mendosum a quibusdam haberi. Mei omnes libri cum vulgatis consentiunt: sententia patet: &, quod aliis visum est durius, vnde orta est mutandi voluntas, id visitatum esse, exemplis probemus. De nat. de. I. 1. Empedocles multa peccans. Pro Murena: Non multa peccas. Et paulo post: Nihil peccare. Tacitus quoque, Magna peccare, dixit. Est enim, Multa, pro, in multis rebus: vt, Non multa peccas: pro, non multis in rebus à te peccatur: Multa peccantur in repub. pro, Multis in rebus peccatur in rep. Sic enim conuerto: &, opinor, rectè. NOCTV } Ephorus apud Strabonem Tracium commentum dicit aduersus Bœotos. vide Prouerbium, Θεόκτητη παρεποτική. Cleomenes Lacedæmonius, cum Argivis septem dierum indutias pactus, tertia nocte fidem fecellit. Plut. in Apophthegm. Laconicis. Q. FABIVM Labeonem, seu quem alicui, } simile quid narrat Valerius lib. vii. capit. 3. qui ait, eum, cùm regem Antiochum superaseret, ex fædere

icte dimidiā partem nūnū accipere deberet, medias omnes secūs, ut eum tota classē priuaret. H A V D *sio*, an satis sit, } idest, parum abest, quin existimē satis esse. V T & ipse ne quid tale posthac. } ex meis antiquis libris, vñus habet, Audeat, vñus, Committat: vñus, Faciat, & in spatio, quod versus dirimit, explanandi cauſa, Committat: quattuor, Faciat: vñus pro Posthac, habet, Poscar: verbum scilicet addere voluit, qui verbo ſententiam carere cognouerat: ſex, & vñus Tertij, Posthac, nullo adhibito verbo. Quā varietas aperte declarat, quodcumque verbum addatur, fiue, Faciat: fiue, Audeat: fiue, Committat, vt erat in perulgatis, glossemata eſſe omnia: cūm, per ſe, ſine verbo, ſententia confiſtat. C V M ſint duo genera decertandi, &c. } Iſocrates: Πολλῶν, ait, κεκρῶ τη φυσε τῶν ἀρετῶν ὑπερχόντων, αὐτὴν πλέον τῶν ἀνεγκάριων περιστερικόντων, πολλέμους, καὶ στενες ἡρᾶν αὐτοὺς ἐμποθίσαντες. Id est. Ad multa mala, quibus natura hominum obnoxia eſt, nos plura quoque necessariis cogitauimus, addentes bella, ſeditionesque. H o c belluarum: } imitatus forſan eſt Hefiodum i. de re ruſt. ibi.

Tōi δὲ γέρας οὐθέρποισι, &c.

P A R T A vii c t o r i a, } Auguft. lib. i. de Ciu. Dei, negat de Romanis verē dici,

Parcere subiectis, & debellare superbos:

V T maiores nostri } amplificandæ magis vrbis gratia, si ve-  
rum dicere velimus, quam humanitate adducti. T V S C V-  
L A N O S, Aequos, Volſcos, Sabinos, Hernicos} Tufculani do-  
nati ciuitate ſunt anno C C C L X X V. Lib. vi. Plut. in Camillo,  
Valer. lib. vii. cap. 3. Sabini, Romanis iuncti, vnam ciuitatem ex duabus fecerunt, & omnia ſua Romanam tranſulerunt. Liu. l. i. Dionysius lib. 2. Plutarch. in Romulo, Flo-  
rus lib. i. cap. i. Hernici à Q. Marcio in deditioñem accepti,  
anno C D X L I X. Contra Aequos, Volſcosque, ſaþe bel-  
latum lego: nūſquam in ciuitatem receptos. Florus lib. i.  
peruicacissimos, & quotidianoſ hoſtes appellat. C A R-  
T H A G I N E M, & Numantiam } vtramque Scipio Āemili-  
anianus euerit. Oratione in Rullum. Pro Murena duos ter-  
rores imperij Romani nominat. Vide & de Senectute. Car-  
thaginem amulam Romani imperij dicit Liuſius. C O-  
RINTH Y M: } quam Mummius euerit: de quo vide lib.

2.clo-

2.elogium. Velleius, Plin.lib. xxxiv. cap. 2. epit. Liu.lib. l. i. Oroſ.lib. iv. cap. 3. Eutropius lib. iv. cap. 3. Ea incensa, no mena æri Corinthio in diſtum. Horatius Bimarem, id eſt, θεά-  
τραν dicit, in Iſthmo ſitam: qui hinc Ionio mari alluit, inde Aegao. S E C V T O S } in euertenda Corintho. O P-  
P O R T U N I T A T E M loci } Græcia compedes propter Iſthmum Philippus junior dixit, Plut. in Arato. Vel, quod Iſthmij Neptuni veſtibulum, Pind. Od. 13. Olymp. Vel, quia ſupercilioſa. Straboni. Vel, quod officina omnium artificium, & commune Europa, Asiaq. emporium, Straboni, Thucy-  
didi, Oroſ. Vel, quod oculus Græcia, Ciceroni: Achaia caput, Græcia decus, inter duo maria, Ionium, & Aegaeum, quā ſpectacula oppofita, Floro. Vel, quod ἀρέτης, Homero, id eſt diues. S E D credo illos ſecutos opportunitatē loci maxi-  
me, } mei omnes veteres libri pro illos, habent. Aliquos in quorum vno tam:en, in ſpatio, quod versus dirimit, legitur. Alias, Eos. Vt videre licet, vnde varietas orta ſit. Aliquos, ſi placet, ſenſus erit: Ex ijs, qui Corinthum euertendam censue-  
runt, alios alia ſpectaſſe, aliquos autem opportunitatē loci, maximē. Aliquid ſecutos, video non nullis placere: quod mihi multo minus placet, quām, Aliquos ſecutos: nec tamē eo-  
rum iudicio meum antepono. cum ijs facit Tertij liber. P A-  
C I, que nihil habitura ſit inſidiarum, } nam Plato inane eſt pa-  
cis nomen in terris dicit. Inde Iſocrates: Νῦν οὐ δικαιούεται, αἴ τινα βαλέμεθα τές πολέμους, καὶ εἰν αἰδινόφορες καὶ δὲν ἀναγνώριζανται διάδοχοι ἀνθράξ. Id eſt, Nunc bella nō componimus, ſed in id tēpus differimus, dum aliis alij extremis cladibus afficiamus. S i mihi obtemperatū eſſet, } à Pompeio, & Cæſare: nam Cicero vtriq; pacis auctor fuit, crebro ad Cæſarē ſcribendo, Pompeium crebro rogando, & vtrumque mitigando, & placan-  
do. quod Plutarchus ſcriptum reliquit. Id in multis quoque eius epiftolis legimus. Q' V A E nunc nulla eſt, } nam ciuitatē animam eſt ciuitatis, ſcripit Iſocrates, ea ſi non eſt, ciuitas nulla eſt. Q V A M V I S murum aries percuſſerit, } οὐκιδε-  
χος: ſpecies pro generi: id eſt, quamvis quiddam inter-  
ceſſerit hostile. Arietem inuenere prius Carthaginienſes, cū castellum apud Gades captum demoliri conati ſunt. ſig-  
num manibus luſtentibus, murum verberabant. Tertullianus de Toga, Carthaginienſes ſui inueni admiratores dicit, nouum, & extraneum ſuiffe ratos, cū Romani aduersus fe-

pterentur. **E A R V M** *patroni essent.* } ut Siculorum Marcelli, Allobrogum Fabij, idest, eos & in senatu, & in iudicis defensorer, eorumq. curam habent. **F E T I A L I t u r e** } Fetales, foederum, pacis belli, indutiarum, oratorum iudices sunt. Cic. de Leg. lib. 1. A Numa Pompilio institutos, scribit Plut. in Numa. De iis, idem Plut. in Camillo, & Probl. lxxii. Dionys. lib. 2. Agell. lib. xvi. cap. 4. Seru. in Aen. x. Varro Fetalem ait dici a Fide, & Faciendo. Dionysius ait eos dici posse *eipso d'inxus*. **R E B U S** *repetitis* } Plin. lib. xxii. cap. 2. **D E N V N C I A T U M**, & *indictum*. } nempe legatis violatis, quod non enim apud omnes nationes sanctum, inuiolatum que semper fuisse, scribit Caesar de bello Gal. lib. iii. Unde Corinthiis bellum illatum, ob legationis ius violatum. oratio pro lege Manilia, Asconius, Strabo lib. ix. Tarentinis eadem caussa bellum illatum. Valerius Max. lib. 2. cap. 2. & epit. Liu. lib. xii. vbi etiam agitur de legatis Romanorū, violatis à Gallis Senonibus. Vide & Plinium lib. xxxiv. cap. 6. de legatis Romanis imperfectis. Vel aliqua alia iusta de caussa. **C A T O N I S** *filius* } hunc militasse cum Paullo Aemilio, auctor est Plutarchus in Catone censorio: itaque recte legendum hic opinabatur Pater, non, Pompilius, sed, Paulus Aemilius, qui Persen, Macedoniam regem, devicit: cum quo militasse Catonis filium, infra cognoscitur, & ex Phil. viii. in extremo. **D I M I S I T**: } missione caussæ tres: Homensta, tempore militie impleto, ut hic: Caussaria, aliquo vel animi, vel corporis vitio: Ignominiost, propter delictum. Vide tit. de re militari, in Pandectis. **M I L I T I A** *satramen-* to, } cuius formulam vide apud Agellium lib. xvi. cap. 4. & Liu. lib. 2. Victor . . . reuertar ex acie: si fallat, louem patrem, Gradiuumque Martem, alijsque iuratus inuocat deos. **A D E O** *summa erat obseruatio in bello mouendo.* } mei omnes libri cum impressa lectione faciunt. Cetavius tamen Pantagathus legendum putabat. Adeo sancta erat obseruatio in bello. **M A R C I**, *quidem Catonis sensis est epistola* } exstat apud Agellium. Plut. in Catone. **B E L L O** *Persico* } cum Perse, Philippi filio, ultimo Macedonum rege, gelto, non cum Peris. Itaque sunt, qui legant, Bello Persico contrá veteres tamen libri. **Q U E M** *nunc peregrinum dicimus.* } Hostis enim, id est peregrinus, antiquitus dicebatur, qui in vrbe acceptus aequalis erat ciuibus. inde verbum Hostile, pro aquare, &

Hosti-

Hostimentum, apud Plutum Afinaria; pro cōpensione. & Hostiorum, instrumentū, quo mensura, ne quid deficit, aut superfit, æquatur. Inde Ennius Achille, apud Noniū: Serua ciues defende hostes, cum potes defendere. **S T A T V S** *dies* } id est, constitutus. Sic & in legibus xii. Tabularum, apud Cic. de Legibus. Macr. lib. Sat. 1. cap. 13. Agell. lib. xx. cap. 1. **A D V E R-** svs *hostem* } id est, ut ne peregrinus ciuius Romani bona quantumvis diurno vnu acquirere, & vscapere posset: sed ius dominij integrum, & inuiolatum perpetuo maneat. **A T E R-** nā *auctoritas* } id est, vindicandi potestas. **I V S T A S** *cassas* bellorum, } vnam, pro patria: alterā, propter fines propagandos. Eas enim recentet Demosthenes Olynth. Ιεροτελη διπλων ουχ εποδησθεντες μεγας χρηματοποιησιν αλλα τοις αιστοτονεσ, και αισθητονεσ την περιτοιδας. **C V M** *civiliter contendimus*, } ita omnino legendum. itaq. duodecim mei veteres libri, & vnu Tertij. aliis, Ciue aliter, aliis, Ciuibus, male. Mutationis originem videre licet in vno meo, in quo, supra Civiliter, adscriptum est. Id est, cum cine: ab eo, qui explanare voluit, Civiliter. **A L T E R**, *aliter*, } in foro, ad iudices, inimicū accusamus: in campo Martio, populi comitiis, cum competitor. **C E R T A M E N** *honoris & dignitatis* } si citra iniuriam fiat, quod ait Hesiodus in Ergis, ibi:

Οὐκ ἀξιούσιον εἴναι ἐπίστοις, φύσος, &amp;c.

**S I** *est inimicus,* } hinc Isocrates: Εξει τοις ιχθεσι διπλων αισθητων αισθητων. **C E L T I B E R I S**, } quorum vrbs prima Numantia, contra eos acerrima bella gerserunt populi R. nomine Cato Censorius, Ti. Gracchus, C. Metellus Macedonicus, T. Didius, Fulvius Flaccus. **C I M B R I S** } a C. Mario, v. consule, deuictis, anno dclii. De quo elogium adscribere placet, quod in antiquo lapide legitur:

C. Marius. Pr. Tr. pl. Q. AVGVR. TR. MIL. EXTRA Sortem. Bellum. cum. IVGVRTHA, REGE. NVMD. Gesit. Eum. cepit. et. TRIVMPHANS. IN Iouis. Aedem. Secundo. Consulatu. ANTE.

CVRRVM. SVVM  
Duci. ius sit. Tertium. CONSVL. APSENS. CREATVS est. Quartum. Consul. teut( )NORVM. EXERCITVM Deleuit. Quintum. consul. CIMBROS. FVGAVIT.

EX. IEIS. ET

Teutoneis. iterum. TriūpHAVIT. REMP. TVRBATAM

Seditionibus. Tr. Pl. et. Prætor. vi. qui. armati  
Capitolium. occupauerat. Sextum. cōsul. vindicauit  
post. lxx. annum. patria per. arma. ciuilia. pulsus  
armis. restitutus. Consul. Septimum. factus. est  
de. manubieis. Cimbriceis. et. Teutonicis. Aedem.  
Honori. et. Virtuti. fecit. veste. triumphali.  
calceis. puniceis.

Vide Plut. in Mario, & Sertorio, Florum lib. iii. cap. 3. epit.  
Liu.lib. L x i l. & L x i x . Appianum in Celticō, Orosi. lib.  
v. cap. 16. Eutropium lib. v. cap. 1. P O E N I f a d i f r a g i } Ter  
fidem fregerunt Poeni. Inde Val. Max. lib. vii. cap. 4. 4. Terra  
rum orbe infamis Punica calliditas. Liuius: Fides Punica re-  
ligione. Et: Inhumana crudelitas, perfidia plusquam Punica,  
nihil veri, nihil sancti, nullius dei metus, nullum iusfrandū,  
nulla religio. Julius Capitolinus: Fides Punica. Ausonius Pœ  
nam fidem, & Græcam nominat, ad Paullum. Salustius quo-  
que Iugurtha: Punica fides. Plautus: Nemo me Poenus Poenit  
or. Et Poenulo: Poenus plane est, quid verbis opūst? C R V D E  
L I S Hannibal, } ob condiciones Saguntinis datas D E D E  
R I T I S: } tertia producta: quæ corripitur in præteritis.  
Virg. vi. Aen.

Egerimus, nosti. &c.

Vbi Seruius: Egerimus: Metri cauſa corripuit. C A V P O  
N A N T E S bellum, } Aeschylus Επίδει Θέας, vnde Cicero  
sumpſit: Κατηλθειν μάχην. V I T A M cernamus } id est, de vita di-  
micemus. V T R I Q V E. } Vterque, est in vno meo vetero  
libro, & in Seruio. qui hunc Ennius versum recitat Aen. xiI.  
V o s n e velit, an me & } sic Virg. Aen. xi.

Vixet, cui vitam deus, aut sua dextra dedit.

Vbi Seruius: Dupli ratione constat victoria: aut vir  
tute, aut voluntate fortunæ. H E R A, } id est, dea.

Sic Catullus, de Berecynthia, & Atti:

Procula mea tuus sit furor omnis hera domo.

Idem, ad Manlium, LXIII.

Hostia cælestes pacificasset heros.

Idest, deos. Eos autē dicit Euripides τὰ εργα μηχανα. Ex meis  
veteribus libris, quinque, pro Hera, habent, Fortuna domina.  
in duobus, supra Hera, adscriptum est, Idest, fortuna: in vno,  
supra, Hera, adscriptū, Id est, domina. Vt ex ijs quoque inter-  
pretationem petere liceat. L I B E R T A T I parere certum est. }  
id est,

ideſt, eorum libertati decreui parcere. D O N O:ducite: } Dono  
iūquit, vobis captiuos:ducite eos vobiscum. Ita hunc locum  
distinguendum esse, sententia ipsa contendit. A E A C I D A  
R V M genere } quoſ Pindarus celebrat. Isocratēſq. ait nemini  
nem eos superaſſe generis nobilitate: procreatos nempe à Io  
ue inter ſemideos. Acacum enim Iuppiter genuit, Acacus  
Peleum Achillis patrem, Achilles ex Deidamia Neoptole  
mum, cui Pyrrho quoque nomen fuit. Tharitas deinde, lon  
go interuallo, (nam nomina periere) Alceten, Alcetes A  
rymban, Arymbas Aeaciden, Aeacides Pyrrhum hunc, regē  
Epirotarum. Hæc veteres omnes libros, Gente. F I D E ſeruanda: } ſic libri duo mei: vnuſ, Obſeruanda: vndeclim, & vnuſ  
Tertiij, Conſeruanda. A d ſupplicium redire maluit, } quod gra  
uiſſimum tulit, inſomnia necatus. Silius lib. vi. epit. Liu. lib.  
xix. Florus lib. 2. cap. 2. de vir. ill. cap. 40. Val. lib. 1. cap. 1. &  
lib. 2. cap. 4. Agell. lib. vi. cap. 4. Eutrop. lib. 2. cap. 3. Oros. lib.  
iix. cap. 4. Vide & Laet. lib. v. cap. 13. Aug. de ciu. D. lib. 1. cap.  
25. & 24. Cic. Parad. 11. & in Pisonē Horat. Cārm. lib. iii. od. 5.  
Senecam de prouidētia, & epift. lib. xvi. ep. 99. F I D E m hoſſi  
datam fallere, } Lib. iii. Eſt etiam ius bellicum, fidēſque iu  
risuſtandi ſepe cum hoſte ſeruanda. Philip. xiii. Fallere, &  
Deſerere fidem, dixit. Post verbum, Fallere, in quibusdam li  
bris leguntur ſequētia, quæ ſunt & in duobus meis veteribus:  
Secundo autem Punico bello, pot. Cannensem pugnam, quos  
decem Hannibal Romam miſit adſtrictos iureiurando, ſe  
redituros eſſe, niſi de redimendis iis, qui capti erant, impe  
traffent: eos omnes censores, quoad quisque eorū vixit, cum  
peieraffent, in atrarijs reliquerunt: nec minus illum, qui iure  
iureiurando fraude culpam inierat. cum enim permittit Hanni  
balis exiſſet ē caſtris, rediſt paullo poſt, quod ſe obliti nescio  
quid diceret. deinde, egressus ē caſtris, iureiurando ſe ſolutum  
putabat, & erat verbis, re non erat. Semper autem in fide, quid  
ſenſeris, non quid dixeris, cogitandum eſt. Maximum autem  
exemplum eſt iuſtitia in hoſtem à maioriſbus noſtriſ conſti  
tuutum. cum à Pyrrho perfuga ſenatuſ eſt pollicitus, ſe vene  
num regi daturum, & eum necaturum: ſenatus eum, & C. Fa  
bricius conful Pyrrho dedit, ita ne hoſtis quidem, & potentis  
& bellum vltro inferentis, interitum cum ſcelere approba  
uit. Hæc ſunt, vt dixi, in duobus libris meis, & in quibusdam  
impreſſis. Sequitur, Ac de bell. &c.

CICERO.

**M**Eminerimus autem, & aduersus infimos iustitiam esse seruandum. est autem infima conditio, & fortuna seruorum: quibus non male precipiunt, qui ita iubent uti, ut mercenariis ad operam exigendam, & iusta præbenda. Cum autem duobus modis, id est aut vi, aut fraude, fiat iniuria: fraus quasi vulpecula, vis leonis videtur: utrumque alienissimum ab homine est: sed fraus odio digna maiore. Totius autem iniustitiae nulla capitalior est, quam eorum, qui tum, cum maxime fallunt, id tamen agunt, ut viri boni esse videantur. De iniustitia satis dictum est.

## EXPLANATIO.

**F**ORTUNA seruorum: de scripta sunt apud Arist. i. x. Polit. Macr. Sat. lib. I. cap. II. Senecam Epist. lib. VI. ep. 3. Cic. Parad. v. Vide & Adagia. MERCENARIIS: Graci dicuntur: A d operam exigendam, & iusta præbenda. Id est, ut ab iis opera quidem exigatur: iusta tamen æque præbeantur, ut mercenarii. FRAUS quasi vulpecula, vis leonis videtur: huc spectat illud Lysandri dictum: οὐ οὐρανὸς μετέπειπεν τοῦτον τοῦτον οὐρανὸν καὶ μετέπειπεν τοῦτον τοῦτον οὐρανὸν. Id est: Quo Leonina pellis penetrare nequit, vulpina assumenda. CAPITIATOR: vel, quod caput, & vitam petat: vel, peccata capitum magis digna. EORM, QVI &c.: pecant enim, & contra iustitiam, & contra veritatem. Plato lib. II. de Rep. Exām dicitur, δοκεῖ σιγουρεῖν, μη οὐτα. Contra autem dixit Sallustius, Catilina: Esse, quam videri: bonus malebat, in quo imitatus erat Ἀeschylus Επέδηθ Θηβαῖς.

Ov. Δόξαις αρεσκεῖ, οὐτ' εἶναι θέλει.

CICERO.

**D**einceps (uterat propositum) de beneficentia, ac liberalitate dicatur. qua quidem nihil est natura hominis accommodatus: sed habet multas cautiones. videndum est enim, primū, obſit benignitas & iis ipsis, quibus benignè videbitur fieri, & ceteris: deinde, ne maior benignitas sit, quam facultas: tum, ut pro dignitate cuique tribuatur: id

enim est iustitia fundamentum: ad quam hac referenda sunt omnia. nam, & qui gratificatur cipiā, quod obſit illi, cui prodeſſe velle videantur, non benefici, neque liberales, ſed pernicioſi affentatores iudicandi ſunt: &, qui aliis nocent, ut in alios liberales ſint, in eadē ſint iniustitia, ut ſi in ſuam rem aliena conuertant. ſunt autem multi, & quidem cupiditati ſplendoris, & glorie, qui eripiunt ab aliis, quod aliis largiantur: hiq. arbitrantur ſe beneficos in ſuos amicos viſum iri, ſi locupletent eos quacunque ratione. id autem tantum abeft ab oficio, ut nihil magis oficio poſſit eſſe contrarium. VIDENDUM eſt igitur, ut ea liberalitate utamur, qua proſit amicis, noceat nemini. quare L. Sylla, & C. Caſaris pecuniarū translatio à iuſtiſ dominis ad alienos non debet liberalis videri. nihil enim eſt liberale, quod non ſit idem iuſtum. Alter locus erat cautionis, ne benignitas maior eſſet, quam facultates: quod, qui benigniores volente eſſe, quam res patitur, priuim in eo peccat, quod iniuriati ſunt in proximos: quas ei, in copias his & ſuppeditari aequius eſt, & relinqui, eas transferunt ad alienos. ineſt autē in tali liberalitate cupiditas rapiendi plerumque, & auferendi per iniuriā, ut ad largiendū ſuppetant copiae. videre etiā licet, plerosque, non tam natura liberales, quam quadam glori aductos, ut benefici videantur, facere multa, qua ab ostentatione proficiſci magis, quam à voluntate videatur. talis autē simulatio vanitati eſt coniuctior, quam aut liberalitati, aut honestati. Tertiū eſt propositū, ut in beneficentia delectus eſſet dignitatis, in quo & mores eius erunt ſpectādi, in quā beneficiū coſeretur, & animus erga nos, & communitas, ac societas vita, & ad noſtras utilitates officia ante collata. Quā ut concurrat omnia, optabile eſt: ſi minus, plures cauſe, maioresq. pōderis plus habebunt.

*Quoniam autem vivitur non cum perfectis hominibus, plenèque sapientibus, sed cum ijs, in quibus, preclarè agitur, si sint simulacra virtutis: etiam hoc intellegendum puto, neminem omnino esse negligendum, in quo aliqua significatio virtutis appareat: colendum autem esse ita quemque maximè, ut quisque maximè virtutibus his lenioribus erit ornatus, modestia, temperantia, ac ipsa, de qua iam multa dicta sunt, iustitia, nam fortis animus, & magnus in homine non perfecto, nec sapiente feruentior plerunque est: ille vero virtutes bonum virum videntur potius attingere. Atque hec in moribus considerentur.*

## EXPLANATIO.

**D**E BENEFICENTIA, ac liberalitate } supra: Iustitia, &c. & huic coniuncta Beneficentia, quam candem vel Benignitatem, vel Liberalitatem appellare licet. **N I H I L** est nature hominis accommodatius: } hoc enim est humanitatis proprium, quam hominis esse, vel nomen ipsum indicat, nempe φιλαθερία. **H A B E T** multas cautiones: } Cicero tres enumerat, quæ tamen si subdividuntur, plures emergunt. **N E O B I S** benignitas } Seneca de Beneficijs, lib. 2. cap. 14. **N E** maior benignitas sit, } exhaustiet enim fons liberalitatis. **I D** enim est iustitia fundamentum, } supra dixit Fidem esse fundamentum iustitiae, hic, Liberalitatem. **V E R E.** nam iustitia non potest esse sine fide, neque liberalitas sine iustitia. **Q V O D** obist illi, } hinc Inimicorum dona: *ἀδερφές δούλες*. **C V I** prodest velle videantur, } vel ob auram populariem, vel quòd maiorem remunerationem spectent: Isocrates: *τεχνῶν προάντες ἀδερφῆνται, καὶ οὐ δούλοι, ἀλλήτορες καὶ δικαιοῦσι*. **P E R N I C I O S I** assentatores } ita sex mei veteres libri, & vno Tertij, octo, Perniciofi, & assentatores. **Q V I** aliis nocent, vt in alios liberales sint, } Proverb. De alieno liberalis. **V T** si in suam rem aliena conuertant, } cùm enim dando egere cooperunt, alienis bonis manus afferre coguntur. lib. 2. **S V N T** autem multi, } qualis Catilina, sui profusus, alieni rapax. **A B E S T** ab officio, } abest Ab, à septem

\*septem meis veteribus libris, & uno Tertij, & vetere impresto. In eorum vno, Ab officio: & supra est adscriptum, & additum, Distat, deletumq. alterum Ab. Ex quo fortasse mēdi origo patet. **L. S V L L A E,** } Sulla proscriptio designat. Plutar. in vita App. lib. 1. Bel. epit. Liu. lib. ix. de vir. ill. ca. 75. Valer. lib. ix. de crudelitate, Orosius lib. v. ca. 21. Eutrop. lib. v. De ea & Plin. lib. vii. cap. 43. Seneca lib. 3. de ira, & decl. 1. Lu- canus lib. 2. & D. Aug. de Ciu. Dei, lib. 3. cap. 28. Ipse Cicero infra, lib. ii. **C. C A E S A R I S** } Curionem ære alieno leuavit. Suetonius de eius rapacitate plura dicit. Vide & Catullum. Se- neca de Consol. cap. 9. C. Cæsar, quem mihi videtur natura rerū edidisse, vt ostenderet, quid summa virtus in summa fortuna possent, centies festertium cenauit vno die: & in hoc omniū adiutus ingenio, vix tamen inuenit, quomodo trium prouinciarum tributum vna cena feret. Summa autem efficit ( incredibile dictu ) trecenta scutatorum millia. **I V S T I S dominis** } qui opes illas vel à maioribus acceperunt, vel propria industria sibi peperere. **B E N I G N O R E S**, quam res patitur, } monemur, de sorte, & summa nihil decedere oportere: de re- ditibus, & prouentibus liberales esse nos posse. **I N P R O X I M O S**: } parentes, liberos, vxores. **S V P P E D I T A R I** } Minographus: Auarus, nisi cum moritur, redeat nihil facit.

**R E L I Q V I** } hereditario iure. **I N E S T** autem &c. } hoc pro Deinde subiunxit: quia dixerat, Primum in eo peccant. **Q V A E** ab ostentatione } vt Appius Pulcher, qui sua ambitione Ciliciam exhauerat. Agellius, locum ex Lælio expons: Be- neficium, ait, & Liberale Cicero appellat, ita vt philosophi appellandum censem, non cum, qui beneficia feneratur, sed qui benignè facit, nulla tacita ratione ad utilitates suas redundante. Aristotles: Οἰκουστὴ δόση τὸ καλὸν ἵνεσθαι, καὶ ἐπιδόσις, οἷς δὲ, καὶ οὐδεὶς, καὶ δέ, καὶ οὐδεὶς, καὶ αὐτος. Id est: Liberalis dabit ho- nesti causa, & recte, quibus, & quantum oportet: idq. faciet libenter, & absque molestia. **S I M V L A T I O** } proprio vtitur vocabulo, quod odium in se contineat. **D E L E C T V S** digita- tu, } id est, vt dignior indignior anteponatur. **I N Q V O &c.** } quatuor Cicero enumerat, Mores, Amicitiam, Cognitionem, & Gratitudinem. **O M N I A**, } quia spectanda proposituit in li- beralitate. **P L E N E Q. sapientibus**, } quasi dicat: cum iis agitur, in quibus ne simulacra quidem sunt virtutis, nedum ipsa virtus. **I N q u i b u s**, preclare agitur, si sunt simulacra virtutis: } sic

tres mei veteres libri, & unus Tertij vndecim, In quibus præclarè non agitur, sed sunt simulacra virtutis. Vtro modo legas, sensus constat. *simulacra virtutis.* id est, iis qui predicit sunt, non virtuosi, sed virtuosorum *simulacra* quedam sunt. **F E R V E N T I O R** } itaque tunc fortitudo non est virtus. accedit enim ad temeritatem. Sic Plancus ad Ciceronem, Fam. Lib. x. ep. 23. Feruentes latrones dixit: id est, incitatores. Vbi tamen quidam libri veteres habent, Furentibus. Græci *se pœnæ dicunt.* Bonum vinum videtur potius attingere. } ad bonum vinum videntur potius pertinere. Sic locutus de Finibus: Cum processisset paululum, & quatenus quodque se attingat, perspicere cupit.

## C I C E R O.

**D**E benevolentia autem, quam quisque habeat erga nos, primum illud est in officio ut ei plurimum tribuamus, à quo plurimum diligimur: sed benevolentiam non adolescentiis more, ardore quodam amoris, sed stabilitate potius, & constantia iudicemus. Si erunt merita, ut non ineunda, sed referenda sit gratia: maior quedam cura adhibenda est. nullum enim officium referenda gratia magis necessarium est, quod si ea, que acceperis vienda, maiore mensura, si modo possis, iubet reddere Hesiodus: quidnam, beneficio provocati, facere debemus? an non imitari agros fertiles, qui multo plus afferunt, quam accepimus? etenim, si in eos, quos speramus nobis profuturos, non dubitamus officia conferre: quales in eos esse debemus, quis iam profuerūt? nam, cum duo generis liberalitatis sint, unum dandi beneficij, alterum reddendi: demus, nec ne, in nostra potestate est: non reddere, viro bono non licet, si modo id facere possit sine iniuria.

iniuria. Acceptorum autem beneficiorum sunt deleterii habendi: nec dubium, quin maximo cuique plurimum debeatur. in quo tamen in primis, quo quisque animo, studio, benevolentia fecerit, ponderandum est. multi enim multa faciunt temeritate quadam, sine iudicio, vel modo, in omnes, vel repentina quodam, quasi voto, impetu animi incitati. qua beneficia aequa magna non sunt habenda, atque ea, qua iudicio, considerate, constanterque delata sunt. Sed in collocando beneficio, & in referenda gratia, si cetera paria sunt, hoc maximè officij est, ut quisque maxime opis indigeat, ita ei potissimum opitulari. quod contra fit à plurimis, à quo enim plurimum sperant, etiam si ille his non eget, tamen ei potissimum inferuiunt. Optimè autem societas hominum, coniunctioque seruabitur, si, ut quisque erit coniunctissimus, ita in eum benignitatis plurimum conferetur.

## E X P L A N A T I O.

**A**DOLESCENTIORVM more, } quos Terentius ait. Aimpensè cupere, consulere parum, effeque leui sentitia. Aristoteles Rhet. II. Oi réci εὐπεπτός οὐτοι καὶ ἀγανάφεδοι τὰς δημοσίας, καὶ οὐ πρόφερε μὴ επιθυμούσι, ταχὺ ἢ παινεῖται: οἱ εὖτις δὲ αἱ βουλαὶ στοιχεῖ, καὶ οὐ μεράλας, ὡς περ ἢ τὸ κεραυνωτὸν δίψι, καὶ τένει. Vide & in Lælio. **A R D O R E** quodam amoris, } nam huiusmodi ardore facilè amor incenditur, & deflagrat: ut ignis ē stipula. Atqui diligendi leuisimæ cauissimæ sunt adolescentiis, compotatio, ludus, deambulatio. leuisimæ item offensarum, verbum paulo asperius exstum. **S T A B I L I T A T E, & c o n s t a n t i a** } quæ non potest esse, nisi in recto iudicio, & iudicium maturiorum extatam requirit. IN E V N D A S concilianda. Seneca autem referenda, reddenda, gratiae differentiam hanc ponit: vt referant, qui vltro, quod debent, afferunt: reddant, qui reposent, qui inuiti, vñlibet, veletiam per alium reddant.

N V L L V M enim officium referenda gratia magis necessarium est.} fatentur hoc omnes: pauci factis exprimunt. Hippocratis hæc sunt: Οἰμαὶ σε ἐν ἀγνοεῖν, οὐ πέπον αἱ θεοὶ τὰ τῷ αἴσθητον διοικοῦσιν, οὐ δὲ αὐτόχθες, οὐ τε μετά τῷ αἴσθητον, οὐτε τῷ κακῷ γίνονται οὐδὲ σωνόντων αὐτοῖς: ἀλλὰ ἐργάζονται τοιαύτους ἔννοιας ἐμποιοῦσιν, οὗτοι δὲ αἰλαγάκαι οὐδὲν ἐργάζονται τοιαύτους. Id est: Puto te non ignorare, quomodo dei humana administrent, non enim ipsi coram, vel prosperis, vel aduersis rebus, se conspiciendos hominibus præbent, aut manib[us] contrectatōs, sed eam mentem dant singulis, vt vel cladibus ultro citrōque se se afficiāt, vel communes virtutates in medium afferant, mutatione officiorum. MAIOR E mensura,} hoc idem vide expressum concinnè in procēsio libri de claris orat. Seneca ingratum eum dicit, qui beneficium reddit sine vlsura. HESIODVS:} in lib. Ep[ist]ra, καὶ θύμες: cuius hi sunt versi:

Εὖ νὴ μετέρας παρὰ γένος εὖ θυτοδιαίη,  
Αὐτὸν τῷ μίτρᾳ, καὶ λαῖον εἶναι δύναται.

AN imitari} sic omnes veteres libri. AFFERVNT,} sic octo libri veteres mei, quatuor, & vnuis Tertij, Efferunt. non malè. duo, Offerūt. male, Gratitudinem, in oratione pro Cn. Plancio, ait non solum virtutum maximam, sed etiā matrem omnium reliquarum. Ingratos verò Xenophon ita persequitur: Οἱ Πέρσαι οὐ τοὺς ἀχαρίστους καὶ σεβούς εὐ πάλιν αἰματῶς ἔχουσιν, καὶ μετέρας, καὶ πατέρας, καὶ φίλους. Ἐπειδὴ γέροντες οὐ μεγίστη τῇ ἀχαριστῇ οὐ αργυρωτίᾳ, καὶ δὲ αὐτοὶ μεγίστη οὐκετὶ εἰνεὶ δῆτα τῷ αἰχματοφόρῳ. Ideit: Persæ Ingratos censent etiam deorum immortalium, & parentum, & patriæ, & amicorum esse maximè negligentes, atque etiā impudentia cum primis animi ingratí comes, atque affecta esse videtur, dux, atque auctor omnisturpidiniis. DVO genera} vtrumque solius sapientis. Seneca. Si modo id facere possit sine iniuria,} reddere enim beneficium ita debet, ne quid iniuria committat. DELECTVS hakendi:} certus scilicet modus seruandus. Q[uod] o quisque animo, studio, benevolentia fecerit,} Isocrates ad Demonicum: Μή δέ τοι χαρεῖταις ἀχαρίστος χαρεῖταις, οὐτε πάχοντις οἱ πολοὶ ποιοῦντες πλὴν αἰδοῖς οἱ τοῖς φίλοις οὐτοργωμένοι. Quibus hæc respondere videntur: Ne ipsi quidem Gratios citra gratiam feceris gratum: id quod non parum multi sanè faciunt, iniucundè amicis servientes. Homerus quoque:

Xερπον δὲ δυνατοὶ ἀριστοί.

studio

Studio: alacritate. ἀνθερόμας, ἀντεπέγγειλθ, καὶ μὲν αἰδοῖς χαρεῖσθαι, ait Isocrates. MODO,} duo mei veteres libri, & vnuis Tertij, Morbo, vt alludatur ad illud Poctæ Graci:

Νόσον ἵχεις: χαρεῖς διδούς.

VEL repentina quodam, quasi vento, impetu animi incitat.} Sunt, qui legant, vel distinguant potius: Vel repentina, quodam quasi vento, impetu animi incitat. CONSTANTE,} vt non peniteat. Si cetera paria sunt,} Sint, quatuor mei veteres libri. Si cetera paria sunt: inter eos scilicet, quibus beneficiandum est. Paria: id est, si par sit amicitia, virtus, necessitas, studio, officia ante collata: si nulla ex causis, concurrentibus ceteris, plus ponderis habeat. ETIAM si ille his nō egeat, vnuis, Etiā si ille nō egeat. Vt fortasse illud, His, prius scriptū fuerit, Is, & fuerit glossema ad τὸ Ille. IN SERVIVNT,} quæ mercatura poriis, quam liberalitas, appellanda. SOCIETAS hominum, coniunctioque.} hæc eadem coniungit supra.

## CICE RO.

Ed, que natura principia sint communitatis, & societatis humanae, repetendum altius videtur: est enim primum, quod cernitur in uniuersi generis humani societate. eius autem vinculum est ratio, & oratio, que docendo, discendo, cūmunicando, disceptando, iudicando, conciliat inter se homines, coniungitq. naturali quadam societate. neque ullare longius absimus à natura ferarum: in quibus inesse fortitudinem sepe dicimus, ut in equis, in leonibus, iustitiam, equitatem, bonitatem non dicimus. sunt enim rationis, & orationis expertes. ac latissimè quidem patens hominibus inter ipsos, omnibus inter omnes societas hec est. in qua omnium rerum, quas ad communem usum hominum genuit, est seruanda communitas, ut, que descripta sunt legibus, & iure ciuii, hec ita tenentur, ut sit constitutum: è quibus ipsis cetera sic

obseruentur, ut in Graecorum prouerbio est, amicorum omnia esse communia. omnia autem communia hominū videntur ea, quæ sunt generis eiusdem, quod, ab Ennio positum in una re, trasferri per multas potest:

Vt homo, qui erranti comiter monstrat viam,  
Quasi lumen de suo lumine accendat, facit,  
Nihilominus ut ipsi luceat, cùm illi accenderit.

Vna enim ex re suis præcipitur, ut, quidquid sine detrimento possit commodari, id tribuatur cuique, vel ignoto. ex quo sunt illa communia, non prohibere aqua profluente: pati, ab igne ignem capere, si quis velet: consilium fidele deliveranti dare. que sunt iis villa, qui accipiunt, danti non molesta. quare & his vertendum est, & semper aliquid ad communem utilitatem afferendum. Sed, quoniam copiae parvae singulorum sunt: eoru autem, qui his egeant, infinita est multitudine: vulgaris liberalitas referenda est ad illum Enni finem: Nihilominus ut ipsi luceat: ut facultas sit, qua in nos mos similes liberales. Gradus autem plures sunt societatis hominum. ut enim ab illa discedatur infinita, propior est eiusdem gentis, nationis, lingue, qua maximè homines coniunguntur: interius etiam est, eiusdem esse cinitatis. multa sunt enim ciuibus inter se communia, forum, fana, porricus, vie, leges, iura, iudicia, suffragia, consuetudines præ erea, & familiaritates, multaq. cum multis res, rationesq. contractæ. Arctior vero colligatio est, societas propinquorum: ab illa enim immensa societate humani generis, in extuum, angustumq. concluditur. nam, cùm sit hoc natura commune omnium animatum, ut habeant libidinem procreandi: prima societas in ipso est coniugio, proxima in liberis, deinde una domus, communia omnia. id autem

autem est principium urbis, & quasi seminarium reip. sequuntur fratrum coniunctiores, post consobrinorum, sobrinorumque: qui, cùm una domo iam capi non possint, in alias domos, tamquam in colonias, exēunt. Sequuntur connubia, & affinitates: ex quibus etiam plures propinqu. que propagatio, & siboles, origo est rerum. sanguinis autem coniunctio, & benevolentia deuincit caritate homines. magnum est enim, eadem habere monumenta maiorum, eiusdem vti sacris, sepulchra habere communia. Sed omnium societatum nulla præstantior est, nulla firmior, quam cùm viri boni, moribus similes, sunt familiaritate coniuncti. illud enim honestum, quod sepe diximus, etiam si in alio cernimus, tamen nos mouet: atque illi, in quo id inesse videtur, amicos facit. & quamquam omnis virtus nos ad se allicit, facitque, ut diligamus, in quibus ipsa inesse videatur: tamen iustitia, & liberalitas id maxime efficit. nihil autem est amabilius, nec copulantius, quam morum similitudo honorum, in quib. enim eadem studia sunt, eademq. voluntates, in his scilicet, ut quæ quisq. altero delectetur, ac seipso: efficiturq. id, quod Pythagoras ultimum in amicitia, putauit, ut unus fiat ex pluribus. Magna etiam illa communitas est, qua conficitur ex beneficiis ultro citroq. datis, acceptisq. que mutua, & grata dum sunt, inter quos ea sunt, firma deuinciuntur societate. sed, cùm omnia ratione, animoque lustraueris, omnium societatum nulla est grauior, nulla carior, quam ea, qua cum rep. est unicuique nostrum. cari sunt parentes, cari liberi, propinqu, familiares: sed omnes omnium caritates patria una complexa est: pro qua quis bonus dubitet mortem oppetere, si ei sit profuturus? quo est detestabilior istorum inumanitas, qui lace-

*rarunt omnis celere patriam, & in ea funditus de-lenda occupati & sunt, & fuerunt. Sed, si contentio quadam, & comparatio fiat, quibus plurimum tribu-endum sit officij: principes sunt patria, & parentes, quorum beneficiis maxime obligatis sumus: proximi li-beri, totaque domus, qua spe etat in nos solos, neque aliud ullum potest habere per fugium: deinceps bene conuenientes propinquui, quibus communis etiam ple-rumque fortuna est. quam obrem necessaria vita pre-sidia debentur iis maxime, quos ante dixi: vita au-tem, viciisque communis, consilia, sermones, cohor-tationes, consolationes, interdum etiam obiurgationes in amicis vigent maxime, estq. ea iucundissima ami-citia, quam similitudo morum coniungavit.*

## EXPLANATIO.

**R**A TIO, & oratio, } utrumque λέγεται ἀνάγνωσις enim omnino homo à brutis differt. Plato in epitaphio, & Aristoteles Polit. i. D O C E N D O , discendo, } hominis proprium et docere, ac discere. doctrinam enim mens docentis effundit, disciplinam mens discentis haurit. patres autem liberos do-cent, dominus familiam, magister discipulos, vir prudens. in peritos. C O M M U N I C A N D O , } impartiendo necessaria, vel consilia conferendo. D I S C E P T A N D O , } accusando, defendendo. quæ sequitur iudicare. F O R T I T Y D I N E M , } si vires, & animum spectemus. quæ tamen fortitudine propriæ non est, rationis expers, & prudentia. A M I C O R V M o n n i a esse communia. } Arist. Pol. 2. Διὰ τοῦτο οὐτε τὸ καθηδρακόν παρακίνει, καὶ φέρει. Undecim mei libri, & unus Tertij, Amicorum esse communia omnia. Tres, Amicorum esse o-mnia communia. G E N E R I S eiusdem. } Eius, emendauit, ex veteribus libris decē, & uno Tertij. in uno, Huius. T R A N-S F E R R I per multas potest: } ita unus meus liber. unus, in multas partes potest. unus, in multas potest. quinque, in multas potest: sex, & unus Tertij, in permultas potest. Vt homo, &c. } abest, vt a sex antiquis libris, & sanè recte abest, versu etiā nō solū per-mittente,

## I N L I B. I. D E O F F.

105

mittete, sed etiā suadende. E R R A N T I monstrat viam, } lib. 3. Quid est aliud, erranti via non monstrare, &c. C O M I T E R , hoc ipsum attingit in oratione pro Balbo. N I H I L O M I-N V S ut ipsilueat, } sic quatuor libri mei. duo, & Tertij, Nil-hilominus ipsi luceat. A qv A profunde, } sic Petrus Nan-nius ex antiquis libris, emendauit quo ego natus sum anno. quem alij postea sunt secuti: melius, quam, vt antea, Aquam profluente. Sic & liber Tertij. V V L G A R I S liberalitas, } qui omnibus impertitur. A B illa discedatur infinita, } societa-te, qua omnibus ratione, & oratione coniunguntur. Sic est in decem meis libris, & uno Tertij. L I N G V A E, qua maximè homines coniunguntur. } nam Sermo est instrumen-tum societatis. I N T E R I V S } alij, Interior. cum quibus duo mei faciunt. utrumque recte, sed illud maiorem consen-suum librorum habet. N A M cūm sit hoc natura commune om-nium animalium, ut habeant libidinem procreandi: prima societas in ipso est coniugio, &c. } Ex Arist. i. Pol. Ανάγνωσις πρώτων συν διάτελε τούτων αἰτία αἰτία μὲν παραβολής εἶναι, αἰτία δὲ της προστῆς γνένεται τετραγ. &c. Et Oecon. i. Κατανόμηση πρώτη της θέλεται, καὶ τὸ διπλόν παραβολής εἶναι. C O M M U N I A o m n i a. } Charondas, οὐρανοῖς appellat, i. eadem autem vtentes: vel οὐρανοῖς, i. con-uitores, Epimenides, οὐρανοῖς, i. eodem præsēpi communica-nentes: vel, οὐρανοῖς, i. eodem fumo vtentes. I D autem est p r i n c i p i u m v i b i s, & quasi seminarium reip. } vrbis enim ex domi-bus, resp. ē ciuibus constat. C O N S O B R I N O R V M , sobrin-ruimque: } prolis propagationem intelligit. I N a l i a d o m o s, tamquam in colonias, exsunt. } Arist. Pol. i. Μάλαγα δὲ κατὰ πύρων εἴναι η κατὰ οὐρανίαν εἴναι, οὐτε κατὰ οὐρανούς προσδικεῖται, πα-δει τε καὶ παραδοθεῖται. Et paulo infra: Οὐτε καὶ αἱ αποκαίσια διὰ τὴν οὐρανούσειαν. Et Plato vi. de Leg. Οὐτε εἰς αἰρετας αἰρηναρινούντες. M O N U M E N T A maiorum, } dicta, quod nos alicuius rei cōmoneant. Graci, μνημεῖα appellant. Nempe, statuas, tro-phæa, & maiorum imagines, quæ posteros virtutis auitæ ad-moneant. Vide, quæ de imaginib[us] maiorum diximus ad Sallustium. Cicero in Bruto: Ipse familiæ sua quasi ornamen-ta, & monumenta seruabant, & ad vélum, si quis eiusdem ge-neris occidisset, & ad memoriam laudum domesticarum, & ad illustrandam nobilitatem suam. E I S D E M riti sacra, } erant enim & publica ciuitatis, & priuata cuiusque familiæ sacra, quæ tradebantur heredibus. Sacra enim, ex Festo, aut

domestica sunt, aut peregrina, aut publica, aut priuata. De priuatis legitur in lege x i i. tabularum, apud Cic. de Leg. ii. Sacrorum societatem nominat & Plinius in Panegyrico. Vide & in Adagiis, Sine sacris hereditas. Vel, *sacris*: id est, res opulentissima, sic saepe apud Plautum. **S E P V L C R A** **b a b e r e c o m m u n i a .** de sepulcris, variisq. sepeliendi ritu consu- lendum cencio *Lilium Gregorium Gyraldum*, qui totam hanc materiem doctissime tractauit. **S E D o m n i u s s o c i e t a t u m &c.** vide dialogū de Amicitia. **C O P Y L A N T I V S .** ita legendum. itaq. Pater ante plures annos in nostris libris edi iussit itaq. est in vno meo, *I D , quod Pythagoras ultimum in amicitia putauit,* sic legit Nonius hunc locum, & interpre- tatur, *Vltimus, i. primus. citatq. Virgilium,*

Tu sanguinis vltimus auctor.

*Liuius quoq. lib. i. Tarquinius, male dicta ab vltima stirpe or- sus. Cornelius Nepos in Attici vita stirpe vltimā dixit. Cicero in Fin. 3. Sūmum bonū, quod vltimū appellat, in animo pone re. Et v. Homini id est in bonis vltimū, secūdū naturā vivere. Vnusex meis libris, Id, quod Pythagoras iussit in amicitia. Ma- lē, sed unde tamē (ex varietate) eliciatur vera lectio. Hoc au- tem alij tradiderunt nam Pythagoras nihil scripsit. *V t m u s f i a t e x p l u r i b u s .* Aristoteles *ε t a v ,* definit, *μ i a r φ ρ o v* *σ t o p e a t i v* *ε t a m o u t o v :* id est vnam animam in duobus corporibus habens. **M V T V A .** id est, ne alter tantummodo det, alter accipiat. **P A T R I A r n a .** cuius amorem omnibus rebus preferen- dum esse, omnes fatentur. de qua Horatius:*

Dulce, decorūmq. est, pro patria mori.

Sophocles quoque in Antigona naui patriam compa- rat, qua in columni, fractaque, salui sunt, periclitanturq. na- uigantes:

*Τ ούτο μηγανθακ, ὅτι*

*Ηδ' ἐστι γά τοκουνοτα, καὶ τεύτης ἐπ*

*Πλέοντες ὄρθις τοὺς φλέους πινύμιθα.*

**S I ei si profuturus?** vt Decij, Codrus, & alij. **Q u i l a c-**  
**r a u n t o m n i sc d e r e p a t r i a m ,** cum dixit, Lacerarunt, Cae-  
sarem iam mortuum notat: cum verò subiungit, In ea fun-  
ditus delenda occupati & sunt, & fuerunt, M. Antonium  
carpit, qui post obitum Cæsaris, consul cum esset, om-  
nem suam potestatem ad opprimendam rursus libertatem  
contulit: quod ei denique, facta cum Octavio, & Lepido

*conspic-*

conspiracyne, succesit. **P A T R I A , & parentes.** vide in Lælio, & Augustinum de doctrina Christiana. Has au- tem virtutes Isocrates in Euagora ostendit, & Iosephus in David, Antiquit. Iud. libro 7. circa finem. **C O M M U N I S** **f o r t u n a .** in rebus secundis, aduersisque. **I N T E R D V M** **obligationes,** proverbiū, Amicorum est mutuo ad- monere. Cuiusmodi est apud Terentium Demea, & Micio.

## G I C E R O .

**S E D , i n h i s o m n i b u s o f f i c i i s t r i b u e n d i s , v i d e n -**  
**d u m e r i t , q u i d c u i q u e m a x i m e n e c e s s e s i t , & q u i d**  
**q u i s q u e n o b i s c u m , v e l s i n e n o b i s , a u t p o s s i t c o n s e q u i ,**  
**a u t n o n p o s s i t . i t a n o n i d e m e r u n t n e c e s s i t u d i n u m**  
**g r a d u s , q u i & t e m p o r u m . s u n t q u e o f f i c i a , q u a e a l i s**  
**m a g i s , q u a m a l i s , d e b e a n t u r : v t , v i c i n u m c i t i u s**  
**a d i u n e r i s i n f r u g i b u s p e r c i p i e n d i s , q u à m a u t f r a -**  
**t r e m , a u t f a m i l i a r e m : a t , s i l i s i n i n d i c i o s i t , p r o p i n -**  
**q u u m p o t i u s , & a m i c u m , q u à m v i c i n u m d e f e n d e r i s .**  
**H e c i g i t u r & i t a l i a c u r c u m s p i c i e n d a s u n t i n o m n i o f -**  
**f i c i o : & c o n s u e t u d o , e x e r c i t a t i v . c a p i e n d a , v t b o n i r a -**  
**t i o c i n a t o r e s o f f i c i o r u m e s s e p o s s i m u s , & a d d ē d o , d e d u -**  
**c e n d o q. v i d e r e , q u a e r e l i q u a s u m m a f i a t , e x q u o , q u a n -**  
**t u i c u i q u e d e b e a t u r , i n t e l l i g a s . S e d . v t n e c m e d i c i , n e c**  
**i m p e r a t o r e s , n e c o r a t o r e s , q u a m u i s a r r i s p r a e c e p t a p e -**  
**c e p e r i n t q u i d q u a m m a g n a l a u d e d i g n u m s i n e u s u , &**  
**e x e r c i t a t i o n e c o n s e q u i p o s s u n t : s i c o f f i c i i c o n s e r u a n d i**  
**p r a e c e p t a t r a d u n t u r i l l a q u i d e m . v t f a c i a m u s i p s i : s e d**  
**r e i m a g n i t u d o u s u m q u o , . e x e r c i t a t i o n e q. d e s i d e r a t .**  
**A t q u e a b i i s r e b u s , q u a e s u n t i n i u r e s o c i e t a t i s h u -**  
**m a n a , q u e m a d m o d u m d u c a t u r b o n e s t u m , e x q u o a p t u e s t**  
**o f f i c i u m , s a t i s f e r e d i x i m u s . I n t e l l i g e n d u m e s t a u t e m ,**  
**c u i p r o p o s i t a s i n t g e n e r a q u a t u o r , e q u i b u s b o n e s t a s , o f -**  
**f i c i u m q. m a n a r e t s p l e n d i d i s s i m u m v i d e r i , q u o d a n i m o**

*magnō, elatōque, humanisq[ue] res despiciēte, factū sit. itaque in probris maximē in promptu est, si quid tale dici potest:*

*Vos etenim, iuuenes, animum geritis muliebrem,  
Illa virago viri: &, si quid huusmodi:  
Salmacida spolia sine sudore, & sanguine.*

*Contrāque in laudibus, quæ magno animo, & fortiter, excellentēque gesta sunt, ea nescio quo modo quasi pleniore ore laudamus. hinc rhetorum campus de Marathone, Salamine, Plateis, Thermopylis, Leuctris, Stratocle: hinc noster Cocles, hinc Decy, hinc Cn. & P. Scipiones, hinc M. Marcellus, innumarabileisque alij: maximēque ipse populus R. animi magnitudine excellit. Declaratur autem studium bellicæ gloria, quod statuas quoque videmus ornatu ferè militari. Sed ea animi elatio, quæ cernitur in periculis, & laboribus, si iustitia vacat, pugnatque non pro salute communi, sed pro suis commodis, in vito est. non enim modo id virtutis non est, sed potius immanitatis, ommem humanitatem repellentis. itaque probè definitur à Stoicis fortitudo, cum eam virtutem esse dicunt propugnantem pro equitate. quocirca nemo, qui fortitudinis gloriam consecutus est, insidiis, & malitia laudem est adeptus. nihil enim honestum esse potest, quod iustitia vacat. præclarum igitur Platonis illud: Non solum, inquit, scientia, quæ est remota à iustitia, calliditas potius, quam sapientia, est appellanda, verùm etiam animus, paratus ad periculum, si sua cupiditate, non utilitate communi, impellitur, audacia potius nomen habeat, quam fortitudinis. itaque viros fortes, magnanimos, eosdem bonos, & simplices, veritatis amicos, minimēque fallaces*

esse

*esse volumus. que sunt ex media laude iustitia. Sed illud odiosum est, quod in hac elatione & magnitudine animi facilimè perinacia, & nimia cupiditas principatus innascitur. ut enim apud Platone est, omnem morem Lacedemoniorum inflammatum esse cupiditate vincendi: sic, ut quisque animal magnitudine maximē excellit, ita maxime vult princeps omnium esse, vel potius solus esse. difficile autem est, cum prestatre omnibus concupieris seruare equitatem, quæ est iustitia maximē propria. ex quo fit, ut neque disceptatione vinci se, nec ullo publico, ac legitimo iure patientur, exsistuntque in rep. plerunque largitores, & factiosi, ut opes quammaximas consequantur, & sint vi potius superiores, quam iustitia pares. sed, quo difficilius, hoc præclarissimus. nullum enim est tempus, quod iustitia vacare debeat. fortes igitur, & magnanimi sunt habendi, non qui faciunt, sed qui propulsant iniuriam. vera autem, & sapiens animi magnitudo honestum illud, quod maximē natura sequitur, in factis positum, non in gloria iudicat, principemque esse manuit, quam visideri. etenim, qui ex errore imperita multitudinis pendet, hic in magnis viris non est habendus. Facillimè autem ad res iniustas impellitur, ut quisque est altissimo animo, & glorie cupido. qui locus est sane lubricus: quod vix inuenitur, qui, laboribus suscepit, periculisque adit, non, quasi mercedem rerum gestarum, desideret gloriam.*

## EXPLANA TIO.

*Q*VI & temporum.} habenda temporis ratio interdum maior est, quam necessitudinis. *VICINVM citius adiunxit.*

tem existimat. Hesiodus quoque in Ergis, commoditates boni vicini enumerans, ait, si ipsius opera opus quis habeat, absentis propriis negotiis, ei incunctanter eum affuturum:

*Eἰδὸς τοις καὶ κῆρυξ ἐγχώρεον αἴσθομέντος:  
Τύποντες δὲ ζωγοὺς ἔκτασιν, ζόσταντο δὲ πησόι.*

**S**ILIS in iudicio sit,} Archidemides cognatum Lacheten aduocatum sibi rogat, apud Teretium Eunycho. **B**ORGATI **ratiocinatores**} arithmeticici, qui officiorum datorum, acceptorum, que inire rectam rationem possint. **D**EDUCENDO Q.} diminuendo, scilicet Att. Detrahere de summa dixit, & pro Rabirio. **D**e cessione de summa trahere. **S**E D, vt nec medicis, nec imperatoribus, nec oratores &c.} Arist. Pol. lib. 1. cap. 7. Parte de maiestate mī pūr θεωρίαι ελεύθερον εχει, mī dē ἐμπειρίαινται καὶ μάθαι. Oratorem autem videtur imperatori anteponere in procēmio lib. 1. de Oratore. **A**NIMO magno, elatōque,} Fortitudinis descriptio, & laus. **M**agno magnas res appetente. **E**latō: non humili, & abiecto, sed alte spectanti. nam Elatum in bonam partem accipendum est. **H**VMANASQ. res despiciens,} fortuitas, & externas, fortunaeque ludibria. **I**N promptu maximē in promptu est,} imitatus Ciceronem Plutarchus in lib. de pueris educandis: Οὐεῖδην περόχειρα τῶν επειγόντων, καὶ λαυδερούσιαν εὐαρπάνεις. &c. **A**NIMVM geritus muliebrem,} sic locutus par. 1. Gere animum lude dignum. **S**ALMACI da spolia,} feminæ nomen viro tribuit, probri canissa. Strabo lib. XIV. **K**αὶ οἱ Σαλμαῖοι κρήνη σταθμανίναι αὐτὴν οὐδὲ ὅτερην, ἀς μελανίζουσαν πίνεται εἰς αὐτὴν. Sunt, qui legant, Salmacida. vide & Lutatium in Ouidij Metam. 1. v. Hes autem versus alij putant Ennij esse. Ego insculptos statuæ equæstri fuisse puto. quod ex Seneca mihi videor posse elicere: cuius hæc sunt in libro de Consolatione: Equæstri insidens statuæ in Sacra via celeberrimo loco Cloelia, exprobrat iuuenibus nostris puluum adscendentibus, in ea illos virbe sicingredi, in qua etiam feminas equo donauimus. De statua autem Plin. lib. XXXIV. cap. 6. videndus Liuius lib. 2. Dionys. lib. 5. Plutarchus in Pöbligola, & de clar. mul. cap. 14. Eutrop. lib. 1. Valer. lib. 3. cap. 2. de vir. ill. cap. 13. Florus lib. 1. cap. 10. & Virg. lib. IX. & Silius lib. 10. **R**HETORVM campus,} rhetorum campi, poëtarum sylva. **M**ARATHONE, &c.} victores, Milciades, Themistocles, Aristides, Leonidas, Epaminondas,

In

In historiis autem his describendis quæ alij collegerunt, non grauabor adscribere. **M**arathone: non tam propter Marathonium Taurum à Theseo ibi confectum, de quo Plut. in Theseo, Strabo lib. 9. Pausanias in Att. Ouidius lib. 1. ix. quam propter insignem Milciadiis contra Persas in Marathonis, ciuitatis Atticæ, campo victoriā: in qua Herod. lib. 1. ix. ex Persis sex millia trecenta, ex Atheniensibus centum tantummodo & nonaginta duos cecidisse scribit. Iustinus lib. 2. verò meiorat, Athenienses decem millibus ciuium, & mille Platæenibus auxiliariis aduersus sexcenta millia hostium in campos Marathonios egressos fuisse. Quod quidem Milciadiis trophyum Themistocli, simulationis ardore concitat, somnium adimebat: auctoriis Valerio libro 11. cap. 15. Plutarcho in Themistocle, & Apophthegm. Græcorum. Eusebius in Chronicis hanc victoriam Olymp. IXXII. factam fuisse scribit: Agellius ab v. CCC LX. aut non multo amplius. quæ tempora non malè conueniunt. sexto die mensis Βασιλείων, qui nobis Augustus est, Plut. in Camillo. Scribunt hoc, præter citatos, Orosius libro 11. cap. 8. Otho Phrysingensis lib. 2. cap. 16. Meminit præter terea Thucyd. libro primo. Plutarchus verò in Camillo, Aristide, & Flaminio, & de sero à numine vindicatis. Plato in Georgia, Valerius de ingratiss, tam huius, quam sequentium aliquot meminerunt. **S**alamine: Insula obiecta atticæ continent, suburbana ferè, Solino: vt Cos, Ceos, Sunium olim Atheniæbus, Lacedæmoniorum sententia, eo quod inde Aiacce Telamonio duce cum Atheniæbus ad Ilium profecti sint. Eam autem Solon velut hostilem arcem ex propinquo saluti Atheniensium imminentem recuperauerat. In finu Salaminico Themistocles, Atheniensium dux, totius tum Græcia imperator, rem feliciter contra Xerxes, quem fraude in prælium nauale illexerat, gesit. ob quam victoriam Salaminenses gratulaturi simulacra posuerunt, teste Isocrate. Agellius quatuor annis ante Coriolani vexationem hæc gesta scribit. Historiam referunt Plutarch. in Themistocle, Herod. lib. 1. ix. Iustinus lib. 2. Oros. lib. 2. ca. 9. Meminit Isoc. tum alibi, tū in Panegyrico, & Panathenaico, Plato, & Valerius locis suprà citatis. De hoc plura inferius libr. 3. Boccatus de clar. mul. cap. 55. de Artemisia. **P**latea: Platææ, arum: vel, vt Poëta singulariter protulit, Πλάται,

Bœotie vrbis, à latitudine dicta, vel quod latus vñi sint remis: vel quod procul à lacubus sita sit, à Thebis l.xx. stadiis ad fluum Aſotum, ea via, qua Athens dicit. Hinc celeberrima Pausanias, totius Græciae ducis, de Mardonio Persa victoria, quam ibi Aristidis auxilio vicit, cognomen acquisiuit. Ibidem Louis Liberatoris templum est, & gymnicum certamen in exercitum honorem constitutum, & trophæa pro vniuersitate Græcia contra vim Asiae posita. Historiam scribunt Herod.lib. ix. Plutarchus in Aristide, Oros.lib. 2. cap. 11. Iustinus lib. 2. Meminerunt Thucydides lib. 2. Plutarchus in Cimone, & Isocrates in Plataco: qua oratione post aliquot annos ab Atheniensibus contra Thebanos Platæensibus auxilia petit. *Thermopyla*: Thermopyle, augustus (qua Oeta montis cacumen attollitur) viatoribus ex Thessalia, & à litore Locros petentibus transitus est, ad quem murus erat à Phocensibus Thesfalorum metu ædificatus, & in eo πυλαι, idest portæ transiit præbebant. & quia iuxta in ipsis fruicibus θερμοπλαι essent, vel, ut Herodotus habet, θερμη λαυτερη, Thermopylæ locus est appellatus. Thermæ sacrae erant Herculi, cui era supra exstructa locum religione complebat. ex Strabone, Herodoto, & Luvio. Vbi Leonides, Lacedæmoniorum dux, contra Xerxen in numero exercitu instructum, deficientibus sociis, parua ciuium manu, deuotione facta, fortissime occupuit. Historiam scribit Herod.lib. ix. Iustinus lib. 2. Oros.lib. 2. cap. 9. Meminerunt Valer.lib. iii. cap. de fortitudine, Seneca lib. epist. x. in fine, Agellius lib. iii. cap. 7. Liuius lib. xx. vi. Plutarchus in Pelopida, item in Parallelo vii. item in Apophthegmatis Laconicis, Isocrates in Panegyrico, & Panathenaico. *Leuctris*: oracula, vocesque deorum Lacedæmonios sape monuerant, vt sibi à Leuctrica ira cauerent. Sed (quemadmodum oracula animos ambiguos tenent) de loco cauedo nemini certo constabat, cum apud Megalem, Arcadiæ ciuitatem, eo nomine locus esset, & in Laconia iuxta mare opidum: vbi Epaminondas, Thebanorum dux, Lacedæmonios Græciae imperio, quod semper affectauerant, ita exsult, vt spem vñam amiserint. Refertur historia à Iustino lib. vi. Orosio lib. 3. cap. 1. Othono Phrysingensi lib. 2. cap. 24. Meminerunt Valerius Max.lib. 3. cap. de fortitudine, Cicero lib. 2. de Fin. & Fam.lib. 5. epist. 12. Isocrates in Panegyrico, & Philippico, Polybius lib. 2. Plutarchus in Coriolano, Agesilao, Pelopida, & Artaxerxe, item in A-

in Apophthegm. Laconicis, & Græcis: item in Eroticis: Diidorus Sicus de gestis Philippi, Agellius lib. 17. cap. 21. Xenophon sub finem 7. Ἐλευθεριῶν attingit: neque enim is ad finem historiam perduxit. *Leuctris*: quibus vicere Thebani Spartanos, Epaminonda duce: vnde principatum Græcia sunt adepti. *Stratocle*: vel Strato: vel Stratocles, reponendum. Locus est, vt Miratho, & reliqua superiora, Atheniensium via storia nobilitatus. Thucydides lib. 2. Alij alter. quos vt se quar, historia non patitur. & veteres libri ab opinione nostra parum dissentunt. Cum hæc scripsisse, Sabellicum iam pridem idem sensisse, ex aliorum Scholiis didici. Sanè tantum abest, vt molestè feram, posteriore fuisse me in veritate cognoscenda, vt etiam vehementer gaudeam, opinionem meam doctissimi hominis testimonio comprobari. Libri veteres mei, quinque habent, Stratocles: duo, Stertocles: unus, Sterthocles: unus, Stratocles: unus, Stertocles: unus Stertocle: unus, Stertoteclæ: unus, Siscocles: unus, Teroce: Tertijs, Stercocles. Ioannes Brodæus legit Cytherisque, contra omnium librorum fidem, aitque insulam esse, in qua tuenda singularis Atheniensium virrus entuit. ex Plutarcho, cuius hæc citat: Καὶ τὰς μεγάλης Κύθηρας, καὶ Μήρας, καὶ Κεραύνους εξαρθρίσαντας, νησίαν. HINC nostre Coctes, } enumerat, qui mortis discrimen forte animo adierint. HINC nostre Coctes: absunt hæc ab omnibus, quos vñquam viderimus, veteribus libris. Vt ex repetitione illa, Stratocle, factum fortasse sit, Noster Coctes. Quod tamen si retineamus, eius historia scribunt Liuius lib. 2. Dionys. Halic.lib. 6. Florus lib. 1. cap. 10. Plutarchus in Publicola, de vir. ill. cap. 11. Eutropius lib. 1. cap. 11. De eo etiam mentionem facit Valer.lib. 3. cap. de fortitudine, Cicero Parad. 1. Plut. Parallelo 16. Seneca Epist.lib. 21. epist. 1. Virg. in 8. Silius in 10. August. de Ciu. D.lib. 2. cap. 8. Plin.lib. 36. cap. 15. Agellius lib. 4. cap. 5. DEC 11, pater, & filius, alter anno ab v. c. CDXV. alter anno CDXLIX. Liuius, Florus, Valer.lib. 5. cap. de pietate erga patriam, de vir. ill. cap. 27. Orosius lib. 3. cap. 21. Meminit & Cicero de diu. lib. 1. Tusc. 1. & alibi, & Aug. de ciu. D.lib. 5. cap. 18. C. & P. Scipiones, } duo illa fulmina belli: & Belligeri (vt Silius vocat) Mauortia petitora fratres. quorum Publius, maioris Africani pater fuit. Cnaeus vero, Scipionis Nasica, viri totius senatus cœsura optimi, bello Punico 2. in Hispaniam missi. in quo Publius h

vulneratum filius praetextatus protexit. Cuius mentionem fecit Seneca de beneficiis 3. cap. 32. Valerius de pietate filiorum erga parentes. Cnaeus, re feliciter gesta, Magonem cepit. Liuius lib. 21. Hafdrubalem vicerunt, & Hispaniam suam fecerunt, lib. 23. Post res per octo annos feliciter gestas, prope cum totis exercitibus cæsi, tristem exitum tulerunt, lib. 25. Historiam præterea scribunt Appianus in Libyco, Florus libro II. cap. 6. Orosius libro 4. cap. 17. Eutropius libro 3. cap. 5. Otho Phrysingensis libro 2. Sciponis in Hispaniam missorum meminit Polybius libro 3. interfectorum Silius libro 13. & 15. Interiere anno eodem, quo Syracusa à Marcello captæ sunt: hoc est, ab V.C.DXLII. M. MARCELLVS, M. Claudius Marcellus anno DXXXIX. prætor ad Nolam aduersus Hannibalem prosperè pugnauit. Anno sequenti consul in Sicilia, quæ propè tota ad Pœnos defeccerat, Syracusas obsedit. Anno DXLII. ingentem se virum gerens, expugnat. Liuius lib. 23. 24. 25. Res à Marcello gestas leges præterea apud Plutarchum in eius vita, apud Florum libro 2. cap. 6. de vir. ill. cap. 45. Silius libro 12. apud Valer. libro 1. cap. 1. libro II. cap. 3. libro 3. cap. 2. libro 4. cap. 1. libro 5. cap. 1. lib. 8. cap. 7. de Archimede, item apud Plinium libro 7. cap. 25. ORNATV fere militari. raro togato. vide Plinium libro 34. PRO suis commodis, vt contra Philippum Demosthenes, contra M. Antonium Cicero. AEQVITATE quæ commune commodum, non priuatum, spectat. hinc Agesilaus, fortitudine non opus esse, si omnes iusti essemus. NIHIL enim honestum esse potest, quod iustitia vacat. Arist. Eth. libro 3. cap. 7. & Pol. libro 5. cap. 10. PLATONIS illud: in Epitaphio: Πάσα τε ἐπίτημα χρεῖμαν δικαιοσύνην, καὶ τὸν αὐλαῖς εργατῶν, πανουργία, & συνεταιρεῖα. PARATUS ad periculum, quod fortitudinis principium videtur. SVACUPIDITATE, iniusta. SIMPLICES, veritatis amicos, antiqui libri sex, & unus Tertij, simplicis veritatis amicos. quo modo Euripides:

Απλοῦς δὲ μῆθος τῆς ἀλιθέτας ζεῖν.

Simplicemque veritatis orationem esse, adagium monet. INNASCITVR. sicutiuénalis:

Neglectis vrenda filix innascitur agris.

A PVL Platonem est, in Lachete, siue megæ avideitas: non datur aquosius: ouðiñ allο μιλεῖ εἰ τῷ βίῳ, η πούτο ξέλειν, καὶ ἐπινδέειν,

οὐ πού μελέειν, καὶ ἐπινδέειν, εἰ εἰ τῷ πλεονεῖται τῷ ἀναρ. περὶ τὸ πόλεμον. OMNEM morem, ita omnes veteres libri, ex quibus vnuis supra, Morem, habet, Idest naturam. Illud, μέλει ἐπινδέειν cura est studere, Cicero vertit, Morem. PRINCIPES omnium esse, qualis ab Agamemnon Achiles depingitur. Il. a.

Ἄντος δὲ αὐτὸς οὐδεὶς περὶ πάντων ἔχει περιτελλόντων.

Πάντων μὲν κρεπτεῖν οὐδεὶς παντοποτὸς ἀριστεῖν.

Πάσα δὲ σημάνειν.

VEL potius solus esse. Homerus Od. μ.

Oīος πέντεται, τοι δὲ οὐταὶ αἴσσοντιν.

Idest: Hic sapit vnuis, vt vmbra fugax volat altera turbas.

AEQVITATEM, ita omnes libri veteres. OPES quam maximas, potentiam non diuitias. VI superiores, Octauii tribunus, qui, cum peteret, vt consulatus Octauio immatera atate daretur, idque non impetraret, proferens gladium, dicit: Si vos non dabitis, hic dabit. QVO difficilis, hoc præclarus. Gracis, δύσοντα τὰ κενά. IN factis positum, ad illud pertinet, ἐπὶ τῷ κενῷ δι' αὐτούς τοι. VT et illud Poëta:

Ipsa quidem virtus pretium sibi.

PRINCIPEMQ. se esse manuit, quam videri. tunc enim recte viues, cum studies esse, quod audis. Huc facit Sallustianum illud, ex Aeschilo, supra à nobis notatum: Esse, quam videri, bonus malebat. Ita Aristoteles Polit. I. Τὸ δικαιόεν τῇ διαιτῃ προσέχειν, αρχὴν φύσει, καὶ δέοντος δὲ φύσει, τὸ δικαιόεν τῷ σωματικῷ ποτεῖν, αρχόμενοι, καὶ φύσει διδούλων. Idest: Id, quod animo prospicere potest, princeps natura est, & dominus. quod vero ea potest corpore consequi, subiectum, & natura servum. QVI ex errore imperita multitudinis pendet, ex quo facile errat, itaque virtus ipsa per se, non vulgi laude, astimanda. Seneca: Nunquam tam bene cum rebus humanis agitur, vt meliora pluribus placeant. VT quisque est altissimo animo, & gloria cupido. tredecim antiqui libri, & vnuis Tertij, Cupiditate, in eorum tamen uno, in margine, Cupido, alias, Cupidus. Ut vel, Cupido, vel Cupidus, sit legendum, procul dubio. DESIDERET gloriam. quam saepe, neglecta exequitate, appetimus.

CICERO.

OMNINO fortis animus, & magnus duabus rebus maxime cernitur: quarum una in rerum

externarum despiciencia ponitur, cum persuasum sit, nihil hominem, nisi quod honestum, decorumq. sit, aut admirari, aut optare, aut expetere oportere, nulliq. neque homini, neque perturbationi animi, nec fortune succumbere. altera est res, ut, cum ita sis affectus animo, ut supra dixi, res geras magnas illas quidem, & maximè viles, sed ut vehementer arduas, plenāsque laborum, & periculorum, tum causa vita, tum multarum rerum, quae ad vitam pertinent. Harum rerū duarum splendor omnis, & amplitudo est, addo etiā vtilitatem, in posteriore: causa autem, & ratio efficiens magnos viros, est in priore, in eo enim est illud, quod excellentes atimos, & humana contemnentes facit, id autem ipsum cernitur in duobus, si & solum id, quod honestum sit, bonum indices, & ab omni animi perturbatione liber sis. nam & ea, quae eximia plerisque, & preclara videntur, parua dicere, eaque ratione stabili, firmaq. contemnere, fortis animi, magniq. dicendū est: & ea, quae videntur acerba, quae multa, & varia in hominum vita, fortunāque versantur, ita ferre, ut nihil à statu nature discedas, nihil à dignitate sapientis, robusti animi est, magna & constantia. Non est autem consentaneum, qui metu non frangatur, eum fragi cupiditate, nec, qui in quietum se à labore præstiterit, vinci à voluptate, quamobrem & hac vitanda sunt, & pecunia & fugienda cupiditas, nihil enim est tam angusti animi, tamque parui, quam amare diuitias: nihil honestius, magnificientiusque quam pecunia contemnere, si non habeas: si habeas, ad beneficētiam, libertatēm q. conferre. Cauenda est etiam gloriae cupiditas, ut supra dixi, eripit enim libertatem, pro qua magnanimitis viris omnis debet esse contentio. Nec verò imperia expetenda, ac potius non accipienda inter-

dum,

dum, aut deponenda nonnunquam. V acandum autem est omni animi perturbatione, tum cupiditate, & metu, tum etiam aegritudine & voluptate animi, & iracundia, ut tranquillitas animi adsit, & securitas, quae afferat tum constantiam, tum etiam dignitatem. Multi autem & sunt, & fuerunt, qui, eam, quam dico, tranquillitatē experentes, à negotiis publicis se remouerunt, ad otiumque perfugerunt. in his & nobilissimi philosophi, logique principes, & quidam homines se ueri, & graues nec populi, nec principum mores ferre potuerunt: vixeruntque nonnulli in agris, deletati re sua familiari. his idem propositum fuit, quod & regibus, ut ne qua re egerent, ne cui parerent, libertate vterentur, cuius proprium est, sic vivere, ut velis.

## EXPLANATIO.

**N** VILLI neque homini, neque perturbationi animi, nec fortune succumbere. } id est, nullius nominis metu ab honestate desicere, vel gratia inflecti: non ad iram procluem esse: non cuiusquam opes pertimescere. TUM causa vite, } non inani aliquo studio. D ICENDVM est, } ita est in duodecimi antiquis meis. duo, & Tertij, Ducendum est: quorum unus supra habet adscriptum, Ideit, Iudicandum. QV A& videntur acerba, } re autem vera non sunt. S TATV nature } humanæ. N O N est autem consentaneum, } concludit, qui fortis fit, eundem esse temperantem. L A B O R E } aegritudine. V I T A N D A sunt, } duodecim mei libri, Vida. vtrumque recte. Sunt, abest, ab octo libris. C A V E N D A est etiam gloriae cupiditas, } quam tum maximè amittimus, cum maximè affectamus. Liuius: Noanunquam contemptus honor loco est maximi honoris. L I B E R T A T E M, } tamquam qua sit maximè popularis. oratio pro Cluentio. P R O qua omnis debet esse contentio. } Vnde leges fundamentū libertatis appellantur in oratione pro Cle-

h 3

tio. Aut deponenda nonnunquam. } ut Sulla dictaturam. ex quo illum postea C. Caes. litteras nescisse, cauillatus est, dictator ipse perpetuus. Tarquinus quoque Collatinus, Brutus, primi consulis, collega, ut civitatem metu exoneraret, non tantum consulatu se abdicavit, sed etiam suis omnibus Lau- nium translati, civitate celsit. V o L V P T A T E animi, } ci- tatur ex vetere poeta, Fam. lib. 2. ep. 9.

Ego voluptatem animi nimiam.

C O N S T A N T I A M, } persenerantiam, hoc est in re cum ratione considerata stabilem permanisionem. D I G N I T A T E M, } auctoritatem honestam. I N. H I S } in his fuit Pomponius Atticus. Q U O D & regibus, } vocabulo magnificen- tissimo eorum institutum ornat. C V I V S proprium est, sic vi- uere, ut velis. } Arist. Pol. v. Eleuth. ex q̄d loco, nō p̄ d. Cūvan- tu m̄ p̄ tuāt, p̄ se ζην, q̄d rāt̄ rōmāt̄ dñq̄nct̄as exēsos as. Cū- d̄r̄as.

## C I C E R O.

**Q**UARE, cum hoc commune sit potentiæ cupi- dorum cum iis, quos dixi, otiosis: alteri se adi- pisci id posse arbitrantur, si opes magnas ha- beat: alteri, si cotentii sint & suo, & parvo, in quo qui- dē neutrorum omnino cōtemnenda est sententia: sed & facilior, & tutior, & minus alijs gravis, aut molesta vi ta est otiosorum: fructuosi autem hominū generi, & ad claritatem, amplitudinemq. aptior eoru, qui se ad remp. & ad magnas res gerendas accommodauerunt. quapropter & his forsitan concedendum sit remp. non capessentibus, qui, excellēti ingenio, doctriñe sese de- diderūt: & ijs, qui, aut valetudinis imbecillitate, aut aliqua grauiore causa impediti, à rep. receperunt, cū eis administrāda potestatem alii, laudēm̄g. cōcede- rent. quibus autem talis nulla est causa, si despiceret se dicāt ea, que plerique admirantur, imperia, & magi- stratus, & his non modo non laudi, verū etiam vi-

tio dandum puto. quorum iudicium in eo, quod glo- riam contemnant, & pro nihil putent, difficile fa- ctu est non probare: sed videntur labores & molestias tum offensionum, tum repulsarum, quasi quandam i- gnominiā, timere, & infamiam. sunt enim, qui in re- bus contrariis parum sibi constent: voluptatem seu- risimè contemnant, in dolore sint molliores: gloriam negligant, frangantur infamia: atque ea quidem non satis constanter. Sed iis, qui habent à natura adiu- menta rerum gerendarum, abiecta omni cunctatione, adipiscendi magistratus sunt, & gerenda respubl. est: nec enim aliter aut regi ciuitas, aut declarari animi magnitudo potest. Capessentibus autem rempub. nihil minus, quam philosophis, hanc scio an magis etiam, & magnificentia, & despiciens adhibenda est re- rum humanarum, & quam sape dico, tranquillitas a- nimi, atque securitas: si quidem nec anxi futuri sunt, & cum grauitate, constantique victuri. quae ea faci- liorā sunt philosophis, quo minus patent multa in eorum vita, que fortuna feriat: & quo minus multis rebus egent: & quia, si quid aduersi eueniat, tam grauiter cadere non possunt. quocirca non sine cau- sa maiores motus animorum concitantur: maiorāque efficienda rempub. gerentibus, quam quietis. quo magis his & magnitudo animi est adhibenda, & vacui- tas ubi angoribus. Ad rem gerendam autem qui acce- dit, caueat, ne id modo consideret, quam illa res hone- sta sit, sed etiam, ut habeat efficiendi facultatem. in quo ipso considerandū est: ne aut temere desperet, pro- pter ignorantiam: aut nimis confidat, propter cupiditatem. in omnibus autem negotiis prius, quam aggrediare, adhibenda est preparatio diligens.

## EXPLANATIO.

**S**i opes magnas habent,} qui enim opes possidet, se ipsa-  
rum præsidio omnia posse credit. **F**R V C T V O S I O R  
autem hominum generi } ergo præstantior. non enim nobis  
tantum ipsi nati sumus. **R**E M P. non capessentibus,} pro-  
si non capessant. Græco more dictum. **V**A L E T V D I N I S  
imbecillitate,} ut majoris Africani filius. A v t aliquagraniore  
causa} cùm, alicuius metu, liberè sententiam dicere non li-  
cet. **Q**VI B V S autem talis nulla est causa,} vnde Aristoteles:  
Δεῖ τοι λέπεντα καὶ μη βουλέψεντα εἰσιν. Idest: Imperio di-  
gnum, velit, nolit imperare oportet. Plato quoque de Leg. i.  
Bonos ait ad magistratum suscipiendum vel præmiis inui-  
tandos, vel poena cogendos **G**L O R I A M contemnunt,} non  
enim amanda gloria, sed id, vnde oritur gloria, honestum,  
& virtus. **O**FFENSIO N V M,} idest, cùm res ex animi sen-  
tentia non succedit. vel, quod magistratum bona fide ge-  
renti multorum simulates, & odia suscipienda sint. **Q**V A S I  
quandam ignominiam,} cùm ignominia non tam sint,  
quàm solida gloria, materies, neque enim Camillus peri-  
clitanti patriæ tam præfenti auxilio esse poterat, nisi prius  
inuidia in exsulium fuisse actus. **P**AR V M sibi consent: }  
medij terminos trahentes. nam stulti, dum vitia vitant,  
in contraria currunt. **V**O L V P T A T E M fenerissimè con-  
temnunt, in dolore sint moliores,} vtrumque fortitudinis  
est, nec dolore, nec volupte vincit. **G**L O R I A M negli-  
gant frangantur infamia: } facilius enim rebus commodis  
caremus, quam incommodas sustinemus. **Q**VI habent  
à natura adiumenta rerum gerendarum,} **T**ous d'auq'irus æ-  
supxēt, Arist. Polit. lib. 2. cap. 9. vnde sumptū hanc sen-  
tentiam Cicero. **A**diumenta: prosperam valetudinem,  
prudentiam, eloquentiam, dexteritatem, constantiam,  
& adeò tandem animum excelsum, patientemque labo-  
rum, & molestiarum. quæ sunt à natura, mutuantur au-  
tem fortasse quiddam ab arte, & institutione: à fortuna  
autem, nobilitatem, amicos, honestas occasiones, & re-  
ctam voluntatem, qua sit, vt publicum priuato præferatur.  
**A**N I M I magnitudo } quæ nō in otiosa vita, sed in rebus ger-  
dis perspicitur. **C**A P E S S E N T I B V S autē rēp. nihilo minus, quām  
p. il. &c. } delirare homines doctos video in huius loci inter-  
preta-

pretatione. aiunt. n. constructionē paulo duriorē esse: effeq-  
datiuos pro ablatis positos. hac sententia: Cūm i, qui temp-  
capessunt, nihil minus sint quām philosophi: tamē a mētra non  
minus illis necessaria est, quām philosophi. Falluntur ipsi,  
quod video, legentes, Nihil minus, pro, Nihil lo minus: quod le-  
gitur in vno meo vetere libro. Hac enim est sententia: Philo-  
sophi magnificentiam, & despiciētiam rerum humanarum  
adhibent. capessentes verò remp. nihil minus, quām philo-  
sophi, & fortasse magis etiam, adhibere debent. Quid clarius?  
**S**I Q V I D E M nec anxi⁹ &c. } si magnificentiam, &  
despi-  
cientiam rerum humanarum adhibebunt, nec anxi⁹ erunt, &  
cum grauitate, constantiāq. viuent. **F**A C I L I O R A sunt philo-  
sophi, } vnde Plato Polit. v. eam demum felicem ciuitatis ad-  
ministrationem fore tradit, si aut philosophi imperent, aut  
principes philosophentur. Et, in Phædone, soli philosopho  
veram prudentiam, & fortitudinem, verissima reip. admiri-  
strandæ adminicula tribuit. **G**R A V I T E R cadere } nam  
multi

— tolluntur in altum,

Vt lapsu grauiore ruant. **Q**U O C I R C A non sine causa &c. }  
supra dixit: Quæ cura exuscitat etiam animos, maiorēsq. ad  
rem gerendam fact. **M**A I O R A Q. efficienda remp. gerentibus,  
quām quietis. } Sic est in quattuor meis. octo, & vnuis Tertijs,  
Maiorāque efficiendi. vnuis, Maio: èque cura efficienda. alias.  
Maiorāque cura efficiendi. Est, qui reponat, ex vetere libro,  
Maiora efficiendi, sine copula. **E**FFICIENDI facultatem. }  
Cicero Fam. lib. i. Plato, inquit, iubet tantum in rep. contendere, quantum probare tuis eiubis possis. **I**N omnibus autem  
negotiis, prius, quām agreendi, adhibet ista preparatio diligens. }  
hoc idem & Sallustius dicit, in procœmio Catilinae: Prius, quām  
incipias, consulto, & vbi consuleris, maturè facta opus est. &  
Demosthenes in procœmis Demigoricis, & in oratione de  
pace: & Isocrates in oratione ἀπὸ Διονύσου: & Aristot. Moral.  
Eud. v. & Nicom. 6. & Diog. Laërt. in Biante. Æmilius Probus:  
Neque acutius vlliis imperatoris cogitatum, neque celerius  
factum usquam legimus. Turpilius Bœthuntibus, apud No-  
num: Quælo cogita, ac delibera.

## C I C E R O .

**S**ed cum plerique arbitrentur res bellicas maiores esse, quam urbanas: minuenda est hac opinio, mul ti enim bella saepe quæsuerunt, propter gloriam cupiditatem: atque in magnis animis, ingenisq. id plerumque contingit, eoque magis, si sunt ad rem militarem apti, & cupidi bellorum gerendorum. vere autem si volumus iudicare, multæ res exstiterunt urbanæ maiores, clarioresque, quam bellica. quamvis enim Temistocles iure laudetur, & sit eius nomen, quam Solonis, illustrius: citeturq. Salamis clarissime testis vitorie, que anteponatur consilio Solonis, ei, quo primum constituit Ariopagitam: non minus preclarum hoc, quam illud, iudicandum est. illud enim semel profuit, hoc semper proderit civitati: hoc consilio leges Atheniensium, hoc majorum instituta seruantur. & Temistocles quidem nihil dixerit, in quo ipse Ariopagum adiunxit: at ille adiunxit Temistoclem. est enim bellum gestum consilio senatus eius, qui à Solone erat constitutus. Licet eadem de Pax Sana, Lysandrōq. dicere. quorum rebus gestis quamquam imperium Lacedemoniorum dilatatum putatur: tamen ne minima quidem ex parte Lycurgi legibus, & discipline conferendi sunt: quin etiam ob has ipsas causas & paratores habuerunt exercitus, & fortiores. Mihi quidem, neque pueris nobis, M. Scaurus C. Mario neque, cum versaremur in rep. Q. Catulus Cn. Pompeio cedere videbatur. parua enim sunt foris arma, nisi est consilium domi. nec plus Africanus, singularis & viri, & imperator, in excindenda Numantia rep. profuit, quam eodem tempore P. Nasica priuator, cum T. Gracchum interemit. quamquam hac quidem res non

solum

solum ex domestica estratione: attingit enim & bellicam, quoniam vi, manuq. confecta est. sed tamen id ipsum gestum est consilio urbano, sine exercitu. Illud autem optimum est, in quo, inuadi solere ab improbis, & inuidis, me audio:

Cedant arma togæ: concedat laurea lingue.

Vt enim alios omittā, nobis remp. gubernantibus, nomine togæ arma cessere? neque enim in rep. periculum fuit grauius unquam, nec maius otium. ita consiliis, diligentiaque nostra celeriter de manibus audacissimorum ciuium delapsa arma ipsa ceciderunt. qua res igitur gesta est umquam in bello tanta? quis triumphus conferendus? Licet enim, Marce fili, apud te gloriari, ad quem & hereditas hius glorie, & factorum imitatione pertinet, mihi quidem certè, vir abundans bellis laudibus, Cn. Pompeius, multis audientibus, hoc tribuit, ut diceret, frustra se tertium triumphum deportaturum fuisse, nisi meo in remp. beneficio, ubi triumpharet, esset habituri. Sunt ergo domestica fortitudines non inferiores militaribus: in quibus plus etiam, quam in his, opere, studiisque ponendum est. omnino enim illud honestum, quod in animo excelsō, magnificoque querimus, animi efficiunt, non corporis viribus. exercendum tamen est corpus, & ita afficiendum, ut obœdire consilio, rationique possit in exequendis negotiis, & in labore tolerando. honestum autem id, quod exquirimus, totum est positum in animi cura, & cogitatione. in quo non minorem utilitatem afferunt, qui togati reip. presunt, quam qui bella gerunt. itaque eorum consilio saepe aut non suscepta, aut confecta bella sunt, nonnunquam etiam illata, ut M. Catonis

*consilio bellum tertium Punicum: in quo etiam mortui valuit auctoritas. quare expetenda quidem magis est decernendi ratio, quam decentandi fortitudo: sed caendum, ne id bellandi magis fuga, quam utilitatis ratione, faciamus. Bellum autem ita suscipiatur ut nihil aliud, nisi pax quesita videatur. Fortis vero animi, & constantis est, non perturbari in rebus asperis, nec tumultuantem de gradu deiici, ut dicitur, sed presentis animi uti consilio, nec a ratione discedere. quamquam hoc animi illud etiam ingenij magni est, precipere cogitatione futura, & aliquanto ante constituerre, quid accidere possit in utramque partem, & quid agendum sit, cum quid enenerit: nec committere aliquid ut aliquando dicendum sit, Non putaram. hec sunt opera magni animi, & excelsi, & prudentia, consilioque fidentis. temere autem in acie versari, & manu cum hoste confligere, immane quiddam, & belluarum simile est. sed, cum tempus est, necessitasq. postulat, decentandum manu est, & mors seruitui, turpitudineque anteponenda.*

## EXPLANATIO.

**M**INVENTA est hec opinio.} non tollenda. Tempus audet hoc dijudicat. modò enim bellicæ excellunt, modò urbañæ. Pro Murena bellicæ urbanis præfert. Turnus, & Drances introducuntur à Virgilio lib. xi. Est & contentio, de Achillis armis, Ulyssis, & Aiacis, apud Ouidium. Homerus quoque Ill. i. ait Phœnicem à Pelco patre Achilli itueni comitem esse, datum, vt illum efficeret μίσθιον τε ἐρωτή θέματα, πολιτεῖα τε ἐρωτών. Vulgo bellicæ præferuntur. de quo rationem reddit Arist. in Probl. scđt. 27. probl. 5. AR EOPAGITAS:} senatus Arcopagitarū populo præterat: cuius auctoritatem Ephialtes, & Pericles in populi gratiam imminuerunt. Arist. Pol. 2. τὸ μὴ εἰ Αρεοπάγιον βουλὺς Εριάντης ἔκολυ σε, καὶ Περικλῆς: ταῦτα δικαιόεσσα

δικαιόεσσα μαθοφέρε κατέστη Περικλῆς: καὶ πῶτον διὰ τὸν ἔγειρον τῷ μητρῷ μαρτυρῶν περιηγήθη, αὐτὸν εἰς τὸν τοιούτον θημοκράτην. Restituta postea est à Cimone Periclis temporibus. Plutarchus. **S E M E L**} Persis Græcia pulsis, ac trucidatis. AT ille adiunxit Themistoclem.} hoc relinquo, in magna librorum varietate: nam nec muto libenter, quod aperta in sententiam habet: & quinque antiquos libros congruere cum sententia video. Placet tamen varietatem adscribere. Vnus: At ille potuit verè dicere se ad victum Themistoclem. Vnus: At ille verò se adiunxit Themistoclem. Vnus: At ille verum esse se adiutum Themistoclem. Vnus: At ille verè se ad iudicium Themistoclem. Vnus: At ille dicit verè se adiutum Themistoclem. Vnus: At ille verè adiunxit Themistoclem. Vnus: At ille verè se adiutum Themistoclem. Terti, & alius: At ille verè se adiutum Themistoclem. Sunt, qui impressa lectionis se auctores falsò faciant. cùm ante a legeretur, At ille verè se dixerit adiutum Themistoclem. **C O N S T I T U T I V S**} Arist. l.2. Pol. Solonem, ait, cùm alia sustulisset instituta Atheniensium, Ariopagum, ut populare consilium, probasse, quo spectat hoc verbum, Constitutus, pro confirmatus, non, Inst. tutus, ut alij. **P A U S A N I A**, Cleombruti filio. **L Y S A N D R O Q**} qui & Atheniensēs vicit, & de Antiocho trophya statuit. Plutarchus, & Thacydides. **P a u s a n i a**, Lysandriqué: utriusque præstitit Agesilaus: sed ab illis dilatum magis imperium est. **L Y C V I G I** legibus,} Xenophon in Lacedæmoniorum rep. Plut. in eius vita, & Agide, & in Apophthegm. Iustinus lib. 3. Valerius lib. 1. cap. 3. Isocrates in Panathenaico, Lucianus de astrologia, Cyrus contra Ilianum lib. 3. Dicitur Rhadamanthi, & Minois in Creta legibus à Thalete musicō edictus. Opinio est, eum circiter Agrippæ tempora floruisse, quo tempore Pharnaces Medus Sardanapalum imperio, & vita priuauit. teste Velleio. Sublatæ sunt eius leges, & disciplina, postquam dccc. annis stererunt, anno ab v. c. dclxv. Vixit ann. xxcv. Lucianus in Macrobiis. De eo Oraculum illud legitur:

Ηχεῖς, οὐ λυκόεργα, οὐδὲν ποτὲ πορεύεται,

Ζλιψί φίλος καὶ πάσιν ὀλύμπια δέματα ἔχειος:

Διέστρα οὐ σε θεὸν μανθεύσομεν οὐδὲν εἰδέρχεται:

Αλλ' ἐστιν καὶ μέλλον θεὸν ἐλπομένων λυκόεργος.

**L A C E D A E M O N I O R U M**} ita legitur in sex meis: octo,

& Tertij, Lacedemoniis. OB has ipsas causas } Isocrates in Panegyrico, maiorum honestam disciplinam in causa fuisse ait, cur Atheniensis ea virtute essent, vt fortiter barbaros profligare possent. PARATORES } non reiicio verbum vñitatum, quod est in decem meis libris. Respicit autem ad ordinem militia, quo s̄pē victoriam Spartani sunt adepti. Alij legunt, Parentiores: cum quibus faciunt tres meis, & Tertij, non reprehendo. nectamen mutare quidquam volui. vñus, Promptiores. P V E R I S nobis } natus Cicero anno ab v.c. DCXLIX.M. S C A V R V S } huic Cicero ad Lentulum sum- mam grauitatem, & constantiam tribuit. In Bruto, in eius oratione sapientis hominis, & recti grauitatem summam, & naturalem quandam fuisse auctoritatem, non vt caussam, sed vt testimonium dicere putares, cūm pro reo diceret. Huius grauitatis exemplum est apud Valerium lib.3, cap. de fiducia sui. Consul fuit cum Ser. Sulpicio Galba, an. DCXLVI. inq. eo consulatu leges de sumptibus, & libertinorum suffragijs tulit. de vir. ill. Tantumq. auctoritate valuit, vt Opimum contra Gracchum, Marium contra Glauciam, & Saturninum priuato consilio armaret. Nec tamen bellica gloria caruit: vt qui de Liguriis consul triumphauit. C. Mario, } de eo Plutar chus, de vir. ill. cap. 67. Sall. in Iug. Oros. lib. v. ca. 16. Florus li. 3, cap. 3. epit. Liu. Appianus in Celticis, Velleius. lib. 2. Eutrop. lib. iv. cap. vult. lib. v. cap. i. Otho Phrysingensis lib. 2. cap. 43. Vide & Plut. in Sull. & Apophthegm. Laconicis, & Parall. cap. 37. Val. lib. 2. cap. i. & 5. & lib. utr. cap. 2. & lib. 11x. cap. 16. Plin. lib. xvii. cap. i. Qnynt. i in declamatione pro milite Marian. Q. c. AT V L V. } Plat. in Pompeio. epit. Liu. Florus lib. 3. cap. vult. Velleius lib. 2. Apo. 1. Bell. ci. Oros. lib. 2. cap. 25. Eutropius lib. v. & vi. Valerius lib. 2. cap. 3. Legitur & apud Sallustium ex i. historiarum. Lepidi Consulis ad Imp. R. oratio, vt arma sumantur contra Sullam dict. atque L. Philippi in senatu, vt Lepido, bellum mouenti, resistat. C. N. P O M P E I O } rerum gestarum magnitudine præstanti, qui, vt ait Cicero, plura bella gesit, quam alij legerant. Ad quem scribens Cicero, Fam. lib. v. eum Scipioni in re militari confert. De eo multa Cicero in orationibus, pro lege Manilia, & pro Murena. Est & eius epistola apud eundem Sallustium, ad senatum, ex i. i. historiarum, quo sua præclarè facta commemorat. PARVA enim sunt foris arma, } sic est in duodecim meis. duo, & Tertij, Parui. quod magis probbo. parui enim sunt fo-

ris arma. AFRICANVS, } minor, Pauli filius. ET vir, & imperator, } belli, domique. IN excusanda Numantia } anno ab v.c. DCXXI. Epit. Liu. lib. LIX. Florus lib. 2. cap. 18. de vir. ill. Oros. lib. v. cap. 6. Eutrop. lib. 4. cap. 7. Otho Phrysing. lib. 2. cap. 43. Vide & Aug. de ciu. Dei. lib. 3. cap. 21. Velleium lib. 2. Val. Max. lib. 2. cap. 2. lib. 3. cap. 2. lib. 7. cap. 6. Plutarchum in Mario. P. N A S I C A } Cn. Scipionis filius, Africani minoris patruelis, vir optimus ob hoc ipsum à senatu iudicatus. Plut. in Gracchis, App. lib. 1. Bel. ciu. de vir. ill. cap. 64. Oros. lib. v. cap. 7. Valerius lib. 3. cap. de fortitudine. Velleius lib. 2. Sallust. in Iugurtha, in oratione C. Memmiij. Aug. lib. III. cap. 24. de ciu. D. P R I V A T V S, } idest, nullum habens publicum munus. Cicero in Rhet. In fortuna quaritur, priuatus ne, an cum potestate, sit. Plautus Capt. Hic qualis imperator? nunc priuatus est. T. I. G R A C C H U M } tribunum pl. perniciosas reip. leges ferentem. I M P R O B I S, } M. Antonio. I N V I D I S } L. Pisone. C E D A N T a r m a togæ. } hunc versum didicere derident multi. Plutarchus Ciceronem in poetica valuisse dicit. C O N C E D A T laurea lingue. } sic recitat Quintilianus lib. III. cap. 1. qui ait, In caminibus utinam pepercisset, quæ non desierunt carpere maligni. duo mei, Laudi. Tertij, supra Laudi, habet, Lingua. Toga: pacis studio. Laurea: triumphus. Plin. lib. xv. cap. 30. Quintilianus: Supplicationes, qui maximus honor vñtoribus bello ducibus dabatur, in toga meruit. Idem Plinius: Quo te, M. Tulli, piaculo taceamus? quóve maximè excellētē insipi prædicem? quo potius, quam vniuersi populi, & illius gentis amplissimo testimo- nio, & in tota vita tua, & ad consulatum tantis operibus electis? te dicente, legem agrariam, hoc est alimenta sua, abdicauerunt tribus: te suadente, Roscio theatalis seditionis auctori leges ignouerunt, notâsq. sedes ignominiae dis crimine exquo animo tuluerunt: te orante, proscriptorum liberos honores petere puduit. tuum Catilina fugit ingenium: tu M. Aetionum proscriptisti. Salue, primus omnium Parenz patræ appellate, primus in toga triumphum, linguæque lauream merite, & facundia litterarum Latinarum parentis: atque: vt dictator Cæsar, hostis quondam tuus, de te scriptit, omnium triumphorum Lauream adepte maiorem, quanto plus est ingenij Romani terminos in tantu promouisse, quā imperij. N E c maius oīum. } coniuratione oppressa. antea, Odiū. Primus Pater reposuit, Otiū, quod confirmari video à libro Tertij, &

alio meo. HEREDITAS huic glorie, } Fam. lib. II. ad M. Cœlium: Filio meo, quem tibi carum esse gaudeo, si erit villa resp. satis amplum patrimonium relinquam, memoriam non minis mei. &c. O hominem gloriae nimis cupidum. TERTIVM triumphum} Mitridate, & Tigrane vicitis. Plutarchus. EXERCENDVM corpus, } ratione victus, & gymnastica. OBOEDIERE consilio, } Sallust. Animi imperio, corporis servitio magis vtimur. IN exsequendis negotiis, } Isocrates: Γύμναστες οι αυτοί νίκης εὔνοιας ὅπεραν διάνυσσον τούτους αναστοιχώσειν. MOR TVI valuit auctoritas. } cùm actum est, Catone iam mortuo, de Carthagine euerienda. QVARE expetenda quidem magis est decernendi ratio, quam decertandi fortitudo: } lepidè opponuntur. Decernendi ratio, Decertandi fortitudo, & sententia comprobatur antiquorum omnium librorum, qui apud me sunt, auctoritate, quo magis miror in emendato loco mutationem queri. VT nihil aliud nisi pax quaestia videatur: } in oratione ad C. Cæsarem, de rep. ordinanda: Sapientes pacis causa bellum gerunt: laborem spe otij sustentant. nisi illam firmam effici, vinci, an viceisse, quid retulit: Plato de Legib. I. Out' ἀνθρωποδημος αρχιπλήσιος, εἰ μὲν καὶ εἰπόμενος τὰ πολέμου γενεθλῖον μάλλον, οὐ τῷ πολέμῳ ἐνεργεῖ τὸ εἰπόμενον. Pittacus monebat, incruentas victorias querendas esse. FORTIS vero animi, } sic omnes veteres libri. Aristoteles: Μεγαλοψήσας εἴτις πέρειν ἐντυγχάνει, καὶ αἰνάζει: Magnanimi est, ferre bona, malamq. fortunā. TVM LTVANT EM de gradu deiicii, } animo cōsternari, ac veluti à statu mentis dimoueri. Vide Adagia. Metaphora, ab athleticis, & militibus: qua virtut & in Partitionibus: In omnibus causis trias sunt gradus, ex quibus unus aliquis capiendum est, si plures nō queas, ad resistendum, nam aut ita consistēdum est, vt, quod obiicitur, factū neges. & c. Tumultuantem tumultu perterritum, perturbatum, θορυβούμενον. PRAESENTIS animi vi consilio, } sic septem libri mei: à quibus non discrepat sententia. hoc. n. dicitur, Animus, qui adeſt, quēq. metus, & perturbatione non abstulit, cogitat, & considerat ea, quibus optatum rei extitum consequatur. Absentis autem animi quæ cogitatio, quod consilium esse potest? Ad Att. Vbi, inquires, animus ille tuus adeſt, & idem est. Quatuor mei libri, & unus Tertiij; Præstanti animo vi, & consilio. Vnus: Presentis animi est vti & consilio. Vnus: Præstantis animi vi consilio. Vnus: Præstanti animo vi consilio. Sunt, qui reponant, Niti, pro Vti, contra veteres

res omnes libros. NON putaram, } sic Demosthenes oratione tertia in Philippum: Καὶ μὴ εἰπεῖν τοὺς αὐχεῖς οὐτε πότε εἰπεῖν τοὺς τοιούτους τοὺς δέ τις φέρει ταῦτα τούτα. Id est: Enimetur turpe illud est, vbi quid iam euenterit, tum dicere, quis hanc euentera putasset? Valerius Max. lib. 7, cap. 2. 2. Scipio Africanus turpe esse aiebat, in re militari dicere, Non putaram. Seneca lib. 2. de Ira, cap. 31. Turpis simam aiebat Fabius imperatori excusationem esse, Non putavi. Plutarchus tribuit Iphicerati. Isocrates autem dixit: Περούσιν χαῖ, καὶ οὐ μετεντείνοντις αἰσθεῖ τοι στρίψιν. Id est: Vt si sapientis est, ante, non post, factum lapere. BELLARVM simile est, viribus, non ratione, vteantium. MORS seruitur, luxitudinique anteponenda. } Cicero Fam. lib. ad Plencum. Plato quoque lib. 6. de Legibus: πλευτῶν δὲ καὶ πόλεων εἰναι ἀριστοτελεῖς πόλεις τίγεταις, ποτὲ δέ τις ταῦτα παρειλαμβάνει τούτοις αἰσθαντας πότερον ποτέταις ποτέταις, η λείπεται ποτέταις τούτοις.

## C I C E R O .

**D**E euerienda autem, diripiendisq. urbibus valde illud considerandum est, ne quid temerè, ne quid crudeliter fiat. Id est viri magnanimi, rebus agitatis puriore fonte, multitudinem conseruare, in omni fortuna recta, atque honesta retinere. ut enim sunt, quemadmodum supra dixi, qui urbanis rebus bellicis anteponunt: sic reperias multos, quibus pericula, & calida consilia quietis cogitationibus splendiderim, & maiora videantur. nunquam omnino periculi fuga committendum est, vt imbellis, timidiq. videantur: sed fugiendum etiam illud, ne offeramus nos periculis sine causa, quo nihil potest esse fructuus. quapropter in adeundis periculis consuetudo imitanda mediorum est, qui leviter agrotantes leviter curant: gravioribus autem morbis periculosas curationes, & anticipates adhibere coguntur. quare, in tranquillo tempore aduersam optare, dementis est: subuenire

autem tempestati quavis ratione, sapientis: eoque  
magis, si plus adipiscere re explicata boni, quam ad-  
dubitata mali. Periculose autem rerum actiones par-  
tim iis sunt, qui eas suscipiunt: partim reip. Itemque  
alij de vita, alij de gloria, & benevolentia ciuitum in  
discrimen vocantur. promptiores igitur debemus esse  
ad nostra pericula, quam ad communia, dimicareque  
paratus de honore, & gloria, quam de ceteris com-  
modis. inueni autem multi sunt, qui non modo pecu-  
niam, sed vitam etiam profundere pro patria parati  
essent: idem gloriae iacturam ne minimam quidem fa-  
cere vellent, ne rep. quidem postulante: ut Callicra-  
tidas, qui, cum Lacedemoniorum dux esset Pelopon-  
nesiaco bello, multaque fecisset egregie, vertit ad ex-  
trenum omnia, consilio non paruit eorum, qui clas-  
sem ab Arginusis remouendam, nec cum Atheniensi-  
bus dimicandum putabant. quibus ille respondit: La-  
cedemonios, classe illa amissa, aliam parare posse: se  
fugere sine suo dedecore non posse. atque hoc quidem  
Lacedemonijs plaga mediocris fuit, illa pestifera, qua,  
cum Cleombrotus, inuidiam timens, temere cum Epa-  
minonda confixisset, Lacedemoniorum opes corru-  
erunt. Quanto Q. Maximus melius: de quo Ennius:  
Vnus homo nobis cunctando restituit rem:  
Non ponebat enim rumores ante salutem.  
Ergo postq. magisq. viri nunc gloria claret.  
Quod genus peccandi vita diuin est etiam in rebus ur-  
banis. sunt enim, qui, quod sentiunt, etiam si opti-  
mum sit, tamen, inuidiae metu, non audent dicere.

## EXPLA-

## EXPLANATIO.

**D**E cuertendis. &c. } Galli illud dictum in Romanos viatos  
superbum est. Vicit nil, nisi dolor. Ceterum nil magis  
victorem decet, quam clementia. Vnde Anchise vmbra apud  
Virg. in vi. Aenean filium disciplinam futuræ reip. docet:  
Tu regere imperio populos, Romane, memento:  
Hec tibi erunt artes, paciq. imponere morem,  
Parcere subiectis, & debellare superbos.

**R E B V S agitatis** } accurate examinatis. **C A L I D A con-**  
**filia** } temeraria, Terent. Eun. Plautus, Calidum mendacium.  
Corn. Nepos in Attici vita, Calidam liberalitatem. Velleius  
lib. ii. hoc C. Octauio laudi adscribit: Spreuit caelestis animus  
humana consilia: & cum periculo potius summa, quam tuto,  
humilia proposuit sequi. **S I N E causa.** } quo distinguitur a  
fortitudine temeritas. **Q u o nihil potest esse stultius.** } nam omni  
animantium generi id est à natura tributum, ut se, vitam, cor-  
pusq. tuerintur. quod igitur cauere potes, stultum est admittere.

**P E R I C U L O S A S curationes.** } Ouidius:  
Cuncta quidem tentanda: sed immedicable vulnus  
Ense recidendum, ne pars sincera trahatur.  
Quod fortasse ex Sophoclis Aiace sumptum:  
Οὐ πρὶς ταῦτα οὐδὲν ὅπερις ὅπερις εὔκοπτον μῆνυμα.

Plutarchus de tranquillitate citat Sophoclis versiculum,  
huc congruentem:

Πληράχολὸν κλύσσοντο φρεγέσθιο πηρό

Vide Adagia, Tὸ κακὸν νοεῖ δεσμωτέα.

Sciponis apud Plutarchum est apophthegma, Imperatore,  
quemadmodum & medicum, oportere ultima vti per fer-  
rum curatione. **A N C I P I T E S** } que vel salutem, vel interi-  
tum aferant. **Q u a v i s ratione,** } etiam periculo, & iactura.  
**R E explicata.** } confecta, ad felicem exitum perducta. **A D-**  
**D U B I T A T A** } in discrimen adducta, quæ ex animi sententia  
non euenerit. Euripides:

Δεῖνος αὐτῷ πειρούσθις ιόνει πάθει.

Et: Τολμαναίσκη καθ' τούχω, καθ' ψι τούχω.

**V t Callicratidas.** } Thucydides bellum Peloponnesiacum  
descripsit: ab eōq. prætermissa, persecutus est Xenophon, qui  
primo Euclaziarū paulò aliter hoc exponit, quā Cicero: Η Σπάρτη

οὐδὲν μὴ κρίνων οἰκεῖται ἀντὶ διπλασίους φύγειν δὲ αἰχρέων εἶναι τῷ φόνῳ.  
De hoc meminit & Plutarchus in Aphophthegmatis Laco-nicis. Gestum est anno ab v.e.cccxlii. Libenter autem & à Græcis, & à nobilissimis Græciæ populis exempla sumit. **V E R T I T** ad extre-mum omnia, & publicam felicitatem per-didit, & suam gloriam amisi. A B Argi-nis, & fita sunt in con-tinenti ante Lesbum, in Maleç conspectu, contra Mitylenen. Xenophon, & Thucydides. A T Q V E hec quidem } Xenophon lib.vi. Ex alio. C L E O M B R O T Y S, & in præclarâ illâ Leu-étrica victoria. Plut.in Pelopida. Valer.lib.3.cap.de fortitudi-ne. Gestâ ab.v.e.anno ccclxxi. I N V I D I A M timens, & male-uolorum obtrectationes, qui eum dicebant cum hostibus The-banis colludere. Q. M A X I M V S } Plutarchus in vita, & de vir. ill. Vide & Liuium lib.xxi. Polyb. & Florum lib.2, cap.6. E N N I V S: } lib.xii. Annalium ex Macrobius lib. vi. cap.1. V N V s homo nobis &c, } hunc versum Virg. in librum vi. tran-stulit, ut alios alibi ex veteribus poetis. V N V s homo nobis } sic duodecim mei, & Tertij liber. Ut mirer, quodam dicere, in omoibus antiquis libris legi, Vnus qui nobis. quod est tan-tum in duobus meis. C V N C T A N D O } Vide Adagia, Rōmanus sedendo vincit. N O N ponebat enim } mirum est, veteres h̄c libros consentire omnes in transferenda voce, Enim. in secundum locum, hoc modo:

Non enim ponebat.

Vt videatur in dimensione versus abiicienda littera M, aut Enim pro vna tantum syllaba accipiendum. E R G O pōstq. magisq. } sic rectè, & propter consentiens veterum librorum te-stimonium, & quia lepida sit sententia: Ergo claret eius viti gloria non modò post obitum, sed magis etiam, quam cùm viueret. Magisq. magisque, legebatur antea. quod multi con-firmanit illo Catulli.

Omnib̄sq. inq. locis celebretur fama sepulti:  
Clarescatq. magis mortuus, atque magis.

## C I C E R O.

**O**MNINO, qui rep. prefuturi sunt, duo Platonis precepta teneant: unum, ut utilitatem ciuitatum sic tueantur, ut quidquid agunt, ad eam referant, oblitii

obliti commodorum suorum: alterum, ut totum corpus reip. currente, dum partem aliquam tuerintur, reliquas deserent. ut enim tutela, sic procuratio reip. ad utilita tem eorum, qui commissi sunt, non ad eorum, quibus commissa gerenda est. qui autem parti ciuium consulunt, partem negligunt, rem pernicio-sissimam in ciuitatem inducunt, seditionem, atque discordiam. ex quo euenit, ut alijs populares, alijs studiosi optimi cuiusque vi-deantur, pauci vniuersorum. hinc apud Athenienses magnæ discordiae orta, in nostra rep. non solum seditiones, sed pestifera etiam bella ciuilia. que grauis, & fortis ciuius, in rep. dignius principatu, fugiet, atque oderit, credetq. se totum reip. neque opes, aut potentiā consequabitur, totamque eam sic tuebitur, ut omnibus consulat. Nec vero criminibus falsis in odium, aut iniuidiam quemquam vocabit: omninoq. ita iusticie, honestatique adhærescit, ut, dum eam conservet, quamvis grauiter offendat, mortem appetat potius, quam deserat illa, que dixi. Miserrima est omnino ambitio, honorumq. contentio: de qua preclare apud eundem est Platonem: similiter facere eos, qui inter se contendent, uter potius remp. administret, ut, si nautæ certarent, quis eorum potissimum gubernaret. idemq. precepit, ut eos aduersarios exsimemus, qui arma contraferant: non eos, qui suo iudicio tueri rep. velint: qualis fuit inter P. Africanum, & Q. Metel-lum sine acerbitate diffensio.

## E X P L A N A T I O.

**V**NUS ut, &c. } Politic. I. Οὐκοῦ λιγότερον θεοτοκίας, οὐδὲ ἀλλα. } οὐδὲν εἰσθεμένη φέρεται ηγεθόντων αἴτιον εἰναι, τοις αὐτοῖς

ξυμφέρον τουτού οὐδεὶς δημιούρης, ἀλλὰ τὸ τοῦ αὐτοῦ μέρος, οὐδὲ ἀντίος δημιουρῆς, καὶ τοσούτος εἰκόνες βλέποντας, καὶ τὸ ἐπεισιν ξυμφέρον καὶ αρέπεν, καὶ λέγει ἀλλήλῃ, καὶ πάτερ ἀπό τοι μετέλεπτον. *Cuius rationem reddit de Leg. ix.* Γνῶναι μὲν γδὲ αὐτοῖς τοὺς γελαστὸν, ὅπερ πολιτικὴ καὶ αἰλιτὴ τέχνη, οὐ τὸ idion, ἀλλὰ τὸ κοινὸν αἰσθητὸν μέλειν. τὸ μὲν γελαστὸν ἔνωδει, τὸ δὲ ἄλλον θεατὴν τὸ πάλεις, &c. *OBLITI commodorum suorum,* § quod difficile admodum est, propter φιλαυτίαν. *A L T E R V M, ut Grc.* Politic. 4. Νωὶ μὲν οὐνός εἰσιθεῖται, πλοῦ ἐνδείμαντα πλαστοράφη, ἐκ δοτολα-  
Cōntes δὲ λέπτους εἰς αὐτὴν ποιῶντες, ἀλλ' οὐλα. Et de Leg. 4.  
Ταῦτα δύπτου φαρμῷ ιμεῖς νῦν, οὐνίτις, ποιεῖται, εἰσὶ ορθοῦς νόμους,  
ὅστις μὲν ξυμπάσσει τὴς πάλεως ἐνεκεῖ τὸν κοινὸν ἐπειδηποτε. εἰδοῦλον ποιεῖ  
σταυρωτής, ἀλλ' οὐ πολεμεῖται τέττας φρεάτῳ τὰ τεττάντα σκύλα, ἀλλὰ φά-  
σιν εἶναι, μετάτην εἰρηθεῖ: Et in Politico: Οὐ δισφός, καὶ μηδὲδος αἰνίρ τὸ  
τοῦ αὐτοφέρον, ὅπερ ὁ κιβερίτης τὸ τῆς νεάς καὶ ταῦτα τοῖς αἴτιοι ξυμφέρον  
παραφυσάτταν δικαιοῖ. Et de Leg. vi. docet, quantum magistratibus liceat priuata curare. *P R O C V R A T I O r e i p .* { de Orat. In  
procuratione ciuitatis egregius. In Acad. Recip. procuratio,  
*S T V D I O S I optimi cuiusque* { qui dicuntur optimates: de qui-  
bus multa in oratione pro Sextio. Placet autem hoc loco ad-  
scribere diuisionem quandam, qua fortassis non ingrata  
erit.

<i>Imperat in Rep.</i> <i>vel</i>	<i>Bonum, &amp; in certo ordine certa creaturæ, &amp; dicitur <i>Bonaria.</i></i> <i>Cuidad.</i>	<i>Boni. <i>Δημοκρατία.</i> In hoc statu populari im- peria forte conseruntur. Huius finis est Libertas.</i> <i>Mali. <i>Ολυμπεῖα.</i> Quando impetu plebeio reguntur, non legitima democratia.</i>	<i>Boni. <i>Δημοκρατία.</i> In hoc statu honores distribuuntur iure, &amp; disciplina. Et finis est Disciplina &amp; Leges.</i> <i>Mali. <i>Ολυμπεῖα.</i> In hoc statu, imperia, &amp; honores censu, &amp; habitu pecuniarium le- guntur. Et finis sunt Dignitatis.</i>
<i>Venus,</i> <i>&amp; dicitur <i>μορφής.</i></i> <i>quod est vel</i>	<i>Malum, &amp; in certo ordine certa creaturæ, &amp; dicitur <i>Bonaria.</i></i> <i>Cuidad.</i>	<i>Boni. <i>Δημοκρατία.</i> In hoc statu populari im- peria forte conseruntur. Huius finis est Libertas.</i> <i>Mali. <i>Ολυμπεῖα.</i> Quando impetu plebeio reguntur, non legitima democratia.</i>	<i>Boni. <i>Δημοκρατία.</i> In hoc statu honores distribuuntur iure, &amp; disciplina. Et finis est Disciplina &amp; Leges.</i> <i>Mali. <i>Ολυμπεῖα.</i> In hoc statu, imperia, &amp; honores censu, &amp; habitu pecuniarium le- guntur. Et finis sunt Dignitatis.</i>
<i>Nō vnuſ</i>	<i>Multi: qui vel</i>	<i>Boni. <i>Δημοκρατία.</i> In hoc statu populari im- peria forte conseruntur. Huius finis est Libertas.</i> <i>Mali. <i>Ολυμπεῖα.</i> Quando impetu plebeio reguntur, non legitima democratia.</i>	<i>Boni. <i>Δημοκρατία.</i> In hoc statu honores distribuuntur iure, &amp; disciplina. Et finis est Disciplina &amp; Leges.</i> <i>Mali. <i>Ολυμπεῖα.</i> In hoc statu, imperia, &amp; honores censu, &amp; habitu pecuniarium le- guntur. Et finis sunt Dignitatis.</i>
<i>Pauci: qui vel</i>	<i>Malum, &amp; in certo ordine certa creaturæ, &amp; dicitur <i>Bonaria.</i></i> <i>Cuidad.</i>	<i>Boni. <i>Δημοκρατία.</i> In hoc statu populari im- peria forte conseruntur. Huius finis est Libertas.</i> <i>Mali. <i>Ολυμπεῖα.</i> Quando impetu plebeio reguntur, non legitima democratia.</i>	<i>Boni. <i>Δημοκρατία.</i> In hoc statu honores distribuuntur iure, &amp; disciplina. Et finis est Disciplina &amp; Leges.</i> <i>Mali. <i>Ολυμπεῖα.</i> In hoc statu, imperia, &amp; honores censu, &amp; habitu pecuniarium le- guntur. Et finis sunt Dignitatis.</i>

**A P V D** Athenienses } Cydoniorum, Plut. in Solone. Dia-  
ciorum popularium contra Pedicos, oligarchia studiosos. &  
alia ~~τελευταίας~~, aduersus diuites, qui bus obbarati erant. &  
contra Pisistratum. quas omnes Solen compositus. **I N** *nostra*  
*rep.* } ut secessiones in montem Sacrum, & Gracchorum: &  
sexcentorum alia. **B E L L A** *civilia.* } Sulla, Catilina, Caesaris,  
Triumvirorum. **T R A D E T** *se totum rep.* } patriam vnam  
spectabit: ad eam omnia referet: vnicus et copus erit, salus, &  
felicitas patriæ. quod è rep. erit, sequitur: quod non erit, vita-  
bit. **Q V A M V I S** *grauius offendat.* } in rebus suis. id est, dam-  
num patiatur, & iacturam faciat rei familiaris, & dignitatis.  
Sic omnes libri veteres mei, & Tertii. Pro Cluentio: In eodem  
genere, in quo ipsi offendissent, alios reprehēscent: In epist.  
Quis est tam lynceus, qui in tantis tenebris nihil offendat,  
nisi quam incurat? De Orat. Si in his Paullulum modò offen-  
sum est. **A M B I T I O**, *honorumq. contentio:* } vide libellū Q. Ci-  
ceronis de petitione consulatus. Ad Plancum lib. x. Is denique  
honos mihi videri solet, qui non propter spem futuri benefi-  
cij, sed propter magna merita claris viris defertur, & datur.  
quare, si modò aliqua resp. in qua honos elucere posuit, o-  
mnibus, mihi crede, amplissimis honoribus abundabis. is au-  
tem, qui vere appellari potest honos, non in uitamentum ad  
tempus, sed perpetuae virtutis est præmium. Aristoteles quo-  
que Polit. iii. cap. 7. Magistratus Honores appellat: *τιμές δηλούμενοι τοις αρχαῖς*. Idem Aristoteles Eth. iv. cap. 4. docet, quatenus  
conueniat bono viro honores petere. **A P V D** eundem Plato-  
num: } Polit. vi. *Νόστος δηλούμενοι τοις αρχαῖς*, *εἴτε πενήντα χρόνων εἴτε*  
*μάκρις νεώνεροι*, *μεγάλερη φύσις καὶ βαρύντερη τοὺς εἰ τὸν ἀπειλεῖς*. *ἰδίων*  
*φύσις ἐγκαθεῖσται οὐσίων τελείωσις*, *καὶ μητρόποντα σπεῖραις αὐτοῖς ἐπέχει*  
*πολεῖται*. *τοὺς ἐγκαταστατίζοντες εἰ μάκροις οὐδὲ τοῖς κοινωνίοις,*  
*ἐπέσχουσιν δέντιν κυβερνεῖν*, *μήτε μαθόντα πότερον τὸν τρίχιον*, *μήτε*  
*ἔργοντα διπλῶς διδικτεῖσαν εἴναι τὸ μὲν χέριον εἰ φύλακτον, τοῦτος δὲ*  
*τούτοις φάσιντας μὲν διδικτεῖν, εἶναι, αλλὰ καὶ τὸ λέγοντα διδικτούς,*  
*ἐπίμους κατατέμενοι αὐτοὺς δὲ αὐτοῖς τοῖς νεωκόροις σπεῖραις ζῆσθαι* *δο-  
λέρους*, *καὶ πάντα πασιν ταῦτα ὅπως αἱ σφίσις τοῖς πυράλοις θάντας φέσαι*. **G R A**  
**E C U S** etiam Poeta Vitam ait periculosam esse nauigationem:  
in qua tempestibus iactati, sàpē miserabilius, quàm nau-  
fragi, affligimur. cùm autem vitæ gubernatricem Fortunam  
habeamus, ambigui velut in pelago erramus, alijs secundo  
cursu, alijs aduerso: donec tandem omnes ad vnum illum por-  
tum

tum subterraneum nauem appellimus. *Eius hi sunt versus:*  
*Πλοῦς ὁ φαίνετο τε φῦν. χειρούργευεν δὲ εἰ πτυχ.*  
*Πολλὰ πεντεκατάστατα πτελεῖς πεντεκατάστατα.*  
*Τὸν δὲ τοῦ βιοῦ τοῦτο μηδεπίτερον ἔχετες,*  
*τις εἰπε τοῦ πεντεκατάστατος ἀνθρώπου πτελεῖς.*  
*Οἱ πάντες εὖτε οὐδὲν, οὐδὲ ἄρισταν δὲν διεγνώντες*  
*Εἰς ἵρα τὸν γενέτην ἡγεμονὸν ἀπερχόμενα.*

**A R M A** *contraferant.* } Plato de Legibus 9. docet, qui reip. hostes sint censendi. **P. A F R I C A N U M**, & **Q. Metellum** } co-  
dem anno, Africauis ex Africa, Metellus ex Macedonia  
triumpharunt. Velleius Metelli cum inimicis contentione  
acres quidem, innocentes tamen appellat. Valerius lib. 4. cap.  
de moderat. animi, Africani, & Metelli contentione ab a-  
mulatione virtutum profectum, ad graues, testatásque inimi-  
citas progressam fuisse scribit: ita tamen, ut eam p̄cipua  
veneratione delenerit moderatio. Plinius lib. 7. cap. 44. horum  
inimicities inter calamitates Q. Metelli dicit. Sunt etiam, qui  
Metellum in suspicionem rapiant, ut qui necis Africani con-  
scius, auctōrē fuerit.

## C I C E R O .

**N** E c verò audiendi, qui grauiter irascendum i-  
nimiris putant, idq. magnanimi, & fortis viri  
esse censem. nihil enim laudabilius, nihil magno, &  
praelato viro dignius placabilitate, atque clementia.  
In liberis verò populis & iuris aquabilitate, exercen-  
da etiam est facilitas, & altitudo animi qua dicitur:  
ne, si irascamur aut intempestiè accendentibus, aut im-  
pudenter rogantibus, in morositatem inutilē, & odio  
sam, incidamus. Et tamen ita probanda est mansi-  
tudine, atque clementia, ut adhibeatur, reipub. can-  
sa, severitas, sine qua administrari ciuitas non potest.  
Omnis autem animaduersio, & castigatio contu-  
macia vacare debet, neque ad eius, qui puniri aliquem;  
aut verbis castigat, sed ad reip. utilitatem referri. Ca-  
wendum est etiam, ne maior pena, quā culpa sit: &

ne iisdem de causis alij pleantur, alij ne appellen-  
tur quidem. Prohibenda autem maxime est ira in pu-  
niendo. nūquam enim, iratus qui accedit ad punam,  
mediocritatem illā tenebit, quae est inter nimū, & pa-  
rum: que placeat Peripateticis: & recte placet, modo ne  
laudarent iracundiam, & dicerent utilem a natura  
datam. illa vero omnibus in rebus repudianda est o-  
ptandū, ut ij, qui prasunt reip legum similes sint:  
que ad puniendum non iracundia, sed equitate, du-  
cuntur. Atque etiam in rebus proferis, & ad volun-  
tatem nostram fluentibus, superbiam magnopere, fa-  
stidium, arrogantiāque fugiamus. nam, ut aduersas  
res, sic secundas immoderatē ferre, leuitatis est: præcla-  
rāq. est aquabilitas in omni vita, & idem semper vul-  
tus, eadēq. frons: ut de Socrate. itē de Cāo quoque  
Lalio accepimus Philippum quidem, Macedonum  
regem, rebus gestis, & gloria superatum à filio, faculta-  
te verò, & humanitate video superiorē fuisse. itaque  
alter semper magnus, alter sape turpisimus fuit. ut re-  
cte precipere videantur, qui monent, vt, quanto supe-  
riores sumus, tanto nos summissius geramus. Pan-  
tēnus quidem auditorem Africanum, & familiarē suū  
solitum ait dicere: ut equos, propter crebras contentio-  
nes praliorum, ferocitate exultantes, dominoribus tra-  
dere sole. nt, ut his facilitoribus posint viti, sic homines,  
secundis rebus effrenatos, sibique presidentes, tāquam  
in gyrum rationis, & doctrina duci oportere, ut perspi-  
cerent rerum humanarum imbecillitatem, varietati-  
tēque fortuna. Atque etiam in secundissimis rebus  
maxime est utendum consilio amicorum: hisq. etiam  
maior, quam ante, tribuenda est auctoritas. iisdemque  
temporibus caendum est, ne assentatoribus patet  
ciamus

ciamus aures, nec adulari nos sinamus: in quo falli  
facile est. tales enim nos esse putamus, vt iure laude-  
mur: ex quo nascuntur innumerabilia peccata: cūm  
homines, inflati opinionibus, turpiter irridentur, & in  
maximis versantur errorib. Sed hac quidē hactenus.

## EXPLANATIO.

**N**ec vero audiendi &c.} Seneca Iram muliebre vitium  
esse ait. Verū, quis vitiorum expers? Plinius: Qui vi-  
tia odit, homines odit: Horatius:

--vitiis nemo sine naicitur: optimus ille,

Qui minimis vrgetur.

Valens imperator solitus erat dicere, eum, qui ab ira facilè re-  
cederet, facilè etiam à iustitia recedere. **I N I M I C I S** } id est,  
iis, qui voluntate à nobis abhorrent: non hostibus. **M A G N A-**  
**N I M I , & fortis viri** } Mimus Publianus.

Iratus etiam fucinus consilium putat.

**P L A C A B I L I T A E** } quae ad eos pertinet, qui conci-  
tati facilè placantur. **C L E M E N T I A** } Seneca ait, Cle-  
mentiam esse temperantiam animi in potestate vlciscendi,  
vel lenitatem superioris aduersus inferiorem in constitu-  
dis pœnis. Eq. non Seueritatem opponit, qua Iustitia pro-  
xima est, ut Mimus, sed Cradehtatem, quae puniendi cau-  
sam habet, modum non habet. **I V R I S** { aequabilitate } iuraria.  
**A L T I T U D O** animi } sic tredecim mei libri, & vnu Tertij.  
Non displicet tamen, quod legitur in uno meo, Lenitudo ani-  
mi. **I N T E M P E S T I V E** { accidentibus } hinc Terentius. In  
tempore ad eum veni: quod rerum omnī est primum.  
**I M P V D E N T E R** rogantibus } ea, quae honestē, si neque sum-  
ma nostra fraude prestatre non possumus. **M O R O S I T A-**  
**T E M** inutilē, } ei, in quo est. **O D I O F A M** } aliis. **R E I P .**  
causa, } vt tranquillitas, & honesta disciplina conseruetur.  
**S I N E** { qua administrari ciuitas non potest } nam licentia omnes  
deteriores sunt, improbi verò magnitudine pœnae, &  
supplicij grauitate à sceleribus deterrentur. Laetantius  
in libro de ira Dei docet, nullum imperium sine seuerita-  
te posse constare. **P U N I T** aliquem, } Punitur, repo-  
sui, ex Nonio Marcello. quo modo est & in quatuor  
meis libris. Sic locutus Tusc.i. Multi inimicos, etiā mortuos,

puniuntur. Et Phil.8. Clarissimorum hominum crudelissimam puniretur necem. Et de Leg. Vetari, Quærerit, dixit, pro, Verare, Querere. V E R B I S castigat, } male in Nonio, Fatigat, pro Castigat. I I S D E M de causis alij plectantur. alij ne appellantur quidem. } hinc Terentius: Duo cum idem faciunt, sæpe fit, ut possis dicere, hoc licet impune facere huic, illi non licet; non quod dissimilis res sit, sed quod is, qui facit. Et Iuuenalis:

Dat veniam coruis, vexat censura columbas.

Et Anacharsis Solonis leges aranearum telis similes esse putabat ut est apud Plutarchum in Solone. Plectantur grauitate puniantur, Appellantur: ne verbis quidem castigantur: quod modo dixit. Alij interpretantur, Apellare, iudicium, actionem dictare, formulam intendere, λαγχάνειν dixerunt. Hoc autem in Sulla Plutarchus notat. I R A T V S qui accedit ad punam. Cic. Tus. 4. ait Platonem seruo, à quo offensus fuerat, dixisse: Quo te modo accepisti em, nisi iratus essem? Graeca sunt: Εόυπος ἀντί μη ταῦτα προτίθεμαι. I N T E R nimium, & parum: } vide Platonem de Rep. 3. & Agellium lib. 1. cap. vlt. V T I L I T E R } si tantum ob egregias res irascemur. excitat autem animos ad severitatem, & terorem improbis incutit, qui lenitatem contemnunt. prodest igitur sæpe iracundia, vel latenter simulatio iracundiae. L E G V M similes } Cic. de Leg. 3. Ut magistratibus leges, ita populo præsunt magistratus: veréque dici potest, magistratum legem esse loquentem, legem autem mutum magistratum. Plato ait magistratum, debere legis esse seruum, & famulum. Xenophon lib. 8. de pædia Cyri, Principe Legem videntem appellat. Pindarus quoque, apud Plutarchum, Legem Reginam dicit. I N r e b u s p r o s p e r i s, } difficilis enim res secunda feruntur, quam aduersa. Xenophon libro 8. de pædia Cyri. Δοκεῖ δὲ μει, ὁ Κύρος, χαλεπότερος εἶναι εὐπέρι αἰδεῖς τὰ γάβε καλῶς φέρεται, τὰ κεχρεῖ, τὰ μὲν δούλων τοῖς πολλοῖς, τὰ δὲ σφεστοινύν τοῖς πάσι ζετεῖ. Hinc Horatius:

Sperat aduersis, metuit secundis  
Alçeram sortem bene præparatum  
Pectus.

Et illud,

Luxuriant animi rebus plerumque secundis,  
Nec facile est æqua commoda mente pati.

A D voluntatem nostram fluentibus, } alibi, Omnibus copiis  
cir-

circumfluere. S V P E R B A M } hinc ille dimitteret:

Αρρεῖ τὸν αἰδεῖς δέννυστον.

Valerius lib. 9. cap. 6. multorum exempla enumerat, quos felicior fortuna meliores reddidit. F A S T I D I U M, } cùm omnia, quæ videtur esse infra nostram fortunam, fastidio quodam rei icimus. A R R O G A N T I A M } quæ plus sibi honoris tribui postulat, quād miretur: quæ se primam omnium esse vult, nec est. V T de socrate, } qui eodem semper vultus fuisse dicitur. Cic. Tus. 3. Seneca Epist. lib. 18. Plin. lib. 7. cap. 19. Solinus cap. 4. Agellius lib. 2. cap. 1. Inconvenientem appellat, i. αἰσχρόδουλον, ore, atque oculis eundem in locum directis cogitatandum, tanquam quodam mentis, atque animi secessu facto à corpore. Aristophanes apud Laertium Socrati hoc virtus vertit: Καὶ ἡγῆς σπουδαζεται. D. Hieronymus autem contra Pelagianos dialogo 3. & in Esiam cap. 42. hoc de ipso confungi censem. A filio, } Alexandro: cuius rebus gestis Theophrastus angebatur, Callisthenis interitum deplorans. Cic. Tus. 3. Seneca lib. 3. de ira, Plutarchus, Q. Curtius, Arrianus, & Diodorus Siculus lib. 16. Vide omnino Luciani dialogum, inter Alexandrum, & Philippum. Q V A N T O superiores simus, tan non summissius geramus. } Chilon, unus ex septem sapientibus, apud Laertium: Ισχυρὸν ὄντα περὶ εἴναι, ὅπως οἱ μάστοι εἰδοῦται μᾶλλον οὐ περίτελον. Potens si fueris, mansuetus esto, ut alii te reuereantur magis, quæ formident, P A N A E T I V S vide Velleium. T A N Q V A M in gyrum rationis, & doctrina, } quidem admodum enim equi in gyrum aguntur, nec suo impetu ferri sinuntur: sic non est committendum, ut homines fortunati ultra eos limites, vel dicendo, vel agendo, euagentur, quos ratio, & doctrina praescribunt. Virgilius Georg. 3. de equo:

Carpere mox gyrum incipiat, gradibusque sonare Compositis.

P E R S P I C E R E T } & cogitando, & discendo. nominavit enim rationem, & doctrinam. A D V L A R I } adulatio- ne circumueniri, passiuè dictum. T A L E S enim nos esse pul- mus, ut iure laudemur. } Terentius: Hic homines ex stultis infanos facit. I N F L A T I opinionibus, } sic Iosephates μετὰ τῆς τύχης τῶν φύσιν: ἐπὶ τὸν Θύλακον ἔχει δερρέπειον: θυτὴν ἔχει εἰκόναν τῶν σύζεστων, πιθανὰ τὸ κενὸν τούτο δεξάρευον ἐπὶ τασσόμενον πλήνον αἰσκόν δέρψουσα: μεράλης αἰσκός ἐνθερρίθης ἀνέστη, καὶ τὸ

εύπειταν γνωστον αφίρησαι. Idest: Non vna cum fortuna mutasti & naturam. adhuc pelliceo sacco es amictus. nam tui ortus primordium mortale fuit. cur igitur inanis ista gloriola luteum vtrem sic inflauit? ingenti amentia repletus es, & infelix, & naturae fragilis agnitione spoliatus. Epicharmus: Autem φύσις αὐθέρνων δικαιομένης. Hęc natura est hominum: utres sunt inflati. Anaxarchus corpus suum ἀνέδει, id est vtrem appellauit: Πόσσος εις τύραννον, τὸν Αἰτεῖσθαι αὐτὸν, αὐτὸς επέργος δηλώνει. Contunde Anaxarchi vtrem, Anaxarchum enim non poteris. Aristophanes quoque:

Ἄνθρης αἴματος εὔζητος, φύλακας γενεῦ περσόπους:  
Ολυμπούς σχέσεις, πλάσματα καρκίνου, σκηνέα τοῦ λαοῦ,  
Αμερική, ἀττίκης, ιονίας εργασία. Idest:  
Viri obscuræ vita, foliorum genti consimiles,  
Exiguæ virtutis, figmenta cerea, vimbratile genus,  
Imbecilles, inuolucres, vnam dieculam viuentes.

## C I C E R O.

**I**L V D autem sic est iudicandum, maximas gerires, & maximi animi ab ijs, qui rem p. regat: quod eorum administratio latissime pateat, ad plurimosque pertineat: esse autem magni animi, & fuisse multos, etiam in vita otiosa qui aut inuestigarent, aut conorentrur magna quadam, se seq. suarum rerum finibus continerent: aut interiesisti inter philosophos, & eos, qui rep. administrarent, delectarentur res sua familiae, non eam equidem omni ratione exaggerates: neque excludentes ab eius vsu suo, potiusq. & amicis imparientes, & reip. si quando vsus esset. quae primum bene parta sit, nulloque turpi quaestu, neque odioso: tum, quamplurimis modo dignis, se vtilem praebat: deinde, augeatur ratione, diligentia, parcimonia: nec libidinis potius, luxuriaeq., quam liberalitati, & beneficentie, pateat. hac prescripta seruare licet magnifice, graniter,

uiter, animo s̄eque vinere, atque etiam simpliciter fideliter, vitaque hominum amicè. Sequitur, vt de una reliqua parte honestatis dicendum sit, in qua verecundia, & quasi quidam ornatus vita, temperantia, & modestia, omnisiq. sedatio perturbationum animi, & rerum modus cernitur. hoc loco continetur id, quod dici Latine decorum potest: Gracē enim περτον dicitur. huius vis est ea, vt ab honesto non queat separari. nam &, quod decet, honestum est: &, quod honestum est, decet. qualis autē differentia sit honesti, & decori, facilius intelligi, quam explanari, potest. quidquid enim est, quod deceat, id tum appareat, cum antegressa est honestas, itaque nō solum in hac parte honestatis, de qua hoc loco differendum est, sed etiam in tribus superioribus, quid deceat, appareat. nam, & ratione uti, atque oratione prudenter, &, agere, quod agas, considerate. omnīq. in re, quid sit veri, videre, & ineri decet: contrāque falli, errare, labi, decipi, tam dedecet, quam delirare, & mente captum esse. Et iusta omnia decora sunt: iniusta omnia contra, vt turpia, sic indecora. Similis est ratio fortitudinis, quod enim viriliter, animoq. magno sit, id dignum viro, & decorum videtur: quod cōtra id vt turpe, sic indecorum, quare pertinet quidem ad omnem honestatem hoc, quod dico, decorū, & ita pertinet, vt non recordita quadam ratione cerneretur, sed sit iꝝ promptu, est enim quiddam, idque intelligitur in omni virtute, quod deceat: quod cogitatione magis a virtute potest, quā re, separari. vt enim venustas, & pulchritudo corporis secerni nō potest à valerudine: sic hoc, de quo loquimur, decorū, totū quidem illud est cum virtute cōfusum, sed mente, & cogitatione distinguitur. Est autem eius descriptio duplex. nā

& generale quoddam decorum intelligimus, quod in omni honestate versatur: & aliud hinc subiectum, quod pertinet ad singulas partes honestatis, atque illud superius sic fore definiri solet: decorum id esse, quod consentaneum sit hominis excellentia in eo, in quo natura eius a reliquis animantibus differat. Quae autem pars subiecta generis est, eam sic definiunt, ut id decorum esse velint, quod ita natura consentaneum sit, ut in eo moderationis, & temperantiae appareat cum specie quadam liberali. hec ita intelligi, a philosophis possumus existimare ex eo decoro, quod poeta sequuntur: de quo alio loco plura dici solent sed tum seruare illud poetis dicimus, quod deceat, cum id, quod quaque persona dignum est, & fit, & dicitur: ut si aut Aeacus, aut Minos diceret,

Oderint, dum metuant: aut,  
Natis se pulcro ipse est parens:

indecorum videtur, quod eos fuisse iustos accepimus: at, Atreο dicente plausus excitantur: est enim digna persona oratio, sed poeta, quid quemque deceat, ex persona iudicabunt: nobis autem personam imposuit ipsa natura, magna cum excellentia, praestansque animalium reliquorum, quo circa poeta in magna varietate personarum, etiam vitiosis quid conveniat, & quid deceat, videbunt, nobis autem cum a natura constantie, moderationis, temperantiae, verecundiae partes datae sint: cumque eadem natura deceat, non negligere, quemadmodum nos aduersus homines geramus: efficitur, ut & illud, quod od omnem honestatem pertinet, decorum, quam late fuisse sit, appareat: & hoc, quod spectatur in unoquoque genere virtutis, ut enim pulchritudo corporis apta compositione membrorum mouet

oculos

oculos, & delectat hoc insō, quod inter se omnes partes cum quodam lepore co-sentient: sic hoc decorum, quod eluet in vita, mouet approbationem eorum, quibuscum visitur, ordine, & constantia, & moderatione dictorum omnium, atque factorum, adhibenda est igitur quedam reverentia aduersus homines & optimi cuiusque, & reliquorum. nā, negligere, quid de se quisque sentiat, non solum arrogantis est, sed etiam omnino dissoluti. Est autem, quod differat in omnī ratione habenda, inter iustitiam, & verecundiam. Iustitiae partes sunt, non violare homines: verecundia, non offendere, in quo maximē perspicitur vis decori. His igitur expositis, quale sit id, quod decere dicimus, intellexi, puto.

### EXPLANATIO.

**R**E M P. regant } undecima mei, & tertij, Resp. regant. S: S E Q. suarum rerum finibus continerent: } suum negotiorum agerent. Metaphor. à limitibus agrorum. IN- T E R I E C T I } medijs, R: e sua familiari, } quām philosophi non curant. N O N eam quidem omni rat. exagg. } excludit auaritiam. N E Q U E excl. } requirit benignitatem. Q V A E primum, &c. } tria maximē præcipiuntur in re familiari. B E N E parta } nunc

Vnde habeas nemo querit, sed oportet habere.

**N** U L L O Q. turpi questu, } quinque mei, & tertij, Nullo neque turpi questu vnu, Neque nullo turpi questu, duo, Nullo turpi questu. Turpi: sordido, in honesto. Natura, Lenocinium, militia mercenaria, latrocinium. Opinione qui manusibi viētū queritant. Odioso: publicanorum, portitorum, feneratorum. M O D O d i g n a , } nam non decet indignis opitulari. R A T I O N E, } quæ scilicet res ubiores fructus, & certiores redditus afferant. D I L I G E N T I A, } vt ipse rem tuam cures, neque quidquam omittas. P A R C I M O N I A, } magno vestigali. quod dixit in Paradoxis. Liberalitas dat,

k

cum decet: Parcimonia seruat, cum non dedecet: ut sit, quod dare possit, cum opus est. Isocrates Nicocli eam laudat. Et sane recte nobis eum ageretur, si ea vteremur. Verum ego quidem potius alius hoc praeceptio, quam sciam ipse vti. P A T E A T. } omnes veteres libri, Pareat. Pareat, tamen, romini bus iis aduersantibus, magis placet. M A G N I F I C E, } cum splendore, & gloria. G R A V I T E R, } constater, non leuiter. A N I M O S B, } absque metu, & trepidatione. S I M P L I C I T E R, } non sophistice. F I D I L I T E R, } absque perfidia, & negligentia. V I T A e hominum amic, } humaniter, non tyrannice. S E Q V I T V R, } pro reliquum est. In proemio lib. 2. Sequitur, ut haec officiorum genera persequar. V N A r e l i q u a p a r t e h o n e s t a t i s, } temperantia, de iis virtutibus, unde honestum, officiumque manat, quarta. Q u i d a m o r n a t u r v i t a, } quem tribuit Plato temperantia. est enim Verecundia in vita humana tanquam flos quidam. Κέρως τούτος οὐ Σωφρόνιος ἐστι καὶ οὐδεὶς νῦν, καὶ ἐπιθυμῶν ἐγκαίρεια, διάφαστος. T E M P E R A N T I A, & modeſtia, } Tusc. 3. Verisimile illud est, qui sit temperans, quem Graeci σωφρονία appellant, eamque virtutem, σωφρονία vocant, quam soleo equidem tum temperantiam, tum moderationem appellare, nonnumquam etiam modestiam. O M N I S sedatio perturbationum animi, } Cic. ibidem: Eius videtur esse proprium motus animi appetentis regere, & sedare, semperque aduersantem libidini moderatam in omni re seruare constantiam R E R V M modus, } que vltra citraq. nescit consistere rectum. Horatius. Πρίπτος } Λόγος τὸν φέρειν, docere: à meū tein, ornare. A B honesto, } Λόγος τὸν κελεῖ, à pulchro. N A M C, quod decet, honestum est. & quod honestum est, decet. } Honestum, & Decorum, videntur inter se reciprocari: differunt tamen. Honestum enim semper est idem. Decorum vero mutatur, tempore, loco, & aetate. estque multiplex. T R I B U S superioribus, } iustitia, fortitudine, prudentia. P E R T I N E T ad omnem honestatem, } decorum cum omni virtute confusum est. S E C E R N I non potest, } pulchritudo enim est apta figura membrorum, cum coloris quadam suavitate ut ait Cicero Tusc. 4. D. Ambrosius hunc locū satis illustrat. Eius hæc sunt: Honestas velut bona valetudo est, & quedam salubritas corporis. Deus autem, tamquā venustas, aut pulchritudo sit. Sicut ergo pulchritudo superare salubritatem, ac valetudinem vindicetur excellere, sine his tamē esse non potest, nec illo separari modo:

modo: quoniam, nisi bona valetudo sit, pulchritudo esse, ac venustas non potest: sic honestas decorum illud in se continet, ut ab ea profectum videatur, & sine ea esse non posset. Velut salubritas igitur totius operis, actusque nostri honestas est, & sicur species est decorum, quod cum honestate confusum opinione distinguitur. nam, & si in aliquo videatur excellere, tamē in radice est honestatis, sed flore precipuo, ut sine ea decidat, in ea floreat? quid enim est honestas, nisi quæ turpitudinem, quasi mortem, fugiat? quid vero in honestum, nisi quod ariditatem, ac mortem afferat? Virante igitur substantia virtutis, decorum illud tāquam flos emicat, quia radix salua est. At verò propositi nostri radice virtuosa, nihil germinat. M O D E R A T I O, } ne vel nimium, vel parum fiatne quis fibi nimium trubuat: ne in villa re modū excedat. T E M P E R A N T I A, } que moderatur eas voluptates, quæ tactu, & gustu percipiuntur. nam aliorū sensu voluntates minus illiberales habentur. S P E C I E quadam liberali, } adspicunt. Ex eo decoro, quod poete sequuntur, } argumentum à minori. nam, si poeta, multo magis philosophi. ΖΕΑ C V S, aut MINOS, hi Iouis filii habiti sunt: ac, propter summannū iustitiam, apud inferos iudicare dicti sunt. Vbi hi duo alij judices esse memorantur, Rhadamanthus, & Triptolemus. O D E R I N T, dum metuant, } vox tyrannica, hominum, qui populi de se existimationem contemnunt: Ciceroni, & Seneca celebri. Lib. 11. ex Ennio citatur. N A T I S, Tantalo Plystheni, Harpagi, quos Atreus Thyesti fratri comedēdos apposuit, ad quos facinus sol oriens, creditus fuit recessisse. P A R E N S, } Thyestes: cui filios epithalatos frater Atreus apposuit, ut dixi, quod ait Seneca in Thyeste, & Horatius de Arte poet. Ennius etiam, & Maternus scripsere Thyestem. Atcius Atreum. Fabula est apud Hyginum cap. 88. & 244. 258. A T R E O, } Plato in Cratyle eum dictū quasi αἰμεῖν, aut ἀτεῖν, putat, ab immanitate naturæ: quod nullā noxam, nullū facinus reformidaret, intractabilis esset, nec vlla humanitatis ratione flexibilis. N O B I S autem personam impoſuit ipsa natura, } id est, deus, vita autem nostra nihil aliud est, quam fabula, que in amplissimo huius Mundi theatro agitur. P V L C H R I T V D O corporis, } Tusc. 4. Ut corporis est quedam apta figura membrorum, cum coloris quadam suavitate, eaque dicitur pulchritudo: sic in anima opinionū, judiciorū inque æqualitas, & constantia, cum firmitate quadā, & stabilitate virtutē sub-

sequens, aut virtutis vim ipsam continens, pulchritudo vocatur. **ORDINE,** } ut suo loco, & tempore fiant omnia. **CONSTANTIA,** } ut ratione semper obœdiat appetitus. **MODERATIONE,** } ut ne vehementiores naturæ impetus sequantur in dicendo, & agendo. **ADHIBENDA** est sigit quædam reuerentia aduersus homines, & optimi cuiusque & reliquorum. } sic lego, cum omnibus antiquis libris, nec repugnat sententia. Adhibenda est, inquit, reuerentia aduersus homines. Deinde se ipse interpretatur. Reuerentia & optimi, & reliquorum. omnes enim reuerteri debemus, sed primū optimos, deinde reliquos, ita, quod vniuersè dixerat. Aduersus homines, distinxit, subiungēs. Et optimi, & reliquorum. Illud autē, Aduersus homines, pendet à verbo, Adhibenda est: hoc, Et optimi cuiusque, & reliquorum, à verbo reuerentia. **NEGIGERE,** } quid de se quisque sentiat, &c. } Iosephates Philosophica oratione: Μηδέ φύσις εἴναι το πλειστοφυλάκιον, καὶ φύλαξ περιπέμπειν τούτοις φρεγτίζειν, ἀλλα τοις καὶ μηδὲ σωτῆρισσαντος εἰσεπεπταν: Idest: Putilli esse animi, maledicos, & ntagatores, & eos, qui illis aures præbent, curare, & ræfertim sibi si nullius delicti conscius. Idem ibidem: χρή μη γεταρεῖν τὸ πλάθος, μηδὲ παρεῖ μηδὲ εἴθειν τὸ παρεῖ πᾶσιν εὐδαιμονίαν: Non contemnendus est populus, nec parui æstimandum laudari ab omnibus. Vide Aristot. Eth. 4. cap. 4. **DISSO L V T I.** } Dissolutus est, qui nimium indulget. Fam. lib. 5. epist. 2. Cognosce nunc humanitatem suam: si humanitas appellanda est in acerbissima iniuria remissio animi, ac dissolutio. In ep. ad M. Brutum: Neque dissolutum à te quicquam homines exspectant, nec crudele. **IN OMNI RATIONE habenda,** } in quaunque re: cùm aliquid agendum agimus in vita. Ita deinceps mei veteres libri. Vnus, Omnium. Tres, Hominum. Tertijs, Hominem.

## C I C E R O.

**O**fficium autem, quod ab eo dicitur, hanc pri-  
mum habet viam, qua deducit ad conuenientiam,  
conseruacionemque naturæ: quam si sequemur ducem,  
numquam aberrabimus sequemurque & id, quod accu-  
tum, & perspicax natura est, & id, quod ad hominum  
societatem accommodatum. & id, quod vehemens, at-  
que

que forte, sed maxima vis decori in hac inest parte, de-  
qua disputamus. neque enim solum corporis, qui ad na-  
turam apti sunt, sed multo etiam magis animi motus  
probandi, qui item ad naturam accommodati sunt.  
Duplex est enim vis animorum, atque naturæ. una  
pars in appetitu posita est, qua est: in Græce, que ho-  
minem huc, & illuc rapit: altera in ratione, qua do-  
cet, & explanat, quid faciendum, fugiendumque sit. i-  
ta fit, ut ratio brasit, appetitus vero obtemperet. Om-  
nis autem actio vacare debet temeritate, & negligen-  
tia: nec vero agere quicquam, cuius non possit causam  
probabilem reddere. hac est enim serè descriptio offi-  
cij. Efficiendum autem est, ut appetitus rationi obe-  
diant, eamque neque precurrant, nec propter pigritiam,  
aut ignorantiam deferant: sicut tranquilli, atque omni  
perturbatione animi careant. ex quo elucebit omnis co-  
stantia, omnisque moderatio. nam, qui appetitus longius  
euagantur, & tamquam exultantes sine cupiendo,  
sive fugiendo non satis a ratione retinentur, si: sine du-  
bio finem, & modum transeunt. relinquunt enim, &  
abiciunt obœdientiam, nec rationi parerunt, cui sunt sub-  
iecti lege naturæ. a quibus non modo animi perturban-  
tur, sed etiam corpora, licet ora ipsa cernere iratorum,  
aut eorum, qui aut libidine aliqua, aut metu commoti  
sunt, aut voluptate nimia gestiunt: quorum om-  
nium vultus, voces, motus, statuque mutantur. ex qui-  
bus illud intelligitur, ( ut ad officij formam reuertar-  
mur ) appetitus omnes contrahendos, sedandosq, exci-  
tantandosq, esse animadversionem, & diligetiam, ut ne  
quid temere, ac fortuitu, inconsiderate, negligentēq.  
agamus. neque enim ita generati à natura sumus, ut  
ad ludum, & iocum facti esse videamur, sed ad sen-

ritatem potius, & ad quedam studia grauiora, atque maiora. Ludo autem, & ioco ut illis quidem licet, sed, sicut somno, & quietibus ceteris, tum, cum graibus, seruq. rebus satisficerimus. ipsimq. genus iocandi non profusum, nec inmodestum, sed ingenuum, & facetum esse debet. ut enim pueris non omnem licentiam ludendi damus, sed eam, que ab honestatis actionibus non sit aliena, sic in ipso ioco aliquod probi ingenij lumen elucceat. Duplex omnino est iocandi genus: unum illiberale, petulans, flagitiosum, obscenum: alterum elegans, urbanum, ingeniosum, facetum. quo genere non modò Plautus noster, & Atticorum antiqua comœdia, sed etiam philosophorū Socraticorū libri referti sunt: multaq. multorum facete dicta: ut ea, quæ à seno Catone sunt collecta, qua vocantur A-toqθēμuxta. Facilis igitur est distinctio ingenui, & illiberalis ioci. alter est, si tempore sit, ac remissio animo, libero dignus: alter ne homine quidem, si ruru turpitudini exhibetur verborum obscenitas. Ludendi etiam est quidam modus retinendus, ut ne nimis omnia profundamus, elatiq. voluptate inaliquam turpitudinem delabamur. suppeditant autem & campus noster, & studia venandi, honesta exempla ludendi. Sed pertinet ad omnem officij questionem, semper in promptu habere, quantum natura hominis pecudibus, reliqu'que bestiis antecedat. illa enim nihil sentiunt, nisi voluptatem, ad eamq. feruntur omni impietu: hominis autem mens discendo alitur, & cogitando semper aliquid aut inquirit, aut agit, vide dique, & audiēti delectatione ducitur. quin etiam, si quis est paullo ad voluptates propensior, modò ne sit ex pecudū genere, (sunt enim quidam homines non res, sed nomine) sed si quis est paullo erectior, quam voluptate capiat-

tur,

tur, occultat, & dissimulat appetitum voluptatis, propter verecūdiam. ex quo intelligitur, corporis voluptatem non satis esse dignam hominis præstatio, eamque contemni, & rejici oportere: sin sit quispiam, qui aliquid tribuat voluptati, diligenter ei tenetum esse modum eius fruenda. itaque virtus, cultusque corporis ad valetudinem referantur, & ad vires, non ad voluptatem.

## EXPLANATIO.

**Q**UOD accentum, quod accommodatum, quod vehemens, } tres virtutes significat, Prudētiā, Iustitiā, Fortitudinem: quas hoc ipso ordine iam attigit. **D**VPLX est enim vis animalium, atque natura. } de animaliis, non de natura, loquitur Cicero, ipsorumque animalium vim, naturamque describit, itaque non dubito, quin legendum sit, Vis animalium, atque natura. Adiuuat conjecturam nostra consuetudo Latini sermonis, quod enim Græce dicitur, φύσις, duabus verbis, Vis, & natura, Cicero dixit. vt in libro de Amicitia: Me quidē non fructusmodò, sed etiam ipsius terre vis, atque natura delectat. Et in Somnio Scipionis: Hæc est natura propria animæ, atque vis. Tusc. i. Singularis est quedam natura, atque vis animi. De Diu. lib. ii. Animalium est ea vis, atque natura, vt vigeant vigilantes. De Leg. 2. Vide animus vim, naturamque legis. Hæc autem doctrina sumpta est ex Aristotele, qui libro i. Pol. Τὸ ξῶν, inquit, περὶ τῶν σωμάτων ἐπι Φυλῆς, καὶ σώματος. ἀντὶ τοῦ μὲν ἔρχοντο φύσει, τὸ δὲ ἀρχήμενον. Et paulo post: Η μὲν γένος Φυλῆς τὸ σώματος ἀρχεῖται, στροπητὴν ἀρχὴν δὲ τῆς τῆς ὅρετος, πολεμίων, καὶ βασιλείου, ἐν τοῖς φανεροῖς ἔτην, ὃν κατὰ φύσιν, καὶ σύμφερον, τὸ ἀρχεθεῖται τὸ σώματον ὑπὸ τῆς Φυλῆς, καὶ τῷ παθητῷ μορίῳ ὑπὸ τῷ νόου, καὶ τῷ μορίῳ τῷ λόγῳ ἔχοντες. Et infra: Τοῦτο εὖδις ύφεντη φειτὴ Φυλῆ: ἐπι ταύτῃ πρὸ ἐστι φύσει τὸ μὲν ἔρχοντο, τὸ δὲ ἀρχήμενον ἐπέρειν φαμὲν εἴναι ἀρετὴν, ποὺ λόγον ἔχοντος, καὶ τοῦ ἀλόγου. Et lib. 3. Εἳς ἀντίμων οἱ πόλεις, ἀσπερ ξῶντες δὲ τὴν Φυλῆς, καὶ σώματος, καὶ Φυλῆς τὸν λόγον, καὶ ὄρετος. Et lib. 7. Λύρηται δύο μέρη τῆς Φυλῆς, ἀντὶ τομέων ἔχει λόγον καὶ ἀντὸν, τὸ δὲ οὐκ τέλει μὲν καθ' ἀντὸν, λόγων δὲ ὑπακούειν θωμάμενον. Et ibidem, infra: Οσπερ Φυλῆ, καὶ σώματον ἔστη, οὔτω καὶ τῆς Φυλῆς ὁρέειν

k. 4

*Δύο μέρη τότε ἀλογον, καὶ τὸ ὄπερ ἔχειν, καὶ τὰς ἔξεις τὰς τούτους δύο τὸν αἰθρόν ἢν τὸ μὲν ἐστιν ὅπερ, τὸ δὲ νοῦς. aduersanter omnes veteres libri. O P M H, Grace, } De nat. de. 2. Voltarioris mundi motus ὅπερι appellat. Nec verò agere quidquam. } hoc durius quibusdam videtur, Actio non debet agere quidquam: mihi non item. In ipsa enim actione includitur is, qui agit, quasi dicat: Cum aliquid agis, temeritatem vita: nec verò quidquam agas, cuius non polsis caussam probabiliem reddere. Quæ postrema verba sententiam meam confirmant: & cum sententia consentiunt veteres libri. Num, si, si, Agere, legatur, Agi, quod aliis placet, unde pœnit, intelligere non quo. non enim est, ut referri possit ad superiorum verbum, Debet: ne verbum idem & personale simul, & impersonale, quo modo Grammatici loquuntur, codem in loco velamus sic. OFFICII. } modij. Supra: Medium officium: id est, quod cur factum sit, ritio probabilis reddi possit. PRÆCURRANT, } quod equi præcedentes facere solent. EVAGANTUR, } ut equi ferociores. EXSULTANT } qualis Chærea apud Terentium. NON satis à ratione retinentur, } Virgilius:*

Fertur equis auriga, nec audiit currus habenas.

Isocrates: Οταν δέντειν στρατεύεται, πεντάπλια τοῖς ἀριγανοῖς. C VI sunt subiecti lege nature. } Aristoteles Politic. I. LICE ET ora ipsi. } vt in comediosis, tragodiosis, poëmatib. h. roci. Ho i. crus initio ipso illi.

Hec Atrepidus ex egyptiā Aza. i. p. 111.

Aximoures, pœros de pœza operez a pœripelawau.

Plempartus, jōsor de ci pœze kampetowau ēlunus,

Idest: Heros Atrides late imperians Agamemnon,

Concitus incenso circum recordia felle,

Sanguinea ora tument, oculis micat acrisbus ignis.

VT ad officij formam revertamur } attende, qua sit Officij forma. CONTRAHENDOS, } vt equos ferocienes. SED ANDOSQUE, } vt populum ad seditiones spirantem.

LUDVM, & iocum, } Prouerbium sapit. Ita in Verrem: Per ludum, & iocum cuertere aliquem. Terentius: Hic vero est, qui si amare occiperit, ludum iocumq. dices frustis illum alterum, præt huius rabies quæ dabit. ET ad quedam studia grauiora, atque maiora. Aristot. Polit. 8. Et nō ἀμφί μιν δε, γέλων

μᾶλλον δὲ εἰπεῖν τὸ γοράζειν, οὐ γέρ δὴ παιζόντας, τέντε γέραντας εἶναι βίου τὸν τραγιδιανόν. L V D O autem, &c. } obiectioni per occupationem responderit. VT i illis quidem licet, } ita septem mei libri, septem abij. & Tertij, Illi. SOMNO, } Plutarchus in Homeris vita: Καρδενού πάρισιον ἵστη τὸν τὸν αὐτοῦ τοποῦ φύσιν μή μονον θετταῖς θεῖς, αὐτὸν αὐτοῖς πάρισιον τὸν τὸν αὐτοῦ τοποῦ φύσιν μή μονον. Vice quietis, & laborum prodelfe, ipsius Homeri verbū sicut: Avīn καὶ πονος ὁπο. Et alibi: Avīn καὶ πονος πονος πονος πονος πονος πονος. Reddit caussam, cur somus sit remedium corporis labore fatigati. QVI E R I B U S ceteris, } ita octo mei libri, & Tertij, duo, Quietis, quatuor, Ceteris quietibus. IN SE NV VM, & facetum } lib. II. de Oratore. VT enim pueris } Quintil. lib. I. cap. 3. Cicero pro Cœlio. Nam Quo semel est imbuta recens, seruabit odorem Testadiu,

Horatius ait Epist.lib. I. AL TER VM elegans, } Cic. ad Cornelium Nepotem lib. II. apud Macrobiū: Itaque nostri, cum omnia quæ dixissimus, Dicta essent, quæ facete, & breuiter, & acutè locuti essemus, ea proprio nomine appellari Dieteria voluerunt. PL AVT VS noſter, } Contra Horatius in Arte:

At nostri proavi Plautinos & numeros, &  
Laudavere sales: nimium patienter vtrumque.

Sed Varro, apud Quintiliar. I. M., Plautiore Musas locutas ait, Terentiū tamen præponit: ex Aelij Stolonis sententia. Macrobius quoque Sat. lib. II. cap. I. Animaduerto duos, quos eloquentissimos antiquas tulit, comicum Plautum, & oratorem Tullium, eos ambos etiam ad iocorum venustatem ceteris præstisſe. Plautus quidem ea re clarus fuit, vt post mortem eius comœdia, quæ incertæ ferebantur, Plautinæ tamen esse, de iocorum copia, noscerentur. &c. AT T I C O R V M antiqua comœdia. } Quintil. negat Latinis Atticam Venerem in comedij conceitam. Antiqua autem comœdia summa libertate nominatum omnes reprehendit, quod Alcibiades postea antiquauit. PHILOSOPHORVM Socratiorum } hoc satis appetit ex Platonis dialogis, A SENECONE } Macrobius lib. II. cap. I. Catonem censiblum arguit iocari solitum scribit. Plutarchusq. apophthegmata eius inter cetera Romana multa commemorat. Αποφθέγματα } Quintil. lib. VI. cap. 4. TEMPOR E } in loco opportuno: vel, extempore.

nam ioci esse debent subiti. RE M I S S O animo, } tum se quis  
iucunditati dedit, cùm res graues & seriae non tractatur. vnde  
Isocrates ait: Εγελαίσθημεν αποδιάζεν, καὶ αποδιάζει ταῦτα,  
ταῦτα, καὶ παραχώλυ πηγή ἐστι. V T N E nimis omnia profunda-  
mu, } alij mutant ex ingenio, mendosum suspicates verbum,  
Omnia. ego sequor veteres omnes libros. Est autem senten-  
tia, Ne nimis omnia profundamusca scilicet, quæ profundi  
solent in lusu. Vt risus, clamor, sermonis libertas, motus etiam  
carnis: quæ moderanda sunt. E L A T I Q. voluptate } tum enim  
est desinendum, cùm ludus sit optimus. C A M P V S noster, }  
Martius qui erat, vbi nunc est templum D. Laurentij in Lu-  
cina. Olim Tarquiniorum ager: de quo Plut. in Publicola,  
Dionys. lib. v. Liu. lib. 2. S T V D I A venandi } Canes ad venan-  
dum laudat Terentius. Plato id. quoque in Legibus probat &  
cō maximè probat, quid hoc iuuentuti regionis denia explo-  
rata fiunt. B E S T I I S antecedat } Belluus, octo libri. Antecel-  
lat, ynus. alius utrumque habet, sic. Bestiis antecellat, antece-  
dat. N I H I L sentium, } nam bestiæ vni voluptati addictæ  
sunt, nihil præterea curant. vnde Horatius:

Me nitidum, & pinguem, & bene curata cute vises,  
Cūna ridere voles Epicuri de grege porcum.

H O M I N I S mens discendo alitur, } Isocrates ad Demoniciū:  
Τὰ μὲν γὰρ σώματα τοῖς συμμέτεροι πόνοις: οἱ δὲ φυγῆστοι αποδιάπει-  
νοις αὐξέσθαι πέπυται. M O D O ne sit ex pecudum genera, } quæ nihil  
boni, malive fugiunt, sed naturam ducim sequuntur, rationē  
negligentes. N O N re sed nomine } ab humanitate enim lon-  
gissimè absunt. P A V L O crebellor, } non humi abieetus ani-  
mo, & cogitatione.

## C I C E R O.

A T que etiam, si considerare volumus, que sit in  
natura excellentia, & dignitas: intelligentia,  
quam sit turpe, diffluere luxuria, & delicate, ac mol-  
liter vivere: quamq. honestum, parcè, continenter, se-  
uerè, sobrieque. Intelligentum est etiam, duabus quasi  
nos

nos à natura induitos esse personis: quoniam uia est  
communis, ex eo, quod omnes participes sumus ratio-  
nis, prestantiaq. eius, qua antecellimus bestiis, à qua  
omne honestum, decorumq. trahitur, & ex qua ratio  
inueniendi officij exquiritur: altera autem, qua pro-  
priè singulis est tributa. ut enim in corporibus magna  
dissimilitudines sunt: (alios enim videmus velocita-  
te ad cursum, alios viribus ad lucretium valere; itém-  
que in formis, aliis dignitatem inesse, aliis venustati-  
tem) sic & in animis existunt etiam maiores varie-  
tates. erat in L. Crasso, & L. Philippo multus lepos,  
maior etiam, magisq. de industria in C. Cesare L. filio.  
at iisdem temporibus in M. Scauro, & in M. Druso  
adolescente singularis severitas, in C. Lelio multa hi-  
laritas, in eius familiari Scipione ambitio maior, vi-  
ta tristior. de Gracis autem, dulcem, & festi-  
uiq. sermonis, atque in omni oratione simulatorē, quē  
εἶπων & Graci nominauerunt, Socratem accepimus: con-  
tra, Pythagoram, & Periclem summam auctoritatem  
consecutus sine uilla hilaritate. callidum Hannibalem  
ex Pœnorum, ex nostris ducibus. Q. Maximum ac-  
cepimus, facile celare, tacere, dissimulare, insidiari,  
præcipere hostium consilia. in quo genere Graci The-  
misteclum, & Phœnix Iasonem ceteris anteponunt.  
in primisque versutum, & callidum factum Solonis:  
qui, quo & tutior vita eius esset, & plus aliquanto  
reip. prodeisset, furere se simulauit. Sunt his alij mul-  
tum dispare, simplices, & aperti, qui nibil ex oculu-  
to, nibil ex insidiis agendum putant, veritatis culto-  
res, fraudis inimici: itemq. alij, qui quiduis perpet-  
uantur, cuius deseruant, dum, quod velint, consequan-  
tur: ut Sullam, & M. Crassum videbamus. quo in

genere versutissimum, & patientissimum Lacedaemonium Ly sandrum accepimus: contrâ. Callicratidam, qui p r e f e c t u s classis proximus post Ly sandrum fuit. It emq. in sermonibus, aliu quidem, quâuis præpotens sit, efficere, ut unus de multis esse videatur. quod in Catulo, & in patre, & in filio, idemq. in Q. Mucio Mancia vidimus. Audiui & ex maioribus natu, hoc idem fuisse in P. Scipione Nasica; contrâque, patrem eius, illum, qui T. i. Gracchi conatus perditos vindicauit, nullam comitatem habuisse sermonis; nec non Xenocratem quidem, seuerissimum philosophorum; ob eamq. rem ipsam magnu, clarumq. fuisse. Innumera biles aliae dissimilitudines sunt nature, morumque, minime tamen vituperandorum.

## EXPLANATIO.

**D**IFFLVERE luxuria, & omnibus libidinibus frenos la sare. DELICATE ac moliter viure, & g. o indelege re; & vt Demosthenes loquitur, οὐτοις τελεόντων ζωῆς. ARCE, ne quid sumptus fiat in res supervacaneas, quo conser uatur res familiaris, & injuria, ac malâ artes vitantur. CONTINENTIA, & coercere libidinem, impetrare voluptatibus, SEVERE, cogitatione rerum grauium, & vtil. um esse intentum: aut rei familiaris, aut philosophia dare operam. SOBERIE, cibo, & potu ad conseruandam tantum valetudinem vti, non autem crapulae se dedere. Vt enim in corporibus magna dissimilitudines sunt: Arist. Polit. Ei d. ἡ μὲν τὸ σωματικὸν τοῦ ἀλλας, πολὺ δικαιότερον δὴ τὸ φυσικὸν τοῦ θεραπεύει. ALIIS dignitatem inesse, plijs venustatem, & virile quiddam Dignitas, muliebre Venustas habet. infra. Dignitas autem ipso vultu, & habitu corporis auctoritatem, & maiestatem quandam præfert; Venustas autem ad sui amorem allicit. SIC & in animis Salustius, Catilina: sua cuiq. satis placebat. Quo loco vide nostra Scholia. L. C RASSO, eloquètissimo: quem Cicero in libris de

de Oratore disputantem, facit. Ei Quinctil. παρηστατικόν, Tacitus granitate tribuit. L. PHILIPPO, diserto, & erudit. de orat. 2. & in Bruto. D. industria, Terentius: Parum interesse censes, omnia vt fert natura faciat, an de industria? C. CAESARE L. filio, Catuli patri fratre. M. SCAVRO, de quo supra à nobis dictu est. M. DRUSO, quæ graue fuisse, at in Bruto. C. LAELIO, de hoc dicemus in dialogo de Amicitia. SCIPIONE, quem Fannius in Annalibus εἰργάζεται appellat. de Orat. 2. in Bruto, & in Tusc. SIMULATOREM, quem εἰργάζεται Greci nominauerunt, quamquam Dissimulare, & Simulatione inter se differant, cum dissimulentur vera, id est occultentur ea, que sunt: simulentur falsa, id est singantur esse, que non sunt: & Ironiae verbora Dissimulatione verius exprimi videatur, quam Simulatione: quo modo expressit Cicero ipse lib. II. de Orat. & IV. Acad. ferri tamen potest hoc in loco Simulatorem, pro, εἰργάζεται non solum quia veteres libri cum vulgatis consentiunt omnes, verum etiam, quia, si quis aciem ingenii ad veritatem intendat, posse alterum pro altero accipi, fortasse non negabit. Dissimulator enim, & Simulator, diuersum quasi iter ha bident, eodem tamen æquè tendunt, quid enim differant, si de doctissimo homine dixeris: Dissimulat, se quidquam scire. Si mulat se nihil scire: nonne vtroque modo ironia vteretur? Reete igitur hic & Simulatorem, & Dissimulatorem, legi potest, sed quod antiqua probant exemplaria, id, cum tuto sequi licet, negligere, & improbar e non debet. SOCRATEM, II. de Orat. Acad. IV. In Bruto: Ego ironiam illam, quam in Socrate dicunt fuisse, qui ille in Platonis, Xenophonis, & Aeschiniis libris vtitur, facetum, & elegantem puto. Quintilianus lib. IX. cap. 6. figuris: Vita vniuersa ironiam habere videretur, qualis est in vita Socratis. nam ideo dictus εἰργάζεται, hoc est agens imperitum, & admirator aliorum tamquam sapientium. Seneca lib. V. de beneficij, cap. 6. eius sermonem per figuram procedere, & omnium derisorum, maximè potentium, fuisse dicit. Timon apud Laertium hanc ironiam ei vicio veritatis, hoc versu:

Mυκητὸς πέντε μῆλοις οὐτανίκας εἰργαλεῖται.

PYTHAGORAM, cuius tanta fuit auctoritas, vt in proverbium abierit, Αυτὸς εἴη. In Tusc. D. Aug. lib. 2. de Orig. Existit eius vita apud Laertium. PERICLES, summæ apud

Athenienses auctoritatis: quippe qui ea ipsis persuaderet, que  
minime volebant. Plut. in eius vita, Plato Alcibiade priore,  
Thucyd.lib.ii. Isocrates pro pace, Cic.de Orat.iii. Valer. lib.  
ix. cap.9. Iustinus lib.iii. HANNIBALEM } Liuius, Vale-  
rius lib.vii. cap.de Stratagem. Q.M A X I M U M } de quo supra  
P R A E B I P E R E hostium consilia. } Sophocles Alacis initio:

Αθηναῖς τοῦ Λεπτίου διδόμενος  
Πλέπει τούτοις διπλάσιοι θρησκευτοί.

**T H E M I S T O C L E M** } Socrates apud Xenophontem  
Pericli incantationes, huic varias artes in administranda  
rep.tribuit. **P H E R A E V M I a s o n e m** } qui nisi esset per insidias in-  
terfectus, bellum aduersus Persarum regem, dux electus uni-  
uersa Graecia consensu, gesisset. Val.Max. lib. ix. cap. 10. &  
lib. i. Plat. in Apophthegm. Epaminundam Thebanum auro  
tentasse dicit. **F A C T U M S o l o n i s** } nam, cum inter Athenienses,  
& Megarenses de proprietate Salaminae insulae prope vs-  
que ad interitum armis dimicatum esset, post multas clades  
capitale esse apud Athenienses ccepit, si quis legem de vindicanda  
insula tulisset. Sollicitus igitur Solon, ne aut tacendo  
parum reip. consuleret, aut censendo periculum sibi strueret,  
subita dementiam simulat, cuius venia non dicturus modò  
prohibita, sed facturus erat, deformis habitu, more vacordium  
in publicum euolat. factaq. concursu hominum, quo  
magis consilium dissimularet, insolitus ibi versibus suadere  
populo cepit, quod vertabatur: omniūq. animos ita cepit,  
ut exemplo bellum aduersus Megarenses decerneretur, insu-  
lique, deuictis hostibus, Atheniensem fieret. Iustinus lib. ii.  
Plut. in eius vita. Verius exstant apud Laertium:

Ταῦτα εἰς Σαλαμίνα μεχεσθήσας πεπίστου  
Ιαερπόν, σλεπτὸν τὸ αἷξον αποτέλειον.

**S V I L A M**, } vide eius vitâ aquid Plutarchum. **M. C R A S-**  
**S V M**, } fordidissimus fuit. vide eundem Plutarchum. **L A C E-**  
**D A E M O N I V M Lysindrum** } & idem Plutarchus. **C A L L I-**  
**C R A T I D A M**, } hunc Cyri moram, à quo stipendium petie-  
rat, ægrè tulisse, scriptis Xenophon Επιλογῶν lib. 1. & Plut. in  
Apophthegm. Lacon. **A L I V M q u i d e m , q u a m u s p r e p .** } veteres  
libri partim habent. Quemque, pro Quidem; partim, Qui. Pa-  
ter meus, legebat. Alium quandam, quamvis prep. **V N V S d e**  
**m u l t i s** } ob suavitatem, sonumque dulcem, in libro de claris  
orat. Hic ad laudem refertur alibi. **V N U S d e m u l t i s , a d i n f a-**  
**m i a m**

# IMPERATORE CAESARE AVGVSTO

## ORDO CORPORATORVM LENVNCV LARIOR.

PATR. SENAT.	P. Cornelius, Phœbu	S	Q. Marcius, Threptu	S	M. Publicius, Felicissim
L. Fabius, Cilo, Septiminus	A. Mucius Maiu	S	L. Caltilius, Eutychian	Sex. Auienius, Heraclida	
M. Vmbilius, Maximinus	A. Herenuleius, Philetarian		M. Publicius, Ostiensis	C. Clodius, Siluanu	\$
	A. Herenuleius, Yetitanus		L. Furius, Fortuna Tus	C. Iunius, Romulu	\$
	T. Manlius, Manlianu	S	L. Actius, Manlianu	C. Roscius, Tertiu	\$
E Q V I T . R O M .	C. Furius, Primituo	S	Sex. Aulenius, Onetiphor	A. Herenuleius, Proculus	
L. Furius, Public, Marcell, Pa.	Q. Marcius, Rufinu	S	M. Publicius, Forti	P. Sittius, Restitutus	
L. Furius, Public, Marcellin.	M. Cipius, Natalian	S	M. Cornelius, Cresce	Sex. Sexilius, Julianus, Ivn.	
Sex. Sextilius, Julianus, F.	C. Clodius, Agathopu	S	Ni. Acilius, Apolaustus	M. Pub'licius, Aelianus	
L. Valerius, Daphnu	L. Valerius, Dapnu	S	M. Cipius, Victo	C. Voltidius, Fortunatus	
Sex. Sextilius, Julianus, P. QQ, PP	S M. Corne <b>L</b> us, Feli	X	Q. Lollius, Onesimus	Sex. Clcelius, Donatu	\$
M. Publicius, Ianuarius	T. Cornelius, Feli	X	C. Voltidius, Priscu	P. Aelius, Asclepiad	
Quinquennal, II P	M. Publicius, Mercurius		P. Naevius, Auf, Hyginian	M. Publicius, Zosimu	\$
M. Publicius, Ostiensis, Sen QQ, II.	M. Publicius, Valen	S	M. Publicius, Bassu	A. Herenuleius, Eutyches	
M. Cornelius, Valerianus	M. Licinius, Secundu	S	M. Publicius, Valerianus	D. Statilius, Statilianus	
QQ, Perpet	M. Furius, Crescen	S	M. Publicius, Garpu	D. Otacilius, Octauius	
L. Valerius, Daphnu	M. Cornel, Aphrodisius		M. Macrin, Fortunatian	D. Oracilius, Donatus	
QQ, PP.	M. Cornel, Fortunatus		C. Volumnius, Zofimu	M. Opiu	O
M. Cipius, Victo	M. Cornelius, Luciferus		Sex. Sextilius, Julianus, P.	S. Felici	
QQ, Perpet	S M. Antonius, Valen <b>N</b> us		A. Sergius, Felici	Sex. Clcelius, Maturus	
Sex. Sextilius, Julianus, Pa. QQ	L. Caltilius, Blastianus		C. Firmanus, Barnæus	T. Flavius, Primu	\$
M. Curtius, Victorinus QQ	M. Padlicius, Decianu	S	Q. Septimi, Crescens	C. Iulius, Adauctu	\$
A. Herenuleius, Vetrianus	M. Valerius, Hamiliu	S	M. Cipius, Feli	M. Cornelius, Epagathus	
	M. Publicius, Maximian		L. Licinius, Feli	M. Cornel, Serapiacus	
	L. Caruilius, Veterian		T. Aelius, Agatopu	L. Furius, Musidianus	
	C. Cordius, Fortunatus		D. Aufidius, Paulinian	D. Otacilius, Victo	R
	L. Mindius, Fortunatus		C. Varius, Primu	M. Curtius, Victorinus	
	M. Antistius, Eupepretian		L. Furius, Eutycche	L. Cornelius, Epitynchan	V
	L. Mindius, Siluanu	S	M. Publicius, Feli	T. Aurelius, Vale	N
	M. Acilius, Titianu	S	M. Publicius, Philetus	L. Critonius, Primitiu	
	M. Publicius, Iuniu	S	A. Herenuleius, Crispus	L. Cornelius, Optatu	
	D. Otacilius, Iouinu	S	P. Sittius, Maximu	Q. Iulius, Lucilianus	
	M. Publicius, Fructus, Sen.		M. Fabius, Helleuther	L. Furius, Eutycche	
	L. Cerellius Maximian		L. Mamius, Rufinu	L. Furius, Adauctu	
	M. Publicius, Polycra Tes		L. Furius, Eutyches, Ivn.	L. Furius, Acliu	
	C. Tuccius, Epictetus		M. Publicius, Crescens	P. Aelius, Victo	R
				P. Aelius, Ostiensi	\$

# VSTO P. HELVIO PERTINACE II. CoS.

## RIOR. TABVLARIOR. AVXILIAR. OSTIENSIVM.

S	C. Læcanius. Victorinus	M. Publicius. Ostiensis	Sex. Sextilius. Alexander	T. Furius. Publicius. Marcellinus
S	A. Fabius. Trophimus	S. Sex. Sextilius. Victorinus	C. Roscius. Feli	T. Furius. Publicius. Aristobulus
S	T. Aelius. Eutychus	M. Publicius. Felicissim	M. Publicius. Lucrio	M. Cornelius. Felicissim
S	T. Petronius. Domesticus	M. Curtius. Felicissim	M. Cornelius. Firmus	M. Publicius. Maximianus
P.	P. Freganius. Augastalis	M. Cornelius. Hilarus	M. Cornelius. Pancarpus	I. Seftius. Eutyches
Q.	Flavius. Saturninus	M. Cornelius. Epaphra	M. Cornelius. Thalamus	T. Flavius. Annianus
C.	Curtius. Ostiensi	M. Cipius. Primitiu	M. Cipius. Zofimu	L. Vinicius. Protocelus
M.	Publicius. Viēto	R. M. Publicius. Eutyches	M. Cipius. Eutyches	L. Valerius. Lucri
M.	Publicius. Adiutor	M. Segulius. Vitali	O. C. Cordius. Fortunatus	T. Flavius. Crescentianus
C.	Fonteius. Felicissimu	M. Æmilius. Datus	Q. Turranius. Datus	P. Acilius. Phœbion...
T.	Freganius. Augustalis. Ivn.	M. Cornelius. Karus	L. Furius. Public. Marcellus	T. Flavius. Annianus. Ivn.
M.	Marius. Atullu	S. P. Nonius. Marcian	C. Volumnius. Successu	L. Aurelius. Agatho
L.	Aurelius. Metiochus	V. P. Nonius. Charit	M. Cornelius. Zoilu	L. Aurelius. Vitalio
P.	Aelius. Cornelianus	C. Valerius. Chrysero	Q. Fabius. Maximianus	L. Aurelius. Eufra
P.	Aelius. Alexander	Sex. Clælius. Dionyfius	M. Antonius. Amyntian	Q. Fabius. Agathobulus
D.	Aufidius. Hyginian	M. Æmilius. Datu	Q. Lollius. Symbiot	Sex. Sextilius. Verus
M.	Cornelius. Vitali	M. Mamius. Rufinu	P. Petronius. Athenio	M. Curtius. Arria
O.	M. Cornelius. Celer	M. Volumnius. Felicissim	P. Publicius. Crispinus	NVs
M.	M. Cornelius. Fortunat	M. Cæcilius. Felicissim	M. Cornelius. Lucrio	M. Lollius. Euhodus
S	M. Cornelius. Hilariu	M. Freganius. Augustalis. Ivn.	C. Lecanius. Felicissimus	L. Valerius. Genialis
S	M. Cornelius. Saturain	S. M. Cipius. Frugosus	I. Furius. Adiuto	P. Caſſius. Trophimianus
M.	Publicius. Fructu	A. Herenulejus. Philetian. Ivn.	Q. Flavius. Marius. Ivn.	P. Caſſius. Agatho
T.	Manlius. Euthiches	Sex. Clælius. Feli	C. Cipius. Victor. Ivn.	T. Flavius. Loto
M.	Cipius. S. Victorin	R. C. Fonteius. Zofimu	L. Ræcius. Secundus	. . . . . Pubrestutian
M.	Curtius. Victo	M. Annius. Zefirinu	L. Artorius. Hilarianus	SV
C.	Numitius. Primitibus	M. Annius. Marciaru	C. Tuccius. Romanus	Sex. Sextilius. Florus. Julianus
M.	Licinius. Hedianu	C. LorenTius. FortunaTianu	C. Fabius. Agathobulus	M. Cornelius. Valer. Epagathianus
C.	Iunius. Feli	S. T. Flavius. Eplu	C. Furius. Herennianus	L. Pantuleius Vitalio
T.	Ælius. Fortunat	T. Flavius. Agrippinus	Sex. Æmilius Maiu	M. Cornel. Secund. Valerianus
C.	Volumni	L. Mucius. Eutyches	M. Cipius. Victor	M. Æmilius. Ireneus
S	VS. Fortunat	L. Vibius. Callicrates	Q. Clavius. Fortunatus	M. Cipius. MenTarcasTos
S	VS.	L. Octavius. Eufroſinus	D. Octavius. Faſitus	M. Cipius. . . atonicus
S	VS.	L. Cornelius. Maiu	L. Critonius. Felicissimus	C. Furius. . . . . etrennius
R.	A. Sergius. Successu	C. Curtius. Zenodorus	T. Ælius. Fortunatus. Ivn.	M. . . . enius. Vitanus
S	Q. Septimiſ. Crecens	C. Ælius. Nepo	M. Publicius. Floru	M.F...nius. Restitutus
A.	Plotius. Herma	P. Sittius. Secundu	M. Publicius. Glaucus	M.C...elius. Donatus
D.	Q. Vlpius. Successu	Q. Flavius. Mariu	M. Malius. Euthyces	M. Cipius. Ostiens...
M.	C. Voltilius. Felicissi	S. Q. Lolliu. Fortuna Tus	C. Mezaus. Quetilianus	L. Antonius. Valen + nus

miam. Græci, Eis οὐ μόνοι Lucianus in Somnio. **C A T U L o**, patre, filio } Cicero in Bruto. Q. M v c i o **Mancia** } Mancia, gentium Romanarum cognomen, ut Heliorum, apud Val. Max. lib. vi. cap. 2. & apud Cic. lib. ii. de Or. mendose legitur Helius Mancia. Ex qua postea gente Pertinacem fuisse, antiqui lapidis inscriptio, in Capitolio Romano, perspicue ostendit. Quam ideo volui hic ponere, quod, paucis abhinc annis est reperta, & nondum à quoquam diuulgata. Eam autem Roma ad me misit, quo tempore effossa est, in vicina nobilissimiviri Io. Baptista Stallz, Iulius Jacobonius quem, ob miras ingenij suavitates, & ob veterem familiaritatem, antiquarumq. rerum peritiam, vnicè diligo. Helius quoque Cinna poeta nominatur ab Agellio lib. xix. cap. 13. Ex veteribus libris, alij, Manciano; alij Numatio: alij, Mancia. Duo, Mancia.

## C I C E R O.

**A**dmodum autem tenenda sunt sua cuique non vitiosa, sed tantum propria, quo facilius decorum illud, quod querimus, retineatur. sic enim est faciendum, ut contra naturam uniuersam nihil contendamus; ea tamen conseruata, propriam naturam sequamur, vt, etiam si sint alia graviora, atque meliora, tamen nos studia nostra natura regula metiamur. neque enim natura attinet repugnare, nec quidquam sequi, quod aſequi neque as. ex quo magis emergit, quale sit decorum illud: ideo quia nihil decet inuita, ut aiunt, Minerva, id est aduersante, & repugnante natura. omnino, si quidquam est decorum, nihil est profecto magis, quam aquabilitas uniuersa vita, tum singularum actionum: quam conseruare non possis, si aliorum naturam imiteris, omittas tuam. ut enim



sermone eo debemus uti, qui notus est nobis, ne, ut quidam, Graeca verba inculcantes, iure optimo rideamus: sic in actiones, omnemque vitam nullam discrepantiam conferre debemus. atque haec differentia naturarum tantam habet vim, ut non unquam mortem sibi ipse alius consciiscere debeat, alius in eadem causa non debeat. non enim alia in causa M. Cato fuit, alia ceteri, qui se in Africa Casari tradiderunt. atqui ceteris forsitan virtus datum esset, si se interemissent: propterea quod eorum vita lenior, & mores fuerant faciliores: Catoni autem cum incredibilem tribuissest natura gravitatem; etiamque ipse perpetua constantia roborauissest; semperq. in proposito, sive optime corfilio permanissest, moriendum potius, quam tyranni vultus adspiciendus fuit. Quam multa passus est. Vix in illo errore diuturno, cum & mulieribus (si Circe, & Calypso mulieres appellande sunt) inserviret, & in omni sermone omnibus affabilem se esse vollet: domi vero citam contumelias feruoribus, ancillarumque pertulit, vt ad id aliquando, quod cupiebat, perueniret. at Ajax, quo animo traditur millies operere mortem, quam illa perpeti, maluisset. qua contrimplantes expendere oportebit, quid quisque habeat: etiamque moderari, nec velle experiri, quam se aliena deceant. id enim quemque decet, quod est cuiusque suum maxime. suumigitur quisque noscat ingenium, acrima. se & viitorum, & honorum suorum iudicem prebeat: ne scenici plus, quam nos, videantur habere prudentiae. illi enim non optimas, sed sibi accommodatissimas fabulas eligunt. qui enim voce freti sunt, Epigonus, Medeaque; qui gestu, Menalippam, Clytemnestram: semper Rupilius, quem ego memini, Antiopam,

non

non sape Aesopus Aiacem. Ergo hiftrio hoc videbit in scena, non videbit sapiens in vita?

## EXPLANATIO.

**Q**uo facilis} vnde Horatius:

Naturam expellas furca licet, vsque recurret. NATVRAM vniuersam} decorum generale. PROPRIAM naturam, } decorum speciale. NATVRAE regula metitur. } metaphora à fabris. Sic Horatius dixit, Quemque se suo modulo, suoq. pede metiri. SE QVI, assequi } proportionem INVITA Minerua, } Horatius:

Tu nihil, inuita, dices, faciéste Minerua.

NATVRARVM} ingeniorum. M. CATO} de cuius obitu Plut. in eius vita, & in Cesare, & in libello, Quod eruditio in principe requiratur, Lucanus lib. ix. Appianus lib. 2. Florus lib. iv. cap. 2. epit. Liu. cxiv. Oros. lib. vi. cap. 16. Eutropius lib. vi. cap. 5. Seneca Suas. vi. & epist. 24. Valer. lib. iii. cap. 2. Agell. lib. xiii. cap. 18. Laet. de falsa Sap. cap. 18. negat Catonem tam ob id necem sibi consciuisse, vt Caesaris tyrannidem effugeret, quam ut Stoicorum mandato obtemperaret. Quam vero recte hoc fecerit, disputa Augustinus lib. i. cap. 13. de Ciu. Dei. Maternus olim ediderat tragediam, Catonis nomine. ALIA ceteri} non idem omnes decet. AT QVI ceteris forsitan virtus datum esset, eleganter sape usurpat Cicero. Atque, initio sententiae. v. lib. iii. Atque, si etiam hoc natura præscribit. Et hoc libro, propè finem: Atque illi, quorum studia, vitaq. omnis in reru cognitione versata est. Quem ipsum quoque locum, ignoratione Latini sermonis, non defuerit, qui mutandum censerint, reponentes, Atqui, pro, Atque cum sit diuersa vtriusque particula significatio, & cum vtriusque suum locum obtineat ita apte, vt extrudi nullo modo debeat. Quod alijs probare exemplis, putidum fortasse videatur. Tres mei libri habent, Atque, licet, Atqui, reliquerim, mihi tamen, Atque, magis arridere, lectorem admoneo. non enim simul apte cohaerent, Atqui, forsitan: cum in altero confirmatio sit, in altero dubitatio. MORIENDVM potius quam tyranni vultus adspiciendus fuit. ergo hac scripta sunt Cesare mortuo: Ceterum Theocritus aliud sensit, cuius hec sunt:

Θερτῖν χρῆσίας Βασίς, τέλος αὐξεντὸς ἔτεστ' ἀμεινον;  
Αλλογε, μὴ χ' ὁ Ζεὺς πέλει ἀδρόποτος, ἀλλογες οἵ γε:  
Ἐλπίδες εἰς ζωοντανούς, εὐελπίσεις δὲ θαυμάτων.

**Id est:** Fidere oportet, amice Battē: cras forsitan melius habebis,  
Nunc quidem Iuppiter claro est æthere, nunc pluit.  
Spes in viventibus: sine spe autem mortui.

**CIRCE,** } Homerus Odyss. i. Hyginus cap. 125. **CALYPSO** } Homerus Odyss. f. & e. Hyginus ibidem. **SERVORVM,** } Melanthij. Odyss. p. **ANCILLARVM** } Melanthus. Odyss. o. **Quid cupiebat,** } cupiebat autem occidere procos, & Penelope vxore quiete frui. Odyss. x. Vide Cret lib. vi. **AIAK,** } Telamonius. exstat Sophoclis tragœdia. De eo Hom. Ia. o. Ouid. XIII. Metam. Hyginus cap. 107. **ACREM inditem** } feuerum: non sui nimis amantem. φλωτή enim abesse debet. **PIGONOS,** } Attij tragœdiām. citatur à Nonio. **MEDVM** } Pacuvij tragœdiām. Festus, Carissius, Priscianus, Nonius. **MENALIPPAM,** } Atij, Festus, Nonius. **CLYTEMNESTRAM:** } Attij. Priscianus, Nonius. **AESOPVS** } quem Cicero pronunciando imitatus est. Plut. in vita Cic. Maer. lib. III. cap. 4. Vide Quintil. lib. 11. cap. de proua. concitatiorem Roscium, hunc grauiorem dicit. De eius luxu vide Plinium lib. x. cap. 51. & lib. XXXV. cap. 12.

### C I C E R O.

**A**D quas igitur res aptissimi erimus, in iis potissimum elaborabimus. si aliquando necessitas nos ad ea detruserit, qua nostri ingenij non erunt: omnis adhibenda erit cura, meditatio, diligentia, ut ea, si non decorè, at quamminimū indecorè facere possimus. nec tam est enitendum, ut bona, qua nobis data non sunt, sequamur, quam ut vitia fugiamus. Ac duabus his personis, quas supradixi, tertia adiungitur, quam casus aliquis vel tempus imponit: quarta etiam, quam nobis meti ipsi iudicio nostro accommodabimus. nam regna, imperia, nobilitates, honores, diuitiae, opes, eaque, quae sunt his contraria, in casu sita, temporibus gubernantur: ipsi autem quam personam gerere

rere velimus, à nostra voluntate proficiuntur. itaque se alij ad philosophiam, alij ad ius ciuale, alij ad eloquentiam applicant: ipsarumq. virtutum in alia aliis mauct excellere. quorum verò patres, aut maiores in aliqua gloria preſtiterunt, eorum pleriq. in hoc generale laudis student excellere: vt Q. Mucius P. filius in iure ciuili: Paulli filius Africanus, in re militari. Quidam autem ad eas laudes, quas à patribus accepérunt, addunt aliquam suam: vt hic idem Africanus eloquentia cumulauit bellicam gloriam: quod idem fecit Timotheus, Canonis filius: qui, cum belli laude non inferior fuisset, quam pater, ad eam laudem doctrina, & ingenij gloriam adiecit. Fit autem interdū, ut nonnulli, omissa imitatione maiorū: sūm quoddam institutum consequantur: maximèq. in eo pleriq. que elaborantij, qui magna sibi proponunt, obscuris oris parentibus. Hac igitur omnia, cum querimus, quid deceat, complecti animo, & cogitatione debemus. in primis autem constituendū est, quos nos, & quales esse velimus, & in quo genere vita. que deliberatio est omnium difficillima. ineunte enim adolescentia, cùm inest maxima imbecillitas consilij, tunc id sibi quisq. genus etatis degenda constituit, quod maxime adamanuit: itaque ante implicatur aliquo certo genere, cursuq. viuendi, quam potuit, quod optimum esset, indicare. Nam, quod Herculem Prodigus dicit (vt est apud Xenophontem) cùm primum pubesceret, quod tempus à natura ad diligendum, quam quisq. viam viuendi sit ingressurus, datum est, exisse in solitudinem, atque ibi sedentem diu secum, mulumque dubitasse, cum duas cerneret vias, unam voluptatis, alteram virtutis, utram ingredi melius esset: hoc Her-

culi, Iouis satu edito, potuit fortasse contingere: nobis non item, qui imitamur, quos cuique visum est atque ad eorum studia, institutaq. impellimur. Plerumq. autem, parentum preceptis imbuti, ad eorum consuetudinem, moremq. deducimur. aly multitudinis iudicio feruntur: queque maiori parti pulcherrima videntur, ea maxime exoptant. nonnulli tamen, siue felicitate quadam, siue bonitate natura siue parentum disciplina, reclam vita secuti sunt viam. Illud autem maximè rarum genus, eorum, qui aut excellenti ingenio magnitudine, aut preclara eruditio, atque doctrina, aut utrāq. re ornati spatiū deliberandi habuerunt, quem potissimum vita cursum sequi vellent, in qua deliberatione ad suam cuiusque naturam consiliū est omnē reuocandum. nam, cum in omnibus, que aguntur, ex eo modo, quo quisque natus est, ut supra dictum est, quid deceat, exquirimus: tum in tota vita constituenda multò est eius rei cura maior adhibenda, ut constare in vita perpetuitate possimus nobismet ipsis, nec in ullo officio claudicare. Ad hanc autem rationem quoniam maximam vim natura habet, fortuna proximam, utriusque omnino ratio habenda est in diligendo genere vita, sed natura magis multo enim & firmior est, & constantior: ut fortuna nonnunquam ipsa mortalis cum immortali natura pugnare videatur, qui igitur ad natura sua non vitiōsa genus consilium vita omne contulerit, is constantiam teneat: id enim maxime decet. nisi forte se errasse intelleixerit in diligendo genere vita. quod si acciderit: (potest autem accidere) facienda morum, institutorumque mutatio est. eam igitur mutationem, si tempora adiuabunt, facilius, commodiusque faciemus:

*Si minus, sensim erit, pedetēting, facienda: ut amici-  
tias, quae minus delectent, & minus probentur, magis  
decere. censem sapientes, sensim dissuere, quam repen-  
te præcidere. comitaturato autem genere vite, omni ra-  
tione curandum est, ut id bono consilio fecisse vi-  
deamur.*

## EXPLANATIO.

**Q** uintil. lib. xi. cap. 3. Agellius lib. viii. cap. 14. **P** AY L I filius **A**fricanus, } Pauli **E**milia, qui de Perla Macedonum rege, triumphauit. De quo Velleius lib. ii. Eodem, inquit, tempore P. Scipio **E**milianus, vir auitis P. Africani, paternique L. Pauli virtutibus simillimus, omnibus belli, ac togæ dotibus, ingenioque, ac studiorum eminentissimus saeculi sui, qui nihil in vita nisi laudandum aut fecit, aut dixit, aut sensit. **A** D D V N T aliquam suam, } contra Homerus

Oī mātōes, xagriūs, πανέργει δέ γε πατέρες αρίστους.

Et Horatius:

Actas parentum per oras tulit,

Nos nequiores, mox datus

Progeniem vitiōsiorem.

**T** IMOTHEVS, **C**ONONI filius, } discipulus Isocratis, qui præceptoris æream imaginem dicauit. Cic. de Orat. iii. & Plut. in Ciceronis vita. Tam in capiendis vrbibus hic felix fuit, ut esset pictus dormiens, rete manu tenens, in quod ipsa fortuna vrbes coniiciebat. rex Atheniensium. Plut. in Apophthem. & Suidas. **O** BSÈVRIS orti parentibus, } vide Valefium Max. lib. iii. cap. 4. & Lucianū in Somnio. **C**ONSTITVENDVM est, } vita genus consideratè diligendum. **I**M B E C I L I T AS consilij, } quæ senum prudentia est regenda: ut alibi dixit. **A** PVD **X**enophontem, } lib. ii. Memorabilem. Vide & Fam. lib. v. ep. 12. ad Luceium, Quint. lib. ix. cap. 2. Maximum tyrium ser. 4. **E**X I S S E in foliindinem, } apud Ter. Simo venit meditatus alicunde ex solo loco: rationem sperat inuenisse, qua differat filiu. Quod ex Menadō sumptū Donatus ait: **C**uius hęc sunt, Euphemiu fr̄as qđas tñw īpapitax, oī r̄as dōpūs dēgrytis.

**H**ERCULI, Iouis sato edito } vt in fabulis. Plautus Amphitru.  
Herculis fabulosam genitaram celebrauit. Sapit hoc phrasim  
poeticam. Petrus Victorius, vir in litteris summa cum laude  
versatus, Var. lect. l. xvii. c. 12. legit, Herculi, loue sato, pot,  
&c. Cuius conjecturam confirmare videntur veteres libri. nā  
septem habent, Herculi, Iouis sato, pot. Vnus, Herculi, Ioui  
sato, pot. Vnus, Herculi, Iouis nato, p. Quod est glossema ad rā  
Sato. Vnus, Herculi, Iouis sato auditio. Vnus, Herculi, Iouis sa  
tu editio. Tres, & Tertij faciunt cum i m p r e s s a lectione. I m  
T A M V R, quos cūque r i s u m e s t, } voluntatis libertas conceditur  
nobis ad in aitandum. P L E R V M Q U E autem, } sic veteres  
omnes libri. Nonius in, Imbuere, Plerique. legisse videtur:  
**M O R E M Q** } Moremque, apud Nonium. Morem id est, confir  
matam confuetudinem. Plutarchus parentum vitam filijs  
tamquam speculum propositum vult; in libello de educ. puer.  
**M A I O R** pari } quam vincere meliorem, ait Lilius. S i v e  
sue sue } recta vita via vnde contingat. Alludit ad tria ho  
minum genera, ab Hesiodo nobis proposita. Q u o modo quis  
que natus est, } sic nasci poeta verius dicitur, quam fieri. N e c  
in vlo officio claudicare. } pro, ne in vlo officio claudicemus.  
P O T E S T autem accidere } homines enim sumus: quorum  
Errare est proprium. Terent. Adelphis:

Cenfē' me hominem esse, erravi.

A M I C I T I A S magis decere sensim disuere, quam repente preci  
dere. } in Lælio: Tales amicitiax sunt remissione vius eleuan  
dex, & vt Catonem dicere audiui, diffundæ magis, quam dif  
cindendæ. Diluere, est in decem meis, & Tertij.

### C I C E R O.

**S**ed, quoniam paulò ante dictum est, imitandos  
esse maiores: primū illud exceptum sit, ne vitia  
sint imitanda: deinde, si natura non ferret, ut que  
dam imitari possint: ut superioris Africani filius, qui  
bunc Paullo natum adoptauit, propter infirmitatem  
valetudinis non tam potuit patris similis esse, quam  
ille fuerat sui: si igitur non poterit sine causas defen  
sitare, sine populum concionibus tenere, sine bella ge  
rere; illa tamen præstare debet, qua erunt in ipsius  
potestate, iustitiam, fidem, liberalitatem, modestiam,  
temper-

temperantiam: quo minus ab eo id, quod desit, requi  
ratur. optima autem hereditas à patribus traditur li  
beris, omnīq. patrimonio præstantior, gloria virtutis,  
rerūmque gessarum: cui dedecori esse, nefas, & vitiū  
iudicandum est. Et, quoniam officia non eadem dis  
paribus etatibus tribuuntur, aliq. sunt, inueniuntur, a  
lia seniorum: aliquid etiam de hac distinctione dicen  
dum est. Est igitur adolescentis, maiores natu reveri,  
ex hisq. eligere optimos, & probatissimos, quorum  
consilio atque auctoritate nitatur. ineuntis enim eta  
tis inscribia, senum constituenda, & regenda prudentia  
est. Maximè autem hac etas à libidinibus arcenda  
est, exercendaq. in labore, patientq. & animi, &  
corporis, ut eorum & in bellicis, & ciuilibus officiis  
vigeat industria. atque etiam, cum relaxare animos,  
& dare se incunditati volent, caueat intemperatiā, meminerint verecundæ: quod erit. facilius, si eiusmo  
di quoque rebus maiores natu interesse velint. Seni  
bus autem labores corpori, sunt minuendi, exercitatio  
nes animi etiam augendæ videtur: danda vero opera,  
vt amicos, & iunetutem, & maximè remp. consilio &  
prudentia quamplurimū adiuvent. nihil autem magis  
cauendū est senectuti, quam ne languori, desidieq. se  
dedat. luxuria vero cum omni etati turpis, tū senectu  
ti fœdissima est. sin autem & libidinum intemperan  
tia acceſserit. duplex malum est, quod & ipsa senectus  
concipit dedecus, & facit adolescentium impudencio  
rem intemperantiam. Ac ne illud quidem alienum est  
de magistratum, de priuatorum, de ciuitum, de pere  
grinorum officiis dicere. Est igitur proprium munus  
magistratus, intelligere, se gerere personam ciuitatis,  
deberéq. eius dignitatem, & decus sustinere, seruare  
leges, iura describere, ea fidei sua cōmissa meminisse.

Priuatum autem oportet æquo, & pari cum ciuibus iure viuere, neque summissum, & abiectum, neque se efferentem, tum in rep. ea velle, qua tranquilla, & honesta sint. talem enim & sentire, & bonum ciuem dicere solemus. Peregrini autem, & incolæ officium est, nihil, præter suum negotium, agere, nihil de alio inquirere, minimèque in aliena esse rep. curiosum. ita ferè officia reperiuntur, cum queretur, quid deceat, & quid aptum sit personis, temporibus, etatibus. nihil est autem, quod tam deceat, quam in omni re gerenda consiliq. capiendo seruare constantiam. Sed, quoniam decorum illud in omnibus factis, & diuis, in corporis denique motu, & statu cernitur, idq. positum est in tribus rebus, formositate, ordine, ornatu ad actionē apto; (difficilius ad eloquendum, sed satis erit intelligi) in his autem tribus cōtinetur cura etiā illa, ut probemur ab iis, cum quibus, & apud quos viuamus: his quoque de rebus pauca dicantur. Principio, corporis nostri magnam natura ipsa videtur habuisse rationem: que formam nostrā, reliquāmq. figuram, in qua esset species honesta, eam posuit in promptu; que autem partes corporis, ad naturā necessitatem datae, ad spectum effsent deformem habitura, atque turpem, eas contexit, atque abdidit. hanc naturę tam diligentem fabricam imitata est hominum verecundia. que enim natura occultauit, eadem omnes, qui sana mente sunt, remouent ab oculis: ipsiq. necessitati, dant operam, ut quām occultissimè pareant: quarūmq. partium corporis usus sunt necessarij, eas neque partes, neque earum usus suis nominibus appellant; quōdq. facere non turpe est, modo occulte, id dicere obscenum est. itaque nec actio rerum illarum aperta petulantia vacat, nec oratio obscenitate.

## EXPLA-

## EXPLANATIO.

**N**E vitia sint imitanda:} D. Hieronymus apol. contra Rufi-  
num ait, magistrorum non vitia, sed virtutes esse imi-  
tandas. H v n c } de quo sēpe mentionem facimus: vel, pro-  
piorem ætati nostræ. P A V L O } hūc, ait Velleius, Scipionis  
filium, nihil de paterna maiestate, præter speciem nominis, vi-  
gorēisque eloquentiae retinuisse. Q u a m ille fuerat sui: } sui  
scilicet patris similis, qui, imperator, post multas in Hispania  
victorias, occubuit. C a v s s a s defensare, } miti verbo usus  
est: pro, Caussas agere, nam accusant etiam sēpe orato-  
res. C o n c i o n i b u s tenere, } delectare, non tantum doce-  
re, & mouere. B e l l a gerere: } nā Romana resp. & oratoria  
facultate, & rei militaris sciētia plurimum valuit. Q u a d e r u n t  
in ipsius potestate, } hinc Plautus:

Ingenio, non ætate, adipiscitur sapientia.

I v s t i t i a m, } quæ suum cuique tribuit. F i d e m } di-  
ctorum conuentorūnque constantiam, & veritatem. L i b e-  
r a l i t a t e m, } quæ re, opera, confilio alios iuuat. M o-  
d e s t i a m, } quæ modum seruat cùm in aliis rebus, tum in  
opinione de se. T e m p e r a n t i a m, } quæ prauis affecti-  
bus dominatur. O p t i m a autem hereditas à patribus traditur li-  
beru, omniq. patrimonio prestantior, G l o r i a v i r i u s, r e r u m q. g e s t a: }  
Fam. lib. ii. epist. 16. & in oratione pro domo. Supra etiam di-  
xit: Ad te (loquitur ad filium) hereditas huius gloriæ, & fa-  
ctorum imitatio pertinet. Isocrates quoque: Περὶ πτεῖος τοιοῦ  
δέξαντα, καὶ πλεύτοι μέγαρ, τοῖς παισὶ καταπλεῖν. A d o l e s c e-  
n t i s, } Vide Val. lib. 2. cap. de inst. ant. & Platonom de Leg. 9.  
M a i o r e s natu reveri, } sic locutus infra: Maximè curan-  
dum est, ut eos, quibuscum sermones conferimus, & reveri  
& diligere videamur. Isocrates: Μάλιστα τι φέτεν ήγου κάστημα,  
αισχύλην, οὐφερώνιαν, δικαιοώνιαν. P r o b a t i s s i m o s, } eos,  
qui magnæ ciuium parti probantur, quod non temere fit,  
nisi virtute excellant. I n e v n t i s enim etatis insciitia, } non  
differre Insciitiam ab Insciitiam, Ciceronis, Cæsaris, Plauti  
testantur exempla, cur igitur alterum pro altero reponam,  
cum præsertim omnes libri veteres habeant, Insciitiam C o n-  
s t i v e n d a, } quasi firmanda, & stabiendi. H a e c etas à  
libidinibus arcenda est, } ratio adolescentiæ laudabiliter traducen-  
dæ. E x e r c e n d a in labore, } hinc Comicus:

Nulla adeo ex re fit, atque ex nimio otio.

PATIENTIA } Virgilius:

Quidquid erit, superanda omnis fortuna ferendo est.

Et: O pax! si grauiora, dabit Deus his quoque finem:  
Durate, & violinet rebus seruare secundis.

IN bellis, & ciuilibus officiis } belli, domique: & in patria armis tua, & in pacata administratione. VIGEAT industria. } vt patriæ, & omnibus prodesse & possint, & velint. RELAXARE animos, } quos tanquam arcus intentos habuerunt. Si eiusmodi rebus maiores natu interisse videntur. } Arist. Pol. lib. 7. cap. 12. H de ē οὐθεὶς μὲν τὸν ἀπόχει τον πολεμον, μέλιστα μητοῖ τὴν αὐλήν εἰδεῖ, καὶ τὸν ἀτεβλητὸν φέον. Et Quintilianus lib. 1. cap. 3. SENIBVS autem &c. } Agellius lib. 2. cap. 14. LIBIDINVM intemperantia } Cato major ob senilem lasciuiam male audiuit: & L. Lucullus post bellum Mithridaticum parum honorifico Xerxis togati eulogio fuit ornatus, & ex philtro amasij, errore mentis affectus. DUXPLEX malum est, } senex in luxuria duplíciter peccat, primum re, deinde exemplo. DE priuatorum, de ciuium, } Sunt, qui legant, De priuatorum ciuium. idque in uno meo veterere reperitur. Cicero tamen mox haec distinguit. SERVARE leges, } quorum praefidio ciuitates reguntur. IVRA describere, } nam recte apud eos agitur, apud quos maiorum instituta retinentur. Hinc illud Enni:

Moribus antiquis stat res Romana, virisque.

Et Xenophon: Πάσαι μεταλλεύοντες τὸν πολεμεῖν θεωροῦσί εἰσι. Id est: Omnes mutationes rerum publicarum sanguinolentæ. AEQUO, & pari iure } nam potentiores, & tenuiores coniuncti esse debent in rep. gerenda. In hanc sententiam Sophocles: Περὶ τὸν ἔχοντος ὑπέρτειαν, καίτε τρικεῖται μετά τον πολέμου, σφαλεγχοῦ πόρρου ρύματελονται, μετά τον μετά τον βασιλέας αἵτινας ἄριστος ὑπό τον συμποτεῖγον. Idest: Inuidia diuites infectatur: quamvis pauci sine magnis menia male defendant. tenuis enim à magnis, & magnus à paruis optimè sustentatur. NEQVE summissum, & abiectum, neque se effarentem: } id est, qui imperare pariter, obcedere que, cùm opus sit, posset. nam hoc est boni ciuii, ut ait Aristoteles. FORMOSITATE, ordine, ornatu } Ambrosius de Off. lib. 1. cap. 19. Formositate: nam Gratior est pulchro venies è corpore virtus. AD actionem apto: } id est, ad eam rem, quæ agitur. DIFFICILIUS ad eloquendum,

ob Latini sermonis inopiam. SATIS erit intelligi } septem libri mei, Satis facile erit intelligi: ex quibus quatuor verba inuertunt. CV M quibus, & apud quos viuamus. } In vndeclim est, Quibuscum, apud quosque viuamus. Vnus, Cūm quibus, apud quos viuamus. Vnus, A quibus, apud quosque viuamus. Tertii, Probemur iis, quibuscum apud quosque viuamus. Alius, Cūm quibus, apud quosque viuimus. PRINCIPIO, &c. } corporis humani formam honesta specie natura exornauit. FORMAM figuram, } vide Nonium Marcellum. ATQUE turpem, } ita duo ex meis. Reliqui, & Tertii, Atque formam. Quidam reponit, Atque fœdum. QVI sana mente sunt, } nam impudentia omnium rerum pesima est. Fam. lib. 5. epist. 12. Qui semel verecundia fines transierit, eum bene, & nauter oportet esse impudenter. Xenophon, H ἀναγνώσα μετανησά εἰπε πάντα τὰ οὐχεῖται τούτοις. Idest, Nihil æquale ad omne turpitudinem videtur impellere, atque impudentia. QVOD Q. facere nō turpe est, } quia naturale, & necessarium.

## C I C E R O.

NEC verò audiendi sunt Cynici, aut si qui fuerunt Stoici pene Cynici, qui reprehendunt, & irrident, quod ea, que turpia re non sunt, verbis flagitiosa dicamus: illa autem, qua turpia sunt, nominibus appellemus suis. Latrocinari, fraudare, adulterari, re turpe est, sed dicitur non obscene: liberis dare operam, re honestum est, nomine obscene pluramq. in eam sententiam ab eisdem contra verecundiam disputantur. Nos autem naturam sequamur, & ab omni, quod abhorret ab ipsa oculorum, auriumq. comprobatione, fugiamus. Status, incessus, sessio, accubatio, vultus, oculi, manum motus teneant illud decorum. Quibus in rebus duo sunt maximè fugienda, ne quid effeminatus, aut molle: aut, ne quid durum, aut rusticum sit. nec verò histrionibus, oratoribusque concedendum est, ut ijs hac apta sint, mihi dissoluta, scenicorum quidem mos

tantam habet à vetere disciplina verecundiam, ut in scena sine subligaculo prodeat nemo. verentur enim, ne, si quo casu euenerit, ut corporis partes quadam aperiantur, adficiantur non decorè. nostro quidem more cum parentibus puberes filii, cum sacerdos quidem generi non lauantur. retinenda est igitur huins generis verecundia, præsertim natura ipsa magistra, & duce. Cùm autem pulcritudinis duo genera sint, quorum in altero venustas sit, in altero dignitas: venustatem muliebrem ducere debemus, dignitatem virilem. Ergo & à forma remoueatur omnis viro non dignus ornatus, & huic simile vitium in gestu, motuque caueatur. nam & palastrici motus sepe sunt odiosiores, & histrionum nonnulli gestus ineptius non vacant: & in vitroque genere, quæ sunt recta, & simplicia, laudantur. Forma autem dignitas, coloris bonitate tuerenda est: color, exercitationibus corporis. Adhibenda est præterea munditia, non odiosa, neque exquisita nimis, tantum que fugiat agrestem, & inhumanam negligentiam. Eadem ratio est habenda vestitus, in quo, sicut in plerisque rebus, mediocritas optima est. Cauendum est autem, ne aut tarditatibus vitam in gressu mollioribus, ut similes pomparum ferculis esse videamur: aut in festinationibus suscipiamus nimias celeritates: quæ cum sint, anhelitus mouentur, vultus mutantur, ora torquentur: ex quibus magna significatio fit, non adesse constantiam. Sed multo etiam magis elaborandum est, ne animi motus à natura recedant: quod assequemur, si cauebimus, ne in perturbationes, atque exanimationes incidamus, & si attentos animos ad decori conseruationem tenebimus. Motus autem animorum duplices sunt, alteri cogitationes, alteri

appe-

appetitus, cogitatio in vero exquirendo maxime versatur: appetitus impellit ad agendum. Curandum est igitur, ut cogitatione ad res quam optimas utamur, appetitum rationi obedientem præbeamus. Et, quantum magna vis orationis est, eadēque duplex, altera contentionis, altera sermonis: contentio disceptationibus tribuatur iudiciorum, concionum senatus sermon in circulis, disputationibus, congreszionibus familiarium versetur, persecutur etiam coniuncta. contentionis præcepta rhetorum sunt, nulla sermonis. quamquam haud scio, an possint hec quoque esse, sed discen- tium studiis inueniuntur in ipsis: huic autem qui stu- deant, sunt nulli: rhetori turbam referta omnia. quamquam, quæ verborum, sententiæ rūmq. præcepta sunt, eadem ad sermonem pertinebunt. sed, cum orationis indicem vocem habeamus: in voce autem duo sequamur, ut clara sit, ut suavis: utrumque omnino à natu- ra petendum est: verum alterum exercitatio augebit, alterum imitatio pressè loquendum, & leniter. Nihil fuit in Catulis, ut eos exquisito iudicio putares uti litterarum. quamquam erant litterati: sed & alij, hi autem op:ime vti lingua Latina putabantur. sonus erat dulcis: littera neque expresa, neque oppressa: ne aut obscurum esset, aut nimis putidum, sine contentione vox nec languens, nec canora. uberior oratio L. Craf- si, nec minus faceta: sed bene loquendi de Catulis opinio non minor. sale vero conditus, & facetijs Casar, Catuli patris frater, vicit omnes: ut in ipso illo forensi genere dicendi contentiones aliorum, sermone vinceret. In omnibus igitur his elaborandum est, si in omnibus, quod deceat, exquirimus. Sit igitur hic sermo, in quo Socratici maximè excellunt, lenis, minimèque pertinax:

*insit in eo lepos. nec verò, tamquam in possessionem suam venerit, excludat alios: sed, cùm reliquis i rebus, tum in sermone communi, viciſſitudine nonnum quā utendū putet. ac videat in primis, quibus de rebus loquatur: si serius ſeueritatem adhibeat: si iocofis, lepo rem. in primis prouideat, ne sermo vitium aliquod indexet in eſſe morib⁹. quod maximē tum ſolet euenire, cùm ſtudiosi de absentibus, detrahendi cauſſa, aut perridiculum, aut ſeuerē, maledice, contumelioſeque dicuntur.*

## EXPLANATIO.

**C**YNICI,} ignominia cognomen, & nō ſuic̄, quia, Cobiuios quoſque admonendo allatrate verius, quam alio qui, ſoliti ſunt: vel quod in proptatulo cum coniugib⁹, canum more, coire, ipſis moſ fuit. Horum impudentiā accuſat D. Augustinus lib. 14. cap. 20. de Ciu. Dei, & ad Valeriu lib. 1. cap. 21. contra Iulianum Pelagianum libro 4. cap. 15. Laſtantius lib. 3. cap. 15. Lucianus. **S**TOICI pene Cynici,} vide epiftolam, cuius initium eſt, Amo verecundiam, Fam. lib. 9. **N**OMINE obſcenum,} cùm eius operæ nomen dicitur, epift. 21. lib. 9. Fam. **O**CVLORVM aurumque} de Orat. 2. & Plut. in Timao. **N**OSTRO quidem more} Valerius lib. 4. cap. 1. **P**VBERES filij,} de Or. lib. 2. & Plut. in Catone censorio, Capitolinius in Gordiano, Hefiodus. In Oratione pro Cluentio: Quod ſi potuſſet honeste ſcribere, ſe in balneis cum id ætatis filio fuifſe, non pretermiſiſſet. **V**ENVSTA TEM muliebrem ducere debemus, dignitatem virilcm.} Sall. Iugurtha: Munditia mulieribus, viris labor conuenit. Cic. de nat. de. 2. Venustatem magis à Venere, quam Venerem à Venustate nominatam credit: Venerem autē, quod ad eam omnia veniant. **V**IRO non dignus ornatus,} hinc Diogenes Cynicus adolescenti composito, quippiam rogiſt, non prius ſe affirmauit reſponſum, quam apertè exploraret, vir ne eſſet, an mulier. **C**OLOR exercitationib⁹ corporū.} Quintilianus lib. 12. Et lacertos, exercitatione conſtringere, & augere vires, &

colorē trahere, naturale eſt. Cauſas reddit Aristoteles in Probl. ſect. vlt. probl. 3. 4. & 5. **P**OMP ARVM ferculus } Horatius Sat. lib. 1. Sat. 3.

--Sæpe velut qui

Currebat fugiens horrem, per læpe velut qui  
Iunonis ſacra ferret.

Vide Adagia, Iunonium ingredi. **E**XANIMATIONES } pauoris comites. Pauor autem ſapientiam omnem exanimo expectorat. Et ſi attentos animos } Euripides:

M: χθεν διέγει ταύς θέλοντα δυναχεῖν.

**M**AGNA in orationis,} Euripides, Τὰ πρὸς τὸ πάναρ τῷ ἀρετᾷ appellat. Vide Cic. in libris de Oratore, Senecam Ep. lib. v. ep. 38 & Isocratē in Niccole, & in Panegyrico. QvAM Q. V. A. M. hanc ſcio, an poſſim hec quoque eſſe } Plutarchoſ in Symposiacoſ hoc conſimmat: Οὐκ ἡποκριτὴ δὲ οὐδὲν δημοκριτὸς ὁ ἀντιπότης, εἰ γέ τις ἔχουσα καὶ δημοκρίτης, καὶ συμποτής, καὶ τοῦτο πλείστῳ δὲ τοῦ ἐπαγγελίᾳ χαίδει, καὶ διπλούσιος πλείστῳ τοῦτο ταὐγειτα δημοκριτὸς ἔχει, πειθὼν καὶ γένεις εἴης νοούμενος. **D**ISCENTIVM ſtudii} quia honos alit artes. **R**HETORVM turba} de horum oſicio Quintilianus lib. 2. cap. 1. & 5. De ijs ſcripſit Suetonius Tranquillus. Eos olim vrbe pulſos ſcribit Agellius lib. xv. cap. 11. QvA E verborum ſententiārumq. &c. } d: Orat. III. Omnis ex re, atque verbi conſtat oratio. neque verba ſedem habere poſſunt, ſi rem ſubtraxeris: neq; res lumen, ſi verba ſubmoqueris. **Q**UINTILIANUS lib. x. cap. 1. **O**RATIONIS indicem vocem} de voce Cic. de Orat. II. ad Herennium III. Quintilianus lib. II. V. T. **C**lara ſit,} vt ex audiatur, & ſatis intelligatur oratio. λευκός: cui contraria Fusca, apud Quintilianum. **V**T ſuavis:} qua leuet audiendi fastidium. **I**N caulis,} & patre, & filio. de Orat. III. & in Bruto. **E**X QVISITO iudicio vii} eſſe eruditos praeter ceteris. **N**IMIS pudicum,} quod fastidium pareret audiēti. **L**. **C**RASSI,} de Oratore, & in Bruto. **S**O C R A TICIS} ex quibus Xenophon. **I**NSIT in eo lepos,} lib. II. de Orat. **T**AM QVAM in poſſitionem ſuam venerit,} de Orat. II. In poſſitione iudicij, ac defenſionis mea. Et in ſuo regno. Prouerbiū ſapit. Si ſerius, ſeueritatem adhibeat: ſi iocofis, lepoře, } Isocrates quoq; τοῦ τοῖς γαοῖς αὐτοῦ δέῃ, καὶ τοῖς ταὐνοῦδαι τοῖς γενοῖς χείρ, improbat. **N**e sermo vitii aliquod indicit in eſſe morib⁹. } Eu-

ripides queritur, quod

Οὐδεὶς χρεική ἐμπέφυκε σούσην,  
Φίλος τὸν οὐθὲν τὸ κεκαῦ θειέντων.

Plutarchus Symposiacon lib.3. narrat, Simonidem poetam hospiti cuidam, in conuiuio accumbenti, & cum nemine colloquenti, dixisse: Si stultus es, sapienter facis: si sapiens, stulte, nam in scitiam celare præstat. STUDIOSE} dedita opera. DE absentibus, { nam inter præsentes lingua mutuo metu continentur, ut ait Tacitus. Terentius: Qui, quæ voluerit, dixerit, ea, quæ non volet, audier. Socrates quoque: Οἱ ἀπόδοσεις δὲ τοῖς λόγοις λυπήσωσι, τούτοις τολμάσωσι τοῖς ἔργοις μεγάλας τὰς προσεξίας ἴδωσιν. DETRAHENDI causa, { ad imminentiū alterius existimationem, aut gratiam. PER ridiculum, aut seuerè, { siue ioco, siue serio.

## C I C E R O .

**H**abentur autem plerumque sermones aut de domesticis negotiis, aut de rep. aut de artium studiis, & doctrina. danda igitur opera est, ut etiam si aberrare ad alia cœperit, ad hac reuocetur oratio; sed vtcumque aderunt res, neque enim iisdem de rebus, nec omni tempore, nec similiter delectamur. Animaduertendum est etiam, quatenus sermo delectationem habet, & ut incipiendi ratio fuerit, ita sit desinendi modus. Sed, quo modo in omni vita rectissime præcipitur, ut perturbationes fugiamus, idest motus animi nimios, rationi non obtemperantes: sic eiusmodi motibus sermo debet vacare: ne aut ira existat, aut cupiditas aliqua, aut pigritia, aut ignavia, aut quid tale apparet. maximeque curandum est, ut eos, quibuscum sermonem conferimus, & vereri, & diligere videamur. obiurgationes etiam nonnumquam incident necessaria: in quibus utendum est fortasse & vocis contentione maiore, & verborum granitate acriore. Id agendum etiam

etiam, ut ea facere ne videamur irati, sed, ut ad uerendum, & secundum, sic nos ad hoc genus castigandi raro, inuitiq. veniamus, nec umquam, nisi necessario, si nulla reperiatur alia medicina: sed tamen ira procul absit, cum qua nihil recte fieri nihil considerare potest. Magna autem parte, clementi castigatione lices vti, grauitate tamen adiuncta, ut seueritas adhibeat, & contumelia repellatur. Atque etiam illud ipsum, quod acerbitas habet obiurgatio, significandum est, ipsius causa, qui obiurgetur, suscepit esse. Rectum est autem, etiam in illis contentionibus, que cum iniuriosis sunt, etiam si nobis indigna audiamus, tamen granitate retinere, iracundiam repellere. quae enim cum aliqua perturbatione fuerit, ea neque constanter fieri possunt, nec ab ijs, qui adsunt, approbari. Deforme etiam est, de se ipso prædicare, falsa præsertim, & cum irrisione audientium, imitari militem gloriosum. Et, quoniam omnia persequimur, volumus quidem certe: dicendum est eti unum, qualem hominis honorati, & principis domum placeat esse. cuius finis est usus: ad quem accommodanda est edificandi descriptio: & tamen adhibenda dignitatis, commoditatisque diligentia. Cn. Octavio, qui primus ex illa familia consul factus est, honori fuisse accepimus, quod præclarum edificasset in Palatio, & plenam dignitatis domum: que cum vulgo viseretur suffragata domino, nono homini, ad consulatum putabatur. hanc Scaurus demilitus, accessionem adiunxit edibus. itaque ille in suam domum consulatum primus attulit: hic summi, & clarissimi viri filius, in domu multiplicata non repulsam solum retulit, sed ignominiam, & calamitatem. ornata est enim dignitas domo, non ex domo dignitas tota

*quærenda: nec domo dominus, sed domino domus honestanda est. Et, ut in ceteris habenda ratio non sibi solum, sed etiam aliorum, sic in domo clari hominis, in quam & hospites multi recipiendi, & admittenda hominum cuiusque generis multitudo, adhibenda est cura laxitatis: aliter ampla domus dedecori domino sape fit, si est in ea solitudo, & maximè, si aliquando alio domino solita est frequentari. odiosum est enim, cum à prætereuntibus dicitur:*

--ô domus

*Antiqua, quæ domino dominaris dispari. quod quidem, his temporibus, in multis licet dicere. Cauendum est etiam, præsertim si ipse adfices, ne extra modum sumptu, & magnificentia prodeas. quo in genere multum mali etiam in exemplo est. studiosè enim plerique, præsertim in hac parte, facta principum imitatur: ut L. Luculli, summi viri, virtutem, quis? quæ multi villarum magnificentiam imitati sunt? quarum quidem certè est adhibendus modus, ad mediocritatem reuocandus: eadèmque mediocritas ad communem usum, cultumque vita referenda est. Sed hac hæc tenus.*

### EXPLANATIO.

**D**O MESTICIS negotiis, } de quibus Xenophon in Oeconomico. D E rep. } de qua Plato, & Cicero. D E artium studiis, } vt Ciceronis libri de Oratore, & Gorgias Platonis. A B E R R A R E } minus caute. V T C V M Q U E aderunt res, } aut ego hebes planè sum, aut hic locus mendo vacat. quod satis ostendunt ea, quæ sequuntur. Habenda est, inquit, rerum ratio, non enim iij, qui audiunt, iisdem rebus delestantur, aut, si delectantur, non omni tempore: aut, si omni tempore, non similiter, huiusmodi igitur si res aderunt: vt res se dabant: opera dāda non erit, vt ad eas, aberrare si cœperit, oratio reuo-

renocetur. Nam, quod alij, veterum librorum testimoniis, verbum, Res, delent: ego, omnium meorum, & Tertij, testimoniis, idem verbum, probante sententia, retineo. I S D E M de rebus, } septem lisdem rebus. N E C omni tempore, } nam alias alter affecti sumus. Homerus, quem Cicero vertit:

Tales sunt hominum mentes, quali pater ipse  
Iuppiter auctiferas lustrarit lampade tecras.

N E C similiter } alij magis, alij minus. A N I M A D V E R T E N D U M &c. } modus in sermone. D E S I D E N D I modus, } ne audias, Manum de tabula. S I D, quo modo } sic emendau, ex ver. vnde decim, & Tertij, antea. Quoniam. I R A exsuffat: } emineat, appareat, animaduertatur. C V P I D I T A S aliqua, } prava scilicet & iniusta. P I G R I T I A, } fuga honesti, & necessarij laboris. I G N A V I A, } timidus, & degener animus, honesta pericula reformidans. V E R E R I, } ne superbi, & impudentes. D I L I G E R E } ne barbari, & inhumani existimemur. O B I V R G A T I O N E S } Plautius Trinummus: Næ amicum castigare ob ineritam noxiā, inumane est facinus, verum in astate necessarium. Vide Plut. de discrimine adulatoris, & amici. Homerus quoque Il. A.

A zabi dē παρεξεστον εἰν τραίγου. N E C E S S A R I A E, } ob hominum iniuriam, & petulantiam. V T eafacere ne videamu. irati, } malè alij negantem particulat tollunt, quæ est in omnibus meis. Notant autem illud Isocratis in Nicocle: Πότει μηδὲν μέτ' ὄργης: δόκει δὲ τοῖς ἀλλοις, ὅτεν αὐτοὶ κατεχοῦσσι. Et Quintilianum aiunt dicere, Oratorem irasci non decere, simulare non dedecere. V T ad vrendum, & Secundum, } Ouidius: Metam. I.

Cuncta prius tentanda: sed immedicable vulnus  
Eas recidendum est, ne pars sincera trahatur.

R A R O, } si licebit, nam crebro peccantes crebro etiam puniendi. Euripides Hippolyto:

Ολοισθε μασῶν δ' οὐποτέ 'μετακοθίσσουμεν  
Γωνιᾶνας, οὐδ' εἰ φύσι τις μέτ' αἰσι λόγον.  
Αεὶ δέ οὐ ποτε εἴσοι κακέναν κακά.

I N V I T I Q U E nobis enim ipsi, & alii molesti sumus. S E D tamen, } Tamen, dicit, quia repetit idem, quod dixerat,  
Ea facere ne videamus irati. I R A procul absit, } Virg.

--Furor, iraque mentem

Præcipitant.

Vide Cic. ad Q. Fr. lib. i. epist. 3. MAGNA autem pars, ita veteres omnes libri, & tertii: duobus exceptis, in quibus, Magna ex parte, quod minus probo. potius legi posset, si mutationi locus detur, cum alijs, Magnam partem, de quo loquendi genere alibi diximus. SEVERITAS adhibeatur, } contra Horatius:

--ridentem dicere verum

Quid vetat? --

Et Persius:

Omne vafer vitium ridenti Flaccus amico  
Narrat, & admissus circum præcordia ludit.

CONTUMELIA repellatur. } conuiua indigna homine  
ingenuo, nam, qui quid gesit, quod minus deceat, si repre-  
hendatur, non argre ferre debet. Sophocles:

Oὐαὶς ἀπέργων μη κυρών ἐπικυρά.

Et Euripides:

Ἐτεῖ ἐπληρωτό μη δίκαια, ταῦθικα τοῦτο φίλα.

GRAVITATEM retinere, } in quo maximo nobis ad-  
iumento sunt litterarum studia.

Euripides:

Τὰς ἱμφύτους, ὄρθως τε παχέσις φένες  
Οὐδὲς ἐπιλεῖ κακὸς οὐχικατάνεν.

Idest: Natura initiam, & probè firmatam prudentiam, nullum tempus impellit ad delinquendum: improbitati autem nihil deest præter occasionem.

AB ipsis, qui adsancti, approbari. } AB, non est in decem meis, & tertij, in uno superadditum. Probari, in sex, & tertij. FA L S A probertim, } quid autem magis vanum? Plutarchus in libro, περὶ τῶν ἐπιτελεῖν εἰς ἐπόθεσας, ait, suarum laudum comitem esse aliorum reprehensionem, & inanis iactantiae finem ignominiam. MILITEM gloriosum. } Thrasone Terentianum, & Pyrgopolinicem Plautinum. OMNIA } quæ ad officiorum rationem pertinent. VOLVMVS quidem certe: } arrogantium vitat, in quam incidit, qui profitetur, vt ait Isocrates, τῷ μηδὲν παρελθεῖν τῶν ἐνόντων εἰς περγάμον, nihil omittere eorum, quæ rebus insunt. CN. OCTAVIO, } consulētū cū Torquato, anno ab v. c. DXXCIX. IN Palatio, } quo loco nunc sunt horti Farnesiani, Palatini quoque dicti: Dictum autem à Palanto, urbe Arcadia, vnde Euander venit. NOVO homini, } nouum dicit, cuius familia fuerat à Numa ciuitate donata:

donata: sed ideo noua, quod ante id tempus nullū magistratum populi suffragio datum gesserat. SCAVRVS } cuius dominus in Palatio quoque fuit. De eius magnificientia vide Pliniū lib. 36. cap. 15. ACCESSIONEM adiunxit edibus. } ædes suas, domum Cn. Octaviū demoliendo, maiores effecit. PRIMVS attulit: } ita emendauimus, ex omnibus antiquis libris, antea, Intulit. REPVLSAM } in petitione consulatus. atque etiam de ambitu dominatus est. vide epist. ad Q. fraterem. IGNOMINIAM, } nam, L. Sulla in Sicilia quæstor, repetundarum dominatus. CALAMITATEM, } quia suapte sponte exsulauit. DIGNITAS domo, } dignitas, id est, ornamentum. EX domo dignitas tota: } id est, non in his existimatio. HABENDA ratio non sui folium, sed etiam aliorum, } Euripides:

Ως δίκαιος τοὺς πέλας πέφυκ' αὐτῷ.

Idest: Vir bonus aliis est natus.

-- domus.

ANTIQUA, quād domino dominariū disparti. } ex vetere poëta. Est autem, O domus, senarij finis, integer vero senarius, id, quod sequitur. Quod autem verborum ordinē mutauimus, fecimus id auctoritate adducti veteris libri Cardinalis optimi, liberaliumq. omnium disciplinarū intelligentia ornatisfissim, litterarumq. Mäceratis. GVLIELMI SIRLETTI: & alterius Iulij Galli, Romani, ipsa præfertim cōprobatae ratione metri. In decē meis autē, Quā legitur, Heu: in duobus est, Et heu, quā &c. in tertij, Et quā &c. Dominate, in quinque, & tertij. In tribus, & tertij, Quā disparti domino, tenebantur. IN multis licet dicere: } in multis Caſtarinis, Pœpeianas ædes, nullo alio, quā victoriæ, iure, habitabitibus, occupauit autē ipsius Pompeij Magni domum M. Antonius, qui postea et vir fuit. Phil. 2. Eas voces, In multis, alij fine cauila delēt. sunt quidem in omnibus meis libris, & tertij, in tribus, In multis. MVLTVM mali etiam in exemplo est. } hinc distichon illud Cræcum:

Σύμβατα πολλὰ τρέφεν, καὶ διηγετα πολλὰ ἀργεῖσεν,  
Απρεπεῖς τε πενήντιν ἐποιησάται.

Idest: Multas ædificare domos, & pascere multos.

Est ad pauperiem semita, certa quidem.

Ædificiorum frugilitatem in Milciade, & Aristide laudat Demoſt. Olinth. i. i. L. L. v. l. l. summi viri virtutem } vide Plutarchum, in eius vita, Cic. in Acad. & pro lege Manilia, Velleium Paternulum lib. 2. epit. Liu. xciv. & xcv. Florum lib. 3. cap. 5. Appianum in Mithridatico, Orofusium lib. 6. Q. v. a. m. multi } Tertij liber, Ad quām multi. Quod si recipiatur, mutandum erit in At. V. I. L. A. R. V. M. magnificientiam } de Luculli hortis sumptuissimis Plutarchus. Eius in ædificando profusionem vide apud Var. de re rust. i. i. I. M. I. T. A. T. I. sunt: } Sunt, abest à duobus veteribus libris, & Tertij.

## C I C E R O.

**I**N omni autem actione suscipienda, tria sunt tenenda: primum, ut appetitus rationi pareat, quo nihil est ad officia conseruanda accommodatus: deinde, ut animaduertatur, quanta illa res sit, quam efficere velimus: neu minor, néve maior cura, & opera suscipiantur, quām causa postulet: tertium est, ut caueamus, ut ea, quae pertinent ad liberalem speciem, & dignitatem, moderata sint. modus autem est optimus, decus ipsum tenere, de quo ante diximus, nec progredi longius. horum autem trium præstantissimum est, appetitum obtēperare rationi. Deinceps de ordine rerum, & temporum opportunitate dicendum est. hac autem scientia continetur ea, quām Craci vīta ēz̄av nominant, non hanc, quām interpretamur modestiam: quo in verbo modus inest, sed illa est vīta ēz̄ia, in qua intellegitur ordinis conseruatio. itaque, ut eandem nos modestiam appellemus, sic definitur à Stoicis, ut modestia sit scientia earum rerum, quae agentur, aut dicentur, loco suo collocandarum. itaque videtur eadem vis ordinis, & collocationis fore. nam & ordinem sic definiunt, compositionem rerum aptis, & accommodatis locis:

locis: locum autem actionis, opportunitatem temporis esse dicunt. tempus autem actionis opportunum, grēcē ἡνακεία, Latine appellatur occasio. sic fit, ut modestia hoc, quam interpretamur ita, ut dixi, scientia sit oportunitatis idoneorum ad agendum temporum. sed potest eadem esse prudentia definitio: de qua principio diximus: hoc autem loco de moderatione, & temperantia, & harum similibus virtutibus querimus. itaque, quae erant prudentia propria, suo loco dubia sunt: quae autem harum virtutum, de quibus iamdudum loquimur, quae pertinent ad iucundiam, & ad eorum approbationem, quibuscum vivimus, nunc dicenda sunt.

## E X P L A N A T I O.

**P**RÆSTANTISSIMVM } nam est veluti causa efficiens eorum, que sequuntur. Vt eadem nos modestiam appellemus, } Scientiae definitio. P O T E S T eadem esse prudentie definitio. } non prouersus, prudentiae enim definitio latius, quam ad locum, tempus se extendit, ut quae in vniuersum de rebus bonis, & malis iudicat.

## C I C E R O.

**T**alis est igitur ordo actionum adhibentibus, ut, quemadmodum in oratione constanti, sic in vita omnia sint apta, & inter se conuenientia. turpe est enim, valdeque vitiosum, in re severa conuinio dignum, aut delicatum aliquem inferre sermonem. Bene Pericles, cum haberet collegam in prætura Sophoclem: hic, de

communi officio cōuenissent: & casu formosus puer preteriret, dixissetque Sophocles, o puerum pulchrum, Pericle, prætorem, Sophocle, decet, non solum manus, sed etiam oculos abstinentes habere. atque hoc idem Sophocles, si in athletarum approbatione dixisset, iusta reprehensione caruisset. tanta vis est & loci, & temporis. ut, si quis, cum caussam sit atturus, in itinere, aut in ambulatione secum ipse meditetur, aut si quid aliud attentius cogitet, non reprehendatur: at, hoc idem si in coniunctio faciat, inhumanus videatur inscitia temporis. Sed ea, qua multum ab humanitate discrepant, ut si quis in foro cantet, aut si qua est alia magna perueritas, facile apparet, nec magnopere admonitionem, & precepta desiderant: qua autem parua videntur esse delicta, neque à multis intelligi possunt, ab his est diligentius declinandum. ut in fidibus, aut in tibiis, quamvis paullum discrepent, tamen id à scientie animaduerti solet. sic videndum est in vita, ne forte quid discrepet: vel multo etiam magis, quo maior, & melior actionum, quam sonorum, concentus est. itaque, ut in fidibus musicorum aures vel minima sentiunt: sic nos, si acres, ac diligentes iudices esse volvamus, animaduersoresque vitiorum, magna intelligimus sepe ex pariis. ex oculorum obtutu, superciliorum aut remissione, aut contractione, ex mæstitia, ex hilaritate, ex risu, ex locutione, ex reticentia, ex contentione vocis, ex summissione, ex ceteris similibus facile indicabimus, quid ap̄e eorum fiat, quid ab officio, naturā, discrepet. quo in genere non est incommodum, quale quodque eorum sit, ex aliis iudicare: ut, si quid dedebeat in illis, vitemus & ipsi. fit enim nescio quo modo, ut magis in aliis cernamus, quam

in

in nobis metip̄sis, si quid delinquitur. itaque facilimē corriguntur illi in discendo, quorum via imitantur emendandi caussa magistri. Nec verò alienum est, ad eligenda, quæ dubitationem afferunt, adhibere doctos homines, vel etiam usū peritos, & quid his de uno quoque genere officij placeat, exquirere. maior enim pars eo fere deferris solet, quod à natura ipsa deducitur. in quibus videndum est, non modò, quid quisque loquatur, sed etiam, quid quisque sentiat, atque etiam, qua de causa quisque sentiat. ut enim pictores, & ijs, qui signa fabricantur, & verò etiā poeta sūmū quisque opus à vulgo considerari vult; ut, si quid reprehensum sit à pluribus, id corrigatur; bīq. & secum, & cum aliis, quid in eo peccatum sit, exquirunt: sic aliorum iudicio permulta nobis & facienda, & non facienda, & mutanda, & corrigenda sunt. Quae verò more aguntur, & institutis ciuilibus, de his nihil est principiendum. illa enim ipsa precepta sunt: nec quemquā hoc errore duci oportet, ut, si quid Socrates, aut Aristippus contra morem, consuetudinemq. ciuilem fecerint, locutive sint, idem sibi arbitrentur licere. magnis illi, & diuinis bonis hanc licentiam assequebantur. Cynicorum verò ratio tota est ei cienda: est enim inimica verecundie, sine qua nihil rectum esse potest, nihil honestum. Eos autem, quorum vita perspecta in rebus honestis, atque magnis est, bene de rep̄sentientes, ac bene meritos, aut merentes, aliquo honore, aut imperio affectos, obseruare, & colere debemus, tribuere etiam multū senectuti, cedere iis, qui magistratum habebunt, habere delectum ciuis, & peregrini: in ipso quoque peregrino, priuatimne, an publicè venerit: ad summam (ne agam de singulis) communem totius

*generis hominum conciliationem, & consociationem  
colere, tueri, sernare debemus.*

## EXPLANATIO.

**A**PTA,} connexa, cohærentia, colligata. Virgilius:  
--vbi maximus Atlas

Axem humeris torquet, stellis ardentibus aptum.

**T**VRPE est enim, } contra, ait Cicero, 2. de Orat. peccare,  
si quis tragœdias in nudis agat. **P**ERICLES, } Anaxagoræ physici auditor. Hoc autem dictum non Pericli, sed Isocrati, Plutararchus tribuit in ipsius Isocratis vita. Vide & Plut. in Pericle, & Valer. lib. iv. ca. de Cōtinentia. **O** puerum pulchrum, } **A**gellius lib. xv. cap. 12. sribit, Gracchum, ex Sardinia reuersum, cum pudicitiam suam censoribus commendaret, pueros eximia facie ante se stetisse negasse. **S**I in athletarum approbatione diaisset, } nudis enim corporibus athlete certabant, vt, si viderentur robusti, à prætoribus probarentur. Antiqui libri sex, & tertij, Probatione. **I**VSTA reprehensione caruisset, } nam oratio actioni fuissest consentanea. **T**ANTA VUS est & loci, & temporis, } vt nec omnia, nec passim, nec ab omnibus. **I**N conuiio } unde lex illa, H̄ ποιησι, η εποιησι, Aut bibe, aut abi. **S**I quis in foro cantet, } quo modo Lycurgus furorem simulauit. **V**T in fidibus } aptissima comparatio. nam vita hominum d'p'ovia est. **O**CULORVM obtutu, } nam oculi sunt in amore duces. & vultus tacitus est animi sermo. vide Cic. in Pisonem, & Agellium lib. xiii. cap. 24. **S**VPER CILIORVM au. &c: aut &c, } vide Plin. lib. xi. ca. 36. **Q**VID ap' eorū fuit, } Martialis: Cirne ruber: niger ore: brevis pede: lumine lèsus:

Rem facis egregiam, Zoile, si bonus es.

**E**x alijs indicare, } Terent Heaut. act. i. sc. 2.

Scitum est, periculum ex alijs facere, tibi quod ex vsu fiet.

Plautus: Feliciter is sapit, qui periculo alieno sapit.

Horatius: Felix, quem faciunt aliena pericula cautum.

**T**ibullus lib. iii. --felix, quicumque, dolore

Alterius, disces posse carere tuo.

**M**AGIS in alijs cernamus, quam in nobis in ipisis, si quid delinquitur. } Horatius:

Cum

Cum tua peruideas oculis mala lippus inunctis,  
Cur in amicorum vitijs tam cernis acutum,  
Quam aut aquila, aut serpens Epidaurius?

**V**TE enim pictores, } maximè Apelles. vide Plinii lib. xxxv. cap. 10. Hinc illud, Ne tutor ultra crepidam. **S**IGNA fabricantur, } ita est in veteribus septem, & tertij. **E**T vero etiam poeta } omnes veteres, Et veri etiam poetæ. Tertij exce-pto. **A** pluribus, } Euripides:

Νοσηταὶ χειρεῖς αἰδενὴ μάχης οὐτας τῆς ἀντίς καὶ μάχης ὥρα.

**I**deft: Ut vnius manus infirma pugna est, sic unus vir non omnia videt.

**S**IC a clitorum iudicio } modo ijs probari velimus; &, quid alij de nobis existimant, non contemnamus. **S**OCRATES, aut Arisippus } hoc est, incorruptissimus quisque. **M**AGNI, & diuinis bonis } virtutibus excellentibus, eruditione eximia. **C**YNICORVM } quorum princeps Diogenes. **T**RIBVRE etiam multum fenecluti; } propter usum rerum, ætate partum: & quod iunioribus parentum loco sint. **C**E-DERE ijs, qui magistratum habebunt; } & propter potestatem, & propter publicam auctoritatem, qua est inferior priuata cuiusque dignitas. **H**ABERE delectum ciuis, & peregrini; } nam erga ciues officios esse debemus, peregrini autem sunt honore afficiendi. **P**RVATIM ne, an publice venerit; } nam, si legatus, maior ei tribuendus est honor. legati enim iure gentium sacrosancti. de quibus supra à nobis est dictum.

## CICE RO.

**I**AM, de artificijs, & quæstibus, qui liberales habendi, qui sordidi sint, hec fere accepimus. Primum improbantur ij quæstus, qui in odio hominum incur-rrunt, ut portitorum, & feneratorum. illiberales autem, & sordidi quæstus mercenariorum omnium, quorum opere, non quorum artes, emuntur. est enim in illis ipsa merces auctoramentum seruitutis. Sordidi etiam putandi, qui mercatur à mercatoribus, quod statim vendant. nihil enim proficiunt, nisi admodum metiantur.

Nec verò quidquam est turpius vanitate: opificesque omnes in sordida arte versantur. nec verò quidquam ingenuum potest habere officina: minimèq. artes probandæ, que ministra sunt voluptatum: cetarij, lanij, coqui, fartoress, pescatores, ut ait T erentius: adde his, si placet, vnguentarios, saltatores, totumq. ludum lararium. Quibus autem artibus aut prudentia maior inest, aut non mediocris utilitas queritur, ut medicina, architectura, ut doctrina rerum honestarum: he sunt ijs, quorum ordini conueniunt, honeste. Mercatura autem, si tenuis est, sordida putanda est: sin magna, & copiosa, multa undique apportans, multisq. sine vanitate impariens, non est admodum vituperanda: atque etiam, si satiata questu, vel contenta potius, ut sepe ex alto in portum, sic ex ipso portu se in agros, possessioneq. contulerit, videtur iure optimo posse laudari. Omnia autem rerum, ex quibus aliquid exquiritur, nihil est agricultura melius, nihil uberioris, nihil dulcior, nihil homine libero dignius. de qua quoniam in Catone Maiore satis multa dicimus, illic assumes, que ad hunc locum pertinebunt. Sed ab iis partibus, que sunt honestatis, quemadmodum officia ducentur, satis expositum videtur. Eorum autem ipsorum, que honestas sunt, potest incidere sepe contentio, & comparatio, de duobus honestis utrum honestius: qui locus à Panetio est prætermisssus, nam, cum omnis honestas manet à partibus quatuor, quarum una sit cognitionis, altera communitatis, tertia magnanimitatis, quarta moderationis: he in diligendo officio sepe inter se comparentur, necesse est. placet igitur, aptiora esse natura ea officia, que ex communitate, quam ea, que ex cognitione, ducantur. idque

hoc

hoc argumento confirmari potest, quod, si contigerit ea vita sapienti, ut omnium rerum affluentibus copiis dicitur, quamvis omnia, que cognitione digna sunt, summo otio secum ipse consideret, & contempletur, tamen, si solitudo tanta sit, ut hominem videre non possit, excedat è vita. Princpsq. omnium virtutum est illa sapientia, quam sophiaz Greci vocant, prudentiam enim, quam Greci φρόνον dicunt, alias quandam intelligimus, que est rerum expetendarum, fugiendarumque scientia: illa autem sapientia, quam principem dixi, rerum est diuinarum, atque humana- rum scientia: in qua continetur deorum, & hominum communitas, & societas ipsorum inter ipsos, ea si maxima est, ut certè, necesse est, quod à communitate ducatur officium, id esse maximum. etenim cognitione, contemplationeque nature manca quodam modo, atque inchoata sit, si nulla actio rerum consequatur. ea verò actio in hominum cōmodis tuendis maximè cernitur. pertinet igitur ad societatem generis humani, ergo hac cognitioni anteponenda est. atque id optimus quisque re ipsa ostendit, & indicat. quis est enim tam cupidus in perspicienda, cognoscendaque rerum natura, ut, si ei, tractanti, contemplantique res cognitione dignissimas, subito sit allaru periculum, discrimenque patriæ, cui subvenire, opitularique possit, non illa omnia relinquit, atque abiicit, etiam si dinumerare se stellas, aut metiri mundi magnitudinem posse arbitretur? atque hoc idem in parentis, in amicis, aut periculo fecerit. Quibus rebus intelligitur, studiis, officiisque scientiae præponenda esse officia iustitia, que pertinet ad hominum utilitatem: qua nihil homini debet esse antiquius.

## EXPLANATIO.

**L**IBERALES } libero homine non indigni. SORDI-  
LIDI } seruiles. IN odia hominum incurvantur; } Aristoteles r̄tu  
dignam odio dixit, lib. i. Pol. cap. 7. Eὐλογάτα μι-  
στήται οὐδελοστηκή, &c. PORTATORVM; } Charontem Porta-  
titorem Tibullus appellat:

Tendimus hoc omnes: omnes expectat avarus  
Portitor, & Stygiæ nauita puppis aquæ.

ET fenerorū; } sic quinque veteres libri. Tres, Aut. Quin-  
que, & Tertij; Vt. Vnus non habet. SORDIDI questus merce-  
nariorum } Ar. lib. Pol. i. cap. 7. Τείτως μαθηπία, &c. VTR-  
PIVS vanitate: } mendacio Homerus: Καὶ τὸν ἀνεμόλατο βεβίζειν.  
Turpius vanitate: opificisq. omnes antiquus liber, Turpius vanitate  
opificum, qui omnes. NEC vero } Nec enim, octo libri, &  
Tertij. QVIDQVAM ingenuum } vnuis, Ingenui. OFFI-  
CINA: } vnuis, Opificina: quo verbo vñus est & Plautus Mil.  
glorioso: Si in ea opificina nesciam aut mala esse, aut fraudu-  
lenta. CETARI, lanij, coqui, fartores, p̄fscatores, } In Terentio  
ita legitur:

Concurrunt lati m̄ obuiam cupedinarij omnes,  
Cetarij, lanij, coqui, fartores, p̄fscatores.

Cetarij: Cetarij sunt, ait Donatus, qui cete, idest magnos pisces  
vendant, & bolonus exercent. Nonius vero sic: Cetarij, genus  
est p̄fscatorum, quod maiores pisces capit: dictū ab eo, quod  
Cete in mari majora sunt p̄fscium genera, quod Virgilus,  
Immania cete. Varro Γαλ. οιναί: Nō animaduertis cetarios,  
cūm videre volunt in mari thunno, adscendere in malum  
altè, vt penitus per aquam perspiciant pisces. Lanij: Donato,  
qui laniant pecora: vnde & Lanistæ dicti, qui laniandis præ-  
funt gladiatoriibus. Sic & Macellum à mactandis pecoribus  
dictum. Ex quo Seneca lib. x. epist. Lignum, quod ad emun-  
danda obsena, adhærente spongia, positum est, totum in gu-  
lam farsit, &, p̄fclusis faucibus, spiritum emisit. Fextus: Far-  
tores, nomenclatores, qui clam velut infarcirent nomina fa-  
lutatorum in aurem candidati. Fartores: Donato, qui insitia, &  
farcimina faciunt. P̄fscatores: eidem, qui recentem p̄fsem pre-  
bent.

Cetarij, lanij, coqui, fartores, p̄fscatores: Plautum videtur imitatus  
Terentius, eius hæc sunt, Trinummo:

Le quid factum est eo?

St. Co-

St. Comesum, expotum, exfatum, elotum in balneis,  
Piscator, p̄fstor abstulit: lanij, coqui,  
Holitores, myropolæ, aucupes, confit cito,  
Quasi tu obijcas formicis papauerem.

VT ait Terentius: } Eunicho. aet. 2. sc. 2. VNGVENTA-  
RIOS, } hos vrbe expulsos à Lacedæmonijs, scribit Seneca nat.  
quæst. lib. iv. Nominantur & Vnguentarij in veteribus lapi-  
dibus.

Romæ, apud Atilium Delphinium

FAVSTVS. PO . . . . .

INSTITOR. VNGVEN

Venusij, Apuliae opidi in Templo Annuntiatæ.

CL . . . . . PHI  
LARGYRO . VN  
G·E·N·T·A·R · IO  
I S Q. F A M I L I A M  
SVAM. M A N V M I S I T  
P E C V N I A M Q.  
L E G A V I T

SALTATORES, } scenicos. TOTVMQ. ludum talariū;. }  
de talorum iactu quædam dixit Pater Fam. lib. i. ep. 7. Sed  
plura Thomas Leonicus in dialogo, quem hac de re scripsit.  
DOCTRINA rerum honestarum; } idest, munus docendi ho-  
nestas artes. Ita in lib. de Sen. SATIATA questu, } nam cupid-  
itatis sitis inexpribilis. VEL contenta potius, } correctio op-  
portuna. Hinc Lucanus:

Semper inops, qui cumque cupit.

NIHIL est agricultura &c. } Hinc Horatius:

Beatus ille, qui, procul negotijs,

Vt præsa gens mortalium,

Paterna rura bobus exercet suis,

Solutus omni fenore.

Et Virgilis:

O fortunatos nimium, sua si bona norint,

Agricolas.

N I H I L homine libero dignius.} Tertij liber, Nihil homine, nihil libero dignus. V N A } prudentia. AL T E R A } iustitia. T E R T I A } fortitudo. Q U A R T A } temperantia. P R I N C E P S Q. omnium virtutum est illa sapientia, quam sophia Greci vocant.} Plato: H o p h i a πάντων ἀρετῆς τὸ μέγιστον μέρος. Sapientia omnis virtutis maxima pars. P R U D E N T I A M } In Rhetoricis: Prudentia est rerum bonarum, & malorum, & utrarumque scientia. Et apud Platonem inducitur ηγεμονία τῆς ἀρετῆς. R E R V M est diuinarum, atque humanarum scientiarum.} Tufc. 4. E T E N I M cognitionis,} Plato Prudentiam iustitiae expertem Calliditatem esse dicit. Vide & Senecam lib. 2. de beata vita. S I nulla actio rerum consequatur,} virtus enim in actione consistit. D I N V M E R A R E skillas,} vt Eudoxus Cnidius. M E T I R I mundi magnitudinem,} vt Archimedes; qui, in communione periculo, suis pulueribus fuit intentus.

## C I C E R O.

A T que illi, quorum studia, vitaq; omnis in rerum cognitione versata est, tamen ab augendis hominum utilitatibus, & commodis non recesserunt. nam & erudierunt multos, quomeliores cives, utilior esque rebus & suis & publicis essent: vt Thebanum Epaniundam I yssis Pythagoreus, Syracusium Dionem Plato, multiq; multos, nosq; ipsi, quidquid ad rem attulimus, ( si modo aliquid attulimus) a doctoribus, atque doctrina instructi ad eam, & ornati accessimus. neque solum viui, atque presentes studiosos discendi erudiunt, atque docent, sed hoc idem etiam post mortem monumentis litterarum aequuntur. nec enim locus ullus pratermissus est ab iis, qui ad leges, qui ad mores, qui ad disciplinam reip. pertineret, vt otium suum ad nostrum negotium contulisse videantur. ita illi ipsi, doctrina studiis, & sapientia dediti, ad hominum utilitatem suam sapientiam, prudentiam, intelligentiamq;

eligentiamque potissimum conferunt. Ob eam etiam causam, eloqui copiosè, modo prudenter, melius est, quam vel accusissime sine eloquentia cogitare: quod cogitatio in se ipa vertitur: eloquentia vero complebitur eos, quibuscum communitate iuncti sumus: atque, ut apium examina non, singendorum fauorum causa, congregantur, sed, cum congregabilia natura sint, fungunt fauos: sic homines, ac multo etiam magis, natura congregati, adhibent agendi, cogitandi q. sollertia. itaque, nisi ea virtus, qua constat ex hominibus tuendis, id est ex societate generis humani, attingat rerum cognitionem: soliuaga cognitionis, & ieiuna videatur: itemq; magnitudo animi, remota communitate, coniunctioneq; humana, feritas sit quedam, & immanitas. ita fit, ut vincat cognitionis studium confociatio hominum atque communitas. Nec verum est, quod dicitur à quibusdam, propter necessitatem vita, quod ea, qua natura desideraret, consequi sine aliis atque efficere non possemus, iocire istam esse cum hominibus communitatem, & societatem: quod, si omnia nobis, qua ad victum, cultumq; pertinent, quasi virgula diuina, ut aiunt, suppeditarentur, tum optimo quisque ingenio, negotiis omnibus omisis, totum se in cognitione, & scientia collocaret. non est ita. nam & solitudinem fugeret, & socium studi quereret, tum docere tum discere vellit, tum audire, tum dicere. Ergo, omne officium quod ad coniunctionem hominum, & ad societatem tuendam valet, anteponendum est illi officio, quod cognitione, & scientia continetur.

## EXPLANATIO.

**T**HEBANVM Epinundam } Plutarchus in Pelopida  
**L**YSIS Pythagoreus, } Lysim Pythagoræ ipsius disci-  
 pulum fuisse ostendunt Cicero lib. III. de Orat. Aemilius Pro-  
 bus, aut quisquis est in Epaminunda, Pausanias, Plut. de musi-  
 ca, Dio Chrysostomus in oratione inscripta, Recusatio magis-  
 tratus, Laertius D. Hieronymus apologia 2. in Rufinum.  
**S Y R A C U S I V M Dionem** } Plut. in Dionæ, Laertius in Platone.  
**M U L T I Q. multos:** } vt Periclem Anaxagoras, Alcibiadem So-  
 crates, Thimotheum, & alios principes viros Isocrates, Afri-  
 canum Panætius, Augustum Athenodorus. **A B ijs,** } à Pla-  
 tone. huc enim, non Lysim, significat. **E L O Q V I copiose,** } eloquenter copiosa vel egregijs cogitationibus præstat. **M o-**  
**d o prudenter,** } vide præfationem Tusc. I. **C O G I T A T I O**  
*in se ipsa veritur:* } de Finibus III. Sola sapientia in se tota con-  
 uerfa est. **A P V M examina** } Apium, est in vno meo, & Tertiij libro. Sic, Ciuitatum, in vetere inscriptione, Firmi, in Piceno, quam in Orthographia mea posui ad, Accius, & apud Annæum Corætum ad Italicum de Virgilio lib. x. vt est apud Carisium: iamq. exemplo tuo etiam principes ciuitatum, & poëtae incipient similia fingere. Et, Hereditatum, in antiqua inscriptione, Romæ, in ædibus Atilij Delphini, in Orthographia, ad, Britannia, Ceruicum, Radicum, apud Carisium. De apibus Arist. de hist. anim. lib. I. cap. I. & lib. 9. cap. 40. Plin. lib. II. cap. 5. & 6. Virg. lib. IV. Georg. Varro de re rust. lib. III. cap. 16. Columella lib. X. Palladius lib. I. cap. 37. lib. V. c. 8. Didymus apud Constantium Cesarem lib. XV. cap. 3. **A G E N D I, co-**  
**gitandiq. sollertia,** } dubium non est, quin haec tota corrigendi  
 ratio, quæq. in ea collocatur industria, ad sententiam referatur. proptera inspicuntur, examinanturque veteres libri, qui si quando accidit, vt omnes cum sententia pugnant, utri me parti adiungam, non equidem ambigam. illa enim dominatur, hi quodammodo seruunt. Comparat Cicero cum apibus homines. ipsa comparatio, nisi fallor, legendum ostendit, Agendi, cogitandique, non, Agendi, congregandique. Apes, inquiret, non ideo congregantur, vt fingant fauos, sed, cum illis natura dederit, vt sponte congregarentur, iam congregatae fauos fingunt. eadem natura tribuit hominibus, vt, nulla adhibita sollertia, congregarentur; qui deinde, iam congregati, eam sollertia, quæ vñi antea non sunt, adhibent ad agendum, & cogitandum. Quæ duas res ad vitam rectè instituen-

dam necessariae sunt. Et hoc ipsum sp̄etat ad illud, quod su-  
 pradicatum est, de eloquentia, & cogitatione. Ut enim cogita-  
 tio sine actione inanis est, sic actio, quæ cogitatione careat,  
 ad temeritatem plerunque delabitur. Ergo homines, natura  
 congregati, & agunt & cogitant; vt apes, natura congregatae,  
 in fingendis fauis operam, indultriamque suam ponunt. Quo  
 spectat illud supra: Virtutis laus omnis in actione consistit:  
 à qua tamen sepe fit intermissione, multique dantur ad studia  
 redditus tum agitatio mentis, quæ nunquam acquiescit, potest  
 nos in studijs cogitationis, & sine opera nostra, continere. Fru-  
 ctus igitur congregatarum apum sunt faui; hominum con-  
 gregatorum est actio, & cogitatio. Nam, si Congregatio-  
 nem, putemus esse congregationis fructum, inanis erit ferme,  
 & absurdus. aliud enim certè, praeter seipsum, congregatio  
 specat. Locus ex Arist. sumptus videtur. Nam Polit. I. διόν δε,  
 inquit, πολιτειῶν ἀνθράκων ζέσι πάντοις μετάποντες καὶ πάντοις ἀγελαῖοι  
 ζέσιν μελεῖν δύλοι. οὐδὲν γάρ, οὐ φυλη, μετάποντες οὐδέποτε παιδεῖ. **A T T I N-**  
**G A T r e t u m cognitionem,** } idest, nisi studium societatis cum  
 rerum cognitione coniungatur. **R E M O T A c o m m u n i t a t e,** }  
 duo mei, & Tertiij, Comitate, nouem, Coitate. **Q V A S I vir-**  
**guli diuina,** } Satyram hanc inscriptione Varro composit. Virguli diuina: citra nostram operam. **E R G O, &c.** } duobus propositis honestis, concludit hic, utrum honestius. **I L-**  
**L V D f o r s i s t u m &c.** } Platonis remp. notat, quæ laxior est multo,  
 quam deceat. **S V N T enim quædan ita fiedi, partim ita flagitio;** } Partim modò pro aduerbio, modò pro nomine, idest Alia vel Alij, nominandi, aut accusandi casu, ex vi, naturaque propin-  
 qui verbi, usurpari solere, vel pueri sciunt. Nec vero, alterum  
 interdum omittit, ignorare multos arbitror. Si omittatur se-  
 cundo loco, damni sententia nihil facit: pender enim à pri-  
 mo: aut habet aliquod nomen: vt Sallust. Iugurtha: Vrbes par-  
 tim vi, alias voluntate, imperio suo adiungit. Et: Centuriones,  
 ducesq. turmarum partim, vti transfugerent, corrumpere, alij,  
 signo dato, locum vti deserenter. Et: Partim consci fibi, alij  
 ex partium inuidia pericula metuentes. Et: Ille probare par-  
 tim, alia abnuere. Et: Partim vi, alia metu, aut præmia ostendendo,  
 auertere ab hostibus. Si omittitur primo necesse est,  
 vt eius loco nomen aliquod sententiæ seruat, vt, Alia, Qua-  
 dam, denique quod libet nomen. Vt liber de Leg. Quo-  
 rum scelere religiones tum prostratae, afflictæque sunt,

partim ex illis distracti, ac dissipati jacent. Et Sallustius, in oratione C. Cottæ: Quorum alia toleravi, partim repuli, deorum auxilijs, & virtute mea. Et hoc loco. Hæc iam scripsit, admonitus à viri docti annotatione. Sed, inspectis libris veteribus, sententiam mutare sum coactus, nam duodecim ex eis, & Tertiij habent, Sunt enim quædam partim ita fœda, partim ita flag. Vnus, Sunt enim quedam partim ita fœda, quædam partim ita flag. Vnus, Sunt enim partim ita fœda, partim flag. Fœda: crudelia. Lib. II. Victoriam fœdiorem dixit. Q u i s q u a m } septem libri. Quis. Vnus, Quis sapiens. Duo, Quisque. Duo, Quisquam. Vnus, & Tertiij non habet. N e c r e s p . q u i d e m } Tertiij liber, Ne resp. quidem. Vnus, Nec res quidem publica. P r o f e } Vnus, Propter se. S E D h e c c o m m o d i u s s e r e s h a b e t, } Hoc, sex libri. Sed & hæc, quatuor. N O N p o t e s t a c c i d e r e t e m p u s, } alij delent, Tempus: nec tamen sententia lucri quidquam facit. ego conseruo, nec de sententia quidquam detraho. nitor etiam auctoritatē veterum omnium librorum: quorum auctoritatē tam parui pendi à doctis viris miror: nitor consuetudine Latinī sermonis, est enim illud simile, vt omittantur alia multa, ad Appium: Nollem accidisset tempus, in quo perspicere posses, quanti te, quanti Cn. Pompeium, quanti Brutūm facerem. S A P I E N - T E M. } quasi dicat, in puerilēm atatem, aut muliebrem sexum fortassis iuriarē istæ caderent. Q u o d c u i q u e s i t p r e - p o n d e r u m, } Quid, in vno, & Tertiij. G r a d u s o f f i c i o r u m, } de gradibus officiorum Agellius lib. V. cap. 13. P R I M A, d i s i m - m o r t a b i l i b u s, s e c u n d a, p a t r i a, t e r t i a, p a r e n t i b u s; } Cicero lib. I. de rep. apud Nonium, Antiquus. Sed, quoniā, plurima beneficia continent patria, & est antiquior parens, quam si quis, vt aiunt, creauerit: maior ei profecto, quam parenti, debetur gratia. De Fin. Decet cariorem esse patriam nobis, quam nosmetipso. Et I. in Catil. Patria mihi vita mea multo est carior. Sallustius Iugurtha: Nam vi quidem regere patriam, aut parentes, quaniquam & possis, & delicta corrigas, tamen importunum est. Cui simile illud, apud Cic. Fam lib. I. ep. 9. Id iubet idem ille Plato, quem ego auctorem vehementer sequor. tantum contendere in rep. quantum probare tuis ciuibus possis; vim neque parenti, neque patriæ asserre oportere. Platonis autem loci duo sunt alter v. de Legibus: Πατέρεσ δέ οντος μη χαρακτηρίζειν αυτὸν δέ μετέχειν, ή μητέχειν ταῦτα. Alter in Critone:

H o d i e

H o d i e εῖ σφόδρα, ὅπερ λέλιθε στή, ὅπερ μηδέποτε, καὶ πατρός, καὶ τοῦ ἀλλων περιγράψαντων πημάτων εἴσιν πατέρες, καὶ σεμιότεροι, καὶ ἀμείτεροι, καὶ ἐμέρον μετρίον μοτρα καὶ παρά θεύς, καὶ πατέρα αὐτόπτους τοὺς νοῦν ἔχουσι. καὶ σεβεσθεῖν δέ, καὶ μετέλους ὄπεικεν, καὶ παντελεῖν πατέρες καὶ λεπτομονατα, καὶ οὐ πατέρες, καὶ οὐ πατέρειν, οὐ πατέρειν αὐτούς καὶ πατέρειν πατέρειν, οὐτούς δέρναται: εἴναι τετύπεμπτοι, τετελεῖδαι, εἴναι τοις τολμασίοις αὖτις τραχητούς αἵρετοις, οὐ πατέρειν πατέρειν ταντα, καὶ τοῦκινον εὔτοις ἔχουν, καὶ οὐχ ἀπεικονεῖν εὐτῷ αὐτούς πατέρειν, καὶ λεπτότερον τῶν ταξιδίων, αὐτοὺς καὶ εἰ πατέρεις, καὶ τανταχρόν πατέρειν, οὐδὲ λεπτότερον τῶν πόλεων τε, καὶ οὐ πατέρες, οὐ πατέρειν αὐτούς, οὐ τοῦδεργον πατέρεις. Βιαζόμενοι οὐχ ἕστον αὐτούς μητέρες, οὐτε πατέρες, πολυάριθμοι τούτων εἴτε ηπον τῶν πατέρεων. Et in ep. ad Dionis propinquos: Πατέρες δέ, οὐ μητέρες, αὐτούς τούτους μη μετρίους περισσεύειν, μηδέποτε πατέρευστοι εἴρηναι, εἴναι δέ πατέρα καθετούτα ζώστι βίον ἑωτοῖς αρετούτα, οἷος δέ μη, μητέ απεχθεῖσθε, μηδέν γενετούτα. Βιαζόμενοι πολυτελεῖς μεταβολῆς μη περισφέρεται, οὐταν διευ φυλῶν, καὶ σφραγῖς αὐδρέων, μη διωτὸν οὐ πειθατον τῶν αερίστων.

P R I M A, s e c u n d a, t e r t i a, } o f f i c i a. A Panetio est, ut supra dixi, p r e t e r m i s s u. } nimis tu quoque gloriam amas, Cicero noster: Ite hoc aduersus Panetium iterans.

m 3




**ARGVMENTVM LIBRI SECUNDI.**

R T V M officij primus liber ostendit. sunt enim quattuor virtutes: unde, quidquid honestè agitur, aut cogitur, eminat. Ortu inuenio, distributum est officium in duas partes: quarum altera decus, honestatēq. speciat, altera vita commoda, copias, opes, facultates. Earum partiū queritur in prima, non modo honestum in quo differat à turpi, verū etiam, duobus propositis honestis, utrum honestius: in altera similiter, non modo quid utile, quid invile, sed etiam, dubiis propositis utilibus, utrum utilius. quam quidem duorum honestorum, duorumque utilium comparationem Panetius omisit. De honestatis parte dictum est superiore libro: de vita cōmodis, cōquae, quod utile vocatur, hoc altero libro disputatur. Postremo tertii libri quaestio est, de eligendi iudicio, cū honestum, & utile ita pugnant inter se, ut quasi laboret animus, anicipiti distractus cura cogitandi, de quo Panetius cū se scripturum esse promisit, nihil tamen scriptum reliquit. Sed, utilium duo generacū sint, multitudinis unum, quæ sensu s̄epe mouetur, alterum paucorum, qui cum ratione deliberaunt: secundus liber non, ut multitudine, secerit utile ab honesto, sed, ut pauci, totum in virtute constituit:

virtutis

virtutis autem hoc docet esse proprium, ea sequi, quibus hominum studia hominibus adiungantur. quidquid enim vel in priuatis rebus, vel in rep. experimus, id consequi, si diligamur, facilissimum est. at ipsum, diligi, propterea non contingit omnibus, quia non omnes infi, fidi, liberales, mansueti, faciles existimantur. quibus virtutibus fortitudo, temperantia, earumq. rerū, quibus excellit pauci, si adiungitur præstitia: tu, preter priuata benevolentia, exoritur gloria: qui publicus amor est, cū fide, & honore cūiuntur. Ea nascitur ex multis rebus: in quibus cū nonnullæ sint, pro quibus curas, labores, pericula suscipimus: & in iis cū sit nihil ipsa patria carius, aut amabilis: ideo bellica virtus, quæ publica cōmoda tuerit, & auget, primum aperit aditū ad eam gloriam, quæ non angustis continetur finibus, sed per omnes gentes pro beneficij magnitudine disseminatur. que si occasio non adest: non enim semper bella geruntur: illa quidem numquam decebat, ut cum omnibus modestè, cum parentibus piè, cum nostris ita viuamus, vt eos diligere videamur. Et quoniam virtutem parit imitatio: non minimam laudem afferit adolescentibus consuetudo clarorum virorum: quorum similes fore putantur, si cum iis s̄epe sint, eorumq. sermonibus omissa rerum inanum, turpiumq. cura, precipue gaudet. V alet autem vel maxime ad conciliādos animos comitas, affabilitasq. sermonis: sed nihil admirabilis eloqua, presertim si sit in oratione mista modestie grauitas. Atque hæc adolescentibus, illa precipiuntur viris, vt beneficentia, & liberalitate delectu personarū habito, exerceat, vel pecunia, vel, si res nō suppetat, opera, & industria. quæ ratio laudabilius est, quod enim sumitur ex arca, cum eo, quod accipitur à virtute, conferendū non est. Sed, quod pecunia

fit, in eo modum, qui referatur ad facultates, adhiberi oportet: ne, nimio largitendi studio, fons liberalitatis exhauriatur; &, quæ virtus est, din virtus esse non posse. Quo ex genere iargitio quedam, quam parit ambitio, pro ratione temporum non reprehenditur: cùm in populum ideo munera. conferuntur, ut ab eo magistratus impetrantur. illa verò melior existimat impensa, quæ ad usum reip. pertinet, ut in muris, naualibus, portubus, aqueductibus. Maximè verò laudatur hospitalitas: est enim decori, & ornamento non ijs modo, quorum dominis hospitibus patet, verum etiam reip. Iam illud valde caendum, ne quid in beneficijs dandis contra aequitatem regnq. pub. contendatur: neve, dum alios iuuare volumus, offendamus, aut eos, quos non debemus, aut eos, quos non expedit. nam & laudis fundamentum iustitia est: & in alijs decet consulere, ne nos ipsos negligamus. Et, quoniam patriæ potissimum nascimur: copia queratur earum rerum, quas illa desiderat: idq. dum fit, opera detur, ut omnis pellatur avaricie suspicio, & priuata laus cum reip. commodo coniungatur. Extrema est in ijs, quæ ad utilitatem perirent, valetudinis, & pecunia curatio. quorum illa sustentatur primum notitia sui corporis: deinde obseruatione carum rerum, quæ aut profint, aut obsint: tertio loco, continentia in vietū omni, atque cultu: quarto, pratermittendis voluptatibus: postremo, scientia, consilioq. medicorum. Pecunia verò queri debet iis rebus, unde abest turpitudo, conseruari diligētia, & parcimonia. Atque hac de utilitatib. quæ si concurrat, ut vel externa cōmoda cum corporis, vel corporis cum externis, vel ipsa inter se corporis, aut externa cum externis comparentur: non dubium est,

quin

quin maior utilitas minori sit anteponenda, cum eo tamen, ut ab honesto numquam declinetur. quæ ratio senem Catonem adduxit, ut feneracionem, licet quaestuosisimam, damnaret. Haec sunt quasi vita quedam, quibus ad id, quod ita utile est, ut honestum idem sit, peruenire licet. nam, qui ab honesto utile secesserunt, primum res à natura copulatas opinionis amore diuerlunt: deinde, contrà quam opinantur, nec ipsi sibi consulunt, nec bene de humano genere merentur.





S E C V N D V S

# C I C E R O N I S O F F I C I O R V M L I B E R

*Ad Christianæ vitæ normam  
examinatus.*

**H**ONESTAS, de qua libro primo disputatum est, quem fructū parit? beatam vitam, idest, eam, quæ casibus non subiacet humanis, nec vlla terminatur die, sed æterna cæli præmia consequitur: cäque dum spectat hominum iudicia, mercédemque contemnit: nec tamen ea, quam sequuntur homines, quam ipsa non desiderat, gloria, & laude caret. ea seruit bonorum commodis, miseretur egétiūm, in exercenda caritate testem non querit: tribuere se quæ tribuat aliis, non sua putat, sed quæ acceperit à Deo.

Honestas in quo sita? in contemplando, & agendo, idest in scientia, & iustitia. scire oportet, quid agas, & agere, quod scias. cuius enim stultiæ est, id agere, quod nescias? cuius desidiae, id scire, quod non agas? vitium in vtroque, sed eo maius in posteriore. quod inscientiæ culpa excusatione aliqua non caret: scientia si peccat, idest si à iustitia disiungitur, quó se tueatur, non habet.

bet. O præclaram, salutarēmque vocem summi Creatoris nostri, sapientissimi magistri. quid ait de scientia? Hæc est vita æterna, vt cognoscant te solum verum Deum, & quem misisti, Iesum Christum. De iustitia verò: Omnis, qui reliquerit domum, vel fratres, aut sorores, aut patrem, aut matrem, aut vxorē, aut filios, aut agros propter nomen meum, centuplum accipiet, & vitam æternam possidebit. Dicit aliquis: Hæc quoque Stoici viderunt: nec Peripatetici prorsus ignorarunt. Cæca prorsus videri philosophia potest, quæ viderit in umbra imaginem aliquam honestatis. at prophetæ, multo antè philosophorum ætatem, alij obscurius, alij clarissimè, quænam esset honesti vera forma, patefecerunt. Daudis quidem testimonio nihil illustrius. Beatus homo, inquit, quem tu erudieris, Domine, & de lege tua docueris eum. De iustitia, quæ in agendo consistit, clamat idem, & præcipit: Beatus vir, qui miseretur, & commodat. Et infra: Dispersit, dedit pauperibus: iustitia eius manet in æternum.

Honestas in omni vitæ statu, omnique re, pariter elucet. Secunda sint omnia, non extollitur: aduersa, non affligitur. voluptatem, diuitias, honorem contemnit: dolorem, cœlestem, exsulum non extimescit. in se enim ipsa sua ponit omnia, & illud sæpe reminiscitur: Beati immaculati in via, qui ambulant in lege Domini. Et illud: Beati estis, cùm vobis maledicent, & persequentur. Cum quibus concinit Euangelium: Beati, qui nunc fletis: quia ridebitis. Quæ si attendamus: nec caritatem Isaac, nec exsulium Iacob, nec

seruitutem Ioseph malum putabimus.

Sed virtutes aut à natura proficiscuntur, vel si absit disciplina: quod paucis admodum contigit, aut ab imitatione, sapientiumque virtutum consuetudine sumuntur. exemplis abundant sacra litteræ. ex quibus ut pauca delibentur, Iesus Natus, ille, ille vir, quem rerum gestarum gloria ad cælum extulit, qui cum in pugna flare solem iussisset, mortalis hominis iussu fecit sol, nū à Moymis latere iuuenis vñquā discessi? Abraham Loth proficiscentem non deseruit. Heliæ comes fuit Heliæus, Paullo Silan, Timotheus, Titus. quibus alij addi possunt. nā exemplis diuites sumus, spiritu pauperes.

Quæritur in officiis, quibus rebus cōparetur, augeatūrq. pecunia, quorsum? nam beata vita diuitiis non eget. Regnum Dei pauperum esse, docet Euangelium. Et Apostolus: Quæ mihi lucra fuerunt, hæc duxi propter Christum detimenta. opponuntur enim ut contraria, diuitem sibi esse, pauperem Deo: diuitem Deo, pauperem sibi. Quæ si quis rectè distinguit, viuet in æternū.

Et, quoniam de utili disputatio est, scire oportet, utilium duo esse genera, vnū ex multitudinis opinione, alterum è sapientum sententia. Vulgo quæ ad victum, & cultū, quæ ad copias, facultates, opesq. pertinent, ea si lucentur, bene secum agi putant. at sapientibus, qui de honestate tantum laborant, maximū lucrū est pietas. corpori enim, & Deo seruire, nō idē sunt: & si queritur utilitas, ea sumitur à Deo, cum qua conferri nulla possit.

Ex multis autē utilibus id videtur esse ptimum,

vt

ut amemur. quandoquidem odio nihil exitiosius. Quid igitur est, quod amorem maximè cōciliet? Christiana caritas: non modò quia libenter sua communicat, verū etiam quia mitis est, nō excandescit in aliena culpa, patienter iniurias fert, admonet, corrigit, opem fert. Inde fides nascitur, cognita præsertim eius, quem diligimus, bonitate, & prudentia. velle enim, bonitatis est: posse, prudentiæ. itaque libenter nos ei committimus, de cuius aut voluntate, aut prudētia dubitari non posse, persuasum iam nobis est bonitatem autem qui dicit, idem iustitiam dicit: prudentiam, virtutem, quæ per se quidem valet, sed, nisi cum iustitia societur, nomen mutat, & calliditas est, id est ex virtute vitium. itaque versuti, callidiq. hominis, ad questum omnia referentis, vitanda consuetudo, repudiandum consilium: boni ab eo nihil expectandum, qui bonus ipse non est. malitia enim ficta, inanemq; speciem utilitatis ostendit: iustitia, id est bonitas, veram, ac solidam utilitatem parit.

Vt igitur, qui suam rem curat, sibi q. potius consultit, quam aliis, rectum ignorat iter gloriæ: nec cum homines amant, nec ei fidem habent: sic, qui propensus ad liberalitatem est, eaq. & pro facultatibus, & erga indigentes virtutur, cum in oculis multitudo fert, & fidem habet, séque, & sua, recte tradi, & commēdari, putat. Hęc virtus pecunie fructus est: ideo pecunia, quod ad nos ipsos attinet, diligenter querenda: sed, ut idoneis opitulemur, paulo etiam attentiores esse nos decet. quo enim est virtus amabilior, eo magis, ne deficiat, néve eius exercendę consuetudo intermittatur, elaborandum.

Nec verò simplex, ciusdémq. generis liberalitas à bono viro postulatur. sunt eius quidā quasi gradus, & pro meritorū magnitudine fit speciosior, & illuftrior. in meritis autem excellunt illa, redimere captiuos ab hoste barbaro, alere paruulos, pupillos tueri, virgines collocare. eadémque laus, fortasse etiā aliquanto maior, acquiritur, cùm in tenui re, consilio tamen, operáq. subuenitur. quod genus beneficentię nūquam exhaustur: manat enim à perenni fonte: cùm pecunię diuersa cōditio sit: quo enim erogatur magis, eo minor ad virtutis vñ materia relinquitur: & sēpe, qui alienam inopiam subleuat, ad candem ipse, dum largitur inconsultè, recidit inopiam.

Et, quoniā veritatē amat virtus, tenendū in primis illud est, vt, quales haberi volumus, tales simus. quā Socrates olim proximā ad gloriā viā, & quasi cōpendiariam, esse dicebat. Sed nos, in hac modū dubia, & multis implicata erroribus humanae vite via, multo quidē Socrate meliorem, & sapientiōrē, & certiorē ducē, rectorémq. nocti, nullū errorē, si eius expressa vestigia persequimur, timemus. Deus enim ipse sūma veritas est: & in veritate colitur Deus. itaq. parui refert, hęc si virtus, cuius in celo p̄em̄ia sunt, humana mercede caret: verū nō caret. allicitur verbis, capitur beneficiis multitudo: cuius autē ad verba, beneficiāq. probitas accedit, eū v̄ehemēter amplectitur, ei se dedit, pro eius honore, ac dignitate, nullū laborem vitat, nullum discrimē extimescit. beneficio enim ducitur, amore impellitur. ita sequitur probitatē vtilitas, licet vtilitatem probitas contemnat.

Iniu-

Iniuſtē vexatis opē ferre, nō mediocrē laudem habet: quíq. hoc genere pr̄estat officij, dū paucos vindicat ab iniuria, à multis gratiā acquirit. suam enim quisq. condicionē reminiscitur: & homo hominis miseriam non libenter videt. Decora verò in primis, & interdum salutaris, hospitalitas est: decora, cùm accipiuntur ij, qui non egent: salutaris, in pauperibus, in quibus Christus est, qui minima dantibus maxima retribuit in cælo.

Pecunia, & assentatio homines ad benevolentia allicit: sed exiguum vtraq. fructū fert. corruptis nulla fides: blāditiis deleniti, nō modò iusta impenia non ferūt, sed admonitiones quoq. respnuunt. Nec tamē correctione vitiū caret. licet largiri pecuniam sine ambitione, comiter agere sine mendacio, actionē vtramq. vītæ integritas, & sapiētia, & directa ad Deum cogitatio moderetur: nō solū, vt placeat, ac probetur id, quod agis, verū etiam, vt bona de te ipse existimatio sit. ita fidelis erit benevolentia vel ad perpetuitatem.

Beneficij fructus ex paupere certior, atq. vberior est, quā ex diuite. pauper se spectatū esse putat, nō fortunā suā, cū remunerādi facultate carcat: &, quoad nō remunerat, debet: quoad debet, obseruat, amātq. cū, à quo accepit. ita beneficij memoria vel perpetua est, vel diurna. At diues ideo sibi tributā esse gratiam iudicat, quia referre parē, aut maiorē etiā possit. quo fit, vt eū, qui bene meritus est, penē contēnat. Pr̄eterea diues humana dat, quia homo est: eāq. remuneratio finibus includit angustis. at pro paupere remunerator est Deus: qui nec munera sāpe negat humana, & diuina, nullis circūscripta finib⁹ perpetuō reddit.

Vix autē verbis exprimī potest, atq. adeo nūllo modo potest, quām Deo grata liberalitas ea sit, quāc cōfertur in pauperes. Minuere sacros thesauros, sacrilegiū est: si verò minuantur ob eam caussam, vt minuantur simul pauperū incōmoda, probat Deus, & ita locat inter benefacta, vt nullū pietatis officium pluris æstimet. nam, quis pecuniae præstantior usus est, quām si erogetur in eos, in quibus ipse Christus est? latet in persona pauperum: petit, & roget: esurire se, fitire, hospitio indigere significat. quis ita durus, ac ferreus, vt pauca neget ei, cui debet omnia? quis ita mētis inops, ita de se ipso negligenter cogitans, atque adeo seipsum contēnens, vt exigua mercede suam salutem emēdam non putet? thesauros, & humana omnia corrumpit dies: at eā, quę de thesauris manat, gratiam nulla dies aufert. veri autem thesauri sunt officia misericordie: verus thesaurus ipse Deus est. sine quo, qui diuites, & beati inter homines putantur, egent, miseriq. sunt: contrā, qui egere vidētur, eum si possident, bonis omnibus circumfluunt. Vedit hoc, & sensit, & nos docuit Beatus Laurentius, cū, de thesauris Ecclesię, quorū custos erat, interrogatus, Pauperes ostendit. Quid ceteri Martyres? quid alij propè innumerabiles, qui in humana vita diuina studia coluerunt? dispare fortasse meritis, vt cuiusq. facultas, aut occasio tulit, omnes tamen Laurentio mente simillimi, pii, misericordes, de allis solliciti, de se ne in craftinū quidē cogitātes. ergo illi viuūt, viuentq. semper cū immortali viuentiū Deo:nobis, si prēclarā consuetudinē imitemur, eadē proposita vita est: si negligamus, eterna mors impendet.

M. T V L.



# M. T V L L I I C I C E R O N I S

D E O F F I C I I S

*Ad Marcum Filium*

L I B E R I I .

---

C I C E R O .



Vemadmodum officia ducerentur ab honestate, Marce fili, atque ab omni genere virtutis, satis explicatum arbitror libro superiore. sequetur, vt hac officiorum genera perse-  
quar, que pertinent ad vitę cultum, & ad earum rerum, quibus vntuntur homines, facultatem, ad opes ad copias. in quo tum queri dixi, quid utile, quid iniutile: tum, ex utilibus, quid utilius, aut quid maxime utile. de quibus dicere aggrediar, si pauca prius de instituto, ac de iudicio meo dixerō. Quamquam enim libri nostri complures non modò ad legendi, sed etiam ad scribendi studium excitauerint: tamen interdū vereor, ne quibusdā bonis viris philosophianomen sit iniuisum, mirenturque in eatantur

me opera, & temporis ponere. Ego autem, quam diu resp, per eos regebatur, quibus se ipsa commiserat, omnes meas curas, cogitationesque in eam conferebam. cum autem dominatu unius omnia tenerentur: neque esset usquam consilio, aut auctoritati locus, socios denique tuenda reip. summos viros amissim: nec me angoribus dedidi, quibus esse cōfēctus, nisi ijs restitissim: nec rursum indiguis homine docto voluptatibus. atque utinā resp. stetisset, quo cōperat statu, nec in homines nō tam communandarum rerum, quam euertendarum, cupidos incidisset. primum enim, ut st̄tē rep. facere solebamus, in agendo plus, quam in scribendo, opera ponemus: deinde, ipsi scriptis non ea, qua nunc, sed aetiones nostras mādaremus, ut saepe fecimus. cum autem resp. in qua omnis mea cura, cogitatio, opera ponī solebat, nulla esset omnino: illa scilicet littera conticuerunt, forenses, & senatoriae. nihil autem agere cum animus nō posset, in ijs studijs ab initio versatus etatis: existimauit honestissimè molestias deponi posse, si me ad philosophiam retulisse. cui cum multum adolescens, discēdi caussa, temporis tribuissim: postea quam honoribus inservire cōpi, nēque totum reip. tradidi, tantum erat philosophia loci, quantum superfuerat amicorum, & reip. temporis. id autem omne consumebatur in legendo: scribendi otium non erat. Maximis igitur in malis hoc tantum boni affecuti videmur, ut ea litteris mandaremus, que nec satis erant nota nostris, & erant cognitione dignissima. quid est enim, per deos, optabilius sapientia? quid praestantius? quid homini melius? quid homine dignius? hanc qui expertunt igitur, philosophi nominantur: nec quidquam aliud est philosophia, si interpretari velis, quam studium

sapien-

sapientie. Sapientia autem est, ut à veteribus philosophis definitum est, rerum dīninarum, & humanarum, causarūque, quibus haeres continentur, scientia. cuius studium qui vituperat, haud sanè intelligo, quidnam sit, quod laudandum putet. nam siue oblectatio queritur animi, requiesq. curarum: qua conferri cum eorum studiis potest, qui semper aliquid acquirunt, quod spectet, & valeat ad bene, beatęque viuendum: siue ratio constantia, virtutisque queritur: aut hac ars est, aut nulla omnino, per quam eas assequamur, nullam verò dicere maximarum rerum artem esse, cum minimarum sine arte nulla sit, hominum est parum considerate loquentium, atque in maximis rebus errantium. si autem est aliqua disciplina virtutis: ubi ea queretur, cum ab hoc discendi genere disceretis? Sed hæc, cum ad philosophiam cohortamur, accuratius solent disputari: quod alio quodam libro fecimus. hoc autem tempore tantum nobis declarandum fuit, cur, orbati reip. muneribus, ad hoc nos studium potissimum contulissimus. Occurritur autem nobis, & quidem à doctis, & eruditis, quarentibus, satis ne constanter facere videamus, qui, cum percipi nihil posse dicamus, tamen & alis de rebus differere soleamus, & hoc ipso tempore præcepta officij persequamur. Quibus velle satis cognita esset nostra sententia. non enim sumus i, quorū vagetur animus errore, nec habeat vñquā, quid sequatur. qua enim esset ista mēs, vel qua vita potius, non solum disputandi, sed etiam viuendi ratione sublata? nos autem, ut ceteri, qui alia certa, alia incerta esse dicunt, sic, ab his dissentientes, alia probabilitia, contra, alia improbabilia esse dicimus. quid est ergo, quod me impedit, ea, que mihi probabilitia videantur,

sequi: que contra, improbare: atque affirmandi arrogantiā vitare, fugere temeritatem, quæ à sapientia disidet plurimum? Contra autem omnia disputatur à nostris, quod hoc ipsum probabile elucere non posset, nisi ex virtuque parte caussarum esset facta contentio. Sed hac explanata sunt in Academicis nostris satis, ut arbitror, diligenter. Tibi autem mi Cicero, quamquam in antiquissima, nobilissimaque philosophia Cratippo auctore versaris, ijs simillimo, qui ista præclara pepererunt: tamen hac nostra, finitima vestris, ignota esse nolui. Sed iam ad instituta pergamus.

### EXPLANATIO.

 **V** B M A B M O D V M officia ducerentur ab honestate, Marce fili, } tres partes Cicero complectitur hoc proemio. Proponit primum, quæ secundi libri futura disputatio sit. Deinde respondet iis, qui suum consilium de colenda, Latinisque litteris illustranda philosophia ideo fortasse non probarēt, quod homo reip. redditus, & in ea administranda diu cum laude versatus, omissa rerum actione, Romanæ gentis propria, ad bonarum artium, quæ Græcos magis decere viderentur, libenter amplectetur. in qua parte, cùm eas causas exposuit, quibus excusari iure posset, ornat philosophiā diuinis laudibus. Tertio loco nihil à se ostendit inconstanter fieri, quod Academicus cùm esset, id est ex eo philosophorū genere, qui percipi nihil posse putant, officiorum tamē præcepta perfequatur. Dicit autē, *Officia ducerentur ab honestate*, quia ex quartuor virtutibus honestū, ex honesto autē oritur officiū, de quo lib. i. Atque, ab iis rebus, quæ sunt in iure societatis humanæ, quemadmodum duceretur honestum, ex quo aptum est officium, fatis ferè diximus. **A b o m i n i g e n e r e v i r t u t u s**, } à prudētia, à iustitia, cui coniuncta beneficentia est, à fortitudine, à tēperantia, attingit eū locum, quemlibet primo descriptis his verbis: Omne, quod honestum est, id quattuor partium oritur ex aliqua, aut enim

in per-

in perspicientia veri, sollertiaq. versatur: aut in hominum societate tuenda, tribuendō, suum cuique, & rerum contratarum fide: aut in animi excelsi, atque inuicti magnitudine, ac robore: aut in omnium, quæ sunt, quæq. dicuntur, ordine, & modo, in quo inest modestia, & tēperantia. Ibidem infra: Intelligendum est autem, cùm proposita sint genera quattuor, è quibus honestas, officiūque manaret, splendidissimum videri, quod animo magno, elatōque, humanāq. res despiciēte, factum sit. Et, in eodem extremo libro: Cūm omnis honestas manet à partibus quattuor, quarū vna sit cognitionis, altera communitatris, tertia magnanimitatis, quartā moderationis: haec in deligendo officio sāpe inter se comparentur, necesse est. *Virtus*: Virtutem vocat & prudentiam: quod Aristoteles non sentit, tres tantum hoc nomine dignatus. **S E Q V I T U R**, } quod nos, Supereft, Remanet. Sic lib. i. Sequitur, ut de vna reliqua parte honestatis dicendum sit. **V T h e c o f f i c i u m g e n e r a p e r f e q u a r**, que pertinent ad vitæ cultum, } vt dīspūtem de vtili. Infra: Hoc autem, de quo nunc agimus, id ipsum est, quod vtile appellatur. Persequanur, legebat Vbaldinus, quomodo est in veteribus duobus. **A D e a r u m r e c u r s u e**, } Graci, ταχιστη. **F A C V L T A T E M**, opes, copias, } Lib. i. Ad vitæ commoditatem, iucunditatēmque, ad facultates rerum, atque copias, ad opes, ad potentiam, iubus & se possint iuare, & suos, conductac id, necne, de quo deliberant. **D I X I**, } libro superiore. **T V M**, ex vtilib. quid virilius, aut quid maximē vtile. } absunt haec à sex antiquis libris, & Tertij. Et sane recte abesse, docti viri iudicant. **D E i n s t i t u t o**, } quod me ad scribendam contulerim, ut philosophiam Latinis litteris illustrarem. **D E iudicio meo**, } quod haec mihi studia, cùm illæ, rep. oppresla, conticuissent litteræ forenses, ac senatoriæ, colenda maxime iudicauerim. **L I B R I n o s t r i**, } de Philosophia scripti. nam de Officiis postremi fuere, Cæsare imperfecto. **C O M P L V R E S**, } ut Brutum, Varronem, alios. **L E G E N D I**, } scripta ab aliis. **S C R I B E N D I**, } de Philosophia. **B O N I S v i r i s**, } id est, fatus. quod Græci iurib. **I N V I S I V M**, } quia nos auocet à rebus gerendis. boni autē viri actionem plus prodeſſe reip. putant, quām contemplationem. De iisdem libro 2. Acad. Sunt enim multi, qui omnino non ament Græcas litteras: plures, qui philosophiam: reliqui, qui etiam si haec non improbeat, tamen earum rerum dīspūatio

nem principibus ciuitatis non ita decoram putent. Philosophos S. C. vrbe eiectos, scribit Agellius lib.15. cap.ii. Et Cicero Tusc.i. Philosophiam ad suam vsque atatem latuisse ait, nec nullum habuisse lumen litterarum Latinarum, quam illustrandam, & excitandam sibi otioso constituit. **M I R E N T V R Q. in ea tantum me opera, & tempora ponere.** } Lib.1. de Fin. quatuor hominum genera commemorat, qui studium Philosophiae Latinis litteris explicande non probaret, ac de secundo quidem genere sic: Quidam autem id non totu[m] reprehendunt, si remissius agatur: sed tatum studiu[m], tam multa operam ponendam in eo non arbitrantur. Et paulo post: Qui autem, si maximè hoc placeat, moderatius tamen id volunt fieri, difficilem quandam temperantiam postulat in eo, quod semel admissum coerceri, reprimiq. non potest. **E G O antem,** } defensionis initium. vt in epistola ad Lentulū: Ego autem cùm illa sequor, qua paullò ante proposui, tu hoc non in postremis, de quo coepera exponere. non offendes eundē honorū sensum, Lentule, quē reliquisti. Vidēdus Platarchus in Cicerone, & p[re]fatio Tusc.i. & ep.8.lib.9. Fam. ad Varro[n]em, de Academicis. **R E G E B A T V R,** } duo veteres libri, Gerebatur. Recte. Idem mendū irrepserat in Ouid. Metam. xv. Exemplōq. sive mores reget, quo loco in veteribus quibusdā exēplaribus, Geret, legi, obseruauit & probitatis, & litterarum laude insignis, mihiq. summa amicitia coniunctus, Hercules Ciofanus in iis Observationibus, quas in ipsum Poëtam edidit. **Q V I B V se ipsa comiserat,** } cōmiserat se senatus, populōq. Romano: nunc omnis ad vnu armis translata potestas est. **C V R A S, cogitationēq.** } hinc Augustus ad nepotē sūi, magna horum librorū parte lecta, dixit, Eloquens, eloquē, fili, fuit hic vir, & amā patria. **CVM autem dominatu vnius omnia tenebentur,** } Cæsar[us] p[ro]v[er]biā designat: quam nunquā Tyrannidis nomine appellavit. Dicit idē lib.2. de Diuin. Ac mihi quidem explicāde philosophia causam attulit grauis casus ciuitatis: cùm, in armis ciuitibus, nec tueri meo more remp. nec nihil agere poteram: nec, quid potius, quod quidem me dignum esset, agerem, reperiebam. **C O N S I L I O,** } liberæ enim sententiæ dici non poterant. **A V C T O R I T A T I** } senatus enim auctoritas iacebat. **D E B I D I,** } sic octo veteres libri, & tertij. Elegantius verbum, & ad rem significandam aptius. **Q V o c e p e r a t,** } statim post Cæsaris necem. videbatur enim restituere resp.

resp. ideo dixit lib.2. de Diuin. Nunc, quoniam de rep. consuli cœpti sumus, tribuenda est opera reip. vel omnis potius in ea cogitatio, & cura ponenda: tantumq. huic studio relinquendū, quantum vacabat à publico officio, & munere. **T A M communitandarum rerum,** } hoc loco huiusmodi communitationes minime miranda, vel nouas esse dicit. Et lib.11. de Diuin. eas Platonis auctoritate probat: his verbis: Id p[ro]sum à Platone, philosophiaq. didiceram, naturales esse cōuersiones quasdam rerum publicarum, vt ea tum à principiis tenerentur, tū à populis, aliquando à singulis. **Q V A M euertendarum,** } vt esset non aliqua, sed nulla penitus resp. Antonium consulem notat, longè improbiorem Cæsare dominum. **I N agendo plus, quam in scribendo,** } plerāq. enim scripsit euerſa rep. **A C T I O N E S noſtræ,** } que ageremus vel in foro defendendis amicis, vel in senatu pro rep. Ad hāc sententiā pertinet id, quod sequitur: Illę scilicet litteræ conticuerunt foreſes, & senatoriæ. Quinctilianus ait commentarios orationum Ciceronianarū ita esse exactos, vt ab ipso sibi in memoria posteritatis videantur cōpositi. Et ipse in Bruto scribit, se orationes suas non minus diligenter elaboratas eriā, quā elucubratas attulisse. **V T sepe fecimus,** } multas enim scripsit orationes in foro habitas, aliquot in senatu, vnam in Rullum, duas in Catilinam: eam, qua senati gratias egit, in patriam restitutus, de harusp. resp. de prouinciis cons. & de cōfusatū suo, & de temporib[us] suis. Orationes autē significat, cùm infert, Litteræ forenes, **N V L A effet omnino:** } extincta, oppressa, impio dominatu. **C O N T I C U E R V N T I,** } ita conticuerunt litteræ illę forenes, & senatoriæ, vt conticuit mea vox in foro, & in senatu, que enim vel in foro, vel in senatu agerē, ea litteris mādabā. sublatiss autē & forēsib[us] actionibus, & senatoriis, quod scriberē nō erat. **N I H I L autē agere cū amicu nō posset,** } eo Cicero natus erat ingenio, vt inani tempus otio cōsumere nō posset, propterea scripsit ad fratreū: Scribebā illa, quæ dixerā, nolit[ur] spissum sāne opus, & operosum: sed, si ex sententia successerit, bene erit opera posita: si minus, in illud ipsum mare deliciemus, quod scribentes spectabamus. aggrediemur alia, quoniā quiescere nō possimus. Loquitur igitur non communiter de quocumq. animo, vt nonnulli existimant, sed de suo, subiecta causa, cur se ad philosophiā retulerit, quia regultare animus eadem studia cuperit, in quibus ab initio versatus esset. **I N iis studiis,** }

forensibus & senatoriis, quæ mihi vis temporum eripuit. **A**b *initio versatus etatis*, à prima adolescentia, quæ aetatis suæ partem copiosè narrat in Bruto. Vide & Plutarchum in eius vita. **E**XISTIMAVI *hon. stisim. e posse deponi*, deponi curam, cogitationem, operam, quæ supera dicta sunt. vt Deponi, accipitur proponi, quod Nonii testimonio probatur, cuius haec sunt verba: Deponere, est ponere. Virg. Buc. De grege non ausim quidquam deponere tecum. M. Tull. Off. lib. 2. Ex ultimau honestissimè modestias posse deponi, vbi me ad philosophiam rectulisse. Sed, Molestias, delendum, recte, docti, ac diligentes viri ante nos admonuerunt. abest autem à lex meis libris & tertii, nec requiritur à sententia: cùm Deponi, referatur, vt dixi, ad illa superiora, Cura, cogitatio, opera. Et ipse Nonius, cùm Deponere, interpretatur Ponere, ostendit, verbum, Molestias, locum non habere. quamquam ex vulgatis libris additum in omnibus Nonii exemplaribus legatur. **Honestissimè**, propter ipsius philosophia præstantiam: de qua proxinè subiicitur. **D**eponi: abducit enim ab angoribus animum philosophia, recreatque, ac reficit languorem salutaris doctrinae remediis. vnde illa ad Sulpicium: Tantum dicam, me, postea quā illi arti, cui studueram, nihil esse loci neque in curia, neque in foro viderim, omnem meam curam, atque operam ad philosophiam contulisse: quare non equidem te moneo, sed mihi ita persuasi, te quoque in iisdem versari rebus, quæ etiam si minus prædissent, animum tamen à sollicitudine abducent. Et ad Varromem: Stet nobis illud, vna vivere in studiis nostris: quibus antea delectationem modò petebamus, nunc verò etiani salutem. **S**i me ad philosophiam rectulisse, cùm cultam antea, vt in Tusc. I. Cùm defensionum laboribus, senatoriisq. muneribus aut omnino, aut magna ex parte esse, item aliquando liberatus, retuli me, Brute, te hortante maximè, ad ea studia, quæ retenta animo, remissa temporibus, longo interruuo intermisca reuocauit: & cùm omnium artium, quæ ad rectam viuendi viam pertinerent, ratio, & disciplina studio sapientie, quæ philosophia dicitur, contineretur, hoc mihi Latinis litteris illustrandum putavi. **D**ISCENDI *causa*, vt eloquentiam grauiorum artium instrumento, & quasi dote, locupletarem. **H**ONORIBVS *inservire*, more ambitiosorum. Plutarchus ait, Ciceronem, laudis cupiditate, diligentius ad rem. animum adiecisse. **Q**VANTVM superfluerat amicorum.

*Et reip.*

*Et reip. temporis*, quantum ab amicis, & à rep. concedebatur. quantum superfluerat temporis agendis in foro causis amicorum, capiendis in senatu de rep. consiliis: tantum erat philosophiæ loci. Imitabatur Censorii Catonis industriam: qui, si quando otium nactus esset, ad studia se litterarum referebat. *Αναποτίσησιν*, inquit Plutarchus, ελάχιστην τε παρθένον, οὐτότε γολαξον, την σωτηρίην τα βιβλία, καὶ τὸ γεωργεῖν. Nam & rusticam rem extrebat, de qua etiam libros composit. Præceptum Platonis est εἰ τὸ τέλος τοῦ Πολιτεῖον 2. vt plurimum temporis in philosophia ponatur. deinde, cùm res pofcer, resp. administretur. Mendosè in aliis libris, Temporibus: contra veteres meos omnes, & Tertii. **I**N *legendō*, in legendis philosophorum libris: Legendi autem maximè cupidum fuisse Ciceronem, scribit Plutarchus, & Tertullianus. **S**CRIBENDI de philosophia. nam suas actiones à se scriptis mandatas esse dixit. **O**TIVM non erat. plus enim curæ, operæq. requiritur in scribendo, quam in legendō. **M**AXIMIS igitur in malis, Hesiodus εὐ ποτε πάγκον ἤμετ. **Q**VAE nec satis erant nota nostris, Philosophiam Romanū hominēs, præter paucos admodum, posse rēmiti quoque reip. temporibus ignorabant. Tusc. I. Philosophia iacuit visque ad hanc etatem, nec ullum habuit lumen litterarum Latinarum. Scriptis autem Cicero post interitum reip. libros de Finibus, Tufculanas quæstiones, & alios, *Nostris: Romanis, Latinis*. Sic initio lib. I. Magnum attulimus adiumentum hominibus nostris. Et Ouidius Faftis:

Leucothee Grais, Matuta vocabere nostris.

**P**RÆSTANTIVS, in Nonio, locum hunc recitante, in, Præstare, legitur, Præstabilius. mendosè fortasse. nam veteres libri omnes, Præstantius. **S**i *interpretari velis*, interpretatus est ex Platonis sententia, dixit enim εἰ τὸ τέλος Οὐκοῦν καὶ τὸν φιλόσοφον σφίζει φίσασι τὸ παιδικόν τὸν φιλόσοφον, ἐπισήμων τῆς αἰλυδειᾶς θεωρητικήν. θεωρητικήν μὲν γέροντος αἴλυδην. **S**TUDIVM *sapientia*. Studium alibi sic declarat: Studium est, animi atsidua, & vchemēs, ad aliquam rem applicata, magna cum voluntate occupatio: vt philosophia, poëticæ, geometriæ, litterarum. **S**APIENTIA Seneca Epist. lib. xiv. Primum itaque, sicut videtur, tibi dicam, inter Sapientiam, & Philosophiam, quid intersit. Sapientia perfectum bonum est mentis humanæ. Philosophia sapientiæ amor est, &

affectione. hæc ostendit, quod illa peruenit. Philosophia unde dicta sit, appareat. ipso enim nomine facetur. Quidam enim sapientiam ita finierunt, ut dicerent, eam diuinorum, & humanorum scientiam. quidam ita: Sapientia est nosce diuinam, & humana, & horum causas. Superuacua mihi videtur hæc adiectio, quia causæ diuinorum, humanorumq; partes sunt, philosophiam quoque, fuerunt, qui aliter, atque aliter definiunt. Alij studium illam virtutis esse dixerunt, alijs studium corrigenda mentis, à quibusdam dicta appetitio rectæ rationis. illud, quasi constet aliquid inter philosophiam, & sapientiam interest. neque enim fieri potest, ut idem sit, quod affectatur, & quod affectat, quo modo multum inter avaritiam, & pecuniam interest, cum illa cupiat, hæc concupiscatur: sic inter philosophiam, & sapientiam. hæc enim illius effectus, & præmium est: illa venit, ad hanc itur. Sapientia est, quam Græci σοφίαν vocant. hoc verbo quoque Romani vrebantur sicut Philosophia nunc quoque vtuntur. A VETERIBVS philosophus } sic omnes libri veteres. S I V E oblectatio queritur animi, requiesq; curarum; } sententia Platonis, è τῷ οὐρανῷ Πλάτων. Τετρανύστων τῷ θεόντων, η τούτου τῷ μέγεσυ τῷ φυσικῷ, φανταστικῷ, ιδίᾳν αὐτῷ εἰ: καὶ εἰ ὡς πρᾶξι τοῦτο φάγεται τούτου βίῳ θεάτρῳ. Aristoteles autem Ηθικῶν κ. Δικαιονομίας διαρράξει: ιδίᾳν ἔχει, καὶ δεομένην, καὶ τῷ βεβαιώντι. S E M P E R aliquid acquirunt, } sic Tertij liber: alijs omnes quatuordecim, quibus vror. Inquirunt, ad veram lectionem proximiè accedentes. Antea in vulgaris, male, Acquirunt. Hanc lectionem videtur confirmare Aristoteles Ηθ. β. cùm ait, Εἴπερ βεύεται δι αὐτῷ χαίρειν, ἐν αὐτοῖς τεττάριον, εἰ μὴ ταῦτα φιλοσοφίας ἀναντία. S P E C T E R , } pertinet, referatur. Refertur hoc verbum ad Philosophum. V A L E A T } eam vim habeat, ut ad bene, beatę, vivendum perducat. Referatur ad Philosophiae facultatem. A D b e n e , b e a t ē q ; v i u e n d u m : } significat genus illud vitæ, quod in contemplatione positum est: cùm vero subiungit, Siue ratio constantia, virtutisq; queritur: eam, quæ de moribus agit, Philosophiae partem significat, nam lib. III. Cùm tota inquit, philosophia frugifera, & frumentosa, nec vlla pars eius in culta, ac deserta sit: tum nullus fecrator in ea locus est, nec vberior, quæ de officiis: à quibus cōstat, honesteq; viuendi precepta ducuntur. Q V A E R I T V R : } Dicitur, habet septē libri veteres, & Tertii. A V T H E C A R S E T , a u s n u l l a o m n i o , } De Fin. Artem vitæ appellata: de Oratore, Dis- ciplinam; ibidem, laudatarū artium omnium procreaticē, &

quasi parentem: in Tusculanis, artium donum, & inuentum: in orationibus, eam continere ait virtutis, officii, & bene vivendi disciplinam. M A X I M A R V M r e r u m } quid autem ijs maius, quas proximè, ut bene, beatę, viuatur, quod naturalis philosophia præstet: deinde, ut cum virtute, atque constantia: quod ea docet, quæ moralis appellatur; I N m a x i m u s r e b u s e r - r a n t i u m } nam propterea plerique, ait Seneca, necessaria igno- ramus, quod superuancanea dicimus. S I a u t e m e s t a l i g u a d i s c i p l i n a v i t u i s : } Virtutem proximè collocavit in moribus, id est in actione rerum, cùm dixit, Siue ratio constantia, virtutisq; queritur: at hic vtramque Philosophiae partem Virtutis ne- mine comprehendendi, sat is constat. Plato in Protagora, & in Menone, disputat, vtrum virtus doceri possit, & vtrum sit sci- entia. Q V O D a l i o q u o d a m l i b r o f e c i m u s , } in Hortensio, qui non exstat, quo libro Philosophiam, Hortensio vituperante, summis extulit laudibus. lib. 2. de Diu. Tusc. III. & lib. I. de Fin. Vide Lactantium lib. III. cap. 2. & lib. VI. cap. 2. Augustinum de vita beata. qui, in libris Confessionum, constitutus se ex Ciceroq; Hortensio, quem anno vnde vigesimo in rhetoru scholis audierit, tanto philosophia amore flagrare cœpisse, ut se totum ad eam transferre meditatus sit, sive propterea mu- tasce inde effectus, & mutasse ad Deum. Quodam (quomodo imprimi curauimus) est in omnibus libris, quibus vror. A D O C T I S & eruditis, } à Peripateticis maximè. C V M p e r c i p i n i h i l p o s s e d i c a m u s , } ex Academicorum sententia. nam in ea hæreti Cicero fuit. percipi autem nihil posse, dixit in qua- tuor Academicis libris: in quibus cum Varrone disputauit, cùm illi partes Antiochi tribuisset, Philonis ipse sumplisset. A L I I S d e r e b u s } de quibus differuit in ijs libris, quos antea de Philosophia cōposuit. P R A E C E P T A o f f i c i j } quæ tradi ab ijs non debent, qui percipi nihil posse dicunt. N O N e n i m f u s u s i j , } sceptici. Q V O R V M v a g e t u r a n i m u s e r r o r e , } Plato in Axiocho: Οὐκ ἵτετε γέποντες θυμανοῦσθε. Quorū v a g e t u r a n i m u s e r r o r e : qui nihil probemus, nulla in sententiâ consistamus. Eius auctorem philosophia Pyrrhone fuisse tradunt. cuius explosam sententiâ esse dixit lib. I. vide Agellium lib. XI. cap. 5. Senecā lib. XIII. Epist. prop̄ finem, Laëtium in Pyrrhone. M E N S , } cui proposita est inuestigatio veritatis. V I T A p o t i s , } non modò mens, nam mens, paucorum: vita, omnium. D I S P U T A N D I , } Disputandi, ad sc̄ientiam; Viuendi, ad mores pertinet. R A T I O N E f a b l i t a } quæ enim potest esse disputatio,

quæ vita, si nihil certum putemus, nihil, quod sequamur, habeamus? VT ceteri, qui alia certa, alia incerta esse dicunt,} vt ceteri philosophi, ab Academicis dissentientes, qui non alia certa, alia incerta esse dicunt, sed ambigunt de omnibus. id enim est proprium Academicorum. Qui, non est in antiquis sex, & Tertij. AB his dissentientes,} qui alia certa, alia incerta esse dicunt. A LI A probabilita, contra alia improbabilita esse dicimus,} nihil affirmantes, sed probabilita, sequentes. Sunt ergo tres philosophorum sectæ, vna eorum, qui percipi quidquam posse negant: altera, qui alia certa, alia incerta esse dicunt: tertia, qui, ab utrisque dissentientes, neque negant, neque affirmant, sed alia probabilita esse dicunt, alia improbabilita. Veteres nouem Libri, & Tertij, Alia probabilita, contra alia dicimus. Quid est ergo, quod me impedit,} nulla me ratio detereret: non video, cur mihi non licet. VITARE,} non dispiacet, quod est in vetere Tertij, Vitantem, duo alij, Euitare. A N O S T R I S,} ab eo genere Academicorum, qui non, percipi nihil posse, dicunt, vt Pyrrhonij, sed alia probabilita esse, alia improbabilita, cum nihil tamen affirmant. & ideo contra omnia disputant, vt illud ipsum probabile, quod sequuntur, appareat. Ex utraque parte,} disputant de eo, quod queritur, in utramque partem, non vt affirment quidquam, sed vt probabilita, & improbabilita distinguant. SED haec explanata sunt in Academicis nostris,} non dubios prioribus libris, Catulo, & Lucullo, sed quantu posterioribus ad Varronem scriptis. Lib. 2. de Diuin. Quod genus, inquit, philosophandi minimè arrogans, maximèque & constans, & elegans arbitraremur, quatuor Academicis libris ostendimus. TIBI autem, &c.} filium alloquitur in cœlusione ~~theophrasti~~ parænetica. ANTIQVISSIMA,} Peripateticæ, vetustiore, quam Stoica, ab ipso Aristotele, omnium principiæ nobilitata. NOBILISSIMA Q. philosophia,} nobilitarunt enim eam scriptis, ut mox dixi, Aristoteles, & Theophrastus, & alij deinceps. CRATIPPO auctore,} quasi duce, & magistro ISTA præclaræ,} quæ tu nunc, doctore Cratippo, tractas. Intelligit autem Socratem, Platonem, Xenocratæ, Speusippum, Aristotelem, Theophrastum, & similes Academias veteris, & sectæ Peripateticæ auctores, atque principes. HÆC nostra,} quæ in his libris persequimur è Stoicorum sententia. FINITIMA vestris,} de quo dixit in proemio libri primi. Nostra legens non multum à Peripateticis dissidentia. Quia

Stoici,

Stoici, quos in his libris Cicero sécutus est, idem ferè quod Peripateticæ, de officio sentiebant.

## C I C E R O .

**Q**VINQUE igitur rationibus propositis officijs persen-  
tienti; quarū due ad decus, honestatē, opes, facultates,  
quintā ad eligendi iudicium: si quando ea, quæ dixi,  
pugnare inter se viderentur, honestatis pars perfecta  
est: quam quidem tibi cupio esse notissimam. hoc autem,  
de quo nunc agimus, id ipsum est, quod utile ap-  
pellatur. in quo verbo lapsa cosuetudo deflexit de via,  
sensimque eo deducta est, ut ab honesto utile secerne-  
re, & constitueret honestum aliquod quod utile non  
est: & utile, quod non honestum, qua nulla pernicio-  
maior hominum vita potuit afferri. Summa quidem  
auctoritate philosophi, senecte sancitatemque honestetè, hac  
tria genera, confusa cogitatione, distinguunt: quidquid  
enim iustum sit, id utile etiam esse censem: itemque,  
quod honestum, idem esse iustum. ex quo efficitur, ut,  
quidquid honestum sit, idem sit utile, quod qui parum  
prospiciunt, hinc saepe, versutos homines, & callidos  
admirantes, eorum malitiam, sapientiam iudicant.  
quorum error eripiens est: omnisque opinio ad eam  
suum traducenda, ut honestis consilijs, iustisque factis,  
non fraude, & malitia, se intelligent ea, quæ volunt,  
consequi posse. Que ergo ad vitam hominum tuen-  
dam pertinent, partim sunt inanimata, ut aurum, ar-  
gentum, ut ea, quæ dignuntur è terra, ut alia eiusdem  
generis: partim animalia, quæ habent suos impetus,  
& rerum appetitus. eorum autem alia rationis exper-  
tia sunt, alia ratione utentia. expertes rationis sunt

equi, boues, reliqua pecudes, apes, quarum opere efficitur aliquid ad hominum usum, atque vitam. Ratione autem utentium duo genera ponuntur: unum deorum, alterum hominum. deos placatos pietas efficiet, & sanctitas. proximè autem, & secundum deos, homines hominibus maximè utiles esse possunt. Earumque item rerum, quæ noceant, & obsint, eadem diuisio est. sed, quia nocere deos non putant: his exceptis, male hominibus plurimum obesse, rectè arbitrantur. Sed enim ipsa, quæ inanimata diximus, pleraque sunt hominum operis effecta: quæ nec habemus, nisi manus, & ars accessisset: nec his sine hominum administratione uteremur. neque enim valetudinis curatio, neque nauigatio, neque agricultura, neque frugam, fructuumq. reliquorum perceptio, & conservatio, sine opera hominum, villa esse potuisse. Nam vero, & earum rerum, quibus abundaremus, exportatio, & earum, quibus egeremus, innectio certè nulla esset, nisi his muneribus homines fungerentur. Eademq. ratione nec lapides exciderentur è terra ad usum nostrum necessarij, nec ferrum, aurum, es, argentum effoderetur penitus abditum, sine hominum labore, & manu. Tæta vero, quibus & frigororum vis pelleretur, & calorum molestias darentur, unde aut initio generi humano dari potuissent, aut postea subueniri, si aut vi tempestatis, aut terra motu, aut vetustate cecidissent, nisi communis vita ab hominibus harum rerum auxilia petere didicisset? Ade ductus aquarum, derivationes fluminum, agrorum irrigationes, moles oppositas fluctibus, portus manu factos: quæ unde sine hominū opere habere possemus? Ex quibus omnibus, multisq. alijs, perspicuum est, qui fructus, quæq. utilitates ex rebus ijs, quæ sunt inanima-

te, percipiuntur, eas nos nullo modo sine hominum manu, atque opera capere potuissé. Qui denique ex bestiis fructus, aut qua commoditas, nisi homines adiuvarent, percipi posse? nam & qui principes inuenienti fuerunt, quem ex quaque bellua usum habere possemus, homines certè fuerunt: nec hoc tempore sine hominum opera aut pascere eas, aut domare, aut tueri, aut tempestiuos fructus ex his capere possemus: ab eisdemq. & ea, quæ nocent, interficiuntur: & quæ usui possunt esse, capiuntur. Quid enumerem artium multitudinem, sine quibus vita omnino nulla esse potuisse? quid enim agris subueniret? quæ esset oblectatio valentium, qui virtus, aut cultus, nisi tam multa nobis artes ministrarent? quibus rebus exculta hominum vita tantum destituit à virtute, & cultu bestiarum. Vrbes vero sine hominum cœtu non potuissent nec edificari, nec frequentari: ex quo leges, moresque constituti, tum iuris & aqua descriptio, certaque viuendi disciplina: per quas bene, beatèq. vivitur, quas res & mansuetudo animorum consecuta, & verecundia est: efflumq. est, ut esset vita munitior, atque vt, dando, & accipiendo, permutandisq. facultatibus, & cōmodis, nulla re egeremus. Longiores hoc loco sumus, quam necessè est: quis est enim, cui non perspicua sint illa, quæ pluribus verbis à Panacio commemorantur, neminem neque ducem in bello, nec principem domi magnas res, & salutares sine hominum studijs gerere potuisse? Commemoratur ab eo Themistocles, Pericles, Cyrus, Agesilaus, Alexander: quos negat sine adiumentis hominum tantas res efficere potuisse. Vitetur in re non dubia testibus non necessarijs.

## EXPLANA TIO.

**Q**VINQUE igitur rationibus propositis officij persequendi, quibus de honesto, duabus de utili: de honesto, vtrum aliquid honestum sit, an turpe, & duobus propositis honestis, vtrum honestius: de utili, vtrum aliquid utile, an inutile, & duobus propositis utilibus, vtrum utilius: quinque, de iudicio deligandi, si quando id, quod ad honestatem pertinet, cum eo, quod ad vitæ commoda, pugnare videretur. In hac diuisione dissentire lè à Panætio fatetur his verbis, lib. I. Triplex est, vt Panætio viderur, confilii capiendi deliberatio. nam, honestum ne factu sit, an turpe, dubitant, id quod in deliberationem cadit: in quo considerando sàpè animi in contrarias partes distrahuntur. Tum autem inquirunt, aut consultant, ad vitæ commodatatem, iucunditatēmque ad facultates rerum, atque copias, ad opes, ad potentiam, quibus & se possint iuare, & suos, conducat id, nec ne, de quo deliberant: quæ deliberatio omnis in rationem utilitaris cadit. Terruum dubitandi genus est, cùm pugnare videtur cum honesto id, quod videatur esse utile. cùm enim utilitas ad se rapere, honestas contra reuocare ad se videtur: fit, vt distrahatur in deliberando animus, afferatq. ancipitem curam cogitandi. Hac in diuisione, cùm, præterire aliquid, maximum vitium in diuidendo sit, duo prætermissa sunt, nec enim solum, vtrum honestum, an turpe sit, deliberari solent etiam, duobus propositis honestis, vtrum honestius: itēmque, duobus propositis utilibus, vtrum utilius, ita, quam ille triplicem putauit esse rationem, in quinque partes distribui debere reperitur. Primum igitur est de honesto, sed dupliciter, tum pari ratione de utili, post de comparatione eorum differendum. **O**fficij persequendi: officij inueniendi: vt agatur id, quod si omittatur, contra officium est. **Q**VAM due ad decus, honestatēmque pertinent, de quibus libro superiore dictum est. **D**VAE ad commoda vitæ, de quibus hoc libro dicetur. ideo subiungitur: Hoc autem, de quo nunc agimus, id ipsum est, quod utile appellatur. **Q**VINCTA ad eligendi iudicium, de qua nihil scriptit Panætius, cùm tamen se esse scripturum promisisset. Cicero autem hac de ratione lib. III. copiosè disputat. **E**A, que dixi, ea, quæ ad honestatem, & ea, quæ ad commoda vitæ pertinent. **P**VGNARE inter se, aliquid esse utile, quod & honestum: & contraria. **H**ONESTATIS perfecta est: absoluta à nobis libro superiore:

in

in quo, quemadmodum ab honestate officia ducentur, ostendimus. **Q**VAM quidem tibi cupio esse notissimam, quam cupio diligenter legas: vt actiones, & studia tua ad decus, honestatēmque dirigas. **I**N quo verbo lapsa consuetudo **S**alustius, in oratione Catonis: Iampridem equidem nos vera rerum vocabula amissimus: quia, bona aliena largiri, liberalitas: malorum rerum audacia, fortitudo vocatur. **P**lato IIX. de rep. eiusmodi vocum inuersiones corruptis per paruam educationem animis acceptas resert. **T**eret, ait, πεισθαινον κελούντες ειπόγειαν διεπέργειαν, διωτιαν μεχανοπέργειαν, διεπέργειαν διεπέργειαν. **P**lutarchus Alcibiadem huius perueritatis auctorem scribit. Et idem Plut. de discrimine adulatoris, & amici Thucydidem auctorem citat, hoc in seditiōibus maximè, ac bellis fieri, vt solita vocabulorum dignitas non his tribuatur factis, quibus oportebat, sed accommodet his, quæ siebant, siquidem audacia temeraria, fortitudo contentioſa iudicetur, cunctatio prouida, timidas decora: contra modestia nomine prætextetur ignavia, & diligēs in omni re prudentia segnities habetur. **D**EFLEXIT de via, Naues decadere suo cursu, dixit Cæsar extremo lib. III. de bello ci. Quo loco, Deflectere, libentius legerem. **S**ENSIMQ. eo deducta est, sensim: quia non statim homines improbi sunt: verū, ubi semel de virtutis via deflectere coepit, sensim in turpisima vita deducuntur, vnde illud Satyrici poëta:

Nemo repente fuit turpissimus.

**N**VL A *pernicias maior* omittitur enim sàpè honestum propter vitæ commoda: & utile putatur, quod re vera non est. **S**VMM A *quidem auctoritate philosophi* Socrates apud Platonem lib. IIX de rep. **S**EVERE sane, atque honeste non leui ter, neque temerè. **H**AEC tria iustum, utile, honestum: quæ sua natura cohærent, nec diuelli possint. **G**ENERA confusa, vnum enim omnium genus est: nec distingui possunt, quod ad genus attinet, nam iustum, utile, honestum simul sunt & qui iustum dicit, idem utile: qui utile, idem iustum; qui honestū idem utile. **C**O G I T A T I O N E distinguuntur, vt species, quo modo philosophi loquuntur, vni subiectæ generi distinguuntur: nam equus, & homo specie differunt, genere idem sunt. **I**DEM esse iustum. Id, est in septé veteribus. Esse, abest à tertio libro & duobus aliis veteribus. **Q**uod qui parum prospiciunt, qui non intelligunt, quidquid honestum

P

fit, vtile idem esse. *Parum proficiunt:* qui id modò, quod ante pedes est, vident, nec in longitudinem consulunt: vt ait Terentius. *V E R S V T O S homines, & callidos }* qui ab honesto vtile secernunt: & quia copias, opes, facultates fraude, & malitia adipiscuntur, vulgo sapientes existimantur. *V ersutos: τολμαντούς, καὶ παραπόρους:* qualem Philippum Demosthenes, Vlrixem Poëta describunt. qui in omnem partem versant animalium, nihilo intentatum relinquent, quo suis rationibus consulturi esse videantur. *Callidos:* diuturno rerum vsu ita eruditos, ex aliorum incommodis sua vi parent commoda, vel loquitur Comicus, nec à malis artibus abhorreant. Cicero de nat. de. Versutos dicit, quorum celeriter mens versatur: Callidos, quorum tanquam manus opere, sic animus vsu conciliuit. *HONESTI consilii,* } quod est prudentiae. *I V S T I S facti,* } quod est iustitiae: cui fortitudo, & temperantia se comites adiungunt. *Q V A E ergo &c.* } Nunc ingreditur disputare de iis, quæ vtilia hominibus sunt: quæ duo sunt. quædam animalia, vt homines: quædam inanima, vt argentum, aurum, arbores. ex quibus duo alia nascuntur, quæ prosunt hominibus, & quæ nocent: ex iis, quæ prosunt, duo etiam nascuntur: quædam rationis expertia, vt equi: quædam, quæ ratione vtuntur, vt homo. Ex iis vero, quæ nocent, duo etiam nascuntur, quædam inanima, vt gladij: quædam vero animalia, vt scorpiones, sed omnia mala ex homine nascuntur, teste Plin. Hac Ciofanus, *P A R T I M sunt in anima,* } non, Inanimata; ex antiquis libris quinque, & Tertij: & ex Nonio: cuius hac sunt: Inanima, sine anima. Cic. de Off. lib. II. &c. Et Hortensio: Nam, cum omnis sollertia admiranda est, tum ea, quæ efficit, vt inanima quæ sunt, vivere, & spirare videantur. Cicero autem Animal pro Animatum, Inanimum, pro Inanimatum, dixit. *A V R V M, argentum,* } quæ ipsa per se nec bona nec mala sunt, sed pro eorum, qui vtuntur, mente vel prodeesse solent hominibus, vel obesse. Cicero neruos reip. Pecuniam dicit: sine qua Demosthenes nihil decenter fieri posse, nec vtiliter, in Olynthiacis dixit. *Q V A E gignuntur ēterra,* } fruges, fructus, ligna, herbae, tam publio, quam medicinæ seruientes. *Q V A E habent suos impetus, & rerum appetitus,* } siue ratione prædicti sint, siue rationis expertia. sed ex ratione præditis excipit omnino deos, sic enim est putandum: quamquam subiungit, Vnum deorum, alterum hominum. nam,

quis

quis cum tribuisse deis impetus, & rerum appetitus existimet? Et tamē fuerint, qui hoc sentire hoc loco Ciceronē crederent. *B O U E S,* } Plinius lib. IIX. cap. 45. Socium laboris, agric. culturae habemus hoc animal, tanta apud priores cura. vt sit inter exempla damnatus à populo R. qui concubino procaci rure orasum edisse se negante, occiderit bouem, actusque in exsūlum, tamquam colono suo interempto. Et Ciceronē de nat. de. scelus esse habitum scribit, vesci huius animalis visceribus. *B Ā E S* vnde etiam Boues, Latina vox, *δέντες βόεν*, id est palcendo, dicti sunt. *R E L I Q V A E pecudes, apes, quarum opere efficitur aliquid ad hominum usum, atque vitam,* } sic malo, quam Opera, suffragantibus meis tredecim antiquis libris, & Tertii. brutis enim, ratione carentibus, Opus tribuo libentius, quam Operam, nain, quod obicitur, Opere perfectam rem significari, hoc non mouetur. potest enim Ciceronē dicere, his rebus, quas equi, boves, reliqua pecudes, apésq. perficiunt, adiuvari vitam hominum. Sed, quid, si Opus interdum non id, quod effectum iam est, sed id, quod efficitur, accipiamus? Ego Latinè dici posse credam, & de rusticis hominibus, & de equis, boibus, reliquisq. pecudibus: In opere versantur, id est, vt opus faciant: cum eorum labor nondum ad rei exitum peruererit. Lambino magis placuit, Opera, quam Opere: cum quo facit unus & meis veteribus libris, mihi, vt dixi, Opere, magis, quam Opera. Sequor autem, prater ea, quæ dixi, Ciceronem ipsum, qui paullo post, Addē, inquit, ductus aquarum, deriuaciones fluminum, agrorum irrigationes moles oppositis fluctibus, portus manu factos: quæ non sine hominū opere habere possemus. Et Secundæ res, honores, imperia, victoriae, quamquā fortuita sunt, tamen sine hominū operibus, & studiis neutrā in parte effici possunt. Quibus ex locis, Opus, non id tantū esse, quod factum est, vt Lambinus putat, vnde mutandi consilii cepit, verum etiā id, quod fit, non obscurè intelligitur, atque etiam, vt sensus meus est, plus quiddam inesse videtur in Operæ, quam in Opera. *A pes: quarum remp. cùm descriptisset Virgilius, subdit:*

*His quidam signis, atque hæc exempla secuti,*  
*Effice apibus partem diuinæ mentis, & haustus*  
*Ætherios dixerat.*

*Aliquid: quanti sunt*

*Aërij mellis cælestia dona?*

*Aliquid: cuncta enim hominum gratia creata. Aristot. Polit. i. Cicero de nat. de. ii. Socrates apud Xenophontem, lib. iv. Ηλληνικονευματων. Hominum: non dixit, Hominis: sed, Hominum: ut hominum avaritiam magis notaret. Dvo genera ponuntur: } Ponunt, est in vndecim meis, & tertij. Deos placatos } idest, propitios, viteq. hominum vtiles. nam hic agitur de vtilitate, qua ex animalibus ratione vten- tibus percipitur. PIETAS } iustitia aduersus deos. SAN- C T I T A S. } scientia colendorum deorum. Vide Euthyphro nem Platonis. PROXIME autem, secundum deos, } Et, a- best ab uno vetere libro. ITEM } Iterum, veteres decem. Deos nocere non putant, } quos non tantum non nocere, sed neque prodeſſe affirmarunt Epicurei. Lucretij versus sunt:*

Omnis enim per se diuum natura necesse est  
Immortali æuo summa cum paco fruatur,  
Semota à nostris rebus, sciunctaq. longè.  
Nam priuata dolo re omni, priuata periclis,  
Ipsa suis pollens opibus, nil indiga nostri,  
Nec bene pro meritis capit, nec tangitur ira.

Deos non nocere, ait Socrates apud Platonem in Theæteto: Πότερον τοῦτο εἰ δένει, οὐδὲ τὸ δέος δύνεται αἰδεῖσθαι. His exceptis, } has duas voces quidam delér, cōtra veterū omnium librorum fidem: sententiāque eas non respuit: quodque me in primis mouet, eas retinet Seruius Aen. lib. xii. HOMINES hominibus } hinc, Homo homini deus, Homo homini lupus. OBSESS, } si oderint, & contemnant. VEL prodeſſe: si amant, & admira- rentur. VEL prodeſſe: absunt hæ duæ voces à sex meis libris veteribus, & Tertij: nec eas agnoscit idem Seruius. QVÆ in anima diximus, } aurū, argentū, & ea, que gignūtur ex terra, sic octo veteres, & Tertij. PLEIAQVE sunt hominum operis effecta: } sic antiqui lib. 7. & Tertij. Ab homine omnis manat vtilitas. FRVGVM, fructuūq. reliquorū perceptio, } in dialogo de Senect. Frugum: de frumento, & leguminibus. Fructuūq. de arborum fetibus. CONSERVATIO } de qua Columella, & alij. IAM verò, earum } Plato lib. ix. de Leg. eiusmodi rerum, vestigalia damnat. Τέλος ἡ εἰ τῇ πολεῖ μηδὲν τίλειν, μήτε ἔξαρθριν, μήτε εἰσαρθριν. Λεπά- την ἡ, καὶ οὐτα τεῖς δεῖν, τε τοιαῦτα εἰς ἔντικε. Συμάρτυρα, καὶ πορρότερα, καὶ οὖτοι βασιλεῖς χώραστα μὴ φεύγοντα της χώρας, οὐτε πινα ἀλλων τέχνων διορθίων, ξενικῶν πινα ἐπιχωρίων, μηδὲν ἀγαγόντων χέριν, μητε-

ζήτω, μήτε εἴ τοι εἰ τη χώρᾳ εἰναγόστως ἐψήσετο. EARVM verum, quibus abundaremus, exportatio, earum, quibus egeremus, inuestio } quarum rerum munera Cicero his hominibus tribuit, earum cauſa nummi vſum inuentum esse dixit Aristoteles lib. i. Pol. Σενατερας, inquit, πορφύριον τη βασιλείας, τῷ εἰσι- γειδεῖ, οὐτε δέ τις, καὶ τοιαῦτα εἰς ἐπιτάχον, οὐτε αἴρεις οὐ τούτου σημα- τος εἰσιγένη χρήσις. Cuius sententiæ primam partem, de expor- tatione, & inuestione rerum Cicero in hunc locum transtu- lit: secundam, de nummi vſu, cùm ipse de hominibus loque- retur, omisit. A RV M, as, argentum } Hæc non vſui, aut neceſſati, sed luxui, tribuit Plinius in præfatione libri xxxix. Et Ouid. Metam. i.

Nec tantum segetes, alimentaq. debita diues  
Poscebatur humus, sed itum est in viscera terre:  
Quas recon siderat, Stygijsq. ad nouerat vmbbris.  
Effodiuntur opes, irritamenta malorum.  
Iamq. nocens ferrum, ferroq. nocentius aurum.

AVT postea subueniri, } Potuſſet subaudiri necesse est. Sub- uenire tamen, veteres vndecim, & Tertij. In vno, Neque subue- nire. HARVM rerum auxilia } vertit Græcum verbum. Ar- istotelis. nam. Pol. i. Η γέρ, inquit, πορφύριον τῷ αἴρεις πορφύριον, πορφύρα τῷ μηδέγον γεων. DVC TVS aqua- rum, } de quibus exstant Sex. Ilii Frötini libri duo, quos, pro- pediemà meemendatos, Scholijsq. illustratos, edendos curabo. DERIVATIONES fluminum, } cùm vnuſ alueus in plures diducitur, ad vrbium, agrorum, nauigationumq. commodita- tem. MOLIS oppofitas flutibus, } aggeres, ad maris, flumi- num, stagnorum exundationes prohibendas. Virg. Georg. ii.

An memorem portus, Lucrinoq. addita clauſtra?  
Atque indignatum magnis stridoribus æquorę  
Et Horatius lib. iii. Od. 2.

Contracta pisces æquora sentiunt,  
Iactis in altum molibus: huc frequens  
Cæmenta demittit redemptor  
Cum famulis, dominusq. terræ  
Falsidjouis.

QVÆ vnde sine hominum opere habere possumus, } sic decem veteres libri, & Tertij. vnuſ, Posimus? vnuſ, Quæ sine labore habere non possumus. Antea pro Vnde, Non, legebatur. Melior autem lectio est, quam in libro meo imprimi curau.

**E**x quibus omnibus,} haec tenus inanimata non minavit. **S** VNT, Sint, quatuor libri, & Tertij. **I**N A N I M A T A E, } duo, & tertij. In animatares, inanimae. **Q** VI denique } nunc de animatis, quae ipsa tine hominis iudicaria nullum fructum ferret, aggreditur dicere. **Q** VI denique ex bestiis fructus, aut que commoditas, nisi homines adiuvarent, percipi posset? } quod Aristoteles dixit lib. I. Politicorum: Bonitia iherat neq; ratiō iūēzō ζωή. **Q** VI principes inueniendi fuerunt } qui primi inuenierunt. **H** O M I N E S certe fuerunt: } vt Saturnus, Pallas, Ceres, Bacchus, opinione, & fama hominum dij facti. **P** A S C E R E, } male alios, Equos, nam ad bellus refert hoc totum, Patcere, domare, tueri, tempestitos fructus ex hiscipere, quod comprobatur quatuor veterum librorum, & Tertij testimonia. **Q** VI D enumera artium multitudinem, } Ouidius:

Scilicet ingenium placida mollitur ab arte,  
Et studio mores conuenienter eunt.

**Q** VI D enim ægris subueniret, } ita est in sex vet. lib. Vnus, **Q** uis enim ægris subuenisset? Tres, **Q** uis enim ægris subueniretur? Tertij, **Q** ui enim ægris subuenisset? Ciofanus placet, **Q** ui enim ægris subueniretur? **T** A N T V M deficit à vieti, & cultu bestiarum. } sic nouem veteres libri, & Tertij: pro, tantum discessit, vonus, Desistit, alius, Deficit. Lambinus mutat, & reponit, Disitit: cū quo faciunt tres libri: mihi, cur mutatio fiat, causa non videtur. & Disitit, inusitatum est, quod etiā si visitatum esset, legerem libentius, Disit, cur enim dicat. ijs rebus excultam hominum vitam, à vieti, & cultu bestiarum tam diuersam fuisse: potius quam, tam diuersam esse? Deficit, legit Ciofanus. **V** R E S vero sine hominum cætu } de Somnio Scipionis: Nihil est illi principi deo, qui omnes hunc mundum regit, quod quidem in terris fiat acceptius, quam concilia, cœtusq. hominum iure sociati, quae Ciuitates appellantur. **I** V R I S aqua descriptio, } lib. I. dixit, Iura describere, magistratus officium esse. Descriptio Tertij liber. **P** ER QUAS bene, beatęq. viuitur, quas res &c. } Per quas bene, beatęq. viuitur, non legitur in illo veteri libro. **E** F F E C T U M Q. est, } abest, Est, à duobus veteribus. **V** T effet vita munitor, } legibus intra urbem, mœnibus aduersus exteram vim. **M** unitor: minus obnoxia iniurijs tempestatum, grassationibus ferarum, & eorum violentiae, qui robore sunt superiores. **P** E R M V T A N D I S Q. facultatibus, } quod veteres facere solitos esse, ait Sallustius,

Iugurtha

Iugurtha: Vino aduectio mutare &c. **I**n bello, } omnes veteres, Bello, vnus, Belli, fortasse non male. **C** Y R V S, } Camby sis filius, Persarum rex, qui magnis rebus gestis, postremo à Thomiri, Scytharū regina, cū ducetis Persarum millibus cæsus est. Nominari debuit, si ratio temporum habeatur, ante reliquos quatuor. **A** L E X A N D E R: } ætate ultimus, rerum gestarum gloria omnium præstantissimus. **V** T I T V R IN RE non dubia testibus non necessariis, } hoc est, exemplis. Argumenta, teste Quintiliano, confessia ob id esse debent, quia dubijs adhibentur. Quid ergo opus est, in rebus confessis, & minimè ambiguis, inanem operam sumere? Alibi: Vbirerū testimonia adsunt, quid opus est verbis?

### C I C E R O.

**A** T Q V E, ut magnas utilitates adipiscimur con spiratione hominum, atque consensu: sic nulla tam detestabilis pestis est, quæ non homini ab homine nascatur. est Dicæarchi liber de interitu hominum, peripatetici magni, & copiosi: qui, collectis ceteris causis, elunionis, pestilentie, vagitatis, belluarum etiam repentina multitudinis, quarum impetu docet quadam hominum genera esse consumpta, deinde comparat, quanto plures deleti sint homines hominum impetu, id est bellis, aut seditionibus, quam omni reliqua calamitate. Cum igitur hic locus nihil habeat dubitacionis, quin homines plurimum hominibus & pro sint, & ob sint: proprium hoc statuo esse virtutis, conciliare sibi animos hominum, & ad usus suos adiungere. itaque, quæ in rebus inanimis, quaque in usu, & tractatione belluarum fiunt utiliter ad hominum vitam, artibus ea tribuuntur operosis: hominum autem studia, ad amplificationem nostrarum rerum prompta, ac parata, virorum præstantium sapientia, & virtute excitatur. Etenim virus fere omnis in tribus rebus vertitur: quarum una est in perficiendo, quid in quaue

re verum, sincerumq. sit, quid consentaneum cuique, quid consequens, ex quo queaque gignantur, qua cuius que rei sit causa. alterum, cohibere motus animi turbatos, quos Graci πάθη nominant: appetitiones, quas illi oppræbunt obdientes efficere rationi. tertium, ijs, qui buscum congregamur, uti moderate, & scienter, quorum studijs ea, qua natura desiderat, expleta, cum alataque habeamus: per eos denique, si quid importetur nobis incommodi, propulsimus: vlciscamurq. eos, qui nocere nobis conati sunt; tantaq. pœna afficiamus, quantam aequitas, humanitasq. patitur.

## EXPLANA T I O.

**C**ONSPIRATIONE hominum, atque consensu: } In Rul-  
lum: Conspirate nobiscum, consentite cum bonis. De  
Fin. Aliqui magna amoris conspiratione consentientes. In  
Epist. Mirabiliter, omnium gentium, atque ordinum con-  
sensus ad liberandam remp. conspirauit. In iisdem vero  
Epist. Conspirationis nomine vsus est. Hæc conspiratio, &  
concordia omnium ordinum ad defendendam libertatem.  
In Catil. Tanta conspiratio bonorum. Pro domo: Hæc nostra  
conspiratio in rep. bene gerenda. **N**V L L A tam detestabilis  
peccatis est, que non homini ab homine nascatur. } homini enim ab  
homine pessima queaque nascuntur: & homo homini plus,  
qua res alia omnes, siue animatae, siue inanitatae, nocet. Di-  
CÆAR C H I } Surdas: Dicæarchus, Phidæ F. Siculus, Mes-  
senius, Aristotelis auditor philosphus, orator, geometer. Scri-  
psit dimensiones montium Peloponnesi. Græciæ vitam libris  
III. Rempublicam Spartiarum: qui liber ut quotannis in  
Ephororum prætorio puberibus auscultantibus recitatetur,  
lege sancitum fuit apud Lacedæmonios, & longo tempore  
obseruatum. Cicero Tusc. 1. Aristoxeni condiscipulum, &  
æqualem facit, deliciâque suas appellat, eumq. tres libros scri-  
psisse ait, quibus Lesbaci titulus, in quibus animam nihil esse  
docuerit. Laertius ait, eum Platonis scribendi genus impro-  
basse. **P**ERIPATETICImagni, & copiosi: } celebris, tam  
doctrina

doctrina rerum, quam dicendi facultate instructi. **C O L L E-**  
**C T I S** ceteris causis, } alijs legunt, Exteris, vt illæ significantur,  
qua non oriuntur ab ipsis hominibus, sed extrinsecus quo-  
dam modo sunt. Tres ex eis non habent verbum Ceteris.  
Alij omnes, & Tertijs. Ceteris. **E** L V V I O N I S, } καταλυσμæ,  
inundationis. **V** A S T I T A T I S, } vide Prouerb. Optimum  
non nasci. **B** E L L V A R V M etiam repentina multitudinis, } vt  
ranarum, & murium. **D** E I N D E comparat, } vide Prouerb.  
Dulce bellum in expertis. **C** O N C I L I A R E sibi animos homi-  
num, } octo ex meis, & Tertijs, non habent particulam Sibi.  
**A** D Y U S suos adiungere } efficere, vt re, opera, consilio nos iuuent.  
**I** N v s u s, & tractatione } Vsu, &c, non legitur in undecim meis, &  
Tertijs. **A** R T I B U S operosis: } quæ in opere consistunt, non  
à sapientia, & virtute proficiuntur: que manum, laboremque  
polulant: nonq. H O M I N I V M autem studia virorum prostan-  
tium sapientia, & virtute excitantur. } homines conciliantur, sa-  
piencia, & virtute. **A** D amplificationem nostrarum rerum } ad utili-  
tatem nostram: vt consenserunt, augeanturq. res nostræ. nam  
in amplificatione conseruantur. **V** I R T U S ferè omnis: }  
qua in hominem cadere possit, & qua nobis animos homi-  
num conciliat, ad vñusq. nostros adiungat. **V**irtus ferè omnis:  
Virtutem diuidit in Logicen, Ethicen, & Politicen. Virtu-  
tem autem pro Philosophia dixit. Vnde Seneca Epist. lib.  
xiv. Philosophia sine virtute non est, nec sine philosophia virtus.  
**V** E R T I T V R. } consistit, tribus rebus continetur. **Q** V A-  
R V M vna est in perspiciendo, quid in quaque re verum, sincerumq. sit, }  
hæc prudentia est, de qualib. i. Omne, quod honestum est, aut  
in perspicientia veri, sollertiaque versatur. **S** I T causa, } un-  
decim mei, & Tertijs, ordine præpostero, Causa sit. **A** L T E-  
R V M } dixit: Omnis ferè virtus in tribus rebus vertitur: qua-  
rum vna est: nunc subiungit, Alterum: pro, Altera res. **C** O H I-  
B E R E motus animi turbatos, } hæc, temperantia. **V** T I moderate, }  
hæc, industria. **P** E R eos denique, } rectius, vt in antiquis libri-  
bris, Per eosdemque, **T** A N T A Q. pœna afficiamus, } pergit in  
describenda iustitia. Fortitudinem omitti miror. propterea  
dixit: Virtus ferè omnis in tribus rebus vertitur: non in quatuor.  
infra tamen perspicue fortitudinem describit, cum ait:  
Hæc animi despiciencia admirabilitatem magnam facit. Et  
lib. i. Omne, quod honestū est, id quattuor partium oritur ex  
aliqua: non, ex tribus. **T** A N T A, &c. quantum } in puniendo

modus est ab humanitate præscriptus. *Æqvitas, humanitasque* ne & iræ indulgeatur, & crudelitas in viatos exercetur. *HUMANITAS* hominem enim clementiam magis det, quam crudelitas.

## C I C E R O.

**Q**uibuscum rationibus hanc facultatem afferimus, ut hominū studia complectamur, eaque teneamus, dicemus, neque ita multò post, sed pauca antè dicenda sunt. Magnā vim esse in fortuna, in utramq. partem, ad secundas res, vel aduersas, quis ignorat? & cùm prospero statu eius vimur, ad exitus peruehimus optatos: & cùm reflauit, affligimur. hac igitur ipsa fortuna ceteros casus rariores habet: primum ab inanimis procellas, tempestates, naufragia, ruinas, incendia: deinde ab bestiis ictus, morsus, impetus. hac igitur, vt dixi, riora. at vero interitus exercitiū, vt proximè trium, saepe multorum: clades imperatorum, vt super summī, ac singularis viri: iniuria præterea multitudinis: atque ob eas bene meritorum saepe ciuium expulsiones, calamitates, fuga, rursusq. secundæ res, honores, imperia, victoria, quamquam fortuita sunt, tamen sine hominū operibus, & studiis neutrā in partem effici possunt. hoc igitur cognito, dicendum est, quonam modo hominū studia ad utilitates nostras allicere, atq. excitare possumus. quæ si longior fuerit oratio, cum magnitudine utilitatis comparetur: ita fortasse etiam brevior videbitur. Quacunque igitur homines homini tribuunt ad eum augendum, atq. bone standum: aut benevolentia gratia faciunt, cùm aliqua de causa quæpiam diligunt: aut honoris, si cuius virtutem suscipiunt, & si quem fortuna dignū quam amplissimā

sima putant: aut cui fidē habent, & bene rebus suis consulere arbitrantur: aut cuius opes metuunt: aut cōtra, à quibus aliquid expectant, vt cùm reges, popularésve homines largitiones alias proponunt: aut, postremo, pretio, aut mercede ducuntur, quæ sordidissima quidem est ratio, & iniquissima ipsi, qui ea tenēt, & illi, qui ad eam cōfugere conātur, malè enim se res habet, cùm quod virtute effici debet, id tentatur pecunia. sed, quoniam nonnumquam subsidium hoc necessarium est, quemadmodum sit utendum eo, dicemus, si prius ipsi de rebus, quæ virtuti propiores sunt, dixerimus. Atque etiā subiiciunt se homines imperio alterius, & potestati pluribus de causis. ducuntur enim aut benevolētia, aut beneficiorum magnitudine, aut dignitatis praestantia, aut spe, sibi id utile futurum: aut metu, ne vi parere cogantur: aut spe largitionis, promissionisq. capti: aut, postremo, vt spe in nostra rep. videamus, mercede conducti.

## EXPLANTATIO.

**M**AGNAM vim esse in fortuna in utramque partem, } hæc interponit, vt occurrat obiectioni. dicet enim aliquis: A fortuna proficiuntur omnia: quid ego de studiis hominum labore? Respondebit: fortuitæ quidem secundæ res, honores, imperia, victoria, tamen sine hominum operibus, & studiis neutrā in partem effici possunt. *Magnam vim esse in fortuna:* Demosthenes Olynth. 2. *Μεγάλην φύσιν μέλλω δέ, ὅτεν τούτη πράξις ιστὰ τὰ τῶν αὐθεῖνων ορείχεται.* Iuuenalis verò fortunam irridet:

Nullum numen abest, si sit prudentia. Sed nos  
Te facimus, fortuna, deum, cæloque locamus.

Vide Laet. Firm. lib. 3. cap. 29. *A d exitus peruehimus optatos,* } vt in portum. *A FFLIGIMVR.* } vt in scopulis. *V t proximè trium,* } in Pharsalia, in Africa, in Hispania;

ducibus, in Pharsalia, Pompeio Magno: in Africa, Scipione Pompeij socero, & Iuba Mauritaniae rege: in Hispania, Pompeii liberis. *S v m i, ac singularis viris:* Pompeij Magni. *B E N E* meritorum ciuium expulsiones, *{* exempla sunt apud Valerium lib.5. cap. de Ingratia. *N e v t r a m in partem effici possunt:* neq. aduersa res, vt interitus exercitium, neque secundae vt honores. *H o c i g i t u r cognito:* benevolentiam conciliat ab utilitate. *Hoc i g i t u r cognito:* ex quo intelligitur, allicienda esse hominum studia ad virtutes nostras. Narrat sex præcipias esse causas, quæ homines saepe commouere solent, vt aliis faueat. quidam mouentur benevolentia Gratia. 11, quidam opinione virtutis. 11, fide 4, quia rebus suis bene cōsulere arbitrantur. v. metu. vi, mercede conducti. quia ab illis aliquid exspectant, vt fecit Cæsar diuisiones agrorum: vt etiā Claudius adduxit multos mercede, vt sibi faueret. Hæc Ciōfanus. *Q V A E C V M Q U I G I T U R &c.* *{* causæ, cur quidque fiat ab hominibus erga homines. Sunt autem sex. *A d e u m a u g e n d u m,* id est, ad augendum eius diuitias, potentiam, & eam auctoritatem, quæ ex iis oritur. Et est Graeca phrasis, ἀξέρειν οὐδεν. Demosthenes Olynth. 1. Nā dē, τὸ μὲν πατρί, τὸν περιέμενον, τὰ δὲ μίσθια αὐτῷ οὐδενι σχίσαι καλάς πανυπόστατου, θάνατος. A bīvētū, Φιλιππού, γηγενήσατο μετακούσιον, πλικούσιον, κλίνον, οὐδέτες παρθενεῖς γέρων Μακεδoniās. *H O N E S T A N D V M:* honoribus cumulandum. *H O N O R I S, si cuius virtutem suscipiant,* Plautus Amphitruone:

Virtute ambi te, non fauitoribus.

Cicero ad Appiū, ep. vlt. lib. 3. Insignia virtutis multi etiam sine virtute assecuti sunt: talium virorum tanta studia assequi sola virtus potest. Et ad Plācūm. lib. 10. epi. 3. Omnia summa consecutus es, virtute duce, comme fortuna. *E t si quem fortuna dignum quam amplijs:* Quemq. fort. d. q. habent sex mēti, & Tertij. *C v i s fidem habent,* expulsis regibus, primis consilibus. *C v i s opes metuunt:* quas periculosis in rep. esse, si magnæ sint, ait Plato: quod, eas qui possident, nisi eis magistratus pro' eorum libidine deferantur, libertati publicæ infidias struunt. *Q v i ea tenentur,* qui mercede ducuntur. *A d eam configere* *{* vt pecunia corrumpant eos, à quibus aliquid expetunt: cùm id, quod cupiunt, virtute potius consequi debeat. *M A L E* enim *se res habet,* videtur Atisfotalem imitatus lib. 2. Pol. cap. 9. Φαῦλον τὸ τέλος μεγάσει ὅτι τέλος εἶναι τὸν αρχόντα, τὸν βασιλέα, τὸν σεπτηνίαν. Propterea Macedonū rex Philippus

Alexan-

Alexandrum filium, quod largitione Macedonum animos consecaretur, in epistola quadam accusauit, his verbis: *Quid te, malum, rationis in istam spē induxit, vt eostib⁹ fideles putares fore, quos pecunia corrupſes?* *a tu id agis, vt Macedones non te regem suum, sed ministrum, & præbitorem putērēs* quo quid regi sordidius? *S v b s i d i v m hoc necessarium est,* *{* vel cum certa subsidia defunt, vel cū infirma sunt. *Q v i M: A d m o d u m sit utendū eo,* id infra docet, his verbis: *Noi-nūquam est largiendū: & ſepte idoneis hominibus indigētibus de re familiari impertiendum, sed diligenter, atque moderate. multi enim patrimonia effuderunt, inconsulte largiendo.* *Q v a e* *virtuti propiores sunt,* *{* cùm hæc à virtute longè absit. non enim à virtute, & industria sumitur. *A t q v e etiam subiiciunt se homines imperio alterius, & potestati pluribus de cauſis.* *{* has cauſas exposuit paullò ante, in eo loco: *Quæcumque igitur homines homini tribuant ad eum agendum, atque honestandum: aut benevolentia gratia faciunt, &c.* Sed illud animaduertendum: cauſas quidem eisdem commemorari, quæ supra dictæ sunt, diuersarum tamē rerum. aliud enim est, homines homini tribuere, quæ possunt, ad eum agendum, atque honestandum: aliud, subiicere se homines imperio alterius, & potestati. & ipsa verba, *Atque etiam diuersæ rei narrationem significant.* *A v t beneficiorum magnitudine,* *{* non hæc secunda cauſa est, sed ea, quæ sequitur. Aut dignitas præstantia: quantum ex earundem cauſarum ordine supradicto licet intelligere. itaque pro, *Aut, vel ſacramento contenderem legendū,* Et, aduersantibus omnibus antiquis libris. Ita beneficiorum magnitudo ad benevolentiam addetur, tanquam ipsius benevolentia cauſa, quod supra dixit, *Cùm aliqua de cauſa quempiam diligunt.* *A v t dignitatis præstantia,* *{* supra: Aut honoris, si cuius virtutem ſupciunt, & si quem dignum fortuna quam amplissima putant. *A v t ſpe, sibi id vnde ſupciunt,* *{* supra: Aut cui fidem habent, & bene rebus suis contulere arbitrantur. Hæc autem ſpes ab ea differt, quæ capitur ex largitione proposita de qua supra: Aut cōtra, à quibus aliquid exspectant, vt cùm reges, popularē ſue homines largitiones aliquas proponunt. *A v t metu, ne vi parre cogantur,* supra: Aut cuius opes metuunt. *A v t ſpe largitionis, promissionisque capti:* *{* supra: Aut contrā, à quibus aliquid exspectant. *V nus ex meis,* *Promissionib⁹ vtroque modo recte.* *A v t, poſtremē,* *{* ſexta

causa & hic, & super hic, cur se homines alterius imperio spōte subiiciant: supra, cur ad aliquem augendū, atque honestandum adducantur. MER C E D E condūlēt.} cūm pecunia per tribus diuidebatur, qua de relata lex de ambitu: de qua in oratione pro Murena.

## C I C E R O.

**R**Erum autem omnium nec aptius est quidquam ad opes tuendas, ac tenēdas, quam diligi: nec alienius, quam timeri. præclare Ennius:

Quem metuunt, oderunt:

Quem quisque odit, perijisse expedit.

Multorum autē odys nullas opes posse obſtērē, si anteā fuit ignotum, nuper est cognitū, nec verō huius tyran ni ſolū, quem armis oppreſſa pertulit ciuitas, interitus declarat, quantum odium hominum valet ad peftem: ſed reliquorū ſimiles exitus tyrranorū: quorum hand ferē quisquam interitum ſimilē effugit. malus enim eft cuſtos diurnitatis metus, contrāq. benevolētia fideliſ vel ad perpetuitatē. Sed ijs, qui vi oppreſſos imperio coercent, ſi ſane adhibenda ſauitia, ut heris in famulos, ſi aliter teneri non poſſunt. qui verō in libera ciuitate ita ſe inſtruunt, ut metuantur: his nihil po teſt eſſe dementiū, quamuis. n. demersa ſint leges alii cuius opibus, quamuis timefacta libertas emergunt tamen hec aliquando aut iudiciis tacitiſ, aut occultis de honore ſuffragiis. acriores autem morſus ſunt intermiſſe libertatis, quam retene.

## E X P L A N A T I O.

**R**E RVM autem omniū: paullō ſuauius, quod eſt in veteribus ſeptem, & Tertiij, Omniautem rerum. Ad opes tuendas, ac tenēdas, quam diligi:} ſic eſt in quatuordecim, & Tertiij. N E C aptius, quam diligi: nec alienius, quam timeri.} Securitatem ex manuetudine tuitorem ait eſſe Seneca. Vide librum eius de Clementia. Terentius Adelph. aet. i. ſc. i.

Et

## I N L I B. I I. D E O F F.

239

Et errat longē mea quidem ſententia,  
Qui imperium credat grauius eſſe, aut ſtabilius,  
Vi quod fit, quam illud, quod amicitia adiungitur.

Sallustius Iugurtha, in oratione Micipſa, regis Numida: Non exercitus, neq. theſauri preglidia regni ſunt, verū amici: quos neque armis cogere, neque parare queas: oſicio, & fide parantur. Imitatus autem eſt Sallustius Xenophontem in Cyro, qui, moriens, Cambyses filium ſic alloquitur: Οἰσθα μὲν οὐ κεῖσθαι, ὃ Καρβύνον, τὸν τὸδέ τὸ χρυſτῦν αὐτῆπερν, τὸν βεστεῖαν διασθῆνεν ἐγώ, ἀλλὰ εἰ πολὺ φίλος αὐτῆπερν βεστεῖαν πάλιν ἐβάπτην, καὶ ἀν φαλέστερον. πενθεὶς μὲν νόμοις εὔνομοις ἀνθρώποις, πάσι δράμιν οἱ εὐτόποι πολιορκοντα, ἀπόπειραν καὶ τὸ ἀλιά τὰ περιφύλακτα πάσι τὰ ἀνταρτα φύνεοθα, ἀλλὰ ποὺς πενθεὶς τὸδέ τὸν εἴκαστον εἰ αὐτῷ, οὐ δὲ κτητοις αὐτῶν, ἐπὶν οὐδεποτε μὲν τὴν βίᾳ, ἀλλὰ μελαχρον σὸν τὴν ἐνεργείαν. Apud Herodianum quoque Marcus Imperator, filium amicis, & propinquis commandans, hæc ait: Οὐδὲ οὐρανοφέτων πλήθεις οὐδὲν αὐτορες πρέπει τυχενιδες αὐτεξτίνι εὐτέρης φρουράς ίσχεντον πύθοθη τὸν ἀρχοντα, εἰ μὲν περιπάτεις εἰ τὸν ὑπηρέταν λύγιστα, μέλει, εἰ δὲ ἐκεῖνοι εἰς αρχής μῆνος δικαιοντας ήταν αυτοιν, οὐδὲ μὲν φύσιν εἰς ἀμετοποιοι, πόλει δὲ τὸν εὐτάνακτον χρηστόντος ταῦτα πάροχοις καὶ οὐδὲν οὐδεποτε δουλειαν οὐτε, αὐτὸν οἱ μετα πολεμοις ὑπακούντας αἰνύστοι, καὶ τοιχολογίας περιστοιτοι δρόμοις τε καὶ πάσχοντος διατελοῦντο, οὐδὲ ποτε ἀφίεντον, οὐ μὲν βίᾳ καὶ ὑπεριπέτη τούτῳ ἀχθοῦσι. Quem quisque odit, perijiffe expedit.} Arist. II. Rhet. Iram tempore mitigari ait, odium misamē. H V I S tyrranidi, quem armis oppreſſa pertulit ciuitas,} non tamen diu: quod Brutus ad M. Antonium scripsit, Fun. lib. II. ep. 3. Non quādiu ait, vixerit Cæſar, ſed quam non diu regnari fac cogites. V A L E T ad peftem:} ad hoīiineim perdendum. I N T E R I T U M ſimilem effugit.} Talem, eſt in octo, & Tertiij. Langius verō, qui duo verba, Interitum ſimilem, omittit, defecdens ab omnibus antiquis libris, errare mihi videtur. M A L V S enim eft cuſtos diurnitatis metus:} neminem diu cuſtodiſ metus: qui ſe metu potius, quam diligi vult, non diu tutus eſt: malum ſua ſalutis cuſtodiem haberis, qui metuitur: putat enim eo ſe tutum eſſe, quo diu tutus nō eſt: atq. hoc tyrranorū exitus docet. Demosthenes Olynth. II. Οταν ὑπὲνοιας τὸ περιγματα ουſτοι, καὶ πάσι πολὺτοι συμφέρον τοῖς μετέχουσι τοῦ πολέμου: καὶ ſυμπνειν, καὶ φέρειν τὰς συμφορέας, καὶ μάνει εἴθενοιον οἱ διθεοποιοι: οὐταν δὲ τὸ πλεονεξίας, καὶ πονερίας τοι, ἀπόπειροις, οὐ σχόλιον, οὐ περιθοφέας, καὶ μικρογόνη πατασημα ἀπάντητος.

*καὶ οἱ πόλεις.* Hinc illud Simonis de Pamphilo filio cum Sofia colloquentis, Andr. act. I. f. c. I.

--nam antea

Qui scire posse, aut ingenium noscere,  
Dum atas, metus, magister prohibebant?

**B E N E V O L E N T I A fidelis vel ad perpetuitatem.** } perpetua fides oritur ex benevolentia, qui diligit, vel perpetuo, non modo diu, fidus est. Quia dixerat, Diuturnitatis, subiungit, Vel ad perpetuitatem, plus eam est. Perpetuo, quam, Diu, sed metus nec diu bonus custos est: at benevolentia vel perpetuo fidem seruat, quod Isocrates ad Nicoclem scripsit.

Seneca: Ferrum tuerit principem, melius Fides,

**S I T sanè adhibenda securitas,** } Sanè, permittentis est potius, quam probantis, habita ratione eorum, de quibus loquimur. nam tyrannos non probat, sed, si qui sunt, iis permittit tanquam tyrannis, ut ad suas opes conseruandas in eos, qui sine vi teneri non possunt, sicuti vt tantur. Aristoteles quoque tyrannis præcepta dat, licet eos non proberet, in Politicis libris. **I T A se instruant,** } sic antiqui libri duodecim, & Tertij duo, Instituant. **T I M E F A C T A libertas:** } ita est in uno Tertij libro, tredecim, tremefacta, vnu, Labefactata, ex quo licet coniicere, illud, Tremefacta, esse glossema ad, Timefacta, quod cum duriusculè dictum videretur, immutatum est. Lucretius eo verbo vsus est lib. 2.

Hi tibi tum rebus timefactæ religiones

Effugiant animo pauidæ, mortisq. timores.

Pacuvius Peribœa, apud Nonium Marcellum, de contrariis generibus verborum, in, Vagas, pro Vagaris:

In triplici pertimefactus mærore animi, incertè errans vagat.

Et D. Brutus, ad Ciceronem, Fam. lib. II. epist. 20. Denuntiatione periculi sperare eos, te pertimefacto, adolescentे impulso, posse magna consequi præmia. **E M E R G V N T** } hoc ad illud spectat, Quamvis demersæ sint leges, quod trallatum est ab agrorum inundatione. **I V D I C I S tacitus,** } cum de reis per tabellam, non voce, sententia fertur, nulla eorum, qui dominantur, ratione habita. **O C C U L T I S de honore suffragii.** } cum populus bonis ciuibus honores mandat, & suam in eis libertatem retinet. Sic Demosth. Philip. IV. **E t i e x e r** τὸν κρύβοντα πόλεων του φυγεῖσα θερόπου. **A C R I O R E S autem moris,**

libertas

Libertas intermisæ mordet acrius, quam retenta. Translatio ab animantibus: quæ, cum laſa sunt, mordent acrius, ad ultionem doloris, & injuria, quam quæ laſa non sunt. In eam sententiam dictum est illud à Plauto:

Tum denique homines nostra intelligimus bona,  
Cùm, quæ in potestate habuimus, ea amisimus.

## C I C E R O .

**Q** Vodigitur latissimè patet, neque ad incolumentem solū, sed etiam ad opes, & potētiam vallet plurimum, id amplectamur, ut metus absit, caritas retineatur. ita facillimè, qua volumus, & priuatis in rebus, & in rep. consequemur. etenim, qui se metui volent, a quibus metuuntur, eosdem metuāt ipsi, necesse est, quid enim censensus superiorē illum Dionysum, quo cruciatu timoris angī soluit, qui, cultros metuens tonsorios, candente carbone sibi adurebat capillum? quid Alexandrum Pheraum, quo animo vivisse arbitramur? qui, et scriptum legimus, cum uxorem Theben admodū diligere, tamē, ad eam ex epulis in cubiculum veniēs, barbarum, & eum quidem, ut scriptum est, compūctum notis Threicijs, districto gladio inbebatur anteire: premittebatq. de stipatoribus suis, qui perscrutarentur arculas muliebres, et, ne quod in vestimentis occultaretur telum, exquireret. o miserum, qui fideliorem & barbarum, & stigmatiam putaret, quam coniugem, nec eum fecellit: ab ea est enim ipse, propter pellicatus suspicionem, interfactus. Nec verò villa vis imperij tanta est, qua, premente metu, posset esse diuturna, testis est Phalaris: cuius est prater certeros nobilitata crudelitas: qui non ex insidiis interiit, ut is, quem modo dixi, Alexander: non à paucis, ut hic noster, sed in quem uniuersa Agragantinorum

multitudo impetu fecit. Quid Macedones, nonne Demetrium reliquerunt, et in iuventute ad Pyrrhum contulerunt? Quid? Lacedemonios, iniuste imperatores, nonne repente omnes ferè socij deseruerunt, spectatoresque se otiosos prebuerunt. Lenitrix calamitas? Externa libertinus in tali re, quam domestica, recordor. verum tamen, quamdiu imperium populi R. beneficiis tenebatur, non iniurias, bella aut pro sociis, aut de imperio gerebantur: exitus erant bellorum aut mites, aut necessarij. regum, populorum, nationum portus erat, et refugium senatus. nostri autem magistratus, imperatoresque ex una hac re maximam laudem capere studebant, si provincias, si socios aquitate, et fide defensissent. itaque illud patrocinium orbis terræ verius, quam imperium poterat nominari. sensim hanc consuetudinem, et disciplinam iam antea minuebamus, post verò Sulla victoriā penitus amisimus. destitutus est enim videri quicquam in socios iniquum, cum existisset etiam in ciues tanta crudelitas. ergo in illo secula est honestam causam non honesta victoria. est enim ausus dicere, basta posita, cum bona in foro vederet et bonorum virorum, et locupletum, et certe ciuium, prædam suā se vendere. Secutus est, qui in causa impia, victoria etiā faediore, non solum singulorum ciuium bona publicaret, sed uniuersas quoque provincias, regionesq. uno calamitatis iure comprehendenderet. itaque, vexatis, ac perditis exteris nationibus, ad exemplum amissi imperij portari in triumpho Massiliam vidimus, et ex ea urbe triumphari, sine qua nūquam nostri imperatores ex transalpinis bellis triupharunt. multa præterea cōmemorarem nefaria in socios, si hoc uno sol quidquam vidisset indignius. iure igitur plecti-

mur.

mur. nisi n. multorum impunita scelerata tulissimus, riunquam ad unū tanta peruenisset licetia: à quo quidem rei familiaris ad paucos, cupiditatum ad multos improbos venit hereditas. nec verò umquam bellorum ciuium semē, et causa deerit, dum homines perditи hastam illā cruentam et menicerint, et sperabunt, quā P. Sulla cūm vibrasset, dictatore propinquo suo, idem sexto et tricesimo anno post à sceleratiore basta eadē non receperit. alter autē, qui in illa dictatura scriba fuerat, in hac fuit questor urbanus: ex quo debet intelligi, talibus præmis propositis, numquam defutura bella ciuilia. itaque parietes urbis modò stant, et manent, iūq. ipsi iam extrema scelerata metuentes: rem verò publicam penitus amisimus. atque in has clades incidimus, (redeundū est enim ad propositum) dum metuimus, quam cari esse, et diligi, maluimus. quasi si populo R. iniuste imperanti accidere potuerunt: quid debet putare singuli? Quod cūm perficuum sit, benevolentie vim esse magnam, metus, imbecillē: sequitur, ut differamus, quibus rebus possimus facillime eam, quam volumus, adipisci, cum honore et fide caritatem. sed ea non pariter omnes egemus. nam ad cuiusque vitam instituendam accommodandum est, à multis ne opus sit, an satis sit à paucis diligi. Certum igitur hoc sit, id quod et primum, et maximè necessarium, familiaritates habere fidias amantium nos amicorum, et nostra mirantium. hec enim est una res prorsus, ut non differat multum inter summos, et mediocres viros: et q. utrisque propriodam comparanda. honore, et gloria, et benevolentia ciuium fortasse non aequē omnes egent: sed tamen, si cui bac suppetunt, adiuuant aliquantum tum ad certa, tum ad amicitias comparandas.

## EXPLANATIO.

**V**T metus absit, caritas retineatur.} quod & paullo antè expressis his verbis: Omnia rerum nec aptius est quicquā ad opes tuendas, actenendas, quam diligi, nec alienius, quam timeri. Quid se metui volent, à quibus metuantur, eosdem metuant ipsi, necesse est.} Isocrates ad Nicocleū: Οποιος ἀντεῖ τοὺς ἄλλους τέρας στενῶν διάβη, αὐτὸς καὶ τὸ περίεργον ἔχει. Metuentur, est in uno, & Tertij. In alio, Metuantur. Quid enim censueris, &c. quo &c.} Sic locutus pro Roscio Amerino: Quid censes hunc ipsum Sex. Rosciū, quo studio, & qua intelligentia esse in rusticis rebus? Et Agr. II. Quid censueris, cum isti Xuiri cum imperio, cum fascibus, cum illa delecta finitorum iuuentute, per orbem terrarum vagabantur, quo tādem animo, quo metu, quo periculo miserae nationes futuras? Et lib. I. de Orat. Quid censes, si ad alicuius ingenium, vel par, vel maius illa, quā ego non attigi, accesserint, quantū illum, & quantū oratorem futurum? SUPERIORUM illum Dionysium,} Syracusii tyrannum, Hermocratis filium, qui tyrānidem in Sicilia inuasit anno IIII. Olymp. xciiii. hoc est anno ab v.c. ccxlvii. Arist. Polit. lib. 5. cap. 5. Xenophon lib. 2. Dionys. lib. viii. Plut. in Dionē, Cic. Tusc. v. Valer. lib. 9. cap. 15. Agell. lib. 17. cap. 21. Macrobius. lib. 1. de Somn. Scip. c. x. Dicebat, sē filio imperium reliquerum adamantinis vinculis: Metum, & Violentiam intelligens. Eius filius, regno pulsus, Corinthi ludū aperuit, vt, cum re ipsa non posset, specie saltē quadam regnare videretur. CULTROS metuens tonsorios,} nam tonsor gloriatus erat, in sua potestate esse tyrāni vitā, de quo pœnas dedit. ALEXANDRVM Pheraeum,} Val. lib. 9. cap. 15. Cicero autem Tusc. v. ait Dionysium Syracusanum ad Aristomachum, & Doridem coniuges sic noctū ingredi solitum. THEBEN} Pheræi Iasonis filiam, eius, quem calliditate, scientiāq. militari comparat Cicero superiore libro tribus maximis trium gentium ducibus, Hannibali Pœno, Q. Fabio Maximo Romano, Themistocli Atheniensi. Mirū autē non fuit, si resciuit ipsam cum Pelopida, Thebanoruū imperatore, hoste suo, ipsius propinquo, & familiari paterno, colloquium habuisse, nec fecellit ipsum præsgium, nam coniux, mulier cordata, & animo præsente, tum vita tyranni pertusa, tum quia fratre iuniori fœde abutebatur, adiunctis sibi tribus fratribus, Tisiphono, Pithon, lao,

IN LIB. II. DE OFF. 245  
Iao, Lycophrone, tyrannum in lecto decumbentem opprimit. Ouidius in Ibin:

Inq. tuo thalamo iugulatus more Pheræi,  
Qui datus est letō coniugis ipse suo.

Vide Plut. in Pelopida, & Cic. de Inu. II. BARBARVM,} nam iij naturali odio Græcos persequuntur. Isocrates in Panegyrico. COMPVNCTVM notis Threicis,} signatum, stigmate notatū. nam, vt Herodotus lib. 5. ait, apud Thraces punctas esse frontes, nobile iudicabatur: non esse notatas punctis, ignobile. Hæc Marsus. Quibus addo Sexti Empirici philosophi testimonium, qui lib. 3. Pyrrhoniarum hypotheseon, cap. 24. Compunctum notis est, apud nos, ait, turpe, & infame videri: at multi Ægyptijs, & Sarmatæ suos fetus compungunt. DISTRICTO gladio} tres, & Tertij, Districto. STIPATORIBVS} sic omnes libri, quo magis miror esse, qui Spiculatoribus, legant. PERSCRVATENTVR} sic tres libri. vnu, Praescrutarentur. decem, & Tertij, Scrutarentur. STIGMATI AM} proximè dixit, Compunctum notis Threicis: quod seruitus erat signum. Quid fibi velit Nonius, qui hoc loco Stigmatias dictos à veteribus punctos in notis, non assequor. nam errasse eum existimo. Gracum autem nomen Latine pronunciauit, vt alia multa. Caligulam ait Suetonius multos honesti ordinis, deformatos prius stigmatum notis, ad metallā, & munitiones viarum, aut ad bestias condemnasse. NEC eum fecit opinio:} Tertij liber, & aliis, non habent nō Opinio. In alio est additum. Quo modo illud à Cicerone dictum Fam. lib. 14. Sed nos, ni me fallit, iacebimus. Et in Oratore. Varro lib. 2. de re rust. & Tacitus. AB eo:} à tribus eius fratribus, ipsa cohortante. Plutarchus in Pelopida. PRÆMENTE metu, ita Pheræus, interfectus: Cæsar, tribus & viginti vulneribus confossum: Phalaris, lapidibus obtritus. PHALARIS} Aftyalenfis tyrannus Siculus. Cic. Tusc. II. Plin. lib. 38. cap. 8. Ouid. i. de Arte, Persius Sat. 3. Plut. Parall. cap. 74. Sceneca de Ira, & de clementia, Oros. lib. I. cap. 20. Pindarus Od. 1. Pyth. August. ad Macedonium, de vera felicitate. CVI VS est preter ceteros nobilitata crudelitas:} ex illo præsertim æneo tauro, quo homines inclusos, vt genitu mugitum referrent, igni subiecto necabant. HIC noſter:} Cæsar. IN quem} ita duodecim, & Tertij. Duo, In sum. IMPETVM fecit.} in foro enim lapidibus est

obrutus. **D E M E T R I V M** reliquerunt, } superbisimum.  
Plut.in Pyrrho, & Demetrio. **A D T Y R R H U M** } humanissi-  
num, Epitomatum regem. **L A C E D A M O N I O S** } quibus  
iustitia numquam cura fuit. Ifoc.in Panathenaico.nec à con-  
federatis, nec à benefactoribus sibi temperarunt. Ifoc. pro  
Pace, & in Panathen. testatur, Lacedæmonios plures iudicata  
caussa necasse, quam Athenienses conuictos iudicio. quo fa-  
ctum est, ut, cùm Epaminondas, Thebanorum dux, libertatis  
spem faceret, socij omnes ad ipsum deficerent, nec Lacedæ-  
moniis opem ferrent. Imperarunt in Gracia Lacedæmonij,  
Athenienses, thebani. principatum Lacedæmoniis, vt dixi,  
ademit iniustitia. **L E V C T R I C A E calamitatis** } superiorum  
temporum iniurias, non Leuctricam cladem, ipsi exitio fuisse,  
scripit Isocrates in oratione Sociali. Leuctra, Boeotia vrbis,  
ad quam ab Epaminonda profligati sunt. **E x T E R N A liben-  
tius in tali re, quam domestica, recordor.** } oratoriè hoc dictum.  
nam à malorum nostrorum cōmemoratione naturā abhor-  
remus. Sic apud Ouidium Achelous Metam. ix.

--quis enim sua prælia vietus

Commemorare velit?

**P R O** sociis, } defendendis contra externam vim. **D E** im-  
perio } conseruando, vel prolatando. Hinc illud Sallustij de  
Romanis, in Coniuratione Catilinae: Vbi pericula virtute  
propulerunt, sociis, atque amicis auxilia portabat: magisq. dan-  
dis, quam accipiendis, beneficiis, amicitias parabant. **E x i t u s**  
**bellorum aut mites, aut necessarij.** } Virgilii lib. 6

Parcere subiectis, & debellare superbos.

**Mites:** victos aut in ciuitatem, aut in fidem, & clientelam re-  
cipiendo, modico tributo imposito. **Necessarij:** cùm excin-  
duntur vrbes, captiuūq. sub corona veneunt. quales Campani,  
Fregellani, Nutmantini, Carthaginenses, Corinthi. **R E G V M,**  
**populorum,** } coniungit hæc duo verba Sallustius, Catilina: Re-  
ges, populiq. finitimi bello tētare. Et Iugurtha: Auxilia à po-  
pulis, & regibus, sociisque, accersere. **P O R T U S, & refugium** }  
Machabei, à Syria regibus cùm virgerentur, Romanorum  
opem implorarunt. Sic & Hieron, Ptolemaeus, Ariobarzanes,  
Deiotatus, Macedones, Græci Romanorum auxiliis vñ sunt.  
**P A T R O C I N I V M orbis terre** } clientum enim veilitatem  
patroni spectant. Plutarchus illud t. Flaminij dictum refert,  
quod Romani Gracos absoluunt iudicio incustoditos, libe-

ros,

ros, & expertes tributi, legibúsq. vtentes patriis. **P o s t** vero  
**salle victoriam** } is, hostibus deuictis, multa ciuium millia  
partim occidit in villa publica, partim prescriptis. Sallustius,  
Catilina: Postquam L. Sulla, armis recepta rep. bonis initis  
malos eventus habuit: rapere omnes, trahere: domum alius,  
alius agros cupere: neque modum, neque modestiam victo-  
res habere: fœda, crudeliq. in ciues facinora facere. **E T I A M**  
**i n ciues** } nō Etiam non est in sex meis, & tertij. Et natum pu-  
to ex extremitis litteris verbi Exstisit, que reperitur librii  
occasione dederunt addendi nouam vocem, Etiam. **H o-**  
**N E S T A M caussam non honesta victoria.** } pugnauit enim Sulla  
pro optimatibus contra plebem, victoriq. leges, & iudicia reip.  
restiuit. **E t certe ciuium,** } correctio quedam. quasi dicat, si  
minus erant boni viri, nec locupletes, (locupletes autem, vt  
rerum nouarum haudquaquam cupidi, inter bonos viros re-  
feruntur) ciues tamen erant. **P R A E D A M suam se vendere.** }  
quasi hostes essent, non ciues. idem ferè repetit in Verrem,  
act. 2. libro. 3. Tantum animi habuit ad audaciam, vt dicere in  
concione non dubitaret, bona ciuium R. cùm venderet, se  
prædam suam vendere. Largitus est autem supra modum ve-  
nuistis mulieribus, fidicinis, histrionibus teste Plutarcho. **S E-**  
**C V T V S E S T,** } C. Caesar. **I n caussa impia,** } contra optimates, &  
communem libertatem: cùm Sulli optimates, libertatemque  
defenderit. **V I C T O R I A etiam fœdiore,** } ob ea, quæ statim se-  
quuntur. **fœdiore:** crudeliore. Lib. 1. Sunt quedam partim ita  
fœda, partim ita flagitiosa, vt ea ne conseruandæ quidem pa-  
triæ caussa sapiens facturus sit. Sallustius fœdus Catilinae ocu-  
los vocat: idest, fauitiam, & immanitatem præferentes.  
Ter. Eun. act. 5. sc. 5. Facinus fœdum. i. crudele, Donato. **Ci-**  
**cero** pro Sextio Fœdus vulnus P. Clodij dicit. Virgiliius,  
Æn. 1. 1.

Impulerat ferro Argolicas fœdere latebras.

**Vbi Seruius:** Fœdere, lacerare. nam Fœdum tam apud hunc,  
quam apud Sallustium, non turpe, sed crudele significat: vt,

Sanguine fœdantem quos ille sacraverat ignes.

Sallustius, Fœdi oculi. Sic & ingeniosissimum Poëtarum O-  
uidium, Metam. 1. locutum esse, obseruavit antè quinque-  
nium Hercules Ciofanus:

Fœda Lycaonia referens conuicia mensæ.

Quem versum propè repetit in Iblin. **S E D** uniuersas quoque

q. 4

*provincias,* quæ pro Pompeio steterant. Vno *calamitatis iure*.  
sic antiqui libri septem, & Tertij, Lambinus genere legit, &  
sine causa mutat: quæ*Iure, suum sensum non habeat.* nam,  
quæ condicio singulorum ciuium, eadem fuit omnium pro-  
vinciarum, & regionum, vt pari scilicet calamitate vexarentur.  
*Exterris nationibus,* Græcia primum, deinde Africa,  
postremo Hispania. A *d exemplum amissi imperij* } Terentius  
præpositionem omittit:

Enimvero spectatum satis putabam, & magnum  
exemplum continentie.

*Amisisti imperij*: euerſæ reip. cùm de hostibus, non de socijs, tri-  
umphari soleret. *P O R T A R I in triumpho* } portabantur in tri-  
umpho imagines opidorum, quæ quis bello ceperat. portata autem  
Massiliam arbitror in Gallico triumpho. nam quin-  
quies Cæſar triumphauit, de Gallia, de Aegypto, de Ponto, de  
Africa, de Hispania, Massilia verò bellum ciuilis initio portas  
Cæſari clauerat, ex quo diu obſeffa, capta denique per vim  
est. *M A S S I L I A M* } Massiliæ simulacrum ex ebore. Quinti  
lianus. Eam fide meliorum, quām consilio prudentiorem, di-  
cit Velleius. Linanus lib. III. Florus lib. IV. Epit. Liu. cx. Oros.  
lib. vi. cap. 15. Eutrop. lib. vi. cap. vlt. *E T o x ea urbe triumphari,*  
*sine qua numquam nostri imperatores ex transalpinis belli triumpha- runt.siliam oppugnabis? ne triumphus quidem finem facit belli?  
per quem lata est urbs ea, sine qua numquam ex transalpinis  
gentibus maiores nostri triumpharunt. quo quidem tempore  
populus R. ingemuit. Eius laudes persequitur Cicero pro Flac-  
co: Massiliæ disciplinam, atque grauitatem non solum Græ-  
cix, sed haud scio, an cunctis gentibus anteponendam iure  
dicam. Massilienses ait Liuius in eo honore, in ea dignitate  
apud Romanos fuisse, ac si media Græciæ vmbilicu incole-  
rent. Si hoc vno Sol quidquam vidisset indignius. } fortasse à Plau-  
to sumpsit, qui Sticho sic ait:*

Meliorem nec tu repieres, nec Sol videt.

*H A S T A M illam cruentam* } venditionem bonorum, nam &  
Sulla, & Cæſar bona proscriptorum ciuium, hasta posita, &  
prædam suam vendiderunt. *E T meminerint, & sperabunt.Hasta Cæſaris, P. C. multis improbis & spem afferit, & auda-*

ciam

daciām. viderunt enim ex modicis repente diuites. itaque hastam semper cupiunt videre ij, qui nostris bonis imminent, quibus omnia pollicetur Antonius. *Cruentam*: translatum à re militari. nam, cùm hasta ante opidum ponebatur, signum erat diripiēdæ vrbis, & crudelitatis in ciues exercēdæ. Q u a m P. Sulla cùm vibrasset, dictatore propinquo suo, } hic, L. Sulla dictatore, proscriptorum ciuium bona emit ad hastam, id est in auctione publica, quæ, hasta propè fixa, fieri solebat, propterea dicitur hastam vibrasse, μετροφειν. Quod autem infert Ci-  
cero. Sexto & tricesimo anno post ( tot enim numerantur, à  
D CLXXIV. ad DCCIX. ) à sceleratore, hasta eadem non recessit; significat, eundem P. Sullam, vt emerat bona proscriptorum Marianorum L. Sulla dictatore, itidem emissæ proscriptorum Pompeianorum Cæſare dictatore. De hoc P. Sulla ita iocatus est Cicero in epistola ad Dolabellam, x. lib. ix. *T e tamen hoc* scire volo, vehementer populum sollicitum fuisse de P. Sulla morte antè quām certum scierit. nunc querere desierunt, quo modo perierit. satis putant se scire. quod sciunt. Ego cetero qui animo æquo fero: vnum vereor, ne hasta Cæſaris refrixerit. Et, ad Cæſium, lib. xv. ep. 17. Nos hic, P. Sullam patrē mortuum, habeamus. alij, à latronibus; alij, cruditate, dicebant. populus non curabat: combustum enim esse constabat. Cæſarem putabat molestè laturum, verentem, ne hasta refrixeret. Cui Cæſius festinè respondit, ep. 19. Sulla, cuius iudicium probare debemus, cùm dissidente philosophos videret, non quæsiuit quid bonū esset, & omnia bona coēmit. cuius ego mortem forti mehercule animo tuli. nec tamen Cæſar nos cum desiderare patientur. nam habet damnatos, quos pro illo nobis restituat: nec ipse sectorem desiderabit, cùm filium viderit. *S C E L E R A T I O N E h a s t a* } Phil. lxx. Auctionis verò miserabilis adspectus: vestis Pompeij, non multa, eaque maculosa: eiusdem quedam argentea vaſa collisa, folidata mancipia: E A-  
D E M } non legitur hoc verbum in septem libris, & Tertij. SCRIBA } vide Sallustiū in cōcione Lepidi. I A M extrema sceleræ metuentes: } dat sensum inanimis rebus, quo magis publica calamitas exprimitur. Extrema sceleræ: vtrum, quæ reip. impendent: non puto. iam enim amissam penitus esse remp. statim dicit. quæ igitur sceleræ: euerſionem ipsorum parietum. R E M verò publicam penitus amisimus. } quod alibi dicit, οὐσίων πόλεων. I N I V S T E imperanti } quia leges prō Cæſaris

potentia tulit: & metui maluit, quām diligi. ACCIDERE potuerunt: } quae non videbantur accidere posse. Quid debent putare singuli? } argumentū à maiori. IMBECILLEMI: } Imbecillam, septem, & Tertij. SEQUITVR, ut disseramus, } haec tenus de priuata amicitia dixit: nunc de gloria dicturus est, in qua ipsa publicus amor includitur. CVM honore, & fide caritatem. } Gloriae descriptio. nam, si diligimur à multitudo: si fides ab ea nobis habetur: si honore digni putamur: tunc adepti gloriam sumus. id perspicue narratur infra. SED ea } ea, quae cum honore, & fide coniuncta sit. nam priuata quidem amicitia pariter omnes egent. AD cuiusque vitam instituendam } Vitam institutam, vnde decim, & Tertij. CERTVM igitur hoc sit, } concludit hoc praecepto disputationem de priuata amicitia: nec addit plura propter librum ea de re copiōle scriptum, qui inscribitur Lælius. ID quod & primum, } vnde decim, & Tertij. Idq. primum. Vnus, Quod & pr. Vnus, Idq. pr. FAMILIARITATE s habere fidus amantium nos amicorum, } de fide supradixit. Cum honore, & fide caritatem. Sed ibi agit ea de fide, quae publice habetur à ciuibus, hic de ea, quae priuatim ab amicis. NOSTRA mirantium. } vt apud eos in honore sumus. Vt non differat multum inter summos, & mediocres viros: } vt ea pariter omnes egeant: nam sine amicitia vita nulla est: sine honore tamen, & gloria, & benevolentia ciuiū licet viuere. Hoc ad illa superiora pertinet: Ad cuiusque vitam instituendam accommodandum est, à multis ne opus sit, an satis sit à paucis diligi. VTRISQVE } ex aequo. SI cui hęc suppetunt, } si quis habet hęc tria, honorem, fidem, benevolentiam ciuium. TVM ad cetera, } Cum, Tertij liber. AD amicitię } priuatas.

## CICE R O.

**S**ed de amicitia libro dictum est, qui inscribitur Lælius. nunc dicamus de gloria. quamquam ea quoque de re duo sunt nostri libri. sed attingamus, quandoquidem ea in rebus maioribus administrandis adiuuat plurimum. Summa igitur, & perfecta gloria constat ex tribus his: si diligit multitudo: si fidem habet: si cum admiratione quadam, honore nos dignos putat.

putat. hec autem, si est simpliciter, breuitér, dicendum, quibus rebus pariuntur à singulis, eisdem ferè à multitudine. sed est alius quoque quidam aditus ad multitudinem, ut in uniuersorum animos tamquam influere possimus. Ac primum de illis tribus, que ante dixi, benevolentia precepta videamus: que quidem capitur beneficijs maximè: secundo autem loco benefica voluntate benevolentia mouetur, etiam si res forie non suppetit. vehementer autem amor multitudinis commouetur ipsa fama, & opinione liberalitatis, beneficentie, iustitiae, fidei, omniumq. earum virtutum, que pertinent ad mansuetudinem morum, ac facilitatem. etenim illud ipsum, quod decorum, honestumq. diximus, quia per se nobis placet, animosq. omnium natura, & specie sua commouet, maximèq. quasi perlucet ex ijs, quas commemoravi, virtutibus: idcirco illos, in quibus eas virtutes esse remur, à natura ipsa diligere cogimur. Atque hec quidem causae sunt diligendi grauiissime: possunt enim preterea nonnullae esse leuiores. Fides autem ut habeatur, duabus rebus effici potest: si existimabimur adepti coniunctam cum iustitia prudentiam. nam & ijs fidem habemus, quos plus intelligere, quām nos, arbitramur: quosq. & futura prospicere credimus, & cùm res agatur, in discrimenq. ventum sit, expedire rem, & consilium extempore capere posse: (hanc enim omnes existimant rationem, verāmq. prudentiam) iustis autem, & fidis hominibus, id est bonis, ita fides habetur, ut nulla sit in his fraudis, iniuriaeque suspicio: itaque his salutem nostram, his fortunas, his liberos rectissimè committi arbitramur. harum igitur duarum ad fidem faciendam iustitia plus pollet, quippe cùm ea sine prudentia satis habeat autoritatis, prudentia sine iustitia nihil

valeat ad faciendam fidem. quo enim quis verfutior,  
& callidior est, hoc inuisior, & suspectior, detracta o-  
pinione probitatis. quamobrem intelligentia iustitia  
coniuncta, quantum voleat, habebit ad faciendam fi-  
dem virium: iustitia sine prudentia multum poterit:  
sine iustitia nihil valebit prudentia. Sed, ne quis sit  
admiratus, cur, cum inter omnes philosophos constet, à  
mēq. ipso sepe disputatum sit, qui vnam haberet, o-  
mnes habere virtutes: nunc ita sciungam, quasi pos-  
sit quisquam, qui non idem prudens sit, iustus esse. a-  
lia est illa, cum veritas ipsa limatur in disputatione,  
subtilitas: alia, cum ad opinionem communem omnis  
accommodatur oratio: quamobrem, ut vulgus, ita nos  
hoc loco loquimur, ut alias fortis, alias bonos viros;  
alias prudentes dicamus. popularibus enim verbis est  
agendum, & usitatis, cum loquamur de opinione po-  
pulari: idque eodem modo fecit Panatius. Sed ad pro-  
positum reuertamur.

## EXPLANATIO.

**N**VNC dicamus de gloria, quamquam ea quoque de re duo sunt  
nostrī libri. } de quibus ad Att. lib. xv. ep. 27, & lib. xvi.  
ep. 3. Eos autem libros furto auertit Pertus Alcyonius, is, qui  
de Exsilio scripsit. qua de re vide Paulli patris Commentari-  
um in ep. ad Att. lib. xv. ep. 27. **Duo sunt nostri libri:** supra:  
Sed hæc, cum ad philosophiam cohortamur, accuratius sol-  
lent disputeri: quod alio quidem libro fecimus. **A T T I N G A-**  
**M V S,** } pauca dicamus: cùm plura dixerimus in iis libris. **S V M -**  
**M A** igitur &c. } causæ, gloriam gignentes. **H O N O R E** nos  
dignos putat. } Nos, abest à tredecim mēs, & Tertij. **A L I V S**  
quoque quidam aditus ad multitudinem, } qui nō est ad singulos. **Vnus;**  
Sed est quoque aliis quidam aditus. **Tres,** Sed est aliis qui-  
dam aditus. **Tres,** Sed est aliis quoque aditus. **Nouem,** & Ter-  
tii faciunt cum impressa lectione. **Q V AE** antè dixi, benevo-  
lentie precepit a videamus: } sic undecim, & Tertii. **Vnus** non ha-  
bet

bet nō Benevolentia. **Vnus,** Quæ antè dixi, benevolentia præ-  
ceptis. **Q V AE** quidem capitū beneficiū maxime: } Capitur, est,  
Acquiritur. sed leporis quiddam plus habet, ad exprimendam  
beneficiorū vim, quibus capiuntur, atque obstringuntur a-  
nimi. propterea, Aucupari gratiam, dixit in epistola ad Luc-  
ceium. Et, Venari viduas fructis, ac pomis, Horatius. Quod  
vtrumq. verbū ad Capiēdi voluntatē spectat: Capitur, igitur,  
ex multitudine: pro, sumitur, obtinetur. Sic, Capere fructū,  
Capere laudem. Præterea, si, Benevolentia aucupari, Latinum  
est: cur, Benevolentia capere, Latinū non esse videatur? Quid  
laboras, Lambine? cur ad mutandum tam proclivis es? ni-  
hil hic pro te faciūt antiqui libri: sermo Latinus est: mutatio-  
nem sententia non postulat. Maximis, est in sex meis; **C apitur**  
**b eneficiū maxime:** Hinc illud, Gratia gratiam parit. **B E N E F I -**  
**C A** voluntate benevolentia mouetur, } Legendum, mutato ver-  
borum ordine, vt est in meis octo veteribus libris, & Tertij:  
Voluntate beneficia benevolentia mouetur. Quid de Ponto:

Vt desint vires, tamē est laudanda voluntas.  
**Q VOD** decorum, honestumq. diximus, } Dicimus, est in se-  
ptem, & Tertij. **P E R** se } vel si nullum ex eo fructū capia-  
mus. **N A T U R A,** & specie sua } vi, & forma sua. **P E R** LV-  
C E T } sic veteres omnes libri. Langius, Prolucet, cur  
mutetur, caussam non video. **C A V S S A E** diligendi } sic il-  
lud Virgilij:

vitq. videndo

Femina.

**Q**uod & actiū, & passiū intelligi potest. **P R V D E N -**  
**T I A M,** } intelligentiam. Et futura proficeret, } definitio pru-  
dentiae. **C V M** res agatur, in discrimenq. ventum sit, } Ilocrates:  
Τὸ οὖτις τὸν καρέχεν θεατέρων τούτοις συμβούλουντας: πότες δὲ καθέλκων λέγοντας  
καὶ μηδέπι γνωσκοντας τὸν δέσποτον, ξποδουμεῖσθεν. **E X P E D I R E** rem, } explicare. **H A N C** enim omnes existimant vitilem, verāmque pru-  
dentiam. } Homines, nouem, & Tertij, Septem & Tertij. **H**anc  
enim vitilem homines existimant, verāmque prudentiam.  
**I D E S T** boni, } Bonis viris, octo, & Tertij. Infra quoque pro-  
iustis Bonos appellat. **I V S T I T I A** sine prudentia multum pa-  
terit: sine iustitia nihil valebit prudentia. } libro primo, easdem  
comparans virtutes, Placet, inquit, aptiora esse naturæ ea officia,  
quæ ex communitate, quæ ea, quæ ex cognitione du-  
cantur. **N E** quis sit admiratus, } ne qua sit admiratio. **C V M**

*inter omnes philosophos constet, } non eos quidem, quorum libri extant, nam Aristoteles id non docet. Plato autem ex aliorum sententia disputat: ut in Euthydemus: Εἴπερ τοι εἰ δημοσίας, πάντες δημόσιοι. In Protagora autem: Πότερον τοι μεταξύ αὐτῶν οἱ δημόσιοι πούτων τῷ τῆς φύσεως μορφών οἱ πλεύ ἀλλοι, οἱ δὲ δικαιοῦντες πέπτονται λαθεῖς, αποτελεῖσθαι. Cum vero veritas ipsa limatur, } cum veritas ipsa diligentissimè queritur. Ad opinionem, &c. } O vocalis vigiles à Cicerone hic duabus lineis usurpatur.*

**A L I O S bonos** } proiustos, & Aristoteles lib. vi. Et hic διάβασις pro iusto posuit ipse Cicero infra: Ex qua una virtute, inquit de iustitia, viri boni appellantur. Cum loquamur de opinione populari: } opinatur enim populus diuersas esse virtutes.

## C I C E R O .

**E**RAT igitur ex tribus, que ad gloriam pertinenterent, Hoc tertium, ut cum admiratione hominum honore ab his digni iudicaremur. Admirantur igitur communiter illi quidem omnia, que magna, & preter opinionem suam animaduerterunt: separatum autem in singulis, si perspicciunt nec opinata quedam bona: itaque eos viros suspiciunt, maximisq. efferunt laudibus, in quibus existimant se excellentes quasdam, & singulare virtutes perspicere: despiciunt autem eos, & contemnunt, in quibus nihil virtutis, nihil neruorum putant. non enim omnes eos contemnunt, de quibus male existimant. nam, quos improbos, maledicos, fraudulentos putant, & ad faciendam iniuriam instruetos, eos haud contemnunt quidem, sed de ipsis male existimant. quamobrem, ut ante dixi, contemnuntur ipsis, qui nec sibi, nec alteri: ut dicitur: in quibus nullus labor, nulla industria, nulla cura est: admiratione quadam afficiuntur ipsis, qui anteire ceteros virtute putantur, & cum omnibus carere dedecore, tum vero ipsis virtuis, quibus alijs non facile possunt ob sistere. nam & voluptates, blandi-

blandissime dominae, saepe maiores partes animi à virtute detorquent: &, dolorum cum admouentur faces, preter modum plerique exterrentur: vita, mors, divinitate, paupertas omnes homines vehementissimè permouent, que qui in utramque partem excelso animo, magnōq. despiciunt: cūmq. aliqua his ampla, & honesta res obiecta est, totos ad se conuertit, & rapit: tum quis non admiretur splendorem, pulchritudinemq. virtutis? ergo & hec animi despiciencia admirabilitatem magnam facit: & maxime infititia, ex qua una virtute viri boni appellantur, mirifica quedam res multitudini videtur: nec iniuria, nemo enim iustus esse potest, qui mortem, qui dolorem, qui exsulium, qui egestatem timet: aut qui ea, que his sunt contraria, aequitati anteponit. maximēq. admirantur eum, qui pecunia non mouetur: quod, in quo viro perfectum sit, hunc igni spectatum arbitrantur. itaque illa tria, que proposita sunt ad gloriam, omnia iustitia conficit: & benevolentiam, quod prodeesse vult plurimis: & ob eandem causam fidem, & admirationem, quod eas res pernit, & negligit, ad quas plerique inflammati auditate rapiuntur.

## E X P L A N A T I O .

**P**ERTINE RENT, } sic tres mei, & Tertij. undecim, Pertinent. ADMIRANTVR igitur communiter illi } in docti scilicet, & paruo animo prædicti. Horatius:

Nil admirari, prop̄ res est una, Numici,  
Solaque, quæ posit facere, & seruare beatum.

**P**RAETER opinionem suam } mapádēza: vel, mapá neoddūr. NON enim omnes eos contemnunt, de quibus male existimant. } Contemnere, & Male existimare, non idem sunt. De quibus male existimant: nam ipsis nocere possunt. Aristoteles hoc disputat Rhet. lib. II. Eo: haud contemnunt quidem. } Tres, &

Tertij, Eos contemnunt quidem neutiquam. quod, ut magis antiquum, magis probo. & ex eo impressam lectionem natam existimo. **N**e c sibi, nec alteri prosint, ut dicitur. } Pro sint, abest ab uno Tertij libro. & recte abesse arbitror. breuitas enim proverbi similitudinem facit. Et, Ut dicitur, multorum sermone tritum esse, & intelligi posse per se ostendit. Horatius hos ait fruges consumere natos. & Græcus poëta, ιτωπος χλευθερον, Telluris inutile pondus. Hesiodus:

Οὐ τοι μὴ πανέργος ὃς αὐτὸς παταγόνος,  
Φραστερός τοτὲ τετρά, καὶ εἰς τέλος οὐδὲν αὔτινον.  
Εθλός δὲ αὐτῷ καὶ θεός, οὐδὲν εἰπόντα πίστιν.  
Ος δὲ καὶ μήτης αὐτοῦ νέαν, μητέρα δὲ συνάντην  
Ἐν θυμῷ βαλλούσα, τούτη αὐτῷ αχείνειν.

**A**DMIRATIONE quadam afficiuntur ij: qui anteire ceteros virtute putantur, } quēadmodū Latinē dicitur. Laude afficitur, Honoribus afficitur; pro, Laudem cōsequitur, Honores cōsequitur: sic hoc in loco Cicero dixit, Admiratione quadā afficiuntur ij: pro, Admirationem quandā hominū cōsequuntur. Itaque non video, cur quidquā mutetur. cūm præsertim libri omnes antiqui, Afficiuntur, habeant, non, Afficiunt, ut ex ingenio Lambinus reponit: meo quidem iudicio, non satis recte, ut leuiter dicam. Vnus, Admiratione quadam verò afficitur. Duo, Admiratione autem quadam afficiuntur. Vnus, Admiratione quadam autem afficiuntur. Sex, & Tertij, Admiratione autem afficiuntur. Quatuor cum impressa lectione faciunt. Ceteros: Vnus, & Tertij, Ceteris. Iis virtutib; } fraude, dolo, violentia. **V**OLOUPTATE, blandissime domine, } propterea διλεπτόν. Voluptate appellavit Plato ē τῷ τῷ Νέῳ H quod, Escam malorum, Cicero conuertit in Catone. SAEPE maiores partes animi à virtute detorquent: } nō Sapientia, non legitur in vlo veterelibro. IN vtramque partem } tam voluptates, quam dolores. vel, Siue cūm adsuot, siue cūm absunt. EXCELSO animo, magnōque } qui virtutem rebus omnibus anteponat. TUM quis non admiretur splendorem, pulchritudinemque virtutis? } hoc non videtur cum eo coniungi posse, quod dictum est: Quæ in vtramque partem excelsō animo, magnōque despiciunt. Potius enim sententia requirebat, Tum quis non eos admiretur? aut: Quis non admiretur splendorem in iis, pulchritudinemque virtutis? Modo subiungatur aliquid, quod ad, Qui, referatur. HAE C animi despiciencia } cūm & vo-

lupates,

Iuptates, & dolores despiciuntur. Sic est in omnibus vcl. libris. Malè in vulgaris, Perspicientia. ET maxim' infititia, } Plato. Politic. II. O μὴ ἀεὶ δικαιοσύνην αἰαπίσταντε, ἀναγέννεται τε καὶ στοῖσι, ὅ δε ἄδικος, ἀρετῆς τε καὶ κακοῦ. QVI mortem, qui dolorem, } Stoici, contra Peripateticos, nam Aristoteles naturales efficiens esse dicit. QVAE his sunt contraria, } Nouem, & Tertij, Quæ sunt his contr. **M**AXIMEQ. admirantur } Valerius Max.lib.i v.cap.3. H VNC dignum spectatu arbitrantur. } sic quatuordecim mei. vnus Tertij, Hunc igni spectatum. idest, probè cognitum: vt ego interpretor: vt aurum spectatur igni. Similiter ad Pætum, Fam. lib. ix.ep. 16. Non facilè dijudicatur amor verus, & fictus, nisi aliquod incidat eiusmodi. tempus, vt quasi aurum igne, sic benevolentia fidelis periculo aliquo perspici possit. quod ex Isocrate sumptum, Pater annotauit, ex oratione ad Demonicum: Τὸ μὲν γένος εἰ τῷ πυρὶ διηγέζεται. Sic & Ouidius Trist.

Scilicet vt fuluum spectatur in ignibus aurum &c. Huc facit illud Chilonis: Εντίθενται αὐτοίς ὁ ζευστὸς ἐξετάζεται, σίδους βάσισιν φανερός: εἰ δὲ ζεύστης αὐτὸν σύγχον τε κακῶν τε νοῦς ἔσται θεός. Lambinus, Tamquam, addit. Alij, Hunc virum spectatum. Alij, Hunc dignum adspicunt. Mollius omnino erat, Vt igni, sed, vt absit, Vt, quid incommodi? præsertim in communi, tritāque sententia, quam vsus ipse iam satis emolliuerat. O b eadem causa, } quia prodeste vult plurimis. nam ideo spenit, & negligit eas res, ad quas plerique inflammati audite rapiuntur. A d quas plerique inflammati audite rapiuntur, } plus est, quād, Cupiditate. Vnus meus, Auide.

## C I C E R O.

**A**C, mea quidem sententia, omnis ratio, & infitatio vita adiumenta hominum desiderat, in primisq. ut habeas, quibuscum possis familiares conferre sermones: quod est difficile, nisi speciem pra te boni viri feras. ergo etiam solitario homini, atque in agro vitam agenti, opinio iustitiae necessaria est, eoque etiam magis, quod, si eam non habebunt, iniusti habebuntur: &, nullis pressidijs septi, multis afficiuntur

I

iniurijs. Atque his etiam, qui vendunt, emunt, conductunt, locant, contrahendisq. negotijs implicantur, iustitia, ad rem gerendam, necessaria est. cuius tanta vis est, ut nec illi quidem, qui maleficio, & scelere, passuntur, possint sine villa particula iustitiae vivere. nam, qui eorum cuiquam, qui una latrocinantur, furatur aliquid, aut eripit, is sibi ne in latrocino quidem relinquit locum. ille autem, qui archipirata dicitur, nisi equabiliter prædam differtiat, aut occidetur à socijs, aut relinquetur. quin etiam leges latronum esse dicuntur, quibus pareant, quas obseruent. itaque, propter aquabilem præda partitionem, & Bargulus, Illyricus latro, de quo est apud Theopompum, magnas opes habuit: & multo maiores Viriatus Lusitanus: cui quidem exercitus nostri, imperatorésq. cesserunt: quem C. Laelius, is, qui Sapiens usurpatur, prætor fregit, & comminuit: ferocitatēmq. eius ita repressit, ut facile bellum reliquis traderet. Cum igitur tanta vis iustitiae sit, ut ea etiam latronum opes firmat, atque angeat: quantam eius vim inter leges, & iudicia, & instituta reip. fore putamus? Mibi quidem non apud Medos solum, ut ait Herodotus, sed etiam apud maiores nostros fruenda iustitia caussa videntur olim bene morati reges constituti. nam, cum premeretur initio multitudo ab iis, qui maiores opes habebant, ad unum aliquem configiebant virtute præstantem: qui, cum prohiberet iniuria tenuiore, & equitate confituenda summos cum infimis pari iure retinebat. Eadēmq. consti tuendarum legum fuit caussa, qua regum. ius enim semper quesitum est aquabile. neque enim aliter esset ius. id si ab uno iusto, & bono viro consequbantur, eo erant contenti, cum id minus contingere, leges suu-

inuen-

inuente, quæ cum omnibus semper una, atque eadem voce loquerentur. Ergo hoc quidem perspicuum est, eos ad imperandum deligi solitos, quorum de iustitia magna esset opinio multitudinis. adiuncto verò hoc, ut iidem etiā prudētes haberetur, nihil erat, quod homines his auctoribus non posse consequise arbitrarentur.

## EXPLANATIO.

**N**isi speciem prete boni viri ser. us. } nisi iustus videare. Boni viri iusti. subiungit enim: Etiam solitario homini opinio iustitiae necessaria est. Et paulo ante dixit de iustitia: Ex qua una virtute viri boni appellantur. IN IUSTI habebeuntur. } mihi hoc videtur abundare: cum dixerit, Si eam non habebunt. Cum hoc iam scripsisse, animaduerteri conjecturam meam vnius libri veteris testimonia confirmari. N VLLIS presidijs sepi. } quibus maximū opinio iustitiae praesidiū esset. AD rem gerendam } dum eas res gerunt. Malè Lambinus, cōtra veteres omnes libros, Ad rē. cūm sit sermo de priuatis rebus. QVI maleficio, & scelere passuntur, } vt Terentius Sannio:

Leno ego sum: at ita, ut visquā fuit fide quisquā optima. NAM, qui &c. } iustitia etiam apud latrones necessaria. Plutarchus in Pompeio narrat de latronibus sacra facientibus. Argumentum à minori ad m. ius. FVRATVR aliiquid, aut clam eripit, } docti viri legunt, Clam furatur aliiquid, aut eripit. Ego sic, Furatur aliiquid, aut eripit. Nam in verbo, Furari, occulta, & infidiosa includitur actio: Eripere, aperta, & violenta. Sequor autem in hoc, præter morem Latini sermonis, omnes, quibus vtor, veteres libros. IN latrocino } inter latrones. argutē. ne inter latrones quidem latroni furari licet. AVT occidetur à socijs, aut relinquetur. } Quinque lib. vet. Occidatur, Relinquatur. duo alij, Interficietur, Relinquetur. Septem alij, & Tertij, Interficiatur, Relinquatur. magis probo. quam lectionem meritè probatam fuisse clarissimo, disertissimoq. viro M. Ant. Mureto affirmavit Ciofanus meuse: amq. & Labinus in vet. codicibus reperit. LEGES latronum esse dicuntur, } Thucydides scribit, ante bellum Troianum latrociniū non fuisse infame, sed periculosem potius. Hinc apud Homerum hospites rogantur, ac prædones sīnt: Παρθένοι νερπάδες, νερπόν διασταύται σέγερνες.

PRAE DAE partitionem } Sic Tertij liber, & nouem alij mei.  
 Reliqui verò, Portionem, libetius sequor superiorē lectionē.  
 dixit enim paullo supra: Aequabiliter prædā dispertiat. B A R -  
 G V L VS, } dictus à Bargo, Illyrico flu. De bello Illyrico, gesto  
 anno. v.c.DXXV. Polyb. lib.2. & alij. Q V I D E M exercitus nostrī, }  
 Decem, & Tertij, Quidē etiā ex.n. I M P E R A T O R E S Q. }  
 M. Vetillius, & C. Plautius prætores. & Q. Fabius proconsul  
 pacem cum eo fecit. tandem à proditoribus, Cæpionis consi-  
 lio, interemptus est. I s, qui Sapiens usurpatur, } appellari soli-  
 tus est. cōsuetudinem enim hoc verbum significat. In libro  
 de Amicitia: Non ab isto officio, quod semper usurpauit cum  
 valerem, abduci incommmodo meo debui. De Oratore: Aut  
 non eo nomine usurpandum, quo arguatur. De Vniuersitate:  
 Iuppiter, Iuno, & reliqui, quos fratres inter se, agnatosque  
 usurpare, atque appellare solemus. Phil. i. Græcum verbum  
 usurpauit. I s, qui Sapiens usurpatur: cuius nomine liber de  
 Amicitia inscriptus est. Duo C. Lælij fuere, duorum Africano-  
 rum amissimi. posterior Sapientis cognomen est adeptus. R E L I Q V I S } primū Q. Fabio Maximo, deinde Q. Seruilio  
 Cæpioni, qui eum per infidias occidit. Q V A N T A M eius vim  
 inter leges, & iudicia, & instituta reip. fore putamus? } Lib. Tertij, &  
 tres mei. Et iudicia, & cōstituta reip. Vnus. Et constituta reip.  
 Duo alij. Et in cōstituta reip. Alius. Et in cōstituta rep. Alius.  
 Et iudicia instituta r. p. Ceteri verò vulgati habet lectionē.  
 M E D O S } qui primi reges habuerūt. Diod. Scil. i. 3. Strabo lib. 2.  
 V T ait Herodotus, } lib. i. qui Clio inscribitur: quo loco ait, qui  
 bus artibus Deioces ad regnum adspirarit. F R V E N D A E iusti-  
 tie } sic liber Tertij, & decem mei. Duo alij ord. præp. Duo  
 alij, Seruanda iust. Nihil muto. B E N E morati reges } hoc Ari-  
 stoteles lib. v. Pol. tradit de tyrannis: O dē τύραννος εἰναι δῆμου  
 καὶ τὸ πλῆθος ὅπῃ τοὺς γνωσίους, ὅπως δῆμος ἀδικηταὶ μηδὲν οὐτὸν φασέον. εἰ τὸ συμβεβηκότων, χειρὶς γέροις οἱ πλεῖστοι τὸ τυγχανόν  
 γερόντοι εἰ δημοσιώσωσι, εἰς εἰπεῖν, πάθεσθεντες ἐκ τοῦ διαβάλλεν τοὺς  
 γνωσίους. αἴ τινος τῶν τρόπον κατέστηται τῷ παραπλεόνῳ.  
 N A M, cùm premeretur initio multitudo } In otio, Tertij liber, &  
 nouem mei. Sunt, qui legant, Inops multitudine: vt est in duobus meis.  
 Alij omittunt & Inops, & Initio, & In otio. quos  
 non sequor. S V M M O S cūm infiniti pari iure retinebat. } octo  
 mei, & Tertij, Pertinebat: quam lectionem probo. nam Per-  
 tinebat, est perfectè continebat. Pertinacia enim dicta est à  
 Pertinendo,

Pertinendo, idest, obstinatè tenendo. Vel lego, Continebat.  
 vt est in vno, quæ lectio arridet & Ciofano. E A D E M Q. con-  
 fìtuendarum legum fuit causa, quæ regum. } μεγαλοποσία. reges pri-  
 mū, deinde leges fuere. reges autem pro legibus, leges pro  
 regibus. Omnes antiquæ gentes regibus quondam paruerunt.  
 Et Aristoteles lib. I. Pol. καὶ τὸ περὶ τοῦ Ἰαναρίου αἱ πόλεις, καὶ  
 νὴ τὰ θύμα. Idem & Polybius initio lib. vi. grauiter, & inge-  
 niosè, vt solet, omnia litteris mandauit. I V S enim semper qua-  
 situm est equabile. } Arist. Polit. lib. II. τὸ πλῆθος διηγεῖται δοῦλοι τοῦ.  
 S i ab uno iusto, } lib. I. C V M omnibus semper } Plato de Leg. iv.  
 eas non ait veras leges, quæ non vniuersa ciuitati ex aequo  
 seruunt: iuris singularis conditores seditiones verius, quam  
 ciues, esse. E o erant contenti. } Erant eo cont. liber Tertij, &  
 vndecim mei. V N A, atque eadem voce } non vt alio modo te-  
 nuiiores, alio locupletes viuerent, sed vt summi cum inseparabili  
 aequo iure tenerentur. quod regibus quoque bene moratis  
 propositum fuit. A D I V N C T O verò hoc, } In libro Tertij,  
 atque in duodecim meis τὸ Hoc desideratur. N O N posse conser-  
 qui } ideo se libenter ijs, fortunatq. suas commiserunt.

## C I C E R O.

O M N I ligitur ratione colenda, & retinenda iu-  
 stitia est, tum ipsa propter se, (nam aliter iu-  
 stitia non esset) tum propter amplificationem honoris,  
 & gloria. Sed, vt pecunie querenda non solum ratio  
 est, sed etiam collocanda, quæ perpetuos sumptus sup-  
 peditet, nec solum necessarios, sed etiam liberales: sic  
 gloria & querenda, & collocanda ratione est. quam-  
 quam preclarè Socrates hanc viam ad gloriam pro-  
 ximam, & quasi compendiariam dicebat esse, si quis  
 id ageret, vt, qualis haberet vellet, talis esset. Quod si  
 qui simulatione, & inani ostentatione, ficto non modo  
 sermone, sed etiam vultu stabilem se gloriam con-  
 sequi posse rentur, vehementer errant. vera gloria rad-  
 ides agit, atque etiam propagatur. ficta omnia celeri-  
 ter, tamquam flosculi, decidunt: nec simulatum potest

quidquam esse diurnum. restes sunt permixti in utramque partem; sed breuitatis causa, familia erimus contenti una. T. i. enim Graccus, P. filius, tam diu laudabatur, dum memoria rerum Romanarum manebit: at eius filii nec vii probabantur bonis, & mortui numerum obtinenter iure ceterorum. Qui igitur adipisci veram iustitiae gloriam volet, iustitiae fungatur officijs. ea que essent, dictum est in superiore libro. Sed, ut facilimè, quales simus, tales esse videamus: et si in eo ipsis maxima est, ut simus i. qui haberi velimus: tamen quedam precepta danda sunt Nam, si quis ab ineunte etate habet causam celebritatis, & nominis, aut a patre acceptam, quod tibi, mi Cicero, arbitror contigisse, aut aliquo casu, atque fortuna: in hunc ocu- li omnium coniunctur, atque in eo, quid agat, quemadmodum vivat, inquiritur: &, tamquam in clarissima luce versetur, ita nullum obscurum potest nec dictum eius esse nec factum. quorum autem prima etas, propter humilitatem, & obscuritatem, in hominum ignoratione versatur, hi, simul ac iuuenes esse cœperunt, magna spectare, & ad ea rebus studijs debent contendere. quod eo simiore animo facient, quia non modo non inuidetur illi etati, verum etiam faveatur. Prima igitur est adolescenti commendatio ad gloriam, si qua ex bellicis rebus comparari potest: in qua multi apud maiores nostros existiterunt, semper enim ferè bella gererantur. tua autem etas incidit in id bellum, cuius altera pars sceleris nimium habuit, altera felicitatis parum. quo tamen in bello, cum te Pompeius ales alteri prefecisset, magnam laudem & à summo viro, & ab exercitu consequebare, equitando, iaculando, omnia militari labore tolerando, atque ea quidem tua laus

parte

pariter cum rep. cecidit. mihi autem hæc oratio suscep- ta nō de te est sed de genere toto. quamobrem, ad ea, que restant, pergamus.

## EXPLANATIO.

**T**VM ipsa propter se, } liber Tertii, & tres mei, Per se. Sex alij, Per se. N A M aliter iustitia non esset } si pecuniam, si honores, si opes quereret, supra dictum est: Spernit, & negli- git eas res, ad quas plerique inflammati auiditate rapiuntur. Quid igitur potissimum spectat seipsum, ut iuste agat: in quo præmium ponit maximum: & ex eo tamen ipso sequitur amplificatio honoris, & gloriae. S E D, vt pecunie &c. } nam Non minor est virtus, quam querere parta tueri. N E C solum neceſſarios, } ad tuendam vitam, & frugaliter aleandam familiam.

**L**IBERALIS: } vt & ipsi vitam laetius, & benignitate in alios vti possimus. R A T I O N E } non malis artibus, in quo lapsi sunt præstanti homines ingenio duo Gracchi fratres. S E D, vt pecunie querenda non solum ratio est: Quatuor ex meis libris, Pecunie non solum querendæ. Semprem alij, & Tertii, Pecunie non querendæ solum. S I C gloria & querenda, & collocanda, &c. } Septem mei non habent primam coniunctionem, Et. P R A E C L A R E Socrates } Xenophon: Απαριμονευμάτων a propè finem: quo loco probat eum disci- pulos à simulatione studio dehortari solitum: Α εὶ τὴν ἀληθήνα τὸν εἰναι κατέλαβεν οὐκέτι, οὐδὲ τὸν αἴσθεσθαι τὸν θύμοντο. Et, vt hoc verum esse ostendat, similitudinem à tibicine addit: Εὐδοκίοντας γὰρ οὐκ, εἰ περ μηδὲν αἴσθεσθαι. αὐλητοῖς δοκεῖ θύμοντο, τι μὲν ἡτο τοιούτοις εἰναι. οὐδὲν τὰ τέχνα τῆς τέχνης μηριτέον τούς αἴσθεσθαι. αὐλητας, &c. Et lib. ii. Αὐλα σωτηριόποτε καὶ ἀσφαλεστηποτεγένεται, οὐδὲς, οὐκτόπεπλε, οὐδὲν θυμοῦ δοκεῖ αἴσθεσθαι εἶναι τὸν τοιούτον αἴσθεσθαι πει- εῖναι. οὐδὲν οὐδὲν αἰσθέσθαι αἴσθεσθαι, σωτηριόποτες θυμοῦ πάσας μεθίσται τοιούτου μελέτην οὐδὲν ανοικέσθαι. Plato Dionis: Φανερὸν οὐδὲ οὐδὲ θύμοντας, οὐδὲν τοιούτοις, οὐδὲν φαίνεται. F I C T O non modo sermone, } omnes veteres libri, Et factio non modo sermone. R A D I C E S agit, } idēo permanet: nam factio sermone, & vultu quæsita stabilis non est. P R O P A G A T V R: } pergit in translatione: nam dixerat, Radices agit. VERA gloria radices agit, atque etiā propagatur. Perspicue ita est in antiquis omnib. libris,

**FICTA** omnia celeriter, tāquam flosculi, decidunt. } Demosthenes:  
 Oīru ēn̄ πλανεκτας, και τημετας τι ερχοται, η θεσση περιφροτης και μηκον  
 πλημμερα αποτελει αιει αιπει και διελυται, ου γηρα εστι, ην εστι, αιπονωται,  
 και θηρονομιτα και φευδειρη διωρισται. Βελτινη χημοι οικαι: αιλα τη πι-  
 αντα εις, αιφα απαι και φρεζιον γραφειν αιτηξει, και σφιδει γε ηδηται θη-  
 ται ελπιται, αι πηγη πο χρονια η φαεται, και πει απει γεπει. **N E C**  
 simulatum potest quidquani esse diurnum. } quia naturae aduer-  
 satur. **I N** vitramque partem: } diurna esse non simulata, non  
 diurna simulata. illud Ti. Gracchi P. F. hoc illius filiorum  
 exemplo comprobatur. **F A M I L I A** erimus contenti vna, } Vox  
 Vna abest à duobus veteribus libris. In Tertij verò libro, &  
 nouem meis, Familia contenti erimus vna. **T I**. **G R A C H U S**, }  
 qui bis consul fuit, bis triumphauit, censorq. fuit. **T I B E R I**-  
**I V S** enim **G R A C H U S**, } Duo mei, Tiberius igitur Gracchus.  
 Vnus, Tiberius Gracchus enim. **A T** eius filij nec viui probantur  
 à bonis, } liber Tertij, & vnuus meus. Proabantur bonis: Septē  
 alij. Boni; in quorum vno, non Et, sed s̄ scriptum est. diuulso  
 S à verbo Boni, & sequenti coniunctioni frustra addito.  
**N V M E R U M** obtinent iure ceterorum. } quia leges ferre conati  
 sunt pernicioſas reip. vel testimoniio minoris Africani: qui,  
 de Ti. Gracchi nece quid sentiret, à C. Carbone tribuno pl. se  
 ditioſe interrogatus, respondit, iure cæſum videri. Langius,  
 Nomen. **E T** mortni numerum obtinet iure ceterorum: } Vnus meus,  
 Obtinent locum. Tertij. Et mortui numerum obtinent &c.  
 Alius, Numerum retinent. Sex alij habent item Numerum:  
 reliqui verò, Nomen &c. **Q V I** igitur adipisci reram iustitiae gloria  
 volet iustitiae fungatur officij, } tredecim mei, Volent, Fungan-  
 tur. **D I C T Y M** est in superiore libro. } his verbis: Iustitiae primum  
 munus est, vt ne cui quis noceat, nisi lacelitus in iuria: dein-  
 de, vt communibus pro communibus vtratur, priuatis autem  
 vt suis &c. **E T S I** in eo ipso vis maxima est, } Isocrates: Ωμηροι ινιας  
 ιμηροι και πλαστοι και τηδει αιλαντων, τα κεραδειν ισχυραται ει) δει: ουτοι και τηδει τερεται τας αρχας και τας ζωδεις αιλαντεις και διμεται ει) περιπτει. **V T** simus ij, qui haberit velimus. } quam Socrates viam  
 ad gloriam proximam, & quasi compendiariam dicebat esse.  
 Plato εν το νόμων β. Το μηδε γεροντεται, και μηκιστον έντα αγαθον αι-  
 λωσι, ουτοι τοι ενδέχον εἰσιν θρηνεται. Isocrates contra, ne idem dice-  
 ret, paulo dexterius, & dilutius: Ούτοις αν ισχυροις θεομοιοις ει  
 τεντα ουντοις μη περιπτει, επει αν περιπουσ τοις αιλαιοις θηριωνεις.  
 Huc facit illud Sallustij, Catilina: Esse, quam videri, bonus  
 malebat,

malebat: ex Aeschyllo sumptum:

Οὐ γάρ δοκειν δέιποτε, αλλε είναι δέλεται.

**N A M**, si quis ab ineunte atato } dixit se quædam præcepta datu-  
 rum, quæ ad iustitiae gloriam adipiscendam valeant. sed, ante-  
 quam præcipiat, filio gratulatur, quod celebritatis, nominisq.  
 causam à patre accepit. Præcipere autem incipit in iis ver-  
 bis: Prima igitur est adolescenti commendatio ad gloriam,  
 si qua ex bellicis rebus comparari potest. **C A V S A M** celebri-  
 tatis, } materiam. **A patre** } vel nobili, vel aliqua ingenij  
 laude præstanti. **Q V O D** tibi, mi Cicero, } lib. I. Licet mihi,  
 Marce fili, apud te gloriari, ad quem & hereditas huius glo-  
 riæ, & factorum imitatio pertinet. **Q V O D** tibi, mi Cicero, ar-  
 bitror contigisse: sic omnes libri scripti. **A T Q V E** in eo, quid  
 agat, } liber Tertij, & septem mei, Eum. **I N** hunc oculi omnium  
 coniunctur. } Isocrates: Τοις αναριθμοις ουχ διορισται απεινοις, αμε-  
 λεινοις, αι πολλοις ιχναριδηις τοις θηριωνεις ποτασται.

Omne animi vitium tanto conspectus in se  
 Crimen haber, quanto, qui peccat, maior habetur.

**I N Q V I R I T U R**: } non modò enim expectatur, sed quasi ex-  
 xigitur ab eo virtus. **Q V O R V M** autem prima etas, propter hu-  
 militatem, & obscuritatem in hominum ignoratione versatur, } nam,  
 vt ait ille,

Haud facilè emergunt, quorum virtutibus obstat  
 Res angusta domi.

**S I M V L A** iuuenes esse cuperunt, } confirmato iudicio, & animi,  
 corporisq. auctis. **M A G N A** spectare, } gloriam. Virgilius:  
 --tentanda via est, qua me quoque posim  
 Tollere humo, victorq. virum volitare per ora.

Et:

--Breue, & irreparabile tempus  
 Omnibus est vita: sed, famam extendere factis,  
 Hoc virtutis opus.

**N O N** inuidetur, } contra Aristoteles Rhet. lib. II. cap. de Inui-  
 dia. **Q V I A** non modò non inuidetur illi etatis, } Vnus ex meis  
 libris, Quia nō modò inuidetur. De quo dicendi genere plura  
 Pater in Comment. Ep. Fam. **V E R V M** etiam faveatur, } pro-  
 pterea P. Scipioni, qui primus Africanus appellatus est, ad-  
 modum iuueni, bellum Hispaniense, alteri verò Africano  
 consulatus ante ætatem cum administratione Punicj belli  
 mandatus est. Athenienses quoque, cū graui Lacedæmoniorū

bello premerentur, Iphicratenn, xxiiii. annos natum, ducem delegerunt. Ex s t i t e r v n t. } clari euaserunt. A L T E R A  
vñ } Cesariana: Plena sceleris, quia rēp. oppresbit. A L T E R A  
Pompeiana, nec ea.

Integritate, scelerisq. pura

FELICITATIS parum. } qua maximè in imperatore re-  
quiritur. A L A E alteri } turmarum equestrium auxiliarum.  
nam de auxiliaribus equitibus Ala dicitur. Alteri, dicit, quia  
duæ legiones exercitus erat consularis: quas equites, tāquam  
alæ, à lateribus muniebant. Agell.lib.16.c.4. & Seru. Æn.lib.  
4.ad illud,Dum trepidant alæ.Ciceronem filium & Brutus a-  
pud Plutarchum à re bellica laudat. S V M M O viro } ad Ap-  
pium, omnium & fæculorum, & gentium principem dicit.  
E Q V I T A N D O, iaculando. } Sall. Iugurtha: Non sè luxu, neque  
inertia, corrumpendum dedit, sed, vt mos gentis illius est, e-  
quitari, iaculari, cursu cum æqualibus certare. O M N I A mili-  
tari labore tolerando. } sic nouem libri mei. quatuor alij. O-  
mnem militarem laborem tollerando. tertij vero, & aliis  
meus, Omni militari &c. quæ lectio Ciofano non improba-  
tur. C V M rep. cecidit. } ergo tibi ferenda fortuna communis  
æquo animo. N on de te est, } cui nullum fructum propter  
interitum reip. bellica virtus attulit. A D ea, que restauit perga-  
mus. } Tertij liber, & tredecim mei, Pergamus ad ea, quæ  
restant.

### C I C E R O .

V T igitur in reliquis reb. multo maiora opera sunt  
animi, quām corporis, sic ea res, quas ingenio, ac  
ratione persequimur, gratiore res sunt, quā illa, quas vi-  
ribus. Prima igitur commendatio proficiscitur a mode-  
stia, tum pietate in parentes, tum in suos benevolentia.  
Facillimè autē & in optimam partē cognoscuntur ad-  
olescentes, quise ad claros, & sapientes viros, bene co-  
sulentes reip. contulerunt. quibuscum si frequentes sunt,  
opinionem afferunt populo, eorū fore se similes, quos si-  
bi ipsi delegerunt ad imitandum. P. Rutilij adolescen-  
tiam

tiam ad opinionem & innocentia, & iuris scientia P.  
Mucij commendauit domus.nam L. quidem Crassus,  
cūm effet admodum adolescentis, non aliunde mutuatus  
est, sed sibi ipse peperit maximum laudem ex illa ac-  
cusatione nobili, & glorioſa. &, qua etate qui exercen-  
tur, laude affici solent: vt de Demosthene accepimus:  
ea etate L. Crassus ostendit, id se in foro optimè iam  
præmeditatum facere, quod etiam tum poterat domi-  
cum laude meditari. Sed cūm duplex sit ratio oratio-  
nis, quarum in altera sit sermo, in altera contentio:  
non est id quidem dubium, quin contentio orationis  
maiorem vim habeat ad gloriam: ea est enim, quam  
eloquentiam dicimus: sed tamen difficile dictu est,  
quantopere conciliet animos comitas, affabilitas  
que sermonis. Exstant epistole & Philippi ad  
Alexandrum, & Antipatri ad Cæsarium, &  
Antigoni ad Philippum, trium prudentissimorum:  
(sic enim accepimus) quibus præcipiunt, vt oratione  
benigna multitudinis animos ad benevolentiam alli-  
ciunt, militésque, blandè appellando, sermone deliniāt.  
Quæ autem in multitudine cum contentione habetur  
oratio, ea sape uniuersam excitat gloriam. magna est  
enim admiratio copiosè, sapienterque dicentis: quem  
qui audiunt, intelligere etiam, & sapere plus, quām  
ceteros, arbitrantur, si vero inest in oratione mixta  
modestia grauitas, nil admirabilius fieri potest: eoque  
magis, si ea sunt in adolescenti. Sed, cūm sint plurima  
causarum genera, quæ eloquentiam desiderant: multi-  
que in nostra rep. adolescentes & apud indices, & a-  
pud sénatum dicendo laudem afferunt: maxima  
est admiratio in iudicijs: quorum ratio duplex est.  
nam ex accusatione, & defensione constat: quarum

et si laudabilior est defensio, tamē etiam accusatio probata persape est. Dixi paulo antē de *Craffo*: idem fecit adolescentis. *M. Antonius*: etiam *P. Sulpici* eloquētiā accusatio illustrauit, cūm seditionis, & iniuriae ciuem *C. Norbanum* in iudicium vocauit. sed hoc quidem non est sape faciendum, nec vñquam, nisi aut reip. causa, vt duo *Luculli*: aut patrecimy, vt nos pro *Siculis*, pro *Sardis* contra *Albucum Iulius*, in accusando etiam *Man. Aquillio L.* Fufi cognita industria est. Semel igitur, non sape certe. sin erit, cui faciendum sit sapientia, reip. tribuat hoc muneris: cuius inimicos vñsciri sape, non est reprehendendum: modus tamen adfit. durum enim hominis, vel potius vix hominis videtur, periculum capititis inferre multis. id enim tum periculosum ipsi est, tum etiam sordidum ad famam, committere, vt accusator nominetur. quod contigit *M. Bruto*, summo genere nato illius filio, qui iuris ciuilis in primis peritus fuit. Atque etiam hoc praeceptum officij diligenter tenendum est, ne quem vñquam innocentem iudicio capitis arcessas. id enim sine scelere fieri nullo pacto potest. nam, quid est tam inhumanum, quam eloquentiam, à natura ad salutem hominum, & ad conseruationem datam, ad bonorum pesterem, perniciēm. conuertere? Nec tamen, vt hoc fugiēdum est, ita est habendum religioni, nocentem aliquando, & nefarium, impiumq. defendere. vult hoc multitudo: patitur consuetudo, fert etiam humanitas iudicis est, semper in causis verum sequi: patroni, nonnumquam verisimile, etiam si minus sit verum, defendere: quod scribere, præsertim cūm de philosophia scriberem, non auderem, nisi idem placeret grauissimo Stoicorum Panatio. Maximè autem & gloria paritur, &

gratia

gratia defensionibus, eoque maior, si quando accidit, vt ei subueniat, qui potentis alicuius opibus circumueniri, vrgerique videatur: vt nos & sape alias, & adolescentes contra *L.* Sulla dominantis opes pro *Sex. Roscio Amerino* fecimus: qua, vt scis, exstat oratio.

## EXPLANATIO.

**M**VLTOMAIORA sunt opera animi, quam corporis: } *Sallustius*,  
Catilinae procēmio: Nostra omnis vis in animo, & corpore sita est. animi imperio, corporis seruitio magis vitur. Et II. de rep. ord. Corpus animo obcedit. Ideo Plato in Clitophonte vocat τὸν πνεῦμαν, τὸν δὲ ἀρχέγενον. **I**N **G**ENIO, ac ratione persequimur, } Vniuersitatem ingenio, cetera mortis erunt. **P**RIMA igitur commendatio } in secundo præcepto dicit, Prima. quod mirari aliquis poscit. sed in primo, quod ad res bellicas pertinet, habuit rationem temporis, in secundo utilitatis. recte igitur utrobique. A modestia, } qua foris vitur, cum omni hominum genere. nam, qua subiunguntur, Tum pietate in parentes, tum in suos benevolentia, domestica sunt. Hanc laudem filio tribuit *Simo ille Terentianus* in iis verbis:

Sic vita erat: scilicet omnes perferre, ac pati: Cum quibus erat cumque una, iis se se dedere, Eorum obsequi studiis, aduersus nemini, Numquam præponens se aliis. ita facilimè Sine inuidia inuenias laudem, & amicos pares.

**T**VM in suos benevolentia. } Tum, non est in septem, & Tertij. **I**N optimam partem cognoscuntur adolescentes, } Sic ad Att. lib. 10. Caspar mihi ignoscit per litteras, quod non venefim, scilicet in optimam partem accipere dicit. **Q**VIS se ad claros, & sapientes viros, bene consilentes reip. contulerunt. } quod ipse fecit adolescentis. nam initio libri de Amicitia, A patre, inquit, ita eram deductus ad Scœuolum, sumpta virili toga, vt, quoad possem, & liceret, à senis latere numquam discederem. itaque multa, ab eo prudenter disputata, multa breuiter, & commode dicta, memoria mandabam, fieri q. studebam eius pruden-

tia doctior quo mortuo me ad pontificem Scævolam contulit: quem vnum nostræ ciuitatis & ingenio, & iustitia præstantissimum audeo dicere. Id autem apud veteres visiratum fuisse, ex Tacito, & Valerio intelligitur. **Q** **V** **I** **B** **V** **S** **V** **M** { si frequenter sunt, } si eorum consuetudine crebro vtuntur. **P** **R** **V** **T** **I** **L** **I** { qui cum Cn. Mallio consul fuit, & iuris ciuilis laude præstis. de hoc in Bruto. Hunc alibi, exemplum, & specimen innocetiae appellat. P. M v c 11 } iuris consulti, optimi viri: qui, cum esset consul, Ti. Graccho remp. perturbate, armis abstinuit, ne ciuilis cedis auctor esset. Huius filius fuit Q. Mucius p̄t. max. collega L. Crassi in consulatu, iuris consultus, & idem orator egregius. C v m esset admodum adolescentis. } annos uetus xix. auctore Tacito in dialogo de Oratoribus. E x illa accusatione nobili, & glorioſa. } cum accusauit, & damnauit consilarem, eloquentia clarum, C. Carboneum: qui cantharidas sumpsit. Fam.lib.9. epist. 21. nam ex ea summa ingenij non ludem modò, sed etiam admirationem est consecutus. Cic. in Bruto, & Tacitus de Oratoribus. **Q** **v** **i** **e** **x** **e** **r** **e** **c** **u** **t** **u** **r**, } domi. **D** **E** **M** **O** **S** **T** **H** **E** **N** { qui puer pupillares actiones habuit. Quintilianus lib.12. cap.6. Hic, industria, naturam emendauit. Nam in subterraneo conclavi semiraso capite meditatus, & gestum ad speculum ingens formauit, & strictum gladium de lacunari supra humerum suspendit: Satyro histrioni se eruditum tradidit: lapillis lingue subiectis balbutiem emendare studuit: imbecillitatem spiritus arduo adscensu ingrediendo, & recitando aliiquid, correxit: ad fluctuum murmur, ventorūq. turbines declamatās, concionis procellas, hoc est tumultuantēs, & obstrepetem populum, atque exsibilantem contēnere didicit. **D** **E** **D** **e** **m** **o** **s** **t** **h** **e**: } sic vndecim mei, & tertij. **I** **D** **f** **e** **i** **n** **f** **o** **r** optimè iam premeditatum facere, quod etiā tum poterat domi cum laude meditari. } septem, & tertij, nec Præmeditatum, nec Impræmeditatum habent. **sex**, Jam impræmeditatum. vnuſ habet in ora. Placet. vt respondeat verbo Meditari. quod interpretor, meditando exerceri, quod erat adolescentiū, ante quam cauſas agere inciperent. Qua ex parte, inquit, alij domi cū laude meditantur ea, qua ad agēdas cauſas pertinent: ea ex parte L. Crassus, impræmeditatus, cauſas ipsas agebat. C v m duplex sit ratio orationis, } de hoc supra lib. i. vbi de d' coro orationis. **N** **O** **N** **i** **d** **d** **u** **b** **u** **m**, quin contentio orationis maiorem vim habeat ad gloriam: } cum duo sint orationis genera, Sermo, & Contentio: quid vtrum-

vtrumque pariat, Cicero demonstrat. Parit autem contentio gloriam: est enim in ea perfecta vis eloquētæ: Sermo autem gratiam sine gloria. Hæc est germana sententia Ciceronis. Et, cùm loquitur de Contentione, Majorē, inquit, vim habet ad gloriam: cùm de Sermone, Dificile dictu est, inquit, quantopere conciliet animos comitas, affabilita, q. sermonis. Est igitur, Contentionis, gloria, gratia, Sermonis. Quæ sententia elicetur ex veterum libroruſ consensu: quos fecuti sumus. Antea, Quin cōtentio orationis plurimū posſit, & mai. contraverteres vndeclim meos, & Tertij. E a eſtenim, quam eloquentiam dicimus: } nam, qui excellit in sermone, disertus potius, quam eloquēs, dicitur, non sequitur autem, vt, qui dilertus est, idem sit eloquens: qui vero eloquens, facile dilertus esse potest. itaque præstat eloquens diserto. Antonius apud Ciceronem i. de Oratore, eum statut disertum, qui potest satis acutè, atque dilucidè apud mediocres homines ex communi quadam opinione dicere: eloquentem vero, qui mirabilius & magnificientius augere posset, atque ornare, que veller. Vide Quintilianu in procœmio libri 8. ANIMOS hominum } abest, Hominiū, à tredecim meis, & Tertij. neque requiritur à sententia. COMITAS, } affabilita, q. sermonis, } apud Euripidem Capanei laudatur ἀπόδεις θορητος γένεσις σώμα. i. animi candor, & affabilitas. ANTIPATRI ad Callandrum, } eius filium, de quo vide Iuttinum. Antipater, Iolai filius, Philippi miles, inter Alexandri duces, & regni successor: Calladri illius pater, qui Alexandri matrem Olympiadem interfecit. Reliquit autem duos libros epistolarum, qui à Suida citantur. ANTIGONI ad Philippum filium, } sic duodecim meis, & Tertij. Antigonus Macedonias rex fuit. Plutarchus. MILITESQUE, blandè appellando, sermone deleniant. } Blando, est in tredecim meis. in uno, Militésque, blando sermone appellando, delen. Sunt, qui nō Sermone deleat: contra veteres omnes libros. VNIVERSAM excitat gloriam. } sic tredecim mei, & Tertij: vnuſ tantum, Vniversoru, quod non probo. glossema enim est. Vniversam autem, explano, omnīu, vniuersorum, non paucorū hominum: vt sermo, qui habetur inter paucos, sed eorū omnium, qui audiūt, qui plurimi sunt. Vniversam, igitur, summā, perfectam, ad quam nihil posſit accedere. COPIOSAE, sapienterq. dicentis: } Cicero in Oratore: Res sic se habet. Copiosæ, & ornatæ dicere, sine sententia, insania est: sententiosæ autem sine verbo-

rum & modo, & ordine, infantia est. Hæc est Oratoris descrip<sup>tio</sup>: quem copia à dialectico, sapientia ab inani garrulitate separat. In oratione, quæ cum contentione habetur. **M I S T A** modestie gravitas, dixit iam, Magna est admiratio copiosæ, sapienterq. dicentis: nunc, si ad copiæ, & sapientiæ accedat modestia, nihil admirabilius dicit esse, præsertim in adolescenti: quia pudor ætatem ornat, orationi autem non modò non obest, verum etiam prodest plurimum, quod exemplo L. Crassi lib. i. de Orat. perspicuum est. **P L V R I M A** cassarum genera, Plura, septem mei, & tertii. **D E S I D E R A N T**, Desiderant, sex mei, & tertii. **A S S E C U T I S** int: sic omnes, vno tātūm excepto, in quo, Consecuti, quod non probro. **M A X I M A** est admiratio, non modò laus. **L A V D A B I L I O R** est defensio, Vide Quintil. lib. 12. cap. 7. **D E C R A S S O**: qui accusauit de maiestate C. Carbonem reip. caussa. **A D O L E S C E N S M. Antonius**: robustior tamen annis aliquot, quam Crassus. accusauit autem Cn. Papirium Carbonem, qui cùm Metello Caprario consulatum gesserat, patrem eius Carbonis, qui ter consul fuit, & à Pompeio Lilybæi est interemptus: vt in ep. ad Pætum. Hic M. Antonius, M. Aquillium defendens, diloricata rei tunica, cicatrices iudicibus ostendit. **P. S V I P I C I**: qui loquitur in libris de Orat. Defendit autem C. Norbanum idem Antonius, & seditiones exornauit, dicens multas interdum seditiones reip. fuisse: vt, cùm reges exacti, cùm tribunicia potestas constituta. **N I S I aut reip. caussa, vt duo Luculli**: sic omnes libri veteres, & rectè. Intelligit autem Lucium, qui Mithridatem, Tigranemq. deuicit, & Marcum: qui quamquam Seruiliū augurem, Lucij patris accusatorem, iniuriæ referendæ gratia, accusauerint, tamen, quia de peculatu, quod est furum pecuniae publicæ, accusarunt, reip. caussa id facere visi sunt. hoc & Plutarchus ostendit, & Cicero in Lucullo his verbis: Ut enim admodum adolescentes cum fratre, pati pietate, & industria prædicto, paternas inimicitias magna cum gloria est persecutus, in Asiam quæstor profectus, ibi per multis annos admirabili quadam laude prouincie præfuit. **P A T R O C I N I I**, Patrocinio, octo mei, sex, & tertii, cum impressa faciunt. **P R O Sardis contra Albucium Iulius Cæsar**: Pater antè multis annos emendauit, & impressit, Contra Albucium: cùm in omnibus, & recentioribus, & antiquis libris, Pro Albucio, scriptum sit. Coniecturam autem eius historia primū, deinde

ratio peperit. nam Sardos à Julio Cæsare Strabone, eo, qui futetiis, & dicendi leporc excelluit, esse defensos, docet Suetonius in Cæsare dictatore. Genus, inquit, eloquentiæ dumtaxat adolescentis adhuc Strabonis Cæsaris fecutus videtur: cuius etiā ex oratione, quæ inscribitur, Pro Sardis, ad verbum nonnulla transtulit in Diuinationem suam. Cùm igitur singulorū singulas perseguitur accusationes, Lucullorū cōtra Seruiliū reip. caussa, suam pro Siculis, Iulij pro Sardis, Fufij pro ea, quam Aquilius administravit, prouincia: cur, ceteris vnicam tribuens accusationē, duas Fufio tribuat? nam, si legatur, Pro Sardis, Pro Albucio: quæ duæ defensiones sunt: duas simul accusationes esse, quis non videt? Omnino quædam modum C. Verris nomen omisit Cicero, quem pro Siculis accusauerat, Siciliæ defensæ mentione contentus: sic omittere potuit Albucij, Sardiniae in mentione facta. sed, quando veteres omnes libri, Pro M. Albucio, habent: modestius se facere Pater est arbitratus, si, Cōtra Albucij, reponeret, quām si totum illud, Pro M. Albucio, tolleret. Fortasse autem, Contra Albucij, addidit Cicero, nam accusatio Lucullorū, & ipsius Ciceronis recentior erat, ipsaq. satis nota res hominibus eius erat. at Cæsaris accusatio remotor, ideōq. minus nota, quod si mentio fieret de Albucio, reo, tollebatūr obscuritas, & patefiebat historia. Ideo non probo eorum opinionem, qui hoc totum, Contra Albucium, delendum censem, neque correctores istos audio, qui sibi nimium quantum in coniectura placent, inseruntq. maculas interdum, quas eluere se putant. Hanc eius emendationem, vt alias non paucas, à viris doctis, qui post editionem suam in Ciceronem scripserunt, esse dissimulatam, non molestè ipsum tulisse, sum ipse testis. non enim industriae sui fructū ex aliena laudatione petebat: verum id tantum spectabat, vt op̄e studiosis ferret: tātūm q. aberat, vt inuideret, si quos in hoc genere videret excellere, vt iis etiā & gratularetur, & summam laudē tribueret, Albucius autē est, qui cùm in Sardinia, victis latrunculis, sine senatus decreto quasi triūphasset, Romæ postea accusatus in exsilio missus est, vide in Bruto, de Fin. lib. I. Tusc. V. Cæsar: Cæsar, non est in decem meis, & tertij, & certè glossema est. In accusando etiam M'. Aquillio L. Fufi cognita industria est, Pro Manlio, (quod erat in vulgatis, & in vno meo vetero) siue, Manilio, (quo modo est in undecim meis, & tertij) siue, Maniliū, (quo modo in duobus item meis) primus repositus

Pater, M. Aquillio, ante multos annos. id quod editi libri testantur. Sed, quia, gloriolam non occupans, ipse correctione contentus, neque Scholam terripit, neque locum se restitutum illo modo indicavit: & hic eius fructum industriae interuertere, ad seq̄. transferre alij postea conati sunt. Historiam M. Aquillij à L. Fusio accusati breuiter att: ingit Cicero in libro de claris orat. Provincia tamen, pro qua Fusius Aquillium accusavit, metionem ibi quoque pr̄termisit. Aquilliorum autem prænomen fusse M'. idest Manius, vt Curiorū, antiquitatum Romanarum periti non ignorant. sed, ob inscitiam notæ veteris, pro M' factum erat M. in omnibus vulgaris libris. Si n̄ erit, cui faciendum sit sapientia? Sin erit, cur f. vnuſ, Sin causa erit, cur f. vnuſ. Sin cui f. vnuſ. alij omnes cum impressa lectione sunt. R E T P. tribuat hoc muneric? sic septem, & Tertij. septem, tribuantur. V L C I S C I ſepe, ſepiuſ, ſeptem, & Tertij. D V R I enim homini, vel potius, viꝫ hominis videatur, }

Xαξιαν δε τοις αὐθετοῖς, αὐθετοῖς γ.

I D enim tam periculosoſi ipſi eſt, } Cūm, quinque, & Tertij. N O M I N E T V R. } Nominare, octo, & Tertij. M. B R V T O, } qui fe ad accusandum potius, quam ad defendendum, dedit: vt in libro de claris orat. Hunc facetè in primis in quodam iudicio L. Crassus exagitauit. vt in oratione pro Cluentio. S V M M O genere nato, } nam Iunia familia Ilio oriunda, cum Ænea in Italiā venit, affinitatēmq. cum Romanis regibus contraxit. I L L I V S filio, &c. } quod tanto maiorē infamiam ei afferebat. Q uī iuriū ciuius in primis peritus fuit, } de veteribus iuris consultis diligenter scriptis probata vir industriae, Bernardinus Rutilius Vicetinas. Eum lege. I V D I C I O capitis } Sic omnes libri veteres: non, In iudicium capitis. I T A eſt habendum religioni, } sic duodecim mei, & Tertij: non, Religioni contrarium. quo modo antea legebatur. Item, non Ita, eſt in Tertij libro: pro Similiter: quomodo Sallustius, Iugurtha: Ipſe armatus, intentusque item milites cogebat. Et alij. Habere religioni, eſt, cauere. Terentius. F E R T etiam humanitas. } vt homo hominem seruatum velit. P A N A E T I O. } à quo & hoc ipsum, & alia multa in hos libros Cicero tranſtulit. A D O L E S C E N T E S } annos natus 27. Cicero pro Sex. Roscio Amerino dixit. Vide Agellum lib. 15. cap. 28.

### C I C E R O .

### C I C E R O .

S Ed, expositis adolescentium officiis, quæ valeant ad gloriam adipiscendam, deinceps de beneficētia, ac liberalitate dicendum eſt, cuius eſt ratio duplex. Nam aut opera benignè fit indigentibus, aut pecunia. facilior eſt hac posterior, locupleti preſertim: sed illa lauitior, ac ſplendidior, & viro forti, clarōq. dignior. quamquam enim in utroque ineſt gratificandi liberalis voluntas: tamen altera ex arca, altera ex virtute deponitur: largitioque, quæ fit ex refamiliari, fontem ipsum benignitatis exhaustit: ita benignitate benignitas tollitur: qua quo in plures vſus ſis, eo minus in multos vti poſſis. At, qui opera, idest virtute, & industria, benefici, & liberales erunt, primum, quo pluribus profuerunt, eo plures ad benignę faciendum adiutores habebunt: deinde, conſuetudine beneficētia paratioreſ erunt, & tanquam exercitatiōres ad bene de multis promerendum. praeclare in epiftola quadam Alexandrum filium Philippus accusat, quid largitione benevolentiam Macedonū conſectetur. Quid te, (malum) inquit, rationis in iſtam ſtem induxit, vt eos tibi fideles putares fore, quos pecunia corrupiſſes? an tu id agis, vt Macedones non te regem ſuum, ſed miniftrum, & prabitorem putent? quo quid ſordidius regi? Melius etiam, quid largitionem corruptelā dixit eſſe. ſit enim deterior, qui accipit, atque ad idem ſemper expectandum paratioreſ. Hoc ille filio, ſed praeceptum putemus omnibus. Quamobrem id quidem non eſt dubium, quin illa benignitas, qua conſtat ex opera, & industria, & honestior ſit, & latius pateat, & poſſit prodeſſe pluribus. Nonnumquam tamen eſt largiēdium: nec hoc benignitatis genus omnino repudiandum eſt: & ſaep̄ idem

neis hominibus indigētibus de re familiari impertie-  
dum, sed diligenter, atque moderate. multi enim patri-  
monia effuderunt inconsultē largiendo. quid autē est  
stultius, quām, quod libenter facias, curare, vt id diu-  
tius facere non possis? Atque etiam sequuntur largitio-  
nem rapina. cūm enim dando egere cōperunt, alienis  
bonis manus afferre coguntur. ita, cūm, benevolentia  
comparanda caussa, beneficii esse velint, non tanta stu-  
dia asequuntur eorum, quibus dederunt, quanta odia  
eorum, quibus ademerunt. quā obrem nec ita clauden-  
da est res familiaris, vt ea benignitas aperire non pos-  
sit: nec ita referanda, vt pateat omnibus: modus adhi-  
beatur, isq; referatur ad facultates.

## EXPLANATIO.

**Q**VAM QVAM in vtroque inest gratificandi liberalis volun-  
tas: } Vlpianus lib. 70. ad edictum, lib. 39. Digestorum,  
tit. 5. de Donationibus, l. 19. Hoc iure vtimur, vt in rebus pu-  
blicis, cūm de donatione quāritur, illud solū spectetur, vtrum  
ob caussam aliquam iustum recip. promittat quis, vel pollicea-  
tur, an non. vt si ob honorem aliquem promittat, teneatur: si  
minus, non. Labeo scribit, extra caussam donationum esse ta-  
lium officiorum mercedes, vtputa si tibi adfuerit: si satis pro-  
te dedero: si qualibet in re opera, vel gratia mea vsls fueris.  
Non potest liberalitas nolēti adquiri. Hæc Vlpianus. **T**A M E N  
altera ex arca, altera ex virtute de promittit: } lepida sententia.  
non enim, quod ex arca, cum eo, quod ex virtute depro-  
mitur, conferendum videtur. alterum enim altero longè  
nobilius: & largitio pecuniae, cūm minuat rē domesticā, simul  
minuit benignē faciendi facultatē. quod nō accedit, cūm non  
pecunia, sed opera, benignē sit indigentibus. Veterem igitur  
lectionem retineo, quam antiqua quoq; confirmat exēplaria.  
**L**ARGITIO, que fit ex re familiari, sōtē ipsum benignitati exhaustus: } Placer hoc loco adscribere, quod scripū est a Lactan-  
tio Firmiano. Is autem sic lib. 6. cap. 12. Quid M. Tullius in suis  
Officialibus libris non ne hoc idem suadet, non esse omnino  
largien-

largiendum: sic enim dixit: Largitio, quæ fit ex re familiari, fontē ipsum benignitatis exhaustus: ita benignitatis benignitas tollitur. qua quo in plures vsls sit, eo minus in multos vti possis. Et idem paullo post: Quid autē est stultius, quām, quod libenter facias, curare, vt id diutius facere non possis? Videlicet professor sapientiæ refrenat homines ab humanitate: mo-  
nēque, vt rem familiarē diligenter custodiant: malintq; arcā, quām iustitiā conseruare. Quod cūm intelligeret inhumanū esse, ac nefarium, mox ex alio capite, quasi actus pænitentia, sic ait: Nonnumquam tamē est largiendum: nec hoc benignitatis genus omnino repudiādum: & sāpe idoneis hominibus e-  
gentibus de re familiari impertiēdum. Quid elli, Idoneis? né-  
pe iis, qui restituere, ac referre gratiam possint. Si nūc Cicero  
vixeret, exclamarē profecto: Hic, hic, M. Tulli, aberrasti à ve-  
ra iustitia: cāmq; vno verbo sustulisti: cūm pietatis, & humani-  
tatis officia vtilitate metitus es. Nō enim idoneis hominibus  
largiendum est, sed quantū potest non idoneis. id enim iuste,  
id piē, id humanē sit, quod sine spē recipiendi feceris. Hæc est  
vera illa, & germana iustitia, cuius solidā & expressam effigiē  
nullā tenere vos dicitis. Ipse pluribus locis clamans, mercenari-  
am non esse virtutem, faterisq; in libris Legū tuarum, Libe-  
ralitatē gratuitam esse, his verbis: Nec est dubium, quin is, qui  
liberalis, benignusq; dicitur, officium, non fructum sequatur.  
Cur ergo idoneis potius largiris, nisi vt postea mercedē reci-  
pias? Te igitur auctore, ac praeceptore iustitiae, quisquis idoneus  
non erit, nuditate, siti, fame conficietur, nec homines copiosi, & vsque ad delicias abundantes, subuenient vltimæ ne-  
cessitati. Si virtus mercedē non exigit: si propter se, vt dicitis,  
expetenda est. ergo iustitia matrem, principēmq; virtutū suo  
pretio, nō tuo cōmodo, astima: eīq; potissimum tribue, à quo  
nihil speres. Quid personas eligis: quid membra inspicis? Pro  
homine tibi habendus est, qui quis ideo precatur, quia te ho-  
minē putet. Abiice vmbras illas, imaginēsq; iustitiae arq; ipsam  
veram, & expressam tene: largiē cæcis, debilibus, claudis, de-  
stitutis: quibus nisi largiare, moriēdum est. Inutiles sunt ho-  
minibus, sed vtiles Deo, qui eos retinet in vita, qui spiritu do-  
nat, qui luce dignatur. Foue, quantum in te est, & animas ho-  
minum, ne extinguantur, humanitatē sustenta. Qui succurre-  
re perituro potest, si non succurrerit, occidit. Verū isti, quia  
neque naturam retinent: neque, præmium in eo quod sit,

sciunt: dum perdere timent, perdunt: & in id, quod maximè cauent, in eisdūt: vt, quidquid largiuntur, aut pereat omnino, aut ad tempus brevissimum proficit. Nam, qui exiguam stipendii misericordia negant: qui conferuare humanitatem sine danno suo volunt: patrimonia sua effundunt: vt aut peritura, & fragilia sibi comparent: aut certè maximis suis dānnis nihil consequantur. Hæc Lactantius, qui vera non sentire videtur, nam, quantum aberrauerit, facile est iudicare iis, qui rationis non prorsus expertes sunt. Idonei enim qui intelligi deberent, non afflicctus est, non enim eos, qui restituere, ac referre gratiam possunt, sed dignos auxilio Idoneos interpretari debemus. *Fon tem ipsum: rem familiarem: cuius riuali sunt Largitiones.* *D E I N D E, consuetudine beneficentia paratores erant, & tanquam exercitatiōes ad bene de multis promerendum.* { hæc igitur beneficentia ratio, quæ ex virtute sumitur, non minuitur augēdo, sed augetur: illa altera, quæ sumitur ex arca, quò magis exercetur, è minor sit. ita, si virtus est, perpetua esse non potest. *P R A E C L A R E in epistola quadam Alexandrum filium Philippus accusat, quid largitione benivolentiam Macedonum cōfessetur.* { hæc epistola non existat. Verùm legitimus apud Plutarchum in Politicis, Philippum Alexandrum admonere solitū, vt se superstite, ac regnante amicos sibi consuetudine, comitate, gratificatione, quoad liecat, cōparare studeat. Et in Apophthegmatibus, vt blandò, & mansuetè cum Macedonibus conuersetur. *Quid te (malum) inquit?* Malum, aduerbiū indignantis. Ad Att. Qui (malum) isti Pindentissæ? *S E D ministrum & prebitorem petunt?* Prabitorem, est in omnibus libris: Recēt. Demosthenes enim *ratiōnē*, hoc est prabitorem, fuī se scribit. Alij legunt, Diribitorem, idest, eum, qui diuidit. Diribere enim, veteri lingua Latina, Diuidere erat. Sed veteres omnes libri aduersantur. *Q uo quid sordidius regi?* Que, non legitur in vndeclim meis. Vnus, Quād sordidum regi. Tertij, Sordidum regi. *M A L I V S etiā, &c.* { quād quid accusat de largitione. *I D O N E I S hominibus* { probis. vt infra: In deligendis idoneis iudicium, & diligentiam adhibere debemus. *D I L I G E N T E R,* { cum delectu. Sic in Pandectis: Vide Arist. Eth. lib. 4. *M O D E R A T E,* { nam immoderata largitionem duo vitia sequuntur, inopia, & rapina: quæ Catilinae coniurationis origo fuit. *P A T R I M O N I A effuderunt* { vt Milo, is, qui Clodium interfecit. Pedianus. *S E -*

*Q u y v n t v r largitionē rapine.* { hinc Sallust. Catilina: ab adolescentia bella intestina, cædes, rapinæ, discordia ciuilis grata fuere. *C L A V D E N D A* { res } Claudenda res est, quatuor mei, & Tertiij.

## C I C E R O.

*O Mnino meminisse debemus id, quod à nostris hominibus sēpissime usurpatum, iamque in proverbijs consuetudinem venit, largitionem fundum non habere. etenim, quis potest esse modus, cūm ē iudem, qui consueuerunt, & illud idem alij desiderent? Omnino duo sunt genera largorū, quorum alteri prodigi, alteri liberales. Prodigij, quie pulis, & viscerationibus, & gladiatorum munieribus, ludorum, venationumque apparatus pecunias profundunt in eas res, quarum memoriam aut breuem, aut nullam sint relicturi omnino liberales autem, qui suis facultatibus aut captos à prædoniis redimunt: aut as alienum suscipiunt amicorum causā: aut in filiarum collocatione adiuuant: aut opitulantur vel in re querenda, vel angenda, itaq. miror, quid in mentē venerit Theophrasto in eo libro, quē de dinitijs scripsit: in quo multa præclarē, illud absurde, est enim multus in laudanda magnificētia, & apparatione popularium munerum: taliumq. sumptuum facultatem, fructum dinitiarum putat. mihi autem ille fructus liberalitatis, cuius exempla pauca posui, multo & maior videtur, & certior. quātò Aristoteles grauius, & verius nos reprobēdit, qui has effusiones pecuniarum non admiremus, qua sunt ad multitudinem deleniendam. atq. qui ab hostiis obſidentur, si emere aquæ sextarium mina cogarentur, hoc primo incredibile nobis vide ri, omnēsq. mirari: sed, cūm attēderint, veniam necessitati dare: in his immā-*

nibus iacturis, infinitisque sumptibus, nihil nos magnopere mirari: cum præserium nec necessitati subueniatur, nec dignitas augeatur: ipsaque illa delenitio multitudinis ad breue tempus, exiguumq. sit, eaq. à leuissimo quoque, in quo tamen ipso, una cum satietate, memoria quoque moriatur voluptatis. Bene etiam colligitur, hec pueris, & mulierculis, & seruis, & servorum simillimis liberis esse grata: graui vero homini, & ea, quæ fiunt, iudicio certo ponderanti, probari posse nullo modo. quamquam intelligo, in nostra ciuitate inueterasse iam bonis temporibus, ut splendor edilitatum ab optimis viris postuletur. itaque & P. Crassus, cùm cognomine Dives, tum copiis, functus est adilio maximo munere: & panlo post L. Crassus cum omnium hominum moderatissimo, Q. Mucio, magnificentissima edilitate functus est: deinde C. Claudius, Ap. filius: multi post, Luculli, Hortensius, Silanus omnes autem P. Lentulus, me consule, vicit superiores. hunc est Scaurus imitatus. magnificentissima verò nostrī Pompeij munera secundo consulatu, in quibus omnibus, quid mihi placeat, vides. vitanda tamen est suspicio auaritiae, nam Mamerco, homini ditissimo, pretermisso adilitatis, consulatus repulsam attulit. quare &, si postulatur à populo, bonis viris si non desiderantibus, attamen approbantibus, faciendum est, modo pro facultatibus, nos ipsi ut fecimus: &, si quando aliquares maior, aut utilior populari largitione acquiritur: ut Oresti nuper prandia in semitis, decume nomine, magno honori fuerunt, ne M. quidem Seio viatio datum est, quod in caritate annonæ asse modium populo dedit. magna enim se, & inueterata inuidia, nec turpi iactura, quando erat adilis, nec maxima libera-

nit.

sit, sed honori summo nuper nostro Miloni fuit, quod, gladiatoribus emptis reip. causa, qua salute nostra continebatur, omnes P. Clodij conatus, furoresque compreßit.

## EXPLANATIO.

**I**AM Q. in proverbi consuetudinem venit, } Que, coniunctio, labest à decem meis, & Tertij, & elegantius abest. **L A R G I T I O N E M** fundum non habere, } finem non inuenire, inane esse eorum studium, qui benevolentiam hominum, qui dando expleri nequeant, largitione consequentur. idest: Largitionibus facilis effunduntur patrimonia, quam hominum benevolentia cōparantur. A pertuso Danaidum apud inferos dolio. Vide Adagia. **I L V D** idem } Septem meis, & Tertij, ordine præpostero, Idem illud. **P R O I G I**, qui epulis, & viserationibus, } hi sunt, qui populi gratiam, honorum spe, aucupabantur. Epulis: publico conuiuio, de quo s̄pē in veteribus Inscriptionibus. Viserationibus: cùm carnes, sive crudæ, sive coctæ, interdum panis, vinumq. cum illis donum perfectibus singulis præbebantur. **G L A D I A T O R V M** muneribus: quæ potissimum in funeribus edebantur. Contra gladiatores inuehitur Augustinus lib. vi. Confess. & Laetantius in Epit. **L V D O R V M** } Theatralium. **V E N AT I O N U M Q.** elephantorum, & leonum pugnas. Saturno consecrata, Tertullianus. **A V T** nullam sint relictri omnino, } sex, & Tertij, Aut nullam omnino sint relictri. Vnus, Nullam omnino rel. si t. Tres, Sunt. **A E S** alienum suscipiunt amicorum causa: } Causa, non est in duobus, & Tertij. Suscipere as alienum amicorum, est, pro amicis debitum dissoluere. Contra, Aes alienum exonerare, Vlpianus Dig. de iure dotium, l. Profecticia: Non pro hereditate patris as alienum soluit, sed suum as alienum susceptum, dum filius familiæ esset, pater familiæ factus exonerauit. **C O L L O C A T I O N E** } pro, elocatione. Olim creditum est expedire reip. vxores esse dotatas. Dig. de iure dotium. **V E L** in re querenda, vel augenda. } prius, Vel non est in duobus meis. **I N** eo libro quem de diuinitijs scriptis: } qui non exstat: à Laertio citatur, σειπλούτον. **C V I V S** exēpla pauca posui, } septem, & Tertij, ord. præp. Cuius pauca exempla posui. **E T** maior, }

quia virtuti propior. Et certior. } propter grati animi memoriam, eorum, quibus bene feceris. Nos reprehendit, } hoc in Arist. Eth. non reperitur. Vnde Muretus, Aristo, reportat: pro, Aristoteles: intelligitq. Aristonem Stoicum, cuius mentio est apud Senecam, & apud Laet. libro de ira, cap. 22. Quam Mureti conjecturam confirmare videtur antiquis meis liberis, in quo est, A & O. Sunt qui delectant hæc verba. Nos reprehendit, contra omnes libros veteres. Non admirantur, vnuus meus, & Tertij. Fulius Vrsinus delendum putat &c. Non: vel pro Admiremur, legendum Improbemus. Ab hostibus. } Hoste, septem, & Tertij. SEXTARIVM: } vñcias xx, sextam congij partem. MINA: } centum drachmis, scutatis duodecim. Hoc primo incredibile nobis videri, omnēsq. mirari: sed, cūm attenderint, } Hunc locum suā integratā restituimus, non ex conjectura, sed veterum librorum ope: in quibus omnibus est, Attenderint, non Attenderimus, vt in omnibus vulgaris, quod verbum refertur ad illud. Omnéisque mirari. Qui verò pendere ab eo putabant, Incredibile nobis videri, primam verbī personam maluerunt, quām tertiam: & accipiebant, Omnes mirari, pro, Nos omnes mirari: cūm sit, Omnis, pro Omnes homines: vnde nascitur, Attenderint. Nec verò necesse fuit, Nobis, delere: cūm ab eo, vt ostēdit, verbum non pendeat: & sit in omnibus libris, & Tertij, vno excepto. ecq. magis miror deletum esse, quid nullam rationem, cur deleretur, quisquam attulit, quāsi liceat, ex vulgaris libris voces tollere, nulla facta veterum exemplarium mentione. DELENITIO: } Delectatio, quinque, & Tertij. Deliratio, vnuus. AD breue tempus, exiguumq. sit, } duo, Tertij, Ad breue, exiguumq. tempus, quinque, Ad breue, exiguumq. sit tempus, vnuus. Ad breue tempus, exiguumq. sit, pro Sit, duo. Antea, male, in vulgaris, Ad breue tempus, exiguumq. duratura sit, quod tamē est in duobus. aliis, Ad breue tempus, exiguumq. durat. Malè. EAQ. à leuissimo quoque, } sic nouem mei, & Tertij. A leuissimo quoque: non ab omni populo, sed à leuissimis. IN quotamen ipso, } leuissimo. SATIETATE: } que etiam in rebus iucundissimis voluptatem tollit. BENĒ etiam colligit, } argumentum à spectatorum sensu contra ludos, & munera, que populo dantur. Hinc apud Homerum Minerua Telemachum obiurgat:

*αὐτὸν τὴν σε χρήσῃ*  
Num̄ias ἐχέντις οὐκ εἴη πλήρος ἐστι. Id est:  
Non puer es, nec te puerilibus omnia nugis  
Metiri fas est.

PROBARI posse nullo modo. } sunt enim copiarum, non virtutis. vt ipse scribit in epistola ad Curionem. IAM bonis temporibus, } moribus integris: cum honesta disciplina floret. SPLENDOR edilitatum, } in ludis, qui dantur populo. ET P. Crassus cūm cognomine Dives, tum copiis, } hic ex Mucia gente transiit in Licinam: inde Crassi cognomen accepit, & Mucianus dictus est. Consul fuit anno v. DCXXII. quinque rebus excelluit, auctore Agellio lib. I. cap. 13. fuit enim ditissimus, nobilissimus, eloquentissimus, iuris consultissimus, pontifex max. nominatur in libris de Orat. in Bruto, à Velleio lib. II. à Plinio lib. IX. cap. 7. qui eius ædilitate elephantos, primum pugnauisse tradit. AEDILICIO maximo munere: } primus enim argento, auroq. folia imitatus, ludis suis coronas dedit. PAVILLI post, } post XX. annos L. CRASSVS cum Q. Micio, } qui fuere collegæ & in prætura. OMNIVM hominum moderatissimo, } qui tamen ædilitate magnificenter fungi voluit: vt quasi exemplum ceteris ædilibus daret. CLAUDIVS, Ap. filius, } operæ pretium videtur, quæ Valerius Max. lib. II. narrat, subscribere: Claudius Pulcher scenam varietate colorum adumbravit, vacuis ante pictura tabulis extentam: quam totam argento C. Antonius, auro Petreius, ebore Q. Catulus prætexuit. Versatilem fecerunt Luculli. argentatis choragijs P. Lentulus Spinther adornauit. Vide orationem pro Plancio, & Plinium lib. IX. cap. 7. LVCULLI, } Luculli fratres aediles simul fuerunt, vt ex Plinio lib. IX. cap. 7. & Plutarcho liquet. Legendum igitur, Luculli. HORCENTIJS, } hic paonem in augurali adjicciali cena primus posuit. Varro de re rust. lib. III. cap. 6. Plinius lib. X. cap. 20. Macrob. Sat. lib. III. ca. 13. SILANVS, } D. Iunius Silanus, qui post, Ciceronem consul fuit. P. LENTVLLVS, } cognomine Spinther, de cuius ædilitate Plin. lib. IX. cap. 39. SCÄVRVS, } eius filius, qui princeps senatus fuit, de huius munere ædilicio Plinius lib. IX. cap. 17. & XXXIV. cap. 7. & XXXVI. cap. 2. & 6. & 15. & Asconius. NOSTRI POMPEIJ, } qui, teste Plutarcho, theatrum ædificauit, & c. leones iubatos dedit. Plin. lib. IX. cap. 16. item CCCX. pantheras, lib. IX. cap. 17. SECUNDO consulans, } in quo

I<sup>e</sup>cones d<sup>c</sup>, pantheras c<sup>d</sup>x, elephantes x. dedit<sup>f</sup> Plinius lib. iix. cap. 7. 16, 17. & in epistola ad Marium, lib. vii. Fam. Quid mibi placeat, } significat sibi non placere. MAMER-  
CO, } Aemilia gentis, patricij generis. HOMINIS ditissi-  
mo, } vt excusari non posset. Duitissimo, antiqui libri tres,  
& Tertij. PRAE TERMIS SIO adlitatis, } propter im-  
pensas. Hinc lib. iii. de Legibus: Sunto aediles curatoris  
vrbis, annonae, ludorumq. sollemnium: ollitq. ad honoris  
amplioris gradum is primus adscensus esto. Hinc Ci-  
cero Fam. lib. x. C. Furnium, Planci consulis designati lega-  
tum, qui tribunus modò, aedilis nondum fuerat, arguit, quod  
in petenda prætura nimum festinaret. No s ipsi ut fecimus: }  
Plutarchus. Et or. i. in Verrem. AVT vtilior } Atque, quin-  
que, & Tertij. OR E STI } cognomen Aurelia gentis. Duos  
enim Aurelios Orestas nominat Cicero in Bruto. Hic est  
forte Cn. Aufidius Orestes, qui, sine tribunicie dignitatis gra-  
du, ad consulatum ascendit, anno DCXXCII. PRA'NDIA }  
populo data. IN semitis, } per vniuersam vrbem. DECVM-  
MA nomine } veteres Romani, vt in exoptata re bonum exi-  
cum consequerentur, decumam fructuum, vel prædæ alicui  
deo vouchabant, vt Herculi vouchit Sulla, & M. Crassus, ad Par-  
thicum bellum iturus, de suis bonis: Iunoni vouchit Camillus,  
si Veios expugnaret, vt ait Plutarchus: Apollini, si Liuium se-  
qui malumus. Festus ostendit, non id fieri solitum in certæ  
cuiusdam rei cupiditate, sed more: vel vt omnia prosperè suc-  
cederent, vel vt quisque aliquem deum priuatum coleret, ait  
enim: Decima quaque veteres dij. suis offerebat. Macrobius  
lib. i. i. cap. 12. ex Varronis satyra ~~ad~~ <sup>ad</sup> sepius, refert,  
Romanos Herculi quidem decumam vouchere solitos esse, sed  
populum decimo quoque die pollucere, (i. viritum aliquid  
largiri) vt ~~ad~~ <sup>ad</sup> nemo vespero domū rediret. Hunc mor-  
tem ab Euandro, Aboriginem rege, fluxisse, qui decumam  
bonum, interfecto Caco latrone, Herculi vouchere instituerit,  
auctor est Diodorus Siculus lib. iv. Nec tamen hanc vnam,  
sed alias quoque causas vota Herculis decumæ, Plutarchus  
refert in Problematis. Plautus decumam hanc, Hercula-  
neam partem in Trinummio vocat. Et Sticho:

Decimam, inquit, partem ex voto Herculi polluceam.  
De ea & Varro de lingua Latina lib. v. & antiqua Reatini  
marmoris inscriptio.

DE. DECVM A. VICTOR. TIBEI  
LVCIVS. MVNIVS. DONVM. DAT  
MORIBVS. ANTIQVEIS. PRO  
VSVRA. HOC. DARE. SESE. VISVM  
ANIMO. SVO. PERFECIT. TVA  
PACE. ROGANS. TE. COGENDEI  
DISSOLVENDEI. TV. VT. FACILIA  
FAXSEIS. PERFICIAS. DECVMAM  
VT. FACIAT. VERÆ. RATIONIS  
PROQVE. HOC. ACQVE. ALIEIS  
DONIS. DES. DIGNA. MERENTI

Huc spectauit Orestes cum prandia populo dedit in semi-  
tis, vt eum sibi conciliaret, in petitione magistratus, decumam  
nomine, vt decumas alij diis offerebant: non quod ipse decu-  
mam populo daret, alius dei nomine, sed ad similitudinem  
eius decumæ, quæ diis dare solebat. M. SE IO } oratio pro  
Plancio & Varro de re rust. CARITATE annone } & An-  
nonæ abest à nouem libris, & Tertij. & rectè abest. ASSE }  
vilibus pretio, quarta sextercij parte. MODIVM } libras  
ferè xxx. de quo vide Plinius lib. xix. cap. 7. INVIDIA, }  
propter opes. QVANDO erat edili, } non turpis iactura  
fuit, quia splendorem postulabat aedilites. MILONI } iam  
mortuo. SALVTE nostra } hinc pater patriæ Cicero.

## C I C E R O.

C<sup>A</sup>usa igitur largitionis est, si aut necesse est, aut  
vtile. in his autem ipsis mediocritatis regula  
optima est. L. quidem Philippus, Q. filius, magno vir  
ingenio, in primisq. clarus, gloriari solebat, se sine ullo  
munere adeptum esse omnia, quæ haberentur amplissima. dicebat idem Cotta, Curio. nobis quoque li-  
get in hoc quodam modo gloriari, nam pro amplitudi-

ne honorum, quos cunctis suffragiis adepti simus nostro quidem anno, quod contigit eorum nemini, quos modo nominaui, sanè exiguis sumptus edilitatis fuit. Atque etiam ille impensa meliores muri, naualia, portus, aquarum ductus, omniāque, quæ ad usum reip. pertinent. quamquam enim, quod praesens tamquam in manu datur, iucundius est: tamen hoc in posterum gratiora, theatra, porticus, noua templo. Verecundius reprehendo propter Pompeium: sed doctissimi non probant, ut & hic ipse Panatinius, quem multum in his libris securus sum, non interpretatus: & Phalerenus Demetrius, qui Periclem, principem Grecie, vituperabat, quod tantam pecuniam in preclara illa Propylea coniecit. Sed de hoc genere toto in iis libris, quos de rep. scripsi, diligenter est disputation. Tota igitur ratio talium largitionum genere vitiosa est, temporibus necessaria, & tamen ipsa ad facultates accommodanda, & mediocritate moderanda est. In illo autem altero genere largiendi, quod a liberalitate proficiuntur, non uno modo in disparibus caussis affecti esse debemus. alia caussa est eius, qui calamitate premitur: & eius, qui res meliores querit, nullis suis rebus aduersis, propensior benignitas esse debebit in calamitosos: nisi forte erunt digni calamitate. in iis tamen, qui se adiuuari volent, non ut ne affligantur, sed ut ad altiorem gradum ascendant, restriicti omnino nullo modo esse debemus, sed in deligendis idoneis iudicium, & diligentiam adhibere. nam præclarè Ennius:

*Benefacta, male locata, malefacta arbitror.*

Quod autem tributum est bono viro, & grato, in eo cum ex ipso fructus est, tum etiam ex ceteris. temeritate enim remota, gratissima est liberalitas: eoque, eam studiosius

studiosius plerique laudant, quod summi cuiusque bonitas commune perfugium est omnium.

### E X P L A N A T I O.

**C**A viss a igitur largitionis est, } largitionis caussæ probantur, necclitas, & virilas. MEDIOC RITATIS regula } sic tredecim mei, & Tertij, unus, Mediocritas. L. PHILIPPS, } consul factus sine tribunatu militari, an. DCXCVII. tertius in oratoria laude post Crassum, & Antonium, pater eius, qui Atiam, Augusti matrem, coniugem habuit. vide orationem pro Quintio. QVAE haberentur amplissima } praetoram, censuram, consulatum. COTTA, Curio. } Curio, non est in Tertij libro. C. Curio, legit Langius. Cotta: C. Cotta, orator, qui loquitur in libris de Orat. Tres Cottæ fratres fuere. C. M. L. omnes consulatum adepti sunt. Curio: pater eius, qui, pro Cesare contra Pompeium dimicans, in Africa perire. NOSTRO quidem anno, } quo primum anno per leges licuit. id alibi quoque gloriat, & auget eam laudem, quod esset homo nouus, multa commendatione maiorum. QVAE ad usum reip. pertinent. } his impensas & Aristoteles probat lib. IV. Eth. IN manu datur, } In manum, octo mei, & Tertij liber. Terentius, Prae manu dare.

PROPTER Pompeium: } qui theatrum magnificentissimum extruxerat. VITUPERABAT, } Vituperat, quinque, & Tertij. PROPYLAE } vide Plutarchum in Pericles vita. Hic, accepta pecunia, vt Palladis templum reficeret, in atrio omnem consumpsit. CONIECIT. } Coniecerit, septem, & Tertij. Proicererit, sex. Proicerat, unus. ET tamen ipsa } pronomen, Ipsa, si sententia perpenditur, magis requirere videtur, Tamen, quam Tum. Accessere quatuor veteres libri, & unus, qui Romæ est, apud heredes Iulij Galli, qui, Tamè, perspicue scriptū habent, quod probauit. Et tū ipsum & ad fac. Tertij liber. RES meliores querit, } Isocrates, CANTÙ BEATIOR. Columella, Meliorescere. RES meliores: incrementa diuitiarum, vel dignitatis. PROPENSIO R benignitas } recte, nam hæc vera caussa est largiendi, vt subueniatur necessitatibus. VT altiorem gradū adscendant, } sic tredecim mei, & Tertij. Antea, VT ad altiorem gradum adscendant. RESTRICTI omnino,

¶ Ominino non est in decem meis. **BENEFICTA**, male  
locata malefacta arbitror. } senarius iambicus. Hinc Plautus:

Malè meretur, qui mendico dat, quod edat:

Nam. & illud, quod dat, perit:

Et illi producit vitam ad miseriam.

Vide Adagia, Beneficis trucidator. **TEMERITATE** enim  
remota, } si non temerè cuius datur, sed idoneis tantum.  
**GRATISSIMA** } iis etiam, qui nihil acceperunt. **STU-**  
**DIOSIVS** laudant, } tum ex officio, (nam recte facta incor-  
ruptus animus laudare non potest) tum ad excitandam, &  
augendam diuitum liberalitatem, in qua sibi quoque præ-  
dij aliquid repositum esse sperant. **SVM I** cuiusque bonitas  
Ouidius:

Regia (crede mihi) res est, succurrere lapsis.

## C I C E R O.

**D**anda igitur opera est, ut hos beneficijs quam-  
plurimis afficiamus, quorum liberis, posterisq.  
prodatur memoria, ut his ingratis esse non liceat. om-  
nes enim immemorem beneficij oderunt: eamq. iniuri-  
am in deterrenda liberalitate sibi etiam fieri, eum-  
que, qui faciat, communem hostem tenuiorum putant.  
Atque hac benignitas etiam reip. utilis est, redimi è  
seruitate captos, locupletari tenuiores: quod quidem  
vulgo solitum fieri ab ordine nostro, in oratione Crassi  
scriptum copiosè videmus. hanc ergo consuetudinem  
benignitatis largitioni munera antepono. hac est gra-  
uium hominum, atque magnorum, illa quasi assenta-  
torum populi, multitudinis levitatem voluptate quasi  
titillantium. Conueniet autem tum in dando munifi-  
cum esse, tum in exigendo non acerbum: in omnq. re  
contrahenda, vendendo, emendo, conducendo, locan-  
do, in vicinitatibus, & confinijs aequum, & facilem,  
multa multis de iure suo concedentem: à litibus vero,

quantum

quantum liceat, & necio an paullo plus etiam, quam  
liceat, abhorrentem. est enim non modo liberale, paul-  
lum nonnumquam de suo iure decidere, sed interdum  
etiam fructuosum. H abenda autem est ratio rei fami-  
iliaris: quam quidem dilabi sinere, flagitiosum est: sed  
ita, ut illiberalitatis, avaritiaeq. ab sit suspicio, posse  
enim liberalitate vti, non spoliarem se patrimonio, ni-  
mirum est pecunia fructus maximus. Recte etiam à  
Theophrasto est laudata hospititalitas. est enim, ut mi-  
hi videtur, valde decorum, patere domos hominum  
illustrium illustribus hospitibus: idq. etiam reip. est  
ornamento, homines externos hoc liberalitatis gene-  
re in urbe nostra non egere. est etiam vehementer vti-  
le ijs, qui honeste posse multa volunt, per hospites a-  
pud externos populos valere opibus, & gratia. T heo-  
phrastrus quidem scribit, Cimonem Athenis etiam in  
suos curiales Laciadas hospitalem fuisse: ita enim in-  
stituisse, & villicis imperasse, ut omnia præberentur,  
quicumque Laciades in villam suam diuertisset. Quæ  
autem opera, non largitione, beneficia dantur: hac  
tum in uniuersam remp. tum in singulos cines confe-  
runtur. nam in iure cauere, consilio iuuare, atque hoc  
scientiæ genere prodeesse quamplurimis, vehementer &  
ad opes augendas pertinet, & ad gratiam. itaque,  
cum multa preclara maiori, tum quamoptime consti-  
ti iuris ciuilis summo semper in honore fuit cognitio,  
atque interpretatio: quam quidem ante banc confusio-  
nem temporum in possessione sua principes retinuerunt:  
nunc, ut honores, ut omnis dignitatis gradus, sic huic  
scientiæ splendor deletus est: idq. eo indignius, quod eo  
tempore hoc contigit, cum is esset, qui omnes superio-  
res, quibus honore par esset, scientia facile viciasset. hac

*igitur opera grata multis, & ad beneficium adstringendos homines accommodata.*

## EXPLANATIO.

**V**T hos beneficij quamplurimis afficiamus, } quatuordecim  
mei, & Tertij, Vt his beneficij quam plurimos afficiamus. Quorū liberis, posterisq. prodatur memoria, } ijdem  
libri, Quorum memoria liberis, posterisq. prodatur. Publij  
mimus:

Is beneficium dando accepit, qui dedit digno.

**O**MNES enim immemorem beneficij oderunt: } quod est naturæ  
proprium. In deterrenda liberalitate } in deterrendis libera-  
libus, ne liberalitate vrantur. Est autem minus vistata lo-  
quendi forma. Sunt qui reponunt, Deferenda, contra omnes  
veteres libros. r. iminuenda. vt apud Horatium, Od. 6. lib.  
1. Carm.

Culpa ingenij laudes alicuius deterere.

**H**OSTEM tenuorum }

Publij Mimus:

Ingratus vnum miseris omnibus nocet.

**R**EDI MI è fernitudo } ne vxores, & liberi egeant: ne de-  
fint, qui pugnant pro patria. **C**AP TOS, } Captiuos, duo  
mei. **L**ARGITIONI munerum antepono. } Lambinus, Longe,  
addit: Largitioni munerum longe antepono: contra ve-  
teres omnes libros, **Q**VAS I titillantium. } ita commouen-  
tium, vt pruritus commoueri solet. in quo voluptas quedam  
est. **I**N dando munificum } cum, quantum, & quibus dare  
debet. **I**N vicinitibus, } In, abest à tredecim meis, & Ter-  
tij. Quinque, Vicinatibus Quartuor, & Tertij, Vicinatibus.  
Vnus, Ciuitatibus. **C**ONFINIIS } prædiorum. **D**E iure  
suo concedentem: } Cedentem, decem mei, & Tertij. **Q**VAN-  
TVM liceat, } quantum rei domesticæ ratio patiatur. **E**T  
ne scio an paullo plus etiam, quam liceat, } & fortasse paullo plus  
etiam quam liceat: id est, vel cum aliqua rei familiaris iactura.  
**N**ON NVM QVAM de iure suo concedere, } quod nostrum est,  
atque ad nos propriæ pertinet, de eo partem aliquamtempo-  
ris caussa alteri concedere. **Q**uod autem Cicero, Nonnum-  
quam, Terentius, In loco, dixit in Adelph. act. 2. sc. 2. ad quem  
cum proculdubio Cicero respexit:

-S.Y.

--S.Y. Pecuniam in loco negligere, maximum interdum est lucrum. SA. hui,  
SY. Metuisti, si nuc de tuo iure cocessisses paullulum,  
Atque adolescenti esse morigeratus, hominum ho-  
mo stultissime,

Ne non tibi istuc feneraret? SA. ego spem pretio  
non emo.

S Y. Numquam rem facies: abi: nescis inescare ho-  
mines, Sannio.

SA. Credo istuc melius esse: verum ego numquam  
adeo astutus fui.

Quin, quidquid possem, mallem auferre potius in  
præsentia.

**D**ILABIS sine } consumi, dissipari. A. **T**HEOPHRAS-  
TO } in libro de diuitijs. **I**L VSTIBVS hospitibus: } ord.  
prep. nouem mei, & Tertij. **P**OSSE multa volunt, } Multum,  
quinque, & Tertij. **C**IMONEM } decuius liberalitate Xenon-  
phon, Athenæus, Plutarclus, qui Aristotele, nō Theophrastū,  
citat. **C**URIALES } quos Græci φέρονται, tribules autem  
φύλαται dicunt, ex Dionysij, Plutarchiq. sententia. **LACIADAS**, }  
à curia ita dictos. **H**OSPITAL EM } Cratinus comicus:

Καὶ ωραῖον μηδείος οὐ γεμματεῖς,

Σειν αὐθὶ δεῖ τοι φρεσεντάτας,

Καὶ πάτε αἴσηφος πανειληνῶν θεόπις,

Κίμωνι πατέριος γέρας δημόσιος.

Αἰσθάντας ταῦτα συνειδεῖ τελέων.

**Q**VAE autem opera, non laritione beneficia dantur: } operam  
lægitioni iam anteposuit, vide Aristotelem lib. iv. Ethic. **I**N  
iure cauere } ne quid contra ius committatur: ne actionem male  
instituat, & caussa cadat: ne aduersarij calliditate circuueniat-  
tur. **A**D opes augendas } non, ad diuitias, sed, ad gloriam. supra.  
Maxime autem & gloria paritur, & gratia defensionibus.

**T**VM quam optime constituti iuriis ciuilis } Tum quod optime, li-  
ber Tertij. Tum quidem optime, tres. Tum q̄ 3 optimi, vi-  
nus. decem, tum q̄ 3 optime. **P**RINCIPES } ciuitatis.

**O**MNIS dignitatis gradus, } Omnes, octo, & Tertij. Digni-  
tates, vnum, & Tertij. **S**PLENDOR deletus est, } quod silent le-  
ges inter arma: & vt Isocrates ait, ιαγετελος & νικος εστι η τεχνη της νικησιου. **C**VM is est, } Ser. Sulpicium laudat. **O**MNES su-  
periores } etiam Scaeuolam pont. max. vt in Bruto, & Phil. ix.

t 2

## CICERO.

**A**T que huic artis finitima est dicendi grauior facultas, & gravior, & ornatior. quid enim eloquentia laudabilius, præstabilius, vel admiratione audientium, vel spe indigentium, vel eorum, qui defensi sunt, gratia? huic quoque ergo à maioribus nostris est in toga dignitatis principatus datus. disertus igitur hominis, & facile laborantis, quodque in patriis est moribus, multorum causas & non grauatae, & gratuito defendantis, beneficia, & patrocinia latè patent. Admonebat me res, ut hoc quoque loco intermissionem eloquentie, ne dicam interitum, deplorarem, nisi vererer, ne de me ipso aliquid viderer queri. sed tamen videamus, quibus extinctis oratoribus, quam in paucis spes, quam in paucioribus facultas, quam in multis sit audacia. cum autem omnes non possint, ne multi quidem, aut iuris periti esse, aut disertii: licet tamen opera prode se multis, beneficia petentem, commendantem iudicibus, & magistratibus, vigilanter pro re alterius, eos ipsos, qui aut consuluntur, aut defendunt, rogantem: quod qui faciunt, plurimum gratia consequuntur, latissimèq. eorum manat industria. Iam, illud non sunt admonendi, (est enim in promptu) ut animaduertant, cum alios iuuare velint, ne quos offendant. sepe enim aut eos ledunt, quos non debent: aut eos, quos non expedit: si imprudentes, negligentie est: si scientes, temeritatis. Utendum etiam est excusatione aduersus eos, quos iniuitos offendas, quacumq. possis, quare id, quod feceris necesse fuerit, nec aliter facere potueris: certisque operis, & officiis erit, quod violatum est, compensandum. Sed, cum in hominibus iuuandis aut mores spectari, aut fortuna soleat: dictu

guidem

## IN LIB. II. DE OFF.

quidem est. procline: itaque vulgo loquuntur, sese in beneficiis collocandis mores hominum, non fortunam, sequi: honesta oratio est: sed, quis est tandem, qui in opis, & optimi viri causa nō anteponat in opera danda gratiam fortunati, & potius a quo enim expeditior, & celerior remuneratio fore uidetur, in eum ferre est voluntas nostra propensior, sed animaduertendum est diligenter, qua natura rerum sit, nimirum enim inops ille, si bonus est vir, etiā si referre gratiam non potest, habere certe potest. Commodè autem, qui cumque dixit: Pecuniam qui habeat, non reddidisse: & qui reddiderit, non habere: gratiam autem, & qui reddiderit, habere: & qui habeat, retulisse. At, qui se locupletes, honoratos, beatos putat, hi ne obligari quidem beneficio volūt: quin etiam beneficium se dedisse arbitrantur, cum ipsis quamvis aliquod magnum accepserint: & que etiā a se aut postulari, aut expectari aliquid suspicātur. patrocinio vero se visos, aut clientes appellari, mortis instar putant. At vero ille tenuis, cū quid factum sit, sese spectatum, non fortunā, putans, non modò illi, qui est meritus, sed etiam illis, à quibus expectat, (eget enim multis) gratum se videri, studet. neque vero verbis auget suum munus, si quo forte fungitur, sed etiam extenuat.

## EXPLANA TIO.

**F**INITIMA est simillima: quia prodest vtraque quamplurimis. D ICENDI grauior facultas, & gravior, & ornatior: & grauior, & gravior, & ornatior facultate iuris ciuilis: grauior, quia plus ingenij postulat: gravior, quia ciuijbus salutem dat: ornatior, quia Latini sermonis elegantia, copia, splendore delectat: in oratione quoque pro Murena eloquentiam anteponit iuris prudentia. L AVDABILIUS, & præstabilius, quinque, & Tertijs, non habent, Laudabilius. & Vnde dicim, Laudabilius, præstabilius. IN toga dignitatis principatus datus: nam in fago, hoc est bellicis temporibus,

Spernitur orator bonus, horridus miles amatetur.

**E**t pro Murena primæ rei militari, secundæ eloquentiæ, tertiæ vix iurisprudentiæ tribuuntur. In tota dignitatis pr. d. tertij liber. Quattuordecim, In tota dignitate pr. d. Ut sit: Cūm multa sint, quæ dignitatem pariant, inter ea tamen tenere principatum eloquentiam, maioribus nostris placuit. **D** I S E R T I *igitur hominis*, } Disertum hic usurpat pro eloquente. alibi distinguuntur, vt in Oratore, dicente M. Antônio, disertos se vidisse multis, eloquentem vero neminem. **F** A C I L E *laborantis*, } *q̄ uāt̄r̄v̄*, laborum tolerantissimi: qui labores, & molestias non reformidet, sed otio, & quieti anteponat. **F** a c i l e : pro libenter. **C** o c l i u m : Quod in maritimis facillimè sum. **N** o n *gratia*, } ne multis, & ambitiosis precibus, & pollicitationibus sit opus: quod ait Hôocrates, *r̄as x̄ēr̄as āx̄ēḡis w̄z̄īz̄d̄y*. **G** R A T V I T O } gratis. Plutarchus in Cic. & in Parad. obiicit Crasso, quod in patrocinij paciferetur. **G** r a f t u o : quod seruatum ab omnibus non est. ideo C. Cincius legem tulit de donis, & muneribus, de qua lib. II. de Orat. & Tacitus lib. XII. I. Eius, inquit, opprimendi gratia repetitum videbatur S. C. p̄cnaq. Cincia legis aduersus eos, qui pretio caussa orauissent. **L** A T E *patent*, } vnde oritur, multis defensis, in ultoruni amori: quia plurimi sunt, quibus patrocinio, & defensione sit opus. **I** N T E R M I S S I O N E M eloquentie, } propter bella ciuilia: de quibus subiungit, Quibus extinctis oratoribus. **D** E *me ipso*, } qui stante rep. regnare videbar in causis. **Q** V I B U S *exsistens oratoribus*, } ex partibus Pompeij. **Q** V A M *in paucis f̄p̄s*, } de adolescentibus loquitur: cūm vero subiungit, Quam in paucioribus facultas, de viris. **Q** V A M *in paucioribus facultas*, } Quanto, est in vndecl mei, & Tertij. **C** O M M E N D A N T E M } Commendare quattuor mei. **V** I G I L A N T E M } Virgilare, tres. Vigilantibus, vnu. **R** O G A N T E M } Rogare, vnu. **Q** V I aut *consultum*, aut *defendant*, } cūm iurisconsultos, & oratores perspicue designet: (iam enim dixit, Cūm omnes non possunt iurisperiti esse, aut diserti) libentius legarem, Consuluntur, que modo et in vno meo, & Tertij, consulunt enim ijs, qui de re controuerfa formularum, normâque, & viam litigandi à iurisconsultis perunt: consuluntur vero iurisconsulti, qui dicuntur de iure consulentibus respondere. **N** o n *sunt admonendi*, } artificiose, quod enim omittere se velle significat, id tamen facit.

(E s t

{*E s t é n i m i n p r o m p t u*} patet per se, est apertum, satis notum. nam, quis ignorat, alios ita iuvari oportere, ne quem offendamus, & in alieno beneficio nobis ipsi damnum comparemus? **A** L I O s *iuuare*, } ord. præp. nouem mei, & Tertij. **C** E R T I S Q. *operis*, } cūm aliquid eo præcipue nomine faciendum tibi statuas, vt compenſetur quod violatum est. **Q** V O D *violatum est*, } Id, quod violatum est, octo, & Tertij. *Quod violatum est*, } dum alterum defenderes contra eum, quem iniurias offenderes. **D** I C T V *quidem isti procline*, } facile: vt facile de procluiore loco descenditur. **S** E S E } Se, septem, & Tertij. **H** O N E S T A *oratio est*, } recte loquuntur: sed, quis est, qui, quod loquitur, id praestet? Sumptum ex Andria Terentij, act. I. sc. 3. **N** I M I R V M } inops potest esse gratus, animo, non re. **C** O M M O D E autem, } vide Agellium lib. I. cap. 4. **P** E C V N I A M qui *habeat* on redditisse, } iocu, & festiuas est in verbis Habere, & Reddere: que non similiter in pecunia, & gratia accipiuntur. Idem dixit in oratione post red. ad Quir. In officio per solido dissimilis est ratio, & pecunia debita: propterea quod pecuniam qui retinet, non dissoluit: qui reddidit, non habet; gratiam &, qui retulit, habet, &, qui habet, dissoluit. Et pro Plancio: Dissimilis est pecunia debito, & gratia, nam, qui pecuniam dissoluit, statim non habet id, quod reddidit: qui autem debet, is retinet alienum: gratiam autem &, qui refert, habet, &, qui habet, in eo ipso, quod habet, refert. **B** E A T O S o m n i u m rerum copia circumfluentes, nam beatus est is, qui nulla re eget. **H** i ne *obligari quidem beneficio volunt*: } tantum absit, vt gratiam referre velint. Minographus:

Beneficium accipere, libertatem vendere est.

**B** E N E F I C I U M s̄e *dedisse arbitrantur*, } hoc idem scribit ad Leptam, Fam. lib. vi. cap. 19. Præter tim qui nihil afferat præter operam, in qua illæ s̄e dedisse beneficium putabit, si modo ipsum sciet, non accepisse. Et ad Att. lib. XIV. ad M. Antonium: Litteræ tuæ sic me affecerunt, vt non dare tibi beneficium viderer, sed accipere atque ita petente. **Q** V A M V I S ali- quod magnum } Quamuis aliquid magnum, duo. Quamuis magnum aliquid, tres. Quamuis magnum aliquid, quatuor, & Tertij. Aliquid quamuis magnum, duo. Magnum quamuis aliquid, duo. Quamuis magnū aliquid, vnu. **A** T Q V E } Atque, sex mei, & Tertij. **M** O R T I S *instar*, } Sic Fam. lib. VI. ep. 9. Hos tuos Tusculanenses dies instar esse vita puto. In

Pisonem: Vnus ille dies mihi quidem immortalitatis instar fuit, quo in patriam redij. Et Virg.lib. Aen. II. Instar montis equum. C v m quid factum sit, } Quidquid, septem, & tertij. P V T A N S, } Putat, est in quattuordecim meis, & tertij. N E Q U E V E R Ó } Enim, pro, Verò, est in quattuor meis. S i quo forte singitur, } ergaeum, qui meritus est. E X T E N V A T, } quo maiorem gratiæ referendæ voluntatem ostendit.

## C I C E R O.

**V**Idendumq. illud item, quod si opulentum, fortunatumq. defenderis, in illo uno, aut forte in liberis eius maneat gratia: sin autem inopem, probum tamen, & modestum, omnes non improbi humiles, quæ magna in populo multitudo est, praesidium sibi paratum vident. quamobrem melius apud bonos, quam apud fortunatos, beneficium collocari puto. danda omnino opera est, ut omni genere satisfacere possumus: sed, si res in contentionem veniet, nimirum Themistocles est auctor adhibendus: qui, cum consulere tur, utrum bono viro pauperi, an minus probato diuini filiam collocaret: Ego, inquit, malo virum, qui pecunia egeat, quam pecuniam, quæ viro: sed corrupcio mores, depravatio. sunt admiratione dinitiarum. quarum magnitudo quid ad unumquemque nostrum pertinet? illum fortasse adiuniat, qui habet: ne id quidem semper: sed fac innare: potentior sane sit, honestior vero quo modo? quod si etiam bonus erit vir: ne impediant diuina, quo minus inuenitur: modo ne adiuvent: sitq. omne indicium, non quam locuples, sed qualis quisque sit. Extremum autem preceptum in beneficiis, operaq. danda est, ne quid contra aquitatem contendas, ne quid per iniuriam, fundamentum enim perpet-

me

tua commendationis, & fama est infitia: sine qua nihil potest esse laudabile. Sed, quoniam de eo genere beneficiorum dictum est, que ad singulos spectant: deinceps de ijs, que ad universos, queq. ad remp. pertinent, disputandum est. Eorum autem ipsorum partim eiusmodi sunt, ut ad universos ciues pertineant, partim, singulos ut attingant: que sunt etiam gratiora. danda est opera omnino, si possit, utriusque, nec minus ut etiam singulis consulatur: sed ita, ut ea res aut proficit, aut certè ne ob sit reip. C. Gracchi frumentaria magna largitio fuit: exhaustiebat igitur ararium: modica M. Octani, & reip. tolerabilis, & plebi necessaria: ergo & ciibus, & reip. salutaris. In primis autem videndum erit ei, qui remp. administrabit, ut suum quisque teneat, neque de bonis priuatorum publicè deminutio fiat. perniciosè enim Philippus in tribunatu, cum legem agrariam ferret: quam tamen antiquari facile passus est, & in eo vehementer se moderatum prebuit: sed cum in agendo multa populariter, tum illud male: non esse in ciuitate duo millia hominum, qui rem haberent. capitalis omnino ratio est, ad aquationem bonorum pertinens: qua peste eua potest esse maior? hanc enim ob caussam maximè, ut sua tenerentur, resp. ciuitatesque constituta sunt. nam, et si duce natura congregabantur homines: tamen, spe custodia rerum suarum, urbium praesidia querebant. Danda etiam opera est, ne quod apud maiores nostros sapè fiebat, propter raritatem tenuitatem, assiduitatemque bellorum, tributum sit conferendum: idque ne enueniat, multò ante erit prouidendum. sin qua necessitas huius muneris alicui reip. obuenerit: (malo enim, quam nostræ, ominari: neque tamen de nostra, sed de omni rep. dispuo) danda erit opera, ut omnes intel-

*ligant, si salvi esse velint, necessitati esse parendum. Atque etiam omnes, qui remp. gubernabunt, consulere debebunt, ut earum rerum copia sit, quæ sunt necessariae. quarum qualis comparatio fieri soleat, & debeat, non est necesse disputare. est enim in promptu. tamen locus attingendus fuit.*

## EXPLANATIO.

**V**IDENDVM Q illud item, quod, si opul. } duodecim mei, & Tertij, Videndumq. illud est, quod, si opul. Vnus, pro illud, Id. Alius, ord. præd. Vid. q. est illud. *Quod sic locutus ep. vlt. lib. 9. ad Att. & ep. 28 lib. 7. Fam.* Quibus locis vide Pauli patris Commentaria. IN illo uno, aut forte in liberis, eius maneat gratia: } septem mei, & Tertij, ord. præp. In uno illo. Quatuor. Aut in liberis forte. Undecim, & Tertij, Manet. Duo, Remanet. SI res in contentione veniet, } si queramus, diuitiae ne sint probitati præferenda, an contra. Vel: si forte vslueniat, vt vel diuini, vel inopi, viro tamen bono, sit inseruendum. **T H E M I S T O C L E S** } hoc idem Val. Max. lib. 7. cap. 2. de sapienter dictis, & factis. Plutarchus autem in vita, & Apophthegm. hoc Themistoclem respondisse ait filia sua petitoribus. A N minus probato } Aut, septem mei. E G O, inquit, malo virum. } Ego vero, inquit, malo virum, tredecim mei, & Tertij. Industriæ, & virtutem sive diuitias malo, quam diuitias sine virtute, & industria. Plutarchus. Q VI pœnitia eget, } Isocrates: *Tοῖς ἀγαθοῖς οὐ ἔχουσι τὴν ψυχὴν, πούπου κτεάμεθα καὶ τὰς ἀφελεῖς, οὐ δέξουσι τὸ γένος μεν.* hoc est: Virtute, atque industria, necessariae virtutis industriae comparantur. P E C V N I A M, que viro: } cui, vt ait Horatius, diuitias quidem dederint, artem fruendi non dederint. C O R R U P T I mores, depravataque sunt admiratione diuitiarum. } nam, vt ait Demosthenes, δεῖ χρηματων ad vitæ sustentationem. N E id quidem semper: } obest enim interdum: nec possunt semper omnia, quæ volunt, diuities consequi. H O N E S T I O R vero quo modo: } dignitatem enim diuitiarum magnitudo non parit. N E impediunt: } ne beneficium in illum ideo non conferamus, quia diuitias abundent: si modò vir bonus est: sed rursus eadem diuitias ne adiuvuent, id est, ne nos ad beneficium tribuendum magis, quam conuenient, adducant,

ducant. MODO ne adiuvent: } nihil afferant diuitias, quo vir bonus iuuetur magis. Q U A L I S } probitate, & moribus. F U N D A M E N T U M enim perpetue commendationis, & fama estiu- stitia: } nouæ mei, & Tertii, Fundamentum enim est perp. cōm. & fam. iust. Tres, ord. præp. Fid. est enim &c. Vnus, Fundamē- tū est perp. cōm. & fam. iust. Vnus pro Enim, habet Verò. SINE qua nihil potest esse laudabile. } nā iustitia omnes virtutes complectitur. Q U A E ad singulos spectant: } id est, quæ deponuntur è cuiusque re familiari: non, quæ in priutis homines conferuntur. Q U A E ad minoros, } cuia magistratus, qui totius populi personam sustinent, aliquid ex ærario deponunt. E O R V M autem ipsorum partim cuiusmodi sunt: } pro, Alla eiusmodi sunt. visitat generi loquendi. V T ad universos cines pertinet, } vt cum augeatur resp. imperio, agris, vectigalibus. S I N G U L O S visitant: } vt singulos priuatim iuuent: quo ex genere frumentaria largitio est. C. G R A C C H I } tribuni pl. qui legem frumentariam tulit. Plutarchus, & in oratione pro Sextio, his verbis: Frumentariam legem C. Gracchus ferebat: incundares plebi Romanae: victus enim Tappeditabantur largè sine labore: repugnabant boni, quod & ab industria plebem ad desidium auocari putabant, & ærarium exhausti videbatur. Vnus meus, Ti. Gracchi. L A R G I T I O fuit: } Fuit, non est in nouem meis, & Tertij. E X H A V R I E B A T igitur } Igitur, non est in duobus meis. A E R A R I V M } ad vsum reip. necessariò constitutum: sine quo resp. stare non potest. Octauij autem modica largitio, quia non exhaustiebat ærarium, reip. salutaris. M. O C T A V I I, } collega Ti. Gracchi in tribunatu. Plutarchus, eptime Liuiana, & alij. R E I P. salutaris } non exitiosa, vt illa C. Gracchi, quæ exhaustiebat ærarium. N E Q U E de bonis priuatorum pu- blicè diminutio fuit. } Publicè: lege. quod Ti. Gracchus, agraria lege promulgata, conatus est. exquiri autem possessiones sine magna multorum iniuria non possunt. inde seditio, inde cedes, inde sumnum reip. discrimin. propterea subiungitur: Cap. italis omnino oratio est ad æquationem bonorum. pertinens. Neque: Ne, vonus. Non, vonus. Nec, tres. L E G E M a- grariam } de publicis agris populo diuidendis. A N T I Q U A R I } suffragiis i. probari. antiquatur enim lxx, cum à populo reiicitur, ne feratur: abrogatur autem iam lata, ne in posterum valeat. De Legibus: Vos legem antiquatis sine tabula.

Ad Att. Populum, ut rogationem antiquaret, rogabat. **MVL**  
**T A** populariter, } dixit Philippus, quæ plebi grata essent, o-  
ptimatisbus, & locupletibus inuisa. **QVI** rem haberent, } qui  
de suo viuentem: quibus ad victum necessaria suppeterent. Sic  
Terentius, Ad rem attētiorem esse, Rem facere: Cicero, Rem  
angere. **C A P I T A L I S** omnino oratio est ad equ. } nō, Omnino,  
nō est in quatuordecim meis, & Tertij. **T E N E R E N T V R,** }  
Tuerentur, quattuor mei. **Q V O D apud** maiores nostros sepe feci-  
bat, } antē Paulli Āemilij Macedonicam victoriam, nam is,  
ut ait Plinii lib. 33. cap. 3. & hic Cicero subiungit, tantum im-  
culit in ærarium, ut finem attulerit tributorum, nec tributum  
postea collatum est antē Pansæ, & Hirtij consulatum: quo an-  
ño, rep. oppressa, Cicero est interemptus. **S I N** quā necessitas, }  
acerrium telum. Sin quæ nec tres, & Tertij. (**M A L O** enim, }  
quām nostræ, ominari: } inuiti enim ea dicimus, quæ sunt  
mali omnis. Sic ex septem meis, & Tertij libro emendau. &  
est elegantius, cum dixerit, Sin qua necessitas huius muneris  
alicui reip. obuenerit: subiungere, Malo enim, quām nostræ,  
ominario. Quid enim attinet dicere, Malo enim alteri, (quod  
est in quattuor) quām nostræ: aut, Alij, (quod est in duabus)  
aut, Alienæ, (quod est in uno) quām nostræ: cum dixerit, Ali-  
cui reip. **N E Q V E** tamen de nostra, sed de omni rep. disputo. } Ne-  
que tantum, quattuor mei. Nō tantum, duo. } Tantum, non  
est in uno, & Tertij. Tū, septem. Tamen, reponit Fulvius Vrsinus  
ex antiquo libro. **N E Q U E** tamen de nostra, sed de omni rep. disputo:  
talis est omnis disputatio. non enim hoc, aut illud examinat,  
sed in toto genere versatur. supra: Mihi autem hæc oratio su-  
cepta non de te est, sed de generi toto. **N E C E S S I T A T I** esse  
parendum } soluendum tributum, necessario impositum.  
**Q V A E** sunt necessaria, } quæ ad victum, ad habitationem, ad  
vestitum pertinent, vide Platonicum de Rep. lib. 2. Est enim in  
promptu, } satis pater. **T A M E N** locus attingendus fuit, } Tan-  
tum, decem, & Tertij.

## C I C E R O.

**C**aput autem est in omni procuratione negotijs,  
& muneri publici, ut auaritia pellatur etiam  
minima suspicio. **V**inam, inquit C. Fontius Sammis,

ad illa tempora fortuna mē seruasset, & tum essem  
natus, quando Romani dona accipere cœpissent: non  
essem passus diutius eos imperare. **N** & illi multa facula  
expectanda fuerunt. modo enim hoc malum in bano  
remp. inuasit: itaque facile patior tunc potius Pon-  
tium fuisse: siquidem in illo tantum fuit roboris. Non  
dum centum, & decem annis sunt, cum de pecuniis re-  
petundis à L. Pisone lata est lex, nulla anteā cum fuisset.  
at verò postea tot leges, & proxime queque durio-  
res: tot rei damnati: tantum Italicum bellum, propter  
iudiciorum metum, excitatum: tanta, sublatis legibus,  
& iudiciis, expilatio, direptioque sociorum: vt imbecil-  
itate aliorum, non nostra virtute, valeamus. Laudat  
Africanum Panetius, quod fuerit abstinentis. quid nō  
laudetur: sed in illo alia maiora: laus enim abstinentia  
non hominis est solum, sed etiam temporum illorum.  
Omni Macedonum gaza, quæ fuit maxima, potius est  
Paullus: tantum in æraru pecunia inuexit, vt unius  
imperatoris prada finem attulerit tributorum. at hic  
nihil in domum suam intulit, præter memoriam nomi-  
nis semperternam. Imitatus patrem Africanus, nihil  
locupletior Carthagine euerfa. Quid, qui eius collega  
in censura fuit, L. Mummius? numquid copiosior, cum  
copiosissimam urbem funditus sustulisset? Italianum or-  
nare, quām domum suam, maluit. quamquam, Italia  
ornata, domus ipsa mihi videtur ornator. Nullum igi-  
tur vitium est taurinus, (vt eo, unde egressa est, referat  
se oratio) quām auaritia, præsertim in principibus, &  
remp. gubernantibus. habere enim quæstū remp. non  
modò turpe est, sed sceleratum etiam, & nefarium. ita-  
que, quod Apollo Pythius oraculo edidit, Spartam  
nulla re alia, nisi auaritia, esse perituram, is videtur

*non solum Lacedemoniis, sed etiam omnibus opulentis populis predixisse. Nulla autem reconciliare facilius benenolētum multitudinis possunt ijs, qui reip. presumunt, quām abstinentia, & continentia. qui vero esse populares volunt, ob eāmq. causam aut agraria rem tentant, vt possessores suis scđibus pellantur, aut pecunias creditas debitoribus condonandas putant: labefactant fundamenta reip. concordiam primum tollunt, que esse non potest, cūm aliis admuntur, aliis condonatur pecuniae: deinde aequitatem, que tollitur omnis, si habere suum cuique non licet. id enim est proprium, vt supra dixi, ciuitatis, atque orbis, vt sit libera, & non sollicita sae rei cuiusque custodia.*

## EXPLANATIO.

**C**. PONTIVS SAMNIUS, } Samnitium aduersus Romanos tum imperator, cūm turpissimas Caudinæ pacis condicōes acceperunt, à quibus tandem & ipse sub iugum missus ad Luceriam, anno ab v. c. CDXXXIII. Vide Liuium lib. 9. A d illa tēpora fortuna me seruasset, } Me fortuna reseruasset, vñus, & Tertij. Reseruasset, séptem. Me fortuna seruasset, quinque. Vnus, Ad illa tempora fortuna reseruasset. T V N C offensatus, } Tum, duodecim, & tertij. D O N A accipere } hinc Iugurthæ vox, apud Sallustium: O vrbem venale, si emptorem innenerit. M V L T A secula } Faciendum mihi puto, vt hoc Antonij Mureti integrum caput describam, quod ad huius loci intelligentiam praeclarum admodum facit. est autem in Variarum lectionum libris, octauum libri x.

Dubitant eruditii homines, quo modo accipiendū sit, quod ait Cicero lib. 2. de Officiis, Multa faculta exspectanda fuisse C. Pontio Samni, si à fortuna reseruatus esset ad id tempus, quo Romani dona accipere cœperit, bellavit enim cum Romanis Pontius ab v. c. CDXXXII. lex autē Calpurnia de pecunijs repetundis lata est anno BC 111. vi, si Saeculum sit centum annorum, quo modo accipiendū & Grāmatici veteres docēt,

&amp; lu-

& ludorum secularium appellatio confirmat, non tota duo saecula ei exspectāda fuerint. Sed certè Saeculum interdum est ~~zvra~~: vt ostendit & Nævius, qui Nestorem, vt est apud Agellum, tritæclæ fēnem vocavit, ex illis videlicet Homericis verbis:

Τῷ δ' ἡδη οὐρανοῖς μετέπων ἀνθεγόπω,  
Εφίσιος οἱ οἱ τερπόνει, οὐκέ τερπόνει οὐδὲ πέριστο  
Ἐν πύλαι πράσθιν, μετέπει τε τερπάτοισιν ἀρεστον.

Tereus autem triginta annorū est. Itaque illi Homericis versis ostendunt tantum, Nestorem, cūm illa loqueretur, sexagenario maiorem fuisse: quamuis illuc quoque ~~zvra~~ pro cētum annis accepit etiam veteres Latini poëtae videantur. Hæc Muretus. T A N T V M fuit roboris, } vt efficere posset, ne Romani diutius imperarent: vt posset Romanū imperium pecunia largienda euertere. N O N D V M centum, & decem anni } Fulvius Vrsinus ex antiquo libros, Enim, addidit, sic: Non dum enim cent. &c. Vnus meus, Non dum vero cent. Alius, Non dum x. & C. anni. A L P I F O N E } tribuno pl. qui primus Frugi dictus est. L A T A est lex, } Censorino, & Manilio cos. A T vero postea tot leges, } Cecilia, Seruilia, Atilia, Cornelia, Iulia. I T A L I - c v m b e l l u m } sociale à scriptoribus dictum. Vide Florum. E X C I T A T V M: } corum opera, qui, ne repetundarum accusarentur, metuebant: tabiis, qui sibi conscijs suorum scelerum, quieti rep. iudicia metuebant. V t imbecillitate aliorum, non nostra virtute, v. deamus. } si adhuc imperamus, cūm tamē illud malum, quod Pontius optabat, in rem ipsuferit, non virtuti nostræ, sed aliorum imbecilitati, acceptū referre debemus. hostes enim eos non habemus, in quibus tātum sit roboris, quantum sibi Pontius habere videbatur. Simile illud Isocratis in Symmachico: χρήτως καὶ μητρὸς λαζήσθει σωματέρους αὐτοῦ εἰ τὰς ἐχθρέους αἰματηράς τας ἐπιδεινές ἔχει της σωματείας αὐτοῦ εἰ τοῖς αὐτοῖς περιγέμαστο, καὶ ταῖς ἀντοῖς διανοίασι. τὸ δὲ διά τὴν ἐπείναν αἰματηράς τὸν ταύτων, καὶ λαβόντα μετεβολὴν, τὸ δὲ διά τοὺς αὐτοὺς γεγένεντον, βεβίωσαν. ἀλλ' ἔχοντες μάζαν πατεραπολεμεῖν οὐδὲν. G A Z A, } Persie, Gazam regiam pecuniam vocant. Q. Curtius. Virgilius pro omni pretiosa supellestile dixit,

Troia gaza per vndas.

Q VAE fuit maxima, } his millies centies HS, vt ait Velleius, idest sexages ter centena scutatorum millia: vt vulgo

dicitur, milliones sex, & scutatorum trecenta millia. Valerius Antias, Millies ducenties, scripsit. quod Liuius parum putat. In Plinio lib.33.cap.3. legitur, Pondo trium millium: quod mendosum esse constat. Vide Liuium lib.45. Plut.in vita, & Apophthegm. Valer.lib.4. Appianum in Mithridatico, Orosiu*m* lib.4.cap.20. Eutropium lib.4. cap.3. Iustinum lib.33. Florum lib.2. cap.12. Quod autem fecit Paulus, idem antea fecerat. Q. Tremulus, Anagnia capta. Plinius lib.34.cap.6. cef-sabat enim tributum, cum esset in æario pecunia: remouebatur, æario exhausto. PAVLVS: } pater naturalis Africani minoris. TRIBUTORVM: } vbi nouum bellum erat exortum, pecunia, qua gerendum esset, colligebatur: tributo cunctis ciuibus imposito. Liuius lib.5. NIHIL in domum suam intulit: } penates suos nulla ex parte locupletiores fecit. Valerius. qui nec adspicere Maçedonicam gazā voluerit, totumque negotium eius administrandæ, & in æarium referendæ, quæstoribus commisserit. signum autem eius abstinentiæ vel maximum fuit, quod moriens patrimonium vix xxxvii. millium myriadum, ut ait Plutarchus, reliquit: quæ summa paullo maior est vnde decim scutatorum millibus. NIHIL in domum suam intulit: nō. In, abest à septem meis, & Tertij Vnus pro. Intulit, habet Attulit. PRAETER memoriam } præclarè secum actum existimans, quod ex illa victoria alij pecuniam, ipse gloriam reportasset. Valerius. AFRICANVS } qui nihil in vita, nisi laudandum, aut fecit, aut dixit, ac sensit. Velleius. L. M V M I V S. } qui Corinthum deleuit, capit Achææ gentis: vnde Achaici cognomen est adeptus. ITALIAM ornare } nihil enim ex iis opibus, ornamentiisque, quæ prædiues Corinthius habuit, in domū eius peruenit. Signa namque ærea, marmoreaque, & tabulas pictas, quibus Corinthum spoliauit, in triumpho tulit, totumque iis Italiam repleuit. Tamque rudit ingenio fuit, (quod ait Velleius) ut, cum maximorum artificium perfectas manibus tabulas, ac statuas in Italiā portadas locaret, iuberet prædici conducentibus, si eas perdidissent, nouas eos reddituros. N V L I V M igitur vitium est tertiis, } septem, & Tertij, ord. præp. Tætrius est, nō. Est, non est in tribus. Deterius est, vnius. R E M P. gubernantibus. } Reip. gubernatoribus, Fuluius Vrfinus ex antiquo libro. Rep. administrantibus, vnuis meus. HABERE. enim quæstui remp. } ex reip. muneribus quæstum facere. In Verrem: Quinon intelligit

telligit istum sibi quæstui, prædæq;. habuisse, bona, fortuna, posseissons oratorum. Plautus, Poenulo:

Istic est thesaurus stultis in lingua situs,  
Ut quæstum habent malè loqui melioribus.

TYRPE } sordidum. SCELERATVM } facinus publicè contrarius in rép. admissum. ORACULO } Oraculum, quartuordecim mei. Oraclū, vnuis. Hoc autē Oraculū exstat in Aristophanis Scholiis. Ον δισχεπερθείς καὶ σμηγόρως οἱ Δάκαιοι, δῆλον ἐν τῷ χρηστοῦ ἀπεικρυπτεῖται Σπάρτων ἐλέν, οὐδὲο δὲ εὑρίσκεται. Vide & Plutarchū. NVL LARE alia, nisi auaritia, esse perituras, } sic duodecim mei. Duo, & Tertij, non habent in Alia. Is videtur } Idq. viderunt, vnuis. Id videtur, sex, & Tertij, nō. Is, abest à septem. AGRIARIAM rem } diuisionem agrorum, ut duo Gracchi fratres, infra. AVT pecuniis creditas debitoribus condonandas putant: } lege de tabulis nouis. CONCORDIAM pri-mum tollunt, } tollunt, non est in tredecim meis, & Tertij, Ut supra dixi, } in eo loco: Hanc ob causam maximè, ut sua teneantur, res publicæ, ciuitatésque constitutaæ sunt. CI-VITATIS, atque vrbis, } Ciuitatis, multitudinis ciuitum: Vrbis, quæ ciuitati præsidium est. supra: Etsi duce natura congregabantur homines: tamen, spe custodiæ rerum suarum, utrum præsidia quæabant. CIVVSQVE, } Cuique, duo mei.

## CICE RO.

ATque in hac pernicie recip. ne illam quidem con-sequantur, quam putant, gratiam. nam, cui res erepta est, inimicus: cui data est, etiam disimulat se accipere voluisse: Et maximè in pecuniis creditis oc-cultat suum gaudium, ne videatur non fuisse soluen-do. at verò ille, qui accipit iniuriā, & meminit, & præfert dolorem suum. Nec, si plures sunt y, quibus improbe datum est, quam illi, quibus iniuste adēptum est, iocirco plus etiam valent. non enim numero hac iudi-cantur, sed pondere, quam autem habet aequitatem, ut agrum, multis annis, aut etiam faculis ante posse effum,

qui nullum habuit, habeat: qui autem habuit, amittat: at propter hoc iniurie genus, Lacedemonij Lystrandrum Ephorum expulerunt, Agin regem, quod numquam antea apud eos acciderat, nec auerunt. ex quo eo tempore tanta discordie fecute sunt, ut tyranni existarent, & optimates exterminarentur, & praelarissemè constituta resp. dilaberetur. nec verò solum ipsa ecclit, sed etiam reliquam Graciam euerit contagionibus malorum, qua à Lacedemoniis profecta manarunt latius. Quid nostros Gracchos, T. i. Cracchi, summi viri, filios, Africani nepotes, nonne agrariae cōtentiones perdidérunt? At vero Aratus Sicyonius iure lundatur, qui, cum eius cinitas quinquaginta annos à tyranis teneretur, profectus Argis Sicyonem, clam de stino introitu urbe est potitus: cumq. tyramnum Nicocleē improviso oppressisset, sexcentos exsiles, qui fuerant eius ciuitatis locupletissimi, restituit, remq. pub. aduentus suo liberauit, sed, cum magnam animaduertiteret in bonis, & possessionibus difficultate: quod & eos, quos & ipse restituerat, quorum bona alijs possederat, egere iniquissimum arbitrabatur: & quinquaginta annorum possessiones mouere, non nimis aequum putabat: propterea quod tū longo spatio multa hereditatibus, multa emptionibus, multa dotibus detinebantur: sine iniuria, indicauit, neque illis adimi, neque his non satisficeri, quorum illa fuerat, oportere cum igitur statuisset, opus esse ad eam rem constituendā pecunia, Alexandriam se profici sci velle dixit, remq. integrā ad redditum suum ius sit esse: isq. celeriter ad Ptolemeum suum bositem, venit, qui tum regnabat alter post Alexandriam conditam: cui cum exposuisset, patriam se liberare velle, caussāmq. docuisset: à rege opulēto vir sum-

mus facilem impetravit, ut grandi pecunia adiuuaretur: quam cum in Sicyonem attulisset, adhibuit sibi in consilium quindecim principes, cum quibus caussas cognouit & eorum, qui aliena detinebant, & eorum, qui sua amiserant: prefecitque estimandis possessionibus, & uti persuaderent aliis, ut pecuniam accipere mallent, & possessionibus cederet, aliis, ut commodius putarent, numerari sibi quod tati esset, quam suum recuperare ita perfectum est, ut omnes, cōcordia constituta, sine querela discederent. O virum magnum, dignumque, qui in nostra rep. natus esset, sic par est ageare cum ciuibus, non, ut bis iam vidimus, hæsta in foro ponere, & bona ciuium vocis subiycere præconis, at ille Gracchus, id quod fuit sapientis, & præstantis viri, omnibus consulendum putauit: eaq. est summa ratio, & sapientia summiciuīs, commoda ciuium defendere, non diuellere, atque omnes & equitate eadem continere. Habitant gratis in alieno. Quid ita? ut, cum ego emerim, adiutorerim, tuear, impendam, tu me in iusto fruare meo? quid est aliud, alijs sua eripere, alijs dare aliena? Tabula vero noua quid habent argumenti, nisi ut emas mea pecunia fundum, & eum tu habeas, ego non habeam pecuniam? Quamobrem, ne sit es alienum, quod reip. noceat, prouidendum est: quod multis rationibus caneri potest: non, si fuerit, ut locupletes suum perdant, debitores lucentur alienum, nec enim villa res vehementius remp. continet, quam fides, quæ esse nulla potest, nisi erit necessario solutio rerum creditarum. numquam enim vehementius actum est, quam me consule, ne solueretur: armis, & castris tentata res est ab omni genere hominū, & ordine, quibus ita restituti, ut hoc tantum malum de rep. tolleretur. numquam

*nec maius as alienum fuit: nec melius, nec facilius dis-  
solutum est. fraudandi enim ipse sublata, soluendi ne-  
cessitas consecuta est. At verò hic noster viator, tunc  
quidem vietus, qua cogitarat, ea perfecit, cum eius iam  
nihil interesset. tanta in eo peccandi libido fuit, ut  
hoc ipsum cum delectaret, peccare, etiam si causa  
non esset.*

## EXPLANATIO.

**C**VI res erupta est, inimicus: } Cui res erupta est, est inimi-  
cūs, quinque, & tertij. Duo, Inimicus est. IN pecuniis cre-  
ditū } condonatis. OCCVLATAT suum gaudium, } in finū  
gaudet. N E videatur non sūisse soluendo. } obērati enim, cul-  
tus splendorem in fraudem creditorum simulantes, hominum  
de se opinioni offendunt. AT propter hoc iniurie genus } Ac,  
duo mei. Ciofanus testatur, se à Mureto accepisse, delendam  
esse particulam At, quæ sententiam corrumperet. LYSA-  
DRVM } præclarum ducem, optimèq. de rep. meritum.  
AGIM regem, } de quo Plutarchus. EX quo eo tempore } Ex  
eo tempore, vñus. At cōq. tempore, vñus. Exq. eo tempore,  
Tertij liber, quod placet. VT tyraNNI exsistente, } Ut & tyra-  
nni exs. sex, & tertij. PRÆCLARISSIME constituta }  
Lycurgi legibus. MALORVM, } quæ nata sunt propter au-  
varitiam, suprà: Apollo Pythius oraculo edidit, Spartam nula-  
re alia, nisi auaritia, esse peritura. PROFECTA } sic  
duo mei, recte. Profecte decem. Profectæ, Tertij. Profecto,  
duo. MANARVN latius. } sic Fam. lib. 12. ep. i. Mana-  
bat illud malum yrbanum. AFRICANI } maioris: cuius  
ex filia Cornelia Ti. Gracchus duos filios suscepit, Tib-  
erium, & Caium. ABATVS Scymnus, } cuius vitam Plutar-  
chus literis mandauit. A tyraNNIS } Abantida Pasei filio,  
Paseo patre, Nicocle. VRBE eſt potius } sic omnes mei, &  
Tertij. Sunt, qui, Vrbem, reponant. veteres libri aduersantur.  
NICOCLEM } Plut. in Arabo. Alij, Methodeum, ex  
antiquis libris, & ex Polyb. Impressi, Metoclem. Duo  
scripti, Modoclem, quorum vñus, in ora, Vel Methodeum.  
Vñus, Methoclem. Vñus, Modocleni. Vñus, Michoclem.

Vñus

Vñus, Methodē. Vñus, Metrodē. Vñus, Midoclem. Vñus Modo-  
clem. Vñus, Nicodē. Vñus, Sitōe3. Vñus, Metendē. Duo, Nico-  
clē. Tertij, Nicoclem. IMPROVISO opprēſſet, } sine ciuili  
sanguine. SEXCENTOS exſules, } octoginta à Nicocle,  
hāud pauciores quingentis à superioribus. QVOS & ipſe  
refit. } Et, non est in septem, & tertij. DETINEBANTVR: }  
Tenebantur, septem, & tertij. REM integrā } Plinius ad  
Traianum: Rem integrā distuli. Integrum referuare, Cic.  
Fam. lib. i. In integro res, vel cauſa, Terentius. In integrum  
reſtituere, Iurisconsulti. In integro res est, in Verrem, & ad  
Att. PROLEM AVM, } Philadelphū. Ptolemaī, Ägypti re-  
ges, omnes dicti, vt Cæſares, & Auguſti, Imperatores: Græco-  
rū & ceteri: Cecropidæ, Atheniensiu: Tigranes, Assyriorū:  
Phtaartes, Medorum: Sannacherib, Philistinorum. SVVM ho-  
ſpitem, } quem fignis, & tabulis ex Græcia ſibi deuinxit. Plu-  
tarclus. QVI tum regnabat alter poft Alexandria conditam: }  
eius filius, qui, cum Alexandro militauit. CVI cū exposuſi-  
ſet, } Qui, septem, & tertij. GRANDI pecunia } centum  
quinquaginta talentis. Plutarchus. CVM in Sicyonem } nō, In  
non est in tribus, & tertij. QVINDECIM principes } ſic  
Plutarchus. DETINEBANT, } Tenebant, octo. PER-  
FECITQ. } Perficitque, Tertij liber. ET uti persuaderent aliis, } nō Et, non est in septem. Ut, pro, Vti, est in tredecimi  
& tertij. VT bis iam yridimus, } primū Sulla, deinde Cæſa-  
re dominantibus. SAPIENTIA ſummi ciuii, } Boni, est in  
nouem, & tertij DEFENDERE } abeft ab uno meo, &  
tertij. QVID eſt aliud, aliis &c. } ſic octo mei, & tertij.  
Quid eſt aliud, nili aliis, vñus. Quid eſt aliud, quam aliis, quinque.  
TABVLAE noue } debitam pecuniam largientes.  
VT emas mea pecunia fundum, } vel cum fenore ſumpta,  
vel, vt, interdum amicitiae gratia fit, ſine fenore. ET cum  
tu habeas, } Et, non est in decem, & tertij. EGO non  
habeam pecuniam? } quia licet tibi non ſoluere per tabulas  
nouas. A ES alienum, } priuatorum ciuium: REIP. no-  
ceat, } ob eorum ſeditiones, qui obērati ſunt, & nouas tabu-  
las, leges agrarias, proſcriptiones, coniurationes expertunt.  
NON, ſi fuerit, } ſic quatuor mei, & tertij. Si non fuerit, tres.  
Si non hoc fuerit, duo. FIDES, } quam Iuſtitia fundamen-  
tum dixit lib. i. NVMQVAM enim vehementius } nō, Enim,  
non eſt in yndecim, & tertij. TANTATA res eſt }

Catilina duce. **O R D I N E.** ne videretur de humilibus tantum loqui, addidit Ordine, quia nobilis est Ordo, quam Genius. ep. 9. lib. 1. Fam. Cunctis hominibus, ordinib[us]q[ue] incumbentibus. Et ep. 10. lib. 3. & Cœlius ep. 17. lib. 8. & oratione 1. pro Cornelio. **V T** hoc tantum malum de rep. tolleretur. } Totum, pro, Tantum, est in tribus, & tertij. **F R A V D A N D I** enim spe sublata, } sperauerant debitores, si resp. mutaretur, se nihil futuros. eam spem sustulit virtus, & vigilantia Ciceronis. **Hic** noſter viator, } Cæſar. **T V N C** quidem vietus, } imperfectus a Bruto, Cæſsio, aliis. Sic quinque. Tum, sex, & tertij. Nunc, tres, quod etiam erat in imprecisione. **Tunc** quidem vietus: me scilicet consule: quia Catilina propter aris alieni magnitudinem consentiens, perfidice non potuit, obſistente me, quod cogitabat, debitores ut creditoribus nihil soluerent: & cum ea simul vietus Cæſar, omnēq[ue] idem cogitantes videntur. Suet. & Plut. de Cæſaris aris alieno. Haec sententia confirmari videtur sequentibus verbis. **C V M** eius iam nihil interſet. } cū are iam non premeretur alieno, rerum omnium armis potitus. Perficit igitur ea, quae multo ante cogitauerat, ut leges, & iudicia nihil valerent, nō sua cauſa, quia nihil ita debebat. sed suorum, qui graui alieno ere laborabant, nec sine civili bello incolumes villo modo esse poterant. qua de re sic ad Att. lib. 7. Verumtamen hoc video, cum homine audaciſimo, paratiſimōq[ue], negotiū effe: omnes dannatos, omnes ignominia affectos, omnes dānatione, ignominiaq[ue]. dignos illa facere, omnes, qui are alieno præmatur: quos plures effe intelligo, quam putaram. Eorum ex numero noti sunt, quibus ad consumendum nihil sat is effe videretur, C. Curio, M. Antonius, P. Dolabella. **P E C C A R E**, } Peccandi, vnuſ meus. **E T I A M** si cauſa non effit. } etiam si peccare quidem in eo, idest aris alieni solutionem tollere, sua cauſa non cogeretur: cū ipſe iam nihil deberet.

## C I C E R O.

**A**B hoc igitur genere largitionis, ut aliis detur, alii auferuntur, aberunt, qui remp. tuebuntur: in primisq[ue] operam dabunt, ut iuris, & iudiciorū aequitate suum quisque teneat: & neque tenuiores propter imbecillitatem.

cillitatem circumueniantur, neque locupletibus ad sua vel tenenda, vel recuperanda obſit iniuria. præterea, quibuscumque rebus vel belli, vel domi poterunt, remp. augeant imperio, agris, vectigalibus. hac magnorum hominum ſunt: hac apud maiores noſtos factitata: hac genera officiorum qui perſequuntur, cum ſumma utilitate reip. magnam ipſi adipiſcentur & gratiam, & gloriam. In his autem utilitatum præceptis Antipater Tyrius, Stoicus, qui Athenis nuper eft mortuus, duo præcepta cœſet eſſe à Panatio prætermiſſa, valetudinis curationem, & pecunia, quas res à ſummo philoſopho præteritas arbitror, quod effent faciles: ſunt certè utilles. Sed valetudo ſuſtentatur notitia ſui corporis, & obſervatione, quae res aut: rodeſſe ſoleant, aut obeffe: & continētia in vietu omni, atque cultu, corporis tuendi cauſa, & prætermittendis voluptatibus: poſtremò arte eorum, quorum ad ſcientiam hac pertinent. Res autem familiaris quā debet ijs rebus, à quibus abeft turpitudo, conſeruari autem diligentia, & parcimonia, ijsdem etiam rebus angeri. has res commodiſimè Xenophon Socraticus perſecutus eft in eo libro, qui, Oeconomicus, inscribitur: quem nos, iſta ferè ſtate cū eſſemus, qua es tu nunc, è Greco in Latinum conuertimus. Sed utilitatum comparatio (quoniam hic locus erat quartus à Panatio prætermiſſus) ſape eft neceſſaria. nam & corporis com. modis cum externis, & externali cum corporis, & ipſa inter ſe corporis, & externali cum externis comparari ſolent. Cum externis corporis hoc modo comparantur: valere ut malis, quam diues eſſe: cum corporis externa, hoc modo: diues eſſe potius, quam maximis corporis viribus. Ipſa inter ſe corporis comparatur ſic: bona valetudo voluntati anteponatur,

vires celeritati. Externorum autem, ut gloria diuitijs, vestigalia urbana rusticis: ex quo genere comparationis illud est Catonis sensis: à quo cùm quereretur, quid maximè in re familiari expediret, respondit, bene pascere: quid secundum, satis bene pascere: quid tertium, bene vestire: quid quartum, arare: & cùm ille, qui quesierat, dixisset, quid fenerari? tum Cato, quid horinam, inquit, occidere? ex quo, & multis alijs, intelligi debet, utilitatum comparationes solere fieri, recteque hoc adiunctum esse quartum exquirendorum officiorum genus. Sed toto hoc de genere, de qua renda, de collocanda pecunia, etiam de utenda, commodius à quibusdam optimis viris, ad medium Ianū sedentibus, quam ab ullis philosophis vlla in schola, disputatur. sunt tamen ea cognoscenda, pertinent enim ad utilitatem, de qua hoc libro disputationum est. reliqua deinceps persequemur.

## EXPLANATIO.

**E**t neque tenuiores propter imbecillitatem circumueniantur, & sic octo mei. sex, & Tertij, Humilitatem, quod non blater. & glossema videtur fuisse ad Imbecillitatem. & ita scriptum est in margine vnius mei veteris libri, receti manu. nec Humilitas pro glossemate videtur requirere Imbecillitas, sed aliquis potius Humilitatem, pro Imbecillitatem, substituit. **O**ssi t inuidia. hinc Comicus:

Iudices s̄apē propter inuidiam admunt diuinit: Aut propter misericordiam addunt pauperi.

**B**ELLIS, pro, in bello, antiquè, & vñitatem dictum, paulo tamen durius. Domi, militiæ, dixit lib. de Senectute. Bellis, nouem, & Tertij. **H**AEC genera officiorum que ad vniuersos, quaq. ad remp. pertinent. **Q**ui persequuntur, Qui persequuntur, vnu. Qui prosequuntur, tres. Qui sequuntur, duo. **A**DIPISCENTVR, Duo, Adipiscuntur. **E**t gratiam, & gloriam, & vt amentur, & in admiratione sint. Vtrumque &

supra coniungit: Maximè autem & gloria paritur, & gratia defensionibus. Et, cùm dixit: Hoc scientiæ genere prodesse quam plurimis, vehementer & ad opes augendas pertinet, & ad gratiā. Lib. iii. Huic neclaus magna adhibenda est, nec c gratia. Et, eodem libro: Qui illam eripuerit, in maxima gratia futurus, & gloria. Ad Plancū ep. 5, lib. x. Mi Plance, incumbe, ut bellum extrema perficias. In hoc erit summa & gratia, & gloria. **A**NTIPIALE R Tyrius, Catonis Uticensis familiaris. Plutarchus. D v o p r e c e p t i c e n s e t e s s e à P a n e t i o p r e t e r m i s s a, & quatuordecim, & Tertij, Duo præterita censet esse à Panætio. A summo philosoþo } vindicat eum ab ignorantia, contra obiectionem Antipatri. Q u o d e s s e n t f a c i l e s : } non quod eas ipse non viderit. S v n t c e r i è v t i l e s , } cauſa, cur ipse præcepta subiungat, quæ Panatius, quem iam excusauit, omittenda duxit. S v s t e n t a t v r } ne in morbos cadat, inde ductum, Firma, & imbecilla valetudo. N o r i t i a s u i c o r p o r i s , } sui quia non ijsdem rebus omnes, sed alius alia re indiget ad valetudinem. Ex notitia verò sui corporis nascitur obseruatio earum rerum, quæ res aut prodesse soleant, aut obesse. aliter enim obseruari non possunt. &, quia sola sui corporis notitia nō sufficit, adiungitur tamquam necessaria rerum earum, quæ profint, aut obſint, obſeruatio ita secundum præceptum nascitur ex primo, sine quo locum non haberet: si- cuti nec primum sine secundo fructum ferret. O B S E R - V A T I O N E e a r u m r e r u m q u e &c. } Earum rerum, non est in duobus meis, & Tertij. I N v i c t u s o m n i a t q u e c u l t u , } Cultus à Viictu differt, multa enim præter cibū, potionemq. sunt, quæ ad valetudinem pertineant. C O R P O R I S t u e n d i c a u ſ a , } viictu enim, atque cultu corporis tueantur. P R A E T E R M I T - T E N D I S v o l u p t a t i b s : } ijs, quæ obſunt. Hoc quartum præcep- ptum videtur inclusum in primo, quod est, Obseruatio earum rerum, quæ res aut prodesse soleant, aut obesse. in ijs enim, quæ obſunt, vita ñdæ voluptates, verū, quia voluptate plerique homines tamquam esca capiuntur, ideo nominatim ea de re præcipiendum Cicero putauit: quæ cùm maximè delectaret, maximè tamen obſit &c. Et prætermittendis voluptatibus, Et, non est in uno meo, & Tertij. A R T E c o r u m , } medicorum. Artem medicinam vocat. Virg. lib. xii.

Iamq. aderat Phœbo ante alios dilectus Iapis Iafides, acri quondam cui captus amore

Ipſe suas.

Ipsæ suæ artes, sua munera laetus Apollo,  
Augurium, citharamq; dabat, celereq; sagittas.  
Ille, vt depositi proficeret fata parentis,  
Scire potestates herbarum, viu. q; medendi  
Maluit, & mutas agitare inglorius artes.

Paullo inferius Iapis ipse loquitur:

Non hæc humanis opibus, non arte magistra  
Proueniunt, neque te, Antea, mea dextera seruat.  
**Et, apud Ouidium,** Apollo artem suum inuentum vocat:  
Inuentum medicina meum est, opifexq; per orbem  
Dicor: & herbarum subiecta potentia nobis.  
Heu mihi, quod nullis amor est medicabilis herbis,  
Nec profund domino, quæ profundi omnibus artes.

**C O N S E R V A R I** } non enim satis est querere, nisi conseruemus. **C O M M O D I S S I M E** } sic, vt nihil desideres, & in descendendo voluptatem capias. nam, **Commodè**, laudem habet. vnde illud supra: **Commodè** autem, quicumque dixit, **Pecuniam** qui habeat, non reddidisse. Et in extremo libro: **Toto** hoc de genere, de querenda, de collocanda pecunia, etiam de vtenda **commodius** à quibusdam optinens viris, ad medium **Ianum** sedentibus, quam ab ullis philo: opibus, vlla in schola, disputatur. **O E C O N O M I C V S** } de quo D. Hieronymus, **Quintilianus** lib. x. cap. 5. **Plinius** lib. xix. cap. 25. & **Seruius Georg. i.** **I S T A f è r è e t a t e cùm effemus** } Cùm effemus, absunt ab uno meo. **S E D** vtilitatum comparatio } nam de comparatione eorum, quæ honesta sunt, differunt libro primo. **Q V O N I A M** his locis erat quartus à **P. metio** pretermisitus } Primus locus est, Honestum ne factu sit, an turpe: secundus, conduceat, nec nec tertius, duobus propositis honestis vtrum honestius: quartus, duobus propositis vtilibus: de quo nūc loquitur **Cicerio**. Quintus, de comparatione honesti, & vtilis, est libro III. **A P u n t i o** pretermisitus: non modo quartum, qui de duobus vtilibus est, sed tertium quoque de duobus honestis. **Panaetius** prætermisitus: vt **Cicerio** docet libro primo. **C V M** externis corporis hoc modo comparantur: } Comparatur, non est in uno meo. **I P S A** inter se corporis comparantur: } Comparantur, non est in tredecim meis, & Tertij. **B O N A** valetudo } Ut bona valetudo, vnde decim meis, & Tertij. **D U O**, Si bona valetudo. **E X** quo genere comparationis illud est **Catonis** senis: } hoc addit, vt est Catonis quoque intentio distinguendas esse vtilitates ostendat

stendat: cùm sint alijs aliae maiores, vt, bene pascere, quām satis bene pascere: satis autem bene pascere, quām vitire: &, vitire, quām arare: alia: vero alijs honestiores, nam, fenerari summa vilitate in esse nemo negat: nec tam en quarenda, quia non honesta. **E X P E D I R E T;** } mal in uno meo, Expediret. **B E N E** pascere: } Pascua veteres pluris astimabant, quām vineas, & arua. vnde illud in Paradoxo vltimo: Si isti callidi rerum astimatores prata, & areas quasdam magni astimant, quod ei generi possessionū minimē quasi noceri potest: quātū est astimanda virtus, quæ nec surripi potest? Et **Columella** lib. 2. cap. 17. Atque hæc, inquit, orator exequi poterit, si non solū, quæ retuli, genera pabulorum prouiderit, verū etiā copiam ferri, quo molius armenta tucatur, fine quibus terram commodè moliri difficile est. & ideo necessarius ei cultus est etiam prati, cui veteres Romani primas in agricolatione tribuerunt, nomen quoque indiderūt ab eo, quod protinus esset paratum, nec magnum laborem desideraret. M. quidem Porcius & illa commemoravit, quod nec tempestibus affligeretur, vt aliae partes ruris, minimi q; sumptus egens, per omnes annos praberet redditum, neque eum simplicem, cum etiam in pabulo non minus redderet, quām in feno. **B E N E** vitiare: } cur malim, Vitire, (quod in quatuor est antiquis libris, scribunt Nannius in Miscellaneis, Langius, Balduinus, Gifanius,) quām, Vestire, quod ipsum reperi in omnibus meis, (nam a Tertij libro hoc totum abest) tribus causis adducor: primum, quod, cùm hæc sint Catonis præcepta, particuli eū verbo, in certa re designanda, quām generali, vnum esse, verisimilius est: deinde, quod Plinius lib. 18. cap. 5. hæc ipsa referens Catonis præcepta, quaestuissimā in agro Vitam esse dixit, Vestiendo mētionem nullam fecit. postremō, quod ex Vestire certè non tā facilis fuit lapsus ad Vitire quām ex Vitire ad Vestire: cùm ita scriberent veteres, Vestire, pro Vitire: vt Viam, pro Viriam, & timilia. Quod peritis antiquitatum ita notum est, vt exemplis probare non oporteat. Hæc autem Catonis præcepta ne quis miretur in eius libris non exstante: circumferunt enim sermonib; vt ab illo dicta, non vt scripta. Itaque & Cicero, & Plinius aiunt, Cato, interrogatus, &c. Nam, quod scriptū est, apud Catonē cap. 61. simile illud quidē est ex aliqua parte, ex aliqua tamen dissimile. Vestire tamen, si legas, interpretandum, arboribus maximē fructū ferentibus, veū hæc vtilitas nō videtur arationi præferēda, itaq; magis placet, Vitire.

**Q**uid hominem, inquit, occidere? } ut ostenderet, non omnem  
utilitatem querendam esse, quasi fenerari non licaret. **S**OLERE si, } sex, & Tertij, ord. præp. Fieri solere. **T**OT OB HOC  
de genere, } cuius partes sunt tres, quo modo querenda, collocan-  
da, vtenda pecunia sit. **D**E COLLOCANDA } ut conserueretur, at-  
que etiam augeatur, vbi quaesita iam est. **E**T I AM DE VTEN-  
DA, } sic omnes mei, & Tertij. **V**TENDA, parçè videlicet, ac fru-  
galiter, qui enim, vt pecuniam quereret, ne fenerationis qui-  
dem quæstum turpe putauit, is, vt eam pecuniam temere  
dissiperet, ac dispendat, non facile adducetur. itaque superuacu-  
num pñne videtur ei præcipere; cui tamen præcipiunt fene-  
ratores, nihil omnino, quod ad pecuniam pertineat, omitten-  
tes superuacuenum autem præceptum, vel parum certe ne-  
cessarium significat hic loquendi modus. Etiam de vtenda.

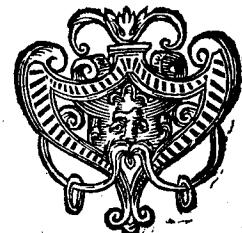
**C**OMMODUS } melius, & vitius. **A** quibusdam optimis vir-  
iis, } à feneratoribus. ironia, iam enim de feneratione dixit;  
Quid hominem occidere? & verbum Quibusdā, ironia magis in-  
dicat. **C**OMMODUS à quibusdā optimis viris: à contrario sensu, nam  
nec decenter, & honestè, nec ab optimis viris de querenda,  
& collocanda pecunia ab ijs, qui sedent ad medium Ianum,  
idest à feneratoribus, disputatur. non enim in querenda col-  
locandæ pecunia, sed in vtenda potius, laus posita bonitatis  
est, itaque rectè subiungit Cicero: Etiam de vtenda, vius enim  
pecunia est, qui pecunia querenda, & collocanda scientiam  
excusare posset, nam illa per se, id est, querere, & collo-  
care, laudem non habet. **A** D MEDIUM IANUM } vicus hoc no-  
mine Romæ fuit, vbi pecunia funere dabatur. prima vici pars,  
summus Ianus, medius: ultima, imus vocabatur. vnde  
Horatius ep. i. lib. i.

O ciues, ciues, querenda pecunia primum est,  
Virtus post nummos, hæc Ianus summus ab imo  
Perdocet.

Maxime vero ad medium Ianum, id est, medio vico, sedebant  
feneratores. Itaque Phil. v. Ita ne Ianus medius in L. Antonij  
clientela sit? quis vniquam in illo Iano inuentus est, qui L.  
Antonio mille nummum ferret expensum? Et Horatius sat.  
3. lib. ii.

--Postquam omnis res mea Ianum  
Ad medium fracta est, aliena negotia curo,  
Exclusus proprijs:

De Iano præterea Phil. vi. & vii. Octo, & Tertij, Ad ianuæ  
mediū: sex, ord. præp. Ad mediū ianuæ. Malè. **Q**UAM AB ULLIS  
philosophis } itaque mihi hoc de genere pluribus disputandum  
non est. **S**VNT Tamen ea cognoscenda. } quæ disputantur ab  
ijs, qui ad medium Ianum sedent: quæ scilicet philosophi de  
utilitatibus disputant, quamquam haud ita commodè, vt ijs,  
qui ad medium Ianum sedent, id est feneratores. **P**ER TRI-  
NEN T enim ad utilitatem, } licet ea ratio querendæ, collocandæ,  
vtenda pecunia, de qua feneratores commodius, quam  
philosophi, disputant, haud satis honesta videatur. **D**ISPUTA-  
TUM EST. } sic tredecim mei, & Tertij. recte. Vnus, Dispu-  
tandum est. **R**ELIQVA } à Panætio prætermissa: si id,  
quod speciem habet honesti, pugnet cum eo, quod utile vide-  
tur, quo modo ea discerni oporteat.




**ARGVMENTVM LIBRI  
TERTII.**

**I**BRO primo, unde officia ducerentur: secundo, quid esset utile, quæsitum est: hoc tertio, de honesto & utile, cum pugnare videtur inter se deliberatur. sed antequam hæc disputatio suscipiatur, consilium suum Cicero, quod, exstincto senatu, deletisque iudiciis, ad scribendum curam omnem, studiumque conuerterit, maioris Africani tuetur exēplo. Deox ideo dicit interdum dubitari solere, utrum id, quod utile videretur, anteponendum esset honesto, non quod ea cōparari oportet inter se, sed quia tempus incideret eiusmodi, ut, quod turpe haberisoleret, honestū esse inueniretur. exempli gratia: hominem occidere, turpe est: at, si tyrannus occiditur, non modò non turpe, sed gloriosum etiam existimatur. distinguuntur

tur hæc non tam re, quam tempore. Et, ut distinguiātur, formula quædā constituitur Stoicorum rationi, disciplinæq; consentanea, quidquid honestū, idem utile esse: nec utile quidquam, quod non honestum. quo sequitur, ut, detrahere aliquid alteri, & hominem hominis incomodo suum augere cōmodum, honestum ideo non sit, quia nec natura, id est iure gentium, nec legibus populū cōceditur: contraq; honestum in primis, & secundum naturā, pro multorū: incolumente, atque emelumento labores, molestiasq; suscipere. Rursus, hominib. diuitiis, voluptatibus, & eiusmodi rebus anteponenda quidē amicitia est: amicitia tamen caussa nihil contra remp. aut insurandū, aut fidem vir bonus faciet. iacere enim utilitatis species, valere honestas debet, cū id, quod utile videtur in amicitia, cum eo, quod honestū est, comparatur. Quod si hoc in priuata amicitia, multò magis in rep. obseruadū. idq; laudatur in primis in Atheniensi populo, Aristidis potius, quam Themistoclis, cōsiliū securis, cūm hic utilitatem tantum spectaret, ille honesta

temporis, quam utilitatem estimaret. Iam, celare veritatem emolumenti gratia, si turpe est: orationis veritatem adhibere, & mendacio sibi utilitatē querere, multò turpis. Sunt autem multa, quae quia more, lege, iure civili conceduntur, ideo turpia non videntur: sed aliud est ius ciuile, aliud ius gentium: ideo saepe accedit, ut, quod iure gentium, id est lege naturae sanctiatur, idem vetetur iure ciuili: aut, quod iure ciuili vetatur, idem per naturae legem licet. Optimum igitur est ius ciuile, quod à natura ducitur, & malitia, fraudemq; vindicat, ut in prædiorum, mancipiorumq; venditione. Cuius generis cùm occurrat multa, una omnium regula est, quam qui seruauerit, aberit à culpa: ut ita placeat id, quod utile videtur, si modo turpe nō est: aut, si turpe est, omnino displiceat.

Accidit autem, ut ne pacta quidem, & promissa seruanda sint: tum scilicet, cū aut ei, qui promiserit, aut patriæ inutilia sint. quod enim honestū naturā videtur, tēporibus fit saepe non honestum. & omnino, si quid abest à laude, decore, honestate, utile non putandum.

M. TVL-



# M. TULLI CICERONIS DE OFFICIIS

Ad Marcum Filium

LIBER III.

CICERO.

**S**CIPIONEM, Marce filium, qui primus Africanus appellatus est, dicere solitum scripsit Cato, qui fuit ferè eius aequalis, numquam se minus otiosum esse, quam cùm otiosus: nec minus solum, quam cùm solus esset. magnifica verò vox, & magno viro, & sapiente digna: que declarat, illum & in otio de negotiis cogitare, & in solitudine secum loqui solitum: ut neque cessaret enquam, & interdum colloquio alterius non egeret. itaque duæ res, qua languorem afferunt ceteris, illum acuebant, otium, & solitudo. Vellem, & nobis hoc idem verè dicere liceret: sed, si minus imitatione tantam ingenij præstantiā consequi possumus, voluntate certè proximè accedimus. nam &, à rep. forensibusque

negotijs armis impijs, vñq. prohibiti, otium persequimur: & ob eam causam urbe relicta, rura peregrates, sape soli sumus. sed nec hoc otium cum Africani otio, nec hec solitudo cum illa comparanda est. ille enim, requiescens à reip. pulcherrimis muneribus, otium sibi sumebat aliquando, & à cœtu hominum, frequentaque interdum, tamquam in portum, se in solitudinem recipiebat: nostrum autem otium negotiis inopia, non requiescendi studio, constitutum est. ex finito enim senatu. deleitisq. iudicij, quid est, quod dignum nobis aut in curia, aut in foro agere possimus ita, qui in maxima celebritate, atque in oculis ciuitatis quondam viximus: nunc, fugientes confessum sceleratorum, quibus omnia redundant, abdimus nos, quantum licet, & sape soli sumus. sed, quia sic ab hominibus doctis accepimus, non solum ex malis eligere minima optere, sed etiam excerptere ex his ipsis, si quid inesse boni: propterea & otio fruor, non illo quidem, quo debet is, qui quondam peperisse et otium ciuitati: nec eam solitudinem languore patior, quam mihi afferit necessitas, non voluntas. quamquam Africanus maiorem laudem vel meo iudicio assequebatur: nulla tamen eius ingenij in numero mandata litteris, nullum opus otij, nullum solitudinis munus existat. ex quo intel ligi debet, illum mentis agitatione, inuestigatione q. earum rerum, quas cogitando consequebatur, nec otiosum, nec solum unquam fuisse. Nos autem, qui non tantum roboris habemus, ut cogitatione tacita a solitudine abstractamur, ad hanc scribendi operam omne studiu, curamq. couertiu, itaque plura breui tempore, euerfa, quam multis annis, stante rep. scripsimus. Sed, cum tota philosophia, mi Cicero, frugifera, & fructuosa,

nec

nec villa pars eius in culta, ac deserta sit: tamen nullus feracior in ea locus est, nec uberior, quam de officijs: à quibus constanter, honesteq. viuendi precepta ducentur. quare, quamquam à Cratippo nostro, principe huius memoria philosophorum, hoc te assidue audiire, atque accipere consido, tamen conducere arbitror talibus aures tuas vocibus undique circumsonare, nec eas, si fieri possit, quidquam aliud audire. quod cum omnibus est faciendum, qui vitam honestam ingredi cogitant: tamen haud scio, an nemini potius, quam tibi, sustines enim non paruam expectationem imitande industria nostræ, magnam bonorum, non nullam fortasse nominis suscepisti onus præterea granu & Athenarum, & Cratippi: ad quos cum, tamquam ad mercaturam bonarum artium, sis profectus, inanem redire, turpissimum est, dedecorantem & urbis auctoritatem, & magistri. quare, quantum conniti animo potes, quantum labore contendere, (si discendi labor est potius, quam voluptas) tantum fac ut efficias: neve committas, ut, cum omnia suppeditata sint à nobis, tute tibi defuisse videare. Sed hec haec tenus: multa enim sepe ad te, cohortandi gracia, cripsum. nunc ad reliquam partem proposita diuisio nis reuertamur.

## EXPLANATIO.

**A**PPELLATVS est, } Sit, nouem, & Tertij,  
SCRIPSIT Cato, } qui tamen Scipioni parum  
amicus esse creditus est. Liuius lib. xxxix. is, qui,  
censura leuissime gesta, Censorius est appellatus.  
FERE eius equalis, } secundum enim Africani  
consulatum primus Catonis exceptit, & quidem questor  
eius: cū etiam obiectasse, & Petillijs tribunis pl. vt eum ac-  
cularent, auctor fuisse dicitur. Liuius. NVM QVAM se minus  
otiosum esse, quam cū otiosus: nec minus solus, quam cū solus est. }  
Velleius lib. i. Scipio tam elegans liberalium studiorum, o-  
mnisq. doctrinæ, & auctor, & admirator fuit, vt Polybius,  
Panatiumque præcellentes ingenio viros, domi militiaque  
secum haberit: neque enim quisquam hoc Scipione elegan-  
tius interualla negotiorum otio dispunxit, semperq. aut belli,  
aut pacis seruunt artibus. Semper inter arma, ac studia versatus,  
aut corpus periculis, aut animum disciplinis exercuit. Num-  
quam se minus otiosum esse, quam cū otiosus: quia res præclaras in  
otio cogitabat. Nec minus solus, quam cū solus est: solus enim  
non est, qui secum loquitur: quod faciebat Africanus. que sunt  
autem illa, quo taciti sermonis materiam præbent? resp. in  
primis, & ex virtutis, quibus actiones nostræ ad verum decus,  
laudemq. diriguntur. SECVM loqui solitum: } è autq. dia-  
lœbatq. aīi nō οραγμένω, Isocrates. ITA QVE} Ita, pro  
Itaque, vnuus meus, & Tertij liber. OTIVM, & solitudo. }  
Ennij versus, in Iphigenia, apud Agellium lib. xix. cap. x.

Otio qui nescit vti, plus negotij haber,

Quam cum est negotium in negotio.

Nam, cui, quod agat, institutum est, nullo negotio

Id agit: studet ibi, mentem, atque animum delecat  
sum.

Otio so initio animus nescit, quid velit.

Hoc idem est, neque domi nunc nos, nec militia  
sumus.

Imus huc, hinc illuc: cū illuc ventum est, iré illinc  
lubet,

Incerte errat animus, præter propter vitam viuitur.

**V**ELLEM & nobis } particula, Et, abest ab vndeclim, &  
Tertij. Vnuus, Vellem idein hoc nobis. Vnuus, Vellem quidem  
nobis

nobis. Vnuus, Vellem nobis hoc idem dicere liceret. VERE  
dicere liceret: } quodam enim modo licet, sed non æquè, vt  
illi: quod & ille ingenio præstiterit, & meliora tempora fuerint.  
ARMIS imp̄s: } bellis ciuilibus. OTIVM persequimur: } sic  
septem, & Tertij; recte. Sex, Prosequimur. vnuus, Cōsequimur.  
RVR A pergrantes. } sic quattuordecim mei, & Tertij. Male  
Langius, Peregrinantes: delens, Rura. nam Peregrinari, est, lō-  
gius ab vrbe iter facere. Rura autem opponit Vrbi. Solitum  
autem esse Ciceronem ruri multa scribere, cum alibi, tum, i.  
de Leg. ait: Subseciuia quādam tempora incurruunt, quæ ego  
perire non patior: vt, si qui dies ad rusticandum dati sint, ad  
eorum numerum accommodentur, quæ scribimus. HOC  
etiam } sic duodecim, & Tertij. NEC hac solitudo } nō Hac  
addidimus ex omnibus vet. lib. NO N requiescendi studio, }  
antea, Nec req. studio. Non, est in omnibus veteribus. AVT  
in curia, aut in foro agere possumus: } mortuo Cæsare, nondum  
libera ciuitas erat. ITA, qui in maxima celeb. } sic tres mei,  
& Tertij. Duo, Itaque, qui in max. Cel. Duo, Itaque in max.  
cel. Tres, Itaque cū in max cel. Vnuus. Itaque nos, qui in max.  
cel. IN OCULIS CIUINI, } idest, ciuibus cari. Terentius: Rex te  
ergo in oculis esse multititudini. Ad Q. fr. Balbum in oculis  
fero. Cuium, est in omnibus veteribus libriss. VIX IM-  
V S: } Vixerimus, octo, & Tertij. CONPECTVM scelerato-  
rum, quibus omnia redundant, } sic apud Euripidem:  
Ταῦθ' ὁ τάκιμος πόλεμος ἐξεργάζεται.

SIC ab hominibus doctis accepimus, } accepit ab Aristotele:  
qui ήν Ηεκ. E. ita scriptum reliquit: Οἱ δὲ αἰδοποιοι τῶν  
χρημάτων, καὶ διάσωσι. Λέει οὐ, ἀλλὰ τὸ χρήματα, μὴ τὰ αἴπλατα ἀγαθά, καὶ  
արտէ: αἴπλατα εἶναι, αἴπλατα δὲ τὰ ἀντίτικα αἴπλατα: οὐ δὲ αἴδοντες εἰς αἴπλατα  
πλέον αἴπλατα, ἀλλὰ καὶ τὸ ἀντίτικον τὴν αἴπλατα κεκλαῖν, ἀλλὰ οὐδεὶς οὐ  
τὸ μετανοεῖν, αἴπλατα ποιεῖ. Et ad Eudænumi τῷ d. E x malis  
eligere minima oportere, } Plautus trinummo: Nota res mala,  
optimis. Et Terentius: Ut quimus, quando, vt volumus, non li-  
cer. Non illa quidem, } illustri, & cum dignitate. Sic initio lib.  
III. de Orat. otium optat cum dignitate. DEBEAT } sic  
duodecim, & Tertij, recte. Duo, Debeat. PEPE RISSET  
otium ciuitati: } in consulatu, coniuratione extincta. de quo  
iam antea gloriatus est. Hinc:

O fortunatam natam me consule Romam;  
AFFERT necessitas, } Hinc:

Δενήις αὐτήν και σύντηξέ πλέον.

**N**VL A tamen eius ingenij monumenta quadrigata litteris, **3**  
Quintilianus lib. x. cap. i. Terentij scripta ad Scipionem Africanum referuntur. Donatus quoque ait, non obscurum fuisse famam Terentium a Lelio, & Scipione esse adiutum.  
**B R E V I** tempore, **3** à dictatura Caesaris, ad triumiuratum.  
**T A M E N** nullus, **3** tum, quinque, & Tertij. **F E R A C I O R** metaphora ab agris, qui feraces esse dicuntur. In Verrem. Alibi ad ingenium transtulit, Nihil feracius ingenij, in Oratore. **P R I N C I P E** inter Peripateticos. Fā, lib. xii. ep. 16. & lib. xvi. ep. 21. Vide initio li. i. & extremo hoc libro, & in proemio libri de Veniuer. **H o c** aſſiduè audire, **3** Hec, sex, & Tertij. **T A L I B U S** aures tuas vocibus circuſonare, **3** Demosthenes aui-  
σωτάζεις εας. Οὐ δὲ τόπο μηκὸν φελεῖν οἷμεν, εἰ τὰ βέβαια νήρες ακένειν  
ουσιας θέων δεῖ γάρ, ὃ δέ αἱ δρεπαὶ Αθηναῖς, τὸν βενθέρην πιπίλησι τὰ πόλει  
ημῶν ἀγαδόν, ταῦτα πεφτεῖν οὐκών λέσσονερ. Διέφερεν γάρ εὖ τὸ πολλὰ  
καὶ φυσικὴν πάστα μέλον ἢ ταῦτα πεπονεῖν σωματικόν. Circumſo-  
mire: σπουδήν, σπουδήν. **V I T A M** ingredi, **3** Isocrates: Οὐτοὶ τὸ  
βίον τεττύλι τὸν ὅδον ἐπειρύσσουσι: εὐτοι μόνοι τῆς αἴσθησις, ἡ οὐδέποτε γνω-  
σίας οὐδενίσσουσι. **S V S C E P I S T I** onus, **3** exſpectationis.  
**G R A V E** quinque, Grande, quo modo illud Poëta:

Grande onus exiguo fornicias ore ferentes.

**A D** mercaturam, **3** sic omnes libri: id est, tamquam ad emen-  
das merces, sic quoque duobus locis adducit hunc locum No-  
nius. Langius, Mercatum, ex uno libro. Isocrates in Parane-  
tico. Μη γετίνει μεμχανόδιον παρενέδητα περὶ τοὺς διδάσκοντας τὴς γει-  
του ἐπαγγελμάτους: αἰχθὼν γάρ τούς αὐτοὺς γειτόνες, πατηκόμενοι περὶ αὐτοὺς  
διαπεριθήκαντας τὴν πάτειαν πατεῖσθαι τὸν πάτερον εἰς τὸν πάτερα. Τοὺς δὲ γει-  
τους μηδὲ κατατίθειν πατεῖσθαι, δοῦντα τὸν πεπτόν της γειτονίας τὸν πάτερα.  
**I N A N E M** redire turpissimum est, **3** Hom. Ia. i.

Aἰχθὼν τοι μηδέπειτε μάνευεν τὸν πάτερα.

id est: Turpē force, mansisse diu, vacuūmque reuerti.

**V R B I S**, **3** qua semper bonas artes aluit. **Q V A N T U M** coniuncti animo, **3** Isocrates idem præcipit: Πειρεῖ τὸν περὶ ψυχὴν ἔργον τοῦ Θεοῦ, σὸν δὲ σώμα τοῦ πάτερον. **T V T E** tibi defuisse videare. **3** sic, ad Trebatium, lib. vii. Fam. ep. 7. Ut tibi unum timendum sit, ne ipse tibi defuisse videare. **M V L T A** enim sepe ad te, **3** ni-  
hil tamen exstar, præter Partitiones Oratorias, & hos libros  
de Officijs: qui tamen ad formandas potius mores, quam ad  
cohortandum, scripti sunt.

## CICERO.

**P**ANAE TIVS igitur, qui sine controuerſia de officijs accuratissimè disputauit, quémq. nos corre-  
ctione quadam adhibita, potissimum ſecurifimus: tri-  
bus generibus propositis, in quibus deliberare homines,  
& consultare de officio ſolerent: uno, cum dubitarent,  
honestum ne id eſſet, de quo ageretur, an turpe: altero,  
utile ne eſſet, an inutile: tertio, ſi id, quod ſpeciem ha-  
beret honesti, pugnaret cum eo, quod utile videretur,  
quo modo ea diſcerni oportere: de duobus generibus  
primis tribus libris explicavit: de tercio autem genere  
deinceps ſe ſcripſit dicturum: nec exſoluit, quod promi-  
ſerat, quod eo magis miror, quia ſcriptum à diſcipulo  
eius Posidonio eſt, trīginta annos vixisse Panatium,  
poſtquam illos libros edidiſſet, quem locum miror à  
Posidonio breuiter eſſe tractatum, in quibusdam com-  
mentarijs, praefertem cum ſcribat, nullum eſſe locum  
in tota philoſophia tam neceſſarium. Minime verò  
affiſſior ijs, qui negant, cum locum à Panatio preter-  
missum, ſed conſulto relictum, nec omnino ſcribendū  
fuiſſe: quia numquā posſet uilitas cum honestate  
pugnare, de quo alterum potest habere dubitationem,  
adhibendum ne fuerit hoc genus, quod in diuinaſione Pa-  
natij tertium eſt, an plane omittendum: alterum dubi-  
tari non potest, quin à Panatio ſuceptum ſit, ſed de-  
relictū, nam, qui ē diuinaſione tripartita duas partes abſo-  
luerit, huic neceſſe eſt reſtare tertiam, præterea, in extre-  
mo libro tertio de hac parte pollicetur ſe deinceps eſſe  
dicturum. Accedit eodē testis locuples Posidonius: qui  
etiam ſcribit in quadam epiftola, P. Rutilium Rufum  
dicere ſolere, qui Panatium audiuerat: ut nemo pi-  
ctor eſſet inuentus, qui Veneris eam partem, quam

*Apelles inchoatam reliquisset, absoluere, (oris enim pulchritudo reliqui corporis imitandissimam auferebat) sic ea, que Panatius pratermisisset, & non perfecisset, propter eorum, qua fecisset, praestantiam neminem esse persecutum. Quamobrem de iudicio Panatij dubitari non potest. Recte ne autem hanc tertiani partem ad exquirendum officium adiunxerit, an secus, de eo forfasse dubitari potest. nam siue honestum solum bonum est, ut Stoicis placet: siue, quod honestum est, id ita summum bonum est, quemadmodum Peripateticis vestris videtur, ut omnia, ex altera parte collocata, vix minimi momenti instar habeat: dubitandum non est, quin numquam possit utilitas cum honestate contendere. itaque accepimus, Socratem solitum exsecrari eos, qui primum hac, natura coherentia, opinione distracti essent. cui quidem ita sunt Stoici assensi, ut etiam, quidquid honestum esset, id utile esse censerent: nec utile quidquam, quod non honestum. Quod si is esset Panatius, qui virtutem propterea colendam dicaret, quod ea efficiens utilitatis esset: ut ijs, qui res expetendas vel voluptate, vel indolentia metiuntur: licet ei dicere, honestatem aliquando cum utilitate pugnare. sed, cum sit is, qui id solum bonum iudicet, quod honestum sit: qua autem huic repugnant specie quadam utilitatis, eorum neque accessione meliorem vitam fieri, nec discessione peiorum: non videtur huicmodi debuisse deliberationem introducere: in qua, quod utile videatur, cum eo, quod honestum est, comparetur. etenim, quod summum bonum a Stoicis dicitur, conuenienter natura vinere: id habet hanc, vi opinor, fætentiā, cum virtute congruere semper: cetera autē, qua securitatem naturam essent, ita legere, si ea virtuti*

*non repugnarent. quod cum ita sit, putant quidam hanc comparationem recte non esse introductam, nec omnino de eo genere quidquam precipiendum fuisse. Atque illud quidem honestum, quod proprietas verè dicitur, id in sapientibus est solis, neque à virtute diuelli vñquam potest: in ijs autem, in quibus sapientia perfecta non est, ipsum illud quidem perfectum honestum nullo modo esse potest, similitudines honesti esse possunt.*

## EXPLANATIO.

**A**CCVRATISSIME disputauit, } subtilissime, diligentissime, cum veritate congruenter. **D**E OFFICIO } idest, cū quaritur, quid recte, aut secus sit. **P**OST QVAM illos libros edidisset, } Posteaquam, duodecim, & Tertij. Eos, tres. Istos, duo. **B**RÈVITER effractatum, } sic vndecim mei libri, tres, & Tertij, Tactum. quod non improbo. genus enim dicendi sat bonum est, est enim, paucis verbis narrare. itaque Cicero lib. II. de Orat. Per quam, inquit, breuiter perstrinxii, atque attigi. In quo est animaduertendum, Attigere, si tamquam translatum usurpatur, cum Leuiter coniungi: si tamquam proprium, cum Breuiter. **D**ERELICTVM } Relictum, omnes libri veteres. **T**ESTIS locuples } sic infra: An locupletiores queris autores? Et ad Cæsiuniorem lib. II. Nihil omnino certi: nec locupletis ad hoc auctorem habebamus. Malè apud Nonium Locupletis. **P**OSIDONIVS: } quem, & Molonem apud Rhodum audiuisse, tradit Plutarchus. Et I. de Fin. ipse Cicero suum familiarem vocat. **P**. RVTILIVM *Rufum* } is est, quem lib. I. P. Mucium Scœvolam sectatum fuisse, ab eoq. iuris scientiam, & innocentia, morumq. opinionem huius dixit. **Q**VIR Veneris eam partem, &c. } Vnus, Qui inchoata Venere. Vnus, Qui in templo Coa Veneris: quod est & in ora vnus libri. Vnus, Qui in templo dea Veneri. Vnus, Qui in templo Veneris. Tertij liber. Qui in Coa Venere, Recte. Veneris eam partem: de qua Fam. lib. I. ep. Pericundæ, ad Att. lib. 2. ep. 21. lib. 2. de Diuin. in Oratore, lib. I. de nat. de. in Verrem. Duas Veneres Appelles pinxit, dicitur, vnam è mari in terra egradientem de qua Ouidius:

Si numquam venerem Cous pinxit Apelles,  
Merfa sub aquoreis ipsa lateret aquis.

Et alibi:

Vt Venus artificis labor est, & gloria Coi,  
Æquoreo madidas qua premit imbre comas.

Inchoauit aliam, quæ superaseret priorem, nisi inuidisset mors de qua Plin.lib.35.cap.10. & 11. Et non perfecisset, } absunt hæc à quinque meis. Vnus, Et non fecisset. Quæ fecisset, } Perfecisset, vnde decim, & Tertij. ESS & persecutum, } nō. Est, non est in quinque, & Tertij. Vnus, Persecutum est. De eo fortissime dubitari potest. } Disputari, est in nouem, & Tertij. Quod honestum est, } de summo bono controuersia ferè nulla est inter Stoicos, & Peripateticos. PERIPATETICIS vestris } sic emendauit ex uno meo, & Tertij. COLLOCATA, } placet, Collata, quod est in duobus meis, nam, collatione summi boni, rem inutilem propterea nullius momenti dicimus, id est, nullius ponderis, cum commodis illis sine corporis, siue in casu positis. QUIN numquam } Quin unquam, nouem. SOCRATEM } in Hippia maiore pulchri cum utili necessario vinculo comparat. De Leg.lib.1. Recte Socrates exsecurari ei solebat, qui primus utilitatem ab honestate seiuinxisset. id enim quærebatur caput esse exitiorum omnium. SOLITVM exsecurari solitu, decē, & Tertij. Vt enim, } nō, Etiā, non est in septē. Et, pro, Etiā, quinque, & Tertij. CENSERENT, } Consentirent, vnu. Consentirent, & censerent, vnu. Alij, & tertij, Censerent. Vt q, } Epicurci. VEL indolentia, } quod Hieronymi Rhodij dogma, fuisse, scribit Cicero de Fin.lib. II. HONESTATEM aliquando cum utilitate pugnare, } decem & Tertij. Utilitate in aliquando cum honestate pugnare. QUOD id solu, } è Stoicorum opinione. DICESSESIONE } vnu, Dicessione. septem, & Tertij, Decessione. Sic pro Cluentio: An, vt de causa eius periculi nihilidecederet? ad causam nouum crimen accederet? HUIUSMODI debuisse deliberationem intr, } Debuisse eiusmodi delib. intr. septem, & Tertij. Eiusmodi debuisse delib. intr. tres. Debuisse eiusmodi delib. intr. duo. Eiusmodi liberar. intr. vnu. Huiusmodi deliberatione deb. intr. vnu. COMPARETVR, } Compararetur, quatuor, & Tertij. ITA legere, } infra. Legere intelligenter voluptates. Contraria est, Negligere. RECTE non esse introd, } Non recte introd. octo, & Tertij. Non recte

recte esse introd. duo. Non esse recte introd. vnu. Non recta introd. vnu. IN quibus sapietia perfecta non est, } In quibus non est perfecta sapietia, duo. In quibus perfecta sapietia non est, vnu. I P S V M illud quidem perfectum honestum nullo modo esse potest, similitudines honeste possunt, } Sic tres mei. Duo, L.i.q.p.h.n.m. similit, honesti esse possunt. Vnus, L.i.q.p.h.n.m.s.h. possunt esse. Vnus, ord. præp. Esse possunt. Vnus, L.i.q.p.h.n.m.b. similit, h. esse potest. Vnus, L.i.q.p.h.n.m. similit. vñ honesti cas possest. Vnus, L.i.q.p.h.o.m. sed simil. honesti esse possunt. Vnus, L.i.q.p.h.n.m.b. simil. honesti possunt. Vnus, L.i.q.p.h.n.m.p.t. simil. h.e. possunt. Vnus, & Tertij, L.i.p.q.honestum. Nullo modo simil. h. esse possunt.

### C I C E R O .

**H**AEC igitur omnia officia, de quibus his libris diffutamus, media Stoici appellant: & ea communia sunt, & late patent: quæ & ingenij bonitate multi affequuntur, & progresione descendit. Illud autem, quod rectum idem appellant, prefectum, atque absolutum est, & ut idem dicunt, omnes numeros habet, nec præter sapientiam, cadere in quemquam potest. Cum autem aliquid actum est, in quo media officia comparantur, id cumulatè videtur esse perfectum: propterea quod vulgus, quid absit à perfecto, ferè non ex toto intelligit: quatenus autem intelligit, nihil putat prætermissum: quod autem in poematibus, & in picturis usu venit, in aliisq. compluribus, ut delectentur imperiti, laudentq. ea, que laudanda non sint: ob eam, credo, causam, quod insit in his aliquid probi, quod capiat, ignaros, qui quidem, quid in unaquaque re vitij sit, nequeant indicare. itaque, cum sint docti à peritis, desistunt facile à sententia. hoc igitur officia, de quibus his libris differimus, quasi secunda quedam honesta dicunt esse, non sapientum modo propria, sed cum

*omni hominum genere communia: itaque his omnes, in quibus est virtutis indoles, commoventur. Nec verò, cùm duo Decij, aut duo Scipiones, fortes viri, commemorantur, aut cùm Fabricius, aut Aristides iustus nominatur, aut ab illis fortitudinis, aut ab his iustitiae, tamquam à sapiente, petitur exemplum. nemo enim horum sic sapiens, ut sapientem intelligi hic volumus: nec q. qui sapientes habitisunt, & nominati, M. Cato, & C. Lalius. sapientes fuerunt: nec illi quidem septem: sed ex mediorum officiorum frequentia similitudinem quandam gerebant, sivecinq[ue] sapientum. Quocirca, nec id, quod verè honestum est, fas est cum utilis repugnantia comparari. nec id, quod cōmuniter appellamus honestū, quodq[ue] colitur ab ijs, qui bonos se viros haberi volunt, cum emolumenis vñquam est comparandum. tamq[ue] id honestum, quod in nostram intelligentiam cadit, tuendum, conseruandumq[ue] est nobis, quā id, quod propriè disiit, verèq[ue] est honestum, sapientibus. aliter enim teneri non potest, si qua ad virtutem est facta progresio.*

### EXPLANATIO.

**H**Æc igitur omnia officia, } octo, & tertij. Hęc enim officia. Et ea communia sunt, } Et, nō est in quatuordecim, & tertij. Late patent: } cadunt in multos. Illud autem officium, quod. OMNES numeros habet, } Vide Adagia, Circulum absoluere. CVM autem aliquid actum est, in quo media officia compareant, id cumulate videtur esse perfectum: } Perfectum, inquit, officium differt à medio: sed accedit sāpe, vt, quod perfectum non est, perfectum tamen, in scientia vulgi, esse videatur. vbi enim apparet media officia, id vulgus, quia supra non intelligit, perfectum esse putat. Cōparantur, duodecim. Comparat, duo, & tertij. FERE non est ex toto } Nō ferē, sex, & tertij. Duo

verba.

verba, Ex toto, absunt à tribus, & tertij: & sanè Ciceronis non videntur esse. Q u o d item in poematis, } ante, Quod autem in poematis, Locū recte mutasse videor auctore Nonio. nam, si, Quod autem, legatur, diuersum quiddam à superioribus inferri videbitur: si, Quod itē, simile. Sed in Nonio, Idem, pro Item, legitur. & videtur rectius. Notatur autē hæc similitudo.. Ita fallitur vulgus, cùm in poematis, picturis que laudat ea, quæ laudāda non sunt, quod insit in his aliquid probi: ita fallitur, cùm officium, quod perfectum non est, ideo puret esse perfectum, quia in eo, de quo iudicat, officium inesse mediū videt: quod ob inopīa iudicij putat esse perfectū, cùm à perfecto medium longe differat: quia mediū illud est, cuius probabilis aliqua ratio reddi possit, caditq[ue] in multos: perfectū autem omnes numeros habet, nec, prater sapientem, cadere in quinque potest. Ad illa igitur verba, In quo media officia cōpareant: qua specie vulgus in errorem inducitur, & mediū officium accipit pro perfecto: respondet hæc inferiora, de poematis, & picturis illata, Quod insit in his aliquid probi. vt duorum vulgi errorum due causas ponantur, vna, quæ ad officium, altera, quæ ad poemata, picturasq[ue] pertineat. Poematis: sic in Nonio: & in duobus meis, & tertij. E t in picturis } inde, Ne futor ultra crepidam. Vide Aristotelem in poëtica. Et in picturis: } Et, non est in tribus, & tertij. In, non est in sex. Inq[ue] picturis, duo. N o n sint: } Sunt, septem mei. Q u i quidem, } Qui idem, quatuor, & tertij. Qui idem, duo. Q u a m secunda } quia non idem est officium, & honestum, sed ex honesto nascitur officium. Metaphora à Secundario pane, & Secundario vino. I t a Q u e his omnes, } sic emendaui, aduersantibus omnibus veteribus libris, postulante sententia. C O M M O V E N T V R. } afficiuntur, ad bene agendum adducuntur. F O R T I T V D I N I S, } quia pro rep. mortem libenter oppotuerunt. V t sapientem intelligi hic volumus: } Vt sapientem volumus intelligi, tridecim, & tertij. N e c illi quidem septem: } Pittacus Mityleneus, Periander Corinthius, Thales Milesius, Solon Atheniensis, Chilon Lacedæmonius, Cleobulus Lindius, Bias Prienæus. Quorum sententiae memorantur.

Optimus est, Cleobulus ait, modus, incola Lindi.  
Ex Ephyra Periandre doces, cuncta & meditanda.  
Tempus nosce, inquit Mitylenis Pittacus ortus,

Plures esse malos, Bis autumat ille Prienarus,  
Milesiūq; Thales, sponsori damnă minatur.  
Nosce, inquit, tete, Chilon Lacedæmonē cretus.  
Cecropiūsq; Soloa, ne quid nimis, induperabit.

Vide Hyginium, in Fabulis, cap. 221. & Laertium. *N* & illi quidem septem: Ne, duo, & Tertij. *V* *TILIS* } sic vnde cim mei, &  
Tertij. *V* *Tili*, duo. *V* *Tilitatis*, vñus. *C* *O* *M* *P* *A* *R* *A* { } sic octo  
mei, & Tertij. Comparare, sex. *Q* *v* *o* *d* in nostram intelligentiam  
cadit, ex quo mediū oritur officium. *E* *s* *t* *n* *o* *b* *l* *s*, } *o* *r* *d*, *p* *r* *a* *p*.  
nouem mei, & Tertij. *A* *L* *I* *T* *R* enim teneri non potest, si qua ad  
virtutem est facta progesio: } Si quæ, vñus, & Tertij. Fuit, cum le-  
gendum opinaretur: Aliter enim teneri non potest, quam si ad  
virtutem est facta progesio.

## C I C E R O.

**S**ed hoc quidem de ijs, qui cōseruatione officiorum  
existimantur boni. Qui autem omnia metiuntur  
emolumen̄is, & commodis, neque ea volunt prepon-  
derari honestate, si solent in deliberando honestū cum  
eo, quod utile putant, comparare: boni viri non solent.  
Itaque exīstimo Panatium, cum dixerit, homines solere  
in hac comparatione dubitare, hoc ipsum sensisse, quod  
dixerit, solere modo, non etiam oportere. etenim non  
modo pluris putare, quod utile videatur, quam quod  
honestum, sed hac etiam inter se comparare, & in his  
dubitare, turpisimum est. Quid est ergo, quod non  
numquam addubitationem afferre soleat, consideran-  
dūmq; videatur? credo, si quando dubitatio accidit,  
quale sit id, de quo consideretur. s̄epe enim tempore sit,  
vt, quod plerumque turpe haberi soleat, inueniatur  
non esse turpe. exempli cauſa, ponatur aliquid, quo  
pateat latius. Quod potest esse maius scelus, quam  
non modo hominem, sed etiam familiarem occidere?  
num igitur se adstrinxit scelere si quis tyrannum

occidit,

occidit, quamvis familiarem? populo quidem Romano  
non videtur: qui ex omnibus praeclaris factis illud pul-  
cherrimum existimat. vicit igitur utilitas honesta-  
tem immo vero honestas utilitatem secuta est. itaque,  
ut sine ullo errore dijudicare possumus, si quando  
cum illo, quod honestum intelligitur, pugnare id vide-  
bitur, quod appellamus utile: formula quedam consti-  
tuenda est: quam si sequemur in comparatione rerum,  
ab officio numquam recedemus. erit autem hac for-  
mula Stoicorum rationi, disciplineq; maximè con-  
sentanea, quam quidem in his libris propterea sequi-  
mur, quod, quamquam à veteribus Academicis, &  
Peripateticis vestris, qui quondam idem erant, qui A-  
cademici, quæ honesta sunt, anteponuntur ijs, quæ vi-  
dentur utilia: tamen splendidius hec ab iis differunt,  
quibus quidquid honestum est, idem utile videtur,  
nec utile quidquam, quod non honestum: quam ab  
ijs, quibus est honestum aliquod non utile, aut utile  
non honestum. nobis autem nostra Academia ma-  
gnam licentiam dat, vt, quodcumque maximè proba-  
bile occurrat, id nostro iure liceat defendere. sed redeo  
ad formulam. Detrahere igitur aliiquid alteri, & homi-  
nem hominis incommodo suum angere commodum,  
magis est contra naturam, quam mors, quam pauper-  
tas, quam dolor, quam cetera, quæ possunt aut corpori  
accidere, aut rebus externis. nam principio tollit conui-  
etum humanum, & societatem. si enim sic erimus affe-  
cti, vt propter suum quisque emolumentum spoliet, aut  
violate alterum, disrupti necesse est eam, qua maximè  
est secundū naturam, humani generis societatem. vt, si  
vnumquodque membrū sensum hunc haberet, vt posse  
putaret se valere, si proximi membra valetudinem

ad se traduxisset, debilitari, & interire totum corpus  
necessē esset: sic si vnuſquisque nostrum rapiat ad se  
commoda aliorum, detrahātque quod cuique posuit, e-  
molumenti ſui gratia: societas hominum, & communis  
eueretur, neceſſe eſt. nā ſibi ut quifq. malit, quod  
ad uſum vita pertineat, quam alteri, acquirere, con-  
ceſſum eſt non repugnante natura. illud quidem natu-  
ra non patitur, ut aliorum ſpoliis noſtris facultates,  
copiae, opes angeamus. neque vero hoc ſolum natura,  
ideſt iure gentium, ſed & legibus populorum, quibus in  
ſingulis ciuitatibus resp. continentur, eodem modo con-  
ſtitutum eſt, ut non licaret ſui commodi cauſa, nocere  
alteri. hoc enim ſpectant leges, hoc volunt, in columem  
eſſe ciuium coniunctionem: quam qui dirimunt, eos  
morte, exſilio, vinculis, danno coercent. atq. hoc mul-  
to magis exigit ipſa natura ratio, qua eſt lex diuina,  
& humana: cui parere qui velit, (omnes autem pare-  
bunt, qui ſecundum naturam volunt viuere) numquā  
committet, ut alienum appetat, & id, quod alteri de-  
traxerit, ſibi affuumat. etenim multo magis eſt ſecundum  
natūrā celsitas animi, & magnitudo, itēmq. comitas,  
iustitia, liberalitas, quam voluptas, quam vita, quam  
dinitia. qua eſt quidem contemnere, & pro nihil duſere,  
comparantem cum utilitate communi, magni animi,  
& exceliſi eſt. Detrahere autem alteri, ſui commodi  
cauſa, magis eſt contra naturam, quam mors, quam  
dolor, quam cetera generis eiusde: itēmq. magis eſt ſe-  
cundum naturam, pro omnibus gentibus, ſi fieri poſit,  
conſeruādis, aut iuuādis, maximos labores, moleſtias  
que ſuſcipere: imitātes Herculem illum, quem hominum  
fama, beneficiorum memor, in concilio caeleſtium collo-  
cauit: quam viuere in ſolitudine, non modō ſine ullis  
moleſ-

moleſtias, ſed etiā in maximis voluptatibus, abundan-  
tem omnibus copiis, ut excellas etiam pulchritudine,  
& viribus, quo circa optimo quaque, ſplendidissimoq.  
ingenio longe illam vitam huic anteponit. ex quo effi-  
citur, hominem, natura obdientem, homini nocere  
non poſſe. Deinde, qui alterum violat, ut ipſe aliquid  
commodi conſequatur: aut nihil ſe existimat contra na-  
turam facere: aut magis fugiendū cefet mortem, pau-  
pertatem, dolorem, amifionem etiam liberorum, pro-  
pinorum, amicorum, quam facere cuiquā iniuriam.  
Si nihil existimat contra naturā fieri hominibus vio-  
landis: quid cum eo differas, qui omnino hominem ex  
homine tollat? ſi fugiendum id quidem cefet, ſed mu-  
ltō illa peiora, mortem, paupertatem, dolorem: errat in  
eo, quod ullum aut corporis, aut fortunae vitiū, animi  
vitiis grauius existimat.

## EXPLANA TIO.

**I**N his dubitare, } Addubitare, vndeſic, & Tertij, ADDU BI-  
TATIONEM } Dubitationem, ſeptem, & Tertij. **Q**UALE  
ſi id, } honeſtum, an turpe: vtile, an pernicioſum: cohæreat  
ne cum honeſtate, an ab ea ſeſtegetur, honeſtas. **P**LERVM-  
QUE turpe } ord. prap. ſeptem, & Tertij. **Q**UOD potefc. }  
Valerius Publicola legem tulit, ut tyrannum indicta cauſa  
occidere licet. Et Iſocrates in orat. pro Pace, ſcribit Lace-  
demonios tyrannicidis præmia decreuiffe. **E**SSE maius ſcel-  
lus, } Maius eſſe ſcelus, ſex mei. Duo, & Tertij non ha-  
bent rō Eſſe. **S**ED etiam familiarem occidere? } omnes libri  
veteres, Sed etiam familiarem hominem occidere? Venusta  
repetitione. **A**D STRINXIT ſcelere, } ſic octo mei, & Tertijs. Vnus, Abſtrinxit, mendosē. Quinque, Obſtrinxit. Vtrum-  
que Ciceroni iſtratum. **V**ICIT igitur vilitas honeſtatem: } i.e  
præterito loquitur, quia iam Cæſar is necem latenter signi-  
cauit. Ergo, pro Igitur, eſt in ſeptem, & Tertij. **H**ONESTAS  
vilitatem ſecuta eſt. } ſic decem, & Tertij. **T**res, Conſecuta  
y

est. Vnus, Honestatē vtilitas consecuta est. QYAM si sequemur }  
Ouidius: Metam. vii.

--aliudq. cupido,  
Mens aliud suadet video meliora, proboque,  
Deteriora sequor.  
Quod sūmpit ex Euripide, Medea:  
Tā χρίστη πειθαρέθε, καὶ γνώσκειν τὸ πονεῖν μέν δέ.

**A**B officione quam recedemus. } omnia recte faciemus, omnē  
iustum reprehensionem cauebimus. QYAM QYAM à veteri-  
bus Acad. } Quamquam & à veteribus Acad. sex. & Tertij. Et  
Peripateticis } Et à Peripat. scx. & Tertij. NOSTRIS, } Vestris,  
tres. & Tertij. QVI quodam iđem erant, qui Academicis, } Ver-  
ba illa. Qui Academicis, antē decem annos delenda opinatus  
sum, video nunc meam opinionem confirmari vno meo ve-  
tere libro. Fuluius quoque Vrbinus testatur se ea non reperisse  
in vno suo. QVIBVS est honestum aliquid non vtile, } Quibus  
& honestum aliquid non vtile, tredecim, & Tertij. in vno hac  
omnia, frequentiāq. desunt, scriptoris vitio. NOSTRA Aca-  
demia } cui Cicero suam eloquentiam acceptam fert. MA-  
XIME probabili } sequitur enim verisimilia, verum esse nihil  
affirmat. ALIQVID alteri, } ord. præp. quinque & Tertij. tē,  
Alteri non est in vno. HOMINEM homini's incommodo suum  
angere commodum, } Terentius, Andr. Et. 4. sc. I.

Hoccine credibile est, aut ihemorabile,  
Tanta vēcordia innata cuiquam vt sier,  
Vt malis gaudeant, atque ex incommodis  
Alterius sua vt comparent commoda.

RAPIAT ad se commoda } Ad se rapiat commoda, decem,  
& Tertij. Vnus non habet, Ad sc. SIBI vt quisque malit, } Ut  
sibi quisque malit, sex. SED & legibus } Etia, pro Et, est in no-  
uem, & Tertij. RESP, continentur, } Resp. continetur, duode-  
cim, & Tertij. VT non licet, } VT non licet, tredecim, &  
Tertij. Eos morte, exilio, vinculis, damno coercent, } supplicij ge-  
nera quattuor. ATQVE hoc multo magis exigit ipsa nature ratio, }  
Exigit, pro, Postulat, dictum est. & vis etiam maior est in,  
Exigit, quam in, Postulat: cum exigantur nostra postulentur  
etiam aliena. Natura autem in eo quasi suum exigit, cum ho-  
mines congregari, consociariq. vult, cui non obcedire nefas  
est. Hæc sententia, atque hæc lectio mihi magis placet, quam,  
Efficit naturæ ratio, quod habent plerique veteres libri. non  
enim

enim hic natura efficit, sed exit, & efficit in iis, qui parent: non  
parere autem omnes, satis confit. Propterea sequitur, Cui qui  
parebunt. Meam opinionem sententia confirmat, & vnus ex  
meis libris veteribus. Vnus, Eligit, mendosè. **L**EX diuina, &  
humana: } Diuina, diuinitus in ita mentibus hominum: Hu-  
mana, consensu generis humani comprobata. Chrysippus Le-  
gem definiuit πάντων βασικά βεταντά, καὶ αὐθεγρεπτῶν περιγραφῶν.  
**V**OLVNT viuere } volent, quattuor, & Tertij. **C**ELSIDAS  
animi, & magnitudo, } Excelitas, omnes libri veteres. **D**E-  
TRAHERE autem alteri } sic quattuor, nouem, & Tertij, Detra-  
rehare autem de altero. Ergo, pro, Autem, vnuus. AVT inuan-  
dis } Ac, vndecim. IMITANTES } Imitantem, septem &  
tertii. **H**ERCULEM } dictus Ηρακλῆς, quasi ἀνδρῶν κέας, Ful-  
gentio: vel, quasi ἡρακλῆς, aliis. Macrobius, quasi ἡρακλῆς.  
De ejus laborib. Ouid. Metam. ix. Diodorus Siculus lib. 5.  
Hyginus cap. 30. SPLENDIDISSIMOQ. ingenio } duodecim,  
& tertii, Et splendidissimo ingenio. DE INDE, &c. } argu-  
mentum contra eos, qui alieno incōmodo suum augēt com-  
modum. CONTRA naturam facere } sic Tertii liber. alii o-  
mores, Facere contra naturam. MAGIS fugiendum censem } de-  
cem, & Tertii, Magis fugienda censem, duo, Magis fugiendum  
esse censem, duo, Magis esse fugiendum censem. HOMINEM  
ex homine tollat? } neget, quod hominis proprium est: intelli-  
gere scilicet, quid natura humana postulet. SED multò illa pe-  
iora, } Et multò illa peiora, tres, & Tertii.

## C I C E R O.

**E**RGO vnum debet esse omnibus propositum, vt ea-  
dem sit utilitas vniuersiisque, & vniuersorum:  
quam si ad se quisque rapiat, dissoluetur omnis humana  
consortio. atque si etiā hoc natura præscribit, vt homo  
homini, quicunque sit, ob eam ipsam causam tamen,  
quod is homo sit, consultum velit: necesse est, secundum  
eandem naturam, omnium utilitatē esse communem.  
quod si ita est, una cōtinemur omnes, & eadē lege na-  
tura. idq. ipsum si ita est, certè, violare alterum, lege

natura prohibemur. verum autē primum: verum igitur & extreūm. Nam illud quidem absurdum est, quod quidam dicunt, parenti se, aut fratri nihil detraeturos, commodi sui caussa: aliam rationē esse ciuum reliquorum, hi sibi nihil iuris & nullam societatem communis utilitatis caussa statuunt esse cum ciubus: qua sententia omnem societatem distrahit cinitatis. Qui autem ciuum rationem dicunt esse habendam, externorum negant: hi dirimunt communem humani generis societatem: qua sublata, beneficentia, liberalitas, bonitas, iustitia funditus tollitur. qua qui tollunt, etiam aduersus deos immortales impij iudicandi sunt. ab ipsis enim constitutam inter homines societatem evertunt: eius societatis artissimum vinculum est, magis arbitrari esse contra naturam, hominem homini detrahere, sui commodi caussa, quam omnia incōmoda subire, vel externa, vel corporis, vel etiam ipsius animi, qua vident iustitia. hac enim virtus omnium est domina, & regina virtutum. Foritan quispiam dixerit: nōne igitur sapiēs, si fame ipse conficiatur, abstulerit cibum alteri, homini ad nullam rem vili? Minime verò. non enim mihi est vita mea vtilior, quam animalis affectio, neminem ut violēt commodi mei gratia. Quid si Phalarim, crudelē tyrannum, & immanem, vir bonus, ne ipse frigore conficiatur, vestitu spoliare posset, nōne faciat? Hec ad iudicandum sunt facillima. nam, si quid ab homine, ad nullam partem vili, vtilitatis tuae caussa detraxeris, inhumanè feceris, contrāq. natura legem. sin autem is tu sis, qui multam vtilitatem rep. atque hominum societati, si in vita remaneas, afferre possis: si quid ob eam caussam alteri detraxeris, non sit reprehendendum. sin autem id non

non sit eiusmodi, suum cuīque incōmodum ferendum est potius, quam de alterius commodis subtrahendum. Non igitur magis est contra naturam morbus, aut egētas, aut quid eiusmodi, quam detractio, atque appetitio alieni. sed communis utilitatis derelictio contra naturam est: est enim iniusta: itaque lex ipsa natura, qua vtilitatem hominum conservat, & cōtinet, decerit profecto, ut ab homine incerti, atque inutili, ad sapientem, bonum, fortēmq. virum transferantur res, ad viuendum necessaria: qui si occiderit, multum de communi vtilitate detraxerit: modo hoc ita faciat, ut ne, ipse de se bene existimans, sēq. diligens, hanc caussam habeat ad iniuriam. itaque semper officio fungatur, vtilitati consulens hominum, & ei, quam sāpe commemo-ro, humanae societati. Nam, quod ad Phalarem attinet, per facile iudicium est. nulla est enim societas nobis cum tyrannis, sed potius summa distractio: neq. est contra naturam, spoliare eum, si possis, quem honestum est necare. atq. hoc omne genus pestiferū, atque impiū ex hominum cōmunitate exterminandum est. etenim, ut membra quedam amputantur, si & ipsa sanguine, & tanquā spiritu carere cōperunt, & nocent reliquis partibus corporis: sic ista in figura hominis feritas, & immanitas bellue à cōmuni tanquā humanitate corporis segreganda est. huius generis questiones sunt omnes ea, in quibus ex tempore officium exquiritur.

## EXPLANATIO.

**D**ISSOLVETVR omnis &c. } sic omnes libri veteres.  
**C**ONSORTIO. } antea, Consociatio. malē. Sic enim  
omnes libri veteres, & Nonius, qui hæc recitat in verbo, Conso-  
torio: Dissolvetur necesse est omnis humana cōsortio. Cita-

autē & Lucilium lib.19. Deferat enim scriptissime, & post non scripturum, redi in confortionem. Et T. Liniūm: Quāna ista suauitas? quānam confortio est? **T A M E N**, quod uero sit. Tamen, non est in vndeclim mei, & Tertiī. **L E G E** nature prohibemur. } ord. præp. Nature lege prohibemur, vndeclim, & Tertiī. Iure prohib. vnuis. Lege prohib. duo. **V E R V M** igitur & extreūm. } nō. Et, non est in omnibus libris veteribus. **A V T** fratri } Ouidius.

Fratrum quoque gratia rara est:

**D E T R A C T V R O S** commodi sui caussa. } Sui commodi, vndeclim, & Tertiī. **Q V A E** vacant iustitia. } sic decem mei, & Tertiī. Duo, Quæ vacant iustitia. Vnus, Quæ nō vacant iustitia. Vbaldius, Quæ vacant iniustitia. **E S T** vita mea vtilior, } sic omnes, & Tertiī, uno excepto, in quo nō. Mea, non est. **N A M**, si quid ab homine ad nullam partem vtili vili: aīus tuæ caussa detraheris. } sic septem, & Tertiī. nō Vtli, non est tribu. Quatuor, Nam si quid ab homine vtili ad nullam partem vtilitatis causa detraheris. Placet, quod imprecsum est. Cōparat enim vtilitatem propriam cum publica, propriam vi, & iniuria querendam non esse docet: publicam, vel si cum alterius domino coniungatur non esse reprehendenda. Vtilitatis, inquit, tuæ caussa, si quid ab homine, quamquam ad nullam partem vtili, detraheris, inhumanè feceris, contrāq. naturę legem: si autem non tuæ, sed publicæ vtilitatis caussa, aliquid alicui detraheris, id vero non esse reprehendendum. Hunc sensum qui non viderūt, locum tenere immutarunt: nulla, cur mutarent, in suis Annotationibus ratione allata. **Q V I** multam vtilitatem reip. } communis vtilitas priuatae anteponenda. **S I N** autem id non sit eiusmodi: } id est: si tu reip. multum commodare non posis: si sis homo plebeius, & vnuis de multis. sic decem mei, & Tertiī. nō. Autem, non est in uno. Sin autē, non sit eiusmodi, duo. **S Y V M** cuicunque incommode. } Terentius:

Non tu tuum malum æquo animo feres?

**S V B T R A H E N D V M** } Detrahendum, tredecim, & Tertiī. **F O R T E M Q. v i r u m** } Que, coniunctio, non est in septem, & Tertiī. **H A N C** caussam habeat ad iniuriam. } quæ leuissima est: grauior autem ratio societatis humanæ. Ita q. v. semper off. } Ita, vnuis, & Tertiī. **F U N G A T V R**, } sic vnuis, vnuis, Fungitur. duodecim, & Tertiī, Fungetur. **D I S T R A C T I O**: } sic vndeclim mei. Tertiī liber, **D I S T I N C T I O**, } littera superius notata.

notata. Vnus, Distinctio. Duo, Detractio. Neq. est contra naturam, } à maiore ad minus. **Q V E M** honestum est necare. } Est honestum, octo, & tertii. **V T** membra quedam amputantur, } Ouidius. Metam.

-Sed immedicable vulnus

Ense recidendum, ne pars sincera trahatur.

**A** communī tanquam humanitatē corporis segreganda est. } sic omnes libri veteres. Muretus, **A** communī tanquam humanitatis corpore segreg. est.

## C I C E R O.

**E**Iusmodi igitur credo res Panatium persecutiorum fuisse, nisi aliquis casus, aut occupatio consilium eius peremisset. ad quas ipsas consultationes ex superioribus libris satis multa precepta sunt, quibus perfici posit, quid sit propter turpitudinem fugiendum: quid sit id, quod circa fugiendum non sit, quia omnino turpe non est. Sed, quoniam operi inchoato, propè tamen absoluto, tamquam fastigium imponimus: ut geometra solent non omnia docere, sed postulare, ut quadam sibi concedantur, quod facilius, quæ velint, explicant: sic ego à te postulo, mi Cicero, ut mihi concedas, si potes, nihil præter id, quod honestum sit, esse propter Cratippum: at illud certè dabis, quod honestum sit, id esse maximè propter se expetendū. mihi utrumquis satis est: Et cum hoc, tu illud probabilius videtur, nec præterea quidquam probabile. Ac primùm Panatius in hoc loco defendendus est, quod non, vtilia cum honestis pugnare, dixerit aliquando posse, (neque enim ei fas erat) sed ea, quæ viderentur vtilia, nihil vero vtile, quod non idem honestum: nec honestum, quod non idem vtile sit, sape testatur: negatque, ullam personam maiorem in vitam hominum inuasisse, quam-

eorum opinionem, qui ista disfraxerint. itaque, non, ut aliquando anteponeremus utilia honestis sed ut ea sine errore dijudicaremus, si quando incidissent, induxit eam, que videretur esse, non qua esset, repugnantiam. Hanc igitur partem relictam explebimus, nullis adminiculis, sed, ut dicitur, Marte nostro. neque enim quidquam de hac parte post Panarium explicatum est, quod mihi probaretur, de ijs, que in manus meas venerunt. Cum igitur aliqua species utilitatis obiecta est, nos commoueri necesse est, sed si, cum animum attenderis, turpitudinem videoas adiunctam ei rei, que speciem utilitatis attulerit: tunc utilitas non requirienda est: sed intelligendum, ubi turpitudo sit, ibi utilitate non posse. quod si nihil est tam contra naturam, quam turpitudo. (recta enim, & conuenientia, & constantia natura desiderat, aspernaturq. contraria) nihilq. tam secundum naturam, quam utilitas: certè in eadem re utili turpitudo esse non potest. itemque si ad honestatem nati sumus: eaque aut sola experienda est. (ut Zenoni est visum:) aut certè omni pondere gravior est habenda, quam reliqua omnia: quod Aristoteli placet: necesse est, quod honestum sit, id esse aut solum, aut summum bonum: quod autem bonum, id certè utile: itaque, quidquid honestum, id utile. quare error hominum non proborum cum aliiquid, quod utile visum est, arripuit, id continuo secernit ab honesto. hinc sice, hinc venena, hinc falsa testimenta nascuntur, hinc farta, hinc peculatus, expilationes, direptionesq. sociorum, & ciuium: hinc opum nimiarum potentia non ferende: postremò etiam in liberis ciuitatibus existunt regnandi cupiditates: quibus nihil nec tatrini, nec fædius excogitari potest.

emolu-

emolumenta enim rerum fallacibus iudicijs vident: pœnam, non dico legum, quas sape perrumpunt, sed ipsius turpitudinis, que acerbissima est, non vident. Quamobrem hoc quidem deliberantium genus pellatur è medio: (est enim totum sceleratum, & impium) qui deliberant, utrum id sequantur, quod honestum esse videant, an se scientes scelere contaminent. in ipsa enim dubitatione facinus inept, etiam si ad id non pervenerint. ergo ea deliberanda omnino non sunt, in quibus est turpis ipsa deliberatio.

## EXPLANATIO.

**A**L IQVIS casus, } tertij liber, Aliqui. Vnus, Alius. re-  
aliqi, Aliquis. CONSILIVM ciui, } nouem, & tertij  
ord. præp. PEREMISSET, } idest, sustulisset. sic omnes libri  
veteres. Pro Plancio, Reditum perimere. Pro Sextio, Niſe  
mors peremisset. QVIA omnino turpe } Quod, pro Quia, est  
in sex, & Tertii. Non est, } Non sit, decem, & Tertij. PRO-  
PE tamen absolute, } Fulvius Vrbinus pro Tamen, reponit Iam,  
ex antiquo libro. cum quo facit, licet mendosè, vnuſ ex meis,  
in quo est. Proprietà iam absolute. POST VLA RE, } unde Po-  
stulata Geometrarū: Caſiodoro, Petitiones: Euclidi, Arinigra:  
Martiano Capellæ, Concedenda. Geometræ, inquit Cicero  
in Lucullo, profitentur non persuadere, sed agere: & omnia,  
que describunt, probant. Quid o facilius que relint, explicant: }  
quid facilis auditor rudis, subtilium rationum nondum ca-  
pax, instituatur, doctrinam intelligat. Si potes, } quod ve-  
reor, ne non possis: quia repugnat Peripatetica doctrine, cui  
tu operam das. NIHIL preterid, quod honestum sit, esse propter se  
expetendum. } sic decem mei. Quattuor, & Tertij, N.p.i, q.h.s,  
propter se esse experendum. Fulvius Vrbinus ex antiquo li-  
bro, Quod honestum sit, id esse maximè propter se experendum.  
CRATIPVM: } qui ex Peripateticorum sententia  
non putat, ut Stoici, solum honestum propter se experendum,  
sed maximè propter se, non tamen solum. MIHI utrumq.  
satis est: } & Peripatetica ratione, & Stoica semper honestas

vtilitati praeferenda. Hoc,} honestum Peripateticorum.  
**I**LLUD } honestum Stoicorum.ad probandum id, quod probare conabitur, nihil vtile, quod non honestum. T V M  
*hoc, tum illud }* Academicam inconstantiam arguit, de qua possit dici illud Homeris:

Tοῦθεὶν δέ τοισι οὐδὲν ἀληθέρον πέποται,  
 Οὐδὲ εἰς ἡμέραν αἴσθησιν τε, θεάσιν τε. Id est:  
 Tales sunt hominum mentes, quali pater ipse  
 Iuppiter auctiferas lustrauit lampade terras.

**P**ANAE<sup>T</sup>IVS in hoc loco defendendus est, } In hoc Panetius defendendus est, octo, & tertij. DIXERIT aliquando posse, } quinque, & tertij, Aliquando posse dixerit. (NEQUE enim ei fas erat) } nam in honesto sita esse bona omnia Stoici dicebant. Nec honestum, quod } Nihil, pro Nec, septem, & Tertij. IN vitam hominum } sic septem, & tertij. Quinque, In vita. Duo, Vitam, absque τοισι. Eorum opinionem qui vita diatribarint. } qui putarint honestatem ab utilitate segregatam esse, aut contra. QVOD mihi probaretur, } Quod quidem mihi probaretur, septem, & tertij. Nos commoueri } Nos, abest ab undecim, & tertij. Nos commoueri necesse est, } non possumus eam rem non expetere, quæ vel vire, vel voluptates corporis auctura sit, vel incrementa opum, & dignitatis allatura. SPECIUM utilitatib; propriæ: quia utilitas esse non potest, ubi turpitudo est. UTILITAS non requirendæ est, } Non utilitas requirenda est, octo, & tertij. (RECTA) cum prudentia, & iustitia consentientia. CONVENTIENTIA, } τὸ ὄπετον. CONSTANTIA } hoc refertur ad animi magnitudinem, siue fortitudinem. NIHILQ, } sic undecim mei, & tertij, sicq. impressum in libris nostris ante me natum. Ut mirer, esse, qui locum se emendasse nuper scribant, & Que coniunctionem addidisse. IN eadem re utile turpitudo esse non potest. } Utiles, pro Utile, est in duobus. AD honestatem } ad animi incolumentem. ZENONI } Cito, Stoicae disciplinae principi. Laetiūtium. OMNIPONDERE grauior } alludit ad Critolai Peripateticlibram. GRAVIOR est habenda, } quinque, & tertij non habent τοι. Est. A VT solum, aut summum bonum: } Solum ut Stoicis, sumnum, ut Aristoteli placet. ITA QVE quid honestum, } Ita, undecim, & tertij. ID utile, } Duo, Id est utile. Vnus, Idem est utile. ARRIPUIT, } sic undecim, & tertij. Arripuerit, vnus. Arripit, vnus. SE-

CERNIT

CERNIT } sic deceim, & tertij. Vnus, Secerit, tres, Secerit. SECERNIT ab honesto, } nihil penitus habet, quantumuis turpe, & flagitiolum sit. HINC furtæ, binc peculatus, } sic duo mei. HINC furtæ, & pec. vnus. HINC furtæ pec. undecim, & tertij. OPVM nimiarum potentie non ferende, } quas recip. pernicioſas esse, scribit Plato in Politice. NEC tertiis nec secundis } Textrum oponitur Claro, Ecclsum Pulchro. LEGVM, quas sepe pererrunt, } vt aranearum telas. Sic lib. I. de Leg. Perrumpere telas dixit. Ad Anacharsidis dictum alludit, de Solonis legibus. IPSIVS turpitudinis, que acerbissima est, } mala scilicet conscientia. HINC alibi: Sua quemque fraus, suum facinus, suum scelus, sua audacia de sanitate, ac mente deturbat. DEMOSTHENES: Η τοισι τελευταις αἰσχύνει τελευταις ξηραστικοῖς γενόφεστοι. QVOD honestum esse videant, } Videatur, duo. Videant, prius in tertij libro sed postea, linea superinducta, factum, Videantur. IN ipsa enim dubitatione facinus inest etiam si ad id non peruenierint. } Libro primo: Bene præcipiunt, qui vetant, quidquam agere, quod dubites, æquum sit an iniquum: equitas enim lucet ipsa per se: dubitationem significat iniurię. Sic Claudio Lacedæmonius, oraculum sciscitans, an periurio depositum abnegaret, Pythia, interitum generis comiminata, veniam petenti, respondit: Τοισι τελευταις τοι δεῦ, καὶ τοῦτο, τοι δεῦται: Cum tentaris Apollinem, perinde est, ac si facinus admisisses. Iuuenalis Sat. xiii.

Has patitur poenas peccandi sola voluntas.

Nam, scelus intra se tacitum qui cogitat vllum, Facti crimen haber.

Etiam si ad id non peruenierint: Ouidius III. Amorum:

Etiam seruaris bene corpus, adultera mens est. Nec custodiri, ni velit, vlla potest.

## C I C E R O.

**A**TQVE etiam in omni deliberatione, celandi, & occultandi spes, opinioq. remouenda est. satis enim nobis (si modo in philosophia aliquid profecimus) persuasum esse debet, si omnes deos, hominesque celare

*possimus, nihil tamen auare, nihil iniuste, nihil libidinosè, nihil incontinenter esset faciendum. hinc ille Gyges inducitur à Platone: qui, cùm terra discessisset magnis quibusdam imbribus, in illum hiatum descendit, aeneumq. equum, ut ferunt fabule, animaduertit, cuius in lateribus fores essent: quibus aperitis, hominis mortui vident corpus, magnitudine innistrata, anulumque aureum in digito: quem et detracxit, ipse induxit: (erat autem regius pastor) tum in concilium pastorum se recepit. ibi cùm palam eius anuli ad palmarum conueterat, à nullo videbatur, cùm in lucem anulum inueterat. itaque, hoc opportunitate anuli usus, regina stuprum intulit: eaque adiutrice, regem dominum interemit, sustulitq. quos obstat arbitrabatur: nec in his quisquam eum facinoribus potuit videre. sic repente anuli beneficio rex ortus est Lydie. Hunc igitur ipsū anulum si habeat sapiens, nihil plus sibi licere putet peccare, quam si non haberet. honesta enim bonis viris, non occulta, queruntur. Atque hoc loco philosophi quidam, minime mali illi quidem, sed non satis acuti, fictam, & commenticiam fabulam dicunt prolatam à Platone, quasi verò ille, aut factum id esse, aut fieri potuisse, defendat. Hec est vis huius anuli, & huius exempli: si nemo sciturus, nemo ne suspicaturus quidem sit, cùm aliquid dinitiarum, potentia, dominationis, libidinis causa feceris, si id dixi, hominibusq. futurum sit semper ignotum, si ne facturus negant id fieri posse, quamquam non potest id quidem: sed quaro, quod negant posse, id si posset, quid nam facerent? urgent rustice sanè: negant enim posse, & in eo perstant: hoc verbum quid valeat, non vident. cùm enim querimus, si possint celare, quid facturi sint: non querimus,*

*possint*

*possint ne celare: sed tamquam tormenta quedam adhibemus, vt, si responderint, se impunitate proposita, facturos, quod expediat, facinorosos se esse fateantur: si negent, omnia turpia per se ipsa fugienda esse, concedant. Sed iam ad propositum reuertamur.*

## EXPLANATIO.

**I** omnes deos, hominēq. celare possimus, } delictis igitur, etiam occultis, abstinendum. Infra: Vir bonus vi non vtatur, ne si exploratum quidem habeat, id omnino neminem umquam suspicaturum. **H**INC ille Gyges inducitur à Platone: } lib. 2. Polit. Herodotus autem lib. 1. multò aliter rem narrat: nec ullam anuli mentionem facit. & Iustinus lib. 1. Vide & Sudam, & Adagia. Imperauit Gyges apud Lydos quintus rex, quo tempore Romę Numas, Apollinem Pythium sciscitatus, an aliquis se esset felior, (Græcis autem dictus παύλος oraculum illi Aglaum quēdam Arcadum pauperissimum prætulit, ex parte iam seniorum, qui agelli sui terminos numquam excederat, parvuli ruris fructibus, ac voluptatibus contentus. Vide Valerium lib. vii. cap. 1. & Plinium lib. vii. cap. 46. Cū M. terra discessisset, } sic undecim, & Tertij. Vnus, Dixisset. Vnus, Discessisset. Vnus Discendisset, male. Alij legunt, Descessisset. Discessisset, autē legit & Nonius, interpretans Hiasset, Diuisa esset, Distensa, citas & Sisenam hist. 4. Armata dextera ducti, magisq. in latitudinem discedunt. Ita quoque videtur legisse & D. Ambrosius lib. iii. cap. 5. **H**OMINIS mortui vident corpus } sic quattuor. Vnus, Corpus mortui hominis vident. Vnus, Corpus hominis vident mortui. Septem, & Tertij, Corpus hominis mortui vident. REGIUS pastor } Herodotus satellitem fuisse scribit, Dascyli filium. **P**ALAM } fundam, vacuum illud in anulo, quo gemma includitur, σφραγίδων. sic enim Plato lib. 2. de rep. τινὶ σφραγίδων ζεῖσθαι. **T**UM in concilium } sic duodecim, & Tertij. Vnus non habet τὸ. Tum. Vnus, Tum in concilio. **I**n lucem } In locum, antiqui libri omnes. **I**n VERTERAT. } sic dcadem, & Tertij. duo, Conuerterat. Vnus, Verterat. **R**EGINAE stuprum intulit: } cuius pudicitiam rex ipse, formam eius ostentando, prostituerat. Regem Candaulem, quem

quem Graci Myrsilum nominarunt. Herodotus. In his quisquam eum facinoribus} sic duo. Quattuor, In his facinoribus eum quisquam. Septem, & Tertij, In his eum facinoribus quisquam. Rex ortus} sic quattuor. Vnus, Rex est ortus. Novem & Tertij, Rex exortus. Hunc igitur ipsam anulum} Ipsum, non est in vno:& in Tertiij libro est additum in ora. Quatuor, Huc igitur anulum ipsum. NIHIL si plus sit} sic undecim,& Tertiij. Duo, Nihil sibi plus. Vnus, Sibi plus nihil. PEC C A R E } quidam delent hoc verbum, quod est in omnibus libris veteribus. FICTA M, & commenticiam fabulan dicunt prolatam à Platone. } Macrobius de Somni. Scip. lib. i. Platonem defendit contra Epicureos, quod fabulus sit vñus. & ibidem docet, quæ fabula philosophis sint concessæ. Si s ne facturus. } Vide Agellium lib. xii. cap. 10. Adagia, Tempus omnia reuelat. QV A M Q V A M non potest id quidem: } Non, abest à cunctis veteribus libris. sed exigitur à sententia. Loquitur enim hic Cicero ex persona sua. & ipse in ea philosophorum secta fuit, quæ deos administrare, & scire omnia sentiebat. quod illius libri per spiculæ testantur. Quare, ne discedamus à mente Ciceronis, omnino inducendus est aliquis negandi modus. Ut significetur, fieri non posse, vt dijs, hominibꝫque occultum semper quidquam sit. Nam, si loqueretur de solis hominibus, auferri negantem particulam pateret. sed deos, hominēsque coniungit. Itaque suspicor scriptum fuisse in emendatis libris, Nequaquam potest id quidem. Ex quo alij postea, errore, ac temeritate, reposuerint. Quamquam: vnde alij, examinata, & cognita sententiâ, addiderint. Non, ex ingenio scilicet: nam, vt dixi, veteribus in libris non exstat. Sunt, qui legant: Neque potest id quidem. Non potest id quidem: nihil enim dijs, & hominibus ignotis semper esse potest. Quid facturi sunt: } sic decem, & Tertij. Quattuor, Qui.

## C I C E R O.

**I**N CIDVN T sape multæ causæ, que conturbant animos utilitatis specie, non, cum hoc deliberetur, reliquenda ne sit honestas propter utilitatis magnitudinem, (nam id quidem improbum est) sed illud, possit ne id, quod utile videatur, fieri non turpiter. Cum

Collatino

Collatino collegæ Brutus imperium abrogabat, poterat videri facere id iniuste: fuerat enim in regibus expellendis socius Bruti, consiliorum etiam adiutor, cum autem consilium hoc principes cepissent, cognitionem Superbi noméng. Tarquiniorum, & memoriā regni esse tollendam: quod erat utile patria consulere, id erat ita honestum, vt etiam ipsi Collatino placere deberet. itaq utilitas valuit propter honestatem: sine qua nec utilitas quidem esse potuisset. At in eo rege, qui urbem condidit, non ita. species enim utilitatis animum pepulit eius: cui cum visum esset utilius, solum, quam cum altero, regnare, fratrem intererit. ornans hic & pietate, & humanitatem, vt id, quod utile videbatur, neg, erat, assequi posset. Et tamè muri causa à opposuit specie honestatis, nec probabile, nec satis idoneam. peccauit igitur, pace vel Quirini, vel Romuli dixerim. Nec tamen nostra nobis utilitates omittende sunt, aliisque tradende, cum his ipsi egeamus: sed sua cuique utilitati, quod sine alterius iniuria fiat, seruendum est. Scite Chrysippus, vt multa: Qui stadium, inquit, currit, eniti, & contendere debet, quam maximum possit, vt vincat: supplantare eum, quicum certet, aut manu depellere, nullo modo debet sic in vita sibi quemque petere, quod pertineat ad usum, non iniquum est: alteri surripere, ins non est. Maxime autem perturbantur officia in amicitiis: quibus & non tribuere, quod recte possit: & tribuere, quod non sit aquum, contra officium est. sed huius generis totius breue, & non difficile praeceptum est. que enim videntur utilia, honores, dimitæ, voluptates, & cetera genera eiusdem hac amicitia nunquam anteponenda sunt.

at neque contra remp. neque contra iusfuranandum, ac fidem, amicisui caussa vir bonus faciet: nec si index quidem erit de ipso amico. ponit enim personam amici, cum induit indicis. tantum dabit amicitiae, ut veram amici caussam esse malit: ut peroranda litis tempus, quoad per leges liceat, accommodet. cum vero iurato dicenda sententia sit, meminerit deum se adhibere testem, idest, ut ego arbitror, mentem suam, qua nihil homini dedit ipse deus diuinus. itaque praelarum à maioribus accepimus morem rogandi indicis, si eum teneremus. Quæ salua fide facere possit, hac rogatio ad ea pertinet, quæ paucio ante dixi honeste amico indice posse concedi. nam, si omnia facienda sint, quæ amici velint: non amicitia tales, sed coniurationes putandæ sunt. loquor autem de communib[us] amicitijs. nam in sapientibus viris, atque perfectis, nihil potest esse tale. Damonem, & Pythiam, Pythagor eos ferunt hoc animo inter se fuisse, ut, cum eorum alteri Dionysius tyrannus diem necis destinasset, & is, qui morti addictus esset, paucos sibi dies, commendadiorum suorum caussa, postulauisset, vas fastus sit alter eius sustendi: ut, si ille non revertisset, moriendum esset sibi ipsi, qui cum ad diem se recepisset, admiratus eoru[m] fidem tyrannus, petiuit, ut se in amicitiam tertium adscriberent. Cum igitur id, quod utile videtur in amicitia, cum eo quod honestum est, comparatur: iaceat utilitatis species, valeat honestas. cum autem in amicitia, quæ honesta non sunt, postulabuntur: religio, & fides anteponantur amicitiae: Sic habebitur is, quem exquirimus delectus officij.

## EXPLA-

## EXPLANATIO.

**N** C D V N T sepe multæ caussæ, } Tres, & Tertii, Incidunt  
multæ sepe caussæ. **C O N T U R B A N T** } Conturbat, sex, &  
Tertij. **C O L L E G A E** } Collega, tres mei. Collegæ in consulatu.  
Liuius, Dionysius lib. v. Plutarc. Florus lib. i. cap. 9. Eutropius  
lib. i. cap. ii. Aug. de Ciuitate Dei lib. 2. cap. 17. hoc Brutus facinus  
contra ius, & bonum factum commemorat. Obsequens obser-  
uatum esse dicit, neminem, qui magistratum collegæ abro-  
gasset, annum vixisse: quorum primus fuit Brutus, deinde  
Tiberius Gracchus, & P. Tarquinius. **I N R E G I B U S expellendis**, } vnum regem expulit Brutus, sed in posterum omnem  
sustulit regnandi cōsuetudinem. **C O N S I L I O R U M etiam adiutor**. } Et, pro Etiam, quinque, & Tertij. Et consiliorum adiutor, duo. Consiliorum & etiam adiutor, unus. **P R I N C I P E S cepissent**, } Princeps cepisset, unus. **I P S I callatino**, } vtpote ciuii patriæ studioso. **N E C vtilitas quidem**, } Ne, se-  
ptem, & Tertij. Sine qua vtilitas quidem esse non potuisset.  
Atque in eo rege &c. unus. **A T in eorege**, } de Romuli fratri-  
cidio Augustinus de Ciuitate Dei lib. iii. cap. 5. Horatius Epo-  
don Ode 7. Ouidius Faſt. iv. **S O L U M**, quam cum altero, } sic  
decem mei, & Tertij. Alias legebatur, Solum se, quam cu[m] al-  
tero. **P I E T A T E M**, } quia fratrem. **H V M A N I T A T E M**, } quia hominem. **M V R I caussam**, } legem enim Romulus tule-  
rat, ne quis mœnia transiret. **S P E C I E M honestatis**, } sic om-  
nes libri mei, & Tertij. **S A T I S idoneam**, } Sane idoneam,  
quatuor, & Tertij. **V E L Quirini, vel Romuli**, } de Quirino,  
vel Romulo. Vide Lactantius lib. i. cap. 15. A Quirino, Qui-  
rites à Romulo, Romani dicti: alterum à deo, alterum ab ho-  
mione nomen. **C V M his ipsi egamus**: } proximus enim sibi  
quisque est, ait Comicus. **S C I T E Chrysippus**, } Scite hoc Chry-  
sippus, duo. **A L T E R I surripere**, } Diripere, octo. Deriperé,  
sex, & Tertij. **P E R T U R B A N T V R officia in amicitijs**: } nam  
propter amicos plurimum delinquitur. **V O L V P T A T E S**, &  
cetera } & Et, non est in duodecim, & Tertij, unus. Volup-  
tates, ceteraque. **A T neque contra remp.**, } Atque, duo. Ac, va-  
nus. vtrunque rectius, quam quod est impressum. **F I D E M**, }  
Fides, ut ait Cicero horum librorum primo, est, cum sit, quod  
dicitur. Pro Rabirio perfidiosum, & nefarium ait frangere  
fidem. Pro Sex. Roscio: Is, qui fidem violat, omne commu-

ne praesidium oppugnat. Vide Paullum patrem ad. I. epistoli Familiarium. **A** M I C I S U I C A U S A } Sui, abest à nouem meis,  
& Tertij. **N** E C S I I N D E X Q U I D E M } Né, duo, & Tertij. Neque,  
quattuor. **N** E C S I I N D E X Q U I D E M E R I T : } amicitiam, & codium à iu-  
dice abesse debere, ait Cæsar apud Sallustium. Vbi vide nostra Scholia. **C** A V S S A M E S C M A L I T : } sic octo mei, & Tertij. Sex,  
Causa malit. **V** T P E R O R A N D E L I T I S } sic nouem mei. Quattuor,  
& Tertij, Oranda: quomodo citat & Nonius, interpretans pro Agere. Vnus, Parande. **L** I T I S : sic omnes mei, & Tertij. **P** E R O R A N-  
**D** E L I T I S T E M P U S , } vide Plutarchum in Ciceronis vita, de eius  
prætura, in Manilijs causa. **I** V R A T O } Iurati iij dicuntur, qui  
in leges, ante quam iudicarent, iurare consueverunt. **A** D H I-  
**B** E R E T E S T E M , } Habere, tres. **I** P S E D E U S } Deus ipse, quattuor,  
& tertij. Deus dedit ipse diuinis, duo. **D** I V I N I V S . } Hinc  
Horatius Mentem diuinæ aurae particulam dicit. De Seneca  
etate ait Cicero Pythagoreos numquam dubitasse, quin ho-  
mines animum haberent ex vniuersa mente diuina delibatum.  
**Q** V A E S U A F I D E F A C E P O S I T . } Posset, quinque. **P** V T A N D A E  
S U N T . } Sint, quinque, & Tertij. **I** N S A P I E N T I B U S V I R I S , atque perfe-  
c t i s n i b i l p o t e s t e f f e t a l e . } Atque, non est in uno. Atque perfe-  
c t i s , absunt à duobus. In sapientibus viris, perfectisque, noui,  
& Tertij. **D** A M O N E M , & **P** Y T H I A M , } par amicorum, quos ce-  
lebrauit antiquitas. lib. i. & 2. de Fin. Tusc. V. Valer. Max. lib. iv.  
cap. 7. Laetantius lib. v. cap. 18. Simile exemplum de Diony-  
sio memorat Hyginius cap. 257. sed ibi Mœrus, & Selinuncius,  
nominibus, fortasse immutatis, par amicorum legitur. Paria  
amicorum apud antiquos, Theseus, & Pirithous: Pylades,  
& Orestes: Scipio, & Laelius: & hi Damon, & Pythias.  
**P** Y T H I A M : Phythiam, vnum. Phithiam, septem. Phitiam duo.  
Pithiam, vnum. Pynthiam, Tertij liber. Alij scribunt esse in  
scriptis libris, Panchiam, Pinthiam, Phintiam: quomodo à  
Plutarcho, & Pausania nominatur. Fulvius Vrbinus Numifl-  
ma æreum ait. esse, sic inscriptum: **F** I N T I O T I B A S I-  
L E Ω Σ. **Φ**ιντω, amicum, Pindarus appellat: quasi **Φ**ιλωπω, siue  
Φιντω. **D** E S T I N A V I S S E T , } Destinasset, septem. **C** O-  
**M** E M D A N D O R V M S U O R U M C A U S A } interpretes hoc loco scri-  
bunt, id est vt suos amicis commendaret. Quod ferri potest.  
Duriusculè tamen dictum mihi videtur. Potiusq. locum cor-  
ruptum opinor: legendumque, Commonendorum suorum  
causa, id est, vt moneret suos, & sui exemplum ipsis propone-  
ret.

ret. quod moribundorū è cōsuetudine esse, quiuis intelligit.

Monet autem hic locus peropportunus, vt veteris testa-  
menti faciendi ritum hic ponam, tum quia ad antiquitatis  
notitiam pertinet, tum etiam quia non apud omnes, quæ  
afferam, reperiuntur: ex quibus me non paruam apud studio-  
sos initurum esse gratiam confido, qui hæc, arque alia eius-  
modi vnde conquisita, studiosissimè conseruauit.

### *L. Cupidij Testamentum.*

**D**E I O P T. M A X. numine inuocato, absque cuius nutu,  
neque quidquam rite inchoari, neque rectè perfici pos-  
test. Hæc est LV CII CVSPIDII dispositio, & ultimæ  
voluntatis sententia, de eo quod post mortem suam fieri.  
cupit, decernitque, si quid ex hoc morbo, quæ nescit, an ferre  
possit, securus, ac medici promittunt, de se contigerit. Testatus  
autem, dum mente valeret, sibi testamentum confidete pla-  
cuisse, vt sine suorum iniuria, ex hac vita proficiscatur, hæc  
legat. Domesticam omnem tūpelle: & tēlē Nonio, qui Apol-  
loniæ Rheticam docet, vel, si quid de eo accidisset, Nonij  
filii, P. & Cn. Cæcilijs. Porro, quæ mihi debet Q. Aemilius,  
Germano Aemilio, liberisq. eius relinquo. Agros, Villasque,  
quascumque Liseij habeo, Domumq. consobrinis, & Lucio  
precipiè, quòd nomen is ferat nostrum, mecumq. diutissi-  
mè, arque gratissimè sit commoratus, prout, decet discipulū,  
qui filij tener locum, tutò hæc, & firmiter possidenda cense-  
mus. Fundum, quem in Tuscolano colui, cui ab Aquiloniæ pu-  
blica via, ab Austro Templum Iouis Statoris, ab Otre Solis  
Sex. Pomp. ab Occasu Suillus Cincinnatus, Attico aunculo-  
do. Dabit autem Hipparchus Pilotimo Historico Talétum,  
& Callino Grammatico Drachmas decem. A reliqua debitio-  
ne liber esto. Nisi Nicæ rationem haberemus, qui nobis a-  
liquandiu fuit perutilis, & nunc suis facultatibus magnam  
fecit iacturam, ob fratri� naufragium, profecto, quæ à nobis  
natuatus est illius Procurator, statim cogeretur reddere.  
Quoniam verò hoc illi difficile fore animaduerti, volo, vt  
singulis annis victimum necessarium Collactaneæ Dorphy-  
lae suppeditet, quæ consenuit in virginitate apud Semproniam  
meam, cuius desiderio morte opto, propter fidem, probi-  
tatem, fortitudinem, incredibilisq. virtutes Vxoris ratiōsimè.

Vbi Vtula hæc deceperit, absolutus erit debito omni, & cunctis, quas contraxerat, stipulationibus. Si quid humanum Lampadio contigerit, priusquam eiusliberi ad ætatem perueniant, curæ sint Antiocho Rhetori: qui accipiat ex opibus nostris, quæcumque illis erunt necessaria, vt liberaliter eduentur, instituanturque. Amo nimis, & valde amo Puerorum indolem, quos ad bonam frugem natos autumo. Tu Antioche, vt dignum est tua erga me, & Lampridium voluntate, à pueris mutuo suscepit, fac, vt eos tueare, ne aut ipsorum ingenia perdatur, aut tui labores disperdantur. Hortum, quem emi ab Herennio & Deambulationem, Aedésq. Nestorianas, quibus à Septentrione vicini sunt Cesariani fratres, Gracchi à Meridie, ab Occidentali plaga Mare, ab Oriente Sole Eridanus est conterminus, amicis lego, literatas literas doctis, Gallo, Fabio, Hirro, Ciubusq. cunctis, qui voluerint ibi vacare litteris, & eloquentiæ: ea tamen lege, vt neque illum commutent, neque alienent, neque, vt proprium, cuiquam sit licetum possidere: Sed velut sacrum, & commune Gymnatum, communiter ab omnibus possideatur. Eas autem, quæ mihi erant in Aegina partes, diuidant Gymnasij Procuratores adolescentibus studiosis in vsum libroru, & olei, Mercedémq. condignam statuant Rhetori, quem delegerint patrieles nostri, & Scholæ principem, maximèq. vtilem futurum existimauerint. Eis verò consentiant & reliqui necessarij vel hominis gratia. Cauebunt autem ipsi, mandabuntq. Successoribus, vt locum hunc ita seruent, tradantq. posteris in perpetuum. C. Ateius, & Sex. Capito curam habeant Sepulturæ, & funeris, Monumentumq. faciant, vt melius videbitur, & iusta, que post funus fieri sollenea est, ita moderentur, vt neque illibetalia, neque superflua sint. Persuasum enim mihi est, illos, quid conueniat, honestumq. sit, visuros haud segnios, quam nos, nihilq. negligentius facturos. De ijs autem, qui mihi seruerint, sic statuo.

Demetrio redemptionis pretium remitto, & quinque Minas do, & Pallium, & tunicam, vt qui mihi Anagnostes fuit. Tauru, qui multum mecum, & diu laborauit, pileum do, & talenta quattuor, vt honestè vitam degere posit. Dionysius, qui vincetus est, & Syrus fugitiuus, si perseuerauerit esse improbi, vt sunt, eos venundari mando: &, pretio exacto, aperiri viam ad Hortos Academicos ducentem, & iter proximum,

fieri

fieri viam, & publicam, ac vinales vias circumquaque mundari. Et Ancillam Hermiam, quod vinosa est, relinquo: & famulos Mælum, quoniam ero est: & Getam, quoniam impistor: Dauum quoque, ac Maurum mancipes in perpetuum esse edico, quoniam maledici, & contumaces semper fuerunt, vt in pistrino pœnas promeritas luant.

Heredem instituere reliquum est, cui fortunas meas honestè relinquam, quibus certò scio inhiare quamplurimos. Vixisse, L. AE T E fili, fili mi, vixisse ( vt decuit ) Læte, non ego nunc sollicitarer, & angerer, non cum mærore nunc cogitarem, quibus potissimum relinquam patrimonium hoc tantum, tantis curis, cruciatus tibi vni auëtum, tanta vigilancia, studio & parcimonia tibi vni à me seruatum. Ceterum, cùm sine Fortuna, si qua est, illum mihi inuidet: siue Deus potius, qui & eum dederat abstulerit, quo domus mea omnis, resq. vna mecum intereat, nefas est, Diuinæ non acquiescere voluntati. His deductis Legatis, cùm duos fratris Agathonis filios, totidemq. filias habeam, ex utrisque mihi heredes instituam oportet. In quo tamen ( me me tristissimum ) etiā atque etiam prouidendum mihi est, ne quid agam, statuamve, quod minus honestum illis, & conueniens, quodque minus æquum, laudabileve alijs, factū videatur. Igitur Titus, & Cnaeus Cupidij ita mihi heredes sunto, vt, qui plus Reipub. præstiterit, habeat Domos, Agros, Hortos, Oliueta, & quæcumque Scodra posseidi: Qui minus profuerit, que superiore anno Colchianum centrum octoginta supra mille iugera comparauimus, consequatur. In reliquis autem bonis meis omnibus, inq. familia Faustam, & Felicianam, filias meas, ita mihi heredes instituo, vt quæ melius nupserit, ex Dodrante, Altera ex Quadrante heres habeatur. Et iniucem substituo tam has, quam illas, cum suis filijs, in stirpes, non in capita. Permitto autem filiabus, vt, quemque earum voluerit, sibi virū optet, optatique per patriam potestatem compos fiat. Curatores testamenti huius, Silius, Necessarius, C. Atilius, M. Capitolinus, qui maximè omnium miro me affectu prosecuti suar, quiq. ex omnibus amicis, ac necessarij fidelissimi semper fuerunt. Vos igitur, per sacra amicitia, atque condiscipuli, obtestor, per summum omnium Opificē obsecro, curate, memoræ, quantu vestræ fidei cōmittam, vt omnia mea ex fertetia apud vos deposita, bene, honeste, & gubernetur. Verū

z 3

enimvero piè, amicq; & allj faciēt, qui nobis bene voluerūt: quāuis occupati, & ieniores: si hēc impleuerint, curauerintq;

Testes in his tabulis sint, Q. Marcius, C. Septimius. P. Curius, L. Capito, M. teretius, Vibius Panis, C. Sextius, qui affuerunt, subscripti rūntque, ut sua ipsorum littera cognosci possit. Ego idein ille L. Cupidius testamentum manu mea exarauī, neq; anulo obtignauī, hisq; testibus signādum obtuli. Et hanc meam nouissimam voluntatem valere volo iure testamenti, quod si fortè non cénfabitur, nomen, & ius habere mando cuiuscumque alterius ultimā voluntatis, quam pennis, & inuiolabiliter obseruari ab omnibus heredibus, & successoribus meis statuo. Valete superstites, mortalitatis non immemores.

Roma; Kal. Martijs, Cn. Pompilio, & L. Marcio Cos.

*Fr. Petrarcha testamentum.*

SEPS de eo mecum cogitans, de quo nemo nimis, nisi pauci satis, cogitant, de nouissimis scilicet, ac de morte: quæ cogitatio neque superflua esse potest, neque nimium festina: & mors omnibus certa sit, & hora mortis incerta: Vtile, & honestum credo, ante quam me mors impedit, vel mors ipsa, quæ per varijs, & ambiguos rerum casus semper nobis impendet, propter vitæ breuitatem procul esse non potest, nunc Dei gratia, dum corpore simul, atque animo sanus sum, de me ipso, ac de rebus meis testinda disponere, quamvis ( vt verum fatear) tam parvæ res sunt meæ, ut de ipsis quodam modo pudeat me testari: sed diuinitum, atque inopum curæ de rebus ( licet imparibus) pares sunt. Volo igitur hanc meam voluntatem ordinare, ac scriptis committere, & propter quandam honestatem, & ob id maximè, ne de huiusmodi rebus meis, propter meam incuriositatem, post meum obitum litigetur. In primis animam meam peccati rem, sed Diuinam misericordiam implorantem; & de illa sperantem, recommendo humiliiter Iesu Christo. Eique, flexis ipsis animæ genibus, ut à se creata, suiq; sanctissimi sanguinis pretio redemptam, protegat, afflatis supplico: nec permittat ad suorū manus hostiū peruenire. Ad hoc etiam auxilium beatissimæ Virginis Matris suæ, & beati Michaelis Archangeli, reuerenter, ac fideter imploro, & sanctorum reliquorū, quos intercessores apud Christum invocare sum solitus, ac sperare. Corpus autem hoc terrenum,

terrenum, ac mortale, nobilium grauem sarcinam animorū, terræ, vnde origo est sibi, volo restituī. Et hoc absque omni pompa, sed cum summa humilitate, & abiectione, quanta esse potest. De quo heredem meum, & amicos omnes rogo, obsercro, & obtestor. & adiuro per viscera misericordiæ Dei nostri, & per caritatem, si quam ad me vniquam habuerint: Neque fali spes in honoris hoc negligant. Cum sic omnino me deceat, ac sic velim: ita ut, si force (quod absit) contrafecerint, teneantur Deo, & mihi de graui vtriusque offensa in diem Iudicii respondere. Et hec quidem de domo sepultræ, hoc addito, quod nemo mefeat, nemo mihi lacrymas, sed pro me Christo preces: & qui potest, Christi pauperibus charitatem, pro me orare monitis, porrigit. hoc mihi prodeesse poterit: fletus autem, & defunctis inutilis, & fletibus est damnosus. De loco autem non magnopere euro. Contentor ponи vbi cūque Deo placuerit, & iis, qui hanc curam suscipere dignabuntur. Si tamen expressius mea de hoc voluntas exquiratur, scilicet velim, si Paduæ, vbi in nūc sum, moriar, in ecclesia S. Augustini, quia in fratres prædicatores tenent: quia & locus animæ meæ gratus, & iacet illuc is, qui me plurimū dilexit, inq; has terras piis precibus attraxit, præclarissimæ memorie Jacobus de Carraria, tunc Paduæ dominus, si autem Arquadæ, vbi ruralis habitatione mea est) diem clausero, & Deus mihi tantum concederit, quod valde cupio, capellam ibi exiguum ad honore beatissimæ virginis Mariæ exstructre, illiq; sepeliri eligo, alioqui inferius, in aliquo loco honesto, iuxta ecclesiæ plebis. Si Venetiis moriar, ponи volo in loco S. Fræcisci de Vinea, illuc ante hostium ecclesiæ. Si Mediolani, ante ecclesiam B. Ambrosij iuxta primum introitum, qui ciuitatis muros aspicit. Si Papia, in ecclesia S. Augustini, vbi fratribus visum fuerit. Si autem Roing, in ecclesia S. Mariæ maioris vel S. Petri, vbi erit opportunitus, vel iuxta ecclesiam hanc, vel illâ, sicut Canonicis placet. Nominauī loca, quibus per Italiam conuersari soleo. Ac, si Parmæ, in ecclesia maiori, vbi per multos annos Archidionicon fui inutilis, & semper fere absens. Si vbi cūque terrarum alibi, in loco fratum minorum, si sit ibi: si minus, in quacunque alia ecclesia, quæ vicinior fuerit loco mortis. Hæc de sepulcro: plura fateor, quām virg. doctū deceat: ab indocta dicta sint. nunc accedo ad dispositionem earum rerum, quæ vocantur bona hominis: cū potius sive sint impedimenta animi.

Et primo quidem huic S. Ecclesiæ Paduanæ, vade percepit & commoda, & honores, ordinari animū iam pridem pusillum terræ emere: quod eidem testamento dimitterem usque ad summam quinque mille & ducentarum librarum huius parva moneta, vel plus, si plus possem. Sed ad hanc usque sumمام habeo iam verbo licentiam à magnifico Paduæ. D.D. Francisco de Carraria, quam vel in vita mea, vel post obitum, quoties, seu quandocumque perita fuerit, daturum esse non dubito: sicut illum, cuius non actum modò, sed verba multa habeant in præposito firmitatem: huiusmodi autem terram hactenus, interuenientibus aliis expensis, emere non valui. Si ergo ipsam emero, (vt spero) faciam in instrumēto emptiōnis poni, quod ipsam teneo animo relinquendi ecclesiæ: & ex nunc ita facio. Quamvis eiusdem terræ situm non possum adhuc in scriptis inserere. Si autem (quoniam nonnumquam piæ voluntates, propter peccata hominum, deduci nequeant ad effectum) dictari terram emere vel propter impotētiā, vel propter negligentiam omiserō: lego ipsi ecclesiæ Paduanæ ducatos ducentos auri ad emendum aliquantulum terræ, vbi melius fieri poterit. De cuius prouentibus perpetuum anniversarium animæ meæ fiat. Et ipsi D. supplico, si tunc viuet (sicut cupio, & Deum precor, vt multis postea per annos latet, & felix viuat) vel si (quod Deus auerterat) tunc ipse non viueret: precor alium quemcumque, penes quem rei huius erit arbitrium, quatenus ob reuerentiam B. Virginis, & mei, licet indigni, & pusilli hominis, respectum, concedat hoc fieri: & decretem super hoc suum favorabiliter interpolat. Lego autem ecclesiæ, apud quam sepeliar, ducatos virginiti: aliis autem ecclesiæ quartuor ordinum mendicantium (si ibi fuerint) ducatos quinque pro qualibet Pauperibus Christi lego centum ducatos, distribuendos, vt videbitur presbytero Ioanni Abochera, custodi ecclesiæ Paduanæ: & hoc, si hic moriar: si alibi, ad arbitrium prælati ecclesiæ illius, in qua reconditus fuero. Ita tamen, vt de dicta quantitate nullus ultra singulos ducatos accipiat. Transeo ad dispositionem aliarum rerum. Et prædicto igitur Magnifico D. dimitto tabulam meā, sive iconam B. Virginis Mariæ, operis Zotti, pictoris egregii, quæ mihi ab amico meo Michaelo Vannis de Florentia misa est. Cuius pulchritudinem ignorantes non intelligunt: Magistri autem artis stupent. Hanc iconam ipsi D. Magnifico meo lego:

tneo lego: vt ipsa Virgo benedicta sibi sit propitia apud filium suum Iesum Christum, amicis minoris status, scilicet charifimis muli, libenter magnadimitterem, si facultas esset vbeior: sed affectum librabunt. magistro Donato de Prato veteri, Grammaticæ præceptor, nunc Venetiis habitanti, si quid mihi debet ex mutuo, quod quantum sit, nescio, sed utique parum est, remitto, & lego. Nec volo, quod heredi hanc ob causam ad aliquid teneatur, de equis meis, si quos habuero in tempore transitus mei, qui placuerint Bunzanello de Viguntia, & Lumbardo à serico, conciubibus Paduanis, volo, quod inter eos fortiantur, quis primum eligat, quis secundum. Et præter hoc dicto Lumbardo, qui rerum suarum curam depositus, vt res meas ageret, obligatum me confiteor in centum & tringintaquattuor ducatis auri, & solidis xvij, quos expendit in utilitatibus meis: & multo amplius: sed, facta ultimo inter nos omnium ratione, dictæ quantitatis sibi debitior remansi: quam si ante acceperit, (sicut spero cito facere) bene erit: alioquin volo, quod heres meus ante omnia sibi satisfacere teneatur de quo debito chirographum meum habet, quod restituat heredi meo ipse Lumbardus. Item lego ipsi Lumbardo scyphum meum paruum rotundum argenteum, & auratum, cum quo' bibat aquam, quam libenter bibit, multo libentius, quam viuum: Presbytero autem Ioanni Abochera, custodi ecclesiæ nostræ, Breuiariu[m] meum magnum, quod Venetiis semi pretio librarum centum: eatamen lege illud ei dimitto, vt post eius obitum remaneat in sacrificia Paduanæ ecclesiæ ad obsequium perpetuum presbyterorum, vt ipse presbyter Ioannes, & alij orent (si eis placeat) Christum & B. Virginem pro me. D. Ioanni de Certaldo, seu Boccatio, verecundè admodum tanto viro tam modicum lego: quinquaginta florenios auri de Florentia, pro vna vele hiemali, ad studium, lucubrationesq. nocturnas. magistro Thomæ Babasie de Ferraria lego lenta meum bonum: vt eum sonet non pro vanitate seculi fugaci, sed ad laudem Dei æterni. Prædicti autem amici mei de paruitate huiusmodi legatorū non me accusent; sed fortunam, siquid est fortuna. Et propter hunc respectum distuli ad ultimum, quem primum esse decuit, magistrum Ioannem de Dundis, physicum, astronomorum facile principem, dictum ab Horologio, propter illud admirandum Planetarij opus ab eo confectum, quod vulgus ignarum Horologium esse arbitratur. Cui lego quinquaginta ducatos.

aure pro emendo sibi vñ paruum anulum dígito gestandum in memoriam mei. De facultatibus autem domesticis sic ordinio. Bartholomeo de Senis, qui dicitur Pácaldus, viginti ducatos, quos non ludat. Zilio de Florentia, domicello meo, supra salariū suū, siquid sibi debetur, viginti ducatos. Et, si haberé plures, aut alios plures, pauciorēt domicellos, supra salariū suū, pro quolibet florenos, seu ducatos x. famulis duos, pro quolibet coco duos. Et, si iti, vel amici obiisſent, vel dominicilli, seu famuli obiisſent priusquam moriar, quod eis legabam, volo, vt redeat ad heredē meum. Omnia fānē bonorū meorū mobiliū, & immobiliū, quā habeo & habiturus sum, vbiq. sunt vel erūt, vniuersalē heredē instituo Franciscum de Broſſano, filiū q.d. Amicoli de Broſſano, ciuitē Mediolani, portā Vercellinā. Et ipsum rogo, non solum ut heredem, sed ut filium carissimum, ut pecuniam quamcūque, siue sit plurima, siue sit minima, (quia magna vtrq. non erit) meis rebus inuenierit, diuidiat in duas partes, & vnam sibi habeat, alteram numeret cui scit me velle, & de ea fiat, quod etiam me velle scit. Duo, antequā finiam hanc scripturam, addenda sunt: vnum, quod modicum illud terræ, quod habeo vltra montes in comitatu Venusini, in villa, seu caſtro Valclusā, diocesis Taulicensis, quia sine dubio, eundo illuc, vel eriam mittēdo, quodammodo plus expenderetur, quām res valeat: volo, quod sit hospitalis dicti loci, & in vñ pauperum Christi. Et, si forte hoc fieri non posset, impediēt aliquo iure, vel Statuto, volo, quod sit Ioannis, & Petri, fratribus, q. Raymundi de Raymundis, qui Moneta communiter dicebatur, & fuit obsequiosus, & fidelis mihi valde. Et, si dicti fratres, vel eorum alter obiisſet, volo, quod veniat ad filios, vel nepotes, in memoriam dicti Moneri. Alterum, quod illud modicum, quod habeo in bonis immobiliis in Padua, vel territorio Paduano, vel in posterū habiturus sum, volo, quod sit heredis mei, vt cetera: sed hac lege, quod nec per se, nec per alium horum aliquid alienari possit: venditione, aut donatione, aut perpetua emphytheo si, aut quoquis alio modo: nec etiam pignorari vñq. ad completos xx. annos, à die mei obitus computados: quod pro vtilitate ipsius heredis ordino: qui ignorantia rerum labi posset, quas cum plene nouerit, puto non libenter alienabit. Si autem forte, quia omnes sumus mortales, nec omnino nullus est ordo moriendi, dictus Franciscus de Broſſano (quod auertat Deus)

ante

ante me moriatur: tūc heres meus esto Lūbardus à ſérico praeditus qui planè animum meū novit: quem, vt in vita fidelissimum expertum, non minus fidelem ſpero post obitū. Hac iure testamenti, aut alterius vltimæ voluntatis: ſeu quocūque alio modo melius valitura conſcripsi manu propria, Padua in domo ecclie, quā habito: Anno Domini M. c c c l x x . Pridie Nonas Aprilis. Et Nicolaum notarium, filium q. ſer Bartholomei, ac Nicolaū, filiū ſer Petri, notarios inſcriptos, rogaui, prout in eorum ſubſcriptionibus inſcriptis continentur. Vnum addo, quod statim poſt trāſitum meū heres meus scribat ſuper hoc fratri Gerardo Petracho, monaco Cartuſieni, germano meo, qui eft in conuentu de Maternio propè Maſſiliam, vt det ſibi opinionem, vtrum velit cētum florenos auri, an ſingulis annis quinque, vel decē, ſicut ſibi placeat. Et, quod ipſe elegerit, illud faciat.

Ego Franciscus P. ſcripsi: qui testamentum aliud feciſsem, ſi eſſem diues, vt vulgus inſanum putat.

*Eundem Petrarcham Bibliothecam ſuam Reip. Venetæ dono dediſſe, ſcriptum eft in Tabulario Veneto: his verbiſ.*

1362. die iiiij. Septembr.

**C**ONSIDERATO, quantum ad laudem Dei, & B. Marci Euangeliftæ, ac honorem, & famam ciuitatis noſtre futurum eft illud, quod offertur per Dōminum Franciscum Petrarchā, cuius fama hodie tanta eft in toto Orbe, quod in memoria hominum non eft iamdiu inter Christianos, tuſſe, vel eſſe philoſophum moralem, & poētam, qui poſit eidem comparari: Accepturn oblatio ſua, ſecundum formā inſcriptæ Cedulae, ſcriptæ manu ſua: & ex nunc ſic captrum, quod poſit expedi de Monte pro domo, & habitatione ſua in vita eius, per modū affictus, ſicut videbitur Dōmino, Cōſiliariis, & Capitibus, vel maiori parti. Cum procuratores Ecclesiæ S. Marci offerat facere expensas necessarias, pro loco, vbi debuerint reponi, & conſeruari libri ſui. Et eft capta per v.r. Consiliarios, tria capita de x.l. & vltra duas partes maioris Consilij, tenor autem dictæ Cedulae talis eft.

Cupit E. Beatum Marcum Euangeliftam, ſi Christo, & ſibi

sit placitum, hæredem habere nescio quot libellorum, quos nunc habet, vel est forsitan habiturus, hac lege, quod libri non vendantur, neque quomodolibet distractantur: sed in loco aliquo ad hoc desputando, qui sit tutus ab incendiis, atque imbris, ad sui ipsius honorem, & sui memoriam, nec non ad ingeniosorum, & nobilium Civitatis illius, quos cōtinget in talibus delectari, consolationem qualemqualem, & commodū perpetuo conseruentur. Neque appetit hoc, quod libri vel valde multi, vel valde pretiosi sint: sed sibi hac spē, quod postea de tempore in tempus, & illa glorioſa ciuitas alios superadet ē publico, & priuatim nobiles, atque amantes Patriæ ciues, vel fortè etiam alienigenæ, secuti exemplum, librorum suorum partem supremis suis relinquunt voluntatibus Ecclesiæ supradictæ: atque ita facile poterit ad unam magnam, & famosam bibliothecam, ac parem veteribus, perueniri. Quæ quanta gloriæ futura sit illi Dominio, nemo litteratus est, puto, nec idiota, qui nesciat. Quod si, Deo, & illo tanto patrono verbis nostræ auxiliante, contigerit, gaudebit ipse F. & in Domino gloriabitur, se quodammodo fuisse principium tanti boni. Super quo, si res procedat, fortè aliquid latius scribet. Verum, ut aliquid plus, quam verba, ponere in tanto negotio videatur, vult hoc facere, quod promisit. &c.

Pro se interim, & pro dictis libris, vellet unam nō magnā, sed honestam domum: vt, quidquid de ipso humanitus contigerit, non posset hoc eius propositum impediri. Ipse quoq; libentissime moram trahat ibidem, si bono modo posit. de hoc enim non est ad plenum certus, propter multas rerum difficultates. Sperat tamen.

*Testamentum Iacobi Piccolomini, Cardinalis Papiensis, ad memoriam humanae imbecillitatis, & funebrium impensarum contemptum, pie, & prudenter legatores instituens:*

**F**RAGILIS est vita nostra, eāmq; casus circumstant innueri. Quod vitemus, præuidere satis non possumus. Illum diuturna ægritudo, hunc breuis languor, aliū improvisa mors rapit. Omnibus autem incerta vocationis est hora. Quia in loco,

loco, quo in tempore ea nos expectet, nescimus. Expectare illum nos omni tempore, omni loco debemus, memores verbi Apostoli, quia illa nō tardat. Et quod, quæ de terra sunt, in terram vertuntur. Inscitia est securitate de virtute exitu non cogitare, dispensationem quoque domesticam in id tempus differre, in quo mens grauata plurimis, ad unum aliquid non est sapere idonea. Angit timor mortis, torquet infirmitas. Circumstantium est molesta cupiditas, qui sua non nostra quærentes, ab animæ cura ad terrena nos reuocant, cogentes (a) perturbationibus suis eū mori, qui vel moriturus non erat, vel certe tam cito non moriturus. Ut ergo concedente Deo ista deuït, & ad meum, non alienum arbitrium, quæ meditor, fiant, putans, quæ ab Isaia Propheta Ezechiae Regi sunt dicta, mihi Ecclesiæ Röm. Cardinali imperata, Dispone domui tuæ, quia morieris tu, & non viues: illud etiam Salvatoris formidans, Vigilate, quia nescitis diem, neque horam, qua Dominus vester venturus sit, sero, an mane, an galli cantu: statui testamen- tum hoc condere meo chirographo scriptum, cui ita esse vim volo, si id ipsum, vel eius partem ante mortem non reuocem, est verò huiusmodi. In primis conuersus in Deum auctorem, & redemptorem meum, cùm anxius sim futuri de me iudicij, & nescius vtrum odio, in acceptione sim dignus. Siens autem in manu eius vitam esse, atque interitum; per viscera misericordiae suæ, in quibus ex alto nos visitauit, humi stratus, oro, vt si aures suæ intendentis in vocem deprecationis meæ, non intret in iudicio cū seruo suo, aduersus folium quod vento rapitur, non exerceat potentiam suam, nec siccâ stipulam prosequatur, paenitentis Sacerdotis animam non dedignetur. Ignoscat illi delicta præterita, & ignorantias suas. Sulcipiat creaturem creator, & factor figmentum suum. Meminerit, quod homo immundus de immundo concepus sum semine, & quod in peccatis concepit me mater mea. Veniat ante oculos pietatis suæ, vita humanae infirmitas, in qua per omnium successum nouis semper desideriorū facibus incitati extinguere sine illius ope, ignea inimici tela non possimus. Stulta est pueritia, inanis adolescentia, iuuentus lubrica. Virile studium ad ambitionem inclinat. Friget senectus, & deficit. Si non sustinet Dominus, cui est sperandi fiducia? aut quem sarcina tanta fine alleuamento eius non premar? Recordetur Pauli serui sui ad Romanos hæc lamentantis: Non inquit,

quod volo bonum hoc ago, sed quod odi malum id facio. Est miserator, & misericors Dominus, longanimes & multū misericors. Suntq. miserationes eius super omnia opera eius. Secundū ergo peccata mea non faciat mihi, neq. secundū iniquitates meas retribuat mihi, quia non iustificabitur in **conspic̄tu suo omnis viuens**, sed per sanctam nativitatem suam, passionem, & mortem, & resurrectionem, & ascensionem in calum, & aduentum spiritus sancti paracleti saluer humiliata animam, cum beatis spiritibus in vita eternam. proximè autem, si quid contra pastorem principem meū Rom. Pontificem viuens peccavi, peccasse autem multa me puto, si quid dicto, aut factō cōtumacius egi, si non sum dignē reue ritus, si non parui, si contristau, si carpsi pro suis in me meritis, si non dignē retribui, supremam eius pietatem geriens imploro, vt mihi ignoscat, & oblitus omnium defuncti anime benedicat. Hæc clemens, & ab animo profecta caritas petenti erit leuamini, & danti merces à Domino. Cum patribus quoque, & collegis meis, quoniam frequenter vīsus fuit, frequenter utique esse oportuit offendendi occasionem. In multis enim peccamus omnes. zelotypia, contentio, obtructio, ira, inuidia sollicitare nostros animos solet. quidquid in hos admisi, quidquid amari à me acceptum referunt, oro, obtestorque per commune consortium, & spem misericordie, quam à Domino iudicandi expectant, vt id omne deponant, iniurias condonent, & placentur defuncto, eam requiem fratris optantes, quam de se impetrari à Domino cupiunt. Executori, quem in cale testamenti designo, hoc officium pietatis relinquo, vt, si ita indulget Pontifex, primo post obitum Consistorio hæc veniam, & emissionem non inanis gloria, sed salutis causa, meo nomine suppliciter petat. identidē postulans, vt, quæ dispono, quæ testor, prius Pastor paterna indulgentia prober, & non mutet, familiāmq. meam de me fideli ter meritam p̄e consoletur, & iuuet. Ut verò ad gloriam Dei, & integratam communionis fidelius perseverant, licet peccatoris serui pateat fides, alta voce profiteor tenuisse me à la uacro sancti Baptismatis usque in diem præsentem sanctā orthodoxam Fidem Catholicam, symbolum ab Apostolis cōditum, expositionē fidei magni Nicenī Concilij; anathematizasse etiā me, & anathematizare omnē hæresim extollentem se aduersum sanctam, & immaculatam fidē, in qua, yrdictum

est, viuere & mori intendo: hoc sequens confessionis meae chirographum omnipotenti Deo in extremo iudicio representans. Credo &c. Corpus meū contaminatum flagitiis licet indignum sit, cui habeatur honor, sepulcrīq. facilis sit semper iactura, rationem tamen habens dignitatis, quam dedit Ecclesia, Pontificalis quoque offici, per quod plebi honoratis simus prafui, sacra etiam vunctionis, qua per inuisibilem specieē intisibilis est impressus character, tradi oro ecclesiasticae sepulture, atque iis insignibus adornatū, quæ confuetudo nostrī ordinis tulit. Sapient tamen omnia modestiam funeralē, non seculi pompam. Si Romæ, vt opto, maior, condi cupio in basilica Apostolorū Principis Petri, post altare beati Gregorii, ad dextram sepulchri Pōtificis Pi, vt, qui me exulit viuens, mortuus iuxta se habeat. Condi illud ipsum humi volo maruore tantum non caro contextum, quod parieti ecclesia coniunctum habeat caput. In ipso autem pariete honore defuncti Pontificis ad memoriam meam nil fabricetur. Mar morea tabula vlnis tribus à terra extans parieti inseratur, quæ supra sepulchrum parieti insiti epitaphium sequens inscriptionem bonis litteris habeat.

Luca ortu, Sena lege fuit mihi patria, nomen

Dum vixi Iacobus, mens bona pro genere.

Papa Pius sedem Papensem detulit, idem

Cardine ornauit munere, gente, domo,

Quem colui viuens, non linquo mortuus, hic sum,

Et propè sancta patris filius ossa cubo.

Viuere qui legit, cælestia quærite. nostra haec

In cineres tandem gloria tota redit.

Sin alibi in Italia obitum meum esse contingat, Romanum nihilominus ad hunc ipsum locum volo corpus meum referri, dicta iam ratione humandum. Trans alpes verò aut mare, in cathedrali ecclesia, in cuius vel ciuitate, vel dioecesi mea, vocatione fuerit. Tunc verò executoris curæ sepulchrum relinquent, quintum tantum, & sextū versum deniq. ex epitaphio volo. Vbiicumque autem excessero, testamēti institutionem, quæ sequitur, volo.

Impendia funeris, quæ adhiberi ad solamen superstitionis magis, quam defunctorum leuamen, solent, summam mille ducatorum aureorum vero excedere, in qua includatur

etiam vestitus familiæ. Quântò hæc exhibebuntur parcit, tantò erit plenius: vnde & illi beneficiat, & meæ animæ consularunt. Superuacua nec placent Deo, nec laudes inter homines habent. Transit breui memoria funeris, diu permanent dâna. Tempora in hoc patrum nostrorum magis sunt attendenda, quâm nostra, qui gloria benefactorum, non lumen multitudine, illustrari volebant sepulchra. Quidquid amplius sumetur, quidquid plus erogabitur, piaculum executoris sit, non peccatum sobria statuentis. Caltrum doloris cubito angustius in circuitu sit, quâm nostratio soleant. Ipse etiâ lectus ad proportionem angustior. Stratum verò lecti, quod pallium dicitur, ad vetus exemplum, ex simplici damasceno violaceo sit, sine vlo omnino auro, aut argento fimbrias laterum habens ex simplici item damasceno cælestini coloris, in quibus latera singula, singula tantum insignia familiæ habeant. Veto in circuitu ecclesiæ appendi tot insignia de picta linteal, ludis meo iudicio aptiora, quâm funeri. Pendeant tantum super altari, in quo missa maior cantabitur, & in circuitu castrorum, & in edito laterum ecclesiæ quantum castrum ipsum porrigitur. Eandem volo esse collocationem funerali, quam & insignium. Ardere ea tot in locis sine sacrorum necessitate quem habeat vsum, non video. Legem in his libenter executori do ne honoris sui cauilla, ad aliena exempla magis, quâm ad se ipsum, cogatur respicere. Sermonem enim de his omnem testantis futurum, non exequatur fidentius. Cereorum quotidiana, & promiscua dispersio, magis quâm dispensatio multum auger impensam, nec fructum, qui proponitur, habet. Auaritia in his studeri videtur, non orationi. Ad eos rapiendos concurrunt vndique, ex tota ecclesia: pugnatur, clamatur, sacra omnia perturbâtur, quodq. indignus ecclesia est, ad hos compescendos tumultus publici plerumque vindices adhibentur hastis, gladiisq. in domo Domini perstrepentes. Ea ne accidunt, precelq. non rixæ meum celebrant funus, nolo nisi confidentibus ad orationem, & diuina canentibus illos distribui. Per pietatem, qua debetur mortuis, id non negligat executor funeris. Quaque die in salutem animæ meæ, leganter per deuotos Christi sacerdotes xxx. missæ tantum. Cum iis vna cantetur, qui cantauerit, & prælatus futurus est, serat in eleemosyna carlinos quattuor in siagulis missis, vnu, qui legerit, & his soluendis fidelis adhibeatur minister, qui feipsum

feipsum, & pauperes, & animam meam non fraudet. Solent, mortuis Cardinalibus, familiares non veri ad accipiendas familiarium verorum vestes accurrere, instare vt dentur, si non dantur, indignari, ac lamentari. vt error non sit, eosvestiri volo, qui in notula, manu mea subscipta, vel anulo meo signata, præsentiaq. testamento inclusa, inuenientur appositi. & Capellani quatuor cannæ, Scutiferis, inter quos Parafrenarios, & primum Cocum, & Cellarium, & dispensatorem nominio, prima fortis tres: reliquis dimidiam cannam minus, sed secunda fortis, iubeo dari. Ita tamè, vt diebus funeris ad orationem omnes conueniant, & pro me deprecentur. Hæc ad rationem funeris.

*Iouita Rapicij Brixianij, testamentum Venetiis  
M. D. LII. X. Kal. Iunij  
conditum.*

**M**ONET me vel annus ætatis sextus, & septuagesimus, vel diurnis laboribus tenuatum, & imbecille corpus, vel animus variis ac molestis curis iam propè defessus, vt instare illud tempus credam, quo me bonus, & clemens imperator Deus ex hac quasi statione, & præsidio vitæ mortalís imperet decadere, & eadem illa, quæ hoc, quod sum, sinxit natura dissoluat. ego verò, & Deo parere, & naturæ concedere non inuitus debeo. nam & ille mihi inter pericula vocatus, & non vocatus semper affuit, & hæc multa mihi liberaliter indulxit, itaque, siue aduersa, quæ Deo adiuuante pertuli mecum repetto, stultus sum, nisi mihi oblatam ab eodem quietem libenter amplectar: siue prosperat natura dono valetudinem, & continuat tam longa ætate sensum ac mentis integratatem considero, ingratus sum, si ius suum repentina reluctari voluero, ac non potius æquo quasi plenus vitæ conuia recessero. quod ut præstare constituto melius animo possim, liber, dum est in fano adhuc corpore sana mens, sarcinulas colligere, atque itineri me accingere. magis autem expedite decessurus mihi videor, si prius, quid de re mea post decessum meum velim, diligenter constitvero. Quoniam verò sine Diuina ope, nihil rectum præ me posse confido, te Deum patrem omnipotentem, te Iesu Christe vnigenitum Dei filium,

te Spiritus sancte vnum verum, atque aeternum, in tribus personis Deum supplex inuoco, ac tota mente atque animo precor, vt quæcumque aduersus legem, ac voluntatem tuam turpiter admisi, clementer ignoscas, ac praestes, vt quidquid mihi adhuc ætatis superesse volueris, iuste ac pie degam, nunc autem adhuc præsens, volensq. ac propitius testamentum condenti, & vt es bonus, ac iustus, concede, nequid temere, aut parum officiosè decernam, ne ve scribam, quod aut reprehendi iure, aut probabilem ligandi cauſam prætare cuiquam posſit. Primum igitur dilectum filium meum Paulum, prudentem Iurisconsultum, ex Antonia Oliueria, bene concordi vxore, suscepimus, eo iure, quod excogitari optimū potest, hereditē meum ex affe instituo: & quidquid vel immobile, vel mobile posseideo, quidquid in nominibus habeo, quidquid denique ad me quoquis iure pertinet, id totum illius esse volo: quinetiam, si quid post hoc testamentum rationibus meis, ac rei familiarī adiecerō, id quoque hereditatis iure ad eū iubeo peruenire. Quoniam vero, si possum, non hęc tātum, qua fortunae bona iudicantur, ad te fili carissimē opto peruenire, paucis tibi ea explicabo, qua me, ā ad vitę metas properantē, præterire paternus amor non finit. Tu, quæ tui amantisimus pater iam moriens mandat, ne contemne, sed (qua tua est in eum qui te genuit, educavit, instituit, pietas) in bonam partē accipe, & libenter exsequere. Primum in iisqua ad diuinum cultum pertinent, Apostoli consilio vttere, qui nos non vult plus sapere, quam oportet sapere, sed ad sobrietatem sapere: ne curiosis opinionibus ebrij à simplicitate, ac veritate Christiana recedamus: nouas omnes opiniones auerfare, neque villo pacto adduci permittas, vt ab honestissimis Romanis Ecclesia institutis vñquam recedas: & quā à maioribus nostris, & à me ipso seruata non ignoras, diligenter serua. Reip. Venetar, quæ ciuitatem, ac patriam nostram, in fidem suam suscipiendo seruauit, emendauit legibus, ornauit moribus, quam debent subiecti iuste imperantibus, fidem atque obseruantiam præstato. Brixiam, quæ me amanter ac liberos, & posteros meos in ciuium numerum admisit, dilige, cole, & obserua: publica cum ciuibus numera libenter subito, & remptu: semper præponito. Agnatos omnes, & affines, ne vt inopes contemnito, sed vt innocentes, & sanguine cōiunctos diligito, & non verbis modo, sed re quoque, quantū tenuitas tua patietur, iuuato: & vt paucis multa complectar, quę adolescēs, legum præcepta, didicisti, memoria repepe, ac etiam atque etiam vide, vt quę admodum cœpisti, honeste viuas: ius suum vniuersique tribus: neminem lādas; ac memineris nihil virtutius esse ad opes tuendas atq. augendas, quām à multis amari, nihil ad vitam tranquillę degendam aptius, quām similitates, & inuidiam cauere, liberos tuos, quām diligentissimē poteris, & quām celerrimē instituendos curato, neque ætatem elabi frustra finito. & quia non potes ampliū, aut saltem sufficiens otiosis patrimonium relinqueret, relinque artem aliquam, qua se sūbq. alere honestē queant, honestatem autē positam puta primum quidē in bonis moribus, deinde verò in eo, vt libi ipsi possint sufficere, nec aliena ope indigent, tem multis meis laboribus partam, si reliqueris illis integrā, quod boni patris est, feceris: ego tamen, vt id facias, non compello, sed prudentiē tātē relinquō. Agnatis omnibus, & affinis tam mortuis, quām viuentib, siquid debere mihi quis nomine deprehendentur, id totum libenter condono, eosq. omnes sciens volensq. absoluo, atque hanc absolutionē quamvis confusam atque implicitam non minus ratam, ac firmam esse volo, quām si rationes omnes, rēsq. & nomina essent caute & diligenter expressi. Neque enim oblitus sum, cur illis tum crediderim, & nunc possum, si velim, huius donationis, & absolutionis cauſa iusta reddere. Martha dilecta filia libras sex planetorum, hoc est duodecim parvorum, item sorori meæ carissimæ bone rotidem singulis annis, quādiu vixerint, liberaliter & amāter exhiberi volo, idq. sēper initio anni, quod initiū ab ipso statim obitus mei die constitui iubeo. Te vero, filia dilecta, & te soror carissima rogo, vt hoc quāvis modico legato cōtentę sitis, diligēter considerātes tenuitatē meam, & memoria repetētes quātopere vos dilexerim, & quid vestra cauſa fecerim. Sepeliri Brixia in tēplo diui Nazarij desidero eo loco, quę reuerēdus eius ecclesiæ Antistes D. Fabius Aue-rolus cōcesserit. Impēsa aut funeris modicā, aut ē minus quā modicā postulo: & meorū piis precibus iuvari malo, quā in mēsis sumptibus ornari. Tēq. adeò fili carissime obtestor, vt & in hac re, & in aliis oībus, tenuitatē rei domesticę ante oculos sēper habeas, frugalitatēq. & parsimoniā honestissimū vestigia existimes, erit id tibi, & ad tuendum patrimonium, & ad bonam famam augendam longē utilissimum, mihi mortuo

gratissimū : neq; tamen hoc mandans te vel auarum vel sor-  
didum fieri velim, sed tuo modulo ac pede te & tua omnia ita  
metiri, vt sine iniuria & contemptu inter ciues nostros vitam  
ducas honestā pariter & iocundā. Volo autē vti quot annis an-  
niv ersarium sacrū pro defunctis familiæ, & agnationis nostræ  
ad sepulchrū meū faciendū curet heres meus, & successores e-  
ius, pridie Idus Februariæ, quo die rectissima femina, & dulcissima  
mater mea Helena Rauraria sepulta est Bergomi in templo  
diui Cassiani, ad arā diui Nicolai, & pater meus indulges-  
simus decennio post, Vicetia in templo diui Stephani: Laurētius  
autē pater, & Eleutherius filius eodem anno, quo mater, alter  
Romæ, alter Patauij diē suum obierūt, quos oēs volo huius sa-  
cri participes, vt, qui me tota vita peregrinantē non destitue-  
runt, aliquē pietatis in se meq; fractū etiā post mortem capiat.  
Die verō depositionis meæ, volo centū sextātes erogari in e-  
leemosinā centum pauperibus, qui iuxta sepulchrum meum  
flexis genibus clara voce dixerint, Domine miserere illius, oēs  
sancti orate pro eo. vt autē hoc seruetur fidelius, huic legato  
non modò hæredes, & successores meos, sed omnia mea bona  
perpetuo obligata esse in beo collegio canonicorū Sancti Na-  
zarij, vt ab hæreditib; etiā in iuitis possint quotānis exigere li-  
bras quinq; tā pro anniversarij celebratione, quām pro ele-  
mosinā eroganda. Te verō fili carissimè, per longā indulgentiā  
erga te meam peto, vt, si quid apud te valent vota mea, diligas  
Laurentiū, quē ego ex Paula Catarense suscepsum, ex Laurentij  
fratris, & meo, & gentis Rhamnusie nomine, in cuius chietela  
erā, Laurentiū Iouium Rhamnusianū vocari volui, vt tu eorū,  
quite dilexerūt & iuuerunt precibus admonitus eū diligeres,  
& orbum atque inopem (si qua via posses) adiuuares, nec cum  
qui mihi carus est, mendicare patereris. Vix. An. LXXVIM.  
VI. D.I. Ob. M.D. LIII. XVII. Kal. Sept.

*Et, quoniam testamentorū formulas possumus, placet Ioannis Boccalij  
quoque Testamentum adscribere, quod & si Italica lingua scriptum,  
mutiliq; admodum sit, visum est tamen dignum, quod aliis adderetur.  
Hoc autem q;.*

che ne decti ve ad ce orissi voglio sia sepolto cer-  
taldo in q; deessa dare ad gli amici  
Appresso lascio della Chiesa di sancta Reparata & altrett  
ti alle mura della Città di Firenze.

Ancora lascio alla compagnia di Santa Maria di Certaldo v.

Anco-

Ancora lascio all'opera della Chiesa di sa iacopo di Certaldo v. x.

Aucora lascio alla Bruna figliuola che fu di Ciāgo da Mōte  
Magno la quale lungamēte è stata con meco il letto nel quale  
era vfa di dormire ad Certaldo, cioè na lettiera dalbero, j. col-  
tricetta di pēna, j. piu maccio vna coltre bianca piccola da quel  
lecto. i. paio di lenzuola buone, j. pācha che star suole ad pie di  
quel lecto. Et oltre acciò vn desco piccolo da mangiare dasi  
di noce, i.j. touaglie menate di lunghezza br.a.vi.luna. i.j. toua-  
gлиole conuenioli, j. botticello d.i.iiij. some. Et oltre ad cio vā  
na roba di monchino soderata di Zendado porporino gon-  
nella & guarnačca & cappuccio. El ancora voglio che essa di  
quel che auere douesse di suo salario di resto da me, sia in-  
terioramente pagata.

Ancora lascio che ciascuna persona laquale si trououa scri-  
pta nel libro delle mie ragioni soprasegnato. A. che da me  
debbia auere sia interamēte pagato & oltre acciò, ciascuno al-  
tro che giustamente mostrasse di douere auere. Et pergare le  
dette quantità & lascio voglio che gl infascripti miei execu-  
tori ogni mio panno masserizia grano è viada è vino equali-  
que altra cosi mobile exceptuati i libri, & lescriptione mie  
possano, edebbane vēdere, o far vendere, & doue delle decte  
mie cose mobili non sauesse tanto che baftasse à decti pag-  
amenti, voglio possano vēdere & alienare de miei beni come  
potrei io medesimo viuendo, & maximamēte vna casa posta  
in Certaldo nel popolo di Siaacopo di Certaldo ad cui da, j. via  
chiamata Borgo dal.i.j. fornaino dandrea di mess benghi del  
terzo via nuoua dal.iiij. il decto testatore, è nō baftado questa  
possan vendere de gli altri miei beni come decto è.

Ancora lascio che tutti i miei libri sieno dati e cōceduti ad  
ogni suo piacere al venerabile mio Maestro Martino dellor-  
dine de frati heremitani di sancto Agostino e del cōuento di  
Sancto Spirito di Firenze, i quali esse debbe & p. tenere ad  
suo uso mentre viue, si veramente che il decto Maestro Mar-  
tino sia tenuto è debba pregare Iddio per l'anima mia, & ol-  
tre far copia ad qualunque persona li volesse di quegli libri  
li quali composti. Et ancora che esso debba con queste me-  
desime condizio,

secunda faccia.

vecchio cau haueua fatta venire per entro delle

era croce di xpo, & vna cassa la quale va facta teneria entro le decte reliqui tutte date senza alcuna zione à frati di sancta Maria di san lepolcro ouero del poggetto o dalle capora chesi chiamino, li quali dimorano vicini della citta di Firenze poco fuori delle mura accio che quante volte reuerentemente le vedranno preghino idio per me.

Ancora lascio e voglio che vna imaginetta di nostra dona dalabastro. j. pianeta con istola & manipolo di zendado vermiglio & j. palio piccolo da altare di drappo vermiglio lucchese & vn guancialetto da altare di quel medecimo drappo & iij. guaine da corporali & j. vaso di stagna da acqua benedetta, & j. palietto piccolo di drappo foderato di zédado giallo tutte sie date a glioperai di safiacopo di certaldo & esli operai gli debbano guardare e saluare mentre durano a seruigi della detta chiesa di safiacopo & far pregari idio per me.

Ancora lascio & voglio che vna tauioletta nella quale e dall'una parte dipinta nostra donna col figliuolo in braccio & dall'altra vn telchio di vn morto sia datta ad Madonna sandra la quale oggi e moglie di francisco di lapo buonamichi.

Appresso ad tutto questo intendo e voglio che oltre alle predecte in ogni mia cosa cosi mobile come stabile sieno miei heredi vniuersali i figliuoli di iacopo di boccaccio mio fratello queglie al presente sono e che nel futuro nasceranno legiustimi e naturali cosi maschi comme femine si veramente che ogni fructo il quale de predecti miei beni si ricoglierà o trarra debba peruenire nella casa del predecto iacopo & ad esso aspettare & pertenere - l'adiministrazione di quegli in nutricare se & la moglie, & quegli figliuoli li quali aura. Appresso intendo che de detti miei beni i predecti miei heredi non debbano ne possano vendere in altra maniera alienare o impegnare alcuno infino ad tanto che alla eta danni trenta compiuti peruenuti non sieno, & allora viuendo iacopo predecto far nol possano senza suo consentimento, e piacere riseruato nondimeno che doue bisognasse di pagare la dote dalcuna loco sfrocchia che maritassono allora voglio possano con lautorita de lor tutori se in era daccio fossono. Similmente intendo che imperperuo infino ad tanto che alcuno de discendenti di boccaccio ghellini nostro padre per linea masculina si trouera etiandio che non fosse legiustimamente nato si possa vendere o alienare in alcuna altra guisa . . . casa mia

posta

posta in certaldo nel popolo di safiacopo della quale questi  
Principio della terza fascia.

heredi perciocche i pup o intendo che sieno p<sup>o</sup>  
gauacciani Piero nigane gelmo barduccio di cher  
francesco di lapo bonan di torino benciuenni, & iacopo di  
boccaccio lor padre & mio fratello. Et intendo che quello che  
costoro o la maggior parte di loro o di quegli che allora viui  
faranno faranno intorno a facti de decti miei nepoti, valgia  
& tenga ne possa essere per gli altri riuocato o annullato o per-  
mutato.

Appresso in executors & fedeli commessarij del mio pre-  
sente testamēto ouero ultima voluntà eleggo & priegho che  
sieno questi che appresso scriuo. Il venerabile mio padre, &  
maestro Martino da signa del lordine de frati heremitani di  
Sancto Agostino di firenze. Barduccio di cherichino. Frances-  
co di lapo bonamichi. Agnolo di torino benciuenni & Iacopo  
di boccaccio mio fratello a quali do piena balia & autorità di  
vendere & alienare del mio o de miei beni quello, che cono-  
ceranno essere opportuno alla decta executione in loro per  
me facta. Et intendo che quello che la maggior parte di loro  
di quegli che allora viui faranno si fara o adoperera intorno  
alla decta executione sia fermo & rato etiandio contradis-  
cendolo gli altri ne si possa per gli altri mutare. Et questo in-  
tendo sia il mio testamēto, & ultima volontà da a riuocando  
& annullando ognaltrò testamento il quale infino a que-  
sto di facto auesi &c.

DAS } Paulus ex Festo. Vadem, sponsorem significat da-  
tum in re capitali. Gracis ἐγγύησις, qui vadimonio sunt  
obstricti, eaq. lege dimissi, vt in certum diem sistantur. Si  
ille non reuertisset, } sic omnes mei, & Tertij. Malè alias, Si ille  
non reuertisset ad diem. MORIENDVM effet fibi ipsi. } Mori-  
endum effet ipsi, quartuor, & Tertij. Moriendum effet ipsi  
sibi, vnu. Moriendum effet etiam sibi ipsi, vnu. Moriendum  
effet etiam ipsi, vnu. IN amicitiam tertium adscriberent. } Ad  
amicitiam, octo, & Tertij. Scriberent, vnu.

**S**ed utilitatis specie in rep. sapissimè peccatur, ut in Corinthi disturbance noctri durius etiam Athenienses, qui sciuunt, ut Aeginetis, qui classe valabant, polices præciderentur. hoc visum est vtile. nimis enim imminebat propter propinquitatem Aegina Piraceo. sed nihil, quod crudele, vtile. est enim hominum natura, quam sequi debemus, maximè inimica crudelitas. Malè etiam, qui peregrinos urbibus vti prohibent, eosque exterminant, ut Pennus apud patres nostros, I apius nuper. nam esse pro cive, qui ciuis non sit, rectum est non licere: quam tulerunt legem sapientissimi consules, Crassus & Scauola: vnu verò urbibus prohibere peregrinos, sanè inhumanum est. illa præclara, in quibus publicæ utilitatis species præ honestate contemnitur, plena exemplorum est nostra res. cùm sape aliâs sum maximè bello Punico secundo: qua Cannensi calamitate accepta maiores animos habuit, quam umquam rebus secundis. nulla fuit timoris significatio, nulla mentio pacis. tanta vis est honesti, ut speciem utilitatis obscuret, Athenienses cùm Persarum impetum nullo modo possent sustinere, statuerentque, ut urbe relista, coniugibus, & liberis Troezenè depositis, naues conscenderent, libertatemque Gracia classe defenderent, Cyrsilum quendam suadentem, ut in urbe manerent, Xerxémq. recipierent, lapidibus obruerunt. atque ille sequi utilitatem videbatur: sed ea nulla erat repugnante honestate. Thermistocles post victoriam eius belli, quod cum Persis fuit, dixit in conione se habere consilium rep. salutare, sed id sciri opus non esse: postulauit, ut aliquem populus daret, qui sum communicaret. datus est Aristides. hinc ille classem

classem Lacedæmoniorum, qua subducta esset ad Gytheum, clam incendi posse: quo factu frangi Lacedæmoniorum opes necesse esset. quod Aristides cùm audiisset, in concionem magna exspectatione venit, dixitq. perutile esse consilium, quod Thermistocles afferret, sed minimè honestum. itaque Athenienses, quod honestum non esset, id ne vtile quidem putarunt, totamq. eam rem, quam ne audierant quidem, auctore Aristide repudianerunt. Melius hi, quam nos, qui piratas immunes, socios vectigales habemus. maneat ergo, quod turpe sit, id numquam esse vtile, nec tum quidem, cùm id, quod esse vtile putas, adipiscare. hoc enim ipsum vtile putare, quod turpe sit, calamitosum est.

## EXPLANATIO.

**I**n Corinthi disturbance } de bello Achæico lib. I. **AEGINETIS**, } vide Valerium lib. ix. cap. de crudelitate, Plutar- chum in Lysandro, Thucydidem lib. ix, Xenophontem lib. 2. Aelianus in Varijs hanc historiam mendosè refert. Seruius Sulpicius ad Cic. Fam. lib. iv. ep. 5. Ex Asia rediens, cùm ab Aegina Megaram versus nauigarem, cæpi regiones circum circa prospicere: post me erat Aegina, ante Megara: dextra Piræus, sinistra Corinthus. Aeginam Atticus quidam Piraceo velut oculis mucum eximendum censebat. Plutarchus in Demosthene. **Quia classe ralebant**, } sic omnes mei. & Tertij. **PENNIVS**, } sic legendum, ex Cic. in Bruto, & Fecto: sicq. est in Tertij libro, & vno ex meis. Est autem Iuniæ familiæ cognomē. Vnus, Peneius. Vnus, Pénis. Vnus, Penus. Duo, Penius. Quinque, Pennius. Vnus, Penneus. Vnus, Perrinus: & in ora, Panætius. Vnus, Peneius, vel Petreius. **CANNENSI calamitate**, } Liuius lib. xxii. Florus lib. 2. cap. 6. **NULLA fuit timoris significatio**, } Fuit, abest ab undecim meis, & Tertij. **ATHENIENSES &c.**, } vide Isocratem in Panegyrico, & Maximum Tyrium Serm. 3. **TROEZENE**, } Troezenios Pomponius Mela fide societatis Attice illustres appellat. NA-

**V**ES conciderent,} Themistocle suadente. **C**YRSILVM  
quendam, &c.} Locus hic à Demosthene pæne exscriptus vi-  
detur, apud quem hæc sunt in oratione pro Ctesiphonte:  
Καὶ τεθ̄ οὐτὸς σεμνός, καὶ πολιτικότα τοῖς υἱοτέροις ἡδονὴν ὑπελα-  
βάντες εἶναι, καὶ τε καὶ τὸν τεσσάρων τεττά τοῦτα πρὸς ξυναγόμενούς  
εἰσιστος. περὶ γέρεων ἀγάπης τοῦ τοῦ αἴρετον τοῖς εργασίαις, καὶ καὶ  
τοὺς χώρας καὶ τῶν πόλεων ἐκπίπειν ἐπέμενεν εἰς τὰς τεχνίτες ἐργάζοντας  
ταῦτα τῷ μὲν τοῦ κατεύθυντος ποιητῇ τῷ δὲ ταῦτα συμβουλεύοντα. Θε-  
μιστοκλέα στρατηγὸν ἵδεσθ. Τοῦ δὲ ἔτακτον τοῖς ὀπταπολιθίας λη-  
φτιαχθέντος Κύριον κατελαβὼν τούτους, σὺ μένον αὐτὸν, αλλὰ καὶ αἱ γυναικεῖ-  
αι ὑπέπειτα γυναικεῖς αὐτούς. οὐ γέρεων ἕξεποντος εἰ τόπος Αἴγαλος κατεπέποντος,  
εὐτῆς στρατηγὸν δὲ ὅτι δουλεύοντο θύτυχοι, αὐτοὶ δὲ γέλων ἦσαν, εἰ μὲν  
μετ' ἐλεύθεροις αὐτοῖς ἐξέτεντο πεπειν. ηγέρεις γέρων αὐτοῖς ἐγένετο καὶ  
τῷ πατέρᾳ καὶ τῷ μακρῷ γερόντῳ θεατῇ πατέρι διαφέρει τὸν πατέρα τοῦτον, εἰ τοι  
ὅτι διὸ τοῖς γονεῦσι μόνον γερόντῳ θεατῇ νομίζειν, τὸ τοις τιμωρεύματος, καὶ τοὺς  
ἀντόμοτον διάνετον πεπεινούσι. δέ τοι καὶ τῷ πατέρι διαφέρει τὸ μή ταῦτα με-  
δεῖν δουλεύοντας ληφθῆσθαι ἐδέστησεν, καὶ φέρετε ταῦτα πάγια στού, τὰς  
ὑπέρεις καὶ τὰς ἀποταλάς, καὶ εἰ δυσλευκόν τοῦ πόλεων φέρειν αἰτάνειν.  
**A**TQVE ille? At ille, duo. Atqui ille, Paullus pater. **S**EQVI  
vilitatem} ord. præp. vndecim mei. & Tertij. **O**PVS non  
esse:} Non opus esse, decem mei, & Tertij. **C**LASSEM La-  
cedemoniorum,} vide Plutarchum in Themistocle, & Aristide,  
& Valerium lib. vi cap. 5. **G**YTHEUM,} Polybius, Ptole-  
mæus, Strabo, Plutarchus, Demosthenes in oratione de corona.  
Linius lib. xxxiv. Gytheum opidum omnium mariti-  
marum rerum Lacedemonijs receptaculum dicit. **A**V DI-  
VISSSES,} Audiuisse, & nouem, & Tertij. Vnus, Audiret.  
**P**IRATAS immunes,} vide Plutarchum in vita Pompeij, Florum  
lib. 3. cap. 6, Epitomenem Liu. xcix. Velleium lib. ii. Orosi lib.  
vi. cap. 4. Eutrop. lib. vi. cap. 4. de vir. ill. cap. vlt. Cic. pro lege  
Manilia, Plin. lib. vii. cap. 25. & 26. & lib. xxxvii. cap. 2. Valeri-  
um lib. ix. cap. 16. **Q**UOD esse vtile putas,} sic duo, & Tertij.  
Duodecim, Quod vtile esse putas. **H**O C enīntipsum vtile pu-  
tare, quod turpe sit calamitosum est.} felicitas enim, & calamitas  
maxima ex parte in armis, & moribus sita est. **T**οῦς διαδοθέ-  
ιαν διαφοραίς, ait Plutarchus, εἰ ἡδει, γηγενέστερον πλεῖστον εἴη.

CICE-

CICERO.

**S**ED incident ( ut supra dixi ) sape caussæ, cum  
repugnare utilitas honestati videatur: ut animad-  
uerendum sit, repugnat ne plane, an possit cum hone-  
state coniungi. eius generis ha sunt questio[n]es: si, e-  
xempli gratia, vir bonus ab Alexandria profectus  
Rhodium magnum frumenti numerum aduixerit in  
Rhodiarum inopia, & fame, summaq. annonæ carita-  
te: si idem sciat complures mercatores ab Alexandria  
soluisse, nauisq. in cursu frumento onustas petentes  
Rhodium viderit: distractus ne sit id Rhodijs, an silentio  
suum quam plurimum venditur sapientem, & bo-  
num virum fingimus: de eius deliberatione, & consul-  
tatione querimus: qui celaturus Rhodios non sit. In  
huiusmodi caussis aliud Diogeni Babylonio videri so-  
let, magno, & graui Stoico: aliud Antipatro, discipu-  
lo eius, homini acutissimo: Antipatro, omnia patefaci-  
enda, ut ne quid omnino, quod venditor norit, emptor  
ignoret: Diogeni, venditorem, quatenus iure ciuili con-  
stitutum sit, dicere vitia oportere, cetera sine infidijs  
agere: & quoniam vendat, velle quam optimè vende-  
re, aduexi, exposui: vendo meum non pluris, quam ce-  
teri: fortasse etiam minoris, cum maior est copia: cui  
fit iniuria? Exoriuntur Antipatri ratio ex altera parte.  
Quid agis? tute, cum hominibus consulere debetas, &  
seruire humana societati: eaq. lege natus sis, ut ea ha-  
beas principia naturæ, quibus parere, & qua semper  
sequi debetas: ut utilitas tua, communis utilitas sit: vici-  
sim, & que communis utilitas, tua sit: celabis homines,  
quid ijs ad sit commoditatis, & copia? Respondebit Dio-  
genes fortasse sic. Aliud celare, aliud est tacere. ne-  
que ego nunc te celo, si tibi non dico que natura

deorum sit, quis sit finis bonorum: quæ tibi plus profest cognita, quam tritici vilitas: sed non, quidquid tibi audire utile est, id mihi dicere necesse est. Immo vero, inquit ille necesse est: si quidem inter homines natura meministi coniunctam societatem. Memini, inquit ille: sed num ista societas talis est, ut nihil suum cuiusque sit? quod si ita est, nec vendendum quidem quidquam est, sed donandum. Vides, in hac tota disceptatione nō illud dici: quamvis hoc turpe sit, tamē, quoniam expedit, faciam: sed ita expedire, ut turpe non sit: ex altera autem parte, ea re, quia turpe sit, non esse faciendum. Vendat ades vir bonus propter aliquam vitia, quæ ipse norit, ceteri ignorant: pestilentes sint, & habentur salubres: ignoretur, in omnibus cūbilibus apparere serpentes: male materia, ruinose: sed hoc prater dominum nemo sciat: quero, si hoc empatoribus venditor non dixerit, adesque vendiderie pluris multò, quam se venditurum putarit: num id iuste, an improbe, fecerit? ille verò, inquit Antipater, improbe facit. quid enim est aliud, Erranti viam non monstrare, quod Athenis exsecrationibus publicis sancitum est, si hoc non est, emptorem pati ruere, & per errorem in maximam fraudem incurrere? plus etiam est, quam viam non monstrare. nam est sciens in errorem alterum inducere. Diogenes contra: Num te emere coegit, qui ne hortatus quidem est? ille, quod non placebat, proscripsit: tu, quod placebat, emisti.

## EXPLANATIO.

**E**XEMPLI graia,} sic duodecim, & Tertij. Duo, Caussa. Libenter autem virtut exemplis: quin rem illustrant, ubi ratio paulò videatur obscurior. **A**B *Alexandria prefectus Rhodum*

**R**hodum,} hunc locum, recitat Nonius, omissa particula Ab, & voce Profectus: cum quo faciunt tres mei, & Tertij liber, & Iulij Galli quoque. Alexandria prefectus Rhodum, tres. A B *Alexandria soluisse*,} Ab, non est in undecim, & Tertij, & in uno Iulij G.lli. Soluere, est, solutus anchoris nauigationi le committere: cui opponitur Appellere. **Q**VAM PLVRIMVM renditur,} Quamplurimo, tredecim, & Tertij. **DIOGENI Balylonio** { Licet igitur interdum à præceptoribus dissentire, modo id modeste fiat. Diogenes præceptor fuit Antipatri, Antipater Panætij, Panætius Posidonij: lib. I. de Diu. **I**VRÆ civili } quod non ita latè patet, ut ius gentium, id est naturæ. **Q**VID agis? } Quid ais? quatuor, & Tertij. In uno neque, Agi: neque, Ais. **T**UTTE } Tu tres, & Tertij. Tum, duo. **V**TE habet, } Et, pro Vt, undecim, & Tertij. Et que semper sequi debeas: } Et consequi debeas: } vnus. Et quæ sequi debeas, decem, & Tertij. **V**ICISSIM, & aequa communis utilitas } Vicissimq. communis utilitas, vnus, & Tertij. Vicissim & communis utilitas, vnus. Vicissimq. & communis utilitas, tres. **Q**VID ijs adsit & commodatis: } Et, non est in decem, & Tertij. Utilitatis, vnus. **Q**VIS sit finis bonorum: } Qui, duo, & Tertij. Quid, vnus. **I**D mihi dicere } Idem, vnus. **S**IQV IDEM inter homines natura meministi coniunctam societatem, } Si quidem meministi esse inter homines natura cōiunctam societatem decem, & tertij. **M**EMINI, inquit ille: } Inquiet, nouem, & Tertij. **V**t nihil suum cuiusque sit? } Cuique, decem. Ut nihil cuiusquam sit, Fulvius Vrbinus ait esse in suo veteri libro. **N**EC vendendum quidem } Ne, duodecim mei. rotum hoc deest in tertij libro. **E**x altera autem parte, } hac erat Antipatri opinio. **P**ESTILENTES sint, } sic Diocletianus, & Maximianus lib. ix. C. de ædil. edito, Pestibilem fundum dicunt, pro eo, qui letiferam herbâ habet. **I**N omnib. cūilib. } Cubiculis, decem, & Tertij. Hoc c. empatoribus } Hæc, duo, & Tertij. **N**VM id iuste, an improbe fecerit? } Num id iniuste, aut improbe fecerit? nouem & Tertij. **I**MPROBE facit, } absunt hæc à decem meis, & tertij. Ille improbe verò, inquit Antipater, vnus. **E**RRANTI viam non monstrare, } ex quo versus Ennij lib. I.

Vt homo, qui erranti comiter monstrat viam,  
Quasi lumen de suo lumine accendat, facit,  
Nihilominus ut ipsi luceat, cum illi accenderit.

SANCITVM est, Sanctum est, quattuor, & tertij. Constitutum est, vnius. Factum est, vnius, mendosè.

## C I C E R O.

**Q**UOD si, qui prescribunt villam bonam, ut ipsi afferunt, benèque adificata: non existimantur se felissime, etiam si illa nec bona est, nec adificata ratione: multominus, qui domum non laudarunt. ubi enim indicium emptoris est, ibi fraus venditoris qua potest esse? sin autem dictum non omne præstandum est, quod dictum non est, id præstandum putas? quid vero est stultus, quam venditorem eius rei, quam vendat, vitia narrare? quid autem tam absurdum, quam si domini iussu ita prece prædicet, donum pestileatem vendo? Sic ergo, in quibusdam causis dubijs, ex altera parte defenditur honestas: ex altera ita de utilitate dicitur, ut id, quod utile videatur, non modo honestum facere sit, sed etiam, non facere, turpe. hac est illa, qua videretur utilium fieri cum honestis saepe, dissensio. Quae dijudicanda sunt: non enim, ut quereremus, expofimus: sed, ut explicaremus. Non igitur videtur nec frumentarius ille Rhodius, nec hic adium venditor celare emptores debuisse, neque enim id est celare, quidquid retineas: sed cum, quod tu scias, id ignorare, emolumen ti tui causa, velis eos, quorum interfit id scire. hoc autem celandi genus quale sit, & cuius hominis, quis non videret certè non aperti, non simplicis est, non ingenui, non iusti, non viri boni: versuti potius, obscuri, astuti, fallacis, malitiosi, callidi, veteratoris, vagri. hac rot, & alia plura, nonne inutile est, vitiorum subire nentia? Quod si vituperandi sunt, qui reticuerunt: quid de ipsis existimandum est, qui orationis vanita-

## IN LIB. III. DE OFF.

tem adhibuerunt? C. Canius, eques B. homo nec infactus, & satis litteratus, cum se Syracusas, otiani causa, non negotiandi, ut ipse dicere solebat, contulisset, dictabat, se hortulos aliquos velle emere, quo iniurare amicos, & vbi se oblectare sine interpellatoribus posset, quod cum percrebuissest, Pythius ei quidam, qui argentariam faceret Syracusis, dixit, venales quidem se hortos non habere, sed licere viti Canto, si vellet, ut suis: & simul ad cenam inuitauit in posterum diem, cum ille promisisset, tum Pythius, ut argentarius, qui esset apud omnes ordines gratus pescatores ad se conuocauit, & ab ipsis petiuit, ut ante suos hortulos postera die pescarentur: dixitque, quid eos facere vellet, ad cenan tempore venit Canius, oppipare paratum erat conuinuum, Cymbarum ante oculos multitudo pro se quisque, quod ceperat, afferebat: ante pedes Pythii pesces abiiciebantur, tum Canius, Queso, inquit, Quid est, o Pythi, tantum ne piscium? tantum ne cymbarum? & ille, Quid mirum? inquit: hoc loco est, Syracusis quidquid est piscium: hic aquatio, bac villa isti carere non possunt, incensus Canius cupiditate, contedit à Pythio, ut venderet, grauata ille primo: quid multa impetrat: emit homo cupidus, & locuples, tati, quanti Pythius voluit, & emit instructos: nomina facit: negotium conficit, inuitat Canius postera die familiares suos: venit ipse mature scalnum nullum videt: querit ex proximo vicino, num feria quadam pescatorum essent, quod eos nullos videret, nulla, quod sciám, inquit ille: sed hic pescari nulli solent: itaque heri mirabar, quid accidisset, stomachari Canius: sed quid faceret? nondum enim Aquilius, collega, & familiaris, meus, protulerat de dolo malo formulas, in quibus ipsis,

*cum ex eo quereretur, quid esset dolus malus: respon-*  
*debat, cum esset aliud simulatum, aliud actum. hoc*  
*quidem sanè luculenter, ut ab homine perito definitio-*  
*ni. ergo & Pythius, & omnes aliud agentes, aliud si-  
 mulantes, perfidi, improbi, malitiosi sunt. nullum igi-  
 tur eorum factum potest utile esse, cum sit tot vitium  
 inquinatum.*

## EXPLANATIO.

*V*T quereremus, } vt quæstionem in medio non explicata  
 relinquemus. *N*ON igitur &c. } solum honestum, ut Stoici, Cicerò sequitur. sentit igitur cum Antipatro.  
*N*ON simpliciter, } id Est, non legitur in undecim meis, &  
 Tertij. *O*BSCVRI, } qui suam voluntatem non facile ostenderet. *O*RATIONIS vanitatem adhibuerunt? } falsum dixerunt. *C*ANIVS, } permultæ familie Romanæ nomen à  
 bestiis sumperunt, ut Canij, Ouij, Galli, Porcij, Asinij. De  
 hoc Canio i i. de Orat. & ad Att. *H*OMO nec infacetus, } Homi-  
 no, abest ab omnibus meis, & Tertij. *N*ec infacetus, & fatus  
 litteratus, } sic Fam. lib. x. ep. i. Nec minor, & gaudeo. Di-  
 CTITABAT } Dictabat, duodecim mei, & Tertij. Ticebat,  
 vnus. *V*ELLE emere, } ord. præp. undecim mei, & Tertij. *I*NTERRPELLATORIBVS } Interpellationibus, duo mei.  
*A*RGENTARIAM faceret } argenteum invenit. *S*YRA-  
 CVSIS, dixit, } Dixit, non est in decem meis, & Tertij. In  
 uno est, Inquit, post verbum Quidem. Et simul ad canam ini-  
 uitauit in posterum diem. } Et simul ad cenanum hominem in hor-  
 totos inuitauit in posterum diem, omnes mei, & Tertij. Vt  
 argentarius, qui esset &c. } Qui esset vt arg. quinque, & Tertij.  
 Qui vt esset arg. vnus. *A*B ijs petiuit, } commentum simile  
 de Egestatis Sicilię populis, Athenienses ad bellum Syracusanum  
 hortantibus, narrat Thucydides lib. vi. argentum enim non solum, sed à finitimis populis commodato acceptū, ostentarunt. *P*OSTERA die } Postero die, vnus, Postridie,  
 duo, & Tertij. *T*EMPORE venit } Tempori, Tertij liber.  
 probo. *O*PIPARE paratum erat conuiuum, } Apparatum, duodecim mei, & Tertij. Opipare à Pythio ad apparatum erat conuertit. *C*YMBARVM } Cymbæ dictæ à velocitate. *K*ubæ  
 Hesichio,

## IN LIB. III. DE OFF.

385

*H*esichio, ὄψεις. Vide & Sudam. *A*NTЕ oculos } sic libri veteres. *D*Ambrosius, Hortulos, videtur legisse. *P*ro se quisque, } id est, pro virili. Liu. ii. Cum hostes adfenserit, pro se quisque in urbem ex agris demigravit. Virg. Pro se quisque viri. *G*RAVATE ille primo. } Grauare, duo. *E*MIT instructos, } quibus nihil, quod vñsi, & ornamento sit, deesset. *N*OMINA facit, } id est, Nomina in libris apparere facit. *P*OSTERA die } Postridie, quatuor, & Tertij. Postriduum, vnus. *S*CALMVM, } Vide Pollucem lib. i. ca. 9. *A*QVILLIVS, } de Aquillio, in Topicis, & Plin. lib. 17. cap. i. *C*OLLEGA, } in prætura. quod indicat oratio pro Cluentio, sic & in Topicis eum appellavit, & lib. iii. de nat. de. *S*ANE luculenter, } Luculentè, tredecim mei, & Tertij. Luculentem, vnus. *M*ALITIOSI sunt. } Sunt, non est, in sex, & Tertij. *T*OT vñtis } perfidia, improbitate, malitia.

## CICERO.

*Q*VO D si Aquilliana definitio vera est: ex omni vita simulatio, dissimulatio tollenda est. ita nec, ut emat melius, nec, ut vendat, quisquam simulabit, aut dissimulabit vir bonus. atque iste dolus malus etiam legibus erat vindicatus: ut tutelex i i. tab. & circumscriptio adolescentium lege Latoria, & sine lege, iudicij, in quibus, Ex fide bona, additur reliquo rum autem iudiciorum hac verba maxime excellunt, in arbitrio rei uxoria, Melius, æquius: in fiducia, Vt inter bonos bene agier, quid ergo? aut in eo, quod melius, æquius, potest villa pars inesse fraudis: aut, cum dicitur, Vt inter bonos bene agier, quidquam agi dolose, aut malitiose, potest? dolus autem malus simulatione, & dissimulatione, ut ait Aquilius, continetur, tollendum est igitur in rebus contrahendis omne mendacium. non licitatem venditor, nec, qui contra se liccat, emptor apponet: eterque, si ad eloquendum

venerit, non plus, quām semel, eloquetur. *Q.* quidem *Scauola*, *P.* filius, cūm postulasset, ut sibi fundus, cuius emptor erat, semel indicaretur, idq. vendor ita fecisset, dixit, se pluris astimare, addidit centum millia. nemo est, qui hoc viri boni fuisse neget: sapientis negant: vt, si minoris, quām potuisset, vendidisset. Hac agitur est illa perniciens, quōd alios bonos, alios sapientes existimant: ex quo Ennius: Nequidquam sapere sapientem, qui sibi ipsi prodeesse nequiret. verè id quidem: si, quid esset Prodeesse, mihi cum Ennio conueniret. Hecatonem quidem Rhodium, discipulam Panatyt, video in ijs libris, quos de Officijs scripsit *Q.* Tuberoni, dicere, sapientis esse, nihil contra mores, leges, instituta facientem, habere rationem rei familiaris: neque enim solum nobis diuites esse volumus, sed liberis, propinquis, amicis, maximeq. reip. singulorum enim facultates, & copia, diuitiae sunt ciuitatis. huic *Scauola* factum, de quo paullo ante dixi, placere nullo modo potest. etenim omnino se negat facturum compendij sui causa, quod non liceat. huic nec laus magna tribuenda est, nec gratia. Sed, siue & simulatio, & dissimulatio dolus malus est, per pauca res sunt, in quibus dolus iste malus non veretur: siue vir bonus est is, qui prodeft, quibus potest, nocet nemini: recte insitum virum bonum non facilē reperiemus. Numquam igitur est vitile, peccare: quia semper est turpe: &, quia semper est honestum, virum bonum esse, semper est vitile.

## EXPLA.

## EXPLANATIO.

**V**T vendat, quisquam simulabit,} Quidquam, vndeclim, & Ter  
tij. Quidquid, vnuis. Quicunque, vnuis. ATQUE iste dolus  
malus } Atqui, legendum puto. Cur autem ita legam, facile  
patet. **T**UTELA } Seruus tutelam ait esse vim, atque poter  
statem in capite libero constitutam, ad tuendum eum, qui per  
actatem sua sponte se defendere nequit, iure ciuili datam, ac  
permittam. **C**IRCUMSCRIPTIO adolescentium, } Si quis  
adolescentes deceperit, atque in fraudem illexisset, Terentius  
ait. **L**EGE Lectoris, } de qua Suetonius lib. iv. Pratorum, apud  
Prisc. in verbo, Stipula, & Cicero lib. iii. de nat. de. **S**INE le  
ge iudicij, } Lex puniri, iudicium damnat. **V**T inter bonos be  
ne agier, } ad Trebatium, Fam. lib. vii. ep. 1. Vbi porrò erit illa  
formula fiducie? **V**t inter bonos bene agier oportet. **D**O  
LOSE, aut malitiosè potest? } Malitiosè, aut dolose potest, tres.  
Malitiosè, aut dolo' potest, vnuis. **I**N rebus contrahendis } Ex,  
pro In, vndeclim, & tertij. **C**ONTRA se liceatur, } Se, abest  
ab uno. Contra asse liceatur, legit Muretus: exemplisq. confir  
mat, Variarum Leet. lib. xv. cap. 3. **E**MPTOR opponet: } Appo  
net, octo, & tertij. **I**NDICARETVR, } id est, aestimaretur.  
Malè Nonius interpretatur, promitteret, addicereatur. **S**A  
PIENTIS negant: } qualis Carneades. Laetant. lib. de Iustitia,  
cap. 17. & 18. **A**LIOS bonos, alios sapientes } cūm reuera distin  
giui non possint, omnes enim sapientes boni sunt. **Q**vi sibi  
ipsi pro deesse nequiret. } Qui ipse sibi prod. nequiret, octo. Ipse,  
quattuor. Ipse, nō est in uno. Non quiret, duo. Catur & Fam.  
lib. vii. ep. 6. Sumptum ab Euripidis Medea:

*Μηδέ οὐ φίσιν, οὐτε οὐχ' αὐτῷ σφέδες.*

**S**INGULORVM, enim facultates, & copiae, diuisae sunt ciuitatis, }  
sic Isocrates ad Nicocleum: Απότινα τέ τοῦ εἰκονιτοῦ πλω πόλιν,  
οικεῖ τὸν κελῶ βρατεύωνται εἰ. **N**EGAT } *Scauola*. **E**T  
ENIM omnino se negat f. } Etenim omnino tantum se negat f.  
vndeclim, & tertij. Etenim omnino negat tantum se f. vnuis  
Etenim tantum omnino se negat f. vnuis. **H**YIE } *Hecaton*:  
qui discedet à lege naturæ, ius ciuile tantum feruat, idque  
latiſſe putat: cūm *Scauola* legem etiam naturæ, quæ multo  
patet latius, quām ius ciuile, feruandam in emendo censu  
erit. **T**RIBUENDA est nec gratia. } Tribuenda, nec gratia est,

yndecim, & Tertij. SIVE & simulatio, } Et, abest à tribus. In quibus dolus iste malus non veretur, } In quibus non dolus malus iste veretur, duodecim, & Tertij. R E C T E i n s l u m v i r a m b o n u m n o n f a c i l e r e p e r i e m u s . } Istum, duo veteres libri, & ita ante multos annos emendandum putavit Pater in annotationibus in margine adscriptis. Reperimus, septem, & Tertij.

## C I C E R O.

**A**C de iure quidem prædiorum sancitum est apud nos iure ciuili, ut in his vendendis vitia etiam dicentur, quæ nota essent venditori. nam, cum ex duodecim tabulis satis esset cautum, ea praestari, quæ essent lingua nuncupata: quæ qui inficiatus esset, dupli pœnam subiret: a iuris consultis etiam reticentia pœna est constituta. quidquid enim inest prædio vitij, id statuerunt, si venditor sciret, nisi nominatum dictum esset, praestari oportere. ut, cum in arce augurium augures acturi essent, insuffisentque T. Claudium Centimalum, qui ades in Cœlio monte habebat, demoliri eas, quarum altitudo officeret aufficiis: Claudius proscriptis, insulam vendidit: emit P. Cafurnius Lanarius. huic ab auguribus illud idem denuntiatum est. itaque Calpurnius, cum demolitus esset, cognouissetque, Claudium ades postea proscriptisse, quam esset ab auguribus demoliri iussus, arbitru illi audegit: Quidquid sibi dare facere oporteret ex fidè bond. M. Cato sententiam dixit, huins nostri Catonis pater. ut enim ceteri ex patribus, sic hic, qui illud lumen progenuit, ex filio est nominandus. is igitur index ita pronuncianit: cum in venundando rem eam scisset, & non pronunciaisset, emptore damnum praestare oportere. igitur ad fidem bonam statuit pertinere, notum esse emptori

emptori vitium, quod noſſet venditor. quod ſi reele di- iudicauit, non recte frumentarius ille, non recte adiu pestilentium venditor tacuit. Sed huimodi reticen- tia iure ciuili omnes comprehendendi non poſſunt: quæ au- tem poſſunt, diligenter tenentur. M. Marius Gratidianus, propinquus noſter, C. Sergio Orata vendide- rat ades eas, quas ab eodem ipſe paucis ante annis e- merat. ha Sergio feruebant: fed hoc in mancipio Ma- riū non dixerat. adducta res in iudicium eſt. Orata, Crassus, Gratidianum defendebat Antonius. ius Cras- sus ergebat, quod vitij venditor non dixisset, ſciens, id oportere praestari: equitatem Antonius: quoniam id vi- tium ignotum Sergio non fuſſet, qui illas ades vendi- dier, nihil fuſſe neceſſe dici: nec eum eſſe deceptum; qui id, quod emerat, quo iure eſſet, teneret. quorūm hac? ut illud intelligas, non placuisse maiorib⁹ noſtris astutos. fed aliter leges philosophi tollunt astutias: le- ges, quatenus manu tenere poſſunt: philosophi, quatenus ratione, & intelligentia. Ratio igitur hoc poſtulat, ne quid inſidiosè, ne quid ſimulatè, ne quid fallaciter. Suntne igitur inſidia, tendere plagas, etiam ſi excita- turus non ſis, nec agitaturus? ipſa enim fera, nullo in- ſequente, ſape incidunt. ſic, tu cum ades proſcribas, tabulam tamquam plagam ponas, domum propter vi- tia vendas, in eam aliquis incurrat imprudens: hoc quamquam video propter depravationem conſuetudi- nis neque more turpe haberi, neque aut lege ſanciri, aut iure ciuili: natura tamen lege ſancitum eſt. ſocietas enim eſt, (quod et ſe ſape dictum eſt, dicendum tamen eſt ſapius) latifimè quidem qua pateat, hominum in- ter homines: interior, eorum, qui eiusdem gentis ſunt propior, eorum, qui eiusdem ciuitatis. itaque maiores

aliud ius gentium, aliud ius ciuile esse voluerunt. quod enim ciuile, non idem continuo gentium: quod autem gentium, idem ciuile esse debet. sed nos, veri iuris, germaneg, iustitiae solidam, & expressam effigiem nullam tenemus: umbra, & imaginibus utimur: eaque ipsas vitia sequeremur. feruntur enim ex optimis naturae principijs, & veritatis exemplis, nam, quanti verba illa? Vti ne propter te fidem in te tuam captus, fraudatusve sim. quam illa aurea? Ut inter bonos bene agier oportet, & sine fraudatione. Sed, qui sunt Boni, & quid sit Bene agier, magna questio est. Quinetus quidem Scanala, pont. max. summam vim esse dicebat in omnibus ijs arbitriis, in quibus adderetur. Ex fide bona: Fideiq. bona nomen existimat manare latissime, idq. versari iu. tutelis, societatibus, fiducijs, mandatis, rebus embris, venditis, conductis, locatis: quibus vita societas continetur: in his, magni esse iudicis, statuere, praesertim cum in plerisque effent indicia contraria, quid quemque cunque prastare oportet. Quocirca astutia tollenda sunt. eaque malitia, qua vult quidem videri se esse prudentiam: sed abest ab ea, distatq. plurimum. prudentia est enim locata in delectu honorum, & malorum: malitia, si omnia, qua turpia sunt, mala sunt, mala bonis anteponit.

## EXPLANATIO.

**S**ANCITVM est apud nos iure ciuili,} Digestorum lib. xxi. &  
lib. xliii. Sanctum, vnus, & Tertij. **VITIA** etiam dicerentur, } Etiam, non est in quatuor, & tertij. **SATIS** effet ca-  
tum, } Cautum, non est in nouem, & tertij. **QVAE** effent lin-  
gua nuncupata, } lib. i. de Oratore: Totum illud, Vti lingua nū  
capasset, non in xii. tabulis, quas tu omniibus bibliothecis  
anteponis,

anteponis, sed in magistri carmine scriptū videretur. **DVR** pœnam, sic duo, & Tertij, recte. Malè alij, Duplicem pœnam, vel, Duplici. **RETICENTIAE** pœna, actio redhibitoria dicatur Dig. de adilicio editio. **QVIDQVID** enim inest predio virij, } Quidquid enim est in predio virij, nouem, & tertij. Est enim in pr. vnus. In predio est, vnus. Est, non legitur in duobus. Vide autem de Vitij, & Morbi differentia Agellum lib. iv. cap. 2. **IN ARE**, vide Festum in verbo, Acani, & in, Auguraculum. **T. CLAVDIVM** Centim. } duo non habent praenomen. Titium, vnus. Ti. vnus. Vide Val. Max. lib. ix. cap. de priuatis iudicijs. **DEMOLIR** eas, quarum alt. } Ea, quorunq. vnus, & Tertij. **OFFICERET** auspicijs, } ne rite fierent, sic locutus & Val. Max. in eadem historia, Cic. de Diu. Contemplationi celi officere. Et de Orat. i. Quod cuicunque particulæ celi officeretur. Obstruere luminibus, pro domo, & apud Iurisconsultos. **INSVLAM** vendidit. } Festus: Insulae dictæ propriæ, quæ non iunguntur communibus parietibus cum viciniis: Circuituq. publico, aut priuato cinguntur: à similitudine videlicet earum terrarum, quæ fluminibus, ac mari eminent, suntq. in silo positæ. **P. CALPVRNIVS** **Lanarius**, } vereor interdum, ne parum nota gentis nomen occasionem dederit mendo. Calfurnium enim Lanarium in antiquo lapide no- minari obseruanit, ex eo fecit aliquis, Calfurnius: & ita scriptum in duodecim meis, & impressum in quamplurimis: vnde alias, Calphurnius, in uno meo: alias, Calpurnius, in quo modo vno, & tertij: vt error ex errore, nascitur. Diuus quidem Hieronymus in Epistolis ter mentione facit cuiusdam Calfurnij, non Calpurnij, Lanarij. Sed hanc totam contiouersiam dirimit, vt mihi quidem videtur, antiquus lapis, in radice Capitolij, in pariete priuatæ domus, ita inscriptus:

C. CAFVRNIVS  
C. L. ANTIOCHVS  
LANARIUS  
VETVRIA. C. L  
DEVTERA  
MONVMMENTVM  
FECIT. SIBI. ET. SVEIS  
IN. FR. P. XV. IN. A. P. XX

Quam eas esset, Fulvius Vrsinus legit, ex antiquo libro. ARBITRVM illum adegit: Quidquid sibi dare, facere oportet ex fide bona. } Sensus hic aliis esse non potest, quām iudicis arbitrio rem committere, Claudium coēgit: ad arbitrium Claudium adduxit. At Valerius Max. lib. IIX. cap. 2. ita factum hoc exponit, non vt à Cafurnio Claudius ad arbitrium adductus esse, sed vt arbitrium Cafurnius vna cum Claudio ad rem cognoscēdam adduxisse videatur. eius verba sunt hæc: Cafurnius demoliri domum coētus, M. Porcius, incliti Catonis patrem, arbitrum cum Claudio adduxit, vt formulam daret: Quidquid sibi dare facere oportet ex fide bona. Cato, vt est doctus, de industria Claudium edictum sacerdotum suppressisse, continuò illum Cafurnio damnavit. Idem paullo post similiter locutus est. De qua re, inquit, C. A. quilius, vir magnæ auctoritatis, & scientia iuris ciuilis excellens, iudex adductus, prudentia, & religione sua mulierem repulit. Valerio igitur auctore, non is, qui litem intendit, aduersarium adigit ad arbitrium, id est, cogit ad arbitrium venire: sed arbiter ad formulam dandam, id est ad iudicandum ex visitata actionis formula, ab utroque adducitur. quod mihi quidem pæne persuadetur. nam Valerius eam rem ita narrat, vt si quid in verbis à Cicerone discrepat, sententiam magis appearire voluisse videatur. quare suspicor, Illum, abundare, & inculcatum, ac receptū ab ijs esse, qui Arbitrum adegit, dictum existimarunt, pro, ad arbitrium ire coēgit. (nam in uno meo est, Ad arbitrum illum adegit) Nec verò me, vt ita credam, viuis Valerij mouet auctoritas. exemplum hoc simile in Topicis notaui: Quemadmodū, si in vrbe de finibus controuersia est, quia fines magis agrorū videntur esse, quam̄ vrbis, finibus regundis adigere arbitrū non possis: sic, si aqua pluvia in vrbe nocet, quoniā restota magis agrorū est, aquæ pluviae arcendæ adigere non possis: arbitrū. Hic certè, qui ad arbitrū adigatur, nullius mentio est. arbiter igitur ipse adigitur, id est, vt interpretatur Valerius, adducitur. Eadem ratio mihi suspicionem affert de mendo in oratione pro Comœdo. nam, vbi est, Cur non arbitrium pro socio. adegeris Q. Roscium, quæro: rectius fore arbitrō: Cur non arbitrium pro socio adegeris, quæro: id est, cur non arbitrium ad iudicandum ex formula pro socio adduxeris. nam illud, Q. Roscium, additum fortasse ex eadem inscribitur, quæ, Illum, inculcatum hic esse dixi.

Argue

Atque hæc tamen ita sentio, nihil vt affirmare audeam, nisi aliquam libri veteres opem afferant. interim excitare aliorū ingenia, quibus ego dissentientibus à me non irascari, veritatem ostendentibus etiam gratias agam, non inutile fuit. Quid quid sibi sententia pendet è superioribus. ideo enim Cafurnius arbitrum adegit, vt statueret, quidquid sibi Claudium dare, facere oportet ex fide bona. quæ sunt antiquæ verba formulæ de dolo malo. Et, Dare facere, pro, De ea re facere, quod erat in omnibus vulgaris libris, recte ab hominibus ingenio, doctrinaq. præstantibus repositum est. nam, qui sibi promitti volebat, ita stipulabat. Promittis ne, quidquid te dare, facere oportet? Respōdebat, Promitto. Exstat in Digestis exempla similia. Lib. v. tit. 2. L. Titia. 13. ff. de inoff. test. ex Scœula lib. 3. Responsoriū: Ea omnia, quæ supra dari, fieri iussi, ea dari, fieri volo. Et postea: Ea vti dentur, siant. Lib. xix. tit. 1. L. Idem Julianus. 13. ff. de actionibus empti, & vēditi, ex Vlpiano lib. 32. ad Edictū: Id emptorem dare, facere, præstaréque oportere. Lib. xxxi. de Legat. & fideicom. 2. tit. 1. L. Si scripl. 46. ex Proculo lib. v. Epistolarum: Si scripisset, qui legabat, Quid qui dñihi L. Titiū dare, facere oportet, Sempronio lego: nec adiecisset, Præsens, in diem ve: non dubitarem, quin ea pecunia comprehensa non esset, cuius dies moriente eo, qui testamentum fecisset, nondum venisset. Lib. xxxiv. tit. 3. L. Cum ita, 19. ex Modestino lib. ix. Regularum: Cūm ita testemur, Heres meus damnas esto liberare illum, quod is negotia mea gessit: & siquid eum mihi dare, facere oportet, ab eo non exigere. &c. Lib. xli. v. tit. 7. L. Actionum, 25. ff. de oblig. & act. ex Vlpiano libro singulare Regularum: In persona actio est, qua cum eo agimus, qui obligatus est nobis ad faciendum aliquid, vel dandum, & semper aduersus eundem locum habet. Lib. xli. v. tit. 1. L. Cum stip. 125. de verb. obl. ex. Paulo lib. ii. Quæstionum: Cūm stipulamur, Quidquid te dare, facere oportet, nihil aliud, in stipulationem deducitur, quām, quod præsentī die debetur. Ibidem supra, l. Scire, 29. ex Vlpiano l. xl vi. ad Sabinum: Constat, siquidem ita stipulatus sum, Quod ex causa conditionis dare, facere oportet? stipulationem valere. Et paullo post, l. Qui sic, 47. ex Vlpiano lib. 2. ad Sabinum: Qui sic stipulatur, Quod te mihi illis Kalendis dare oportet, id dare spondes? &c. Ibidem, l. Si à col. 89. ex Paullo lib. ix. ad Plautum: Si à colono, cui fundū in quinquennium locauerit,

post tres annos ita stipulatus fuiro: Quidquid te dare, facere oportet: Lib. xlvii. tit. 4. L. Et vno, 18. ff. de Acceptil. ex Florentino lib. 9. Institutionum: Quidquid te mihi ex quacumque causa dare, facere oportet, oportebit, praesens, in diem ve. &c. Lib. L. tit. 16. L. Sepe ita, 53. ff. de verb. sign. ex Paullo lib. 59. ad Edictum: Quod eum dare, facere oportet. Instit. lib. 4. tit. 3. Appellamus in personam actiones, per quas ei dare, aut facere oportere intendit aduersarium. Hec igitur, à Cicerone recitata, verba sunt Cafurnij, cum Claudio apud arbitrum stipulantis: & additum est, Ex fide bona, quasi Claudio in rebus vendendis non ex fide bona sècum egisset, virtio, quod sciuisset, occultato. **H**uius nostri Catoni pater. } qui se Vitæ sua manu occiderat, ne seruientem patriam adspiceret. Agellius lib. I, cap. 19. In venundando } In vendumdo, Tertij. In vendendo, nouem. PRONVNCIAVISSET, } Pronuinciasse, undecim. DITVDICAVIT: } Iudicauit, tredecim. & Tertij. M. MARIVS GRATIDIANVS, } Asconius, Valerius. Plut. in Sulla, Cic. III. de Leg. PROPINQVVS noster, } Ciceronis enim a- uus Gratidiani sororem matrimonio coniunctam habuit. de Leg. III. C. SERGIO Orate } Plin. lib. 9. cap. 54. Valer. lib. 9. cap. 1. Macrob. lib. 3. cap. 15. IN mancípio } axium domino transferendo, cedendoque. CRASSVS, Antonius, } omni concessu principes in eloquentia. vide in lib. de claris orat. IVS } rò azei bozixuv. AEQUITATEM rò imaxit. QVORVM hec } Quorsus, quinque, & Tertij. QVATENVS manutene possum: } sic omnes libri veteres. In Bruto: Cùm indicia mortis se compresisse, & manu tenere diceret. Sicut, cùm ades proscribas, } Cù, non est in tribus, & Tertij. Sic tu si ades proscripto. Tu, non est in quattuor. NATVRAE lege } cuius illud est, Quod tibi fieri non vis, alteri ne feceris. QVOD enim ciuile, &c. ius gentium patet latius, quam ius ciuile. Quid enim ciuile: Enim, non est in decem & Tertij: NATVRAE principiis, } Principiis, abest à duodecim meis, & Tertij. BENEF agier, magna questio est. } sic imprimentum curauit Pater ante me natum. vt mirer, quosdam de hoc loco à sé nuper emendato somnia re. Contra tamen omnes mei veteres, & Tertij. MALABONIS anteponit, } sic quattuor mei. Decem, & Tertij, Malabonis ponit ante.

CICE-

**N**ec verò in pradiis solum ius ciuile, ductum à na-  
tura, malitiam, fraudemq. vindicat: sed & in  
mancipiorum venditione venditorum frans omnis  
excluditur. qui enim scire debuit de sanitate, defuga,  
de fructis, præstat edicto adilium. heredum alia causa  
est. Ex quo intelligitur, quoniam iuris natura fons sit,  
hoc secundum naturam esse, neminem id agere, ut ex  
alterius prædetur inscitia. nec villa pernicies vita ma-  
ior inueniri potest, quam in malitia simulatio intelli-  
gentia. ex quo illa innumerabilia nascentur: ut utilia  
cum honestis pugnare videantur. quotus enim quisque  
reperietur, qui, impunitate, & ignorantie omnium  
proposita, abstinere posuit iniuria: periclitemur, si pla-  
ceret, in ijs quidem exemplis, in quibus peccari vulgus  
hominum fortasse non putat. neque enim de sicariis,  
veneficiis, testamentariis, furibus, peculatoribus hoc lo-  
co differendum est: qui non verbis sunt, & disputatione  
philosophorum, sed vinculis, & carcere, fatigandi: sed  
huc consideremus, qua faciunt ij, qui habentur boni. L.  
Minucij Basili, locupletis hominis, falsum testamen-  
tum quidam è Gracia Romam attulerunt, quod quo  
facilius obtinerent, scripserunt heredes secum M. Cra-  
fsum, & Q. Hortensium, homines eiusdem ciuitatis  
potentissimos. qui, cum illud falsum esse suspicarentur,  
sibi autem nullius essent consilij culpa. alieni facinoris  
munusculum non repudianuerunt. quid ergo? sat in hoc  
est, ut non delinquisse videantur? mibi quidem non vi-  
detur. quamquam alterum amani vitum, alterum  
non odi mortuum. sed, cùm Basilius M. Satrium, so-  
roris filium, nomen suum ferre voluisse, eumq. fe-  
cisset heredem: hunc dico, patronum agri Piceni, &

*Sabini: (ò turpem notam temporum illorum) non erat equum, principes ciuitatis rem habere, ad Satrum nihil, prater nomen, peruenire. etenim, si is, qui non defendit iniuriam, neque propulsat à suis, cum potest, iniustè facit, ut in primo libro differui: qualis habendus est is, qui non modo non repellit, sed etiam adiuuat iniuriam? mibi quidem etiam vera hereditates non honeste videntur, si sint malitiosis blanditijs officiorum, non veritate, sed simulatione, quaesita. At qui in talibus rebus aliud utile interdum, aliud honestum videri solet: falso: nam eadem utilitas, qua honestatis, est regula. qui hoc non preuiderit, ab hoc nulla frans aberit, nullum facinus. sic enim cogitans: est istud quidem honestum, verum hoc expedit: res, à natura copularata, audebit errore diuellere: qui fons est fraudum, maleficiorum, scelerum omnium. itaque, si vir bonus habeat hanc vim, vt si digitis concreperit, posset in locupletium testamenta non en eius irrepere, hac vi non utatur, ne si exploratum quidem habeat, id omnino neminem umquam suspicaturum. at si dices hanc vim M. Crasso, ut digitorum percusione heres posset scriptus esse, qui reuera non esset heres: in foro, mibi crede, saltaret. homo autem iustus, & is, quem sentimus virum bonum, nihil cuiquam quod in se transferat, derrahet. hoc qui admiratur, is se, quis sit vir bonus, nescire fateatur.*

### EXPLANATIO.

*N*n mancipiorum venditione, an sana, fugitiua, fugacia. De sanitate, Fam.lib.12.ep.10. De fuga, Lactantius lib.5. cap.17. SECUNDVM naturam &c. hinc, Quod tibi fieri non vis, alteri ne feceris, Nature lex. IN malitia simulatio intelligens-

telligentia. } infra: Prudentiam vult imitari malitia. ILLA innumerabilia } Ista, undecim, & Tertij. PECCARI } sic decem mei, & Tertij. probo. SED vinculis, & carcere fatigandi: } sic Nonius ex industria, non, Castigandi: & explanat, Cohibendi, comprimendi. sic etiam sex mei, & Tertij. L. MINV-  
CII Basili, } sic lego cum Valerio Max.lib.9.cap.4. & cum optimo Tertij libro. & cognomen, Basili, malo, quam, Basili: quod videretur esse nomen gentis. Basillus, obseruau in antiquis lapidibus.

*Rome, in hortulis Cesia.*

I V N O N I  
R E G I N A E  
P A E Z O N  
A Q V I L I A E S  
B A S I L L A E S

*In Parione, in edibus Francisci Lischæ.*

I O V I . O P T V M O  
M A X I M O . D O L I C H E N  
P A E Z O N . A Q V I L I A E S  
B A S I L L A E S . A C T O R  
C V M . P A E Z V S A F I L I A . S V A

D. D

Vt hic fortasse, Basillus, etiam legi posset, mutatione I in L, HOMINES eiusdem ciuitatis potentissimos, recte sic legitur in octo meis. nam, Eiusdem ætatis, ad rem minus pertinet. tuendi enim falsi testamenti consilium adiuuabatur summa potentia duorum hominum eiusdem ciuitatis: quod spectarunt heredes falsi, eadē vero ætas quid afferebat ad spem obtinendi testamenti: Libentius legerem, nisi veteres omnes aduersarentur libri, pro, Eiusdem ciuitatis potentissimos, Ciuitatis nostras potentissimos: vti legitur in Valerio Max.lib.9. cap.4. Ætatis, tamē legitur in quinque, & Tertij. Potentiissimos: Crassum diuitiis, Hortensem eloquentia. ALTERVM amandum viuum, } Hortensem æmulum, cuius mortem deplorat in libri procario, qui inscribitur Brutus, ALTERVM non odii mortuum } M. Crassum, quem viuum oderat, & in Paradoxis insectatur. SATRIVM, } in librorum varietate, quorum septem Satirum, duo Satirum, quatuor, & Tertij Satirum habent, familiam eam veriorem esse puto, quæ veterum lapidum testimonio confirmatur.

Rome in edibus Hadriani Fusconis,

Episcopi Aquinatis. 1.

D I S . M A N I B Y S

N . S A T R I

A V G V S T A L I S

S A T R I A

N Y M P H E

V E R N A E . S V O

C A R I S S I M O

V I X . A N N . X X I I

M . I . D I E B V S . I I I I

Pontis Curui. 2.

P . S A T R I V S . L . F

L O C . M O N . D E D

P . H I L A R O . T Y R A N I D I

L I B E R T . E T . P E R E N N O

T E R T I O . I N . F . P . X I I . I N . A G R . O . P .

X I I I I

S e n t i n i . 3.

L . S E N T I N A T I

L . F . L E M . V E R O

I I I I . V I R . Q V I N Q .

I V R . D I C

O R D O . E T . P L E P S . S F N T I

H . A . I . R

S A T R I A . A N . F . V E R A

F I L . P I S S I M O

L . D . D . D .

O turpem notam &c. } apparit igitur eos partem illius hereditatis accepisse. Non erat equum, } sic omnes mei, & tertij. Num, Fulvius, ex vetere suo. PRINCIPES ciuitatis } Ciuis, septem, & tertij. & recte. pro, Ciues: quod est in uno. Huius, vnum: Eius, alter: mendosè. VERAE hereditates } testamento legatae: cùm illa, proximè nominata, vera non fuerit. PRAEVIDERIT, } sic quinque. Prouiderit, octo. Peruidet, tertij. quod rectius puto. Ab hoc nulla fraus aberit. } reciprocè. pro, Ipse non abicit à nulla fraude. EST istud quidem honestum, } sic decem mei. Illud, virus. Id, vnum. Ituc,

Tertij.

Tertij. Vnus non habet. F R A U D U M , } Fraudium, septem & Tertij. Sic Phil. 11. Laudij. Sic &, C uitatiū, Annæus Cornutus ad Italicum, de Virgilio lib. 10. Iamq. exemplo tuo etiā principes ciuitatum, & poëtae incipient similia fingere. & in antiquo lapide.

*Firmi, in Piceno.*

L . V O L C A T I O . Q . F .

V E L . P R I M O

P R A E F . C O H . I . N O R I C O R

I N . P A N N . P R A E F . R I P A E

D A N V V I . E T . C I V I T A T I V M

D V A R . B O L O R . E T . A Z A L I O R

T R I B . M I L I T . L E G . V

M A C E D O N I C A E . I N

M O E S I A . P R A E F . A L A E . I .

P A N N O N I O R . I N . A F R I C A

I I . V I R O . Q V I N Q .

F L A M I N I . D I V O R V M

O M N I V M . P . C

E X . T E S T A M E N T O . E I V S

P O S I T A

M . A C C I O . S E N E C A

.... M A N L I O . P L A N T A

I I . V I R . Q V I N Q .

S I d i g i t i s concreperit, } vnde prouerbium, Ad digituli crepitum, id est, minimo momento. L O C V P L E T I V M } sic se- p t e m , & Tertij. I N f o r o saltaret. } præ gaudio, vt pote qui sum- m u m bonum non in honesto, sed in diuitiis, opib[us]q[ue] pone- ret. Saltationem autem apud Romonos turpem fuisse, vetera scripta abunde testantur.

## C I C E R O .

**A**T vero, si quis voluerit animi sui complicatam notione euoluere, iam seipse doceat, cum virum bonum esse, qui proficit, quibus posset: noceat nemini, nisi lacefatus iniuria, qui ergo hic non noceat, qui quo- dam quasi veneno perficiat, ut veros heredes moueat,

in eorum locum ipse succedat? Non ergo faciat, dixeris quis, quod utile sit, quodque expediat? Immo intelligat, nihil nec expedire, nec utile esse, quod sit iniustum. hoc qui non didicerit, bonus esse non poterit. Fimbriam consularem, audiebam de patre nostro puer, iudicem M. Lutatio Pythia fuisse, equiti R. sane honesto, cum is sponsionem fecisset. Ni vir bonus esset: itaque si dixisse Fimbriam, se illam rem numquam iudicatum: ne aut spoliaret fama probatum hominem, si contra iudicasset: aut statuisse videretur virum bonum aliquem esse, cum ea res innumerabilibus officiis, & laudibus contineretur. Huic igitur viro bono, quem Fimbria etiam, non modo Socrates, nouerat, nullo modo videri potest quidquam esse utile, quod non honestum sit: itaque talis vir non modo facere, sed ne cogitare quidem quidquam andebit, quod non andeat predicare. hoc, nonne est turpe, dubitare philosophos, qua ne rustici quidem dubitent? a quibus natum est id, quod iam tritum est vetustate prouerbium. cum enim fidem alicuius, bonitatemque laudent, dignum esse dicunt quicum in tenebris mices. hoc quam habet vim, nisi illam, nihil expedire, quod non deceat, etiam si id possis, nullo repellente, obtinere? Vides ne igitur, hoc prouerbio, neque Cygi illi posse veniam dari, neque huic, quem paullo ante fingebam digitorum percusione hereditates omnium posse conuertere? ut enim, quod turpe est, id quamvis occultetur, tamen honestum fieri nullo modo potest: sic, quod honestum non est, id utile ut sit, effici non potest, aduersante etiam, & repugnante natura. At enim, cum permagna pramia sunt, est causa peccandi. C. Marius, cum a spe consulatus longè abesset, & septimum annum post praturam i-

ceret,

ceret, neque petiturus umquam consulatum videtur, Q. Metellum, cuius legatus erat, summum vi-  
rum, & ciuem, cum ab eo, imperatore suo, Romam  
missus esset, apud populum R. criminatus est, bellum  
illud producere: si se consulem fecissent, brevi tempore  
aut viuum, aut mortuum Iugurtham se in potestatem  
populi R. redacturum. itaque factus est ille quidem  
consul: sed a fide, iustitiaq. discessit, qui optimum, &  
grauissimum ciuem, cuius legatus, & a quo missus es-  
set, in iniuriam falso crimine adduxerit. Nec noster  
quidem Gratidianus officio boni viri functus est tum,  
cum prator esset, collegiumq. pratorum tribuni pleb.  
adhibuisserit, ut res numeraria de communi sententia  
confitueretur. iactabatur enim temporibus illis num-  
mus, sic, ut nemo posset scire, quid haberet. conscripse-  
runt communiter edictum cum pena, atque iudicio,  
constitueruntque, ut omnes simul in Rostra post me-  
ridiem descenderent. Et ceteri quidem alius alio: Ma-  
rius a subsellio in Rostra recta: idque quod communiter  
compositum fuerat, solus edixit. Et ea res, si queris,  
ei magno honorifuit: omnibus vicis statua facta sunt:  
ad eas tus, & cerei. quid multa? nemo umquam mul-  
titudinifuit carior. Hac sunt, que conturbent in de-  
liberatione nonnumquam, cum id, in quo violatur a-  
equitas, non habetur ita magnum: illud autem, quod ex  
eo paritur, permagnum videtur: ut Mario præripere  
collegis, & tribunis pl. popularem gratiam, non ita tur-  
pe: consulem ob eam rem fieri, quod sibi tunc proposue-  
rat, valde utile videbatur. Sed omnium una regula est,  
quam cupio tibi esse notissimam: aut illud, quod utile vi-  
detur, turpe ne sit: aut, si turpe est, ne videatur esse uti-  
le. Quid igitur: possumus ne aut illum Marium virum,

*bonum iudicare, aut hunc explicare, atque excute intelligentiam tuam, ut videoas, quae sit in ea species, forma, & notio viri boni. Cadit ergo in virum bonum, mentiri, emolumenti sui causa, criminari, præripere, falle re? nihil profecto minus.*

## EXPLANATIO.

**C**OPLICATAM notionem enoluere, } eleganter dictum:  
pro, secum ipse diligenter cogitare, & ex ingenio pro-  
mere quod latet, sic infra: Explica, atque excute intelligentiam tuam. Non ergo faciat, } Igitur, vndeциm, & Tertij.  
Quodq[ue] expedit? } Quæ, non est in septem meis, & Tertij.  
**FIMBRIAM** } Licinium Fimbriam Valerius lib.7. cap.2.  
nominat. **M. LVTATIO Pythie** } Pinthia, septem mei,  
& tertij, quo modo etiam alii edidere. **ALIQVEM esse**, }  
ordine praepostero, quinque, & Tertii. **FIMBRIA etiam, non**  
**modo Socrates**, } idest, vir in ref. gerenda versatus, non modo  
philosophus. **NE rustici quidam** } bonitas etiam apud rusti-  
cos laudem habet. **TRITVM est** } Contritum, decem mei,  
& tertii. **QVICVM in tenebris mices** } Lulus genus, Mi-  
cato, digitis repente remotis. Cicero de Diuin. Quid est e-  
nim fors? idem prope modum, quod micare, quod talos iace-  
re, quod tesseras. Et 11. de Fin. Vide & Varrorem. Extat &  
Turcii Aproniani edictum, quod dignum visum est, vt ad-  
scriberem.

Rome, ad DD. Apostolos.

Ex. auctoritate

Turci. Aproniani. V. C.  
Prefecti. virbis.

Ratio. docuit. vtilitate. sua  
dente. consuetudine. mi-  
candi. summota. sub. exagio  
potius. pecora. vendere. quam  
digitis. conludentibus. trade-  
re. vt. adpensio. pecore. capite

pedibus

pedibus. &. seno. lactante. &  
subgulari. Ianio. cedentibus  
reliqua. caro. cum. pelle. &. inte-  
raneis. proficiat. vendori  
sub. conspectu. publico. fide. pon-  
deris. comprobata. vt. quantum  
caro. occisi. pecoris. adpendat  
&. emptor. norit. &. vendor  
commodis. omnibus. &. præda  
damnata. quam. tribunus. offi-  
cium. cancellarius. &. scriba  
de. pecuariis. capere. consue-  
rant. Quæ. forma. interdicti  
&. dispositionis. sub. gladii. pe-  
riculo. perpetuo. custodien-  
da. mandatur.

**NATVRA**, } quæ omnia viuendi præcepta nobis tradit. Se-  
ptim vnum } cùm confulatu biennio tantum prætura  
legibus distaret. **VIRVM**, } virtute. **CIVEM**, } dignita-  
te. **CVM ab eo, imperatore suo**, } etsi constat, C. Marij Q.  
Metellum imperatorem esse, cùm hic sit proconsul, ille lega-  
tus: tamen mihi suspecta non sunt hæc verba, vt superuaca-  
nea, sed valde videntur ad sententiam pertinere: cùm augatur  
aduersus Marium iniuria, qui ab imperatore suo cœfecti pro-  
pè belli gloriam ad se transtulerit. Nam, si legas, Ab eo, vt im-  
peratore suo, quod iis placet, qui aliqui duo illa verba, tam-  
quæ glossæ, tollenda existimant, frigere quodammodo, & vim  
suam perdere sententia videbitur. Nostrâ lectionem com-  
probant omnes mei veteres libri, & tertii. **BELLVM illud**  
producere: } Ducere, vndeicum mei, & tertii. Illum, sèx.  
**Nec noster quidem Gratidianus** } Ne, vnuus, & tertii. **Nofer:**  
auus enim Ciceronis vxorem duxerat sororem Gratidiæ, cu-  
ius filius fuerat Gratidianus. lib.3. de Leg. Vide Plin. lib. 33.  
cap. 9. & lib. 34. cap. 6. **ADHIBVISSENT**, } Aliissent,  
Fulvius Vrsinus ex vetere libro, contrâ omnes mei, & tertii.  
**CONSTITVERET VR**, } qui scilicet nummi probi, qui  
adulterini, quantique quaque essent. **I ACTABA-**  
**TVR**, } præmium monetæ neq. aureæ, neq. argenteæ consi-  
stebat. **DESCENDERENT**, } placet, q[ui] est in uno vetere Tertiis  
libro. Escéderet. Sic & Sallustius, Jugurtha: Pars equos escédere

ire obuiam hostibus. Ita enim legit Fronto, eum locum recitans. **E**t ea res. } Tō, Et, non est in vno. Vt, vnum. **O**MNIBVS  
r̄icestatua facta sunt: } in sex meis, & Tertij nō leguntur, Facta sunt.  
**E**t cerei. } Tō, Et, non est in Tertij libro. **Q**VAE conturbant homines } Conturbent, vnde decim, & Tertij. Tō Homines, non est in iisdem. **N**ON habetur ita magnum: } Tō Habetur, ab est à decem, & Tertij, & sanè glossema est. quod apparet ex aliis libris. in quorum vno, Non ita magnum sit: in altero Non ita magnum est: in tertio, Non est ita magnum. **I**LLVM  
**M**arium } qui criminatus est Q. Metellū, spe consulatus adipsendi. **E**XPLICA, atque excute intelligentiam tuam, } sic supra:  
Si quis voluerit animi lui complicatam notionem evoluere.  
**S**PECIES, } Specie, quidam legunt, & explanant. In ea intelligentia, cum iis facit vnum ex meis libris veteribus. magis placet impressa lectio.

## C I C E R O .

**E**st ergo villa res tanti, aut commodum ullum tam expetendum, ut viri boni & splendorem, & nomen amittas? quid est, quod afferre tantum utilitas ista, que dicitur, posset, quantum auferre, si boni viri nomine eripuerit, fidei, iustitiaeq. detraxerit? quid enim interest, utrum ex homine se convertat quis in bellum, an in hominis figura immanitatē gerat bellum? **Q**uid, qui omnia recta, & honesta negligunt, dummodo potentiam consequantur: nonne id faciunt, quod is, qui etiam sacerorum habere voluit eum, cuius ipse audacia potes est? utile enim videbatur plurimum posse alterius inuidia: id quā iniustum in patriā, quam inutile, quam turpe esset, non videbat. ipse autem sacer in ore semper Gracos versus Euripidis de Phoenissis habebat: quos dicā, ut potero: inconditae fortasse, sed tamen, ut res possit intelligi:  
“ Nam, si violandum est ius, regnandi gratia  
“ Violandum est: alii rebus pietatem colas.

capi-

capitalis Eteocles, vel potius Euripides, qui id unum solum, quod omnium sceleratissimum fuerat, excepterit. **Q**uid igitur minuta colliginus, hereditates, mercaturas, venditiones fraudulentas? ecce tibi, qui rex populi R. dominusq. omnium gentium esse concupierit, idq. perfecerit hanc cupiditatem si quis honestam esse dicit, amens est: probat enim legum, & libertatis interitum, earumq. oppressionem tetram, & detestabilem; gloriosam putat. qui autem fateatur, honestum non esse, in ea ciuitate, quilibet a fuit, quaq. esse debeat, regnare: sed ei, qui id facere possit, esse vilis: qua hunc oburgatione, aut quo potius conuicio à tanto errore conuertere: potest enim, dij immortales, cuiquam esse vilis fædissimum, & teterrimum parricidium patriæ, quāvis, eo qui se obstrinxerit, ab oppresis ciubibus Parrens nominetur? honestate igitur dirigēda virilis est, & quidem sic, ut hac duo verba inter se discrepare, sed tamen vnum sonare, videantur.

## EXPLANTATIO.

**S**i boni viri nomen eripuerit, } Viri boni, quinque. **F**IDEM, iustitiaq. detraxerit? } hinc iuuenialis:  
Exemplo quodcumque malo committitur, ipsi displicet auctori. Prima est hæc vltio, quod se Iudice nemo nocens absolvitur: improba quamuis Gratia fallacis prætoris vicerit vrnam,  
**I**n homine figura, } Tō, In, abest à quatuor, & Tertij. Id faciunt, } Idem, tres, & Tertij. Idem efficiunt, vnum. **Q**VI etiam sacerorum habere voluit eum, } Pompeium carpit, qui, vt, augeret potentiam suā, Cæsar is filii duxit vxorē. **V**TILE enim videbatur } Ei, pro, Octo, & Tertij. Vtile enim ei vid. vnum. **I**PS E autem sacer } Suetonius in Julio. **Q**VA M inutile, } absunt hæc à duobus, & Tertij. In quibus tē, Et, additur, Quām iniustum in patriā, & quam turpe. Octo, Quām ini. in p. & q. inutile, & q. t.

EV RIPIDIS } abest ab vndeclim, & Tertij. NAM, si ex } fū  
nari iābici. ALIIS rebus } Aliis in rebus vnuſ mēus, & Iulii  
Galli. Vnus, Alii am rebus. ID vnuſ ſolum, } ſic in oratione pro  
Sextio. Duo, Qui id ſolum vnum. Qui id vnum, quod, tres, &  
Tertii. Vnus, Qui id ſolum dominium, quod. Vnus, Qui vel  
Cæſaris id ſolum vitium, quod. EXCEPERIT. } Excepit,  
tres. Excepit: in pictate colenda. CONCUPIERIT, } Con-  
cupuerit, ſeptem, & Tertii. Concupuit, vnuſ. Si quis honestam  
effe dicit, } Si honestam quis effe d. nouem, & Tertii. rō. Effe,  
abefit ab vno. AVELLERE? } ſic liber Tertiū. quattuor, Au-  
tere. nouem, Euellere. FOEDISSIMVM, & taterriū } an-  
te quoque in hoc libro vtrumque coniunxit. Eo qui ſe obſtrin-  
xerit, } Qui ſe co obſtrinxerit, decem, & Tertii. Qui ſe obſtr.  
ea, vnuſ. Qui eo ſe obſtr. vnuſ. PARENTE } Cæſar. Dvo vnuſ  
Duo verbo, Tertii liber. recte INTER ſe diſcrepare, vnuſ  
ſonare videantur. } ſic Tertiū liber, & quinque mei. Inter ſe  
diſcrepare, qua vnuſ ſon. vid. duo. Inter ſe diſcrepare, vnuſ  
tamen ſon. vid. duo. SONARE } ſignificare. vide meta-  
phoram elegantem in Diſcrepare, & Sonare. vt, Diſcrepare,  
& Concinere, de nat. de.lib. I.

## C I C E R O.

**N**Vnc abeo ad vulgi opinionem. Quæ maior vti-  
litas, quam regnati, effe poſſit? nibil contrā in-  
tilius ei, qui id iniuste consecutus ſit, inuenio. cū ad  
veritatem coepi reuocare rationem. poſſunt enim cui-  
quā effe utiles angores, ſolitudines, diurni & noctur-  
ni metus, vita infidiarum periculorumq. plenifima?  
Multi iniqui, atq. infideles regno, pauei boni ſunt, m-  
quit Attius: at cuiregno? quod à Tantalo, & Peleope  
proditum iure obtinebatur nam, quanto plures ei regi  
putas, qui cum exercitu populi R. populuſ ipſum Roma-  
num opprefiſſet, ciuitatemq. non modo liberam; ſed  
etiam gentibus imperantem ſervire ſibi coegiſſer? hūc  
in quaſ conscientia labes in animo cœſes habuiſſe? qua  
vulne-

vulnera? cuius autē vita ipſi poſteſt vtilis eſſe, cum eius  
vita ea condicio ſit, vt, qui illa eripuerit, in maxima  
gratia futurus ſit, & gloria? Quod ſi hec vtilia nō ſunt,  
que maximè videtur, quia plena ſunt dedecoris, ac tur-  
pitudinis: ſatis perſuafum eſſe debet, nibil eſſe vtile,  
quod non honestū ſit. quāquam id quidem cum ſape a-  
liās, tū Pyrrhi bello à . Fabricio cōſule iterū, & à ſe-  
natū noſtro iudicatu eſt. cū enim rex Pyrrhus populo  
R. bellū ultrō intuliffet: cūq. de imperio certamē eſſet  
cum rege generoſo, ac potēte: perſuaga ab eo venit in ca-  
ſtra Fabricij, ſeq. eſt pollicitus, ſi prämium ei proposuſi-  
ſet, ſe, vt clam veniſſet, ſic clā in Pyrrhi caſtra redi-  
rum. & eum veneno necaturū. hunc Fabricius reduce-  
dum curauit ad Pyrrhū: idq. eius factū à ſenatu lauda-  
rum eſt. atqui, ſi ſpeciem vtilitatis, opinionēm q. queri-  
mus: magnum illud bellū perſuaga vnuſ, & granē ad-  
uersariū imperij ſuſtuliffet: ſed magnum dedecus, &  
flagitium. quicū laudis certamen fuſſet, eum non vir-  
tute, ſed ſcelere, ſuperatū. Vtrum igitur vtilius vel Fa-  
bricio, qui talis in hac urbe, qualis Aristides Athenis,  
fuit: vel ſenatu noſtro, qui numquā vtilitatē à digni-  
tate ſe iunxit, armis cū hoſte certare, an venenis: ſi glo-  
ria cauſa imperium expetendū eſt ſcelus abſit, in quo-  
nō poſteſt eſſe gloria. ſin ipſa opes expetentur quoquo mo-  
do, non poterunt eſſe utiles cū infamia. Non igitur vti-  
lis illa L. philippi, Q. filii, ſententia: Quas ciuitates L.  
Sulla, pecunia accepta, ex S. C. liberauiffet, vt ea rur-  
ſus veltigales eſſent, neq. ijs pecuniam, quam pro liber-  
tate decedant, rederemus. eſt ei ſenatus affenſus, turpe  
imperio, piratarum enim melior fides, quam ſenatus.  
At aucta veltigalia: vtile igitur.

## EXPLANATIO.

**N**VNC abeo ad vulgi opinionem.} Nunc habes, vnum. Nunc adeo, vnum. Non habeo, vnum, & Tertij, probo. PAVCI boni sunt} Pauci sunt boni, duo. **A**Tantalo, & Pelepe prodidum, legitima successione à patre ad filium quasi per manus transmissum. **R**EGI } Casari. QVI cum exercita } Cum, non est in vlo vetere libro. & elegantius abest. CVIVS autem vita ipsi potest utilis esse} sic omnes mei, duobus exceptis, in quoru vno, pro, Ipsi, Ipsa: in altero, Sibi, Vrsinus, Cui autem vita potest utilis esse. IN maxima gratia futurus sit, & gloria? } Gratiam, & Gloriam tyrannicida consequuntur. Lib. II. eadem coniungit. Hæc genera officiorum qui persequuntur, magna ipsi adipiscuntur & gratiam, & gloriam. Et Fam. lib. x. ep. 5. Gratiae, gloriaq; caue, tempus amittas. Tres, & Tertij addunt, & Et, In maxima & gr. A C. Fabricio consule iterum, & à senatu nostro } Agellius lib. III. cap. 8. Fabricio: Luscinio. PER FVGA } medicus Pyrrhi, vt ab aliis traditum est. Agellius, Valerius Max. Eutropius, Plutarchus. Si premium ei proposuisse, } Sibi, duodecim, & Tertij. Promississe, vnum. A senatu laudatum est} Laudatum à senatu est, septem, & Tertij. Est à senatu laudatu, vnum. A senatu laudatum, vnum. Laudatum à senatu, vnum. VTRVM igitur utilius} Visum igitur utilius, duo. SENATU VI nostro, quis numquam utilitatem à dignitate se unxit, } at paullo infra: Est ei senatus assensus, turpe imperio. AN venenis? Aut venenis, vnum. Non venenis, duo. ESSERE utiles } ord. prep. duo, & tertij. Ex s. c. } sic omnes libri veteres. LIBERAVISSET, } immunes esse declarasset. EST ei senatus assensus. } Ei senatus est assensus, duo. Et senatus est consensus, vnum.

## C I C E R O.

**Q**VOVS QV E audebunt dicere, quidquam utille, quod non honestum? potest autem ulli imperio, quod gloria debet fultum esse, & benevolentia siorum, utile esse odium, & infamia? ego etiam cum Catone meo sape dissensi, nimirum enim mihi videbatur praefacte ararum, rectigaliq; defendere: omnia publicanis negare, multa sociis: cum in hos benefici esse deberemus, cum illis sic agere, ut cum colonis nostris soleremus:

soleremus: eoque magis, quod illa ordinum coniunctio ad salutem reip. pertinebat. Male etiam Curio, cum causam trans padanorum aquam esse dicebat: semper autem addebat, Vincat utilitas. potius diceret, non esse aquam, quia non esset utilis reip. quam, cum aqua esse diceret, non esse utilem fateretur. Plenus est sextus liber de officijs Hecatonis talium questionum, si ne boni viri, in maxima caritate annonam familiam non alere, in utramque partem disputat: sed tamen ad extreum utilitate putat officium dirigi magis, quam humanitate. Querit, si in mari iactura facienda sit, equi ne pretiosi potius iacturam faciat, an senuli vi- lis. hic alio res familiaris, alio dicit humanitas. Sit tabulam de naufragio stultus arripuerit, extorquebit ne eam sapiens, si potuerit? negat: quia sit iniuriæ. Quid dominus nauis? eripiet ne suum? minime: non plus, quia si nauigantem in altum eiicere de naui velit, quia sua non sit. quoad enim peruentum sit eo, quo sumpta nauis est, no domini est nauis, sed nauigantium. Quid, si una tabula sit, duo naufragi, hiq; sapientes: sibi ne verterque rapiat, an alter cedat alteri? cedat vero: sed ei, cuius magis intersit vel sua, vel reip. causa invenire. quid si hac paria in utroque? nullum erit tertamen: sed, quasi in sorte, aut in micando victus, alteri cedet alter. Quid, si pater fana expilet, cuniculos agat ad ararium, indicet ne id magistribus filius? nefas id quidem est: quin etiam defendat patrem, si arguatur. non igitur patria præstat omnibus officijs? immo vero: sed ipsi patria conducit, pios habere cines in parentes. Quid, si tyrannidem occupare, si patriam prodere conabitur pater, filebit ne filius? immo vero obsecrabit patrem, ne id faciat: si nihil proficiet, accusabit, mina-

bitur etiam: ad extre<sup>mum</sup>, si ad perniciem patriae res spectabit, patriae salutem anteponet saluti patris. Querit etiam, si sapiens adulterinos nummos accipiet imprudens pro bonis, cùm id reficerit. soluturus ne sit eos, si cui debeat, pro bonis. Diogenes autem, Antipater negat, cui potius assentior. Qui vinum fugiens vendat sc̄iēt, debeat ne dicere? non necesse putat Diogenes, Antipater viriboni existimat. Hac sunt quasi controversia in rā Stoicorum. In mancipio vendendo, dicenda ne vitiā? non ea, qua n̄ s̄i dixeris, redhibeatur mancipium iure ciuilī; sed h̄c, mendacem esse, alcatorem, furācem, ebriosum, alteri dicenda videntur, alteri non dicenda. si quis, aurum vendens, aurichalcum se putat vendere, indicet ne ei vir bonus, aurum illud esse, an emat denario, quod sit millenarium? Perspicuum iam est, & quid mihi videatur, & quae sit inter eos philosophos, quos nominant, controversia. Pacta, & promissa semper ne seruanda sint, quae nec vi, nec dolo malo, ut praetores solent dicere facta sint? Si quis medicamentū cuiusdam dederit ad aquam intercutem: pepigeritque, ne illo medicamento v̄mquam postea vteretur: si eo medicamento sanus factus fuerit, & annis aliquot post inciderit in eundem morbum, nec ab eo, quicunq; pepigerat, impetrat, ut item eo liceat vti: quid faciendum sit, cùm sit is inhumanus, qui non concedat vti, nec ei quidquam fiat iniuria? vita, & saluti consulendum est.

## EXPLANATIO.

**N**IMIS enim mihi } t̄o Enim, abest à nouem, & Tertij. In Tertij, nimis mihi præfr. videbatur. ORDINVM' coniunctio } equitum, & senatus, quorum dissensione fracta

fuit

sunt opes reip. VINCAT vtilitas. } or. iv. in Catil. Meorū periculorū rationes vtilitas recip. vincat. Plutarchus Melanopūn rhetorem, Callistrato, pecuniam largienti, cedentem, ad populum dixisse scribit: οὐδὲν ἀντίχειρα, μετρω δὲ τὸ τῆς αὐτούς οὐκαριόν. Vide lib. ii. de inuent. quo loco placere dicit Aristoteli vtilitatem isolam in genere deliueratio, ubi honestatem. CV M' equam esse dicere, non esse vtilem fateretur. } quidam libri, Cū vtilem esse dicaret, non esset equam fateretur. A N N O N A E } non tantū frumenti, sed quidquid ad victum attrinet. FAMILIAM } mancipia. IN viramque partem dis- } fribat: } cur & alenda, & deservenda videatur. V UTILITATE putat officium dirigi, } vt potius fame pereant serui, & ancillæ, quam ipse aut in igni detimento afficiatur, aut cum suis liberis fame periret. QVAM humanitate, } vt familia cōseruerit propter naturam societatem rationis, & orationis, qua seruis etiam cum dominis intercedit. SERVULI vtilis. } qui non magni vnde possit. NEGAT: } cūm tamen præstet eum vivere, qui sit vtilior reip. DOMINVS natus? } Nauicularium, & Magistrum nauis vocant Iurisconsulti. QVAM si nauigantem } quod Arioni musico euensis, testatur Herodotus. QVIA sua non sit, } Non, best à decem meis, & tertij. ne ver, ne rapias, n̄ alter cedat alteri? } miror, quibuidam doctis viri placere magis, Vter, quod tamen est in quinque meis, quām, Vterque diuersa enim significat, & Vter, pro, Vtervis, Latina lingua non recipit. nam illud pro Sextio, Horum vtro vti volueris, altero est carendum, vñtarum significationē habet. Neuter, septem & tertij habent, Vnus, Neutrū. QVASS forte, aut micando vñctus, } sic liber tertij, & plerique alij. Duodecim tamen, Aut dimicando. Malè. Quod colligitur & ex Nonio Marcello, qui h̄c recitans in verbo Micare, ita legit, et si eo loco tamquam verba Ciceronis non agnoscantur: & Nonij emendator ex Attio in Cryippo h̄c proferri putet, ex vestigiis scripturæ f. Isò tamen. ACCUSABIT } reprehendet, non enim hoc loco est, Accusare ad iudices. AD VLTERRINOS, } sic omnes mei, & tertii. ACCIPERIT } Accepit, vñus. Accepit, vñdecim, & Tertij. CVI potius assentior. } cui etiā supra alſcus est de Rhodio frumento. VINUM fugiens } quod at item non fert: quod lētu incipit fieri. HAE sunt quasi controversia iura stoicorum. } Hę, nouē, & Tertij. Controversiæ, duodecim, & tertij. Controversiæ, & iura stoicorum, decē, & tertij.

Veliura Sto:corum vnuſ. Hęc quę ſequuntur. Non ed, que  
niſi dixeris, } Non niſi ca, que niſi dixeris, octo mei. ALTERI  
non dicenda. } Alteri dicenda videntur, tredecim, & TERTII.  
MILLE NARI M<sup>3</sup> } Mille denariorum, vndeclin, & Terti.  
SERVANDA ſint, } Sunt ięptem. V M Q Y A M poſtea } in uno  
deſtit, & Vinquam, in altero deſtut duo verba, Vinquam  
poſtea. SANVS factus fuerit, } Sit, ſeptem. Eſſet, tres, & Ter-  
tij. QVI CVM pepigerat, } Pepigerit, quinque. Qui pepige-  
rit, vnuſ.

## C I C E R O.

**Q**uid, ſi quis sapiens rogatus ſit ab eo, qui eum  
heredem faciat, cūm ei teſtamento H-S millies re-  
linquatur, vt, antequā m hereditatem adeat, luce pa-  
lam in foro ſaltet, idq. ſe fakturum promiferit, quā  
aliter eum heredem ſcripturus ille non eſſet: faciat,  
quod premiferit, nēcne? promiſſe mollem: & id arbi-  
troruiſſe grauitatis: ſed quoniam promiſit, ſi ſaltare  
in foro turpe ducet, honestius mentietur, ſi ex heredi-  
tate nibil ceperit: niſi forte eam pecuniati in reip. ma-  
gnū aliquod tempū contulerit, vt, vel ſaltare eum,  
cūm patrie conſulturus ſit, turpe non ſit. Ac ne illa  
quidem promiſſa ſeruanda ſunt, que non ſunt ipſis  
utilia, quibus illa promiſeris. Sol Phaetonii filio ( ut  
redeamus ad fabulas ) fakturum ſe eſſe dixit, quid  
quid optaſſet: optauit, vt in currum patris tolleretur:  
ſublatus eſt: uigie is, antē quām conſtituit, iuctu fulmi-  
nis deflagravit. quanto melius fuerat, in hoc promi-  
ſum patris non eſſe ſeruatum? Quid, quod T heſeuſ  
exegit promiſſum à Neptuno? cui cūm tres optiones  
Neptunus dediſſet, optauit interiuſum Hippolyti filii  
ſui, cūm is patri ſuceptus eſſet de nouerca: quo optauit  
imperato, T heſeuſ in maximis fuit luſtibus. Quid

Agamemnon? cum deuouiffet Diana, quod in ſuo re-  
gno pulcherrimum natum eſſet illo anno, immolauit  
Iphigeniam, qua nibil erat eo quidem anno natum  
pulchrius. promiſſum portuſ non faciendum, quām  
tam tetrum facinus admittendum fuit. Ergo & pro-  
miſſa non facienda nonnunquam. Neque ſemper de-  
poſita reddenda ſunt. Si gladium quis apud te ſana-  
mentis depoſuerit, reperat iuſtanſis reddere, pecca-  
tuſiſt: non reddere, officium. Quid, ſi is, qui apud te  
pecuniā depoſuerit, bellum inferat patria, reddeſ ne  
depoſitum? non, credo: facies enim contra remp. que  
debet eſſe cariſſima. Sic multa, que natura honeſta  
videntur eſſe, temporibus fiunt non honeſta. facere  
promiſſa, ſbare conuentis, reddere depoſita, commuta-  
ta utilitate, fiunt non honeſta. Ac de iis quidem, que  
videntur eſſe utilitatis contra iuſtitiam simulatione  
prudentia, ſatis, arbitror, diectū. Sed, quoniam à quat-  
tuor fontibus honestatis primo libro officia duximus,  
in eisdem versabimur, cūm docebamus, ea que vi-  
denter eſſe utilia, neque ſunt, quām ſint virtutis inimica.  
Ac de prudentia quidem, quam vult imitari malitia,  
itemq. de iuſtitia, que ſemper eſt utilis, diſputatum eſt.

## E X P L A N A T I O.

**H**-S<sup>millies }</sup> milliones tres. Luce p. lam in foro ſal-  
tet, } Luce claro, videtur legiſſe Nonius. quod coni-  
citur ex ipſius verbiſ, licet mendofis. nam, que Ciceronis  
cit, cūm hęc eſſe deberent, non leguntur in eo, ſed alia, que  
alicuius verteri poēta ſunt. Quid promiſerit, nec ne? } ſic ſe-  
ptem, & tertij. Promiſit, vnuſ. Se d, quoniam promiſit, } con-  
tra utilitatem. Ac ne illi quidem promiſſa ſeruanda ſunt, } con-  
tra promiſſa. Iis ipſiſi utilia, } ſic omnes mei, & Tertij, vno ex-  
cepto, in quo tē, lis, deſtit. Quid vnuſ illi promiſeris. } tē, Illa,

deest in uno. SOL Phaetonti filio } ex Clymene nympha;  
Oceanus, & Thetyos filia. Ouid. Metam. I. & II. Hygin. cap. 34.  
Lucanus lib. II. Fulgentius lib. I. & Lucianus in Astrologia.  
FACTVRVM se esse dixit, } immo iuravit per Stygiam aquam.  
SVBLATVS est, atque is, antequam consitit, } sic tres, & Tertij.  
VNUS Sublatus insanus, atque is, antequam const. Octo, Sublatus est, atque insanus, antequam constitit. Quod si retineamus, Insanus, ascendens, eum, ex scorponis conspectu territu, habemas remississe, ut equi sentirent se non verum aurigam habere. IC TV fulminis desflagravit, } sic duodecim, & Tertij.  
Fulmine desflagravit, vnu. Ictu fulminis, à Ioue, precibus mortalium, tanto incendio laborantium, auditis. Desflagravit: collapsus in Padum. QVID quod Theserus exigit promissum à Neptuno, } supra, lib. I. OPTIONES } Oprationes, vndecim, & Tertij. No VERCA, } Pia: Ira. QVO optato impetrato, } Oprato, abest à duobus meis. IPHIGENIA M, } fabula est apud Euripi dem in tragedia, Iphigenia in Aulide. PROMISSVM potius non faciendum, } contra promissa. NEQVE semper deposita &c. } contra deposita. REDDENDA sunt, } Sunt, abest ab octo meis, & Tertij. SANAE menti, } Sana mente, duodecim, & Tertij. TEMPORIBVSQ, sunt non honesta, } honesta temporibus perturbantur, sicutque non honesta. Non honesta: sic vndecim, & tertij. vnu, In honesta. In eisdem versabimur, cum docebimus ea, que videntur &c. } Videantur, vndecim, & Tertij. AC de prudentia, quam vult imitari malitia, } supra: In malitia simulatio intelligentiae.

## C I C E R O.

RELIQVAE sunt due partes honestatis: quarum altera in animi excellentis magnitudine, & præstantia cernitur: altera in conformatione, & moderatione continentia, & temperatia. Vtile videbatur Vlixii, (ut quidam poeta tragici prodiderunt: nam apud Homerum, optimu autore, talis de Vlixe nulla suspicio est) sed insimulant eum tragedie simulatione insanis, militiam subterfugere voluisse. non honestum consilium. At vtile, (ut aliquis fortasse dixerit) regnare, & Ithaca

vivere otiosè cū parentibus, cum uxore, cū filio. Vllum tu decus in quotidianis periculis, & laboribus cū tranquillitate hac conferendum putas? ego vero istam contemnendam, & abiiciendam: quoniam, que honesta non sit, ne utili quidem esse arbitror. Quid enim auditur putatis fuisse Vlixem, si in illa simulatione perseuerasset? qui, cùm maximas res gesserit in bello, tamen hoc audiuit ab Aiace:

Cuius ipse princeps iurisurandi fuit,  
Quod omnes scitis, solus neglexit fidem:  
Furere assimulauit: ne coiret, instiit.  
Quod ni Palamedis perspicax prudentia  
Istius percepset militiosam audaciam:  
Fide sacrata ius perpetuo falleret.

illi vero non modo cum hostibus, verum etiam cum fluebibus, id quod fecit, dimicare melius fuit, quam defere re conscientiem Graciam, ad bellum barbaris inferendum. Sed dimittamus & fabulas, & externa: ad rem factam, nostramque veniamus. M. Atilius Regulus cum consul iterum in Africa ex insidiis captus esset, duce Xantippo Lacedemonio, imperatore autem patre Hanibalis Hamilcare, iuratus missus est ad se natum, ut, nisi redditii essent Poenis captiuini nobiles quidam, rediret ipse Carthaginem. is, cum Romam venisset, utilitatis speciem videbat: sed eam, ut res declarat, falsam iudicauit: qua erat talis, manere in patria, esse domi sua cum uxore, cum liberis: quam calamitatem accepisset in bello, communem fortunam bellicam indicantem, tenere consularis dignitatis gradum. quis hec neget esse utilia? quem censes? magnitudo animi, & fortitudo negat, num locupletiores queris autores? harum enim est virtutum proprium, nil extimescere,

*omnia humana despiceret, nihil, quod homini accidere possit, intolerandum putare. itaque, quid fecit? in senatum venit: mādata exposuit: sententiam ne dicere, recusauit: quam diu iure iurando hostium teneatur, non esse se senatorem. atque illud etiam: (ostium hominem, dixerit quispiam, & repugnantem utilitatem sua) redi captiuos, negavit esse vtile: illos enim adolescentes, & bonos duces: se iam confectum senectute. Cuius cum valuisse auctoritas, captivi retenti sunt, ipse Carthaginem rediit, neque eum caritas patriæ retinuit, nec suorum: neque verò tum ignorabat se ad crudelissimum hostem, & ad exquisita supplicia proficiendi: sed insurandum conservandum putabat: itaque tum, cum vigilando necabatur, erat in meliore caussa, quam si domisenex, captivus, perirrus, & consularis remansisset. At stulte, qui non modo non censuerit captiuos remittendos, verum etiam disfuerit, quomodo stulte, etiamne si reip. conducebat? potestne, quod inutile reip. sit, id cuiquam vtile esse? peruerunt homines ea, que sunt fundamenta naturae, cum utilitatem ab honestate se iungunt. omnes enim expetimus utilitatem, ad eamque rapimur: nec facere aliter vello modo possumus. nam, quis est, quis virilia figit? aut quis potius, qui ea non studiofissime persequatur? sed, quia nusquam possumus, nisi in laude, decore, honestate, virtutia reperire: propterea illa prima, & summa habemus, utilitatis nomen non tam splendidum, quam necessarium ducimus.*

## EXPLA-

## EXPLANATIO.

**C**ONFORMATIONE, } φιλαρσπειτια. Cuius contrarium illud apud Terentium, Homo per patrum hominum. **V**TILE videbatur Vlisci, } aggreditur de fortitudine. **Q**VI-DAM poete tragicis prodiderunt: } quorum nullus extat. **H**O-M-E-RVM, optimum auctorem, } fabularum, & artificij poetici, non historiarum. Iurisconsulti omnium virtutum parentem appellat. Dion tamē Chrylōstomus eius narrationem de Troiae excidio confusat. **P**ERICVLIS, & laboribus } Laboribus, & periculis, decē. & Periculis, & deest in Tertij libro. **I**ST A M } tranquillitatem. **A**VDIVIT } Audiat, septem, & tertij, recte. **C**VIV' ipse &c. } senarij iambici, ex Pacunij Armorum iudicio. **N**E COIRET, } cum reliqui Græcis, in concilio Græcorum: ubi actum de bello Troianis publicè inferendo. **F**IDE sacrate } pro, Fidei sacratæ, quod antiquè dictum qui ignorarunt, Fide, arbitrati dictum esse auferendi casu, Sacra in libris scripserunt. Vide Agellium, & exēpla apud Sallustium, à me in Annotationibus collecta. Veteres tamē libri omnes, aliter. **V**nus, Fides sacra. **V**nus, Fid' sacratū. Decem, & Tertij, Fide sacra. **C**V M hostibus, } Homer in Il. **C**V M fluctibus, } Homer in Od. **S**ED dimittamus, } sic septem mei. Omittam, quatuor, & Tertij. Obmittamus, vnuſ. **F**ABVLAS, } non enim hoc de Vlixe verum putabat, nec omnia de bello Troiano pro certis habebantur. **A**d rem factam, nostrāmque veniamus. } sic tres mei, & Tertij. **V**rsus, Nostrāque. Ad rem, factāque veniamus, vnuſ. Ad rem factam veniamus, duo. Ad rem, factāmque nostrā veniamus, quinque. Ad rem nostram, factāque redeamus, vnuſ. **X**ANTHIPPO Latedemonio, } vide Polybium lib. I. **F**ALSAM indicauit: } quæ deciperet: cu vtile esse non posset, quod honestum non esset. **D**OMI sue } Domui suæ, vnuſ meus, & Tertij. In Phil. Domui suæ. In Tusc. Domui alienæ. **Q**UE M censes? } sic Tertij liber. **Q**uae censes, omnes alij. Ter. Andr. act. 5. sc. 2. Quid censes? **M**AGNITVDO animi, } rem, otio priuato preferentis. **N**V M locupletiores, queris auctores? } sic suprà, Testis locuples Posidonius. In Bruto, Thucydidem locupletem auctorem dicit. Ad Q. Fr. Locuples tabellarioris, id est, cui litera recte credi possint. Pro Flaco, Testis locuples. Linius lib. ix. de Samnitibus: Sponores nos sumus rei satis locupletes. An locupletiores, &c. alias.

Nam locuplet. male, sed vnde tamen eliciatur vera lectio,  
octo, & tertij. Non, tres. Num, quo modo impressimus, vnu.  
**L**ocupletiores auctores: quam animi magnitudinem, & fortitudinem. Nil extimescere, } magnificientius haec dicuntur, quam  
verius. Non esse senatorem. } Se, abest à quinque, & tertij.  
**I**llos enim adolescentes, & bonos duces. } Illos enim adolescentes esse: & bonos duces, decem, & tertij. Neque vero  
sum } sic decem mei, & tertij. Exquisita supplicia. } Agellius lib. vi, cap. 4. Vide & D. Aug. de Ciu. Dei. Erat in  
meliore causa, } rectius fecit, meliorē causam habuit. felicior  
erat: siquidem ex honesto felicitas prouenit. Infra Q. Pompeium in eadem cum Mancino causa esse dicit, id est pari ignor-  
minia. Per invrs, & consularis } Et, non est in illo meo,  
nec in tertij. Id cuiquam cuius utile esse? } Cui, abest à quinque  
meis, & tertii. neque legitur in Nonio, in Conducere. SED,  
quia nusquam possumus, &c. } utilitas vbi sit.

## C I C E R O.

**Q**uid est igitur, dixerit quis, in iure iurando? num  
iratum sumemus Iouem? at hoc quidem commu-  
ne est omnium philosophorum, non eorum modo, qui  
deum nihil habere ipsum negotij, dicunt, & nihil ex-  
hibere alteri: sed eorum etiam, qui, deinceps semper a-  
gere aliquid, & moliri, volunt, numquam nec irasci  
deum, nec nocere. quid autem iratus Iuppiter plus no-  
cere potuisset, quam nocuit sibi ipse. Regulus? nulla i-  
gitur vis fuit religionis, qua tantam utilitatem pre-  
uerteret. An, ne turpiter faceret? primum minima de-  
malis. num igitur tantum mali turpitudo ista habebit,  
quantum ille cruciatus? deinde illud etiam, apud  
Attium:

,, Fregisti ne fidom? neque dedi, neque do infideli cui-  
,, quam:

Quamquam ab impio rege dicitur, lculente tamen  
dicitur. Addunt etiam: quicmadmodum nos dicamus  
videt

videri quadam utilia, quae non sint: sic se dicere, vide-  
ri quadam honesta, quae non sint: ut hoc ipsum vide-  
tur honestum, conservandi turis iurandi causa, ad cru-  
ciatum reuertisse. sed fit non honestum, quia, quod per  
viam hostium esset actum, ratum esse non debuit. Ad-  
dunt etiam, quidquid valde vtile sit, id fieri honestum,  
etiam si ante a non videretur.

## EXPLANATIO.

**I**RATVM Iouem? } sic & Iouem iratum dicit ep. 12. lib. vii.  
**N**on eorum modo, } Epicureos intelligit. vide Lactantii  
Firmi libro de Ira Dei. Et nihil exhibere alteri: } Et, abest à  
nouem meis, & tertii. **S**ed eorum etiam, } Stoicos, Peripate-  
ticos, Academicos intelligit. **S**ibi ipse Regulus? sic nouem  
mei, & tertii. **P**RAEVERTERET. } veteres omnes mei, &  
tertii, Peruerteret. **M**INIMA de malis. } debemus eligere.  
**H**ABEBIT, } Habeat, vnu. Habebat, vnu. fortasse non male,  
**A**PUD Attium} in Atreo. Vide & Hyginum cap. 88. Sic apud  
Senecam in Thyeste, Thyestes, impia filiorum dape satur,  
Sceleris, inquit, est aliquis modus.

Ad quæ Atreus:

Sceleri modus debetur, vbi facias scelus, non vbi  
reponans.

**Q**VAM QVAM ab impio rege } præstruit solutioni. **Q**UE  
AD MODVM } & hæc obiectio sapit testimonij naturam:  
quasi enim ex analogia petierunt eam aduersarij.

## C I C E R O.

**H**Aec fere contra Regulum, sed prima videamus.  
Non fuit Iuppiter metuendus, ne iratus noceret:  
quia neque irasci solet, neque nocere. hæc quidem  
ratio non magis contra Regulum, quam contra omne

*iufurandum, valet sed in iure iurando, non qui metus, sed quæ vis sit, debet intelligi. est enim iufurandum, affirmatio religiosa. quod autem affirmatè, quasi deo teste, promiseris, id tenendum est. iam enim non ad iram deorum, quæ nulla est, sed ad iustitiam, & ad fidem pertinet. nam præclarè Ennius,*

“ *O fides alma, apta pannis, & iufurandum Iouis. Quisigitur iufurandum violat, is fidem violat: quam in Capitolio vicinam Iouis Optimi Maximi, ut in Catonis oratione est, maiores nostri esse voluerunt. At enim ne iratus quidem Iupiter plus Regulo nocuisse, quam sibi nocuit ipse Regulus. certè, si nihil malum esset, nisi dolere. id autem non modò non summum malum, sed nec malum quidem esse, maxima auctoritate philosophi affirmant. quorum quidem testem non mediocrem, sed haud scio an grauissimum, Regulum nolite, queso, vituperare. quem enim locupletiorem querimus, quam principē reip. qui, retinendi officiū caussa, cruciatum subierit voluntarium? Nam, quod aiunt minima de malis, id est ut turpiter potius, quam calamitosè: an est ullum maius malum turpitudine? quasi in deformitate corporis habeat aliquid offensionis, quamta illa depravatio, & fœditas turpificati animi debet videri? itaque, neruosus qui ista differunt, solum audient malum dicere id, quod turpe sit: qui autem remissius, hī tamen non dubitant summum malum dicere. nam illud quidem:*

*Neque dedi, neque do fidem infideli cuiquam: siccirco rectè à poeta dicitur, quia, cum tractaretur Atreus, persona seruendum fuit. sed, si hoc, sibi sumūt, nullam esse fidem, quæ infideli data sit: videat, ne queratur latebra per iuriō. Est autem etiam ius bellicum, fidēsq.*

*fideisq. iuriſurandi sepe cùm hoste seruāda. quod enim ita iuratū est, vt mens deferentis conciperet fieri oportere, id obseruandum est: quod aliter, id si non feceris, nullum periurium est: vt, si prædonibus pactum pro capite pretium non attuleris, nulla fraus est, ne si iuratus quidem id non feceris. nam pirata nō est ex perduellum numero definitus, sed communis hostis omnium. cum hoc non fides esse debet, nec iufurandum commune. non enim falsum iurare, peierare est: sed, quod ex animi tui sententia iuraueris, sicut verbis concipiatur, more nostro, id nō facere, periurium est. scitè enim Euripides,*

*Iurari lingua, mentem iniuratam gero.*

*Regulus vero non debuit condicione, pænitionesq. bellicas, & hostiles perturbare periurio. cum iusto enim, & legitimo hoste res gerebatur: aduersus quem & totum ius fetiale, & multa sunt iura communia. quod ni ita esset, numquam claros viros senatus vincitos hostibus dedidisset.*

### EXPLANATIO.

**Q**UIA neque irasci solet, } Qui, quinque, & tertij. Nec, sex: REGVLVM, } Reguli, vnum, & tertij. QVOD autem affirmatè, } Affirmatiuè, quatuor. Quod autem affirmarjs, & quasi &c. legebat Vbalдинus. I R A M deorum, que nulla est, } ut philosophi omnes affirmant. O Fides alma, apta pannis & iufurandum Iouis. } Aptā pannis, fateor me non intelligere quid sit. vnum antiquus liber, Aptā primis: alijs, Aptā pennis: alijs, Aptā premis: alijs, Actā p̄rnis: alijs Iulij Galli, Atta p̄cinijs, obscura omnia. Si coniecturas elonginquo petere consuefsem: id quod placere nonnullis video: legerem, A qua pendet iufurandum Iouis. Aut dicamus, descriptum: esse ab Ennio simulacrum Fidei almae, vt erat in templo Capitolino, per quā iurare proximus Iupiter videbatur. Fidē non esse deam,

tradit D. Augustinus de Ciu. Dei, lib. iv. cap. 4. In *Capitolio*.  
Plin. lib. x x x v. cap. 10. Plut. in Numa, Dionys. Halicarnassus  
lib. 11. Liu. lib. 1. Cic. de nat. de. 11. In *Catonis oratione* } Censo-  
rium intelligit. C E R T E si nihil malum esset, } iuxta Epicureos,  
quibus summum malum est dolor. N E C malum quidem esse, } sic omnes mei, & tertij. vnuſ. Ne. P R I N C I P E M reip. } erat  
enim consularis. N E R V O S I V S } vt Stoici. R E M I S S I-  
V S, } vt Peripatetici. N E Q U E do fidem } r̄is Fidem, non est  
in tribus, & Tertij. P E R S O N A E } decoro personæ. Hoc  
sibi sumunt, } sic vñ. lecim, & tertij. Hæc, vnuſ. Sibi sumunt: hu-  
ius defensionem suscipiunt. CIC. ad TORQUATUM: Hoc mihi  
non sunto. Et ad CAECINIAM: Non sumo, vt, &c. VIDEANT,  
ne queratur latebra perurio. } seruanda fides eti. i. infidi. Est  
autem etiam ius bell. } Est autem ius etiam bell. quinque, & ter-  
tij. Ius bellicum, } de quo lib. 1. S A E P E cum hoste seruanda. }  
sic nouem, & tertij. Conseruanda, vnuſ. Cum honestate, vnuſ.  
mendosè. Sæpe honesti seru. alter, mendosè. M E N S deferent-  
tis conciperet, } t̄d. Deferentis, non est in vlo meo vetere libro,  
nec in tertij. Id obseruandum est. } Id seruandum est, duode-  
cim, & tertij. N U L L U M perurium est. } Nullum est perur-  
rium. tertij liber. V T, si predonibus etc. } cum enim humano  
generi semper infesti sint, ius humanum eas iuare non de-  
bet. P E R D U E L I V U M } lib. 1. C O M M U N I S hosti omnium. }  
Isocrates ait milites mercenarios esse communes inimi-  
cos omnium hominum. C V M hoc non fides } Nec, nouem, &  
tertij. E S S E debet nec iuslurandum } Debet, nec iuslurandum  
esse, liber tertij. F A L S U M iurare, } non ex animi sententia.  
I V R A V E R I S, } Iurari, decim, & tertij. V E R B I S concipi-  
tur, } Verbis conceptis iurare, siue peccare. Varro de lin. Lat.  
apud Agell. lib. vii. cap. xj. Plautus Asin. act. 3. Festus in, Prx-  
iurations. Quinctil. lib. v. cap. xj. Valerius lib. iv. cap. 1. de Afri-  
cano consule. E V R I P I D E S, } in Hippolyto: Η γλαρ'  
διάριον κ' δὲ φρν̄ αἰρόμεν. C itat & hunc verum Basilius de  
ratione studiorum, cap. 9. Huc faciunt illa Cydippes ad Acon-  
tium, apud Ouidium in epist.

Quid tibi nunc prodest, iurandi formula iuris,  
Linguaq. præsentem testificata deam?  
Quæ iurat, mens est, nil coniurauimus illa,  
Illa fidem dictis addere sola potest.

Consilium

Confilium, prudensq. animi sententia iurat,  
Et nisi iudicij vincula nulla valent.

Ius fetiale, } Dionylius lib. 11. Plut. in Numa, & Camillo, &  
Probl. Liu. lib. xxx. Agellius lib. xvi. cap. 2. V I N C T O S }  
sic Liu. Progressi fetiales vbi ad portam venere, veitem  
detrahi pacis sponsoribus iubent, manus poli terga vinciri.

## C I C E R O .

A T vero T. Veturius, & Sp. Postumius, cūm ite-  
Arum consules essent, quia, cūm male pugnatum  
apud Candium esset, legionibus nostris sub ingum-  
missis, pacem cum Sannitibus fecerant, dediti sunt  
hīs: iniussu enim populi, senatusque fecerant. Eodēmq.  
tempore T. i. Numicius, Q. Melius, qui tum tribuni  
pl. erant, quōd eorum auctoritate pax erat facta, de-  
diti sunt, vt pax Sannitum repudiaretur, atque huius  
deditio ipse Postumius, qui dedebatur, suasor, &  
auctor, fuit. Q uod item multis annis post C. Manci-  
nus, qui, vt Numantinis, quibuscum sine senatus au-  
ctoritate fœdus fecerat, dederetur, rogationem suasit  
eam, quam L. Furiae, & Sex. Atilius ex S. C. ferebāt:  
qua accepta, est hostibus deditus. Honestus hic, quam  
Q. Pompeius: quo, cūm in eadem causa effet, depreca-  
te, accepta lex non est. hic ea, qua videbatur, utilitas  
plus valuit, quam honestas: apud superiores utilitatis  
species falsa, ab honestatis auctoritate superata est. At  
non debuit ratu esse, quod erat actum per vim. Quasi  
vero fortis vir, o vis possit adhiberi. Cur igitur ad sena-  
tum proficisci bat, cūm præsertim de captiuis diffu-  
surs effet? Quod maximum in eo est, id reprehendi-  
dit. non enim suo iudicio stetit, sed suscepit causam,  
vt effet iudicium senatus: cui nisi ipse auctor fuisset, ca-  
ptiui profecto Panis redditi essent. ita in columnis in-

patria Regulus restitisset. quod quia patria non vtile putauit, sic circa honestum sibi & sentire illa, & pati credidit. Nam, quod aiunt, quod valde vtile sit, id fieri honestum: immo vero, esse, non fieri. est enim nihil vtile, quod idem non honestum: nec, quia vtile, honestum est: sed, quia, honestum, vtile. quare ex multis mirabilibus exemplis haud facile quis dixerit hoc exemplo aut laudabilius, aut praestantius. Sed ex tota hac laude Reguli, unum illud est admiratione dignum, quod captivos retinendos censuerit. nam, quod redigi, nobis nunc mirabile videtur: illis quidem temporibus aliter facere non potuit. itaque ista laus non est hominis, sed temporum. nullum enim vinculum ad adstringendam fidem, iure iurando maiores arcuus esse voluerunt. id indicant leges in XII. tabulis, indicant sacra, indicant foedera, quibus etiam cum hoste deuincitur fides: indicat notationes, animaduersionesq. censorum, qui nulla de re diligentius, quam de iure iurando, indicabant. L. Manlio, A. filio, cum dictator fuisset. M. Pomponius tribunus pl. diem dixit, quod is paucos sibi dies ad dictaturam gerendam addidisset. crimina batur etiam, quod T. Titum filium, qui T. orquatus postea est appellatus, ab hominibus relegasset, & ruri habitare iussisset. quod cum audiisset adole, cens filius, negotium exhiberi patri, accusisse Romanam, & cum prima luce Pomponi domum venisse dicitur. cui cum esset nunciatum: qui illum iratum allaturum ad se aliquid contra patrem arbitraretur, surrexit e leitulo, remo iisque arbitris, ad se adolescentem iussit venire. at ille, ut ingressus est, confessim gladium distinxit, iurauitque se illum statim interficiendum, nisi iustificandum sibi dedisset, se patrem missum esse factum.

rum.

rum iurauit, hoc terrore coactus, Pomponius: rem ad populum detulit: docuit, cur sibi à causa desistere necesse esset: Manlium missum fecit. tantum temporibus illis iustificandum valebat. Atque hic T. Manlius is est, qui, ad Anienem, Gallo, quem, ab eo provocatus, occiderat, torque detracito, cognomen inuenit: cuius tertio consulatu Latini ad Veserim fusi, & fugati: magnus vir in primis: & qui per indulgens in patrem, idem acerbe severus in filium.

## EXPLANATIO.

**A**PVD Caudium } Apulie vicum. vide Liuium lib. ix.  
**A**S V in iugum missis, } inermes milites cum singulis vestimentis extra vallum exire iussi. IN IV S V enim populi, se uisq. fecerant. } Liuius, de hac eadem re: Iniuissu populi nego quidquam sancti posse, quod populum teneat. T I. **N**umicius, } Tertij liber, Tiberius Minucius, Q. Emilius. quo modo quinque alij. Minicius, vnus. T I. **N**umicius, Q. **M**elius, } Liuius, L. Liuium, & Q. Melium tribunos nominat. T V M tribuni pl. erant, } cum auctum est de Samnitum pace repudianda, non cum facta pax est, nam extra urbem nisi per unum diec tribunis pl. non licebat. Liuius lib. ix. Huius dedicationis } de qua D. Aug. de Ciui. D. lib. IIII. cap. 17. Valer. lib. V. cap. I. Agellius lib. XVII. cap. vlt. Plut. Parall. cap. 6. Florus lib. I. cap. 16. Oros. lib. IIII. cap. 15. Eutrop. lib. II. cap. 2. & de vir. ill. **M**VL-TIS annis post } post cccciiii. Liu. Epit. L V. Plut. in Mario, Florus lib. II. cap. 18. de vir. ill. cap. 59. Eutrop. lib. IV. cap. 3. Oros. lib. V. cap. 5. August. lib. IIII. cap. 21. Valerius lib. II. cap. de Scipionis discipl. mil. & lib. I. cap. de Prodigis. Vide & Liuium Obsequentem. Q. **P**OMPEIUS: } qui paulo ante cum iisdem Numantinis æquè infame fedus pepigit. Cic. de Fin. II. Oros. lib. V. cap. 5. Epit. Liu. XIIV. Eutrop. lib. IV. cap. 7. **L**EX } hanc supra Rogationem nominavit. Agelliustamen lib. X. cap. 20. distinguunt Rogationem à Lege. **H**ONESTUM sibi } Sibi honestum, tertij. **R**ETINENDOS censuerit. } Censuit, omnes mei & tertij. **I**NDICANT sacra, } Secreta, vnus. Sacratæ, decem, & tertij. **N**OTATIONES, } Notiones, decem. Notones, vnus. Et notiones, vnus.

Nactōes, vnuſ. Motiones, Tertij. Qvod ſi paucos fibi diſt ad dictatū gerendā addidiffet. } quod, occaſione bene facien- di bellī ductus, obtinendi legitimum imperij tempus euafif- fet. Valerius lib. 4. cap. de pīctate filiorum in parentes. Legiti- mum autem dictatū tempus, ſex mēſes: ex lege 12. Tabu- larum, apud Cic. de Leg. Qui Torquatus poſtea eſt appellatus, } Qui poſtea eſt torquatus app. quattuor, & Tertij. Qui poſtea Torq. eſt app. quinque. Qui poſtea Torq. app. eſt, tres. Torqua- tūs: hic poſtea filium ſuum interſici iuſtit, quod præter man- datum cū hōſte conſlixifſet. Sall. Cat. Liu. lib. 8. Val. lib. 11. cap. 2. & Plut. in Parallelis. RVR i habitare iuſtiffet. } vide Valerium lib. 6. cap. 9. Et prima luce } Et cum prima luce, duodecim, & Tertij. Et eum prima luce, vnuſ. Qui illum iratum } ſic Tertij liber. recte. Reliqui, Quod. duo, Quia. SVR REXIT ē leſtulo, } at Liuſus non ait eum ſurrexifle ē leſtulo, ſed iacentem hęc dixiſſe. REM OTISQ. arbitrii } ē cubiculo abire iuſſis. Va- lerius. GLADIVM diſtrinxit, } quem teſtum attulerat. Vale- rius. Niſi iuſtarandum ſibi dediſſet } niſi in qua ipſe concepiſſet verba iuaret. Liuſus. nō ſibi, abeft à Terti libro. A cauſa de- fiffere } Tē, A, abeft ab octo meis, & tertij. MiſſVM fecit, } itaque non tantum patri cauſa diſcio remiſſa eſt, ſed etiam ipſi adolescenti ea res honori fuit. Liuſus. GALLO, } Galli, Tertij liber. & ita recitat Nonius. TORQUE detracṭo, } ſic legit Nonius. Ciceronem tamen, & Virgilium muliebri ge- nere: Liuſum virili Torquem dixiſſe, annotauit D. Hierony- mus, quod antiqui libri, qui eſt apud me, teſtimonio compro- batur. habet enim claris litteris, Torque detracṭa. Vide Q. Claudiuſ Quadrigarium, apud Agellium. De hoc Cic. de Fin. 1. Tusc. 4. Sall. Cart. Val. lib. 3. cap. de fort. Plut. parall. 26. de vir. ill. cap. 28. Flor. lib. 1. cap. 13. Oroſ. lib. 4. cap. 6. Eutropius lib. 11. cap. 1. & Virg. lib. 6. & Ouid. Faſt. 1. TERTIO confulaſſet } cum P. Decio Mure. LATINI } errat Plutarχus, qui in Pa- rall. ait hoc bello Samnitico eſſe factū. Ad Veferim } Liuſus: Pugnatū eſt hoc procul radicibus Vesuuij mótiſ, qua via ad Veferim ferebat. FVSI, & fugati: } ſic nouem, & Tertij. Qui perindulgens in patrem, idem acerbē ſeuerus in filium. } ſic Tertij liber. & recte. ita autem recitat hunc locum & Nonius duobus locis, in Indulgere, & in ſeuerum.

CICE-

## CICERO.

**S**ed, ut laudandus Regulus in conſeruando iureiu- ſrando: ſic decem illi, quos poſt Cannēſēm pugnam iuratos ad ſenatum miſit Hannibal, in caſtra reditu- ros ea, quorum erant potiti Pœni, niſi de redimendis captiuis impetravit, ſi non redierunt, uituperandi. de quibus non omnes uno modo, nam Polybius, bonus auctor in primis, ſcribit, ex decem nobilissimis, qui tunc erant miſi, nouem reuertiſſe, à ſenatu re non im- petrata: unum ex decem, qui paullo poſt, quām egref- ſus erat ē caſtris, rediſſet, quiaſi aliquid eſſet oblitus, Roma remanifſiſe. rediſtu enim in caſtra, liberatum ſe- neſſe iureiuando, interpretabatur: non recte: auſ e- in diſtrinxit, non diſſoluit, periurium fuit igitur ſtu- ta calliditas, peruerſe imitata prudentiam. itaque de- creuit ſenatus. ut ille veterator, & callidus viuētus ad Hannibalem duceretur. Sed illud maximum, octo ho- minum milia tenebat Hannibal, non quos in acie ce- piſſet, aut qui periculo mortis diſſugiffent, ſed qui reli- eti in caſtris fuiffent à Paullo, & Varrone consulibus. eos ſenatus non censuit redimendos, cum id parua pe- cunia fieri potuiffet: ut eſſet in ſitum militibus noſtriſ, aut vincere, aut emori. qua quidem re audita, fractum animū Hannibal is ſcribit idem, quod ſenatus, popu- lūſq. R. rebus afflictis tā excelfo animo fuiffet. Sic ho- nestatis comparatione ea, que videntur utilia, vincun- tur. Atilius autem, qui Gracē ſcripſit historiam, plures ait fuiffe, qui in caſtra reuertiſſent, eadem fraude, ut iureiuando liberarentur: eoque à censoribus o- mnibus ignominiis notatoſ. Sit iam huius loci finis: perſpicuum eſt enim, que timido animo, humili-

demissō, fractōq. fiant, quale fuisset Reguli factum, si aut de captiuis, quod ipsi opus esse videret, non quod reip. censuisset, aut domi remanere voluisse, non esse vtilia, quia sunt flagitiosa, fœda, & turpia. Refat quarta pars, que decore, moderatione, modestia, continentia, temperantia continetur. Potest igitur quidquam esse vtile, quod sit huic talium virtutum choro contrarium: at qui ab Aristippo Cyrenaici, atque Annicerij philosophi nominati, omne bonū involuptate posuerunt: virtutēmque censuerunt ob eam rem esse laudandam, quod efficiens esset voluptatis. quibus obsoletis, floret Epicurus, eiusdem adiutor, auctōrque sententiae, cum is, viris equisque (vt dicitur) si honestatē tueri, ac retinerē sententia est, decertandum est, nam, si non modo vtilitas, sed vita omnis beata, corporis firma constitutione, eiusque constitutionis spe explorata, vt à Metrodoro scriptum est, continetur: certe hæc vtilitas, & quidem summa (sic enim censet) cum honestate pugnabit. nam, ubi primum prudentia locus dabitur? an, vt, conquirat undique suavitates, quām miser virtutis fannulatus, seruentis voluptatis quod autem munus prudentia? an legere intelligenter voluptates fac, nihil isto esse incundius: quid excogitari potest turpis?

## EXPLANA TIO.

**S**IC *decimilli*,} vide Agellum. **BONVS auctor**} maxi-  
mè dignus, cui, aliquid narranti, fides habeatur. **SCRI-**  
**BIT**,} Ait, tres. **Scrispit**, tres. **TVNC**,} Tum, decem, &  
Tertij. **REVERTISSE**, à senatre non impetrata:} Revertisse  
dicit, re à senatu non impetrata, vnus. Revertisse, re à s. non  
imp. sex. Re à s. non imp. revertisse, vnus. **EGRESSVS erat**,}  
T. Erat, non est in quatuor, & Tertij. Septē, ord. præp. FR AVS  
enim

enim distingit, non dissoluit per iurium. } sic septem mei, & Tertiij, & recte. Contraria enim sunt, Distringit, & Dissoluit. & lepor est in similitudine. Destrinxit, vnus, Destrixit, duo. Distringuit, duo, mendosè. **DECREVIT senatus &c.FIERI potuisset**,} Posset, septem mei, & Tertij. **ATILIVS**,} Cic. de Leg. lib.1. Acilius, duo mei, & Tertij. **ILLE**,} abest à duobus, & Tertij. **PERSPI- C V M** est enim, que timido animo, &c.} Perspicuum est enim, ea, quā &c. vndecim, & tertij. **OPVS esse videret**,} Videatur, omnes mei, & Tertij. **NON esse vtilia, &c.**,} turpia non sunt vtilia. **QVIA sunt**,} Sint, quinque, & Tertii. **AN- NICERII**,} ab Anniceride, Platonis redemptore. de quo lege Laertium in Aristippo. Vide & Sudam. Aristippi auditor fuit Antipater Cyrenaeus, huius Epitimides Cyrenaeus, huius Paræbates, Paræbatis Anniceris. **VIRIS equisq.**,} i. extremo conatus. Sic antiquis liber. Sic Fam. lib.9. ep.7. & Sall. Iug. pag. 106. & 155. & ad Cæl. de rep. ord. 207. ad Q. fr. l. 3. Phil. 8. L. Florus i. Veris, quisque, duodecim, & Tertij. Antea, Velis, equisq. **CORPORIS firma constitutione**,} iuq. **SPE explorata**,} sic sex, & Tertij. Spe explorata, tres. Specie explorata, duo. Spem explorata, duo. Spe perfecte explorata. Vrsinus ex veteri libro. **A Metrodoro**,} Atheniensi. Légitur hoc nomen in antiqua mea inscriptione.

D . M  
METRODORO . DE  
DOMV. ERVCI. CLA  
RI . BENEMERENTI  
VIXIT . ANNIS  
· F E C I T  
MATER .

**A N** legere intelligenter voluptates:} vt salutares noxiis, honestas turpibus (si tamen hoc tribendum est Epicuro) magne paruis, diuturnæ breuibus anteponantur. Quatuor mei, Intelligetur. Duo, Intelligere. Tres, Intelligunt. Vnus, Intelliger. Tres, Intelligitur. Tertij, Intelligitur. **EXCOETARI**,} Cogitari, vndecim, & Tertij.

## C I C E R O .

**I**am, qui dolorem sumnum malum dicat, apud eum quem habet locum fortitudo, quæ est dolorum, laborumq; contemptio? quamvis enim multis in locis dicat Epicurus sicut hic dicit, satis fortiter de dolore: tamen non id spectandum est, quid dicat, sed quid consentaneum sit ei dicere, qui bona voluptate terminauerit, mala dolore ut si illum audiam de continetia, & temperatia: dicit ille quidem multa multis locis: sed aqua heret, ut aiunt: nam, quo modo potest temperantiam laudare is, qui ponat summum bonum in voluptate? est enim temperantia libidinum inimica, libidines autem, conseccatrices voluptatis. Atque in his tamen tribus generibus, quoquo modo possunt, non incallide tergiuersantur. Prudentiam introducunt, scientiam suppeditantem voluptates, repellentem dolores. Fortitudinem quoque aliquo modo expedient, cū tradunt, rationem negligende mortis, perperiendique doloris. Etiam temperantiam inducunt, non facillime illi quidem, sed tamen quoquo modo possunt: dicunt enim, voluptatis magnitudinem doloris detractione fieri. Inflititia vacillat, vel iacet potius, omnēsq; ea virtutes, quæ in communitate cernuntur, & in societate generis humani. neque enim bonitas, nec liberalitas, nec comitas esse potest, non plus, quam amicitia si hec non per se expellantur, sed ad voluptatem, utilitatem, vere referantur. Conferamus igitur in pauca. nam, ut utilitatem nullam esse docuimus, quæ honestati esset contraria: sic omnem voluptatem dicimus honestati esse contrariam. quo magis reprehendendos Calliphonem, & Dinomachum iudico: qui se dirempturos controversiam putauerunt,

si cum

## I N L I B. III. D E O F F.

431

si cum honestate voluptatem, tamquam cum homine pecudem, copulariissent, non recipit istam coniunctionem honestas, apernatur, repellit. nec verò finis bonorum, & malorum, qui simplex esse debet, ex dissimilibus rebus misceri, & temperari potest. Sed de hoc hactenus: magna enim res, alio loco pluribus verbis disputata. Nunc ad propositum. Quemadmodum igitur, si quando ea, quæ videretur utilitas, honestati repugnat, diindicanda res sit, satis est supra disputatum. sin autem speciem utilitatis etiam voluptas habere dicatur, nulla potest esse ei cum honestate coniunctio. nam, ut tribuanus aliquid voluptati condimenta fortasse non nihil, utilitatis certè nihil habebit. Habes à patre munus, Marce fili, mea quidem sententia, magnum: sed perinde erit, ut acceperis. quamquam tibi hi tres libri Cratippi inter commentarios, tamquam hospites, erunt recipiendi. sed, ut, si ipse venisset Athenas: quæ quidem esset factum, nisi me de medio cursu clara voce patria reuocasset, aliquando me quoque audires: sic, quoniam his voluminibus ad te profecta vox mea est, tribues his temporis, quantum poteris: poteris autem, quantum voles. cū vero intellexero, te hoc scientia genere gaudere: tum & presens tecum propediem, ut spero: & dum aberis, absens loquar. Vale igitur, mi Cicero, tibi q; perfuade, te mihi quidem esse carissimum, sed multō fore cariorēm, si talibus monumentis, praeceptisq; latabere.

## E X P L A N A T I O .

**M**ULTIS in locis} In multis locis, unus. Multis locis, quinque, & Tertij. A Q' A heret, ut aiunt: } nō progreditur eius ratio, impedimentis retinetur, ut aqua. Nam, quo modo pōt. }

Nā, qui potest, vndeclim & Tertij. DEPELLENTEM dolore, nam philosophia medetur consternatis animis, vñ ait Cicero. PERPETIENDIQ. doloris. } Que, abest à duobus, & Tertij. DOLORIS detractionē fieri. } Detractionē, omnes mei, & Terti. COMITAS} sic legendum, sic & Terti liber, & alii mei. CALLIPHONEM, & Dinomachum} de Fin.lib. 5. Tusc.v.A. cad. IIII. Ex dis̄similibus} Ex dis̄simillimiis, quinque, & Terti. SED de hoc hactenus. } nō, Hactenus, abest à duodecim, & tertii. ALIO loco} in libris de Finibus. PLV RIBVS verbi disputata. } hæc duo postrema verba, Verbis disputata, absunt a dece, & tertii. In uno verbum Disputata, non legitur. In alio, pluribus dixi. Ut facile appearat, omnia esse glossemata. HABERE dicatur, } Dicitur, vñus. Diceretur, quattuor, & tertii. PERINDE erit, ut acceperis. } Sic Plautus: Res perinde est, vñci agas, atque magnificias. QVAM QVAM tibi hi tres libri Cratippi intercomm. } In quinque non legitur nō, Tibi. Septem, & tertii. Quamquam hi tibi tres libri inter Cratippī comm. TAM QVAM hospites} plus igitur Cratippo, quām sibi ipsi, tribuere videtur. Fam.lib. 12. ep. 16. & lib. 16. ep. 21. & horum librorum primo, ipso initio, & initio huiusce tertii. DE medio cursu. } E medio cursu, vndeclim, & Tertii. ME quoque} non modò Cratippum. VT sp̄eo. } auguratur scilicet, quod evenit, nam proscriptus, & imperfectus est paulo post scriptos hos libros, M. Antonii Triumviri iussu. Neque igitur præfens, neq; absens cum filio locutus est. TE mihi quidem esse car. } Te quidem mihi esse car. vñus. Te esse mihi car. duo. M:hi quidē te esse car. vñus. Esse te mihi quidē car. vñus. Te mihi esse car. duo. Esse te quidem mihi car. quinque, & tertii. Te esse equidem mihi car. vñus. SI talib⁹ monumētis, præcepti q. latabere. } placere video doctis viris, Monitis, potiū, quām, Monumentis, contra veteres omnes libros, ab his ego non libenter dissentio: sed libenter quoq; tueor antiquitatem librorum, vel ipsam potius tentiam Ciceronis, quem loqui video de suis libris, eōsq; vocare monumenta, paterni scilicet amoris in filium: tamquam diu duratores. in quibus quoniam præcipiuntur ea, quæ ad honestatem, verāmq; gloriā pertinent, propterea subiuxit, Præceptisque. Quasi dicat, Si meos libros leges, corūmq; præcepta seruabis, præcepta enim monumentis eiusmodi continentur. Vnus, Ornamentis.

# CLARISSIMO VIRO IOANNI DONATO.

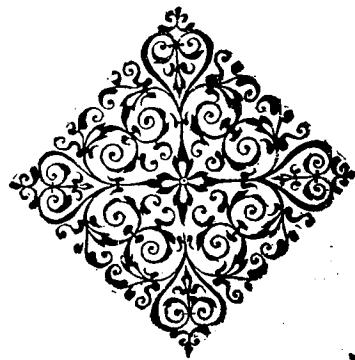
**D**ONVM omnes suspiciunt, laudant, atque etiam ad id adipiscendum natura impelluntur, IOANNES DONATE, amplissime. sed multos à virtutis via, quæ ad verum bonum ducit, aberrantes, id, quod specie quidem bonum, re autem ipsa malum est, expetere satis constat. Multi rursus sunt, quos, ne malè agant, pœna tantum metus deterret, cōsq; tamen extra bonorum numerum collocados, malosq; appellados, sapienter cecinit Poëta. Neque meliores videntur his, qui propter diuitias, honorem, dominationē, bene, non sponte quidem, sed velut inuiti, agunt. Sed optimū illud, & cælestē, ac pene diuinum hominū genus censemendū est, qui, proposita impunitate mali, vel etiā præmio, nihil turpe, nihil indecorum, nihil vñquā flagitiosum admitterent, nihil in religionem, fidem, remp. parentes, amicos, audēdum esse existimarent. Quorū Tu in numerum, vir amplissime, non solū adscendens es, verū omnium, quorum memoriam litteræ nobis cōmendarunt, princeps censendus, solusq; inter optimos optimus, & inter præstantissimos quosque præstan-

tissimus. sed (id quod in maxima felicitatis parte numerandum est) non aliis de te sensus est hominum: neque ingrata est Ciuitas, & Respublica, quæ, in Te tota conuersa, consilium, tanquam Pythij Apollinis ab Oraculo responfa, petit. Evidem M. Catonem Porciæ gentis Principem tres summas in homine res præstisſe ferunt. fuisse enim optimum oratorem, optimum senatorem, optimum imperatorem. Quas omnes in Te esse summas, atque admirabiles, maximis, ac difficultissimis suis temporibus, Veneta, omnium, quæ à prima usque mundi origine fuerunt, nobilissima Resp. non semel experta fuit. Et, licet Tibi numquam militarem rem attingere, & bellicas tuas virtutes simul cum aciebus ipsis explicare, & manum cum hoste concrere, contigerit, (quod talis, & tanta Resp. tam, tantumque virum à se longius ablegandum numquam passa fuerit) non tamen Tibi semel oblata est occasio, domi, atque in toga, quantum in hac militari laude posses, & sententia, & consilio, & quotidiano sermone, & in omni alia publica, priuatâq. actione, declarandi. Huius igitur viri memoriam, quem Tibi ex omni antiquitate licet multo inferiorem simillimum tamen & his, quas dixi, virtutibus, & vita instituto, & moribus fuisse, dicere sœpe solitus sum, & mihi facile persuadeo, cùm ego semper eximio quadam animi studio iam inde à puerò coluerim, omniâq. ipsius dicta, ac facta, eaque etiam, quæ eius personæ adscripta sunt diligenter obseruassem, & pleraque memoria mandasse: volui tandem

de m Ciceronis de Senectuti's laudibus Dialogum, in quo loquentem ipsum facit, meis illustratum commentariis, Tuóq. amplissimo nomini commendatum, typis mandare, vt & maximum studiorum, vitæ, morumq. tecum cum Catone similitudinem, & meam de vobis opinionem, Tuíq. singularem obseruantiam, & mirificam de litteratis viris beneficendis voluntatem simul testatam relinquerem. Vale. Venetijs.

Kal. Iun. cI. I ɔ XX C I.

E 2



JACOBI CRITONII  
SCOTI,

*Ad Clarissimum virum, Patritium Venetum,  
IOANNEM DONATVM,  
Óde.*

DVm cupidus, tumidusq. Dco tua dicere facta,  
Donate, quaro, maxime:  
Mens desideriis ardet, sed lenta fatiscit  
Sub corde virtus anxio.  
Non tenui tentanda videns freta turbida velo,  
Tardóq. Pontum remige,  
Compresso feruore semel sub pectore anhelo  
Labore desisto graui.  
Sed nihil intonsus frustra mihi Cinthius vñquam  
Suasit, vel alta numina.  
Ergo Deum, & doctas s̄ape in mea vota camœnas  
Rursus inuoco furens.  
Tum mens euehit multa seu candidus auro  
Olor leuatus euolat,  
Præpetibusq. petit volitans sublimia pennis,  
Magnumq. inane diuidit.  
Victorem armatæ flammis si Musa Chimeræ  
Canora vatis extulit,  
Sive trucidantes immania monstra, vel ipsum  
Natum Marina Tethyos,  
Aut Anchisiadem, Priameumq. Hectora grande  
Carmen poëtarum beat,  
Si viuunt Therónque, Hierónque, atque Ithacus ille,  
Ob vana Clari ludicra,  
Quos numquam obscura sub nube silentia condent  
Obliuiosa Tartari,  
Hoc opus è vestrum, Musæ, est. mihi cingite frontem,  
Tempusq. Lauro Apollinari.  
Nec deerit diuos inter, regesq. deorum  
Genus, Donato gloria.

M. TVL.



M. T V L L I I

CICERONIS  
CATO MAIOR,

VEL

DE SENECTVTE,

*Ad T. Pomponium Atticum;*

Dialogi personæ;

SCIPIO. CATO. LÆLIUS.

CICERO.

TIT E, si quid ego adiuro,  
curamve lenasso,  
Quæ nunc te cognit, & versat sub  
pectore fixa,  
Ecquid erit præmis?  
licet enim versibus iisdem mibi affa-  
rite, Attice, quibus affatur Flaminium ille vir, hanc  
magna cum re, sed fide plenus, quamquam certò scio,  
non, ut Flaminium, solicitari te, Attice, sic noctesque  
diisque, noni enim moderationem animi tui, & equi-

E 3

tatem: tēq. non cognomen solum Athenis deportasse, sed humanitatem, & prudentiam intelligo. & tamen suspicor iſdem rebus te, quibus me ipsum, interdum granūs commoueri. quarum consolatio, & maior est, & in aliud tempus differenda. nunc autem mihi vi- sum est aliquid ad te de senectute conscribere. hoc enim onere, quod mihi tecum commune est, aut iam ur- gentis, aut certe aduentantis senectutis, & te, & me ipsum leuari volo. et si, te quidem id modice, ac sapien- ter, sicut omni:z, & ferre, & laturum esse, certo scio. sed mihi, cūm de senectute vellem aliquid scribere, tu oc- currebas dignus eo munere, quo vterq. nostrum com- muniter vteretur. mihi quidem ita incunda buius libri confectio fuit, ut non modò omnes abstererit sen- etutis molestias, sed effecerit mollem etiam, & incun- dam senectutem. numquam igitur satis laudari phi- losophia poterit: cui qui pareat, omne tempus etatis si- ne molestia possit degere. Sed de ceteris & diximus al- lias multa, & ſepe dicemus. hunc verò librum de sene- etute ad te misimus. omnem autem sermonem tribui- mus nō Tithono, ut Aristoteles, ne parum effet au- toritatis in fabula: sed M. Catoni ſeni, quo maiorem, au- toritatem haberet oratio: apud quem Lelium, & Scipionem facimus admirantes, quod is tam facile se- nectutem ferat, iisque eum respondentem, qui ſi erudi- tius videbitur diſputare, quam conſuevit ipſe in ſuis li- bris: attribuimus Gracis litteris, quarum conſtat eum per ſtudioſum fuiffe in ſenectute. ſed, quid opus eſt plu- riam enim ipsius Catonis ſermo explicabit noſtram omnem de ſenectute ſententiam.

## EXPLA-

**A**TO MAIOR } de huius Dialogi inscriptio-  
ne ipſe Cicero in Lelij proœnicio. Maior, autem  
addidit, ad Minoris differentiam, nam mi-  
noris quoque laudem Cic. ſcripſit. ex quo Cæ-  
sar Anticatonem litteris mandauit. Vide Plutar-  
cham in Cicerone. DE SENECTUTE } M. Terētius Var-  
ro librum & ipſe ſcripſit, Tithonum, *mei pīgēs*. Demetrius  
quoque Phalereus *mei pīgēs* nominatur à Laertio. O Tite, &  
Verlus antiquorum poētarum apud Ciceronem ſaþe inſer-  
tos reperiri, ſcribit Quintil. lib.1. cap.3. de quo vide ipſum  
Ciceronem lib.2. de Orat. **S**I QVID } non nihil aliquantum.  
debeat hoc amicitia mutua, cuius officium eſt, tam mutuo  
admonere, quām omnia communia reddere. **A**DIVRO, &  
ſic lego, pro, Adiuero, quod legitur in vetere meo: & in  
alio item ſcriptum eſſe, Langius notat. reliqui omnes viginti,  
(nam in hoc libro emendando vno & viginti vtor ſcriptis,  
meis) Adiuto. Adiurit, Ter. Phorm. act.3. fc.3. **L**E V A S S O, &  
pro, Leauero. antiquè dictum. ſic, Nemo ſeparatim habefit  
deos. Et, Si aliquis im occidit. Vnus meus, Relaxo. **Q**VAE nunc  
te coquit, } ad Q. fratrem: Vaticinii odia non forbeo ſolum,  
ſed etiam concoquo. **E**T V F R S A T ſub peſtore fixa, } ſub  
peſtore: in extrema parte peſtoris, ore ſtomachi. Vnus. Et  
verſat tibimet in peſtore fixa. Vnus, Et verſatur in peſtore  
firma. Vnus, Et verſatur in peſtore fixa. Tres, Et verſat  
in peſtore fixa. Duo, Verſatur peſtore fixa. Quinque, Ver-  
ſatq. in peſtore fixa. Vnus, Verſatq. in peſtore firma. Vnus,  
Et vexat in peſtore firma. Vnus, Vexatq. in peſtore fixa.  
**E**C Q V I D } venustatis quiddam habet. quale apud Terentium  
Eunucho:  
Ecquis me viuit hodie fortunatior?  
**P**R A E M I T: } ſic quattuordecim mei. Septem, Pretii. **M**I H I af-  
farite, } iugurthi: amicissimo amicissimū. **F**L A M I N I N V M. }  
L. Quintili Flaminium, L. Quintili Flaminii fratrem,  
quem Ennius his verſibus alloquitur, Galliæ proconsulem, à  
Catone censore ſenatu motum, & ignominia notatum, pro-  
pter quendam, quem ad preces, ſiue amati, ſiue amicæ, vel ſua  
manu occiderat, vel ſecuri percuſſerat: qui ex Macedonia, &  
Philippo rege triumphavit anno ab Y. C. **D**LIX. **H**AVD  
E 4

*magna cum re,* & iocus. nam, cùm vellet dicere, Locuples testis, ex confusione Latini sermonis, recordatus eius inopie, dixit, Haud magna cum re. Sic omnes mei libri. & Ennius ipse in Annalibus:

Certantes magna cum cura, tamen cupientes

Regni dant operam. simul auspicio, auguriisque.

**S E D fide plenus.** { Sed plenus fide, duo. reliqui, Sed plenus fidei.  
**S O L L I C I T A R I t e , Attice,** { O Attice, vnum. In uno deest tibi  
 Te. Tite, sex. O Tite Attice, vnum. **N o c t e s q u e d i e s q u e .** {  
*vixit te, qui nesciit tuum.* M O D E R A T I O N E M animi tui, { qui  
 neque secundis rebus efficeris, nec aduerteris deprimaris,  
 quod magni animi esse, ait Aristoteles, quod pari fastigio ste-  
 terit in utraque fortuna, ait Nepos. Et **aequitatem:** { aequum  
 animum, aequanimitatem. C O G N O M E N { Nepos. Hoc spe-  
 cimen prudentiae, quod, cùm in eam se ciuitatem contulisset,  
 quæ antiquitate, humanitate, doctrinaque præstaret omnes,  
 ei nunc ante alios fuerit carissimus. Huc ex Asia Sulla dece-  
 dens cùm venisset, quandiu ibi fuit, secum habuit Pomponium, captus adoleſcētis, & humanitate, & doctrina, sic enim  
 Græcē loquebatur, vt Athenis natus videretur: tanta autem  
 suavitate sermonis Latini, vt appareret nativum quendam le-  
 porem esse, non adscitum. Idem poemata pronuntiabat &  
 Græcē, & Latinē sic, vt supra nihil posset addi. H u M A N I-  
 T A T E M, { doctrinam, scilicet, eruditionem, vnde Humaniores litteræ. Cornelius Nepos: Atticus & principum philo-  
 sophorum ita percepta habuerat præcepta, vt iis ad vitam  
 agendum, non ad ostēationem, vteretur. P R V D E T I A M, { in dissimulando dolore animi: ne tyranus offensus magis  
 senviat, quod Ciceronem, Tulliolæ obitum parum moder-  
 tè ferentem, monet Sulpicius. I I S D E M r e b u s, { reip. pertur-  
 batione. M E I P S V M, { qui non modò, vt tu, philosophiam  
 didici, sed alios docendos, & animi perturbationibus leuan-  
 dos suscepit. I N T E R D V M, { maiores enim vires sunt naturæ,  
 quam disciplinæ. G R A V I U S, { quam deceat, vel quam do-  
 ctrina permittat. E t m a i o r e s, { nam, quod maior dolor, eo  
 maior consolatio requiritur. E t i n a l i u d t e m p u s d i f f e r e n d a, { non enim licet, ob tyrannum. O N E R E, { onus, cùm adue-  
 nit: quod dum abest, desideramus. A D V E N T A N T I S, { Horatius

Eheu fugaces Postume, Postume,

Labuntur

Labuntur annis nec pietas moram  
 Rugis, & instanti senectæ  
 Afferre, indomitæque morti.

Seneca:

Rota præcipitis vertitur anni.

Ouidius:

Vtendum est ætate: cito pede labitur ætas:

Nec bona tam sequitur, quam bona prima fuit.

M E I P S V M, { ne imitari videar malos medicos, qui in alienis  
 morbis se profitentur tenere medicinæ scientiam, seipso  
 curare non possunt. L E V A R I v o l o, { Leuare vnum. M o-  
 d i c e, { pro. Modestè. sic locutus in oratione pro Plancio, &  
 lib. iii. de Leg. non longè ab extremo. sic omnes mei libri,  
 uno excepto, in quo, Modestè. C E R T O s c i o, { Certè scio,  
 quindecim mei. D I G N V S e o m u n e r e, { atqui scriptores  
 semper cupiebant scripta sua dignis hominibus cōmendare:  
 quorū vtilia nunc esset copia. V T E R Q U E n o s t r u m, { amicoru  
 enim omnia cōmunia. S A T I S l a u d a r i, { Satis laudari dignè,  
 nouē. Satis dignè laudari, quinque. Dignè satis laudari, vnum.  
 P H I L O S O P H I A p o t e r i t, { ord. præp. quinque. D e ceteris, { phi-  
 losophiæ laudibus. S A E P E d i c e m u s, { propositū enim ei erat,  
 totam philosophiam Latinis litteris illustrare. H u n c v e r o  
 l i b r u m, { Verò, abest ab omnibus, in duobus, Hunc autem li-  
 brum. D e s e n e c t u t e a d t e, { ord. præp. decim septem. T I-  
 T H O N O, { Laomedontis filio, qui cùm ab Aurora adamatu  
 esset, ab eaq. in cælum sublatuſ, illius succo perunetus est.  
 atque ob ad eam senectutem peruenit, vt petuerit se in cicada  
 conuerti: quod genus cantando mori ferunt. Horatius:

Abstulit clarum cita mors Achillem:

Longa Tithonum minuit senectus:

Forsan & nobis, tibi quod negauit,

Contulit hora.

Vide Comm. in Hom. II. a. & Od. t. Ser. Aen. IV. Hygin. cap.  
 ccx. A R I S T O C H I U S, { de quo Laëtius. Q u o m a i o r e m a u t o-  
 r i t a t e m, { In Lælio. Genus hoc sermonum, positum in homi-  
 num veterum auctoritate, & eorum illustrum, plus nescio  
 quo pacto videtur habere grauitatis. L A E L I V M, { Sapien-  
 tem dictum prioris Lelij filium. Phil. xi. S C I P I O N E M, {  
 Africanum minorem, Pauli filium. F A C I L E s e n e c t u t o m f e-  
 rat, { pædias p̄fēpturā ypsar, Plato. G R A E C I S litteris, { quas,

natu grandior, Sardiniae prætor, ab Ennio didicisse fertur.  
SENTENTIAM. } quod animo sentimus. *sicutus*. Vide  
Quintilianum lib.ii. cap.5.

## C I C E R O .

**S**C. Sapenum erò admirari soleo cum C. hoc Lælio, cùm ceterarum rerum tuam excellentem, M. Cato, perfectamque sapientiam, tum vel maxime, quod nunquam grauem tibi senectutem esse persenserim: quæ plerisque senibus sic odiosa est, ut onus se Aetna grauius dicant sustinere. C. A. Rem hanc sanci, Scipio, & Lælio, difficultem admirari vide mini. quibus enim nihil est in ipsis opis ad bene, beatèque viuendum, iis omnis etas grauius est: qui autem omnia bona à se ipsis petunt, iis nihil potest malum videri, quod natura necessitas afferat: quo in genere est in primis senectus: quam ut adipiscantur, omnes optant: eandem accusant adepti: tanta est inconstititia, stultitia, atque perueritas. Obrepere autem eam citius, quam putassent primum, quis coegerit eos falsum putare? qui enim citius adolescentie senectus, quam pueritia adolescentia, obrepit? dicoinde, qui minus grauius est iis senectus, si contingentesimum annum agerent, quam si octogenimū præterita enim etas, quamvis longa, cùm effluxisset, nulla consolatione præmulcere posset stultam senectutem. quocirca, si sapientiam meam admirari soletis, quæ utinam digna eset opinione vestra, nostroque cognomine: in hoc sumus sapientes, quod naturam optimam ducem, tamquam deum, sequimur, eique paremus: à qua non verisimile est, cùm cetera partes etatis bene descriptæ sint, extremum actum, tamquam ab iuncti poeta esse neglectum, sed tamen necesse fuit,

IN CAT. MAIOR E M. 44  
esse aliquod extremum, & tamquam in arborum baccis, terraq; frugibus, maturitate tempestiva quasi vietum, & caducum: quod ferendum est molliter sapienti. quid enim est aliud, gygantum more bellare cum diis nisi naturæ repugnare?

## EXPLANATIO.

**C**VM C. hoc Lælio, } Cùm hoc C. Lælio, deceimnouem. v.  
vnum, Cùm C. Lælio. CETERARVM rerum } quas in Lælio enumerat: Cato, quia militarum rerum vnum habebat, multaq; eius & in senatu, & in foro vel prouisa prudenter, vel acta constanter, vel responsa acutè cerebantur, propterea quasi cognominam habebat in senectute Sapientis. QVOD numquam grauem tibi senectutem esse persenserim: } undecim, Quod numquam senectutem tibi grauem esse senserim. quinque, Quod numquam tibi senectutem graue esse senserim. vnu, Quod numquam senectutem tuam grauem tibi senserim. vnu, Quod numquam senectutem grauem tibi omnem senserim. vnu, Quod numquam senectutem tuam grauem tibi persenserim. Duo faciunt cum impressa lectio ne, præterquam quod pro Persenserim habent Senserim. ONVS Aetna grauius } ex Euripide in Herc. Furente:

αὐτοῖς μοι φίλοι,  
τὸ δὲ πάπας ἀχθόει  
βαρύνει τίτανος οὐρανόν  
δηρει κατέπειται.

Vide Muretum Varr. lect. lib. vii. cap. 15. De Aetna autem Pinardus Ode 4. Olymp. Ode prima Pyth. Virg. 3. Æn. Agell. libr. xvii. cap. 10. Macrobius lib. v. cap. 27. Claudianus lib. i. de ratu, Silius lib. xiv. Lucretius. Strabo lib. vi. Pomponius Mela, de Sicilia, lib. 2. Plinius lib. ii. cap. 106. lib. iii. cap. 8. Sojinus cap. xi. Orosius lib. xi. cap. 12. August. de Ciuitate lib. iii. in fine, Iustinus in principio libri iv. Græcius senarius Senectutem grauo onus dicit: αὐτοῖς τὸ πάπας εἰσὶν αὐτόποιοι βαθόει. Αἱ σειρὶς πειθοῦ, } sic omnes libri, uno excepto, in quo, In seipisis ponunt: QVOD nature necessitas afferat: } Euripides

Δευτῆς αὐτῆς νοῦς διέτη λέγει πάτερ.

Id est: Necesitatis orationis via maxima.

Et Hesiodus.

E A N D E M accusant adepti:} sic legendum, ex duodecim meis  
libris. In Graeco, κατηστελποι.

Martialis:

Quod sis, esse velis, nihilque malis.

Antiphanes apud Stobaeum:

Οὐτίσθι μας γῆρας, σὺ ρεκόν μόρα  
οὐ πι τυχέντι δεινώσι δὲ οὐ ξηρά.  
εὖ πάρτες, ηδεινούντες, αἰδήλοις ποτὲ  
ανίστησιν οὐτας θεούς, αἰχθέστης εὔστη.  
τούς ξεῖνος γέρωντας, οὐτας οὐρανούς.

Et Theres, apud Euripidem:

οὐτέρος μὴ τὸ ξῆν, φέλον δέ.

I N C O N S T A N T I A. } quia dissentunt à seipsis; S T U L T I T I A. } quia sine causa. P E R V E R S I T A S. } quia mentis, animique vitio. est enim Peruersitas maior, quam Stultitia, culpa. excusationem enim aliquam habet stultitia, peruersitas non habet: in qua rationem depravata voluntas vincit, itaque accedet ad improbitatem videtur, cuius expers stultitia est. ep.7.lib.1.Fam. Quamquam est incredibilis hominum peruersitas, (grauiori enim verbo vt non libet) &c. Inest, pro Est, octo. Septem ord. præp. Stult. inconst. Stultitia inconstitia, vnum. Tanta est hominum inconst. &c. vnum. O B R E P E R E aiunt eam citius quam putassent. } Plaxo in Axiocho: Λαζὸν ἐπειοῦθε τὸ γῆρας. Sumpst ex Menecrate poeta, apud Stobaeum:

Γῆρας ἐπειν μέρος αἵμην, πᾶς τοι λαζετας.  
λαζετας τὸ θηριοφάγον.

Idem tradit Ouidius Fast. i. & vi. & de Arte amandi iii. Aufonius:

Senescimus, effugit aetas. Et Satyricus,  
---Obrepit non intellecta senectus.

Q V I S cogit } nam dicere, Non putaram, turpe est. CVM ef-  
fluxisset, } perinde enim est, ac si numquam fuisse. N Y L L A  
c o n s o l a t i o n e. } Nulla tamen consolatione, septem. Nulla cum  
c o n s. v n u s. Consolatio, duo. S T U L T A M seneclitum, } per-  
r u p i a, continens pro contento. S I sapientiam meam admirari  
s o l e t i s, } quam Lælius in dialogo de Amicitia sua pari mode-  
stia prætulit: immo Socrati, Apollinis iudicio sapientissimo;  
anteposuit: quod illius tantum praclare dicta, huius etiam

egregie

egregie facta laudarentur. N O S T R O Q U E cognomine, } Ve-  
stróque cogn.octo.non placet. M.enim Cato,& C.Lælius no-  
minati Sapientes. vide lib.iii. de Off. N A T U R A M optimam  
d u c e m, } quam sequentibus omnia expedita succedunt. Seneca  
Ep.lib.xxii. ep.122. T A M Q U A M deum, } nam Errare huma-  
num est,non diuinum. Plin.lib.11.cap.1. Naturam deum facit.  
Cic.iii.de Fin. Tempori parere sequi deum, senoscere, nihil  
niniis. E S S E aliquod extreum, } Aliiquid, Omnes mei. Duo,  
Aliiquid esse extr. Vnus, Aliiquid fuisse extr. B A C C I S terre-  
que frugibus, } Cic.i.de Leg. Nec solùm ea,qua frugibus,atque  
baccis terra fetu perfunduntur, sed etiam pecudes. Ouidius,  
Ingratásque, vocat, nec frugum munere dignas.

M A T V R I T A T E tempestiu } vide Agellium lib.x. cap. ii,  
V I E T V M, languidum, sine vi, naturalibus viribus priuatum.  
Festus. Vetus senex, Terentio: Vieta membra, Horatio Vieta  
vestis aranei, i.tela, Lucretio. Vetus locus, Catoni: Vieta ficus,  
Columellæ. C A D V C V M: } ad casum pronum. M O L L I T E R. }  
non effeminatè, & parum viriliter: sed, animo leni, & non in-  
quo. G Y C A N T V M more } Gygantiū, vnum. Modo, quinque,  
More gygantum, vnum. Gygantes bellare, vnum. Gygantomachiam  
scriperunt Hesiodus in Theogonia, Virg. Georg. i.  
Ouid. Metam. i. & v. & Claudianus, De fabulæ mythologia  
Macrobius Sat.lib.i.cap.20. Theognis:

εἰ τοι περισσός τερετος μεταπέμπεις,  
εἴτε δικαιοτετενει, οὐδὲν τέρπο θείας.

Bella mouere nefas, litēmque intendere diuis,  
Mortales, vetitum est. hoc tibi nemo dabit.

## C I C E R O.

A T qui,Cato,gratissimum nobis, ut etiam pro Sci-  
pione pollicear feceris, si, quoniam volumus (spera-  
mus quidem certè) senes fieri, multò antè à te didiceris-  
mus, quibus facillimè rationibus ingrauescentem at-  
tentferre possumus. C A. Faciam vero Lali, præser-  
tim si utrique vestrum gratum, ut dicas, futurum es-  
L A E. Volumus sanè, nisi molestum est tibi, Cato, tan-  
quam longam aliquam viam confeceris, quam nobis

*quoque ingrediendum sit, istuc; quò peruenisti, vide  
re quale sit. C. A. Faciam, ut potero, Leli: sèpe enim  
interfui querelis aequalium meorū, (pares autem cum  
paribus, veteri proverbio, facillimè congregantur) quas  
C. Salinator, quas Sp. Albinus, homines consulares,  
nostriferè aequales, deplorare solebant; tum, quòd vol-  
uptatibus carerent, sine quibus vitam nullam puta-  
rent: tum, quòd spernerentur ab iis, à quibus essent  
coli soliti, qui mihi non id videbantur accusare, quod  
esset accusandum. nam, si id culpa senectutis accide-  
ret, eadem mihi vñsu eueniarent, reliquisque omnibus,  
maioribus natu, quorum ego multorum cognoui senec-  
tutem sine querela: qui se, & libidinum vinculis la-  
xatos esse non moleste ferrent, nec à suis despicerentur.  
sed omnium istiusmodi querelarum inest culpa, non  
in etate, moderationem, & nec difficiles, nec in huma-  
ni senes tolerabilem senectutem agunt: importunitas  
autem, & inhumanitas omni etati molesta est.*

## EXPLANATIO.

**V**T etiam pro Scipione pollicar, } sic de Amicitia: Pro hoc,  
qui minor est natu, meo iure spondeo. Quoniam volumus, {  
(speramus quidem certe) } Quoniam speramus, volumus  
quidem certe, tres. Quoniam speramus, & volumus quidem  
certe, duo. Quoniam sperauimus, volumus quidem, vñus. Quoniam spera-  
mus, & volumus quidem, septem. Quoniam & speramus &  
volumus, vñus. Quoniam speramus, volumus certe, vñus. Quo-  
niam speramus, & volumus quidem certe, quinque. FACIAM  
vero, Leli, } annuentis. De Fin. Tu vero id arbitratu. Tusc. v.  
Tu vero, ut videtur. Terentius: Laudas eos, qui heros fallunt  
Cui responderet seruus: Ego vero laudo. VOLVMVS sane, nisi  
&c. } sunt hæc verba Socratis ad Cephalum Atheniensium  
orato-

oratorem, I. de Rep. vnde tota huius sermonis ratio desumpta  
est. MOLESTVM est tibi, } nō Tibi, abest à sexdecim. Vnus,  
Ni. Vnus, Niſi molestum est, M. Cato. QUAM nobis quoque in-  
grediendum sit, } non obſeruata figura multos potuit in erro-  
rem inducere. Nos & veteres libros vñdecim, in quibus est.  
Quam, non, vt in vulgatis, Qua, & confuetudinem fecuti Latini  
sermonis, reponimus. Quam, Cuius generis exempla sub-  
ſcribam. In Vatinium: Eripueras ſenatus prouinciae decernere  
di potestatem. Terentius: Nouarum ſpectantci. Et Hecyra:  
Eius vidēdi, cùm'de muliere loquatur. Quo loco vide Dona-  
tum. Et hic, infra: Notandum putau libidinē. Et Tufc. I. Iphi-  
genia Aulide duci se immolandum iubet. Quaq. ab Oberto  
Gifanio, præstantis industriae viro, quemq. Venetiis aliquādo  
familiariter noui, obſeruata eſſe video: Varrois lib. II. I. de re  
ruct. Acus subſternendum gallinis parturientibus. Eiusdē, co-  
dem libro: Eas haras subſternendum palea. Virgilij:

-- Pacem Troiano ab rege petendum.

Lucretij lib. I.

Pœnas timendum.

Eodem lib.

Multa agendum.

Ibidem:

Mons corpora priuandum.

Lib. II. Addendum partes alias.

Lib. III. Faciendum eſſe animam ſenſibus auctam.

Vide de hoc Platonem lib. V. II. Pol.

PARES cum paribus, &c. } Ar. Rhet. II. Ηλεγάτικα τέρπει. Et Pla-  
to in Sympoſio, in Lyfia, & de Rep. I. V. QVAS C. Salinator, quas  
Sp. Albinus deplorare solebant: } durum videri potest. Deplorare  
querelas: niſi puremus & vñpatam eſſe vocem continentē pro-  
ea, quæ continetur. querebantur enim senectutis incommo-  
da, eaq. deplorabat. TVM, quòd voluptatibus carerant, } Plato Po-  
lit. I. TVM, quòd spernerentur ab iis, à quibus eſſent caliſaliti. } hinc  
verè Terentius:

Omnis ſibi malle melius eſſe, quam alteri.

Et Ouidius:

Vulgus amicitias vtilitate probat.

Et paullo post:

-- en detrahe menti

Spem fructus audiæ nemo petendus erit.

Et Polynices, apud Euripidem:

*Eō ægēare, τὰ ἦδη φίλων εὐδέλευτον περιεγένετο.*

Idest: Cura, ut bene tibi sit, nulla enim sunt in calamitatibus amicorum subsidia.

SINE querelle, non querulam. MODERATI, qui cupiditatibus, voluptatibus, & iræcundia moderentur. Nec dilecti, qui nec æquas petitiones respuant, nec modicis delictis veniam negent, nec neceſſe habeant omnia pro suo iure agere: apud quos & cognoscendi, & ignoscendi peccati locuſit. Nec inhumani, comes, benigni, non importuni, & mortosi: qui habent aliquid iuuenilis hilaritatis. IMPORTUNAS autem & inhumanitas, quæ ipsa via modo dicta sunt. OMNI etatis, Omni etate, sex mei, & ita Græcæ.

### C I C E R O .

LAE. Est, ut dicis, Cato: sed fortasse dixerit quispiam, tibi, propter opes, & copias, & dignitatem tuam, tolerabilem senectutem videri, id autem non posse multis contingere. C. A. Est istud quidem, Leli, aliquid, sed nequaquam in isto sunt omnia: ut T. hemistocles fertur Seriphio cuidam in iurgio respondisse, cum ille dixisset, non eum sua, sed patriæ gloria splendorum affectum: Nec hercle, inquit, si ego Seriphius, nobilis: nec tu, si Atheniensis es, clarus umquam fuisses. quod eodens modo de senectute dici potest. nec enim in summa inopia leuis esse senectus potest, ne sapienti quidem. nec insipienti, etiam in summa copia, non gravis. Aptissima omnino sunt, Scipio, & Lelii, arma senectutis, artes, exercitationesque virtutum: qua in omni etate culte, cum diu multumque vixeris, mirificos afferunt fructus: non solum, quia numquam deserunt, ne extremo quidem tempore etatis: (quamquam id quidem maximum est) verum etiam, quia conscientia bene actæ vitæ, multorumque benefactorum recordatio

recordatio incundissima est. Ego Q. Maximum, cum, qui Tarentum recepit, senem adolescens ita dilexi, ut equalem erat enim in illo viro comitate condita gravitas: nec senectus mores mutauerat. quamquam eum colere coepi non admodum grandem natu, sed tamen iam etate prouelatum. anno enim post, quam consul primum fuerat, ego natus sum: cumq. eo quartum consule adolescentulus miles ad Capuanum profectus sum, quandoque anno post ad Tarentum questor: deinde, adiutus quadriennio post factus sum prator: quem magistratum gessi consulibus Tudicano, & Cethego, cum quidem ille admodum senex suasor legis Cincia de donis, & muneribus fuit. hic & bella gerebat, ut adolescentem cum planè grandis esset: & Hannibalem, iuueniliter exultantem, patientia sua molliebat: de quo preclarè familiaris noster Ennius:

*Vnus homo nobis cunctando restituirem:*

*Non ponebat enim rumores ante salutem.*

*Ergo magis que, magisq. viri nunc gloria claret.*

Tarentum vero qua vigilancia, quo consilio recepit? cum quidem, me audiente, Salinatori, qui, amissio opido, fugerat in arcem, glorianti, atque dicenti: mea opera, Q. Fabi, Tarentum recepisti: certè, inquit, ridens: nam, nisi tu amississes, ego numquam recepisssem. Nec verò in armis præstantior, quam in toga: qui, consul iterum, Sp. Caruilio collega quiescente, C. Flaminio tribuno pl. quoad potuit, restituit, agrum Picenum, & Gallicum viritim contra senatus auctoritatem diuidentibus: augúrg. cum esset, ausus est dicere, optimis auspicijs ea geri, quæ pro reip. salute gereretur: quæ contra remp. fierent, contra auspicia fieri. Multa in eo viro præclara cognoui: sed nihil est admirabilius, quæ

quo modo mortem *Q.* filij tulit, clari viri, & consularis est in manibus laudatio: quam cum legimus, quem philosophum non contemnimus? Nec vero ille in luce modo, atque in oculis ciuium magnus, sed intus, dominusq. praestantior. qui sermo? quae praecepta? quanta notitia antiquitatis? quae scientia iuris auguri? multa etiam, ut in homine Romano, littere: omnia memoria tenebat non domestica solum, sed etiam externa, bella, cuius sermone ita tum cupide fruebar, quasi diuinarem id, quod evenit, illo exstincto, fore, unde discerem, neminem. Quorsum igitur hec tam multa de Maximo? quia profecto videtis, nefas esse dictum, miseram fuisse talēm senectutem, nec tamen omnes possunt esse Scipiones, aut Maximi, ut urbium expugnationes, ut pedestres, naualesve pugnas, ut bella a se gesta, ut triūphos, recordentur. est etiam quiete, & pure, atque eleganter acta, etatis placida, ac lenis senectus: qualem accepimus Platonis: qui, uno & octagesimo anno, scribens est mortuus: qualem Isocratis, qui cum librum, qui Panathenaeicus inscribitur, quarto & nonagesimo anno scripsisse dicitur, vixitque quinquennium postea: cuius magister Leontinus Gorgias centum & septem compleuit annos: neque unquam in suo studio, atque opere, cessavit, qui, cum ex eo quereretur, cur tam diu esse vellet in vita: Nihil habeo, inquit, quod accusem senectutem, praeclarum responsum, & docto homine dignum. sua enim vita insipientes, & suam culpam, in senectutem conferunt: quod non faciebat is, cuius modo mentionem fecit Ennius:

„ Sicut fortis equus, spatio qui saepe supremo  
 „ Vicit Olympia, nunc senia confecta quiescit.  
 Equifortis, & victoris senectuti comparat suam: quem  
 quidem

quidem meminisse probè potestis: anno enim unde usque simo post eius mortem hic consules, T. Flaminius, & M. Atilius, facti sunt: ille autem Capione, & Philippo iterum consulibus mortuus est, cum ego, quinque & sexaginta annos natus, legem Voconiam magna voce, & bonis lateribus suasissim. sed annos septuaginta natus (tot enim vixit) Ennius ita ferebat duo, quae maxima putantur, onera, paupertatem, & senectutem, ut eis pane delectari videretur. etenim, cum complector animo, quattuor reperio causas, cur senectus misera videatur: unam, quod aucoet à rebus gerendis: alteram, quod corpus faciat infirmum: tertiam, quod priuet omnibus ferè voluptatibus: quartam; quod haud procul absit à morte. earum, si placet, causarum quantum queaque valeat, quāmq. sit iusta, videamus.

## EXPLANATIO.

**L**AELIVS. Est, ut dicas, Cato: sed fortasse dixerit quispiam, tibi, propter opes, & dignitatem tuam tolerabilem senectutem videris: id autem non posse multis contingere. **CATO.** Est hūd quidem, Lelii, aliquid: sed nequam in isto sunt omnia: ut Themistocles fertur Seriphio cuidam in iugro respondisse: cum ille dixisset, non eum sua, sed patris gloria splendorem affectum: Nec hercle, inquit, si ego Seriphios, nobilis: nec tu, si Atheniensis es, clarus unquam fuisse. Cum hunc locum ex Platonis lib. I. de Rep. sumptum esse constet: mirari satis non possum, qui venerit in mentem non nullis, reponere, Ignobilis, pro Nobilis. nam in Platone quidem legitur Οὐραγεῖστος, quem locum Cicero paullò liberius, suo more, conuertit: quippe pro unico verbo Οὐραγεῖστος, quod in Platone ad Themistoclem simili, & Seriphium quendam pertinet, duo retulit: & de Themistocle, Nobilis: de Seriphio, Clarus, dixit, verum Platonis locum subscribemus, atque etiam ad verbum interpretabimur: quod ob eam causam necessarium videretur, quia Latina Platonis conuersione, que in plerique libris mendosa est, vtuntur multi. Τὸν τὴν Θεμιστοκλέος οὐχεῖ, εἰ τῷ Σεριφίῳ λαζαρουδίᾳ, καὶ λέγοντι, ἐτί σὺ δι' αὐτῷ,

αντίστοιχον πόλεων διδούμενον, απεκρίνετο, οὐτούς τούς διηγέσθαι, Σεριφίον δὲ, ὁ νομογένες ἡγέρετο, οὐτούς εἰπεῖνος, Αθηναῖος. καὶ τοῖς δύο μητροῦσιν, ταῦτας ἡ τοῦ πατρὸς ἀρχαὶ τοῦτον, οὐτούς εἰπεῖνος, οὐτούς τούς διηγέσθαι τοῖς πατέροις γῆρασ μετὰ τούτων εἰπεῖνος: οὐτούς διηγέσθαι τοῖς πατέροις τούτων εἰπεῖνος. Latinè sic: Bene Themistocles, qui Seriphio conuiciant, ac dicenti, non propter ipsum, sed propter ciuitatem clarum esse, respondit, neque ipsum, si Seriphius esset, splendorem asecuturum fuisse: neque illum, si Atheniensis. similiter in eos, qui inopia laborant, nec senectutem facile ferunt, idem sermo conuenit. nam neque moderatus admodum facile senectutem cum inopia patiatur, neque immoderatus diues molestia inquam vacet. Idem Themistoclis responsum in eius vita, & in Apophthegm. Plutarchus, idem, omisso tamen Seriphij mentione, Herodotus quoquere citat: & apud Plutarchum, Εὐθές, apud Herodotum, item ut apud Platonem, Ορομέδος, scriptum est. Quorum consensu me di suspicio tollitur, nisi si quis clarissimus etiam rebus tenebras offundere conetur. Sed omittamus historiam cui nō valde patent eorum aures, qui Græcè nesciunt: perpendamus sententiam, & ad eam Themistoclis exemplum accōmodemus. Propositionem Ciceroni videtur, vel Platonī potius, a quo Cicero sumpsit, ut senectutem & inopi sapienti, & diuti insipienti grauem esse ostendat. utrique enim aliquid deest ad tolerandam senectutem: inopi sapienti, rei familiaris adiumenta: diuti insipienti, sapientia, hoc plane Ciceronis illa verba declarant. Nec enim in summa inopia leuis esse senectus potest, ne sapienti quidem: nec insipienti, etiam in summa copia, nō grauius, quod Plato Græcè dixit hoc modo: Οὐτούς διηγέσθαι τοῖς πατέροις γῆρασ μετὰ τούτων εἰπεῖνος, οὐτούς διηγέσθαι τοῖς πατέροις τούτων γῆρασ. Quo, loco, pro Emenē, & Mnē, διicit Cicerō, Sapiens, & Insipiens: quod est propriè, Moderatus, & Immoderatus. Sed, ut dixi iam, paullo liberius Cicerō, nec tamen male, vertit: si quidem, & qui moderatus, idem sapiens, & qui sapiens, idem moderatus est. Comparantur igitur inter se inops sapiens, & diues insipienti: nec tantum aut apud inopem sapientia, aut apud insipientem diuinitatē valent, ut senectutem agere tolerabilem queant, quod si adiunctor vel inopia sapienti, vel insipientia diuinitatē, ut cum sapientia diuinitatē coniungantur: a quo animo feretur senectutis onus. Cum hac sententia, quis non intelligit, dictum Themistoclis optimè congrueret: nam, quemadmo-

quenadmodum ad ferēdām senectutem valent aliquid opes, & copiae, nec tamen in iis omnia sunt; quia, nisi sapientia simul aderit, senectus leuis esse non poterit: sic ad hominum decus, & ornamentum valet omnino aliquid patria, nec tamen in eo sunt omnia: quia, si quis virtute careat, vel in patria nobilissima natus, claritatem assequi nullam poterit. itaque nec Themistocles, si ei contigisset, ut in humili, obscurāq. insula Seriphio nascetur; nec Seriphius ille, si Athenis, clarus inquam fuisset. porrò, cum Seriphio illi non tam patriæ gloria, quam ipsius virtus defuerit: non viderur conferendum nequecum senectutem inopi sapiente, neque cum diuite insipienti: quorum alteri senectutem inopia, alteri insipienti grauem facit: sed ei seni simillimus est, cuius ad miseriam addi nihil potest, cum neque res domestica subdio est, neque sapientia solatio. nam senectus inopi sapienti grauius est, diuiniti insipienti grauior, inopi simili & insipienti grauissima. atque hoc tertium senectutis miserissime genus indicat Cicero, cum ait: Ne sapienti quidem: nam, seni sapienti quidem inopi leuis esse senectus potest: sequitur, ut insipienti inopi grauissima sit. Fieri autem grauiora senectutis incommoda, si absit sapientia, quam si copiae, tū Plato ipse, tum etiam Cicero, si quis eorum verba diligenter inspiciat, perspicue demonstrant. Ac seni quidem inopi sapienti Themistocles, si in Seriphio in insula natus esset, similis fuisset; diuiniti autem insipienti Seriphius ille, si Athenis. Quocirca hoc etiā modo Themistocles Seriphio præstisset. Nec vero potuit acutius respōdere, aut modestius. nam & cum homine patria vituperauit: & suam laudem cum patriæ laude coniūxit. Satis hæc videntur, ut Ciceronis pulcherrima sententia consuetur, adiuncto præsertim antiqui libri testimonio, quem patri meo, præstante eruditione, atque integritate vir, omnīq. planè laude cumulatus, ac de nobis quidem perpetua multorum annorū benignitate optimè meritus, Gulielmus Sirlettus Cardinalis, ut ad communem utilitatem vteretur, donauit. in eo libro, non obscuris litteris, Nobilis, scriptum video. ut iam neminem fore arbitris, nisi si quem à veritate pertinacia, detorserit, qui Platonis, Herodoti, Plutarchi testimonio, libri veteris auētoritati, & quod caput est, Ciceronis ipsius sententia, infirmam, inanem, & planè falsam conjecturam, audeat opponere. Alius meus liber, Non ignobilis. Vt Themistocles fuit } Sunt, qui, hoc non sat bonum loquendi genus esse;

iure iurando affirment. quos refellunt ipsa exempla. nam de nat. de. lib. iii. de Solibus loquens: Quartus ait, quem heroicis temporibus Achanto Rhodi peperisse dicitur, aum Ialyfi, Camiri, & Lindi. quintus, qui Colchis fertur Axeram, & Circe procreauisse. In Lælio quoque: Quod Tarquinius dixisse fertur. sic enim emendo, ex auctoritate quatuor meorum librorum. *Nec c. insipienti, etiam ins. &c.* } Nec quidem insipienti, & in s. tres. *A F F E R V N T f r u c t u s*; } sic quattuor. Efferut, quattuordecim. Efferent, vnuſ. Efficient, vnuſ. Effecerunt, vnuſ. In Verrem: Id perdere aratorem, quod agri, segetesq. extulissent. De Clar. or. Aget, qui multos annos quicuiflet, vberiores efferre fructus solet. *Mirificos efferrunt fructus*: de quibus videndum Isocrates in procœmio Paræneeos. Non solum, quia Numquam defrunt, } aduerbum, quia Numquam, est in meis antiquis libris: & recte. quod obseruatione Latini sermonis facile perspexi. Aut enim dicebant veteres, exempli gratia, Non amat ne propinquos quidem suos; sequentibus, post verbum, Amat, Ne qui dem. Aut: Ne propinquos quidem suos amat; sequente verbo Amat, post Ne quidem. similiter hoc in loco vñitatem, & propriè duobus modis loqui Cicero potuit, vel, vt locutus est, Nō solum quia numquam deserunt, ne extremo quidem tempore atatis, vel, Non solum quia ne in extremo quidem tempore atatis, vel. Non solum quia ne in extremo quidem tempore atatis deserunt. Nec tamen, sublato Numquam, sententia mutaretur. Hoc in loco mirari equidem non satis possum, elegantis ingenij viros, benéq. de litteris meritos, quibuidà scriptis libris adductos, à quibus abest Numquam, quod tamen, vt dixi, est in omnibus meis, parum, vt videtur, obseruato Latinæ lingua vñu, pariter in mutatione consensisse. Recte ne, si secus, alij quoque iudicent, ego meani sententiam ostendi; & vt arbitror, satis probau. nec mihi tamen tantum affumo, vt eruditis hominibus iudicandi facultatem ereptam velim.

**C O N S C I E N T I A b e n e a l t e r i t a, m u l t o r û m q. b e n e f a c t o r u m r e c o r d a t i o i n c u n d i s i m a e s t.** } Aristoteles quoque Rheg. lib. ii. in iudicis numerat. Cōsciētia, mille testēs, in adagio. Et Satyrius:

--prima est hæc vñio, quòd se  
Iudice nemo nocens absolvitur.

**B E N E F A C T O R V M : Ennius:**  
Benefacta malè locata, malefacta arbitror.

**E g o Q. M a x i m u m,** } Ego quidem **Q. M a x i m u m**, tres. Ego qui-  
dem Ma-

dem Maximum, vnuſ. *E v m qui Tarentum recepit*; } Calabriae metropolin. Strabo lib. vi. Póponius Mela lib. ii. Plin. lib. iii. cap. ii. Bello Punico ii. ad Hannibalem defecit. præsidium tamen Romanorum, cuius erat dux Liuius Salinator, in arcem se recepit. *Q. Fabius Maximus* eam recuperavit, militibūsque diripiendam tradidit. Liuius lib. xxvii. Silius lib. xv. Plut. in Fa- bio Max. scriptor de viris ill. Aug. de ciu. D. lib. i. ca. 6. **S E N E C A** *adoleſcens*; } atatis inæqualitas amicitiae nostræ nihil incommodo dauit. **E R A T** in illo viro comitate condita *grauitas*; } sic Fam. lib. xi. ep. 27. Est ita temperatus, moderatusque moribus, vt summa seueritas cum humanitate iungatur. Eadem laus Attico tribuitur: Eius comitatem non sine seueritate fuisse, neque grauitatem sine facilitate, vt difficile esset intellectu, utrum cuim amici magis vererentur, an amarent. Et Isocrates ad Nicode. *A N N O enim p o s t, q u a m c o n s u l p r i m u m f u e r a t, e g o n a t u s s u m*; } in librorum varietate, omnes tamen ferè consentiunt, ita le- gentes: Anno enim post consul primū fuerat, quam ego na- tus sum. Reliqua cum impressa nostra lectione. **A D C a p u a m**: contra Grammaticos. *Q u e m m a g i s t r a t u m g e s i s c o n f u l b i s f u d i t a n o, & C a t h o g o*; } fecutus sum eorum sententiam, qui Catonis quæsturam, non præturam, hic significari putant. nam, si præ- tor fuissest his consulibus: non tam longè distaret à prætura co- sulatus eius, quem gesit annis nouem post hos consules, vt Fa- sti Capitolini declarant. talis enim viri perspectæ virtuti tam sero tributum esse consulatum, cui verisimile videretur? ges- sit igitur quæsturam iis consulibus, non Romæ, sed in Africa. nam cum P. Scipione, non consule, sed proconsule in Africa profectum esset, docet historia. **L E G I S C i n c i a d e d o n i s & m u n e- r i b u s** } Tacitus legem Titium mendosè nominat, qua antiqui- tus cauetur, ne quis ob causam orādam pecuniam, donūme accipiat. Vide Liuius lib. xxxiv. Festum, Cic. i. de or. & i. ad Att. **V T adoleſcens**, } salacritate animi, non temeritate iuuenili. **H A N N I B A L E M**, *s u e n i l i t e r e x f l a n t e m, p a t i e n t i a s u a m o l l i e b a t*; } qui pro Molliebat, Molliebatur reponunt, pulcherrimum ver- bum è suo loco sine causa extrudunt: qui retinent, iis haben- da gracia est. cùm & sententia, & vetetes libri, & auctoritas. Non iij eodem concurrant. **Q u o d a u t e m i i d e m i l i, q u i m u t a n t**, verbum Mollire alienum esse putant à sententia, mihi contra videtur: quia aptius nihil existimo: at, Mo- liebatur, minimè hunc in locum conuenire. cùm ad alia, sed

disimilia, proprie, & eleganter usurpetur. Est autem Mollior, pro, Efficere, ut minus exultaret, qui superioribus victoriis, ducumq. Romanorum inscrita, exultare solitus erat. Quis autem ignorat, molles qui sunt, modestius agere, nec temere exultare solitos esse? Ergo Fabius patientia sua, quia locum committendi proliji acerimo duci Hannibali, pugnandi cupido, numquam dabat, reprimebat eum, nec sinebat, ut antea, iuueniliter exultare, sed molliorem, quietiore, reddebat, quia sibi cum sapientissimo duce, nihil per imprudentiam, temeritatemve peccante, quibus antea vitiis res Romana laborauerat, negotium esse intelligeret. Secus autem fecit, quam Cleo brotus, & Callicratidas, qui cum patriæ pernicie succubuerat. **C** V N C T A N D O } Inde Cuestatoris cognomen adeptus. Liuius, Plutarchus, Polybius lib. II. Florus lib. II. cap. 6. Prima, inquit, redeuntis, sed (ut sic dixerim) reuulsentis imperij spes Fabius fuit, qui nouam de Hannibale victoriā cōmentus est, non velle pugnare, hinc illi cognomen nouum, & reip. salutare, Cunctator. hinc illud lex populo, ut Imperij scutum vocaretur. No n ponebat enim &c. } propter conūcium strati populi, & magistri equitum Q. Minucij obtestationes, & iniurias, non discedebat à ratione consiliorum suorum. Ergo p̄stq. magisq. } sic legitur lib. I. Off. sic est & in vndecim meis. Vnus, Ergo post magisq. Duo Ergo p̄stq. magis. Vnus, Ergo magisq. magisq. Duo, Ergo magis magisq. Vnus, Ergo magis atque magis. Vnus, Ergo prius, magisq. Vnus, Ergo primo magisq. Vnus, Ergo magisq. Ex Ennij xii. Annali. Macrobius. Quem Virgilius est imitatus:

Vnus qui nobis cunctando restituit rem.

Vide & Liuium lib. x x.

**S** A L I N A T O R I , } C. Liuius Salinator, arcis Tarentinæ praefecto, ut ait Polybius lib. Ix. nam M. Liuius Salinator, gesto ante multos annos consulatu, Tarentum priuatus profectus non esset, ut omittam, quod Tarenti, quo anno amissum est, non videtur esse potuisse, exsulabat enim, populi iudicio damnatus ex consulatu: nec, nisi anno ante, quam Tarentum à M. Fabio V. consule receptum est, in urbem rediit, opera, & beneficio consulum Marcelli, & Lævini. At Cicero Salinatorem vocat. Quid tum? num ideo sequitur, ut sit M. Liuius Salinator? quasi vero, præter M. Liuium, non potuerint alij Salinatores esse: cùm supra quoque C. Salinatoris mentio facta sit, cuius prænomine

nomine adducor, ut eundem suspicer esse, quem hic Cicero nominat: siquidem & Polybius Caium appellat eum, qui acri Tarentinæ præfuit. T. Liuius M. Liuium nominat. facit cum Cicerone Plutarchus. **C** E R T E, inquit, ridens: } sic de Diu. II. Vrbem philosophiæ proditis, dum castella defenditis. Hoc autem dicit, ut Salinatorem accuset, qui magno alieno labore partam gloriam verbis in se transmouet. Cic. de Orat. II. de Iociis, & Liuius lib. xxvii. Ne c vero in armis præstantior, quam in togæ } parua quippe arma foris, vbi nō est consilium domi. hinc, Cedant arma togæ, &c. Ad Att. IV. Ergo crimus ἐπαντιμη, I qui togati esse nolumus. Homerus:

Αμφότεροι βασιλεὺς τ' ἀγαθὸς τ' αἰχμήτης.

Rex bonus, & duris bellator fortis in armis. Et: Μάστον τε πήτηπε καρδυαὶ, πορκητῆρες τε ἔργον.

Vt idem & eloquentia & rebus gerendis excellat.

**C** A R V I L I O } testatum volo, in septem legi, Cornelio: in uno Canaleio: in uno, Garulio: in uno, Caluinio. **C** F L A M I N I O } qui consul ad Thrasimenum in prælio cæsus est. **Q** V O A D potuit, } ne quidquam id quidem conatus. Polybius lib. 2. De hoc bello Cic. in Bruto. **P** I C E N V M, } Pacentem, vnum meus: & ita etiam legit recitans hunc locum Carisius lib. II. **C** O N T R A senatus auctoritatem } inuito, & refragante senatu. Polylbius lib. lxx. ait, ab eo latam esse legem inuito senatu. hic Cicero, resistente Fabio, latam non esse ostendit. **O** P T I M I S auspiciis ea geri, que pro reip. salute gerentur: } Homerius II. μ.

Eis ἀναρέσεις φίλοις Θεοῖς παρέχεται.

Augures Græcis oīavonòlos vocari posse, scribit Dionysius lib. 2. Vide Platonem in Phædro. Plut. in Marcello: Οἱ δὲ αὐγοὶ εἰσὶ εἴτε πῦρ σῆσθνησαντες εἴδει, οἱ μετατεταρθεὶς αἱσθανοῦσι πολὺ διπλάσιαν καὶ περαπλατηνόν νόμον θεῶν. **Q** V A E contra temp. fierent, & Ferri, omnes libri mei, licet quidam aliqua ex parte mendosè: vno tantum excepto, qui facit cum impressa lectione. **Q** uo modo: quanta animi constantia, & moderatione. Durior autem constructio est hæc. Nihil admirabilius, quam quomodo: quæque longè ab sit à Grammaticorum regulis. **L** A U D A T O, } laudauit enim ipsem filiū in funere. Plutarchus. Et ipse Cicero librum scriptit de Consolatione ad se ipsum, in morte filiæ **I**n luce, } in publico. **I**n osculis ciuium, } in conspectu ciuium.

INTVS, apud animum suum Græce, & d' iuris. Persius, Ior-  
tus, & in cute. Contra illud,

Astutam vapidō gestasse in pectore vulpem.

Quae scientia iuris angurij? sic malo, consentientibus odo  
meis libris, quām vt est in sex, Iuris, & angurij, quod virido  
Eti probarunt: distinguentes, Iuris, augurij, vt in Fabio fuerū  
& iuris ciuilis, & augurandi scientia. Quod probare non pos-  
sum. Nam, si ius ciuale Cato ei tribueret, certe litteras tribue-  
ret, quibus ipsum ius cōtinetur. Ac de litteris postea loquitur,  
Itaque malo, Iuris augurij, pro, Iuris augurandi. Et fortasse,  
cum scriptum esset in antiquis libris Aug. quod significare  
potuit, Augurales, produxere imperiti librarij, & fecerūt, Au-  
gurij. Quod ideo dictum volui, ne quis in dubiū vocaret, qua-  
li duriusculē dictū, Iuris augurij, & Augurij deest in uno. Au-  
gurādi, in uno. Vnus, Quanta notitia antiquitatis, & augurum  
& quanta scientia iuris? Duo, Q.n.a, & augurij, quanta scientia  
iuris? Vnus, Quæ scientia iuris, & augurum? Ut in homine Ro-  
mano} litterarum enim laudem Romani Græciae concedebat,  
militarem sibi assumebant.

Quippe magis norat, quām sidera, Romulus arma,  
DOMESTICA} gesta à Romanis. EXTERNA} extera-  
rum nationum, Græcorum, Persarum, Assyriorum. QUASI  
diuinarem id, &c. Ouidius:

Augurium ratio est, & conjectura futuri:

Hac diuinai, notitiāmq. ruli.

Plautus in hanc sententiam:

Tum demum homines nostra intelligimus bona,

Cum ea, quæ in potestate habuimus, amissimus.

Horatius:

--Virtutem incolumem odimus:

Sublatam ex oculis querimus inuidi.

Græcus Poëta, apud Sudam:

Ζέον ἀπικονίατες ἀποθίμενον ποθίσσον,

Καὶ πόδες ὑπὲρ τούμβου καὶ πτύσσου εἰδόλων

Αστεα νεῖκος ἐπῆθεν, ἔργον δὲ οἴνοποτο λαδεῖ.

Quos fortasse respexit Virgiliius, de Palamede loquens:

--quem falsa sub proditione Pelasgi

Insontem, infando iudicio, quia bella veterabat,

Demiserē neci: nunc cassum lumine lugeat.

VNDE} à quo. SCRIPIONES, } maiorem Africānum

sig.

significat. LENIS senectus: Lewis, quattuor libri, & Græcè.  
Duo alij, Lewis, & placida senectus, PLATONIS: idem tra-  
dit D. Hieronymus de vita clericorum, & Lucianus in Macro-  
biis. Laertius varias sententias adducit, alterā Hermippi, quæ  
cum Cicerone fecit alteram Neanthis, qui x x c i v. annos na-  
tum defecisse scribit. Sribit idem Laertius, Magos diuinita-  
tis quandam opinionem è septenario toties multiplicato de  
Platone concepisse. EST MORTVS} non immoratus  
est studiis, sed immortuus. ISOCRATIS: legendus Pana-  
thenicus, & oratio mei avndit. Philostratus, Plutarchus,  
Halicarnassus. D. Hier. ad Nepotianum. VIXITQ. quinquen-  
nium postea:} dura constructio, sed nec ferri potest. Sunt, qui  
mant, Vixisse quinquennium postea: contra veteres omnes  
libros. Quinquennio, vnuus. LEONTINVS Gorgia: Sudas  
de Gorgia, βιώσθη. Quin & lib. 3. cap. 1. & lib. 12. cap. 21. Lu-  
cianus in Macrobiis, Plin. lib. 7. cap. 48. Elilianus var. hist. Val.  
Max. lib. 8. cap. 13. 2. CENTVM & septem} Sic. & Valerius. Lu-  
cianus, & Plinius, Centum & octo: Apollodorus apud Laertium  
in vita Empedoclis, & Quintilianus, Centum & nouem.  
PRAECLARVM responsū, vide alia eiusdem responsa, eadem  
de re, apud Athenaeum lib. 12. cap. 26. VICIT OLYMPIA, } Sy-  
necdoche Attica. Pugnare pugnam, Certare certamen. CAE-  
PIONE, & Philippo iterum cof. } Cos. consule, ut ad Philippum  
referatur. Vide Fastos. Consule, distinctè, est in septem meis.  
LEGEM VOCANIAM} de mulierum hereditatibus. D. Aug.  
de ciu. D. lib. 3. cap. 21. Agell. lib. 17. cap. 6. & lib. 20. cap. 1.  
MAGNA VOCE, & bonis lateribus} de Catonis validis supra-  
mata lateribus vide Val. lib. 8. cap. de studio, & industria: Cato  
sextum & octogesimum annum agens, dum in rep. tuenda  
iuvnili animo perstat, neque aut memoriam eius quisquam  
tardiorem, aut firmatatem lateris, ylla ex parte quaßlatam, aut  
os hæsitatione impeditum animaduertit. Sic Phil. 2. Tu istis  
faucibus, istis lateribus, ista gladiatoria totius corporis firmi-  
tate. CV M complector animo, } sic omnes mei. Sunt, qui legat,  
Quantum compl. an. CORPVS faciat infirmum: } Infirmus,  
decem mei. QUANTVM queque valeat, quām sit infia, videamus. } Quāta, quām q. iusta sit vnaquæque, videamus, quat-  
tuordecim. Quanta, & quām iusta sit vnaquæque, videamus,  
duo. Reliqui mendosi.

## C I C E R O.

**A** Rebus gerendis senectus abstrahit: quibus? an ijs, que iuuentute geruntur, & viribus? nulla nigeritur res sunt seniles, que vel infirmis corporibus, animo tamen administrentur? nihil ergo agebat Q. Maximus? nihil L. Paullus, pater tuus, Scipio, sacer optimi viri, filii mei? ceteri senes, Fabricij, Curij, Coruncani, cum remp. consilio, & auctoritate defendebant, nihil agebant? ad Ap. Claudij senectutem accedebat etiam, ut cæcus esset: tamen, cum sententia senatus inclinaret ad pacem cum Pyrrho, fædusq. faciendum, non dubitauit illa dicere, que versibus persecutus est Ennius:

“ Quo vobis mentes, recteque stare solebant

“ Ante hac, dementi se se flexere ruina?

ceteraq. grauissimè. notum enim vobis carmen est: & tamen ipsius: App. exstat oratio. atque hac illa egi septem & decem annis post alterum consulatum, cum inter duos consulatus anni decem interfluxissent, censore ante superiorem consulatum fuisse. ex quo intelligitur, Pyrrhi bello grandem sanè fuisse: & tamen sic a patribus accepimus. Nihil igitur afferunt, qui in re gerenda versari senectutem negant: simileq. sunt, ut si quis gubernatorem in nauigando nihil agere dicat, cum alijs malos scandant, alijs per foros cursent, alijs sentinam exhaustant: ille autem, clavum tenens, quietu sedeat in puppi. Non facit ea, que iuuenes. At ve multò m. aiora, & meliora facit, non enim viribus, aut velocitatibus, aut celeritate corporis, res magna geruntur, sed consilib, auctoritate, sententia: quibus non modo non orbari, sed etiam augeri, senectus solet. nisi fort

ego vobis, qui & miles, & tribunus, & legatus, & consul versatus sum in vario genere bellorum, cessare nūc videor, cum bella non gero: at senatui, que sunt gerenda, prescribo: & Cartagini, male iam diu cogitanti, bellum multo antè denuntio. de qua vereri non antè desinam, quam illam excisam esse, cognouero. quam palmā utinam dī immortales, Scipio, tibi referuent, ut aureliquias persequare: cuius à morte sextus hic & trigesimus annus est: sed memoriam illius viri omnes excipient anni consequentes. anno ante me censorem mortuus est, nouem annis post meum consulatum, cum consul iterum, me consule, creatus esset. num igitur, si ad centesimum annum vixisset, senectutis eum sua peniteret? uic enim excursione, nec saltu, nec eminus habet, aut communis gladiis veteretur: sed consilio, ratione, sententia, que nisi essent in senibus, non summum consilium maiores nostri appellassent Senatum. Apud Lacedemonios quidem y, qui amplissimum magistratum gerunt, ut sunt, sic etiam nominantur senes. Quod si legere, aut audire voletis externa: maximas resp. ab adolescentibus labefactatas, à senibus sustentatas reperiatis.

“ Cedo, qui vestram remp. tantam amissitis tam citò? sic enim percunctanti, ut est in Nauij Ludo, respöderetur & alia, & hac in primis:

“ Proueniebant oratores noui, stulti, adolescentuli. temeritas est videlicet florentis etatis, prudentia senectutis. At memoria minuitur: credo, nisi eam exercetas: aut etiam, si sis natura tardior. T' hemistocles omnium ciuium perceperat nomina: num igitur censetis eum, cum etate processisset, qui Aristides esset, Lysimachū salutare solitum? equidem non modo eos, qui sunt noui,

sed eorum patres etiam, & avos: nec sepulchra legens, vereor, (quod aiunt) ne memoriam perdam. his enim ipsis legendis, in memoriam redeo mortuorum. Ne vero quemquam senum audiri oblitum, quo loco thesaurorum obrusisset. omnia, quae curant, meminerunt, videntia constituta, qui sibi, cui ipsi debeant. Quid inris consulti, quid pontifices, quid augures, quid philosophi senes? quam multa meminerunt? manent ingenia senibus, modo permaneat studium, & industria: nec ea solum in claris, & honoratis viris, sed in vita etiam primata, & quieta. Sophocles ad summam senectutem tragedias fecit. qui, propter studium cum rem familiarem negligere videretur, a filiis in iudicium vocatus est, ut, quemadmodum nostro more male rem gerentibus patribus bonis interdicis olet: sic illum, quasi desipientem, à refamiliari remouerent indices. tum senex dicitur eam fabulam, quam in manibus habebat, & proxime scriperat, Oedipum Coloneum recitasse iudicibus, que si sequitur, num illud carmen desipientis videretur, quo recitato, sententiis iudicum est liberatum. num igitur hunc, num Hesiodū, Simonidem, Stefichorum, num quos ante dixi, Isocratem, Gorgiam, num Homerum, num philosophorum principes, Pythagoram, Democritum, num Platonem, num Xenocratē, num postea Zenonem, Cleantem, aut eum, quem vos etiam Roma vidistis, Diogenem Stoicum coegit in suis studijs obmutescere senectus? an non in omnibus his studiorum agitatio vita aequalis fuit? Age, ista diuina studia omittamus. possum nominare ex agro Sabini rusticos Romanos, vicinos, & familiares meos, quibus absentibus nūquam ferè villa in agro maiora operantur, non serendis, non percipiēdis fructibus, nō con-

dendis. quamquam in his minus hoc mirū. nemo enim est tam senex, qui se annum non putet posse vivere. sed idem in ijs elaborant, qua sciunt nihil omnino ad se pertinere:

“ Serunt arbores, quae alteri sacculo profint, vt ait Statius noster in Synephebis. nec verò dubitat agricola, quamvis senex, querenti, cui serat, responde: dij immortalibus, qui me non accipere modò hac à maioribus voluerunt, sed etiā posteris prodere. Melius Cacilius de sene, alteri sacculo proficiente, quam illud:

“ Aedepol, senectus, si nil quidquam aliud vity

“ Apportes tecum, cum aduenis: unum id sat est:

“ Diu quis vivendo, multa, quae non volt, videret: & multa fortasse, quae volt: atque in ea, qua non volt, sepe etiam adolescentia incurrit. Illud verò idem Cacilius vitiōsius:

“ Tum etiam in senecta hoc deputo miserrimum:

“ Sentire ea etate esse odiosum se alteri, incundum potius, quam odiosum. vt enim adolescentibus, bona indole praditis, sapientes senes delectantur: leuiorque est senectus eorum, qui à inuentute coluntur, & diliguntur: sic adolescentes senum praecptis gaudent, quibus ad virtutum studia ducuntur, nec minus intelligo me vobis, quam vos mihi, esse incudos. sed videtus, ut senectus non modò languida, atque ixers non sit, verum etiam sit operosa, semper agens aliquid, & moliens, tale scilicet, quale cuiusque studium in superiori vita fuit. Quid, quod etiam addiscunt aliquid? vt Solonem versibus gloriantem vivimus: qui se, quotidie aliquid addiscit, senem fieri, dicit: vt ego feci, qui Gracias litteras senex didicis: quas quidem sic audiē arripui, quasi diurnarnam sitim

*explere cupiens, ut ea ipsa mihi nota essent, quibus me nunc exemplis vti videris. quod cum fecisse Socratem in fidibus audirem: vellem eisdem & illud: (discemam enim fidibus antiqui) sed in litteris certe elaborani.*

## EXPLANA TIO.

**Q**VAE iuuentute geruntur, } sic nouem mei. Quae in iuuen-  
ture geruntur, nouem. Quae à iuu. ger. vnuſ. Quae iuu. &  
viribus ger. vnuſ. Quae ger. iuu. vnuſ. ANIMO tamen admini-  
strentur, } Tantum, legendum aliquando putau. & mecum  
facit antiquus meus liber. alius, mendose, Animo tamen,  
ac tantum administrentur. SOCIER optimi viri filii mei ideo  
laudat, quia perierat iam. infra quoque brobitatem eius com-  
mendat. & Viri, abest à duobus. AVCTORITATE con-  
ſilio graui, & prudenti. DEMENTI ſeſe flexere ruina, } De-  
mentem ruinam quoque dixit Horatius in Odis. Pro Rui-  
na, Via, habent tredecim mei. Et tamen } Erum, tres  
mei. HAC ille egit } Hoc, duo. Geſſit, duo. ANNI decem, }  
quod lex tum quidem nulla iubebat, vt exemplo declarant,  
ſed poſtea iuſſit lata à L. Sulla. INTERFLVXISSENT, } Interfluſſent, decem octo. Et tamen ſic à patribus accepimus, }  
Tamen, non eſt in vetere. Parentibus, in vno. NIHIL affi-  
runt, } nugas agunt, nulla firma ratione vtuntur, ab ipſa ex-  
perientia coarguuntur. Si quis } Qui, ſexdecim, Qui  
autem, pro Quis, dictum eſt. Ut alibi. In quo mendum pe-  
perit ignoratio, vel negligentia potius: vt infrare reponeretur,  
Dicant, pro Dicat. Quali numero multitudinis Qui pol-  
lum fit, quod hic quidem ſingulare eſt. CVRSENT, } Cur-  
ſitent, duo. AVT velocitatibus, } ſuscipiebatur pater hoca-  
bundare: cum ſequatur proximè, Aut celeritate. AVT celeri-  
te corporis, } Corporum, ſexdecim. VERSATVS ſum } præſer-  
tim in Hispania. Liuius, Plut. alij. A vi } qui tributariorum Han-  
nibile vieto. Carthaginem fecerat. SEXTVS hic & trigesimus  
annus eſt. Tertius, veteres omnes libri. SENTENTIA } inſe-  
natu. concio verò ad populū. SVMMVM confiſſio } de Diuilibi.  
AVT audire } ſic decē ſeptem. recte. Val audire, tres. Et audire,  
vnuſ, & alias. EXTERNA: } exempla. LABEFACTATAS, }  
Labefactas, quattuordecim. PERCVNTANTI, } Percu-

Percuuntantur, deccōcto. NAEVII Ludo, } Nauij poëta, Lu-  
do, duodecim. Nauij posteriori libro, quatuor. Enni, tres. En-  
ni posteriori libro, vnuſ. Libro Nauij poëta, vnuſ. Citatur à  
Festo in Redhostre Nauij Lupus. Agellius, & Carisius citant  
libros Egytorupiſi. Marsus edidit olim, In Nauij Pracone  
posteriore. PROVENIEBANT } Præueniebant ad res noui &c. No vi, }  
vnuſ, qui legant, Præuehiebant, vnuſ. Veniebāt, }  
ſulti, } ord. præp. vnuſ. No vi, } rerum imperiti: flue, nouan-  
darum rerum cupidi. TEMERITAS est florentis etatis, pru-  
dentialia ſenectutis, } Aristot. Polit. lib. 7. Hī μὲν δύναμις ē τοτεγμέ  
ἀπόγνωσις ē προποτερεῖσι. PRUDENTIA ſenectutis. Senectutis,  
ſex mei libri. & ſanē eleganter opponitur nō Florentis. THE-  
MISTOCLES } cui cū Simonides artem memoriae pollicie-  
retur, ſe artem obliuionis malle dixit, quod meminiflet eoru,   
qua noller obliuisci non poſſet, qua veſſet. De eius memoria  
vide Cic. de Orat. 2. Quintil. lib. xi. Val. l. 8. cap. de studio, & in-  
duſtria. SE D corum patres etiam, } & Etiam, abeft à ſepte meis.  
Et awo, } & Et, abeft à duobus. Awo, Proauos, vnuſ. MEMO-  
RIAM perdam, } legendis enim multorū nominibus, pertur-  
batur, & confunditur memoria, quod ſequentibus verbis de-  
claratur. A filijs } Lucianus in Macrobii Iophantē nominat,  
eumq. legetalionis inſaniae iudices damnasse ſcribit. MALE  
rem gerentibus patribus bonis interdici ſolet, } deleui verbū, Patri-  
bus, quia non patribus tantum, ſed omnibus, vel ſi liberos non  
haberent, bonis interdici ſolet. & in vno meo vetere libro in  
ordine verborum non eſt Patriis, ſed additū in margine: à  
tib⁹ propterea abeft. Quod autem, Patriis bonis, alij legunt, id  
repellit ratio. Nam, ſi poſt obitū patris malè rem gerit filius,  
ſuis ei donis, non iam patriis, interdicitur: præterea, ſi quis he-  
reditatē accepit à patruo, ab aliis propinquis, ab amico aliquo:  
aut ſi ipſe mercaturis faciendis, induſtriaq. ſua, diues factus  
eſt, poſteq. malè rem gerit, nū ei patriis bonis interdicitur?  
Bonis quidem, non tamē patriis. OEDIPVM Coloneum } qua  
ſola fabula omnium eiusdem ſtudij poëtarum præripere glo-  
riam potuit. Valerius. NV M illud carmen deſpiens videretur }  
Satyrus, vt eſt apud Aristophanis interpretē, Sophoclis apo-  
logiam huimodi fuſſe prodit. Ei μὲν εἴμι Σοφοκλῆς, γρ παρεργο-  
ντή, δὲ παρεργών, Σοφοκλῆς εἰμί. SENTENTIIS iudicū, }  
Plutarchus: Θεμάτων δὲ τοῦ μίαν φιέντως παρεπίθεται μετὰ  
καὶ βούς τῶν παρεργῶν. Eſt liberatus. } tantum sapientia  
G.

in ætate iam fracta specimen dedit, ut seueritatem tribuum in theatri fauorem verteret. D. Hieronimus. Nv m  
igitur hunc num Hesiodum } Num igitur hunc Homerum, num  
Hesiodum, sex. & rectius coniungitur Homerus cum poëtis,  
quam infra ponitur. Dicitur autem Homerus annum cxx.  
attigisse. HESIODUM, } inde, Hesiodi senecta. SIMONI-  
DEM, } Simonides Poeta octogesimo anno & docuisse se  
carmina, & in eorum certam descendisse, ipse gloriatur. Val-  
erius lib. 8. Vixit autem Luciano, supra nonaginta. STESCHO-  
RVM, } octuaginta quinque annis vixit, quot Anacreon,  
Lucianus. Hi autem grandes natu cygnæum nescio quid, &  
solito dulcissimæ morte cecinerunt. Hieronymus ad Ne-  
potianum. PYTHAGORAM, } obiit anno octuagesimo: vel,  
ut alii, nonagesimo. Laertius. Laet. lib. 3. cap. 2. Aug. de ciu. D.  
lib. 8. cap. 2. Cic. Tusc. 5. DEMOCRITVM, } hic centu & qua-  
tuor annos natus, cum alimento abstineret, mortuus est. Lu-  
cianus. XENOCRATEM, } octogenario maior obiit. Laer-  
tius. Malè antea, Socraten. ZENO NEM, octo & nonaginta.  
Lucianus, & Laertius. CLEANTHEM, } nouem & nonaginta.  
Valerius, & Lucianus. Hic, cum decreuisset inedia vitam  
absumere, acceptis ab amicis litteris, cibum sumpsit: & am-  
icorum negotiis absolutus, denuo cibo abstinuit, & obiit. DI-  
GENEM, } octuaginta octo. Lucianus. AN non in omnibus  
his, } sic sex. reliqui non habent non. RUSTICOS ROMA-  
NOS, } sic est in omnibus meis. Sic in epistola Ciceronis filii  
ad Tironem: Rusticus Romanus factus es, Fam. lib. 16. ep. 21.  
Et Varro Tegynus didicisse, apud Nonium, in Nundinæ: Quo-  
ties priscus homo, ac rusticus Romanus, internundinum bar-  
bam radebat. VICINOS, } infra: Coniuivum vicinorum  
quotidie compleo. QVAM QVAM in his minus hoc mirum, }  
omnes libri, Aliis, pro His. Vnus, His alius. Minus, inquit, ha-  
ber admirationis, quod in aliis omnibus rebus, quæ ad ipsos  
pertinent, curam ponunt: in hoc vero, quod senex serit arbo-  
res, quæ alteri seculo profint, id multo magis mirandum vi-  
detur. NE MO est tam senex, qui se annum non putet posse vivere, }  
proclus, id est, vita proroganda studio sibi, esse senes, ait Ar-  
istoteles Rhet. lib. 2. SERIT arbores, } sic vndecim. reliqui  
Serunt, ut antea. Loquitur de sene alteri seculo prospiciente,  
ut infra. Tusc. 1. Serit arbores, quæ alteri seculo profint, ut  
ait Statius in Synephebis, quid spectans, nisi etiam postera  
secula

secula ad se pertinere? QVI me non accipere modo hac à ma-  
ioribus nostris voluerunt, &c. } Ilocrates Panegyrico. Ota τὸν  
Cleοντὶ πρότοις φαίνεται ἐπὶ τῆς οὐθὲν ἀστηρίῳ ἔχοντα κατέλα-  
σσεν, ἀλλὰ κατὰ μηχανὴν ιωνῖς ουεπορείσαντο. SED etiam po-  
steris prodere } propagare ad posteros. impium quippe  
illud:

Eros διάρροε γαῖα μυθήτῳ πνεύ.

CAECILIVS } Plotio. vide Nonius in Aduenire. AEPOL, }  
pro, Adepol. vt stet versus. senarij enim sunt. APPORTES  
tecum, } sic omnes, duobus exceptis, in quibus, Apportas. vnuſ,  
Apportet secum. ADVENIS: } Adueneris, quinque. Aduenit,  
vnuſ. VNVM id } ord. præp. quinque. SAT } Satis, nouem.  
Vnum satis est, vnuſ. DIV quis viuendo, } Quod diu viuendo,  
sexdecim.

Euphrates:

O βίος αἰνθὲν εἰ βίος, ἀλλαξύμφορε'. CAECILIVS } Ephæ-  
stione. vide eundem Nonium in Senium.

TVM ETIAM } Tum equidē, in tredecim. Vnus, Tum quidē.  
Iam equidē, quinq. lámq. equidē, vnuſ. Esse odioſum ſe alteri, }  
Eſſe ſe odioſum alteri, in tribus. Se eſſe odioſum al-  
teri, tres. Eum odioſum eſſe ipsum alteri, vnuſ. Eſſe  
 odioſum alteri, quinque. Odioſum ſe eſſe alteri, quatuor. Se  
 odioſum eſſe alteri, tres. LEVIORQ. eſteorū ſenectus, } Leuiorq.  
fit ſenectus eorum. quatuor. Leuiorq. eſt ſen. coru, quatuor-  
decim. Leuiorq. eſt ſenectus ſenū, vnuſ. Leuiorq. fit ſenectus  
ſenū, vnuſ. COLVENTVR, } propter virtutē, & dignitatē,  
atque etiā atatis reuerentiam. DILIGENTVR, } propter fa-  
cilitatē, & morum ſuauitatem. Hæc duo verba coniūxit &  
infra, & in Lælio. OPEROSA, ſemper agens aliquid, } Operosa,  
& ſemper agens aliquid, Nonius, in, Moliri, & oēs libri mei.  
QVID, quod etiam addiſcunt aliq. id? } Quid, qui etiam &c. tre-  
decim. reliqui mendosi. SOLONEM versibus gloriantē videmus: }  
infra: Ut honeſtū illud Solonis fit, quod ait versiculo quodā,  
ſenescere ſe multa in dies diſcentem. Valerius, Lucianus ait  
Cānis vixisse. Plato in Amatoribus, in Lachete, & vii. de Rep.  
Exiftar & Seneca epiftola in hunc ſenſum lib. 10. ep. 77. De Soloniſ poēſi Plato in Timaeo. Solonis verſuſ eſt:

Ingenitora d' diei poma & dolorōperos.

GRAECAS litteras ſenex didici: } Ennio poëta docente,  
quem ſecum in prouinciam duxit. Qui nſt. lib. xi. cap. xi.

Valerius lib.8. cap.de studio, & industria, Hieronymus ad Nepotianum. Athenis Græcē orauit. Plutarchus. **SOCRAT̄** Valerius lib.8. Quinct.lib.1.cap.de Musica,lyra institutum refert. Eius praeceptor Conus vocatus est. Cic. Fam. lib. 8. **DISCEBANT enim fidibus antiqui** Discebant enim in fidibus antiqui, septem. Totum hoc, sunt, qui delegendū censemant.

## C I C E R O.

**N**ec nunc quidem vires desidero adolescentis, si enim locus erat alter de viis senectuis) nō plus, quam adolescentis tauri, aut elephanti desiderabā. quod est, eo uti decet, & quidquid agas, agere pro viribus, qua enim vox potest esse contemptior, quam Milonis Crotoniata? qui, cum iam senex athletas, se in curriculo exercentes, videret, adspexit lacertos suos dicitur, illacrymānsq. dixisse:

At hi quidem mortui iam sunt:

Non vero tam isti, quam tu ipse, nugator. neque enim ex te umquam es nobilitatus, sed ex lateribus, & lacertis tuis. nihil Sex. Aelius tale, nihil multis annis ante T. Coruncanius, nihil modò P. Crassus: à quibus iura ciuib⁹ prescribabantur: quorum usque ad extre⁹ spiritum est prouecta prudentia. orator, metuo, ne languescat senectute. est enim munus eius non ingenij solum, sed laterum etiam, & virium. omnino canorum illud in uoce splendescit etiam nescio quo pateo in senectute: quod equidem adhuc non amisi: & uidetis annos meos: sed tamen est decorus senis sermo quietus, & remissus: facitque persape ipsa sibi audienciam diserti senis compta, & mitis oratio. quod si ipse exequi nequeas, possis tamen Scipioni precipere, & Lilio. quid enim incundius senectute, stipata studi⁹ inuen-

iuentutis? an ne eas quidem vires senectuti relinqueremus, vt adolescentes doceat, instituat, ad omne officij munus instruat? quo quidem opere quid potest esse præclarus? mihi vero Cn. & P. Scipiones, & cui tui duo, L. Aemilius, & P. Africanus, comitatu nobilium inueniuntur, fortunati videbantur. nec ulli bonarum artium magistri non boni putandi, quamvis consenserint vires, atque defecerint. et si ita ipsa defectio virium, adolescentia vitiis efficitur sapientia, quam senectutis. libidinosa enim, & intemperans adolescentia effutum corpus tradit senectuti. Cyrus quidem apud Xenophontem eo sermone, quem moriens habuit, cum admodum senex esset, negat, se umquam sensisse senectutem suam imbecilliores factam, quam adolescentia fuisse. Ego L. Metellum memini puer, qui, cum quadriennio post alterum consulatum pontifex maximus factus esset, viginti & duos annos ei sacerdotio praefuit, ita bonis esse viribus extremo tempore etatis, vt adolescentiam non requireret. Nihil necesse est mihi, de me ipso dicere. quamquam est id quidem senile, et atque nostra conceditur. uidetis enim, vt apud Homerum sapissimè Nestor de virtutibus suis predicit tertiam enim iam etatem hominum uiuebat: nec erat ei verendum, ne, vera predicans de senectute videtur aut insolens, aut loquax. etenim (vt ait Homer) ex eius lingua melle dulcior fluebat oratio: quam ad suavitatem nullis egebat corporis viribus. & tandem ille Gracia numquam optat, vt Aiakis similes habeat decem, at vt Nestoris: quod si acciderit, non dubitat, quin brevissimè Troia peritura. Sed redet ad me.

## EXPLANA TIO.

**N**E c nunc quidem } Ne nunc quidem, vnum, Neque, duo,  
**ELEPHANTIS }** Elephantis, viginti. Eo r*it* dect, } Eo  
 decet vti, tredecim. **PRO viribus**, } quas quilibet etas exigit.  
**MILIONIS Crotoniate?** } maximis quondam viribus prædicti,  
 vt sublatum in humeros bouem per stadium ferret, de quo  
 paullo infra. Vide Plin. lib. 7. cap. 20. Solinum cap. 4. De  
 cius miserabili interitu vide Strabonem lib. 6. Sudam, A-  
 gellium lib. 15. & Val. lib. 9. cap. 22. **I L L A C R Y M A N S Q.** }  
 recordatione vi etoriarum & pristinæ gloriæ desiderio. **Nv-**  
**GATOR.** } qui naturam, tamquam nouercam, falsò, male  
 gratus, insimulas. **SEX.** **Aclivis** } Sex. **Æmilius**, omnes scripti.  
**Ælius**, tamen, probo: qui propter iuris ciuilis scientiam sic ap-  
 pella tus à summo poëta est.

Egregiè cordatus homo, catus, **Ælius Sextus.**

Quem verum refert Cicero Tusc. i. Is librum populo R. debitis **Ælianum** inscriptum: auctore Pomponio. l. 2. §. aug-  
 gescere. ff. de orig. iuris. Ibidemq. ait existare illius librum, in-  
 scriptum Tripartita, qui veluti iuris cunabula con-  
 tinet. **MVLTIS annis antè** } circiter xc. **TR. CORNICNIA**, } qui ius primus prosteri cœpit. idem Pomponius.  
**E s t prouecta prudentia.** } Prouidentia, vnum. Prudentia  
 producta est, vnum. Prouecta est sapientia, vnum. **SED**  
**laterum etiam, & virium.** } Sed laterum & etiam virium,  
 vnum. Sed laterum, etiam virium, vnum. Sed etiam la-  
 terum, & virium, vnum. Sed laterum, & virium, quin-  
 que. **Sed laterum etiam, & virium:** Quinct. lib. 2. cap. de  
 Pronunc. Latera cum gestu consentiant, facit enim ali-  
 quid & totius corporis motus, adeo, vt Cicero plus illo  
 agi, quam manibus ipsiis, putet. Ita enim dicit in Orat. Nullæ argutiae digitorum, non ad numerum articulus  
 cadens, trunco magis toto seipse moderans, & virilis la-  
 terum flexione. Et idem Cicero de Orat. 111. Omnes  
 autem hos, manus subsequi debet gestus, non hic ver-  
 ba exprimens scenicus, sed vniuersam rem, & sententiam  
 non demonstratione, sed significatione declarans, late-  
 rum inflexione hac forti, & virili, non ab scena, & hi-  
 strionibus, sed ab arnis, aut etiam à palestra. **CANO-**

RVM

**RVM illud in roce }** Quintilianus, vbi de Pronunciatio-  
 ne agit, dicit, vocis naturam spectari quantitate, & qua-  
 litate. Quantitas est simplicior: in summa enim, grandis,  
 aut exigua est. Qualitas magis varia est, nam est aut candi-  
 da, aut fulsa; & plena, & exfusa; & lenis & aspera; & contracta,  
 & fusa; & dura, & flexibilis; & clara, & obtusa. **Canorum:**  
 vocem claram, clarior enim tum sit, cum obtusa splendescit.  
**QUOD equidem adhuc non amisi:** } Quod equidem non amisi  
 adhuc, duo. Et videtis annos meos: } Et vos videris annos, v-  
 nus. Etiam videtis annos meos, vnum. Et videtis tamen  
 meos annos, vnum. Meos, non est in sex. **SED tamen est de-**  
**corus senis sermo** } Sed tamen sermo est decorus senis, duo.  
 Sed tamen decorus est sermo senis, quatuor. **REM ISSVS:**  
 citat haec Nonius in Remittere, delectare. **A V D I E N T I A M** }  
 sic Plautus: Surge, præco, fac populo audientiam. **QUOD**  
 si ipse exequi nequeas, posis tamen Scipioni præcipere, & Lælio }  
 & libri veteres mei decem octo habent, Quam, pro, Quid:  
 & eos docti veri sequuntur. ego aslensum sustineo. vereor e-  
 nem, ne quis, ob illud antecedens, Compta, & mitis oratio,  
 putauerit esse subiungendum, Quam. sed meæ quidem  
 aures, Exsequi orationem, inuitæ audiunt. Illud autem, Quid si  
 exequi nequeas, hoc videlicet spectat: vt prompta, & miti v-  
 taris oratione. Posteriora quoque verba, Positis tam Scipioni  
 præcipere, & Lælio, magis congruere videretur cum eo, Quid  
 si exequi nequeas. Ipse, non est in vno. **QUID enim incandis:** }  
 Quid est enim iuc. iex. Quid enim est iuc. vnum. Quid est iuc.  
 duo. **C.N. & P. Scipiones,** } duo fratres, qui in Hispania cecide-  
 runt. Silius:

Dum Capua infastam luit haud sine sanguine culpam,  
 Interæa geminos terra crudelis Ibera  
 Fortuna abstulerat, permiscens tristia læris,  
 Scipiadas, magnumq. decus, magnumq. dolorem.

Hos Virgilius in vr. vocat, Duo Fulmina belli Scipiadas. Pu-  
 blius est maioris Africani, & Asiatici pater: Cnæus, eorum pa-  
 trius, Sciponis Nasica genitor. Et **ani tui duo,** } **Æmilius**  
 sanguinis, Africanus Publij filius adoptionis linea. **MAGIS-**  
**TRI non boni** } idest, idonei. Graci dicunt, *ixovi*. **IN-**  
**TEMPE RANS adolescentia** } exhauriuntur enim vires ea, qui-  
 bus sustentari seæctetum oportebat. **APVD Xenophonem** }

lib. ixx. Cyri Padiæ. Herodotus, & Iustinus variè hoc scribunt. A quibus dissentit Lucianus in Macrobiis. **A E T A T I Q U E** **nōst̄re** propter auctoritatem, opinione prudentiæ, & multi usus rerum partam. **C O N C E D I T V R** non virtus vertitur, quamvis non laudetur. **A P V D H o m e r u m** Il. lib. I. & 23. potissimum, & alibi. **D E v i r t u t i b u s s u i** id est, iis de rebus, quas virtute sua gesserat. **T E R T I A M** **a t a t e m** **τετάρτων** **γέλων**, Homerus Il. a.

—πῶπ ḥ Νέσωρ

ἴδιας τοῦ αὐθόρου λεγόντος πολιών αἰροφύτης,  
τείχους δικαιούσας μελιτος γραμμίων πέρι αὐθό.  
τοι εἰς ιδίας μάρτυρας μεριῶν αἰτιράπων  
Ερθίας τοι οι περισσεῖν αἴρουσι τράφεν, οἵδιοι οὐρανοῖ  
ἐπίλοι πραγμάτην μεταξὺ τεττακοτον αἰτιστον.

Et Ouidius:

Spectatorem operum multorum reddere, vixi  
Annos bis centum, nunc tertia viuitur atas. Et ille:  
Ter binos, decimque nouem superexit in annos  
Iusta senescentum quos compleat ora virorum.

Nāuius Trīsc̄lisenem, & Dulcioriloquum vocat, vt est apud Agellium lib. x i x . cap. 17. Vide Lucianum in Macrobiis, & Hieron. ad Nepotianum, & Prouerb. Nestorea senecta. **N e c e r a e i v e r e n d u m**, tacitè indicat, ne sibi quidem id verendum esse. **V E R A p r e d i c a n s d e s e**, præsertim ob eam caussam, vt non suas decantet laudes, sed vt auctoritatem sibi conciliet. Audite, inquit, iuuenes, senem, quem senem iuuenem audiuerunt. **E x e i u s l i n g u a m e l l e d u l c i o r f i n e b a t o r a t i o** Cic. in Bruto, ex hoc Homeri loco colligit, heroicis illis temporibus orationiam in pretio fuisse, cum Homeruſ Vlxi viii, Nestori suauitatem dicendi dederit. Quintilianus in xi. ex Homero tria dicendi genera obseruauit, breuem, & proprium iucunditatem in Menelao, in Nestore melle dulciorē érmonem, in Vlxe orationem impetu, fluminī, niuib⁹ hibernis aucto, parem. Plutarchus in Homeri vita de generibus dicendi alia ostendit exempla. Vide Prouerb. Nestorea eloquentia. **E t t a m e n d u x i l l e G r e c i a** Agamemnon. significat, bellum magis confilio, quam vi, geri debere. Locus est Il. 8.

αγράρξεν πάτερ, καὶ αἴθωσιν, καὶ αἴπολον,  
πιούτοις διηγεις μοι συμφέρει μονες εἰς Ἀχαϊον,

τῷ, καὶ τῷ ἡμίσει πόλιοι πειράποι ἀναζίΘ,  
χερσὶν υφὲ ἡμίσεις ἀπλαυτά τε, καὶ δομὴν τη.

Interea tamen Cic. pulchrè dissimulat, quod Nestor ubique queritur, se iuuenili robore destitutum. Ille dux, quatuor. **ΑΙΑΚΙΣ simile**: Aiaci, vnuſ. **N E S T O R I S**: Nestori, vnuſ. Hom. Il. lib. 2. **Q u o d si acciderit**: Quod si sibi acciderit, tredecim. Quod sibi si acciderit, quinque. Quod si si acciderit, vnuſ. Quod sibi acciderit, vnuſ. Quod si is Nestor acciderit vnuſ, male.

## C I C E R O.

**Q**uartum ago annum & octogesimum, vellem id quidem posse, quod Cyrus: sed tamen hoc queo dare, non me quidem ipsi esse viribus, quibus aut miles bello Punico, aut questor eodem bello, aut consul in Hispania fuerim, aut quadriennio post cum tribunus militum depugnani apud Thermopylas Man. Acilio Glabrone consule: sed tamen, ut videtis, non planè me eneruauit, non afflixit senectus: non curia vites meas desiderat, non Rostra, non amici, non clientes, non hospites, nec enim umquam sum assensus illi veteri, laudatōq. prouerbio, quod monet, mature fieri senem, sed dimi velis senex esse. ego vero me minus diu senem esse mallem, quam esse senem antea, quam essem: itaque nemmo adhuc conuenire me voluit, qui fuerim occupatus. At minus habeo virium, quam vestrum veteris. nec nos quidem T. Pontij centurionis vires habetis. num icscirco est ille præstantior? moderatio modò virium adsit, & tantum, quantum potest, quisque natura: nam ille non magno desiderio tenebitur virium. Olympia per stadium ingressus esse Milo dicitur, cum humeris sustineret bouem. utrum igitur has corporis, an Pythagoras tibi malis vires ingenij dari? Denique isto bono

vitare, dum adsit: cum absit, ne requiras. nisi forte adolescentes pueritiā, paululum etate progresi, adolescentiam debent requirere. cursus est certus atatis. Et via una natura, eaque simplex, suāque cūique parti atatis tempestinitas est data. ut enim infirmitas, puerorum est ferocitas, iuuenium: grauitas, iam constantis atatis: sic senectutis maturitas naturale quiddam habet, quod suo tempore percipi debeat. Arbitror te audire, Scipio, hospes tuus Massinissa qua faciat hodie, nonaginta annos natus: cum ingressus iter pedibus sit, in equum omnino non ascendere: cum equo, ex equo non descendere: nullo imbre, nullo frigore adduci, ut capite operto sit: summam in eo esse corporis siccitatem: itaque exsequi omnia regis officia, & munera. Poteſt igitur exercitatio, & temperantia in senectute etiam aliquid conseruare pristinirboris. Non sunt in senectute vires, nec postulantur quidem vires à senectute. ergo, & legibus, & institutis, vacat atus nostra muneribus iis, que non possunt sine viribus sustineri. itaque non modò, quod non possumus, sed ne quantum possumus quidem, coginur. At ita multi sunt imbecilli senes, ut nullum officij, aut omnino vite munus exequi possint. At id quidem non proprium senectutis est vitium, sed commune inualetudini, quam fuit imbecillus P. Africani filius, is, qui te adoptauit? quam tenui, aut nulla potius valetudine? quod nisi ita fuisset, alterum ille exstitisset lumen cimitatu, ad paternam enim magnitudinem animi doctrina r̄bior accesserat. quid mirum igitur in senibus si infirmi sunt aliquando, cum ne id quidem adolescentes effugere possint? Resistendum, Læs, & Scipio, senectuti est, eiisque virtus diligentia compensanda sunt:

pugnan-

pugnandum, tamquam contra morbum, sic contra senectutem: habenda ratio valetudinis: utendū exercitationibus modicis: tantum cibi, & potionis adhibendum, ut reficiantur vires, non opprimantur. Nec verò corpori solū subueniendum est, sed menti, atque animo multò magis. nam bac quoque, nisi tamquam lumen oleum in filiis, extinguntur senectute. Et corpora quidem exercitationum defatigatione ingrauescunt: animi autem exercendo leuantur. nam, quos ait Cacilius comicus stultos senes, hos significat credulos, obliniosos, dissolutos, que virtus sunt non senectutis, sed inertis, ignavae, somniculosae senectutis. ut petulantias, vt libido magis est adolescentium, quam senum, nec tamen omnium adolescentium, sed non proborum: sic ista senilis stultitia, que deliratio appellari solet, senum leuum est, non omnium. Quatuor robustos filios, quinque filias, tantam domum, tantas clientelas Appius regebat & senex, & cecus. intentum enim animum, tamquam arcum, habebat: nec languescens succumbebat senectuti: tenebat non modo auctoritatem, sed etiam imperium, in suis: metuebat eum serui, verebantur liberi, carum omnes habebant. uigebat in illa domo mos patrius, & disciplina. ita enim senectus honesta est, si se ipsa defendit, si ius suum retinet, si nemini mancipata est, si usque ad ultimum spiritum dominatur in suis. ut enim adolescentem, in quo aliquid senile, sic senem, in quo aliquid est adolescentis, probo. quod qui sequitur, corpore senex esse poterit, animo numquam erit.

## EXPLANATIO.

**A**V<sup>T</sup> consul in Hispania fuerim, & in qua plura oppida cepit, quām dies fuit. Plutarchus. Mirum autem, gloriosum se nem gloriosum obtinuisse triumphum, de quo Liuius libr. x x i v . & Plut. in eius vita. Cv m tribus mil. depugnauit apud Thermopylas. Man. Acilio Glabriōne consule: } memoriae vinum in Cicerone deprehenditur. legerat enim in Annalibus, Catonem non tribunum mil. sed legatum apud Thermopylas. M. Acilio c o s . depugnasse, quod Liuius lib. x x v i . perspicue docer. neminem enim post consultatum tribunum mil. fuisse constat, at legatos ita multos, ut exemplis probare necesse non sit. **T**hermopylas: Thermopylarum descriptionem vide apud Linium lib. x x v i . & Strabonem lib. ix. **V**nde, } valent enim multum testes oculati. ENERVAVIT, } robore destituit. nam robur est in neruis situm. Hinc, Ompibus neruis, Nerus intēdere, expedire. Cic. pro Cœlio: Quem si vobis, si suis, si recip. conseruatis, addicetum, deditum, obstrictum vobis, ac liberis vestris habebitis, omniumque huius neruorum, ac laborum vos potissimum inde fructus vberes, diuturnoque capietis. NON clientes, non hospites: } Cicero in Diuinatione: Clarissimi viri nostræ ciuitatis, temporibus optimis hoc sibi amplissimum, pulcherrimumque ducebant ab hospitibus, clientibusque suis, ab exteris nationibus, que in amicitiam populi R. ditionemque essent, iniurias propulsare, eorūnque fortunas defendere. M. Catonem illum sapientem, clarissimum virum, & prudentissimum, cum multis (maxime Galba) graues inimicietas gesisse accepimus, propriis Hispanorum, apud quos consul fuerat, iniurias. DE Clientibus, & hospitibus, vide Halicarnasseum lib. 2. Aegilius lib. v. cap. 13. Clientem à Colendo dicunt, quasi Colentem. MATVR E fieri senem, } mature sibi parcere, & iuuenilia opera intermittere. vel, iuueniata senilem sibi prudentiam, & affectum, cupiditatūmq. moderationem comparare. QVAN esse senem ante, quām esset. } ignauo otio torpescere, dum & animi, & sensuum integritate valeam. CONVENIRE me n̄ huius, } Valuit, sex. QV IN fierim occupatus, } Off. lib. i i l . in procario, de P. Scipione: Numquam minus otiosum, quam cum otiosus. NEC vos quidem: } Ne, vnu. T. Pontij centurionis } forasse Pontium intelligit, qui, cum Capitolium à Gallis electum, Tiberim transnauit. Plut. in Camillo, Liu. lib. v. Aut.

Vegetius

Vegetius, centuriones non nisi proceri, & robusto corpore esse lectos. **N**v m **i**c*c*irco **e**s*t* ille **p**ré*s*tan*t*or: } sic decem octo mei. duo, & alias, N. i. c. i. p. vobis: **Q**uāntūm **p**otest quisque nitatur: } Quantum quisque potest, nitatur, duodecim. MILO: } Crotoniata. Quintil. lib. i. cap. 14. Vide Prou. Taurum tollat, Vitulum qui sustulerit, PYTHAGORAE: } Valerius lib. i i x . cap. de studio, & industria, Laertius in vita. Is rō **b**ono: } Corporis commoda vocat Bona, communis loquendi modo, non Stoicorum dogmate. PAVLVLVM **a**etate **p**rogre*s*: } ultra adolescentiam. SVAQ. cuique parti etatis: } vñ, AEtatis, abest à septē. TEMPESTIVITAS: } non tempus hic significatur, sed maturitas temporis. Ideoque male videtur legisse Nonius, Tempestas. E s t **d**ata: } à natura. INFIRMITAS puerorum: } quæ pueris cum senibus quodam modo communis est: vnde Prou. Bis pueri senes. FEROCITAS **i**m*mu*num: } quæ posita est magis in inferenda, quām propulsanda iniuria, & quiduis virium potius arbitrio, quām consilio suscipiendo. graue, pericolosum vitium, & honestis laboribus corporis, atque animi frangendum. GRAVITAS iam **c**on*s*tantis etatis: } quæ omnium dicta, & facta certo consilio gubernat. SVO **t**empore **p**ercipi: } refertur ad maturitatē senectutis tantum, non etiam ad infirmitatem puerorum, & ferocitatem iuuenium: quod putarunt alij, libro rum quorundam varietate adducti. HOSPES tuus Magistri: } Hospes tuus habitus Mass. decemocto, Hospes tuus habiturus Mass. vnu. Errore facili. Legendum enim, Hospes tuus aiutus Mass. Africani enim maioris hospes fuit vt ex Scipionis Somnio. Quando in Romanorum amicitiam venerit, vide apud Sall. Iugurtha. De eius constantia in amicitia, Valerius lib. v. cap. de Gratis. Quæ ipse Scipioni dono dederit, recenset Silius lib. i.

Huic iuueni dono insignem velamine picto  
Dat chlamydem, stratūmq. ostros (quem ceperat ipse  
Deiecto vistor Magone, animūmq. probarat)  
Cornipedem, & cum qua diuūm libabat ad aras  
Hasdrubal, ex auro pateram, galeāmq. coimantem.  
Ex infirmato sociali foedere regis.

NON AGINTA annos natu*r*is: } tot etiā Lucianus vixisse scribit. Florus vero Epit. l. maiorem decessisse ait. Cv m **i**n*g*ressus iter: } Valerius lib. i i x . cap. 13. de Senect. De eo Plin. lib. vii. cap. 14. & 48. ITAQVE exsequi omnia regis officia, & munera: }

honestam disciplinam, & locupletationem ciuium regis officia præcipua, tradit Isocrates. EXERCITATIO, & temperantia; ego intemperantia, & ignavia proutium robur tollit. IN se- nectute etiam non modò inuentuunt. VACAT etas nostra mu- scribus iis, qui acceperint pro Dore operam, quod nusquam libera rep. quisquam dixit, perperam locum interpretati sunt, & distinxerunt. Hinc Vacatio, & excusatio munericum, apud Iurisconsultos. Dicebantur autem hi, Emeriti. Muneribus ijs, beili, & senatorio. SVNT imbecillenses, Imbecilles, duodecim. COMMVNE rætudinis, sic omnes: duobus exceptis, in quibus, Inulaetudinis. P. AFRICANUS filius, maioris, fratri Corneliae, Gracchorum matris. In Bruto: Ipsum Scipionem accepimus non infante fuisse, filius quidem eius, ijs, qui huc minorem Scipionem à Paullo adoptauit, si corpore valuerit, in primis habitus esset discretus, indicant cum oratiuncula, tum historia quedam Græca, scripta dulcisimè. AVT nulla. Et, vñus. AC, tres. ALTERVM ille extitisset lumen cinitatis, illud, sex. nō Ille, non est in vno. Alterum in isto extitisset lumen ciui. vñus. Apud Homerum Ajax Teucro ait:

BΛΑΞ έντει κύριοι τόνοι. Διαρροΐστηντες.

Ita iaculare, si quod forte lumen Cræcis existat.

EIVSQUE via diligentia compensanda sunt. Diligentius, v-  
nus. Compescenda, octo. EXERCITATIONIBVS modicis; Plin. lib. xxiix. cap. 4. POTIONIS, Potationis, septem. Po-  
tus, duo. Sed memi, atque animo multò magis. Sed etiam menti  
& animo magis, vñus. Sed etiam menti, & animo multò ma-  
gis, vñus. HÆC quoque mens, atque animus. EXERCITA-  
TIONVM defatigatione ingrauefuntur. Très. Exercitationum, non  
est in duobus. Defectione, vñus. Defatigatione, & exercita-  
tione, vñus. ANIMI autem exercendo leviorum. hoc Quintiliani  
de memoria dicit, quæ pars ingenij est. Isocrates τὰ μὲν  
εἰδοῦλα τοῖς συμπτυχίαις πάντας, οὐ δέ τις τοῖς σπουδαῖς λόγῳ αὐξά-  
δει τίκου. Exercendo: dum exercentur, Ut: Vr̄tque videndo Fe-  
mina. Exercitando, tres. Exercitatione, duo. Animi autem se  
exercendo leu. quatuordecim. CREDVLOS, Credulitatem  
esse vitium, scribit Dion Prusensis ἐπειδήσια. Vide & Lu-  
ciani libellum τετράδοι μηδὲ τοιτιστιν διασκολοῦ. DISSEOLV-  
TO. qui verecundia fines transferint. Off. i. Negligere,  
quid de se quisque sentiat, nō modò arrogantis est, sed etiam  
omnino dissoluti. DELIRATIO. De Orat. II. O deliratio-

nem

nem incredibilem. Plautus Amph. Hæc quidem deliramen-  
ta loquitur Suet. Vesp. Neque illa quidquam aliud, quam ca-  
chinaſſe, mirantem quod, adhuc se mentis compote, delira-  
ret iam filius suus. Metaphora sumpta à re rustica. Plinius lib.  
xxix. cap. 20. de Occasione: Hoc quoque ubi consuetudo pa-  
titur, cratæ dentata, vel tabula aratro adnexa, quod vocant Li-  
tare, operientes semina, vnde primum appellata Deliratio  
est. Hinc, Lirari, & Litari, apud Columellam. REGEBAT &  
senex, & cœsus. Tusc. v. Appius Claudius, qui cæcus multis  
annos fuit, in illo suo casu nec publico, nec priuato muneri  
defuit. TE NEBANT non modo. Tenebat enim non modò, quin-  
que. AVCTORITATEM, quam aut virtus, aut sapientia, aut  
potentia parit, expe etiam amor. IMPERIVM. Auctoritas ha-  
bere videtur aliquid voluntarium: Imperium, aliquid coactū,  
& violentum: nisi quid ex præscripto fiat, poena sequatur.  
METVEBANT eum serui, Eum, non est in sexdecim.  
HONESTA est, honore digna, & honorata. Si se ipsa defendit, anteacta vita parta auctoritate, & de diligentia nihil remit-  
tendo. Si ins suum retinet, ne ex arbitrio liberorum pendear,  
néve ad agnatos, & gentiles, id est in tutelam, & quasi manci-  
pationem deducatur. eo enim Cicero respexit videtur, ne  
senex bis puer, rei suæ administrandæ parum idoneus, inuer-  
so natura ordine, quasi in liberorum sacra recidat. Ius suum  
obtinere, Demostheni, & Isocrati, τιγχίεν τὰν δικαιαν Demos-  
theni, τὸ δικαιοῦ τιχεῖον. MANCIPATA est. Emancipata est, No-  
nius & duo mei libri. Emancipare, est, ilteri in manum trade-  
re, Emancipatum, interpretatur Nonius, subnixum, deditum.  
ULTIMUM spiritum. Ultimum vitæ spiritum, vñus. Vsq[ue] ad  
ultimum spiritum: Vespasianus iebat, imperatorem stantem  
morti oportere. IN quo aliquid est adolescentis, alacritas, & hi-  
laritas iuuenilis.

## C I C E R O.

SEPTIMUS mihi liber Originum est in manibus: o-  
mnia antiquitatis monumenta colligo: caſſarum  
illustrium, quascumque defendi, nunc quam maximè  
orationes conficio: ius augurum, pontificū, ciuile tracto:  
multum etiam Græcis litteris utor: Pythagoreorūmque

more exercenda memoria gratia, quid quoque die dixerim, audeuerim, egerim, commemoro vesperi. ha sunt exercitationes ingenij, hac curicula mentis: in his desudans, atque elaborans, corporis vires non magnopere desidero: adsum amicis: venio in senatum frequens: ultròq. afferro res multū & diu cogitatas, easq. teneor animi, non corporis, viribus. que si exsequi nequitem, tamen me lectulus oblectaret, ea ipsa cogitantem, qua iam agere non possum: sed, ut possim, facit acta vita. semper enim in his studiis, laboribusq. viuenti non intelligitur, quando obrepas seneclitus. ita sensim sine sensu etas senescit: nec subito frangitur, sed disuturitate extinguitur. Sequitur tertia vituperatio senestutis, quod eam carere dicunt voluptatibus. Operarum munus etatis: siquidem id aufert a nobis, quod est in adolescentia vitiissimum. accipite enim, optimi adolescentes, veterem orationem Archytæ Tarentini, magni in primis, & praelari viri: qua mibi tradita est, cum essem adolescentis Tarenti cum Q. M. aximo. nullam capitaliorem pestem, quam voluptatem corporis, hominibus dicebat a natura datam: cuius voluptatis auida libidines, temere, & effrenata ad potiendum incitarentur: hinc patriæ prodiciones, hinc rerump. euerstiones, hinc cum hostibus clamdestina colloquia nasci: nullum denique scelus, nullum malum facimus esse, ad quod suscipiendum non libido voluptatis impelleret: stupra vero, & adulteria, & omne tale flagitium, nullis alijs illecebribus excitari, nisi voluptatis. cumq. homini sine natura, sine quis deus nihil mente prestabilius dedisset: huic diuino muneri, ac dono nihil esse tam inimicum, quam voluptatem: nec enim, libidine dominante, temperantia locum esse, nec omnino

in voluptatis regno virtutem posse consistere. quod quo magis intelligi posset, fingere animo iubebat, tanta incitatum aliquem voluptate corporis, quanta posset maxima, nemini censebat fore dubium, quin tamdiu, dum ita gauderet, nihil agitare mente, nihil ratione, nihil cogitatione consequi posset: quocircum nihil esse tam detestabile, tamque pestiferum, quam voluptatem: siquidem ea, cum maior esset, atque longinquier, omne animi lumen extingueret. Hec cum C. Pontio Samnite, patre eius, a quo Caudino prælio Sp. Postumius, T. Veturius consules superati sunt, locutum Archytæ, Nearibus Tarentinus, hospes noster, qui in amicitia populi R. permanserat, se a maioribus natu accepisse, dicebat: cum quidem ei sermoni interfuisset Plato Atheniensis: quem Tarentum venisse, L. Camillo, P. Claudio consulibus, reperio.

## EXPLANATIO.

**S**EPTIMVS } nec plures citantur a veteribus. quorum nullus exstat. nam, quæ circumferuntur, Annij Viterbiensis esse, nemo nescit. LIBER Originum est in manibus: } quibus Cicero in Bruto florem, & eloquentiae lumen tribuit. Vide Festum. EST in manibus: a me conscribitur. Supradictum in manibus est laudatio: id est, edita doctorum manibus teritur. ORATIONES conficio: } in quibus eum Lysias comparat Cicero in lib. de claris Orat. PYTHAGOREORVM QVIES more, } de Pythagoreorum viuendi ratione, Agellius lib. I. cap. 4. Pythagoras in Carminibus aureis:

Μηδέ τινον μελακοῖσιν ἐπ' ὄμηρον περιστῆναι καθάπερ,  
Πάντα δὲ οὐεστῶν ἔργων τέλος ἀπεστὸν ἐπελθεῖν.  
Ἔν ταπείβωντι δὲ τρόπῳ μη δύο εἰν ἐπελθεῖν;

Id est:

Neque somnum mollibus in oculis suscipe,  
Antequam diurnorum operum ter vnumquodque  
perc urras.

*Quo transgressus sum? quid feris? quid mihi decens  
non perfectum est?*

*Pythagoreorum more:* Pythagoreorum more, septem. Pythagore more, vnum. Pythagoricorum more, vnum. *Desudans,* exercens. Manet in metaphora palestræ, Curricula, quæ sunt spatia, intra quæ se cursores exercent, Desudare. *Ad summum amicis,* Adesse, patrocinari: sicut Gracis, non magnopere nam Aristoteles Rhet. ad Theodecten n. ait *τινες ἀποδιδούσι τον θόρην.* *Easque tuor,* contra eos, qui à me dissentiant. *Animi, non corporis viribus,* verbis enim, non pugnis, ut alibi ait, disceptamus. In senatu vincit non robustior, & potentior, (siquidē libera sit res publica) sed prudentior, & disertior. *Sensim sine sensu atas sensicit;* *tauromachia ioci genus, & lepor quidam, in repetitione litterarum.* Sic Ennius apud Prisc. l. xii. & ad Her. lib. iv.

O Tite, tute Tatib tanta tyranne tulisti.

Item:

Quidquam quisquam cuiquam, quod conueniat, neget.

Item alibi:

Nam, cuius rationis ratio non exstet, ei rationi ratio non est fidem habere.

Et idem in Phœnicio, apud Nonium:

Stultus, qui cupita cupidus cupienter cupit.

Et Plautus Menæ.

Non potui paucis plura planè proloqui.

Et Cato senex, apud Carisium l. 2.

Suapte natio sua separata seorsum.

*Sensim:* unde Ouidius:

Tempora labuntur, tacitisq. senescimus annis.

*Id aufer à nobis,* Id aufer nobis, octo. *Tradita est,* in manus: nimurum scripta. Ad postundum incitarentur: id est, impensè cupiunt, consulunt parum, ut ait Comicus. *Clamdestina colloquia nasci:* Clamdestina colloquia nasci dicebat, vnde decim. *Excitari, nisi voluptatis.* Incitari, quartuor. Votuptatibus, sex. *Nec omnino,* Neque omnino, vnde decim. *Quanta posset maxima.* Quanta percipi posset maxima, decem septem. Posuit, quattuor. *C. Pontio Samnite,* Hennij filio, patre longè prudentissimo nato, Liuius de vir. ill. additum cognomen est Thelesini. Hic ille est, qui optabat in ea se

ea se tempora reseruantum, cum Romani dona accipere cupilissent. Off. II. *Caudino prælio,* Liuius lib. ix. Florus lib. I. cap. 17. de vir. ill. cap. 30. Oros. lib. III. cap. 15. D. Aug. de ciu. D. lib. II. cap. 17. Agell. lib. xvii. cap. 21. De Caudinis furculis vide Liuium. *Consules,* cum iterum consules essent. Off. III. *Superati sunt,* sub iugum missi. QVI in amicitia populi R. permanfrat, antiqua formula. In Fragmento Thotia legis, apud Fulvium Vrsum: QVEI E CORVM IN A MICITIAM . POPVLI . ROMANI . BELLO . PONICIO . PROXIMO . MANSERVNT. Et in veterissimo apud eundem S. C. Græcè scripto, quod M. Lepido, Q. Catulo cos. in aë incisum fuit: Ter sita reuocatur, et quæ rē dīpōntur p̄p̄tūlārū. L. CAMILLO, sic recte sex mei.

## C I C E R O.

*Vorsum hoc? vt intelligeretis, si voluptatem aspernari rationale, & sapientia non possemus, magnam habendam senectuti gratiam, quæ efficeret, vt id non liberet, quod non oporteret, impedit enim consilium voluptas, rationis inimicata mentis (vt ita dicam) præstinguit oculos, nec habet ullum cum virtute commercium. Inuitus feci, et fortissimi viri T. Flaminini fratrem, L. Flamininum ēsenatu ejcerem septem annis postquam consul fuisset: sed notandam putau libidinem ille enim, cum esset consul in Gallia, exoratus in coniuvio à scorto est, vt securiferiret aliquem eorum, qui in vinculis essent damnati rei capitalis. hic Tito, fratre suo, censore, qui proximus ante me fuerat, elapsus est. nihil vero, & Flacco nequit probari potui tam flagitiosa, & tam perdit a libido, quæ cum probro priuato coniungeret imperij dedecus. Sape audiui à maioribus natu, qui se pueros porrò à senibus andisse dicebant, mirari.*

solutum C. Fabricium, quod, cum apud Pyrrhum regem legatus esset, audiisset à Thessalo Cynea, esse quemdam Athenis, qui se sapientem profiteretur, cùmque dicere, omnia, quæ faceremus, ad voluptatem esse referenda: quod ex eo audientes Man. Curium, & Ti. Coruncanum, optare solitos, ut id Samnitibus ipsique Pyrrho persuaderetur: quò facilius vinci possent, cum se voluptatibus dedidissent. vixerat Man. Curius cum P. Decio, qui quinquennio ante eum consulem se pro rep. quarto consulatu deuouerat. norat eundem Fabricius, norat Cornicanus: qui cum ex sua vita, tum ex eius, quem dico, P. Deci facto iudicabant esse profecto aliquid natura pulchrum, atque praelarum, quod sua sponte peteretur, quodque spreta, & contempta voluptate, optimus quisque sequeretur.

## EXPLANATIO.

**I**MPESTIT consilium voluptas, } voluptas nullum habet cum virtute commercium. RATIONIS inimica, } Rationi inim. quindecim. Rationi est inimica, duo. Rationum inimica, vnuus, Voluptatis cum ratione prælium describit Prudentius in Psychomachia. Comparatio item voluptatis cum virtute est apud Senecam lib. i. de vita beata. INVITVS } nam omnis animaduersio, & castigatio contumelia vacare debet, neque ad eius, qui punit aliquem, aut castigat, sed ad reip. vtilitatem referri. SEPTEM annis } Octo, liber Vrsini. NOTANDAM putauit libidinem, } sic omnes mei. Notandum, legebat Gifanius. Notandum: Liuius eadem de re: Patrum memoria institutum fertur, vt censores motis à senatu adscriberent notas. ILLÉ enim, cum esset consul in Gallia, } hanc historiā scribentes Liuius lib. xxxiv. & Plur. in Catone, & T. Flamino, inter se dissentunt. EXORATVS } alijs subinde atq. alijs blandimentis impulsus. IN coniuio } cum vino incalvissent. SCORTO } Philippo Poeno, caro, ac nobili scorto, Liuius. Eum autem adeo deperibat, vt, siue exercitus ducta-

ret, siue provincias administraret, ab eius latere numquam discederet. Plutarchus. IMPERII dedecus. } cùm id flagitiū consul admisisset. PORRO } idest, retro. Sic in Lælio: Verū ergo illud est, quod à Tarentino Archita, vt opinor, dici solitum, nostris fenes commemorare audiui, ab aliis senibus lauditum. THESSALO Cyneas, } Demosthenis auditore, imitatorēque, tantæ eloquentia viro, vt plures ciuitates sua facundia, quam Pyrrhus armis, superasse creditus fit. atque ob hoc à Pyrrho in magno pretio habitus. Hic ille Cyneas est, qui Romanorum senatum regum confessum, vel, vt Iustinus inquit, regum urbem: vel, vt Florus. Urbem templum, senatum verò regnum sibi visum respondit. Plutarchus in Pyrro, & Val. lib. iv. cap. de Continentia. QVENDAM } Epicurum. TI. CORUNCANUM, } Epit. Liu. xii. QVO facilius vinci } Vt facilius vinci, vnuus: P. Decio, } filio. DE VOVERAT. } Gallico prælio. Liuius lib. x. Florus lib. v. cap. 17. Val. l. v. cap. de Pietate erga pat. de vir. ill. cap. 27. Oros. lib. iii. cap. 2. Deuouendi ritum vide apud Liuium lib. iix. NORAT eundem Fabricius, norat Cornicanus: } à cuius deuotione sedecimi annis alter consul, alter ad Pyrrhum legatus fuit. CV M ex sua vita, } Tum, decem septem. SV A sponte } fine vlo alio præmio & fructu. SPRETA, } quia deformis. spreta: præ honestate: cui dum student, hac careant necesse est, in munus officij sui toto animo intenti, quod dum exsequi student, nec conuiuis intempestiuis, & luxuriosis, nec muliercularum illecebris, nec somno, atque ignavia vacare possunt.

## CICERO.

**Q**Vorsum igitur hec tam multa de voluptate, quia non modò vituperatio nulla, sed etiam summa laus senectutis est, quod ea voluptates nullas magnopere desiderat. caret epulis, exstructisque mensis, & frequentibus poculis: caret etiam vinolentia, & cruditate, & insomniis. sed, si aliquid dandum est voluptati, quoniam eius blanditijs non facile obſistiens: (diuinitus enim Plato escam malorum appellat

voluptatem, quòde ea videlicet homines capiantur, ut pisces) quamquam immoderatis epulis caret senectus, modicis tamen delectari potest. C. Duillium, M. filius, qui Pœnos primus classe deuicerat, redeuntem à cena senem sepe videbam puer. delectabatur cereo funali, & tubicine: qua sibi, nullo exemplo, priuatus sumperferat: tantum licentia dabant gloria. Sed, quid ego alios? Ad me ipsum reuertor. primum habui semper sodales. sodalitates autem me quæstore constituta sunt, sacris Ideis Magnæ matris acceptis. epulabar igitur cum sodalibus, omnino modice, sed erat quidam feruor etatis, qua progreidente, omnia fuit in dies mitiora. neque enim ipsorum coniuiorum delectatione voluptatibus corporis magis, quam cœtu amicorum, & sermonibus, metiebar. bene enim maiores accusationem epularem amicorum, quia vita coniunctionem habere, coniuium nominarunt, melius, quam Graci, qui hoc idem tum compotationem, tum concenationem, vocant: ut, quod in eo genere minimum est, id maximè probare videantur, ego vero, propter sermonis delectationem, tempestiuſis quoque coniuijs delector, nec cum equalibus solum, qui pauci iam admodum restant, sed cum vestra etiā estate, atque vobis cum habeoq. senectutem magnam gratiam, que mihi sermonis auditatem auxit, potionis, & cibi sustulit. quod si quem etiam ista delectant, ne omnino bellum indixisse videar voluptati, cuius est etiam fortasse quidem naturalis motus: non intelligo, ne in ipsis quidem voluptatibus ipsis carere sensu senectutem. me vero & magisteria delectant, à maioribus instituta, & is sermo, qui, more maiorum, à summo magistro adhibetur in poculo: & pocula, sicut in Symposio Xenophontis, minuta, atque rorantia: &

refrigeratio aestate, & vicissim aut ignis hibernus: quæ quidem etiam in Sabinis perseguis soleo: coniuiumque vicinorum quotidie compleo: quod ad multam noctem, quam maximè possumus, vario sermone producimus. At non est voluptatum tanta quasi titillatio in sensibus. credo: sed nec desideratio quidem: nihil autem moleustum, quod non desideres. Bene Sophocles, cum ex eo quidam, iam affero state, quereret, uteretur ne rebus Venereis, Diis meliora, inquit: libenter vero isti, sicut à domino agresti, ac furioso, profugi. cupidis enim rerum talium odiosum fortasse, & molestum est, carere: satiatis vero & expletis iucundius est carere, quam frui. quamquam non caret is, qui non desiderat. hoc ego, non desiderare, dico esse iucundius.

## EXPLANATIO:

**H**AEC tam multa} Hæc, non est in decemnouem. VI-  
NOLENTIA, } que parit tremorem, rigorem, deliriū, vertiginē. Vinolentia: Ebrietate. de qua Seneca: Ebrietas vnius horæ hilarem insaniam, longi temporis trædio pensat. CR. V-  
DITATE, } quæ ex ciborum copia oritur. Varro in Satyris Menippeis apud Agellium ait, πίπανον cum μῆτρᾳ societatem insidam esse, πίπανα autem bellaria vocat. hinc capit is graue do, stupor ingenij, distinctio ventris, nonnumquam etiam obstructiones hepatis oriuntur, apoplexiæ adiutum parantes. IN SOMNIIS, } quæ multa gignuntur ex crapula. Plinius inter cetera Ebrietatis incommoda etiam furiales somnos, & inquietem nocturnam recenset. CARET etiam vinolentia, & cruditate: Caret & vin. & crud. vnuſ. Caret etiam ergo vin. & crud. duo. Caret ergo etiam vin. & crud. quattuor. Et, non est in vno. Caret ergo vin. & crud. octo. quorum vnuſ. Igitur, pro Ergo. Caret igitur vin. crud. vnuſ. Quatuor mendosæ habent, crudelitatem. ET INFOMNIJS: Et insomnia, Lambinus. Et in somnio, tres. Non facile obſſimus: ergo obſſisti

potest: sed cum labore, difficultate, molestia. DIVINE enim Plato} Diuinus, vnum. Diuin, vnum. Cyrillus lib. iix. contra Julianum apostatam non longè Platonem à Christianismo abesse indicat. Cicero Platonem Philosophorum Deum appellat. de quo vide D. Aug. contra Pelag. lib. iv. Plutarchus οὐτιστὸν αἰωνῖς, Platonem οὐποντὸν appellat. Scribit D. Hieron. adu. Iouinianum lib. i. Speusippus, Clearchus, & Anaxili de auctoribus, Platonis matrem Perictionem phantasmatem Apollinis oppressam, & sapientiae principem non nisi de virgine editum. ESCAM malorum appellat voluptatem, } Δέλασθη κακῶν. Plautus Merc.

Voluptas est malorum esca, quod ea non minus homines,  
Quām hamo capiantur pisces.

Vide Sextum Empiricum Pyrrh. lib. iii. cap. 23. & Plut. in Catone. CAPIANT VR, } per imprudentiam. considerant enim suavitatem mox peritaram, noxam diu duraturam non vident. MODICIS tamen delectari potest. } omnes scripti libri, Modicis tamen cōiuīis delectari potest. Vnus, Moderatis. Vnus, Solet. Duo. Tres addunt post Coniuīis, l'otatio-nibus. DELECTABAT VR cereo funali, & tibicine: } alij, Crebro funali, veteres libros fecuti. Ego, Cereo, ex duobus meis scriptis. (duo alij, mēdōsē, Credo) primum enim, cūm dixerit, A cena redeuntem sēnem videbam puer, apte non subiungitur, Delectabatur crebro funali. cūm illud ipsum tempus designetur, quo post cenam domum redibat. Deinde locus Valerij Max. lib. iix. cap. 6. perspicuē demonstrat, Cereum funalem fuisse. Quotiescumque, inquit, epulaturus erat, ad funalem cereum, praeante tibicine, & fidicine, à cena domum reuerti solitus est. De vir. ill. Epit. Liu. lib. xvii. Florus lib. ii. cap. 2. Silius Italicus lib. vi.

Iustum Sacraনa duebat cæde triumphum,  
Aequorum iuxta decus, & nauale trophyum,  
Rostra gerens niuea surgebat mole columna,  
Exsuvias Marti, donumq. Duilius, alto  
Ante omnes mersa Pœnorum classe, dicabat:  
Cui nocturnus honor, funeralia clara, sacerq.  
Post epulas tibicen adest, castofq. penates  
Insignis lati repetebat murmure cantus.

Statua præterea illi imposita est: de qua Plin. lib. xxxiv. cap. 5.  
AD meipsum reuertor. } Ad meipsum iam reuertar, sexdecim:  
quorum

quorum vnum, Reuertaz : alter, Reuertor. Reuertar, quatuor. SODALITATES } nō mortalia. Sodalium enim erant epulæ quod sequitur. Arist. in Pol. & apud Cretas, & apud Spartanos docet eas fuisse. sic locutus Trogus lib. 37. De sodalicijs, & soda liciis epulis, Arist. in Polit. MAGNAE MATRIS } quæ Pesinunte anteā simulacrum, ac templum habuerat. Sacris Idæis, dixit, ab Ida, Phrygia monte, vnde etiam ipsa Idæa mater dicitur. Si-cut Berecynthia, à Berecyntho, monte, velopido, vbi coleba-tur. Cybele, à rotunditate, à cubo, vt Martiano Capella, & Cælio Rhodig. placet Rhea, θεία πίειν. Opis, quod opem ferat frugibus. Vide de ea Diodorum lib. iv. & Luc. lib. 2. Quo modo Magnæ Matris idolum Romam aduenctum sit, Liuius lib. xxix: Ouid. Fast. iv. Silius lib. xvii. Plin. lib. xix. cap. 3. De ade illi in Palatio consecrata Liuius lib. xxxvi.

Placet hoc loco veteres quasdam Inscriptiones de Cybele adscribere, non ingratas fortasse futuras.

*In edibus Cardinalis Cesii.*

## M. D. M. I. ET. ATTINIS

Hic est ipsius Matris Deum simulacrum, quod à Leonibus vechitur, capite turrito, tympanum sinistra, spicas dextre te-nens. Adstat Attis mitratus, barbaris caligis induitus, altera item tympanum, altera verò clauam tenens, ac pinui innixus,

L. Cornelius. Scipio. Orcitus  
V. C. Augur. Taurobolium  
Sive . Criobolium . Fecit.  
Die. IIII. Cal. Mart.  
Tusco. & Anullino. COSS.

In dextro latere faces duas, cum crotalis annoxis insculptæ sunt. In sinistro verò fistulae.

In Sancto Nicolao in Calcaria, retro Cæsarinos, in Ara grandi, in duas partes fissâ.

ΜΗΤΕΡΙ ΤΗ. ΠΑΝΤΩΝ. ΡΕΙΗ. ΤΕΚΕΙΣΙΝ ΤΕ  
 ΓΕΝΕΘΑΙΣ  
 ΑΤΤΕΙ. Θ. ΤΤΙ η ΤΩΙ. ΚΑΙ. η ΥΝΙΕΝΤΙ. ΤΟ.  
 ΠΑΝ  
 ΤΗΙ. ΠΑΣΙΝ. ΚΑΙΡΟΙΜ. ΘΕΜΕΡΙΤΕΡΑ.  
 ΠΑΝΤΑ. ΦΤΟΝΤΙ  
 ΚΡΙΟΒΟΛΟΤ. ΤΕΛΕΤΗΣ. ΗΔΕΤΙ. ΤΑΤΡΟ-  
 ΒΟΛΟΤ  
 ΜΤ η ΤΙΠΟΛΟΗ. ΤΕΛΕΤΗΙΝ. ΤΟΤΤΟΝ.  
 η ΤΗΕΘΗΚΑΤΟ. ΒΙΨΩΝ  
 ΔΙΠΡΟΝ. ΑΠΟΛΑΠΙΝΟΗ. ΘΕΙΟΝ. ΕΧΙΝ.  
 ΕΠΙΚΑΙ-Ν.  
 Petronius Apollodorus . V . C .  
 Pontif . Major . xv . viv . sacr . fac .  
 Pater . Sacr . Dei . Inuicti . Mithra  
 Taurobolio . Ciroboliq . percep To  
 Vna . cum . R VF . Volusiana . C . F . con  
 iuge . xvi . Kal . Iulias . DD . NN  
 Valentiniāno . & . Valente . Avgc . iii . coss .  
 Aram . dicauit .

In dextro aræ latere, Cybele turrita cum tympano à Leōibus vebitur . Prope pinus est , & subtus taurus .

In sinistro latere mithratus Attis , bis cinctus , dextra Fistulas , & Crotala , sinistra Pedum tenens . Superius est tympanum . A tergo ipsius stat Pinus , & sub ea Aries . Subtus deinde Aries , seorsum .

A tergo Aræ , sunt Tædae transuersæ . Lituus , Patera , Guttus , sive Vrceus , & Lympuum .

*Superiores versus Graci sic Latinè redduntur .*

*Cantorum Cybele genitrici hominūmq . Deūmq .  
Excelſiq . Altis , quem nihil orbe latet .*

*Qui facit , et pura celebremus mente quotannis  
Criobolfestos , T auroboliq . dies .*

*Qui cognomen habet de munere Apollinis , aram ,  
Sacrorum Antistes , marmoream hanc statuit .*

*In Sancto Michaelae in vaticano .*

Tertia huius generis ara sub altari quodam posita est : cuiusprima facies , qua inscripta erat , contra parietem versa

est atque ideo legi nequit . In parte auerla , sunt Fases duæ arietes , vt supra , Lanx , Poculum , & Lituus , & aliud instrumentum , in formam Cochlearis .

In latere dextro , Pinus , sub qua Taurus : appendent Tympanum & Fistulae .

In laterc sinistro , sub quo Aries : appendent , Mithra , Pedum , & aliud Lanci non absimile .

Et :

C I I M T

P A T O R I B U S . S u i s

Ceionius .	Rufius .	Volusi
anus , V .	C .	& inlustris
Ex . Vicario .	Asiae , & , Ceio	
Rufi .	Volusiani V . C .	
& inlustris .	Ex . Praefecto præ-	
Toriorio .	Praefecto . Vrbis	
Licecinæ .	Lollianæ , clarissi	
mæ , & .	inlustris . Femine	
Deæ .	Iidis . Sacerdotis . Fil	
ie , nato , viginti , annis ,	ie , Exe	
Ex eis .	Taurobolii vi . Aram constituit	
	& consecrauit . x . Kal . i v N . D . N . Valen-	
	TINIANO . AVG . FIL . ET IN NEOTERIO	

In latere dextro , Aries , sub Pinu , à qua Tympanum , Fistulae , & Crotala dependent .

In sinistro latere Bos , sub altera Pinu , à qua pedum , & alia , & Fistula dependent .

A longo Faces , vt supra : supernæ , Arietes quinque , singuli scilicet in singulis angulis , atq . vnu in fronte , maestati iacent . In domo Angelis Colotij , magna Aræ superiori similis , sed multo barba- riori & sculptura , & scriptura .

M D M I D A E T A T T I D I M I N O T Y R A N O .  
N O B I L I S S I .

.	.	.	.	.
.	.	.	.	.
.	.	.	.	.
.	.	.	.	.
.	.	.	.	.

Et Venerandam .

Augentur Meritis Simbola Tauroboli  
 Ruf Cæsion Cæ Sabini  
 Pul Pr Q Pater facror Inuict Methræ Tauroboli  
 M D M L D & Attidis Minoturani & Aram. LIII id Marbo  
 Gratiano V. & Merobaude consulibus dedicabit  
 Antiqua Generose domo cui regia Vesta  
 Pontifici felix sacrotomilitat igne

Idem Augur triplicis cultor Venerande Diana  
 Persicidicq. mithræ Antifes Babilonie templi  
 Tauroboliq. simul Magni Dux mistice sacri

In dextro latere, Bos, sub Pinu, è qua Fistulæ, Mithro, Crotalæ  
 & Pedum, pendent.

In sinistro latere, Aries, sub Pinu.

A tergo, Faces, & sernum.

Supernè, Arietes quinque, ut supra.

*Ex armis reperta propæ D. Marie Trans Tib. in domo  
 Pistoris cuiusdam.*

Præsentiaz  
 Matris. Deum  
 P. Septimius  
 Felix  
 Ob coronam  
 Millesimi  
 Vrbis anni

*In Platea D. Petri, in Sacello Clav. Pontificis.*

Dis magnis  
 Vpius, Egnatius. Fauentinus  
 V. C. Augur. P V B. P. R. Q.  
 Pater & Hierocryx. D. S. M. I  
 Archibucolus. Dei. Liberi  
 Hierofanta. Hecatae Sa  
 cerdos. Isidis. percepto  
 Taurobolio. Crioboliisque

Tibis

Idibus. Augustis. D.D. N.N.  
 Valente. Aug. V. & Valentina  
 no. Augg. consss. feliciter  
 Vota. Fauentinus. bis. deni  
 suscipit orbis  
 Vt. mactet. repetens. aurata  
 fronte bicornes

In dextro latere est Pinus, à qua Crotala, & Fistulæ compa  
 tæ pendent, &c subtus adstat Aries alligatus.  
 In sinistro latere, item Pinus, à qua pedum, & Fistulæ duæ  
 etiam pendent, & inferius Taurus adstat.

*In horto Carpini.*

M D . M  
 I D  
 A T I L I A  
 N A

*In Sancta Lucia in Silice, in capite Sabure.*

D I S

Magnis  
 Matri. Deum. & Attidi. Se  
 xtilius. Agefislaus. Ædefisius  
 V. C. Caufarum. non. ignobi  
 lis. Africani. Tribunalis. ora  
 tor. &. in. confistorio  
 Principum. item. Magiste  
 r. libellorum. &. cognition  
 Sacram. Magister. Epistu  
 lar. Magister. Memorizæ  
 Vicarius. Praefector. per  
 Hispanias. Vice. S. I. C. Pa  
 ter. Patrum. Dei. Solis. Inqui  
 eti. Mithræ. Hierofanta.  
 Hecatae. Dei. Liberi. Archi  
 bucolus. Taurobolio.

Crioboliq. in . . .  
num . renatus . Aram . sacra  
uit . DD . NN . Valen  
te . V . & Valentiano  
Iun. . Augg. . cons . Idib.  
Augustis.

*In domo Podocatharorum, ad Cloacam D. Lucie.*

Siluano . . . Dendrophoro . . . Sacrum

M. Poblicius. Hilarus. Margar. Q. Q. P. P. cum liberis  
Magno. &. Hermogiano. Dēdorphor Is. M. D. M. suo. fecit

*In domo Cardinalis Cefii.*

Qui. colitis. Cybelen. & . qui. Phryga . plangitis. Attin  
Dum . vacat . & . tacita. Dyndima. nocte . silent  
Elete . meos . casus . nōn . est . alienus . in . illis  
Hector . & . hoc . tumulo. Mygdonis . vmb . tegor  
Ille . ego . qui . magni . parvus . cognominis . heres  
Corpore . in exiguo . res . numerosa . fui  
Flectere . doctus . equos . nitida . certare . palæstra  
Ferre . iocos . astu . fallere . nosse . fidem.  
At . tibi . dent . superi . quantum . Domitilla . mereris  
Quæ . facis . exigua . ne . iaceamus . humi

**S E D erat quidam feruor atatis:** Sed erat quidem feruor ex-  
tati, tredecim. Sed erat tum quidem feruor at. unus. Sed erat  
tunc quidam feruor at. duo. Sed erat feruor at. unus. Sed erat  
quidam feruor, tres. Sed quidam feruor at, unus. Mi-  
TIORA. } vt poma. BE NE enim maiores } sex addunt, Nostrī.  
ACCUBATIONEM } Accubationem, legit Nonius. & ita  
est in duobus meis. CONVIVIVM } lib. 9. Fam. in epi-  
stola ad Pætum. Macrobius. Sat. lib. 1. cap. 1. TEMPESTIVIS  
quoque conuiuiis delector, } Quoque, abest à quattuor meis.  
Tempestivis quoque conuiuiis delector: Tempestivis, ad mo-  
dum temporis pertinet, quæ nec ante inciperent, nec se-  
rius desinerent, quā opus erat, lata quidem, sed moderata,  
quibus Catonem censorium, grauem, & sapientem virum, ex-

tremo

trema senectute aliōsq. bonos viros accumbere turpe non es-  
set. nam, quæ in multam noctem præducerentur, intempesti-  
ua dicebantur. Pro Archia: Quis tandem me reprehendat, si,  
quantum alij tribuūt tempestiuis conuiuiis, quantū, aleq., quā-  
tum pilæ, tantum mihi egomet ad hæc studia recolenda sum-  
psero? Ad Att. ep. 1. lib. 9. Audio, bonis viris hanc cunctationē  
nostram non probari, multaq. in me, & seuerè in conuiuiis  
tempestiuis quidem disputari. Ibidem, ep. x 1. Viris bonis mé  
non nimis excuso, quas enim eos cenas & facere , & obire,  
scripsit ad me sextus: quā lautas quā tempestiua? In Ver-  
rem lib. 111. Statuitur Lollius in illo tempestiuo gladiatorum  
conuiuiu. Pro Murena: Nemo ferè saltat sobrius, nisi fortè in-  
sanit, & neque in solitudine, neque in conuiuio moderato, at-  
que honesto, tempestiuo conuiuii, amceni loci, multarum de-  
liciarum comes est extrema saltatio. Tacitus lib. x 1. Claudioius,  
domum regressus, & tempestiuis epulis delenitus, vbi vino  
incaluit, iri iubet, nunciariq. miserae, dicendam ad caussam  
postera die aedesset. Idem lib. xii x. Legati, tribuniq. ex mo-  
ribus imperatorum, seueritatem amulantur, vel tempestiuis  
conuiuiis gaudent. perinde miles intentus, aut licentior. In-  
tempestiua contrario sensu, dixit Curtius lib. vi. Ut primùm  
instanfibus curis laxatus est animus, militarium rerum, quām  
quietis, otīque patientior, excerpere eum voluptates, &  
quem arma Persarum non fregerant, virtus vicerūt. intempe-  
stiua conuiuia, & perpotahdi, perwigilandiq. insana dulcedo,  
ludiq. & greges pellicum, omnia in externum lapsa sunt mo-  
rem. Et infra: Cūm intempestiuis cōuiuii dies pariter noctes:  
consumeret, satietatem epularum ludis interpolabat. Sueto-  
nius quoque in Caligula, Senatum, inquit, populūmq. graui-  
simo obiurgauit edicto, quod, Caflare præliante, & tantis  
discriminibus obiecto, intempestiua conuiuia circum &  
theatra, & amenos secessus celebrarent. Nemo igitur, vt pu-  
to, dubitauerit, quin Tempestiuis conuiuiis oponantur In-  
tempestiua: & hæc in malam, illa in bonam partem accipian-  
tur, alioqui contraria non essent. Quod si tempestiua proban-  
tur, sine dubio locus pro Murena iam recitatus emendatio-  
nen requirit. ibi enim Tempestiuum conuiuium, vt mode-  
rato, atque honesto contrarium, ponitur. itaque sententiam,  
ipsāmq. vocabulorum vim secutus, malim legere, Intempe-  
stiui cōuiuij. Similiter ad Atticū: Quā lauta? quā intempestiua?

non, Tempestiuas. Nam in Verrem: In illo tempestiuo gladiatorum conuiuio: ironia est, pro, minimè tempestiuo. Ag vereor, ne duo Taciti loca labes eadem inquinauerit. de quo homines eruditii iudicabunt. Locus quidem hic in Catone, cuius occasione tam multa diximus, mendo vacat, & verbum, Quoque, hoc significat: quamuis hilariora sint, nec cœsorium fortasse hominem satis decere videantur, itaque rectè licet dicere, tempestiuis in conuiuio hilaritatem quidem esse, immodicas tamen potationes, & cetera, quibus intempestiuas non carent, abesse. *Quy pauci iam admodum rstant,* { Iam, non est in *acto*. HABEO senectuti magnam gratiam, } tantum abest, ut incusem. *BELLVM indixisse* } renunciasse. NATURALIS motu: } Modus, vnde dicim. Mous, duo. MAGISTERIA } συμποταρχία: non is, qui conuiuas invitauit, qui συμποτος ἄρχει dicitur, sed qui in communis conuiuio vel forte, vel suffragio electus, conuiuum administrat. Pollux lib. vi. cap. i. Vide Horatium Od. 4. lib. i. qui vocat Regnum vini, ibique Acronem, & Porphyriōnem: qui ἀρχοταρχοι appellant, quasi principatum bibendi. A SVM MO magistro } Lambinus delet, Magistro, sine causa. Dicebantur antiquitus, Modiperatores, quasi modum imperantes. Varro lib. x. x. rerum humarum, apud Nonium. Athenaeus lib. x. scribit eos à Græcis. tiam ινόπτες, & ὄφθαλμοι dici. AD HIBET VR in poculo: } more, ut opinor, à Græcis deducto. nam Laertius ινωπίαις οὐγήστει, idest, habitas in poculo narrationes, in Arcelis nominat: Athenaeus autem ινωπάτειοι λόρης. quod enim, In poculo, Cicero dixit, Plutarchus, εἰπώντι, ut in Cæsare: Λέγει πάτητοι κύλικι τρόποντες, ποτε αρχοταρχοι διάβατο. Ponebat igitur summus conuiuij magister, qua de re sermonem haberi vellet in poculo: cùque ipse de re primus omnium conuiuarum disputabat. Hunc morem Octavianus Ferrarius in pulcherrimo, veréque aureo de disciplina Encyclo libello, & primus, & eruditè admodum ostendit. In poculis, quatuor. Et pocula, sicut in Sympoſio Xenophontis, minuta, atque rorantia: } Rorantia pocula vocat quæ vini parum capiunt: non vt implat conuiuas ad faciem, & planè sitim extinguant, sed vt leuiter tamquam irrorare videantur. quod fit paruis poculis, quæ Minuta dixit: quod Xenophon, Μινύτης κύλικι, & quod Cicero, Rorantia, ille, Επιγενειον, hoc tantum differunt, quod

quod Cicero, Pocula rorare, Xenophon Pueros ait poculis irrare. quod tamen id est, actionem enim ad instrumentum transferri, nihil haber incommodi, neque id sermonis consuetudo respuit. Athenaeus lib. xi. locum Xenophontis recitat. REFRIGERATIO estate, } Refrigeratio in estate, octo. IN Sabinis } vbi villa habuit, simpliciter, & rudi forma aedificata. Plutarchus. CONVIVIUM Q. yicinorum } nam Mensam maximè amicorum parentem, ac procreaticem existimauit. Plutarchus. COMPLETO: } Complector, esse in vetere libro, scripserunt eruditiviri. VARIO sermone } Qualis conuiuiorum sermo esse debeat, vide Plut. in Cleomene. IAM affecto estate, } sic malo, quam, quod alij, Confecto estate: ut extrema senectus non ostendatur: cùm de media loquatur. Valerius Max. lib. 4. cap. 3, hanc ipsam historiam recitans, Aestate iam senior, dixit. (Vide & Plut. de rep. à senibus administranda.) Confirmante opinionem meam nouem ex meis libris. Iam confecto estate, vnuſ. Aestate iam affecto, vnuſ. Effecto estate, tres. Effecto estate, duo. Effecto estate, vnuſ. Affecta estate, vnuſ. Effect. estate, vnuſ. Iam quidem confecto estate, vnuſ. Iam affecto, vnuſ. DIC meliora, } quod, in spectis Platone Polit. i. & Plutarcho in Catone maiore, mihi placebat, vt legeretur. Dic meliora, non, Dij meliora, cùm in Græco sit, Εὐρύμενος, vel, Εὐρύμηνος: id octo meorum librorum comprobari auctoritate, mirabiliter gaudeo. sic itaque imprimi volui. Similiter Comici poëtae dicunt: Bona verba, quælo. Non negauerim, Dij meliora, visitatum fuisse, nec aduersari sententiae: sed Græco verbo, quod hic Cicero vertit, non respondet. Philip. 10. Dij meliora, inquires. Dij vero meliora, vnuſ. Ho g ego, non desiderare, } nō, Ego, non est in duobus. Ergo, non desiderare, tres. Ergo hoc non desiderare, nouem. Ergo haec non desiderare, quatuor. Ergo non desiderare, qo, vnuſ. Dico eff. iucundius. } Dico esse iucundius, quam frui, tres. Dico iucundius, quam desiderare, vnuſ. Ex qua varietate perspicue appetet, omnia esse glossemata. nō, Esse, non est in duobus.

## C I C E R O.

**Q** Vōd si istis ipſis voluptatibus bona atas fruitur libentius: primum parvulis fruitur rebus, et

*diximus: deinde iis, quibus sene&ctus, si non abunde potitur, non omnino caret. vt Turpione Ambiuio magis delectatur, qui in prima caue spectat: delectatur tamen etiam, qui in ultima: sic adolescentia, voluptates propè intuens, magis fortasse latatur: sed delectatur etiam sene&ctus, procul eas spectans, tantum quantum sat est. At, illa quanti sunt, animum, tamquam emeritis stipendiis libidinis, ambitionis, contentionis, inimicitiarum, cupiditatum omnium, secum esse, scimusque, ut dicitur, vivere: si vero habet aliquod tamquam pabulum studij, atque doctrina, nihil est otiosa senectute incundius. Mori videbamus in studio dimidiendi penè celi, atque terræ Gallum, familiarem patris tui, Scipio. quoties illum lux, noctu aliquid describere ingressum, quoties nox oppresuit, cum mane ceperisset? quam delectabat eum, defectiones solis, & lune multò nobis ante predicere? Quid in lenioribus studiis, sed tamen acutis? quam gaudebat bello suo Punico Nenius? quam Truculento Plantus? quam Pseudolo? vidi etiam senem Liuum: qui, cum septem annis ante, quam ego natus sum, fabulam docuisse, Centhone, Tuditanoque consulibus, usque ad adolescentiam meam processit etate. Quid de P. Licij Crassi & Pontificij, & crudis uris studio loquar? aut de huīus P. Scipionis, qui his paucis diebus pontifex maximus factus est, statq. eos oēs, quos cōmemorauit, his studiis flagrātes senes vidimus. M. verò Cethegū, quē redē sua de medullā dixit Ennius, quātostudio exerceri in dīcēdo videbam' etiā sene? Quā sūt igitur epularū, aut ludorū, aut scortorū voluptates cū his voluptratibus cōparādi?*

## EXPLANA TIO.

*BONA etas} adolescentia. Contra, Mala etas, sene&ctus. Vi-*  
*de Nonium. Sic Demosthenis interpres: H'λικία ἡ μὲν να-*

*τέγρες απένος, η τεττή δη πάντα συνάμεσα γεγένεν. PARVULIS.} siccōnes mei, duobus exceptis, in quibus, Paruis. Lambinus, Prauis. TURPIONE Ambiuio } nominatur à Tacito in dialogo de oratoribus. CAVEA } theatro. Virg. 8.*

*Confessu caue magnis Circensibus astis.*

*Cavea, temporaneū theatrum. SPECTAT, } deest in vno. DELECTAT VR tamē etiā, } Delectatur & tamē, vnuſ. rō, Dele-  
ctatur, nō est in quatuor delectabitur, vnuſ. VOLVPTATES prop̄ intuens, } Nonius legit, propter: quē sequi non placuit: tum quia veteres omnes libri, Prope, habent: tum etiam, quōd Propter non accipitur absolute, sed semper cum accusandi casu iungitur: vt in omnibus exemplis. hic autem poneretur absolute, contra consuetudinem. Lib. i. de Rep. Eum quoque vt salutauit, propter Tuberonem iussit assidere. In Pisonem: Mihi hic vir clarissimus, qui propter te sedet, L. Gellius. Sallustius, Catilina: Ipse cum liberis, & colonis propter Aquilam assistit. Eas spectans, } Aspects, vnuſ. Et, duo. nō Eas, deest in duobus. Eam, duo: & supra Voluptratem, iidem duo. LIBIDINIS, } in adolescentia. AMBITIONIS, } in virilitate. CONTENTIONIS, inimicitiarum, } in reip. administratione. CUPIDITATVM omnium } tota vita. CONTENTIONIS, } Contentionum, decennouem. GAL-  
LVM, } Sulpicium Gallum. lib. i. & in Lælio, in extremo: Liuius lib. x līv. Plut. in Paullo Aemilio, Val. lib. viii. cap. 2. Plin. lib. 2. cap. 12. Quintil. lib. 1. cap. 17. Caium, vnuſ. PATRIS tui, } Paulli: cuius in exercitu, bello Macedonicō, tribunus militum fuit. Liuius lib. xliii. IN lenioribus studiis, } Poēticam Mathematicis post habet. PLAVTVS? } vixit igitur Catonis etate. LIVIVM Andronicum. SEPTEM annis ante, } Sex annis ante, quindecim. Ita emendandum in Bruto, & in Tusci. CRASSI } hic est Crassus Mucianus Diues. lib. 1. & 3. de Or. P. SCIPIONIS, } hic est Scipio Nasica Corculum, de quo pont. max. lib. 3. de Or. M. VERO Cethegū, } vide lib. de claris orat. SVADAE medullam } redit, in Bruto. mī tūcavw ῥώv ὀρεῶv Euripides. Suadela, Horatius:*

*Sed bene nummatum decorat Suadela, Venusque.*

*Sunt autem hi versus Ennij apud Cic. in Bruto:*

*--dictus ollis popularibus olim,*

*Qui cum viuebant homines, atque æuum agitabant,  
Flos delibutus populis, & Suadæ medulla.*

*Vide Politianum Miscell. cap. x. cxi.*

**A**T que hac quidem studia doctrina prudentibus, & bene institutis pariter cum etate crescunt: ut honestum illud Solonis sit, quod ait versiculo quadam, ut ante dixi, sc̄nescere se multa in dies discentem: qua nunc ad voluptutes agricolarum: quibus ego incredibiliter delector: qua nec vlla impeditunt sene&ctutem, si mibi ad sapientis vitam proximè videntur accedere. habent enim rationem cum terra: qua numquam refusat imperium, nec umquam sine usura reddit, quod accepit, sed alias minore, plerumque maiore cum feno. quamquam me quidem non fructus modò, sed etiam ipsius terre vis, ac natura delectat, qua cum gremio mollito, ac subacto sparsum semen excepit, primum id occatum cohibet: ex quo occasio, qua hoc efficit, nominata est: deinde tepefactum vapore, & complexu suo diffundit, & elicit berbescentem ex eo viriditatem: qua, nixa fibris stirpium sensim adolescit, culmoq. erecta geniculato, vaginis tam quasi pubescentis includitur: ex quibus cum emerit fundit frugem, spica ordinis fructam, & contra aiuum minorum moris munera vallo aristarum. Quid ego vitium satius, ortus, incrementa, commemorem? satuari delectatione non possum: ut mea sene&ctutis quietem, oblectamentumq. noscastis. Omitto enim vim ipsam omnium, qua generantur è terra, qua ex fici tantulo grano, aut ex acino vina-geo, aut ex ceterarum frugum, ac stirpium minutissi- mis seminibus tantos iruncos, ramosque, procreat: malleoli, plantæ, farmenta, viu iradices, propagines nonne ea efficiunt, ut quemuis cum admiratione delectem?

lectentis vitis quidem, qua natura caduca est, nisi fulta est fertur ad terram: eadem, ut se erigat, claniculis suis, quasi manibus, quidquid est nacta, complectitur: quam, serpente m̄ultiplici lapsu, & erratico, ferro amputans coercet ars agricolarum, ne siluecat farmentis, & in omnes partes nimia fundatur. itaque ineunte vere, in iis, qua relictâ sunt, exsistit tamquam ad articulos farmentorū ea, qua gemma dicuntur: à qua oriens sua se ostendit: qua & succo terrae, & calore solis augescens, primo est peracerba gustatu: deinde maturata dulcescit: vestitaque pampinis nec modico tempore caret, & nimios solis defendit ardores: qua quid potest esse cùm frumentu latius, tum aspectu pulchrior? cuius quidem non utilitas me solum, ut antè dixi, sed & cultura, & natura ipsa delectat, adminiculorum ordines, capitum iugatio, religatio, & propagatio vitium, farmentorū ea, quam dixi, aliorum amputatio, aliorum immisio. Quid ego irrigationes, quid agri foßiones, repastinationesque proferam, quibus sit multa terra fecundior? Quid de utilitate loquar stercorandi? dixi in eolibro, quem de rebus rusticis scripsi: de qua donatus Hesiodus ne verbum quidem fecit, cùm de cultura agri scriberet. at Homerus, qui multis, ut mibi ei detur, antè seculis fuit, I. aertem, lenientem desiderium, quod capiebat è filio, colentem agrum, & eum stercorantem facit. Nec verò segetibus solum, & pratibus, & vineis, & arbustis res rustica late sunt, sed horritis etiam, & pomariis, tum pecudum pastu, apum ex aminibus, florum omnium varietate. nec conditiones modo delectant, sed etiam insitiones: quibus nihil inuenit agricultura sollertia.

## EXPLANATIO.

**P**RUDENTIBVS, & bene institutis } Isocrate in Nicocle.  
AD sapientis vitam proxime videntur accedere. } Columella,  
Rem rusticam ceteri viuendi rationibus praeferens, proxime  
sapientiam locat eiusq; quasi consanguineum facit. HABENT  
rationem cum terra: } est illis negotium cum terra. idest, terra  
pendent, ep.5. ad Att. lib. 2. IMPERIUM, } Impendium,  
legendum putabat Pater. vt ad Att.lib.6.epist.1. & in bruto. &  
Varro lib.4. Vtura, inquit, quod in sortem accedebat. Impen-  
dium appellatum. GREMIUS mollito, ac subiacto } compresso.  
SPARSVM semen exceptit, } Acceptit, quinque. Accepterit, vnum.  
Accipit, quinque. Recipit, duo. Excipit, vnum. OCCAECAT-  
V M } ita legendum. & ita videtur Nonius legisse. COM-  
PLEXUS suo } Compresso, undecim. Compressum, septem,  
mendosè. Cum pressu, vnum, mendosè. Comprehensum, vnum,  
mendosè. Oppressum, vnum. ELICIT &c. } vide, quān elegan-  
ter ea, quā ad agriculturam pertinent, explicet: cūm Latinæ  
orationis facultatē, quocumque vellet, ingenij præstantia, tra-  
ducere. CVM Q. } Calamoque, apud Nonium. sed glossa  
est ad. Culmo. sic enim interpretatur Seruius Georg. I. Culm-  
inus, inquit, dicitur ipse calamus. VAGINIS iā quasi pubeſcē } vide Var. lib. I. cap. 48. EMER SIT, } Emergit, sexdecim.  
FRVGEM, structam, } Fruges, Structas, in Nonio. SPICAE } Spici, legit Nonius. quo modo est in quattuor meis. In Arato.  
Et Varro Lege Mænia: Neque in bona segete nullum est spi-  
cum nequam, neque in mala non aliquid bonum. MOR-  
SUS } Morsum, decimi. MVNITVR vallo aristarum. } Plin.  
lib. 18. cap. 7. REQUIETEM, } sic legit Priscianus lib. 6. sicq.  
est in duobus meis. Quietem, sex. Reliqui, Requiem. EX  
acino vinaceo, } Vinacio, tres. Vinatico, duo. Vineaceo, duo.  
Ex acino vinacei, legi Langius. MALLEOLI. } nouelli  
palmites, innatis prioris anni flagello. Colum. libro III.  
cap. 6. Plin. lib. x VII. cap. 21. PLANTAE, } surculi recens  
consisti. SARMENTA, } non inutilia putamina, & quā  
vitibus tanquam superflua ligna secantur. VIVI RADICES, } euvivae, idest plantulas cum sua radice in aliud  
solūm translatas. Vites, radices, omnes: uno excepto, in  
quo. Radices, vites. Alias, Vites traduces. VT quemvis cum  
admirazione delectent? } sic omnes mei, duobus exceptis,

in quibus tñ Cūm non legitur. CADYCA } ad casum  
prona. CLAVICVLIS } Claviculas, fem. gen. dixit Plini-  
nus proœmio lib. xxiii. QVASI manib, } quia haber-  
& brachia, & capita, & cornua. NE filuscet } Columel-  
la lib. v. Me longus docuit vsus, multò utilius esse primo  
quoque tempore falcam vitibus admouere, nec superuca-  
neis pati filuescere: sed eā quoque, quā primo summittetur,  
materiam ferro coercendam censeo, vsque in alteram, vel ter-  
tiā gemmam, quō robustiores palmites agat. INEVNTE ve-  
re, } Virg. Ge. II.

Parturit almus ager, Zephyriq. tepentibus auris  
Laxant arua sinus, superat tener omnibus humor,  
Inq. nouos soles audent se gramina tuto  
Credere, nec metuit surgentes pampinus austros,  
Aut auctum caelo magnis aquilonibus imbre:  
Sed trudit gemmas, & frondes explicat omnes.

Ouid. Fast. I.

Omnia tunc florent, tunc est noua temporis ætas.  
Et noua de grauido palmite gemma tumet.

Et IIII.

Nec Veneri tempus, quām ver erat, aptius ullum.  
Vere Nitent terræ, vere remissus ager.  
Nunc herbæ rupta tellure cacumina tollunt,  
Nunctumido gemmas cortice palmas agit.

SE ostendit: } Seſe, quatuordecim. GVSTATV, } Gu-  
stata vnum. Gustanti, vnum. Gustu, alias. Peracerba guſtatu: Theo-  
phr. de cauſis plant. lib. 6. cap. 7. Plin. lib. xv. cap. 27. sapores,  
omnibus succis communes, tredecim numerat. NIMIOS  
foliis defendit ardore: } Sic dicebant. Litus mare defendit, pro-  
arcet. Et Ennius Achille: Serua ciues, defende hostes, cūm po-  
tes defendere. Vide & Agellium de, Defendere. CVM fructu  
letius, tum aspectu pulchrius? } Varro lib. I. cap. 4. de Agricolis:  
Utilitas querit fructum, voluptas delectationē. ADMINICV-  
LORVM ordines, } vide Columellam lib. 5. cap. 2. & 3. CAPI-  
TVM iugatio, } Cōiugatio, tredecim. Vide Columellam lib. 4.  
cap. 16. & Plin. lib. 17. cap. 22. RELIGATIO, } alligatio.  
Cato cap. 33. Alligatioq. recte, dum ne nimium constringas.

Vide Columellam lib. iv. cap. 13. & 20. Palladium cap. 20. Februarij, Plin. lib. xvii. cap. 23. PROPAGATIO vitium. } Cato cap. 32. Columella lib. iv. cap. 15. & de arboribus cap. 7. Pallad. in Ebr. cap. 16. De propagine, vide Plin. lib. xvii. cap. 13. AMPV TATI O, } huc Pampinatio quoque referenda. Columella lib. 4. Palladius tit. 15. Febr. IMMISSIO. } hoc fit, quādo virga edita à matre sulco cōmititur. vide Columella, cap. de Arboribus 7. IRRIGATIONES. } Rigitis vites ali, scribit Plinius lib. xvii. cap. 26. Sed haec dicta in genere. AGRI fS-  
tiones. } hoc est, scrobes, & ablaqueationes. de fossura Columella de arboribus cap. 12. REPASTINATIONES. } Columella lib. iii. cap. 13. 15. & 16. & lib. xi. cap. 2. STERCORANDI. } Cato cap. 5. 29. & 36. Theophrastus lib. iii. Columella lib. 2. cap. 17. Plin. lib. xvii. cap. 27. Plin. lib. xvii. cap. 27. & lib. xix. cap. 23. Q V E M de rebus rusticis scripsi. } qui nunc extar. HOMERVS, qui multis, ut mihi videtur, ante seculis fuit. } est in hoc aliqua controuersia. vide Agellium lib. iii. cap. xi. & lib. xvii. cap. 21. Plin. lib. vii. Solinum cap. 53. Velleium lib. i. Dionē Chrysostomum in principio orat. de Regno, Ciceronem Tusc. i. Tzetzem in Lycophronem & D. Cyrillum in libro contra Julianūm Apostatani primo. Seneca inutile putat, querere, Homerus ne, an Hesiodus antiquior sit. Plutarchus in oratione Consolatoria Hesiodoni Homero, ut existimatione, ita arate posteriorem facit. DOCTVS Hesiodi. } humanae vita optimus consultor. Isocrates. LAERTEM colentem & grum. & cum stercorantem facit. } Homerus Od. a. non stercorantem, aīmā λιπάντα, ταχεία, σύρτα τὸ στον, id est, purgātem, & ablaqueantem arbores, inducit Laertem. Agros tamen Troiano sāculo a prīscis illis stercoratos indicat Odys. p.

-- ὅφ' αὐτὸν

δμῶς ὀσυνίτημα. } μέτα κομψήν αυτες.

Quam ab ijs curam ideo prætermissem, falso assertuerunt nonnulli, quod salubritati potius, quam fertilitati, & copia, cōfulerent. NEC vero &c. } rei rusticae partes, segetes, prata, vineæ, arbusta, horti, apum examina. PE CV DVM pafu, } Virg. Ge. iii. Columella lib. iii. & vii. AP V M examinibus, } Virg. Ge. v. Plin. lib. xi. cap. 5. Variò de re rust. lib. iii. cap. 16. Columella lib. x. à cap. xi. ad finem libri, Palladius lib. 4. cap. 37. & lib. v. cap. 8. Arist. de nat. animi. lib. v. cap. 21. & 22. Quintil. declam. pro paupere contadinitem. Examinibus florū &c. } vnuus

vnuus addit, Tum. alias, Et. CONSTITUTIONES, infistiones, } Constitutions, Infistiones, malè legit Nonius. AGRICULTVR A } Agricultra, vnuus. Agri cura, vnuus. Cultura agri, duo.

## C I C E R O .

P Ossum persequi multa oblectamenta rerum rusticarum: sed ea ipsa, qua dixi, fuisse sentio longiora, ignorceris autem. nam & studio rerum rusticarum proiectus sum: & senectus est natura lognacior: ne ab omnibus eam vitijs videar vindicare. Ergo in hac via Man. Curius, cum de Samnitibus, de Sabinis, de Pyrrho triumphasset, consumpsit extremum tempus etatis, cuius ego villam contemplans, ( abest enim non longe à mea ) admirare satis non possum vel hominis ipsius continentiam, vel temporum disciplinam. Curio, ad focum sedenti, magnam auri pondus Samnites cum attulissent, repudiati ab eo sunt. non enim, aurum habere, praelarum sibi videri dixit, sed ijs, qui haberet aurum, imperare poterat ne tantus animus non efficeret iucundam senectutem? Sed venio ad agricolas: ne à me ipso recedam. In agris erant tunc senatores, id est senes: siquidem aranti L. Quintilio Cincinnato nūciatum est, eum dictatorem esse dictum, cuius dictatoris iussu, magister equitum C. Seruilius Ahala Sp. Melium, regnum appetētem, occupatū interemit. à villa in senatum acserebantur & Curius, & ceteri senes ex quo, qui eos acserebant, viatores nominati sunt. num igitur eorum senectus miserabilis fuit, qui se agricultione oblectabant? mea quidem sententia, haud scio, an villa possit esse beatior vita: neque solum officio, quod hominum generi uniuerso cultura agrorum est salutaris, sed & delectatione, quam dixi, & saturitate,

copiaque rerum omnium, que ad victimum hominum, aut cultum etiam deorum pertinent. Et quoniam hac quidam desiderat, in gratiam iam cum voluptate redemus. semper enim boni, assiduq. domini referta cella vinaria, olearia, & penaria est: villaque tota locuples est: abundat porco, hado, agno, gallina, lacte, caseo, melle. iam, hortum ipsi agricole succidiam alteram appellat. conditor a facit haec superuacaneis operis aequalium, atque venatio. Quid de pratorum viriditate, aut arborum ordinibus, aut vinearum, oliuetorumque specie dicam? breui precidam, agro bene culto nihil potest esse nec usurberius, nec specie ornatus: ad quem frumentum non modo non retardat, verum etiam inuitat, atque allegetat senectus, ubi enim potest illa etus aut calefcere vel apricatione melius, vel igni, aut vi- cissim umbris, aquifve, refrigerari salubrius? Sibi ha- beant igitur arma, sibi equos, sibi hastas, sibi clauam, & pilam, sibi natationes, atque cursus: nobis senibus, ex lusionibus multis, talos relinquant, & tesseras: id ipsum, utrum lubet: quoniam sine his beata esse senectus potest.

## EXPLANA T I O.

**I**GNOSCE TIS autem, Ignoscetis autem, vnum. Ignoscite autem, vnum. Ignoscatis autem, vnum. Ignoscetis autem, L. Celi, & Scipio, quatuor. **S E N E C T U S** est *natura loquacior*: Aristot. Rhet. ad Theod. causam reddit, quod senes, quia memoria magis vigeant, quam spe longioris vita fulti vivat, propterea plus quoque voluptatis in anteactae vita rebus commenoriatis ponant. Ne ab omnibus eam vitis videar vindicare. Nam nulla etas suis vitis caret, vt nec mortalium quisquam. sed optimus ille, qui minimis urgetur. Vindicare: trahere, liberare, Nonius. M. CVRIVS, Plut. in Catone, Aug. lib. v cap. 8

cap. 18. De Samnitibus, Florus Epit. xi. & xiv. Florus lib. i. cap. 18. haud ullum ante pulchriorem in urbem, aut speciosiorem triumphum intraisse testatur: cum nihil libentius populus R. adspicerit, quam illa, quas timuerat cum turribus suis bellus. **C V I V S** ego villam, quae nullo sumptu, nullo ornato exstruxerat. (ABEST enim non longe à mea) A me, decem septem. HOMINIS ipsius continentiam, cum enim Italia Pyrrhum exegisset, nihil ex regia preda attigit. Cumque senatus, ex auctoribus plebi septena iugera, sibi quinquaginta a signasset, noluit popularis assignationis modum excedere, parum idoneum, siue, ut Plinius ait, perniciosum reip. cinem existimans, qui eo, quod reliquis tribueretur, contentus non esset. Val. lib. iv. cap. 3. Plin. lib. xix. cap. 3. Columella in Praefatione, & lib. i. cap. 3. Plut. in Apophthegm. Rom. **Hominis ipsius con-** *tinuentiam*: quae priuata naturae, & educationi, & industria cuiusque adserbitur. **T E M P O R V M disciplinam**, multum enim referat, in qua tempora cuiusque virtus incidat. **T E M P O R V M disciplinam**: quibus ab imperatoribus agri colebantur, gaudente terra vomere laureato, & triumphali aratore. Plinius. Vel, *Temporum disciplinam*, id est, temporum obseruatione, quam sine lumine animi, & sine exquisitissimis disciplinis non potest quis habere. Columella, & Agell. lib. x. cap. xi. **C V R I O** ad focum sedenti &c. lib. iii. de Rep. apud Nonium: Cuius etiam focum Cato ille noster, cum venerat ad se in Sabiōs, ut ex ipso audiebamus, visere solebat: apud quem sedens Samnitum, quodam hostium, tum iam clientium suorum, dona relegauerat. (id est, remiserat.) Et de vir. ill. & Athenaeus lib. x. **R E P V D I A T I** ab eo sunt. in nullo veteri libro legitur illa, Ab eo. Ne à me ipso recedam. Sic omnes mei: uno excepto, in quo, Ut à me ipso non recedam. L. **Q V I N C T I O** *cincinnato* ore nudo, plenöque etiamnum pulucris. Liu. lib. iii. Dionys. Halic. lib. x. de vir. ill. cap. 17. Plin. lib. xix. cap. 3. & Columella in Praefatione. C. **S E R V I L I V S** *Ahala* Liu. lib. iv. Ahala, non est in quinque. **O C C V P A T V M** interemit. Oppressum ante, quam perficeret id, quod cogitabat. Elegans, nec tamē satis notum, loquendi genus. Alibi, Occupauit te fortuna. Et lib. iii. de Rep. apud Laetantium: Quid, si vita eius in periculum veniet, ut eum aliquando necesse sit aut occupare, aut mori. (id est, præcipere, præuenire,) **V I A T O R E S** nominati sunt, id est Columella in Praefatione. Liu. & Dionysius Legatos missos scribūt.

Florus Lictorem. *AGRI* cultione oblectabantur } sic nouem:  
Agricolatione, duo. Agriculture, unus. Agricultura, unus;  
Delectabant, octo. Agri delectatione delectabantur, unus. Ob-  
lectabant, undecim. Oblectabantur, duo. *H A U D* scio, an *re-  
beator possit esse*? Sic sex mei. Hand scio, an villa possit esse  
beator, duo. Haud scio, an villa possit esse beator vita, septem.  
Haud scio, an nulla vita beator esse possit, unus. Haud scio,  
an res villa beator esse possit, unus. Haud scio, an villa  
beator sit, & possit esse vita, unus. Haud scio, quod nulla vita  
possit, esse beator hac, unus. Haud scio, an villa *atas* beator  
possit, unus. Haud scio, an illa beator possit esse, unus. Haud  
scio, hac an villa vita beator possit esse, Lambinus. Ego im-  
pressam lectionem probo, nam ex varietate, quæ appareat in  
veteribus libris, *Res, Vita, Ætas, cōstat omnia esse glossemata*.  
*Ad cultum etiam deorum*? nam primitias profert, & victimas  
suppeditat. Xenophon in Oecon. *Ad cultum etiam deorum*: Sic  
quatuordecim. Et ad cultū etiā deorū, tres. Et cultū etiā deo-  
rū, unus. Cultūmque deorū, unus. Ad cultū deorū unus. *BONI,*  
*et similius dominī*? unde, Domini oculus. Vide & Agellianum  
apologum de Cassita. *CELLA* *vinaria, olearia, & penuria*?  
Etiam quinque. Etiam &, unus. Mellaria, addunt post eadē. Ole-  
aria, duo libri. Neque. Et, neque. Etiam, unus. Post *Vinaria*, est  
Mellaria, in duobus. Mellaria est in Lamb. *Penuaria*: *Penuaria*  
etiam dicitur. Pecuaria, unus. Pomaaria, unus. Panaria, duo.  
*VILLA* *QUE* *total locuples* *est*? Locuples, qui pleraque loca, hoc  
est multas possessiones tenet. Agellius lib. x. ca. 5. Plin. lib. xix.  
cap. 3. Caius in l. quos nos, ff. de orig. iuris. *Villa* *locuples*: de  
villæ positione vide Columellam lib. I. cap. 6. *SVCIDIAM*  
*alteram*? suillæ carnis frustum, vt perna, petaso. Varro lib. 2. de  
re rust. & 4. de Ling. Lat. Nonius aliter interpretatur, & male,  
successione necessariam. Plinius, alterū macellum. *SPECI*  
*dicam*? Specie plura dicā, decem septem. *BREVI* *præcidam*?  
longiorem sermonem amputabo. Acad. iv. Præcide: statue  
ali quando, quod lubet. 11 x. ad Att. Numquā reo cuiquam,  
eam humili, tam sordido, tam nocenti, tam alieno, tam præcide  
negauī, quām hic mihi planè sine villa exceptione præcida  
Sic est, in undecim meis. Breui tibi præcidam unus. Breui  
præcidam, quatuor. Breuiter prædicam, unus. Breui succidam,  
unus. Breui dicam unus. Breuiter unus: sine vlo verbo. Bre-  
uiter plura expediam, unus. *ILL A* *atas aut calefcere*? Illa *ata*

equæ calefcere, nouem. rō. Aut, vel Aequæ, non est in quatuor.  
Illa *atas*, æquæ aut calefcere, tres. *A V T* *viciſſim*? Vel viciſſim,  
tres. *Viciſſim*: vide Carissimum lib. II. *SIBI* *habeant* *igitur* *arma*,  
sic omnes mei duobus exceptis, in quibus, Sibi ergo habeant  
arma. In Lelio: Sibi habeant sapientiæ nomen. *SIBI* *la-  
tum, & pilam*? Sibi clauam, tibi pilam, decem, rō. Et, siue, Sibi,  
non est in duobus. *Pilam*: militarem, quidam, lu-  
foriam. Si impressam lectionem retinemus, Sibi clauam, &  
pilam, intelligendam fortasse de pila, & claua, quam nos ho-  
die *Palamaglio* dicimus. *T A L O S*, de quibus scripsit Nico-  
laus Leonius Thomæus in dialogo, Sannutus: siue, de ludo  
talario.

## C I C E R O.

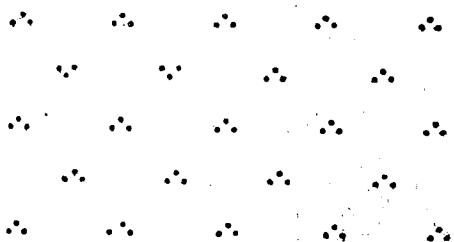
*M*ultas ad res perutiles Xenophontis libri sunt  
quos legite, quoſo, studiosè, et facitis. quām co-  
pione ab eo agricultura laudatur in eo libro, qui est de  
tuenda re familiari, qui *O Economicus* inscribitur?  
atque, ut intelligatis nihil ei tam regale videri, quām  
studium agricolendi, Socrates in eo libro loquitur cum  
Critobno, Cyrus minorem, Persarū regem, præstanti  
ingenio, atque imperij gloria, cum Lysander Lace-  
demonius, vir summe virtutis, venisset ad eum Sar-  
dis, eiq. dona a socijs attrulisset, & ceteris in rebus comē-  
erga Lysandrum, atque humanum fuisse, & ei quen-  
dam conſeptum agrum, diligenter conſitum, ostendisse:  
cum autem admiraretur Lysander & proceritates  
arborum, & directos in quincuncem ordines, & hu-  
mum subactam, atque puram, & suavitatem odorū,  
qui afflarentur è floribus, tum eum dixisse, mirari se  
non modò diligentiam, sed etiam solleritiam eius, à  
quo effent illa dimensa, atque descripta: & ei Cyrus  
respondisse: atqui ego sum omnia ista dimensus: mei

sunt ordines, mea descriptio: multæ etiam istarum arborum mea manu sunt sata: tum Lysandrum, intuentem purpuram eius, & nitorem corporis, ornatumque Perficum multo auro, multiisque gemmis, dixisse: Reclit verò te, Cyre, beatum ferunt, quoniam virtuti tue fortuna coniuncta est. Hac igitur fortuna frui licet senibus: nec etas impedit, quò minus & ceterarum rerum, & in primis agri colendi studia teneamus usque ad ultimum tempus senectutis. M. quidem Valerium Cornuum ad centesimum annum accepimus vitam perduxisse, cum esset alta iam etate in agris, eosque coleret: cuius inter primum & sextum consulatum oculo & quadraginta anni interfuerunt. ita, quantum spatium etatis maiores ad senectutis initium esse voluerunt, tantus illi cursus honorum fuit. atque huius extrema etas hoc beatior, quam media, quod auctoritatis habebat plus, laboris minus. apex autem senectutis auctoritas. Quanta fuit in L. Cacilio Metello, quanta in Atilio Calatino, in quem illud elogium vnicum: Plurime consentiunt gentes, populi primarium fuisse virum. notum est carmen incisum in sepulcro. iure igitur granis, cuius de laudibus omnium esset fama consentiens. Quem virum nuper P. Crassum, pontificem maximum, quem postea M. Lepidum, eodem sacerdotio preditum, vidimus? quid de Panlo, aut Africano, loquar? aut iam ante de Maximo quorum non in sententia solùm, sed etiam in mutu, ref. debat auctoritas.

## EXPLANATIO.

MULTAS adres perutiles Xenophontis libri sunt: } dicta Attica Musa, Cicero, Quintilianus. Sed, quid testimoni

nia querimus? Ipsum ~~xenophontis~~ id facile indicat. Historica, ethica, & economicæ, politica, rei militaris præcepta, & exempla complectitur. Qy I Oeconomicus inscribitur: } quem Cicero iuuenis admodum è Græco vertit. PRESTANTI inge-  
ni, } sic quinque. vnuis, Praestante, quindecim, Prastantem.  
LYSANDER Lacedemonius, } cuius vitam Plutarchus scribit.  
VIR summe virtutis, } in re militari: tamen à Conone nauali pugna postremo vicitus est. Iustinus lib. vi. Atqui dicebat, pueros nucibus, viros iureirando fallendos esse: & quo leonina pellis penetrare non possit, ibi vulpinam esse adhibendam.  
SARDIS, } Asia opido: in quod cum Cyrus maior vicit in-  
traffet, ubi tunc Croesus latitabat, Athis, filius regis, murus ad eam diem, dixisse fertur: Parce patri meo, Cyre: & te hpmi-  
nem esse, vel casibus hisce nostris. Solinus cap. 7. Plin. lib. v.  
cap. 29. scribit, Lydiam, quæ Mæsonia ante appellata, Sardibus in latere Tmolii montis maximè celebrari. ET directos in quin-  
cuncem ordines, } Quincunx, quinque sunt absis partes: vt Decunx, vel Dextas, decem. & vt denarius numerus hac nota, X,  
quinarius hac, V, designatur quia duplicata sit X. vt duplicatus item numerus ostendatur. Arbores igitur in quincuncem recto ordine dispositæ, figuram quincuncialem, V, referunt, sic, vt ea figura, quancumque in partem spectaueris, oculis occurrat. quod vt pateat illustris, exemplum subijcam.



Nam, si duobus superioribus punctis ad unicum subiectum, vel ab unicó superiore ad duo subiecta lineas ducas: quicunque notá efficies: à duobus ad unicum, hoc modo. Vt ab unicó ad duo, sic, A. quoquidé ordine speciosius, & gratius esse nihil potest: hodieq. huius generis exempla, ad antiquitatis

imitationem à peritis hominibus elaborata, cernuntur. De quincunce Columella lib. iii. cap. 13. & lib. iv. cap. 30. Plinius lib. xviii. ait, in disponendis arboribus, arbustis, ac vineis quincuncialē proportionē vtilem esse, & adspēctū grātam, quo cuncte modo intueare in ordinē se porrigitē versū. Quintilianus lib. ixx. cap. 3. Quid illo quincunce speciosius, quid in quamcumque partē spectaueris. Virgilius de eo, Georg. ii.

Indulge ordinib⁹, nec secius omnis in vnguem  
Arboribus positi⁹ secto via limite quadret.

Cæsar quoque, de bello Gall. lib. vii. Ante hos, inquit, obliquis ordinib⁹ in quincuncem dispositis, scrobes trium in altitudinem pedum infodiebantur. QVI afflarent & floribus, sic arbitror omnino à Cicerone scriptum esse, & imperitos postea, ignoratione pulcherrimi verbi, quod modò absolutè capit⁹, modò εὐρυπτῶς, fecisse, Afflarentur. Sanè veteres libri non suffragantur sententia nostrā : sed vnum tamen se vidisse testatur, in quo erat, Afflaret, vir excellentis industria, magni ingenij, singularis doctrinæ, Obectus Cisanius. Et Lucretius, Efflare, semel & iterum absolutè dixit. Locus quidem est in Epist. ad Att. lib. xvi. cum hac significacione aptè congruens : Rumoris nescio quid afflauerat, commissione Græcorum frequentiam Comitiorū non fuisse. Pro. Exierat, Emanauerat. Omnes mei, Afflarentur, tribus exceptis, in quibus, Efflarentur. Ex, tres. De, vnuſ. A, quattuor. Neque, Ex: neque, De: neque, A, vnuſ. DILIGENTIAM, sic omnes mei libri. NITOREM corporis, Corporis, abest à vetere, impresso. neque legitur in Xenophonte. RECTE, Rite, tres. QVONIAM virtus tua fortuna coniuncta est. aīaīdēs: p̄p̄t̄ d̄d̄ȳ p̄v̄c̄. HAC igit̄ fortuna frui, sic decem septem. Vt, duo, Hac verò frui, vnuſ. Fortuna, nō est in vno. M. VALERIUS CORIUM, quem Liuius Alexandro Magno comparat in re bellicā. Linius lib. vii. Agellius lib. ix. cap. xi, Valerius Max. lib. i. cap. 2. & lib. ixx. cap. 16. de vir. ill. Florus lib. i. cap. 13. Ouidius in Fastis. VITAM perduxisse, Produxisse, ex. Vitam, non est in quinque. CVIVS inter primum & sextum consulatum sex & quadraginta anni interfuerunt. Disputari potest in vtramque partē de hoc annorum numero. siue enim, vi, vt est in antiquis omnibus libris, siue, ixx, vt est in multis vulgatis, legatur: non infirmis rationibus vtraque niti videbitur opinio. Fasti

Capitolini

Capitolini inter primum & sextum Coriuni consulatum annos interponunt xlii x. quorum auctoritas efficit, vt in ijs libris, qui post eorum Fastorum editionem sunt impressi, reponeretur, ixi. petinde ac, vi, mendosum effet. Contrà, libri veteres omnes, & vulgati simul, ante repertas Tabulas Capitolinas emisi, habent. vi, nec aliter in Valerio Max. legitur. Quodq; valet apud me plurimum, describi video militares etatē a Cicerone, cùm subiungit: Ita, quantum spatium etatis maiores ad senectutis initium esse voluerunt, tantus illi cursus honorum fuit. Militare autem non ultra quadragesimum sextum etatis annum quisquam cogebatur: quasi annus ille, proxima senectute, in erro finem laboribus, ac periculis afferret. de quo ne quis ambigat, Polybij de peditibus legionarijs verba recitabo. Οὐδὲ σπανίας τελεῖ καὶ ἀργεῖν εἰ τοῖς περιεργασταῖς ἐπεινὰ τὸν ξένον τελεῖ. Eodemq; pertinet illud Taciti lib. I. Atrocissimus veteranorum clamor oriebatur: qui tricena, aut supra, stipendia numerantes, inederetur fessis, orabant. Tricena enim stipendia sunt anni triginta: quibus additi sexdecim pueritiae, quibus militare non licebat, (nam decimo septimo virilis toga sumebatur) sunt anni xii vi. Sed est, vt mihi videtur, in ipso Cicerone dissensio quadam: quam à nemine adhuc esse video animadversam. Primum dicit, Interfuerunt: quo verbo spatium interiectum significari, vix quicquam negauerit, excluso utroque consulatu: deinde subiungit: Tantus illi cursus honorum fuit. vt omnino comprehendere videatur utrumque consulatum: siquidem cursus honorum incipit in primo consulatu, definit in sexto. ita necesse est, inter primum & ultimum consulatum non annos interessere xlvi, vt habeat veteres omnes libri, sed xliv. quod è mihi magis placet, quia consentire Liuius videtur: qui, cùm anni xlii x. inter primum & ultimum Coriuni consulatum à Verrio ponantur, ipse ex hoc toto numero quattuor non agnoscit, primum eum, qui signatur anno v. c. c. d. xx, nullis consulibus: alterum, anno v. c. d. x. x. nullis consulibus, dictatore L. Papirio Cursore: tertium, anno c. d. x. l. v, nullis consulibus, eodem Cursore dictaturam iterum gerente. quartū, anno c. d. l. i, nullis consulibus, dictatoribus autem Q. Fabio Rulliano, M. Liui Coruo. Quod si quattuor anni ex Liuij auctoritate tollantur: recte legetur in Cicerone, iv & xl, pro vi & xl. quod ipse confirmat, subiungens: Tatus illi

K

cursus honorum fuit. Nec tamen errasse Verrium dixerim, sed alios eum annales, alios Liuium, ac Ciceronem sequi ma-  
laſſe. Mihi nunc id tantum propositum est, ut Ciceronis lo-  
cum restituam: in quo ſubiecta ipsius verba de militari etate  
me adiuuant. Adiungo Liuij testimonium, quod facio pluri-  
mii. recte ne fenferint, an fecus, mihi quarendum non fuit:  
neque id statuere meſe ſententia videtur. mentem Ciceronis  
afeſqui, & ad eam numerum annorum accommodare, ſatis  
habeo. **H** **V** **I** **S** **e** **x** **t** **r** **e** **m** **a** **s** **t** **a** **s**  **}** de tribus apud Rom. etatis-  
bus vide Agell. lib. x. **A** **P** **E** **X** **s** **e** **n** **e** **c** **t** **u** **s**  **}** **a** **u** **c** **t** **o** **r** **i** **t** **a**  
ſenectus nihil ſublimius habet, nihil magnificientius auctoritate. **I.**  
**C** **A** **E** **C** **I** **L** **I** **O** **M** **e** **t** **e** **l** **l** **o**  **}** pontifice max. Valerius lib. ix. de  
Senectute, Plin. lib. vii. cap. 48. **I** **N** **q** **u** **e** **m** **u** **l** **l** **u** **d** **u** **l** **u**  **}** **e** **u** **l** **o** **g** **u** **u** **m** **u** **l** **u**  **}** **u** **l** **o** **g** **u** **u** **m** **u** **l** **u**  
Plurime conſentiant gentes, populi primarium uifile virum.  **}** ſingula-  
re illud eulogium memoriter Cicero refert, non, ut plane in-  
cifum erat in ſepulcro Calatini, in quo erat, Vno ore cui plu-  
rima: conſentiant gentes, populi primarium uifile virum, vi-  
eft in lib. 2. de Fin. in extremo. Sufficit enim ei, hoc quidem  
in loco, ipſam Calatini laude in ostendere, quaē eft, populi pri-  
marium uifile virum. Satis autem conſtat ex antiquis libris  
vrbobique, id eft hic, & in lib. de Fin. eodem modo legi non  
poſſe. Nec video, cert aut hic, aut ibi quidquam mutetur: cum  
ibi ipſa inſcriptio totidem verbis reſeratur, hic autem eulo-  
gij ſumma pouatur. Vnus ex meis poſt, Vnicum, addit, Fuit.  
**P** **O** **S** **T** **E** **A**  **}** triennium. **D** **E** **P** **a** **u** **l** **l** **o**  **}** patre tuo, o Scipio,  
Valer. lib. 2. cap. de Maiestate, Plut. in vita. **A** **V** **T** **A** **f** **r** **i** **c** **o** **n** **o**  **}**  
auo tuo adoptiuo. Val. loco citato. Liuius lib. xxxiv. **M** **A** **X** **I** **M** **O** **?**  **}** Fabio, cum quo ſe militalle, iam dixit.

## C I C E R O .

**H** Abet ſenectus, honorata preſertim, tantam au-  
toritatem, ut ea pluris fit, quā omnes adoleſ-  
centia voluptates, ſed in omni oratione mementote eam  
me laudare ſenectutem, qua fundamentis adolescentiū  
conſtituta fit. ex quo efficitur id, quod ego, magno  
quondam cum affenſu omnium, dixi, miſeram eſſe  
ſenectutem, qua ſe oratione defendere. non cani, non

ringo repente auctoritatem afferre poſſunt: ſed honeste  
acta Superior etas fructus capit auctoritatis extremos.  
hec enim ipſa ſunt honorabilia, qua evidentur leuita, at-  
que communia, ſalutari, appeti, decedi, aſſurgi, deduci,  
reduci, confuli: qua & apud nos, & in aliis ciuitati-  
bus, ut queaque optimè morata, ita diligentissimè ob-  
ſervantur. **L**ysandrum Lacedemonium, cuius modè  
mentionem feci, dicere aiunt ſolitum, Lacedamone eſ-  
ſe honeſtiſimū domicilium ſenectutis. nuſquam enim  
tantū tribuitur etati: nuſquam eſt ſenectus honora-  
tior. quin etiam memoria prodiitum eſt: cum Athenis,  
ludis, quidam in theatrum grandis natu veniſſet,  
magno confeſſu locum ei nuſquam datum à ſuis ciui-  
bus: cum autem ad Lacedamonios acceſſiſſet, qui, le-  
gati cum eſſent, certo in loco conſederant, conſurrexiſ-  
ſe omnes, & ſenem ſeffum recepiſſe: quibus cum à cun-  
cto confeſſu plauſus eſſet multiplex dataſ, dixiſſe ex iſ  
quendam, Athenienses ſcire, qua recta eſſent, ſed fa-  
cere nolle. Multa in noſtro collegio præclarā: ſed hoc,  
de quo agimus, in primis, quod, ut quisque etate ante-  
cedit, ita ſententia principatum tenet, neque ſolum ho-  
nore antecedentibus, ſed iſ etiam, qui cum imperio  
ſunt, maiores natu augures anteponuntur. Qua ſunt  
igitur voluptates corporis cum auctoritatis præmijs cā-  
parādē? quibus qui ſplendide uſi ſunt, iſ mihi videtur  
fabulā etatis peregiſſe, nec, tāqua in exercitati hiſtrio-  
nes, in extremo actu corruiſſe. At ſunt morosi, & anxi, &  
& iracundi, & diſſiciles ſenes: ſi quarimus, etiā auari:  
ſed hec morum vitia ſunt, non ſenectutis. ac morofitas  
tamen, & ea vitia, qua dixi, habent aliquid excuſatio-  
nis, no illius quidem iuſta, ſed qua probari poſſe videa-  
tur, contēniſe putant, deſpici, illudi: præterea in fragili  
1704

corpore odiosa omnis offensio est. que tamen omnia dulciora fiunt & moribus bonis, & artibus: idq; cum in vita, tum in scena intelligi potest ex ijs fratribus, qui in Adelphis sunt. quanta in altero duritas, in altero comitas? sic se res habet. ut enim non omne vinum, sic non omnis natura vetustate coacefecit. Seueritatem in senectute probos, sed eam, sicut alia, modicam: acerbitatem nullo modo. auaritia vero senilis quid sibi velit, non intelligo. potest enim quidquam esse absurdum, quam, quo minus via restat, eo plus viatici querere? Quartar est causa, qua maximè angere, atque sollicitam habere nostram etatem videtur, appropinquatio mortis, qua certe a senectute non potest longè absese. ò miserum senem, qui mortem contemnendam esse in tam longa etate non viderit: qua aut plane negligenda est, si omnino extinguit animum: aut etiam optanda, si aliquo eum deducit, ubi sit futurus eternus. atqui tertium certe nihil inueniri potest. quid igitur timeam, si aut non miser post mortem, aut beatius futurus sum? quamquam, quis est tam stultus, quamvis sit adolescentis, cui sit exploratum, se ad vesperum esse vieturum? quin etiam etas illa multò plures, quam nostra, mortis casus habet: facilis in morbos incident adolescentes: grauius agrotant: tristius curantur: itaque per pauci veniunt ad senectutem. quod nita accideret, melius, & prudenter vineretur. mens enim, & ratio, & consilium in senibus est: quisi nullifuissem, nulla omnino cinitates fuisse. Sed redeo ad mortem impudentem.

## EXPLA-

## EXPLANATIO.

**N**ON cani, non ruga} Seneca de breuitate vitæ: Non est, quod quemquam propter canos, aut rugas putes diu vivisse. non ille diu vixit, sed diu fuit.

Iuuenialis:

--Facies tua computat annos.

AVCTORITATEM afferre possunt: } Arripere, quindecim. Accipere duo. Erripere, vnum. Eripere, vnum. CAPITI} sic omnes libri. SALVTARI,} sic coniurati apud Sallustium ineunt consilium de opprimendo Cicerone, ingredi, sicuti salutatum. ASSVRGI,} Iuuenialis Sat. 12.

Credebant hoc grande nefas, & morte piandum,

Si iuuenis vetulo non affluerexerat, & si

Barbato cuicunque puer: licet ipse videret

Plura domi farra, & maiores glandis aceruos.

Et Ouidius Fastis:

Magna fuit quondam capitinis reuerentia cani,

Inque suo pretio ruga senilis erat.

DE DVCI, reduci, } nam iuuenes deducebant ad curiam aliquem senatorem, quem exspectabant, vt domum reducerent. Valerius lib. 2. cap. 1. & Agellius lib. 2. cap. 15. qui hunc morem Romanos à Lacedæmoniis accepisse scribit. CONSVL: } atqui Iurisconsulti domus, oraculum ciuitatis. Cic. de Orat. 1. & sequens consuli multis de rebus possunt, quas ob ætatem experti sunt. VT queque optimè morata, } sic sex mei. tres additū. Est. Ut queque optimè morata sunt, quinque. Ut queque optimè moderata sunt, vnum. Ut queque morigerata est optimè, vnum. Ut quam optimè morigerata, vnum. Ut queque bene morata est, vnum. Ut queque bene morata sunt, duo. Ut queque optima morata est, vnum. LYSANDRVM } vide Plut. in Apophthegm. Laconicis. DOMICILIVM senectutis. } Sic omnes libri. Lambinus, Senectuti. LVDIS, } Panathenaicis. LACEDÆMONIOS } qui senectuti honorem habebant. Agellius. CONSVRREXISSE omnes } adidunt omnes libri, Illi dicuntur. SESSVM } Fessum, vnum. Ex iis } Lacedæmoniis. Plut. in Apophth. Valerius lib. iv. cap. 5. Dixisse ex iis quendam: } sic omnes mei. vnum addit. Dicunt. quod sapit glossema. ATHENIENSES sive, que regna essent, sed facere nolle. } Plato 1. de Leg. ait. Si quis Atheniensis

bonus sit, cum valde bonum esse. Demosthenes scribit de suis ciuibus, τὰ πλέον εὐπεργόβατα, οὐ τῷ μόνῳ σωτήρι, ἀλλὰ τῷ μὲν φύσει, τῷ δεύτερῳ τῇ στορά. In nostro collegio & augurum. In nostro collegio preclaro: sic duodecim recte, nam quod additur, in sex. Sunt in tribus, Cognoui, glossemata sunt. Antecedit, sic decennouem. vñus, Antecedat, vñus, male, Antecellit. SENTENTIAE principatum tenet: & vel primus ante alios sententia dicit. CORPORIS & sic recte decem septem. Corporū, quartuor. ex quibus duo, ord. præp. IN extremo actus & ep. lib. I. ad Q. fr. Illud te ad extreūmū & oro, & horror, vt, tamquam poeta boni, & actores industrij solent, sic tu in extrema parte, & conclusione muneris, ac negotij tui diligentissimus sis: vt hic tertius annus, imperii tui tamquam tertius actus perfectissimus, atque ornatisimus fuisse videatur: At & sic omnes libri. MOROSI, & vide Nonium in differentijs. ANXII, & suis diffidunt. IRACUNDI, & si quid cessatum, peccatumne fuerit. DIFFICILES & duri ad ignoscendum. ETIAM ari-ri: & Terentius Adelph.

Ad omnia alia ætate sapimus rectius:

Solum hoc vñum vitium affert senectus hominibus: Attentiones sumus ad rem omnes, quam sat est.

CONTENSI se putant, & sunt enim senes suspiciosi, Aristoteles Rhet. II. DES PICI, & Decipi, vñus. Vñus non habet. In fragili corpore & cuius imbecillitatem animi quoque imbecillitas ferè comitatatur. OMNIS offensio & vel laus. DULCIORA sumi & mitigantur. IN altero duritas, & dissident video veteres libros, & esse in alijs, Diritas, (qui tamen pauci sunt, duo, & alter Iulij Galli in alijs, Duritas. (In uno est, Duritas.) Sed magis in patrem conuenit Duritas, quam Diritas. Dirus enim est qui sœuit in aliquem, & ad sœ uitiam est natura propensus: quod ad patrem non pertinet, qui filio multa quidem negat, in eum tamen non adducitur vt sœ uitat: cum vero negat, & nihil indulget, in eo durus est. Ita Durum senem dixit Cicero in ea pro Caelio, & in Oratore, & Propertius lib. II. eleg. 31. Durus pater, Ouid. lib. IX. Metam.

Nec nos aut durus pater, aut reverentia fama,  
Aut timor impedit.

Et lib. I. Am.

Dum fallax seruus, durus pater, improba lena  
Vixerit, & merestrix blanda, Menandros erit.

Duritas

Duritas, male bis in Nonio. OMNIS natura & Sic recte duodecim. Omnis ætas natura, octo. Omnis ætas natura in vetust. vñus. VETUSTATE coacedit, & non bene ætatem fert. supra RESTAT, & Restet, tres. Deest in duobus. APPROPINQUATIO mortis, & Seneca lib. I. ep. 12. Aristoteles ait Σωτηρίᾳ τὸν πατέρα τὴν δεῖναν φέρεταινταν. AVT planè negligenda, aut etiam optanda, & Martialis:

Summum nec metuas diem, nec optes.

OPTANDA, & sic omnes mei. Alij legunt, Appetenda, Optendenda. ATQVI tertium certe nihil inu. pot. & sic decem. ex quibus quinque non habent, Certè. Atque, quattuor. Atqui certius certe nihil inu. pot. sex. ex quibus vñus non habet, Certè. Atqui nihil certius, vñus. QVAM VIS sit adolescentis, & Sir, abest à duobus meis, & à Nonio, id Explorate. AD resperam hinc illud Cæsaris, Kalendæ Martiæ venere, cui responsum, Sed nondum præteriere. Et illud Varronis, Nescis, quid serus vesper vehat. MORTIS casus & sic legendum: & ita de cœmocto mei. FACILVIS in morbos incident adolescentes, & id Hippocratis aphorismo comprobatur. GRAVIVS & periculosis. TRISTIVS & difficilis. Nonius ob morbi vehementiam, cui extrema remedia sunt adhibenda. Vel, maiore cum molestia & ægrotantis, & domesticorum, ob adolescentis iacturam, a quo sperari possunt plutima. PERPAVICI & propter casus mortis plures, morborumq. velientiam. Perpauici: Pauci, decem. NI & sic quattuordecim. CONSILIVM & Ælvia. IN senibus, & ijs, qui cum naturæ bonitate temperantiam coniunxere. QVÌ si nulli fuissent, & nam adolescentes, viribus freti, vim potius, quam ius, spectant, inuitiq. se legibus adstringunt.

Hesiodus:

Τετευχής καὶ ξερδίκης, καὶ λαζαρίας, καὶ αἰθέματος ὄντες.

NYLLAE omnino ciuitates & adolescentes enim, ferocia, & temeritate prædicti, nihil constituiscent, omnia potius euer- tissent. CIUITATES: hominum cōsociationes. Fuisse: Essent, duo. Forent, duo.

## C I C E R O .

QVOD illud est crimen senectutis, cum illud vi- deatis cum adolescentia esse commune? sensi ego.

*tum in optimo filio meo, tum in expectatis ad amplissimam dignitatem fratribus tuis, Scipio, omni atatis mortem esse communem. At sperat adolescentis, diu se esse victurum: quod sperare idem senex non potest. Insipienter sperat, quid enim stultius, quam incerta pro certis habere, falsa pro veris? At senex, ne quod speret quidem, habet. Est eò meliore condicione, quam adolescentis: cùm id, quod sperat ille, hic iam consecutus est. ille vult diu vivere: hic diu vixit. quamquam, odi boni, quid est in hominis vita diu? da enim supremum tempus: exspectemus. T artefforum regis etatem, fuit enim, ut scriptum video, Arganthonius quidam Gadibus, qui octoginta regnauit annos, centum & virgini vixit, sed mihi ne diuturnū quidē quidquā videtur, in quo est aliquid extrellum, cùm enim id aduenii, tunc illud, quod prateriit, effluxit: tantum remanet, quod virtute, & recte factis sis consecutus: hora quidem cedunt, & dies, & menses, & anni: ne prateritum tempus umquam reuertitur: nec, quid sequatur, sciri potest. quod cuique temporis ad vivendum datur, eo debet esse contentus. neque enim histrioni, ut placeat, peragenda fabula est, modò, in quo cumque fuerit actu, probetur: neque sapienti usque ad, Plaudite, veniendū. breue enim tempus etatis fatis est longum ad bene, honesteque vivendum. si processeris longius: non magis dolendum est, quam agricola dolent, praterita verni temporis suavitate, & etatem, autumnumq. venisse. ut enim, tamquam adolescentia, significat, ostenditq; fructus futuros: reliqua tempora demetendis fructibus, & percipiendis accommodata sunt. fructus autem senectutis est, ut sape dixi, ante partorum bonorum memoria, & copia. omnia vero, que secundum naturam sunt,*

*sunt, sunt habenda in bonis. quid est autē tam secundum naturam, quam senibus emori? quod idem continet adolescentibus, aduersante, & repugnante natura. itaque adolescentes sic mihi mori videntur, ut cùm aqua multitudine flammæ vis opprimitur: sene&nes autē, sicut cùm sua sponte, nulla adhibita vi, consumptus ignis extinguitur. & quasi poma ex arboribus, si crudas sunt, vi auelluntur: si matura, & cocta, decidunt: sic, vi adolescentibus vis aufert, senibus maturitas: qua mihi quidē tam iucunda est, ut, quò propius ad mortem accedam, quasi terram videre videar, aliquandoque in portum ex longa navigatione esse venturus. senectutis autem nullus certus est terminus: rectèq. in ea vivitur, quoad munus offici exsequi, & tueri possis, & tamen mortem contempnere. ex quo fit, ut animosior etiam senectus sit, quam adolescentia, & fortior. hoc illud est, quod Pisistrato tyranno à Solone responsum est, cùm illi, quarenti, qua tandem pefretus, sibi tam audacter obfisteret, respondisse dicitur, senectute.*

## EXPLANATIO.

*XSECTATIS ad amplissimam dignitatem} magnam spem de se præbentibus, pueri etiā num. FRATRIBVS TUIS, { Pauli filiis, qui adhuc pueri sunt extincti. Liuius, Velleius, alij. SPERAT adolescentis, } de spe Lucianus οὐδὲ θυσίων. Αἰ πατέρες ἡρώις κεφαλή αἰωνύμων, ὅτε μάλιστ' αἴ περ οἵτε θηταὶ φάδοι αὐτοῖς, αἱ γένναι δυοπάλμηραι, κεχωταὶ αὐτοὺς δυοπάλμηρας. Id est: Spes supra caput agitatae, vbi te illis omnino comprehensurum existimes, auolantes euancescunt, eōisque hiantes relinquent. Dī y se esse victurum: } Esse, abest à quatuordecim. Vnus, Se dui victurum. INCERTA pro certis, } nam, ut ait Seneca,*

præterita certa sunt, voluptates futurae incerta: quæpendant  
rèquam veniant, auferantur. Ne Q V O D s p e c t e r e t q u i d e h a b e t .  
S p e c t e r a t q u a t r u o r . Q u i d o c t o . N e q u i d s p e c t e r a b e t , v n u s . N e  
q u i d s p e c t e r , h a b e t q u i d e , v n u s . N e c h o c s p e c t a t , q u o d h a b e t ,  
v n u s . I d s p e c t a t , q u o d & h a b e t , v n u s . H i c iam c o n f e c t u s e s t . H i  
c o n f e c t u s e s t , d e c e m s e p t e m b r u s . I v c o n f e c t u s e s t , v n u s . H i c c o  
n f e c t u s e s t , v n u s . H i c c o n f e c t u s , v n u s . E s t c o n f e c t u s , v n u s . Q u i d  
e s t i n h o m i n i v i t a d i u ? } S e n e c a , Q u o d a g i m u s , b r e u e e s t : q u o d  
a u c t u r i s f u m u s , d u b i u m : q u o d e g i m u s , c e r t u m .

Virgilius:

--Viximus ambo,

Rhœbe, diures si qua diu mortalibus villa est.

C E N T V M & v i g i n t i v i x i t . } de numero annorum con  
fentient quidem antiqua exemplaria: veterum tamen scri  
ptorum testimonia dissentunt. Annos ei c x x . tribuunt He  
rodotus lib. i . Valerius lib. 8 . cap. 13 . & Plinius lib. 7 . cap. 18 . c 1 .  
Censorinus in præclaro illo libello de die natali, Lucianus &  
M a n e g l i a c . & A n a c r e o n . c c c , Silius Italicus lib. 3 . poëtica, ut ar  
bitros, v i s u s licentia.

Arganthoniacos armat Carteia nepotes,  
Rex proauus fuit humani doctissimus vizi,  
Ter denos decies emensus belliger annos.

Vide & Tzetzem in Lycophronis Cæstheram. C um i  
m i d aduenit , tunc } sic quinque. Tum, quinque. Cum enim id  
idem extremum aduenit, tunc, v n u s . C um enim aliquid ad  
uenit, tunc, v n u s . C um enim aduenerit extremum, tum, v n u s .  
C um enim id euenerit, tum, quartuor. C um enim id venerit,  
tum, duo. C um enim iam aduenit, tū. E F F L V X I T : } vide Se  
necā lib. 3 . ep. 24 . August. de Ciuit. D. lib. 12 . cap. 12 . R E M A N E T ,  
q u o d v i r t u t e , & recte factis consecutus : } Seneca de breuitate  
v i t æ s c r i b i t , eum malè vixisse , qui nesciat bene mori. Ibi de  
fultitiae proprium dicit, si quis incipiat viuere.

Horatius:

--præter laudem nullius auaris.

Et:

Exegi monumentum ære perennius.

Ouidius:

--pérq. omnia sacula, fama,  
(Si quid habent veri vatum præfigi) viuam.

Theo-

Theocritus quoque:

E k u o i o n ἀ γαθὸν καλέσ της ἐρχεταις αὐθεράτοις:

Ex multis bona fama venit hominibus.

N E C , q u i d e q u a t u r , s c i r i p o t e s t . } n o μέταν δε c e x t o r , Isocrates ait.  
A D P l a u d i t e } Ad, non est in quinque. V E N I E N D V M . } Vi  
uendum, quattuor. nec displicet. N O N m a g i s d o l e n d u m e s t , }  
sed potius gaudent. T A M Q V A M a d o l e s c e n t i a , } Adolescen  
tiam, quindecim. V T s e p e d i x i , } sic omnes, duobus exce  
piis, quorum v n u s . V t s a p e d i x i m u s : alter. Et sape dixi iam.  
S i c v t cùm sua sponte , } Cùm, non est in tredecim. Q u o p r  
p i s ad mortem accedam , }

Manilius:

Nascentes morimur, finisq. ab origine pendet.

I N p o r t u m e x l o g a n a u i g a t i o n e } Seneca ad Paullinum: In  
hoc tam procellos mari nauigantibus, nullus portus, nisi  
mortis est. S E N E C T U T I S a u e m n u l l u s c e r t u s e s t t e r m i n u s : } ante  
hæc verba, leguntur alia in quibusdam antiquis libriss, ( sex  
meis ) quæ doctis viris placuisse video, hæc inquit: Omniū æ  
tatum certus est terminus. Ego vero, ex interpretatione in  
libri margine adscripta, receptum esse inter verba Cicero  
nis. vt ostenderetur, quod ceteris ætatibus non contingit,  
id contingere senectuti, vt certum non habeat terminum.  
Mihi quidem necesse non videtur, vt quidquam addatur: cùna  
in ceteris ætatibus termini esse pateat, in senectute vero non  
nisi cù vis metis, & actio deficit. Quod si ante mors occupet,  
æquo animo ferendum. id enim ceteris etiam ætatibus potest  
accidere. E t t a m e n m o r t e m c o n t e m n e t . } tollit hæc liber Fulvij  
Vrsini. Tū, tres. Tueri posit, mortemq. cont. duo. Posit, quat  
tuor. P I S I S T R A T O } Hippocratis, Athenis tyranō, regnante  
apud Romanos Seruio Tullio. Isocrates in Panathenaico. He  
rodotus lib. I . Iustinus lib. 2 . Agellius, & Eusebius. T Y R A N  
NO } vt qui libertate opprescit, non crudelitate barbarica se  
uenti. A S O L O N E r e f o n s u m } Plutarchus, & Laertius.

## C I C E R O .

S Ed viuendi finis e s t o p t i m u s , c ù m , i n t e g r a m e n t o  
S c e r i s q . s e n s i b u s , o p u s i p s a s u m e a d e m , q u a c o a  
g m e n t a u i s , n a t u r a d i s s o l u i s . v t n a u e m , v t e d i f i c i u m

idem destruit facillimè, qui construxit: sic hominem eadem optimè, quæ conglutinavit, natura dissoluit. iam omnis conglutinatio recens, agrè: inueterata, facile dinellitur. ita fit, ut illud breue vita reliquum nūc auide appetendum senibus, nec sine causa deferendum sit. vetatque Pythagoras, iniussu imperatoris, id est dei, de praesidio, & statione vita decedere. Solonis quidem sapientis eulogium est, quo se negat velle suam mortem dolore amicorum, & lamentis vacare, vult, credo, se esse carum suis. sed h. iud scio, an melius Ennius:

„ Nemo me lacrymis decoret, neque funera fletu „ Faxit. Non censem lugendam esse mortem, quam immortalitas consequatur. Iam, sensus moriendi, si aliquis esse potest, is ad exiguum tempus, præsertim si: post mortem quidem sensus aut optandus, aut nullus est. sed hoc meditatum ab adolescentia debet esse, mortem ut negligamus; sine qua meditatione tranquillo esse animo nemo potest. moriendum enim certe est: & id, incertum, an eo ipso die. mortem igitur, omnibus horis impendentem, timens, qui poterit animo confondere? de qua non ita longa disputatione opus est videtur, cum recorder non L. Brutum, qui in liberanda patria est imperfectus: non duos Decios, qui ad voluntariam mortem cui sum equorum incitauerunt: non M. Atilium, qui ad supplicium est profectus, ut fidem hosti datam, conseruaret: non duos Scipiones, qui per Pœnus vel corporibus suis obstruere voluerunt: non unum tuum, L. Paullum, qui morte sua luit collegam Cannensi ignominia temeritatem: non M. Marcellum, cuius interitum ne crudelissimus quidem hosti honore sepultura carere passus est: sed legiones nostras,

quod

quod scripti in Originibus, in eum saep locum profetas alacri animo, & erecto, unde se numquam redi- turas arbitrarentur. quod igitur adolescentes, & ij quidem non solum indocti, sed etiam rustici, contemnunt, id docti senes extimescent: omnino, ut mihi quidem videtur, rerum omnium satietas, vita facit satietatem. Sunt pueritia & certa studia: num igitur ea desiderant adolescentes? sunt & ineuntis adolescentia: num ea iam constans requirit atas, que media dicitur? sunt etiam eius atatis: ne ea quidem a senectute queruntur. sunt extrema quadam studia senectutis. ergo, ut superiorum et atum studia occidunt, sic occidunt etiam senectutis. quod cum euenerit, satietas vite tempus matrum mortis affert. Evidem non video, cur, quid ipse sentiam de morte, non audeam dicere, quod eo melius mihi cernere videor, quo ab ea prius absum.

## EXPLANA TIO.

INTEGRA mente, } antequam deficientibus sensibus deli- Traueris. CERTISQ. sensibus, } sic octo. Ceterisque sensi- bus, nouem. Certisq. rationibus, vnum. Cunctisq. rationibus, v- nus. Ceterisque linibus, duo. Rectisque sensibus, alij legunt. NAVEM, } Nauim, quinque. IN IVSSV imperatori, } Tusci. I. & in Somnio Scipionis. SOLOONIS quidem eulogium est, } Tusci. I.

Mors mea ne caret lacrimis: linquamus amicis  
Mætorem, ut celebrent funera cum gemitu.

Græca leguntur apud Plutarchum:

Μηδὲ μοι ἀλλαγός θάνατός μολεῖ, αἷμα φίλοισι  
Ποιήσαμε θάνατον ἀλγεα, τοι δυναχέος.

FUNERA fletu } sic omnes mei. Funere fletum, esse in veteribus quibusdam libris, alij scribunt. Lambinus, Funere fletum. Si aliquis esse potest, } sic omnes mei: duobus exceptis, in quibus, Si quis potest esse. Is ad exiguum tempus, }

Itq; est vñs ad exiguum tēpus, vñs. Vñque ad exiguum tēpus, quinque. Itq; ad exiguum tēpus, octo. I. q; ad exiguum vñs. Itq; vñs ad exiguum tēpus vñs. Post, Tēpus, erat, Durat, in vulgatis libris, tollēdum censuius auctoritate septē in eorū librorum, quod Posit morte quidē sensus &c. } Sensus, delēdus iampridē putau nūc, opinionē meā libro meo vetere confirmari, gaudeo. M. DITATVM } Seneca dolet, magnam vitæ partem nihil ageribus, maiorem male agentibus, totam aliud agentibus elab. MORIENDO VNCERTĒ EFT&c. } Seneca lib. 10. Omnes eadē cōdicio deuinxit, cui nasci cōtingit, mori restat. internullis distinguuntur, exitu æquamur. hoc, quod inter primum, & ultimum diem iacet, varium, & incertum est. si labores astimans, etiam puer longum, si velocitatem, etiam seni angustum. nihil nō lubricū, & fallax, & omnī tempestate mobilius. iactantur cōcti, & in contrarium transiunt, iubente fortuna. & in tāta volutione rerum humanarū, nihil cuiquam, nisi mors, certa. Pindarus Olymp. Od. 2. Τὸν δὲ τοῦ αὐτοῦ χεργανόντα βροτῶν γένεσιν πτίξεις οὐ πιθανάτου. Et Metrodorus: Περὶ μὲν τὰ ἀλλα κύρια, ἀργαλεῖται τοῖς πρόξενοις, χάριν δι θεών τον πάντας ἀβεβαῖται αὐτήν πόλεων. Idest: Aduersus alia omnia præsidij aliquid parati potest: sed, quod ad mortem attinet, omnes urbe incolimus carentem in omnibus. Qui poteris? } Quis, decem septem. ANIMO confidere? } Animo, non est in uno. Animo, lato, vñs. EST interfetus: } ab Arunte, Tarquinij regis filio: & ab ipso item Aruns occisus est. Liuius lib. 2. Plotin Poplicola, de vir. ill. cap. 10. Valer. lib. 5. cap. 6. Florus lib. 1. cap. 10. Cic. Tusc. I. & 4. & in Paradoxis. M. ATILIVM: } Reguli. AD suppliciū est profectus, } de supplicio variat scriptores. vide Agelli lib. 6. cap. 4. de vir. ill. cap. 40. Flor. lib. 2. cap. 2. Epit. Liu. lib. 18. Valer. lib. 1. ca. I. & lib. 9. cap. 2. Polybiū, Orosiu lib. 4. cap. 10. Vide & D. Aug. de Ciu. D. lib. 1. cap. 15. & 2. & Siliu lib. 6. & Cic. Off. I. Parad. II. in Pisōnem, Valerium lib. 2. cap. 4. Horat. Carm. lib. 4. od. 5. DVOS Scipiones, } Liuius lib. 15. Silius lib. 13. Appianus in Libyco, Orosiu lib. 4. cap. 17. Flou lib. 2. cap. 6. & Valerius lib. 3. cap. 7. Vide Parad. I. L. PAULIVM, } Liuius lib. 23. Polybius lib. 5. Plut. in Paullo Æmilio, Silius lib. 10. Florus lib. 2. cap. 6. Orosiu lib. 4. cap. 16. & Valer. lib. 3. cap. 2. MORTE sua luit: } Sua, non legitur in decem octo meis. Morte luit sui, vñs. M. MARCELLVM, } Liuius lib. 27. Plut. in vita. Valer. lib. 5. cap. de humanitate, de vir.

de vir. ill. cap. 5. Silius lib. 12. Orosiu lib. 4. cap. 18. & Off. I. LEGIONES nostras, } idem Tusc. I. QVOD } Quas, duodecim. ETIAM rustici } ex agris enim in militiam proficisci bantur. ep. 7. lib. 11. Fam. Ex agricolis (ait Cato de re rust.) & viri fortissimi, & milites strenuissimi dignuntur. Columella quoque idem dicit. Et Xenophon in Oeconomico scribit, Rei militari non aliud hominum genus magis idoneum esse, quam agricultorū. SVNT pueris certastudia } Mineruæ hæc sunt ad Telemachum, apud Homerum:

-- οὐκέπει σὲ χαῖδη

Νηπίας ὁρέας, τοιούτη παιδία τηλίκως ἔστε.

Idest:

--pueriles spernito nugas,

Confirmata virum cūm te iam fecerit ætas.

A senectute queruntur, } Quæruntur in senectute, vñdecim. OCCIDUNT, } solis instar. Sic occidunt etiam senectuis. } Etiam, non est in uno. Iam, vñs. Et, vñs. Occidunt sic etiam sen. vñs. Occidunt, non est in tribus. NON andeam dicere. } Vobis, addunt omnes libri scripti. Vobis: adolescentibus generosis, liberaliter institutis, acutis, præclarè de me sentientibus, quiq. nihil in malam partem sitis accepturi. QVOD ab ea propius alium, } pro minus disto. Sic locutus ep. I. ad Att. Illam manum tu mihi cura vt pretest, quoniam tu propius abes, Pompeij nostri. Alibi: Loca, quæ à Brûdufio propius absunt, quim tu, biduum, aut triduum. Tusc. I. QUæ propius aberant ab ortu. Et Plin. lib. 14. Tum propè ab origine rerum sumus. QUOD ab eo propius a' sum: sic quatuordecim. vñs. Eo. vñs non habet. Ab eo. Malè in quinque, Quod. Adsum, quinq. Assum, vñs.

## CICE RO.

E govestros patres, P. Scipio, tūque C. Lelii, viros clarissimos, mibique amicissimos, viuere arbitror, & eam quidem vitam, qua est sola vita non innanda. nam, dum sumus in his inclusi compagibus corporis, munere quodā necessitatis, & gravi opere per-

fungimur. est enim animus caelstis ex altissimo domicilio depresso, & quasi demersus in terram, locum diuinæ naturæ, aternitatisque contrarium. sed, credo, deos immortales sparsisse animos in corpora humana, ut essent, qui terras tuerentur, quicunque, caelatum ordinem contemplantes, imitareretur eum vita modo, atque constantia. Nec me solum ratio, ac disputatio impulit, vt ita crederem, sed nobilitas etiam summorum philosophorum, & auctoritas. Audiebam, Pythagoram, Pythagoreosque, incolas penè nostros, qui essent Italici philosophi quondam nominati, numquam dubitasse, quin ex uniuersa mente diuina delibatos animos haberemus. Demonstrabantur mibi prater ea, qua Socrates, supremo vita die, de immortalitate animorum differuisse, is, qui esset sapientissimus Apollinis oraculo iudicatus. Quid multa? sic mihi persuasi, sic sentio: cum tanta celeritas sit animorum, tanta memoria prateritorum, futurorumque prudentia, tot artes, tot scientias, tot inuenta, non posse eam naturam, quae res eas contineat, esse mortalem: cumque semper agitur animus, nec principium motus habeat, quia ipse se moveat, nec finem quidem habiturum esse motus, quia numquam se ipse sit relicturus: & cum simplex animus sit natura, neque habeat in se quidquam admisum, dispar sui, atque dissimile, non posse eum diuidi: quod si non posset, non posse interire: magnoque esse argumento, homines scire pleraque ante, quam nati sint: quod iam pueri, cum artes difficiles discant, ita celeriter res innumerabiles arripiunt, vt eas non tum primum accipere videantur, sed reminisci, & recordari. Hac Platonis ferè.

EXPLA-

## EXPLANATIO.

C O M P A G I B U S corporis, } vide Lactantium cap. 9. de orig. Cerroris. G R A V I ope } sic decem octo. Grauiori ope- re, vnuſ. Gratii ope, vnuſ. Graui opera, vnuſ. quomodo Lab. citans Lucretium.

--parua perfunctus opella.

E S T enim animus caelstis } probat sex argumentis animo- rum immortalitatem. *Animus caelstis:*

Lucretius:

Denique caelesti sumus omnes semine oriundi.

Omnibus ille quidem pater est.

Vide Lactantium de opificio hominis, cap. 19. Ex *altissimo domicilio* } ex primo orbe, qui continet ceteros, qui summus ipse deus est. de Sōnio Scipionis. C O R P O R A h u m a n a } ex hu- mo orta. T V E R E N T V R, } excolerent, gubernarent. C A E L E- S T I V M ordinem } de nat. de. 2. Qui primum eos humo exci- tatos celos, & erectos constituit, vt deorum cognitionem, celum intuentes, capere possent. sunt enim è terra homines non vt incolæ, atque habitatores, sed quasi spectatores supera- rum rerum, atque caelestium: quarum spectaculum ad nullum aliud genus animantiū pertinet. Et de Sōnicio Scip. Homines sunt hac lege generati, qui tuerentur illum globum, quem in hoc templo medium vides, quæ terra dicitur. Quo loco vide Macrobius. Et Xenophon lib. 1. de dictis, & factis Socratis. N O B I L I T A S } atqui Pythagoras aurifabri filius fuit, sua tamē sapiētia nobilitatus. A V C T O R I T A S: } inde, Autōs ἡρ. C O N- T E M P L A N T E S, } Platonis etymologiam de homine posui- mus lib. 1. Off. Monet & D. Gregorius,

Σοῦν βέλειν ἀναγθούσαν δίπλαι τε πάρμαν.

P Y T H A G O R E O S Q V E, } Pythagoricosque, duo. I N C O- LAS penè nostros, } tenuerant enim Italiae partē, quæ Magna Græcia vocabatur. In Lazio. Vide Laertium lib. 8. & omnino Augustinum lib. 8. de Ciu. Dei. D E L I B A T O S animos, } idest, deriuatos, infusos, aliás, Delibratos. Tusc. s. Humanus animus decerpitus ex mente diuina. S O C R A T E S, } apud Platonem in Phædone. S A P I E N T I S S I M V S } Omnim sapientissimus, o- mines mei libri, uno excepto. Græca oraculi verba:

Σοφὸς Σοφὲλλες, σοφώτερος Εὐεπίδης,

Πάντων δὲ σοφώτερος Σωκράτης.

Sic mihi persuasi, } Sic mihi prorsus persuasi, legi in vetere libro, scribunt docti viri. Sic persuasi mihi, duodecimi. Mihi sic persuasi, duo. Cum tanta celeritas sit animorum, &c } argumenta quatuor, ad probandam animorum immortalitatem, ex Platone sumpta. PRUDENTIA, } ita legit Nonius perspicue. itaq. est in antiquis meis sexdecim, quinque, male, Prudentia. TOT scientiae, } sic decem. Tantæ scientiae, septem. Tot sententiae, tres. Tantæ scientiae, vnum. SCIENTIAE, } Invejuringo affirmare quidam non sunt veriti, Scientias non reperiri plurali numero. CVMQ. animus semper agitur, } sic decennouem, duo, Cumq. semper agitur animus. SIMPLEX animi natura, } contraria Aristoteles in fine lib. 7. Ethicorum. DISPAR sibi, } sic omnes mei, uno excepto, a quo absit nō. Huius. HÆC Platonis ferè, } sic septem. Haec sunt Platonis ferè, quatuor. Haec Platonis ferè sunt, duo. Haec Platonis sunt, vnum. Haec Platonis esse ferunt, vnum. Hec Plato vester, vnum. Noster, vnum. Haec sententia Platonis ferè, vnum. Haec Platonis sunt verè, vnum. Haec Platonem ferunt, vnum.

## C I C E R O.

**A** Pud Xenophontem autem moriens Cyrus maior hoc dicit: Nolite arbitrari, o mibi carissimi filii, me, cum à vobis discessero, nusquam, aut nullum, fore, nec enim, dum eram vobiscum, animum meum videbatis: sed, eum esse in hoc corpore, ex iis rebus, quas gereram, intelligebatis. Eundem igitur esse creditote, etiam si nullum videbitis. Nec vero clarorum viatorum post mortem honores permanerent, si nihil eorum ipsorum animi efficerent, quod diutius memoriam suam teneremus. Mihi quidem numquam persuaderi potuit, animos, dum in corporibus essent mortalibus, vivere: cum existent ex iis, mori: nec vero tum animum esse insipientem, cum ex insipienti corpore evansisset: sed, cum, omni admisso corporis liberatus, purus, & intiger esse cœpisset, tum esse sapientem. atque etiam,

cism

cum hominis natura morte dissoluitur, ceterarum rerum, perficuum est, quod quæque discedat. Abeunt enim illuc omnia, unde orta sunt: animus autem solus nec, cum adeat, nec, cum discedat, apparet. Iam vero, videtis nihil morti tam esse simile, quam somnum. at qui dormientium animi maximè declarant diuinatem suam. multa enim, cum remissi, & liberi sunt, futura proficiunt. ex quo intelligitur, quales futuri sint, cum se planè corporis vinculis relaxarint. Quare, si hec ita sunt, sic me colitote, inquit, ut deum: si interstiterus una est animus cum corpore: vos tamen, deos verentes, qui hanc omnem pulchritudinem tueruntur, & regunt, memoriam nostri pie, in uiolatèque seruabitis. Cyrus quidem haec moriens: nos, si placet, nostra videamus. Item vñquam mihi, Scipio, persuadebit, aut patrem tuum paullum, aut duos avos, Paullum & Africanum, aut Africani patrem, aut patruum, aut multos præstantes viros, quos enumerare non est necessaria esse conatos, que ad posteritatis memoriam pertinerent, nisi animo cernerent, posteritatem ad se pertinere. An censes ( ut de me ipso aliquid, more secundum, glorier) me tantos labores, diurnos, nocturnosq. domi, militiae suscepturum fuisse, si usque in finibus gloriam meam, quibus vitam, esse terminatus? nonne melius multo fuisse, otiosam etatem, & quietam, sine ullo labore, aut contentione, traducere? sed nescio quo modo animus, erigens se, posteritatem semper ita propriebat, quasi, cum excessisset è vita, tum denique vivitus esset. quod quidem ni ita se haberet, ut animi immortales essent: haud optimi cuiusque animalium maximè ad immortalitatis gloriam niteretur.

## EXPLANATIO.

**A**PVD XENOPHONTEM } argumenta sex Xenophontis, pro  
animorum aeternitate. EV M<sup>is</sup>, } Eum, abest ab uno,  
NEC VERÒ } probat, esse animos in corporibus. QUOD DIUTINUS }  
ob eorum merita. nec enim diu memoria manet, nisi cauſa  
fit, cur diu maneat. INDE NATUM EST GLOSSEMA, Quo iustius, &  
diutius: (quod est in uno meo) quod alij probarunt, sententia  
parum examinata. TENEREMVS, } tuctredicim. Retinemus, octo.  
ABEVNT illuc omnia, unde orta sunt, } Euripides Sup-  
plicibus:

Οὐτε δέ έργον εἰς τὸ σῶμα ἀφίκεται,  
Επειδὴ αὐτῷ λέγει πνεῦμα μήτε τερπεῖται, αὐτός εξ  
Τὸ σῶμα δέ εἰς τὴν γῆν, κύτῳ δοκεῖται θεοί.  
Ημετέροις ἀντὶ πλὴν οὐτισμού βίον.

Nihil morti tam esse similis, quam somnum. Ouid.lib.2.Am.

Stulte, quid est Somnus, gelidae nisi mortis imago?

Gorgias, extrema aetate, cum in somnum se delabi animad-  
uerteret, Sōnum, inquit, fratri suo me tradiditrus est. ATQUE }  
sic de cēsēptem, quattuor, Atqui. CVM } Quoniam, legit Lā-  
gius, ex Xenophonte. CORPORA RIS vinculis } Corporum, tres.  
Si cō me colitote, inquit, et Dēū, } sic de Socr. Scip. Deum te igitur  
scito esse. Colite, septem. Inquit, abest à quattuor. HANC O-  
MMEN pulcritudinem } mundum vniuersum. AFRICANI patrem,  
aut patrum, } vt r̄tique perit in Hispania. POSTERITATEM  
ad se pertinere. } Posse, addunt nouem. Isocrates: On n̄ igitur  
dixi: τοις πλευραῖς περὶ τῶν ἀρδαῖς γρυπαῖς. IPSO } Ipsi,  
quattuor. MORE senum, } supra: Nihil necesse est de me  
ipso dicere mihi: quamquam est id quidem senile, et atque  
nostra conceditur. DOMI, militie } libro 2. Off. in extre-  
mo, dixit, Vel bellī, vel domi. AD IMMORTALITATEM gloriā } sic  
nouem. Ad immortalitatem, gloriam, vnuſ. Ad immortalem  
gloriā decen. Ad immortalem maximē gloriā, vnuſ.

## C I C E R O.

**Q**VID, quid sapientissimus quisque equissimo ani-  
mo moritur, stultissimus iniquissimus? nonne vo-

bis

## IN CAT. MAIOREM.

533

bis videtur animus, is, qui plus cernat, & longius, vi-  
dere se ad meliora profici: ille autem, cuius obtusior  
sit acies, non videre? eisdem offeror studio patres ve-  
stros, quos colui, & dilexi, videndi, neque verò eos solum  
conuenire aueo, quos ipse cognoui, sed illos etiā, de qui-  
bus audiui, & legi, & ipse conscripsi. quo quidem me  
proficiscerent haud sane quis facile retraxerit, nec tā-  
quā Peliam recixerit. quid si quis deus mihi largia-  
tur, ut ex hac etate repuera sciam, & in cūnis vagiam:  
valde recusem, nec verò velim, quasi decurso spatio, ad  
cærcores à calce reuocari. quid enim habet vita com-  
modi? quid non potius laboris? sed habeat sane: habet  
certè tamen aut satietatem, aut modum, nō libert enim  
mihi deplorare vitam: quod multi, & iō docti, sepe fece-  
runt, nec me vixisse panitet: quoniam itaq; vixi, ut non  
frustra me natum existimem. & ex hac vita discedo;  
tamquam ex hospitio, non tamquam ex domo, commo-  
randi enim natura diuersorum, non habitandi dedit.  
ō praeclarum diem, cum ad illud diuinorum animorum  
concilium, cætūmq; proficiscar: cūmq; ex turba, &  
colluione discedam, proficiscar enim non ad eos solum  
viros, de quibus ante dixi, verūmetiam ad Catonem  
meum: quo nemo vir melior natus est, nemo pietate  
præstantior: cuius à me corpus crematu est: quod con-  
trā decuit ab illo meum: animus verò, non me deserēs,  
sed respectas, in ea profecto loca discessit, quo mibi ipsi  
cernebat esse veniendum. quem ego mēcum casum for-  
titer ferre vīsus sum: non quid aquo animo ferrem: sed  
me ipse consolabar, existimans non longinquum inter  
nos digressum, & discessum, fore. His mihi rebus, Sci-  
pio, (id enim te cum Lilio admirari solere dixisti) le-  
uis est senectus, nec solum nō molesta, sed etiam incur-

L 3

da. quod si in hoc erro, quod animos hominum immortales esse credam: libenter erro: nec mibi hunc errorem, quo delector, dum viuo, extorqueri volo. si mortuus, ut quidam minuti philosophi censem, nihil sentiam: non vereor, ne hunc errorem meum philosophi mortui irrideant. Quod si non sumus immortales futuri: tamen, exstingui homini suo tempore, opificabile est. nam habet natura, ut aliarum omnium rerum, sic vivendi modum: senectus autem peractio aetatis est, tamquam fabula: cuius defatigationem fugere debemus, prorsertim adiuncta satietate. Hac habui, de senectute que diserem: ad quam utinam perveniat: ut ea, qua ex me audistis, re experti, probare possitis.

## EXPLANATIO.

**V**IDERE &c.} non enim æquè vident omnes animi. CONVENIRE aucto,} Habeo, omnes libri scripti. Nic tamquam Peliam recixerit.} Diidorus lib. 4. Ouidius Metam. Ne si, tamquam Pelias, recixerit, Langius probat: & dictum ait, Tamquam, pro Quemadmodum. Neque tamquam pilam retorserit, quatuor. Nec tamquam pilam retorserit, tres. Nec tamquam retorserit pilam, vnuus. Nec tamen retorserit pilam, tres. Nec vimquam pilam retraxerit, vnuus. Nec tamquam retorserit pilam, Peliam vnuus. Nec tamquam recixerit Pilam, vnuus. Neq. tamquam retorserit pilam, duo. Nec tamquam retroxerit pilam, vnuus. Neque tamquam retorserit Peliam, vnuus. Muretus Variarū Lect. lib. 6. cap. 10. è Plauti Pseudolo versus ad hunc Ciceronis locum facientes ponit:

Quia sorbitione faciam ego te hodie mea,  
Item ut Medea Peliam concoxit senem:  
Quem medicamento, & suis venenis dicitur  
Fecisse rursus ex sene adolescentulum,  
Item te ego faciam.

Est & illud apud Nonium, in, Puellus, ex Varronis Marcipore:

Peliam

Peliam Medæa permisisse, ut se vel viuum degluberet, dum modo redderet puerum. Vide & Catullum epig. L. Peliam: Iasonis patrem, quem à Medea, in Iasonis gratiam, medicatis aquis, recœctum, & iuuentu restitutum, poëtae singunt. Quid si? Et si decemnoveni, & in Nonio, Repuerascere. Quid si? sic omnes libri. Deus mibi } ord. præp. septem. REPERASCAM, } sic sex. Repuerescam, octo. Repueriscam, septem. CVNIS } sic omnes libri. Apud Nonium, loco citato, Cunabulis, legitur. QVID enim habet vita commodi? Euripides:

O οὐρανῶς οὐ βίος, αλλὰ ζυμφορά:  
Non vita vita est: sed grauis labor, dolor.

Et Virgilius:

Optima quæque dies miseris mortalibus ævi  
Prima fugit: subeunt morbi, tristisq. senectus,  
Et labor, & duræ rapit inclemens mortis.

Pindarus etiam conqueritur,

Ὥη τὸν παῖδα ισθάνειν

οὐδὲν κακός διατρέψει βέργων οὐεγείδει.

QVID non potius laboris? } Homerus:

Οὐδὲν αἰσθάνεται γάλα τρέψει άθερποιο

Πάτων, οὐδὲν τέ γάλα ἀποτρέψει τελέστε.

Et ex hac vita discedo, } sic quattuor. Et ex vita ista discedo, tres. Et ex vita ita discedo, sex. Ex vita ita discedo, duo. Et ex ista tāquā ex hospitio discedo, duo. Et ex vita discedo vnuus. Et ex vita hac ita tāquā ex hospitio discedo, duo. Verū ex hac vita discedo, vnuus. COMORANDI enim natura diuersorum, nō habitādi, dedit, } Cōm.e.n.d.nobis, nō habitādi, dedit, vndecim. Cōm.e.n.d.nobis dedit, non habitādi, duo. Cōm.e.n.d.nobis dedit, nō habitādi, tres. Cōmorandi enim, non habitādi, natura diuersoriū dedit, vnuus. Malè alijs, post hæc verba erat, Locum, sic. Nō habitādi locū, quod male est & in duobus meis. Non habitādi: cū natura nobis dederit vñram vitæ, quasi diuersoriū: cur velimus esse perpetuum, quod ad tempus datum est? Commoramus enim, non habitamus, in diuersoriis. AD illud diuinorum animalium concilium, } Diaenum, decemseptem. PROFICISCAR: discedam. } οὔτε γέ φέτεν, dicendum enim primo loco fuit, discedam: deinde, Proficiscar. VERVM etiam ad Catonem meum, } sic sexdecim. Verū & ad Cat. m. vnuus. Verū ad Cat. m. vnuus. Verū etiam ad Catonem filium meum, vnuus.

Sed etiam ad Cat.m.vnus. Sed ad Cat.m.vnus. *VIR melior*  
 Plutarchus in Catone maiore, filium eius virum optimum ab  
 eo saepe in libris nominari, prodidit: perijisse autem, cum bel-  
 lumi gereret reip. caussa. *CIVIS à me corpus crematum est. quod*  
*contra decuit ab illo meum:* } pro, Cum contra decerer, ab illo  
 meum. Sic locutus in Lælio: Peccasse se, non anguntur: obiur-  
 gari, molestè ferunt: quod contrà oportebat, delicto dolere,  
 obiurgatione gaudere. Et pro Quintio: Reliquum est, vt cù  
 nemo iudicio defendetur: quod cōtra copiosissimè defensum  
 esse contendit. &c. Hec ideo collegi, ne quis, duriore fortasse  
 offensus loquendi genere, mutandi occasionem, quo morbo  
 laborant multi, acciperet ex infirmitate sua.

Placet hoc loco veteres Inscriptiones adscribere, in quibus  
 idem legitur.

*Rome, in edibus Delphiniorum*

NINNIA	CRONIS
VIX. AN. III	M. X. DIES. XXV
QVOD. DEC VIT. NATAM PATRI	
PRÆSTARE. SEPVLTO	
HOC. CONTRA. NATÆ PRÆSTITIT.	
IPSE. PATER	

*Ibidem.*

DIS. MANIBVS	
FLAVIÆ . APOLLINARI	
NEPTI. SVÆ. VIX. A. VIII	
QVOD. NEPTIS. AVRÆ. FACER	
DEBVIT. AVIA. FECIT. NEPTI	
SVÆ . SACR	

*In foro Traiano, in edibus Io. Cority.*

Verius. hunc. tumulum. matri. tu. nata. die asces  
 Quam. mater. miseræ. nunc. tibi. nata. facit  
 Bis. senos. completam. annos. te filia. matri  
 Eripuit. miseræ. mortis. iniqua dies  
 Optreftor. manes. meritæ. sanctæque. patronæ  
 Et. compreco. vt. leni. terra. tegat. tumulo

*In domo*

*In domo Cesia.*

Dijis	
Manibus	
Sucssi	. Fil
Cesia	. Gemella
mater	. piissimo
filio	. de . suo
Vix	. ann . IX
M .	III . Dieb. xv
Fatis. peractis	. mater
Eode. est . condita	. quæ
post . obitum	. fili
Vix. ann. III . M. xi. D. VIII.	

*A sinistro latere.*

Quod	. fas	. parenti
facere	. debuit	. filius
Mors	. immatura	. fecit
vt faceret		. parentes

Pater	. .	Successus
Supremum	. .	vtrisque
præstítit		officium

*Et.*

alumno	. et	. fibi
Infelix		. Fatu
prior	. debui	
mori	. .	mater

## Neapoli.

Nonia . M . F . Maxima  
 Vixit . ann . xxxv  
 et . quod . miserrimum . est  
 mater . fecit . filiae  
 Cantria . C . F . Polla

## Flerij, in agro Brixiano, ad D. Zenonis.

L . . Cornelio  
 Secundo  
 qui . vixit. ann . X.  
 M . V . D . XX.  
 L . . Cornelius  
 Glycon  
 pater . infel  
 filio . dulcissim  
 Quod : fi . ti . tua . fata  
 siuissent . tu . nobis  
 ponere . debueras

## In agro Sorano.

D . M . S .  
 Oppia . Caliane . ma  
 ter . feci . filiae . meæ  
 Quod . æquom . fuerat  
 filia . hoc . faceret . mihi  
 Vitellia . L . F . Tallia  
 Q . V . A . XXI  
 Septimus . Profutu  
 rus . optimæ . coningi

Rome,

IN CAT. MAIOREM. 539  
*Roma, ad D. Andrea, prope Columnam Antonini,  
 Montem Citatorum, Forum Caprani.*

Julio	:	Ce
liano	:	qui
vicxit	:	an
xvi	:	M.
dies		
Parentes		
Quod	:	ab <i>i</i>
i	a	filo <i>fie</i>
ri	.	optabant
ipſi	.	filio
fecerunt		
in . pace		

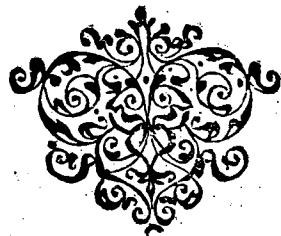
## Rome.

Aemilio	. Paulo	Papi
niano	præfeto	præ
torio	.	iurisconsulto
qui vixit annos	xxxv	I
dies . x . mens.	III.	Papi
nianus	.	Hostilius
Eugenio	.	Gracilij
turbato	.	ordine
in	.	senio
heu	.	parentes
fecerunt		
filio	.	optimo

## Lenij, in agro Brixiano, ad Abbatiam.

D . M		
Attice	.	Innocentia
summæ	.	caftitatis
ac . sapientia	.	seminæ
qua . vixit	.	ann
XLIII . M . VIII . D . IV		
Augustinus	.	subdiac
coniugi	.	dulcissimæ
cum. qua. vixit. ann. vii. M . II		
D . xx . contra	.	votum
B , M , M . P .		

*Crematum: In Epitome Liuij legitur, Catonem filij funus paruo sumptu fecisse. Deceit: Debuit, vnuſ. Ab illa meum; Meū non eſt in vno. ANIMVS verò } Catonis filij, ē vita diſcedētis. FORTITER ferre } hoc Lælius de Amicitia, de Catore claro præconio prædicat. Non molſta, } Nec, vnuſ. Iuſcida } propter conſcientiam reſtē factorum, bene acta vita & immortalitatis ſpem. Quid animos hominum &c. } Qui tres. Quia, duo. MINVTPHilosophi } Cyreanici, Epicurei, minorum gentium. VEREO R, ne } Vereor, vt, vnuſ. PhiloſOPHI mortui } Philoſophi morituri, duo. Philoſophi minutii, vnuſ. Philoſophi, non eſt in vno. Mortui, non eſt in vno. IRRIDEANT. } Rideant, duo. Philoſophi mecum mortui, vnuſ.*



P R E

# P R A E S T A N- T I S S I M O V I R O,

L A V R E N T I O M A S S E ,

*Reip. Venetæ Secretario.*



Eos in M. T. Ciceronis de Amicitia Dialogum Tibi nunc upo commentarios, mihi L A V R E N T I M A S S A . Tibi, inquam, quem honestissimum, & ornatissimum vi- rum, tum propria, tum maiorum gloria, perilluſtrem, mihi arctissimo amicitię vinculo adiunge- re tanta dignum laude duco, vt maiorem expe- tere nequeam. siquidem ego, non tantum, hono- re, amplitudine, aut præpotentium opibus, (que omnia ſimul in Te maxima ſunt) quām animo virtute prædicto delectari soleo. qui (vt cum Ci- cerone noſtro dicam) amare, aut redamare po- fit. qualem Tu medius fidius animum ſemper erga omnes, & me p̄fertim, quibuscumque li- cuit officiis, iſfq. minimè vulgaribus, oſtendisti. Iuxta Venerem Charites, iuxta Bacchuni Æthio- pes quondam Mercurium veteres posuere. & Ca- pitolino Ioui vicina fuit Fides, vt in Catonis oratione scriptum fuit. Tuę vero ſtatue, que iam- pridem tali virtuti debetur, ad immortalitatis memoriam aliquis amicitię typus adiungendus profecto eſſet, & omnis de amicitia ſermo,

omnis oratio, & disputatio ad Te meritò pertine  
re debet, Tibiq. dicari. cùm fortunas, animique  
vires pro amicis profundere, ita proprium Tibi  
sit, & peculiare, vt, quod numquam vulgare fu<sup>t</sup>,  
numquam permanauit ad multos, Tu vix Tibi  
patiare commune esse cum paucis. Quod si ego,  
pro mea tenuitate, pari erga Te officio, & obler-  
uantia, vti non potui: Deum tamen immortalem  
testor, numquam mihi officiosissimam volunta-  
tem defuisse. Quę Tuis in primis, vt equum est,  
in me meritis, excitari, atque augeri solet, quo-  
ties eorum mihi venit in mentem, recolo autem  
ea sepiissimè: nihilq. minus vetustissimam, &  
præclarissimam Massonum familiam complector  
animo, ex qua dein Massę cognominantur, qua  
postquam omnem suam gloriam in Te, L A V-  
R E N T I nobilissime, transtulit, & illustrior fa-  
cta est, & gloriösior. Etenim Nicolaus ille, Boc-  
cacci testimonio celebris, & alter eius cognomi-  
nis, vterq. singulari medicæ facultatis laude  
clarissimus, Tibi meritò cedunt. itemq. tres illi  
nihilominus illustris eiusdem item nominis, vir-  
tutisq. Antonij, quorum primus, Theologus cla-  
rissimus ordinis minorum, pro Nicolao V. Nun-  
cii Constantinopolitani munere functus est. Se-  
cundus verò Antonius Massa Gallesius, iuris, le-  
gumq. scientia adeo clarus, vt nulli suę memorię  
in eo genere præstanti viro secundus foret. Ter-  
tius denique doctissimus ille, pater Apollonij  
adhuc superstitis, qui tantum, atque tam præcla-  
ram inter medicos laudem consecutus est, nihil  
vt ad eam accedere posse videatur. Hi, inquam,  
omnes

omnes Tibi meritò cedant, qui tantam iis reddis  
gloriam solus, quantam à tot viris illustribus ac-  
ceperis. Te enim non temere Secretarium Resp.  
Veneta complectitur, filium amat, consultorem  
alloquitur, in Te fidem laudat, amorem com-  
mendat, sapientiam admiratur, Te quoque cu-  
iuscumque ordinis homines suspiciunt, Tuamq.  
immenſam virtutem, & comitatē, quam vel  
ex ipso adspēctu, & corporis habitu contempla-  
ri licet, diligentissimè colunt. Me studiorum pa-  
ritas, virtutis amor communisq. animorum ar-  
dor, quo Critonium nostrum, diuinum planè  
iuuenem, prosequimur, subigit, vt Te æquè ac  
ipsum amem, &, quę ipse de Te cecinit, in pri-  
misq. ea, quę hic subscripti, dulcis vtriūsque ve-  
strum memorię ergo sępe, ac libenter vsurpem.

Vale. Venetiis, Idib. Jun. CIC 13 xxci.

I A C O B I C R I T O N I I  
S C O T I

*Ad Laurentium Massam,*

O D E.

ERRANTE ab oris me Caledoniis  
Postquam triremis per freta Nerei  
Vexit, volentem, mox remotos  
Conspicere, & populos, & vrbes,  
Musæ per vndas præcipites pia  
Vagum secutæ, numine candido  
Sæuis obarmatum periclis  
Incolumem sine labe seruant.  
Nati labores seu dea Cypria  
Secuta, longas per pelagi vias  
Hostile per ferrum, per ignes,  
Pérq. minas comes ibat omnes.  
Si fortè Gades impiger vltimos,  
Syrtésve, aut Indos visere barbaros,  
Velle, nec Indos, intérve Syrtes  
Desituent ope contumaces.  
En obstrepentis qui Oceanî freta  
Mutauit amicæ fluctibus Hadriæ,  
Latinus hospes, iam relictis  
Diis patriis, gelidq. calo.  
At non egenum coetus Aonius  
Abiecit, adiunt m̄ faciles deæ,  
Præstamtq. dulces vna amicos,  
Quos eadem pia cura iungit.  
Te, Massa, clari gloria sanguinis,  
Pars vna summi, & maxima consili,  
Ardensq. virtus te nitentem,  
Te decorant & opes beatum.  
Muſis amicus cum vigeas tamen,  
Muſsamico Critonio foue:  
Odigne Diuarum fauore.  
Quiq. Deûm faueas amicis.

M. TVB

M. T V L L I I  
C I C E R O N I S

L A E L I V S,

V E L

D E A M I C I T I A,

*Ad T. Pomponium Atticum.*

Dialogi personæ,

FANNIUS SCÆVOLA LÆLIVS.

C I C E R O.

*Mucius angur multa narrare da  
C. Lilio, sacerdotio, memoriter, & in  
cundé solebat, nec dubitare, illum in  
omni sermone appellare sapientem. e-  
go autem à patre ita eram deductus  
ad Scenolam, sumpta virili toga: ut, quoad possem, &  
mibi liceret, a senis latere nunquam discederem. ita-  
que multa, ab eo prudenter disputata, multa breniter,  
& commode dicta, memoria mandabam: fierique stu-  
debam eius prudentia doctior, quo mortuo, me ad pon-  
tificem Scenolam contuli: quem vnum nostracinitatis*

M.

& ingenio, & iustitia praestantissimum audeo dicere. Sed de hoc alias: nunc redeo ad augurem. Cum sepe multa narraret, tum memini, domi in hemicyclo sedentem, ut solebat. cum & ego essem una, & pauci admodum familiares, in eum sermonem illum incidere, qui tunc fere erat multis in ore. meministi enim profecto, ut opinor, Attice, & eo magis, quod P. Sulpicio vtebatur multum, cum is tribunus pl. capitali odio a Q. Pompeio, qui tum erat consul, dissideret, quicum coniunctissime, & amantisimè vixerat, quanta hominum esset vel admiratio, vel querella. itaque cum Scæuola, cum in eam ipsam mentionem incidisset, exposuit nobis sermonem Lælii de amicitia, habitum ab illo secum. & cu altero genero C. Fannio, M. filio, paucis diebus post mortem Africani, cuius disputationis sententias memoria mandauit: quas in hoc libro exposui meo arbitratu. quasi enim ipso in truxiloquentes: ne, Inquam, & Inquit sapiens interponeretur. atque id eò feci, etiā quam à presentibus, coram haberis sermo videretur. cu enim sepe mecum ageres, Attice, ut de amicitia scriberem aliquid: digna mibi res tum omnium cognitione, tum nostra familiaritate visa est. itaque feci non iutus, ut prodesem multis tuorogatu. sed, ut in Catone maiore, qui est scriptus ad te de senectute, Catonem induxi senem disputantem: quia nulla videbatur aptius persona, qua de illa atate loqueretur, quam eius, qui & diutissime senex fuisset, & in ipsa senectute preteris floruisse: sic, cum accepissimus a patribus, maxime memorabilem C. Lælii, & P. Scipionis familiaritatem fuisse, idonea mihi Lælii persona visa est, que de amicitia ea ipsa differeret, qua disputata ab eo me minisset magister meus Scæuola. genus autem hoc ser-

monum,

monum, positum in hominum veterum auctoritate, & eorum illustrium, plus nescio quo pacto videtur habere grauitatis. itaque ipse, mea legens, sic afficior interdū, ut Catonem, non me, loqui existimem. sed, ut tum ad senem senex de senectute, sic in hoc libro ad amicum amicissimus de amicitia scripsi. tum est Cato locutus, quo erat nemo ferè senior temporibus illis, nemo prudenter: nunc Lælius, & sapiens, (sic enim est habitus) & amicitie gloria excellens, de amicitia loquitur. tu ve lim à me animum parumper auertas, Lælium loqui ipsum putes. C. Fannius, & Q. Mucius ad sacerorum venient post mortem Africani: ab iis sermo oritur: respondet Lælius: cuius tota disputatio est de amicitia: quam legens tu ipse cognoscēs.

## EXPLANATIO.

 M. v cīs augur multa narrare } post Augur, in omnibus scriptis libris est, Scæuola, sic, Q. Mucius augur Scæuola multa narrare. Non dixit autem, Q. Mucius Scæuola augur, vt initio Dialogi & consonantium, & vocalium concordum vitarer. De C. Lælio } Cicero in Bruto, Lælio, & Scipionis dicendi genus comparans, Lælio, ut horridus, & antiquus, sic etiam illustrius tribuit. Hos ut horridos, ita velut Atticos Romanos, suis scribit Quintilianus lib. xii. IN omni sermone } quotiescumque mentio eius incidisset. ADPELLARE sapientem. } Sapiens Lælius habitus est, quod, videns se res nouas sine turbatione reip. moliti non posse, ab incepto destiterit. Plutarchus in Gracchis. De eius sapientia libro ii. de Off. Et de Fin. II. Sapientem dictum scribit, quod non intelligeret, quid esset sua visum. non quod sequatur, ut, cui cor sapiat, ei non sapiat palatus, sed quia parvus id duceret. Hoc autem nomine Sapientis & ipse, & Caro censorius appellati sunt. lib. 3. de Off. & in proemio de Senectute,

& in hoc ipso dialogo, infrā. DED VCTVS } Tacitus in dialogo de Oratoribus: Apud maiores nostros iuuenis ille, qui foro, & eloquentiae parabatur, imbutus iam domestica disciplina, refertus honestis studiis, deducebatur a patre, vel propinquis ad eum oratorem, qui principem locum in ciuitate tenebat. hunc sectari, hunc prosequi, huius omnibus distinctionibus interessere, atque (sic dixerim) pugnare in p̄cilio discere. Ad hunc morem alludit Cato saepe, de Senectute differens. SYMPTA virilis tuta, } quæ sumebatur in Iouis Capitolini templo, Valerius lib. 5. QVOD AD possent, & mihi licet, } sic tres mei. in vndeclim & Mihi deest. In uno additū in margine. In duobus additum in spatio, quod versus dirimit. In uno erat, sed deletum. Quod ad possem: per mea negotia. Et mihi licet: per eius occupationes. MVLTA breuiter &c. } Multa etiam breuiter, &c. sexdecim. Et, pro Etiā, vñus. BREVITER dicta, } atque h̄ypt̄, Græcis. COMMODE dicta, } In loco. COMMODE: Iocunde, vñus. EIVS prudentia } omni eum prudentia genere præstissime, in libro de claris orat. scriptum est. PONTIFICE M Scauola } lib. 3. de Orat. & lib. 1. ET ingenio, & iustitia præstantissimum } sic vndeclim duo. Et ingenio, & industria præsta. vñus, Et ingenio, & doctrina præst. vñus, Et ingenio, & iustitia audeo dicere præst. vñus, Et ingenio, & industria, & iustitia præst. duo, Ingenio, & iustitia (additum superne, Industria) præst. INGENIO: de Oratore: Q. Scauola, Aequalis, & collega meus, (Iocuitur Crassus) homo omnium & disciplina iuris civilis eruditissimus, & oratione maximè limatus, atque subtilis, atque, vt ego soleo dicere, iurisperitorum eloquentissimus, eloquentium iurisperitorum iurisperitorum. IUSTITIA: vt qui illud, Ex fide bona, magnificaret, de Off. 2. CVN sepe multa narraret, } sic octo. Narrabat, quattuor. vñus, Narrabat, & sup. Ret. vñus, Differeret. In uno prius, Diceret, & postea additum, Narraret. In uno deest. In duobus additum in margine. Qua ex varietate opinor omnia esse glossemata: & reētius abesse. IN hemicyclo } corona prudentum, QVI TUM ferè erat multis in ore, } aut legendum, cum duobus meis veteribus libris, Qui tum multis erat in ore: aut, Qui tum ferè erat omnibus in ore, vt in quinque: aut, Qui tum ferè omnibus erat in ore. Nam, Ferè multis, absurdum esse, constat. PRO FECTO, & opinor, Attice, } Sic duo. vñus, Profecto, Attice, vt opinor. vñus, Profecto, & Attice, duodecim non habent illud,

illud, Ut opinor. P. SVPICIO } orator egregius, quiloquitur in libris de Oratore. DISSIDERET, } Discederet, vñus, CONVNCTISSIME, & amantissime } duo, Conuentissime diu, & am. nō, Et, non est in duobus. vñus, Amantissime. QUANTA hominum est } Quanta esset hominum, sexdecim. Quanta esset vel hominum, vñus. Quanta esset omnium, vñus. ADMIRATIO, } ob rei nouitatem. QVERELLA } ob damnum, & periculum, in quo resp. ob eorū o- dia versabatur. CVVS disputationis &c. } Eius disput. nouem, Eiusque disput. duo. Eius verò disput. vñus. Eius ipsius disput. vñus. IN hoclībro } abest nō, In, à nouem. Hoc in libro, tres. MEO arbitratu, } ord. præp. omnes libri. QVASI } quod reuera non loquerentur, cum essent mortui. INTRODVXI } Induxi, quinque. NE, Inquam, & Inquit, sepius interponeretur, atque id cōfeci, &c. } haec omnia, præter verbum, Atque, tolluntur à diligentibus viris: idque se facere auctoritate antiquorum librorum, admonent. Ego nihil muto: quia consenserit meos omnes veteres libros video cum vulgata lectio. In vno meo. Ne, Inquam, & Inquit, sepius interponeretur, atque vt tamq. Imitatus est Platonem, cuius hec sunt in Theateto: Ιτα οὐκ εἰ τῇ γεγενέντι μὴ παρέχων περὶ γῆρασται μεταξὺ τῶν λόγων δημόσιος τετράποδος λέπτος ἐσκεφτος. διὸ καὶ πλάτων, καὶ ἡρακλῆς εἰτον. ή ἀντεῖ τῷ πτοκεινούσιν, διπτωσίην οὐκ ἀμολόγει, τούτον ἔνεγκε ὡς αὐτὸς διατελέμενον ἡγεμόνα, ἐξελῶν τὰ τοιαῦτα. MECVM ageres, Attice, vt de amic. } Mecum ageres, & Attice, duo. Mecum saepe ageres, Attice, vñus. Mecum ageres, vt &c. sex. In uno sup. additum, O Attice. Mecum ageres de amic. vt, duo. Mecum saepe ageres, vt de amic. tres. Mecum ageres, vt de amicitia scriberem Attice aliquid, vñus. PRODESEM multis } nihil enim utilius, quam ea cognoscere, quæ tum ad instituendam, tum ad conferuandam amicitiam pertinent. PRODESEM multis: ord. præp. tres. TVO rogatis, } ord. præp. octo. VT in Catone maiore, qui } sic sex. VT in Catone maiore feci, qui, octo. VT in Catone maiori, qui, vñus. VT in Catone maiori feci, qui, duo. VT in Catone feci maiore, qui, vñus. EST scriptus ad te } sic quatuordecim. Est scriptus, Attice, ad te, vñus. Est scriptus, & Attice, ad te, vñus. Est conscrip- tus ad te, vñus. Est inscrip- tus ad te, vñus. IN ipsa senectute } In ipsa ætate, sex. PRÆCETEROS } Præter ceteros, sex. Præce- teros, vñus. MAGISTER mens } in iure ciuili. Sic in hoc

libro } nō. In abest à septem. In vno additum sup. SCRIPTI. }  
sic tres reliqui omnes, (quindicim,) Scriptis. TEMPORIBVS  
illar. } Illis temporibus, tres. Adsunt hæc duo verba à duobus.  
sed in vno additum in margine. A M E animum parumper auer-  
tar. } sic duo. Animum à me parumper auertas, septem.  
Animum à me aduertas, vnum. Animum parum à me auertas,  
vnum. Animum à me paullisper auertas, vnum. Animum à  
me paullisper auertas, tres. Animum ad me parumper aduer-  
tas, vnum. Paullisper animum auertas, vnum. Animum à me  
rumpere auertas, vnum. POST mortem Africani: } minoris.  
quem à propinquis occisum esse, suspicio fuit, de Sōnō Scip.

## C I C E R O.

**S**VNT ista vera, Læli. nec enim melior vir fuit Africano quisquam, nec clarior. sed existimare, debes, omnium oculos in te esse coniectos. vnum te sapien-  
tem, & appellant, & existimant. tribuuntur hoc modo M. Catoni scimus L. Acilium apud patres nostros appellatum esse sapientem: sed uterque alio quodam modo: Acilius, quia prudens esse in iure ciuili putabatur: Cato, quia multarum rerum usum habebat, multaq. eius & in senatu, & in foro vel prouisi: prudenter, vel alta constanter, vel responsa acutè ferebantur, propte rea quasi cognomen iam habebat in senectute sapien-  
tis. te autem alio quodam modo dicunt, non solum na-  
tura, & moribus, verum etiam studio, & doctrina esse  
sapientem: nec sicut vulgaris sed, ut eruditissolent appelle  
sapientem: qualem in reliqua Gracia neminem.  
nam qui Septem appellatur eos, qui ista subtilius qua-  
runt, in numero sapientum non habent. Athenis vnu accepimus, & eum quidem etiam Apollinis oraculo sa-  
piensimum iudicatum. hanc esse in te sapientiam ex-  
istimant, ut omnia tua in te posita esse ducas, huma-  
nosq. casus virtute inferiores putes. itaque ex me qua-  
rant,

runt, credo ex hoc item Scenula, quonam pacto mortem Africani feras, eoque magis, quod his pro-  
ximis nonis, cum in hortos D. Bruti auguris, com-  
mentandi causa, ut assolet, venissimus, tu non af-  
fuiisti, qui diligentissime semper illum diem, & illud  
minus solitus es obire. SCAE. Quarunt quidem,  
C. Læli, multi, ut est à Fannio dictum: sed ego  
id respondeo, quod animaduerti, te dolorem, quem  
accepteris tum summi viri, tum amantisimi, morte,  
ferre moderate, nec potuisse non commoueri, nec fuisse  
id humanitatis tuae: quod autem his nonis in collegio  
nostræ non affuisse, valetudinem causam, non mestis-  
tiam, fuisse.

## EX PLANA T I O.

**S**VNT ista vera, Læli. } sic octo. tres, sunt ista vera, & Læli.  
tres, sunt ista vera, vt dicas, Læli. vnum, Vera, ait, sunt ista, &  
Læli. Vnum, Hæc sunt ista, & Læli. Rectius in duabus non legitur,  
nō, Vera, et si additum sit in margine. Quo modo locu-  
tus Acad. II. Tunc ego, Sunt, inquam, ista, Varro. Plato  
multis in libris, Est mūta. In Axiocho autem, Αλιθητά, &  
Σωκρατες. Nec enim melior vir fuit, } Vir, non est in duo-  
bus. Melior: virtute præstantior. CLARIOR. } rebus  
gestis illustrior. OMNIVM oculos in te esse coniectos. } vt  
temp. defendas. In omnibus libris additur, Nunc, sic: O-  
mnium oculos nunc in te esse coniectos. Recte. L. ACI-  
LIVM } L. Atilius, omnes ferè libri: eti multi mendose, L. Ati-  
lius. A P P E L L A T V M esse Sapientem. } hunc non nomi-  
nat libro 3. de Off. Sed Catonem dumtaxat, & Lælium.  
ACILIVS, } Atilius, iidem libri. CATO, } de cuius lau-  
dibus vide Liuium libro 34. VSVM habebat, } sic o-  
mnes libri. VSUM: Afranius, apud Agellium, libro 13. cap. 8.  
Vsus me genuit, mater peperit Memoria, (loquitur Sa-  
pientia.

MVLTAQ. eius &c. } abest, Quo, ab omnibus libris. In  
quattuor pro, Eius, Enim PROVIS & prudenter, } ne vel rei cau-

sā caderent, vel rēsp. aliquid detrimenti caperet. ACTA cōfōr-  
ter } cūm inuidā non cedret, neq. periculis ab honesta sen-  
tentia depelleretur. RESPONSA acut } ingeniosē, & ad rem  
propositam accommodatē. QVASI cognomen } vt semper Ca-  
to Sapiens diceretur. Vel, vt, si quis, Sapiens diceret, Catonem  
intelligeret. καὶ τὸ ξεχωρί. ALIO quodam modo dicunt, } Dicunt,  
abest à sexdecim meis, & recte abest. Dicent, vñus. Dicūt ho-  
minis, vñus. NATVR A, } ingenij bonitate. MORIBVS, }  
quotidiana vita cōsuetudine. STUDIO, & doctrina } exortati,  
καὶ λόγῳ. Si c v t vulgus, } quod calliditatem, & ostentationem  
pro sapientia celebrat. IN reliqua Grecia neminē, } sic quattuor-  
decim mei. recte. vñus, Neminem in tota Græcia, alijs addunt,  
Inueni, Inuenerim, Audiui. QVI Septem appellantur, } de qui-  
bus Lacrtius in Thalete. Vide Aufonium. QVI ista fabilius  
querunt, } Stoici: qui eam Sapientis ideam fingunt, qua inter  
homines non reperitur. VNVM, } Socrateis de Senectute:  
Socrates, is, qui est Sapientissimus Apollinis oraculo iudica-  
tus. APOLLINIS } Pythici. Laertius in vita. Vide Valerium  
lib.3.cap.4. Plinium lib.7.cap.3. Solinum cap.7. & Xenophon-  
tem. HANC } Socraticam. VT omnia tua in te esse posita ducas, }  
desipientiam rerum humanarum significat, vt nihil admire-  
ris, præter virtutem: nihil tuum esse putas, præter animi bona.  
HUMANOS Q. casu, } quidquid homini accidere potest: sive  
morbus corporis, sive iactura rei familiaris, sive amissio digni-  
tatis, aliarūq. rerum, sine quibus aut planè non viui, aut non  
satis commodè viui potest. VIRTVTE inferiores, } vt semper  
animi constantiam retineas. CREDO ex hoc: Credo & ex hoc,  
quattuor. HIS proximis nonis, } hic mos lib.1 de Diuin. signifi-  
catur. Vide & Ciceronis epistolam, li. Fam. ix. ad Varronem.  
Quod his proximis nonis, } sic vñus. nouem: Quod in his proximis  
nonis. duo, Quod in proximis nonis. duo, Cūm in his nonis  
proximis. vñus, Quidē proximis nonis. duo, Quod proximis  
nonis. QVOD autem his nonis, } sic quattuordecim. duo, Quod  
autem in his nonis. vñus, Quod autem his proximis nonis. vñus,  
Quod h' autem in nonis. IN collegio nostro non affuisse, } sic  
omnes mei. Fulvius Vrsinus tollit, ex vetere suo libro, illud,  
Nostro. & veterē formulā esse ait. Quæ cūm legatur in dua-  
bus veteribus inscriptionibus, quas Patri meo Horatius Ful-  
vius olim dono dedit, ex q. dignæ sint, quæ hoc loco adscriban-  
tur, volui studiois rem gratam facere. Hæ autem sunt.

VAG.

VACCAM . SALVTI . PVBLIC . VACCAM·  
FELICITATI. VACCAM . GENIO. IPSIVS . TAVR·  
O . ADFVERVNT . A . VITELLIVS . M . A·  
PONIVS . SATVRNIVS . L . SALVIVS . OTHO·  
TITIANVS . CIVS . CAMERINV . C . VIP·  
STANVS . APRONIANVS . P . MEMMIVS .  
REGVLVS . C . PISO

NERONE . CLAVDIO . DIVI . CLAVDI·  
F . GERMANICI . CÆSARIS . N . II .  
CÆSARIS . AVG . PRO . N . DIVI . AVG .  
AB . NEP . CÆSARIS . AVG . GERMANI·  
CO . PONT . MAX . TRIB . POT . VII .  
IMP . VII . COS . IV . COSSO . LENTVLO·  
COSSI . FILIO

## K . IANVAR

SVLPICIVS . CAMERINV . MAGISTER . COLLEGI·  
FRATRV . ARVALIVM . NOMINE . IMMOLAVIT  
IM CAPITOLIO . O . COS . NFRONIS . CLAVDI·  
CÆSARIS . AVG . GERMANICI . IOVI . B . MAREM·  
IVNONI . VACCAM MINERVÆ . VACCAM GFNIO·  
IPSIVS . TAVRV IN COLLEGIO . ADFVERVNT .  
SVLPICIVS . CAMERINV . MAGISTER . L . PISO . L . F .  
T . SEXTIVS . AFRICANVS . M . APOIVS . SATVR·  
NIVS . L . SALVIVS . OTHO . TITIANVS . MEMMIVS .  
REGVLVS . C . PISO.

## ISDEM . COS . III . NONAS . IANVAR

SVLPICIVS . CAMERINV . MACISTER . COLLEGI·  
FRATRV . ARVALIVM . NOMINE . VOTA . NVNCVPA·  
VIT . PRO SALVTE NERONIS . CLAVDI . DIVI .  
CLAVDI . F . GERMANICI . CAESARIS . N .  
II . CAESARIS . AVG . PRO . N . DIVI . AVG .  
AB . N . CÆSARIS . AVG . GERMANICI .  
PONT . MAX . TRIB . VII . COS . IIII . ET . OCTA·  
VIAE . CONIVGIS . EIVS . VICTIMIS . IM·  
MOLATIS . IN . CAPITOLIO . QVAE . SV·  
PERIORIS . ANNI . MAGISTRI . VOVERANT .  
PERSOLVIT . ET . IN . PROXIMVM ANNVM .

NVNCVPAVIT . PRAEVNTE . M. APO NIO. SATVR.  
NINO. IOVI. MARES. DVO. IVNONI. VACCAS. II.  
MINERVAE. VACCAS. II. SALVTI. PVBLIC. VACCAS. II.  
IN. TEMPLO. NOVO . DIVO . AVG. B. MARES. II.  
DIVAE. AVG. VACCAS . II . DIVO . CLAUDIO. E.  
MAR. II . IN . COLLEGIO ADF.  
SVLPICIVS CAMERINV S. MAGISTER. A. VITELLIVS.  
L. PISO. L. F. M. APO NIVS. SATVRNIV S. P. MEMMIVS.  
REGVLVS. L. SALVIVS. OTHO TITIANVS  
ISDEM . COS . III . IDVS . IANVAR  
AD STANTIBVS. SVLPICIO. CAMERINO. MAGISTRO  
L. SALVIO . OTHONE . TITIANO. C. VIPSTANO.  
APRONIANO

Sænius. Donatus. L. Fabius Fortunatus VII. Id. Nou.  
Fratres Arual. in Luc. D. D. Via. Camp. apud Lap. V. conu.  
per. C. Porc. Priscum Mag. & ibi. imm. quod vi tempest. ita  
Fulmin. arbor. sacr. luci. DD. Attact. arduer. earq. arbor. eruen-  
dar. ferr. pendendar. adolendar. commolendar.

Item. aliar. restituendar. causa. operisque. incroandi. art.  
temporal. sacr. D. D. reficiend. eius rei. causa. lustr. mis. suo-  
ue taurilib. maior. item antè ad. D. D. B. F. A. iūct. N. It. item  
ad ar. tempor. dis inf. s. s Ian patr. ariet. II. loui. ver. bee. II.  
Mart. patri vlt. ar. N. II. siue Deo siu Dex. verb. II. Ian.  
D. D. ou. N. II. Virginib. diu. ou. N. II. Fam. diu. verb. N.  
II. Larib. verb. N. II. matr. lar. ou. N. II. Font verb. N. Flor.  
ou. N. II. Summan. pat. verb. atros. II. Vestæ matr. ou. II. Ve-  
fœr. deor. deorq. ou. II. item. adolend. coinq. ou. II. & ante Cé-  
far genio. D. N. seueri Alexandri Aug. t. a. item diuis. N. xx.  
ver. bec. xx.

III. Id. Dec. fratres. arual. in luco deæ Dia. via Camp-  
na. apud. lap. v. conuener per. C. Porc. Priscum mag. & ibi.  
immolau. quod ab icta fuminis arboreis luci sacri. D. D. attact  
arduerint earumq. arborum. adolesfactarum & coinquenda-  
rum & in eo luco sacro aliae sint repositæ & aræ temporal. re-  
fœta ferri. effer. ruius oper. perfecti. causa lustrum missum  
suoque taurilib. maioribus & cæteraq. s. adfuer. P. Ael. Secun-  
dinus T. Fl. Arcrefilius M. Fab. Fortunatus. M. Sæn. Donatus.  
Fusco. II. & Dextro Cos. xliii. k Mai In luco deæ Dia. P.  
F. mag. L. Porci. Prisci. qb ferri. inlaitionem scriptur. & scalpur  
marmor.

marmor. causa immol. ipso mag. Porcam & Agnam struib.  
effertis & extas reddid. ad aram ministrantibus. public. &  
prelentibus sacr. D. N. Aug. Item immolauit. qb ferri. flatio-  
nem scripturæ & scalctr & operis perfecti. III. Non. Mai.  
per. Porc. Prilogo Calat & per public fratr. Arualium.

INVALETVDINEM } sic tredecim. Ad Att.lib.7.bis. Et  
de Senectute. CAVSSAM } sic omnes mei libri. vno exce-  
pto, in quo non est. omnes autem addunt, Respondeo, antè,  
Causam. Langius. Cauffæ. Citatq. Varronem de rust. III.  
Hic sonus harum fugæ solet esse. Phil. 8. Cui legatio ipsa  
morti fuisset. De Orat. Cum ille se custodia in castris diceret  
remansisse. Ad Att. 9. Cum eius saluti, qui mihi fuerat, fuisset.  
MAESTITIAM } sic omnes. vnuus, Molestiam. vnuus, male-  
Intestinam.

## C I C E R O.

LAECTE tu quidem, Scenola, & verè. nec e-  
linim ab isto officio, quod semper usurpauit cum va-  
lerem abduci incommodo meo debui: nec ullo casu ar-  
bitror hoc constanti homini posse contingere, vt villa  
intermissio fiat officij. Tu autem, Fanni, quod mibi tâ-  
tum tribui dicis, quantum ego nec agnosco, nec postfu-  
lo facis amicè: sed, vt mibi videris, non recte indicas de  
Catone, aut enim nemo, quod quidem magis credo: aut,  
si quisquam, ille sapiens fuit. quo modo enim ( vt alia  
omittam) mortem filij tulit? memineram Paullum, vi-  
deram Caium: sed hi nec comparantur Catoni, maxi-  
mo, & spectato viro. quamobrem canæ Catoni am-  
teponas ne istum quidem ipsum, quem Apollo, vt  
ais, sapientissimum indicavit: huius enim facta, illi-  
lius dicta laudantur. De me autem, ( vt iam cum utro-  
que loquar) sic habetote. Ego, si Scipionis desiderio me  
moueri negem: quam id recte faciā, viderint sapientes:

Sed certè mentiar. moueor enim tali amico orbatus,  
qualis, vt arbitror, nemo vñquam erit: & vt confi-  
mare possum, nemo certè fuit. sed non egeo medicina  
me ipse consolor, & maximè illo solatio, quod eo erron-  
careo, quo, amicorum decestu, plerique angi solent. ni-  
bil enim mali accidisse Scipioni, puto. mihi accidit, si  
quid accidit. Suis autem incommodis graniter angi  
non amicum, sed se ipsum amantis est. Cum illo vero  
quis neget actū esse præclarè? nisi enim, quod ille mini-  
mè putabat, immortalitatem optare veller: quid nō est  
adeptus, quod homini fas esset optare? qui summa spem  
ciatum, quam de eo iam puerò habuerant, continuo a-  
dolescens incredibili virtute superauit: qui consulatum  
petit numquam, factus est consul bis, primùm ante  
tempus, iterum sibi suo tempore, reip. pene sero: qui, dua-  
bus orbibus eueris, inimicissimis huic imperio, non  
modò praesentia, verùm etiā futura bella delenit, quid  
dicam de moribus facillimis? de pietate in marrem, li-  
beralitate in sorores, benignitate in suos, insititia in o-  
mnino? hec nota sunt vobis, quām autem ciuitati carus  
fuerit, mārore funeris indicatum est. Quid igitur hunc  
paucorum annorum accessione iuuare potuisse? senectus  
enim, quamvis non sit grauis, vt memini Catonē anno  
ante, quām mortuus est, necū, & cū Scipione differere,  
tamen auferat eam viriditatem, in qua etiā nunc erat  
Scipio. quamobrem vita quidem talis fuit vel fortuna,  
vel gloria, vt nihil posset accedere: moriendi autē sen-  
sum celeritas abstulit. quo de genere mortis difficile di-  
ctu est: quid homines suspicetur, videris. hoc tamē vere  
licet dicere, P. Scipioni ex multis diebus, quos in vita cē-  
leberrimos, latissimōsq. viderit, illū diem clarissimum  
fuisse, cū senatu dimisso, domū reductus ad vesperum

est.

est à patribus conscriptis, à populo R. à sociis, & Latini-  
nis, pridię quām excessit è vita: vt ex tam alto digni-  
tatis gradu ad superos videatur potius, quam ad inferos,  
peruenisse. neque enim assentior ijs, qui hac nuper  
differere cæperunt, cum corporibus simul animos inter-  
ire, atque omnia morte deleri, plus apud me antiquo-  
rum auctoritas valet, vel nostrorum maiorū, qui mor-  
tuis tam religiosa iura tribuerunt: quod non fecissent  
profecto, si nihil ad eos pertinere arbitrarentur: vel eo-  
rum, qui in hac terra fuerunt, magnamq. Graciam,  
qua nunc quidem deleta est, tūc florebat, institutis, &  
præceptis suis erudierunt: vel eius, qui Apollinis oracu-  
lo sapientissimus est iudicatus. qui non tum hoc, tum  
illud, vt in plerisque, sed idem dicebat semper, animos  
hominiū esse diuinos, ijsque, cūm è corpore excessissent,  
reditum ad celum patere, optimoque, & iustissimo cui-  
que expeditissimū. quod idem Scipioni videbatur: qui  
quidem, quasi presagiret, per paucis ante mortem die-  
bus, cūm & Philus, & Manilius adessent, & alij p' u-  
res, tuq. etiam, Scauola, mecum venisses, triduum dis-  
sernit de rep. cuius disputationis fuit extrellum fere de  
immortalitate animorum: que se in quiete per visum  
ex Africano audisse dicebat. Id si ita est, vt optimi cu-  
iisque animus in morte facillimè euolat tamquam è cu-  
stodia, vinculisq. corporis: cui censemus cursum ad deos  
faciliorem fuisse, quam Scipioni? quocirca, mārere hoc  
eius euentu, vereor, ne innidi magis, quām amici, sit.  
Sin autem illa verior, vt idc interitus sit animorum,  
& corporum, nec ullus sensus maneat: vt nihil boni est  
in morte, sic certè nihil mali. sensu enim amissio, sit idc,  
quasi natus non esset omnino: quē tamen esse natū, &  
nos gaudemus: & hac cinitas, dum erit, latabitur,

*Quamobrem cum illo quidem, ut supra dixi, actum optimè est, mecum autem incommodius, quem fui aquiñs, ut prīns introieram in vitam, sic prīns exire de vita, sed tamen recordatione nostra amicitia sic fruor, ut beatè vixisse videar, quia cum Scipione vixerim: quocum mihi coniuncta cura de re publica, & de priuata fuit: quocum domus fuit, & militia communis, & id, in quo est omnis vis amicitia, voluntatum, studiorum, sententiārum summa consensio, itaque non tam ista me sapientia, quam modo Fānius commemoravit, fama delectat, falsa præsertim: quām, quod amicitia nostra memoriam spero sempiternam fore: idque mihi eo magis est cordi, quod ex omnibus faculis vix tria, aut quatuor nominantur paria amicorum. quo in genere, sperare videor, Scipionis amicitiam, & Lelij nō tam posteritatifore.*

## EXPLANATIO.

*V*SVRPAVI, } pro, obire solitus sum. nam hoc verbum consuetudinem significat. de Off.lib.2. C.Caelius, is, qui Sapiens usurpat. **C O N S T A N T I** homini } iusto, & tenaci propositi viro, Horatius. **N E C** agnōscō, nec postulo, } sic Fam. lib.4.ep.4. & lib. xi. ep.3. **N E C** agnōscō: tantam in me esse sapientiam. **N E C** postulo: natus arrogans esse, si plus mihi tribui velle, quām mererer. **F A C T S** amicē. } qui hoc amori potius des, quām iudicium séquare. **A V T** enim nemo, } hoc ex sententia Stoicorum. **A V T** si quisquam, &c. } hoc ex communi doctorum iudicio. **Q V O** modo enim, &c. } nō Enim, non est in sexdecim. **M O R T E M** filij } vide Agellum lib. 13. cap. 19. **P A V L L U M**, } Æmilium, quattuor filiis orbatum, duobus in Corneliam familiam adoptatis, duobus morte extinctis. Valerius lib. 5. cap. 10. Seneca decl. lib. 4. Plut. Liu. lib. 45. Pauli hæc sunt, ex oratione, quām de rebus à se gestis ad populum habuit: Cūm in maximo prouento felicitatis vestra, Quirites, timerem, ne quid malè fortuna moliretur, Iouem opt.

opt. max. Iunonēmq. Reginam, & Mineruam precatus sum, vt, si aduersi quid populo R. imminenteret, totum in meam dominum conuerteretur, quapropter bene habet. res se annuendo enim votis meis, id egerunt, vt vos potius meum casum doleatis, quām ego velutrum ingeminicerem. **C A I V M**: } C. Sulpiciū Gallum. infra: Paullos, Catones, Gallos, Scipiones, Philos. Et Fam. lib. iv. Gracchum, tres mei libri. Malè, **S E D** hi nec comparantur Catoni, maximo, & spectato viro. } hæc verba, Maximo, & spectato viro, negari non posset aptius de Catone sene dici, præsertim à Lelio, summo viro, quām de eius filio, qui nec victorias ullas est adeptus, nec triumphauit, nec omnino pro rep. memorable quidquam gesit. non enim filerat historia. Quare non sequor eos, qui legunt, Sed ij in pueris, Cato in perfecto, & spectato viro. Quibus nec additupulantur mei veteres libri, nam septem habent, Sed caue, ne hos præponas Catoni, maximo, & spectato viro, reliqui faciunt cum impressa lectione ) nec sane video, à quo verbo pendeat, aut quo modo consilitat per se, Sed ij in pueris. Concedo, & Paullum, & Gallum puerorum mortem constanter tuliss., proptereaq. non mediocrem sapientia laudem affectos esse. sed, vt ita sit, comparandi tamen Catoni non videntur, non solum, quia, erupto fibi filio consulari, maiorem, quām Paulus, & Gallus, qui pueros amiserant, constantiae sapientiaeq. laudem meruit, sed etiam propter alia multa, quibus ei Sapientis cognomini tributum est. quod neque Paullo, neque Gallo contigit. in quo ne comparandi quidem sunt Catoni, maximo, & spectato viro. Quod Cicero cùm dicit, omnes eius virtutes complectitur, & ostendit præstitalles cum Paullo, & Gallo non solum constantiae gloria, sed alii quoque laudibus, quib⁹ Sapiens dicitur est. (*Vt iam cū viro quoque loquar*) } nā supra solūm Scuolam allocutus fuit. Eg o, si &c. } doleo, sed moderatè doleo. **V I D E R I N T** sapientes: } est enim controuersia, vtrum nihil omnino dolendum. **E T**, vt confirm. p. } sic tredecim. **V T Q**. conf. p. tres. **V T Q**. conf. p. vnus. **V E U N Q**. conf. p. vnus. **N O N** egeo medicina: } qui philosophus sim. nam philosophia medetur animis, inanis sollicitudines detrahit, cupiditatibus liberat, pellit timores. **T U S C . II**. **Q V O** amic. d. } sic omnes mei. **D E C E S S V**, } sic undecim. Septem, Discessu. **S C I P I O N I** } cū emphasi quadā dicitū. viro tā præstati virtute, & dignitate. **S V I S** autem incommodis, &c. } hoc & in libro

de claris orat. dixit, cùm de obitu Hortensi loqueretur. Non amicum, sed seipsum amantis est. } cùm quicquidem, cùm & ex aucto rorū  
dōcū. IMMORTALITATEM } vt numquam moretur. quod quia homini contingere non potest, recte, & sapienter ne cogitabat quidem Scipio. SPĒM } quæ in pueris laudatur. Ut Virgilius Marcellum, lib. vi. Vbi vide Seruum. PETUIT numquam } ord. præp. vñus. Petuit, decem. FACTVS est consul bñs, } Factus est bis consul, octo. 'Consul est factus bis, vñus. Factus consul bis vñus. Est factus consul bis, vñus. ANTE tempus } lege vel virtutis, vel reip. temporibus id concedeant. nam virtutis, quam ætatis, cursus celerior: vt ait Cicero Philipp. v. vide Flor. Epit. xli. ix. & Plut. in Catone. REIP. pene spero: } oitis iam seditionibus tribunicis, quæ remp. pacem perdidérunt. vnde Scipio, in vrbe reuelatus, Ti. Gracchum, interrogatus à Catone trib. pl. respondit iure sibi cæsum videri. Quod interpretes non sunt affectui: qui retulerunt ad Numantinum dedecus, in quo certè resp. non periclitabatur, vt in rogationibus tribunicis. DVABVS vrbiis eueris, } Carthagine, & Numantia. de Off. lib. i. MORIBVS facillimis } qui, Panætij domestica consuetudine, oratione, & præcepte, sicut Stoici, tristior non est factus, sed lenior. pro Morena. PIETATE in matrem, } Papiriam, à patre, ob latenter caussam, repudiata. LIBERALITATE in forores, } quarum vnam M. Catonis filius, alteram Tubero vxorem duxit. Patrimonium Æmilianum Q. Maximo patri concessit, Scipionis hereditate contentus, de qua & fororum tenuitatem subleuavit. BENIGNITATE in suis, } amicos. Sic tres. In duobus, supra Benignitate, Bonitate, Donitate, tredecimi. Quo modo si legas, interp. lenitatem, & facilitatem in amicos, & propinquos. IVSTITIA in omnes: } qui restituerat Masinissæ auclulum. Valerius hoc humanitatitribuit. Iustitia fuit, Gracchum, et si propinquum, iure cæsum pronunciare. In omnes: ciues, milites, socios, hostes. Hæc nota sunt nobis. } Hæc, nō legitur in decemseptem. Omnibus, vñus. CIVITATI carus } Ciuitati huic carus, vñus. Ciuitati carus: Pro Milone: Quantum iustum in hac vrbe fuisse à patribus nostris accepimus, cum P. Africano, domi sua quiescenti, illinocturna vis esset illata: quis tum non genuit? quis, non arsit dolore: quem immortalem ( si fieri posset) omnes esse cuperent: cuius ne necessariam quidem, expectand m esse mortuam

MAERORI

MAERORE funeris indicatum est. } aliás, iudicatum est. Quia mortuus est, } Quād esset mortuus, quindecim. Quād mortuus fuisset, vñus. ETIAM nunc } de præterito: pro, Etiam tunc. quod alibi quoque legitur. Etiam tunc, est in duobus meis. CELERITAS } hinc Cæsar, interrogatus, quodnam mortis genus optimum iudicaret, respondit, Inopinatum. Et Horatius:

Mercator, inquit, nauium iactantibus austris,  
Militia est potior, quid enim? concurritur. horæ  
Momento cita mors venit, aut victoria lata.

Quid homines suspicuntur, } Quid autem homines suspicuntur. Quid enim homines susp. vñus. Suspicuntur: suspicabantur, veneno sublatum. App. lib. i. de bello ci. Vide Plut. in Gracchis, qui hoc in Fulvium confert, qui eodem die in eum inuestitus fit: Plinium lib. vii. cap. 44. qui in Merellum Macedonicum, qui liberis dixerit, Itc, filij, celebre exsequias: nunquam ciuii maioris funus videbitis: Epit. nem Liuij lib. lxx, qui in Semproniam: Valerium lib. v. cap. de Ingratis, de vir. ill. Orosium lib. v. cap. 10. De Fato: Scipio morietur noctu, in cubiculo suo, vi oppressus, necatus. Hoc tamen verè licet dicere. } sic rectè legitur. sic, & mei quatuordecim. Vnus, Hoc verè tamen licet dicere. Vnus, Hoc vero licet tamen dicere. Vnus, Hoc verum tamen licet dicere. Vnus, Hoc dicere verè tamen licet. SENATU dimiso, } ord. præp. vñus. Sunt, qui legant, Senato. REDVCTVS } Deductus, vñus. Ductus, vñus. AD referum } sic omnes libri. A patribus conscriptis, ap populo R. & socijs, & Lat. } Duodecim ( in quorum vno, non legitur & Conscriptis,) A patribus conscriptis, populo R. socijs, & Lat. Tres, A.p.v.c. p.R. & soc. & Lat. Vnus, A p.c., p.R., & à soc. & Lat. Vnus, A p.c. & p.R., & soc. & Lat. Vnus, A p.c. p.R. sociisque, & Lat. Socij & Latinis. Socij, & Latinis, veteres dicebant, pro, Socij Latinis. AD superos videatur potius, &c. } sic sex. Decem, Ad superos videatur deos potius. Vnus, Magis, pro Potius. Vnus, Ad deos superos potius videatur. IIS, } Epicureis. Fortasse Cæsarem notat, cuius hoc est apud Sallustium, in oratione de Coniuratis. DISSERE } sic omnes mei. A Pomponio Læto liber scriptus, Asserere. ANIMOS } Animis, octo. Vnus, Animis simul interire. ATQUE omnia morte deleri, } sic tredecim. Vnus, Atque morte simul omnia deleri. Vnus, pro Atque, Et. Vnus neque, Atque:

N

neque, Et RELIGIOSA iura } Iura, pro Iusta, dicit Cicero.  
 Q[uod] o[n] non feci[ss]ent p[ro]fet[o], } Qui, pro, Quod, vnu[s]: Ne, pro,  
 Non, vnu[s]: Nec, vnu[s]. Quod profecto non feci[ss]ent, tres. In ha-  
 tera } Italianum intelligit. Pythagoram, & Pythagoreos signi-  
 ficiat, de Senectute. MAGNAM Graciam, } qua[rum] cur ita dice-  
 retur, videndum Strabo lib. vi. Iustinus lib. xx. DELETA est,  
 tunc florebat, } Tunc, septem. Deleta est, quae tunc, duo. De-  
 letat, quae tunc, vnu[s]. Deleta est, sed tū, vnu[s]. ERYDIER VNT, }  
 ait enim Liuius, eo tempore paruum litterarum vnu[s] esse in  
 Italia. VT in plerisque, } legunt alij, VT plerique: referuntur  
 que ad Academicos maxime, qui nihil affirmabant, varie di-  
 sputantes, assensumque de vnaquaque re sustinentes. Ego,  
 cum tredecim meis libris, VT in plerisque, Referoque ad i-  
 pfsum Socrate: cuius ironia propria fuit: nec affirmabat quid-  
 quam, sed quasi dubitans disputabat, quod Platonis monume-  
 ta testantur. CVM corpore excessi[ss]ent, } Ex, decem. Disces-  
 sissent, duo. Excessi[ss]ent, duo. Recessi[ss]ent, vnu[s]. Excessi[ss]ent, vnu[s].  
 Cum corporibus excessi[ss]ent, vnu[s]. RE DIT VM in celum } sic  
 tredecim. In celo, tres. In celis, vnu[s]. OPTIM O Q[ui]E, & iustissi-  
 mo enique } Optimoque viro, & iustissimo cuique, septem.  
 Que, non est in duobus. Quae, & non est in duobus. In uno, su-  
 pra vulgata lectionem additur, Viro. Vnu[s], Optimo viro, &  
 iustissimo cuique. EXPEDITISSIMVM. } octo addunt, Iter.  
 vnu[s] supra addit. Iter expeditissimum, vnu[s]. QU[od] iquidem, quasi  
 prefagiret, } sic duo. Quique idem, qui u[er]o prælagaret, duo. Qui-  
 que idem prælagaret quasi, vnu[s]. Qui idem quasi prælagaret,  
 sex. Qui quasi prælagaret, quinque. Quod & idem quasi præ-  
 lagaret, vnu[s]. Quod quasi prælagaret idem, vnu[s]. ET Philu[s], }  
 Et, non est in tribus. ME CVM venisse, } odi mutationes non  
 necessarias. ut hic, non video, cur pro vulgata lectione repona-  
 tur, Me conuiciles: cum, Mecum venisse, & apertam latus  
 habeat sententiam, & in meis sexdecim legatur. (duo alij, v-  
 nu[s], Venisse mecum: alter, Mecum fuisses) Nam, quod La-  
 lius in eadem domo cum Scipione habitauerat, id mutandi  
 necessitatem non assert. Scuola enim sacerorum suum Lx-  
 lium, foris repetitum, officij causa, domum comitatus  
 est. ibi loquentem de republ. Scipionem audivit. EX-  
 TREMVM } in Somnio Scipionis, qua pars fuit extrema  
 libri vi. de Republica. IN quiete } id est, in somno. PER  
 vijum } sic sex. Ex vijum, vnu[s]. Viu[er]o, tres. Vista, vnu[s]. Vista, quinq[ue].

Per visum: idest, per somnum, visus enim est Africanus ea  
 narrare nepoti suo Scipioni, quae explicantur in Somnio Sci-  
 pionis. ID si ita est, } Id verò si ita est, tres. TAMQ[UE] AM è  
 cibaria, } φερετι, Plato in Axioco: φω[τ]ο[ν] ζελαν διάτατη, επιγ-  
 ντα κατεπιέρω φερετο. i. carcere: vnde sequitur, Vinculisque.  
 MAERERE hoc eius euuentu, } sic duodecim. Euentum, quatuor.  
 Maerere huius euuentum, vnu[s]. Maerere hoc in eius ad-  
 ventu, vnu[s]. MECVM autem incommodius, } Autem, non est  
 in tredecim. Sed mecum incommodius, vnu[s]. Mili vero incom-  
 modius, vnu[s]. Incommodius: quod eius incundit, in amicitia  
 fuerit fructu careo. QU[od] EM fuit et, vnu[s]. } Fuerat omnes.  
 Quem quidem fuerat aequius, vnu[s]. IN FROIERAM in vi-  
 tam. } In vitam, non leguntur in sex. VOLVNTATVM stu-  
 diorum sententiarum summa consentio. } Sallustius, Catilina: Idem  
 velle, atque idem nolle, et a demum vera amicitia est. Aristoteles Amicum esse dixit uiam animam in duabus corpori-  
 bus habitan tem. Et Lyricus, Amicum, Animæ dimidium suæ  
 dixit. FALSA preferim: } sic omnes mei libri. Falsa prefer-  
 im: } exempla modestiæ Lalij. Vix tria, aut quattuor nomi-  
 nantur paria amicorum, } lib. 3. de Off. Nominantur: Notantur,  
 vnu[s], Nominantur.

## C I C E R O.

**F**an. Istud quidem, I ali, ita necesse est: sed, quoniam  
 amicitiae motionem fecisti, & sumus otiosi, pergra-  
 tum mihi feceris, spero item Scuola, si, quemadmo-  
 dum soles de ceteris rebus, cum ex te queruntur, sic de  
 amicitia disputabis, quid sentias, quales existimes, que  
 præcepta des. SCAE. Mili vero pergratum hoc e-  
 rit, atque id ipsum cum tecum agere conarer, Fannius  
 anteuerit, quamobrem utrique nostrum gratum ad-  
 modum feceris. LAE. Ego vero non grauver si mihi  
 ipse confiderem, nam & præclara visores est: & su-  
 mus, ut dixit Fannius, otiosi, sed, quis ego sum? aut  
 quae in me est facultas? doctorum est ista consuetudo,  
 eaque Gracorum, et ipsi proponatur, de quo disputatione

quamuis subito. magnum opus est, egētque exercita-  
tione non parua. quamobrem, qua disputari de amici-  
tia possunt, ab eis, censeo. petatis, qui ista profitentur. e-  
go vos hortari tantum possum, ut amicitiam omnibus  
rebus humanis anteponatis. nihil est enim tam nature  
apeum, tam conueniens ad res vel secundas, vel ad-  
uersus. Sed hoc primum sentio, nisi in bonis amicitiam  
esse non posse. neque id ad viuum refeco, ut illi, qui hac  
subtilius differunt, fortasse verè, sed ad communem v-  
tilitatem parum. negant enim, quemquam virum bo-  
num esse, nisi sapientem. sit ita sane: sed eam sapien-  
tiam interpretantur, quam adhuc mortalis nemo est  
consecutus. nos autem ea, quæ sunt in usu, vitæque com-  
muni, non ea, quæ finguntur, aut optantur, sperare de-  
bemus. nūquam ego dicam C. Fabricium, Man. Cu-  
rium, T. i. Coruncanium, quos sapientes nostri maiores  
indicabant, ad istorum normam fuisse sapientes. Qua-  
re sibi habeant sapientia nomen, & inuidiosum, &  
obscurum: concedantque, ut hi boni viri fuerint. ne id  
quidem facient: negabunt id, nisi sapienti, posse concedi.  
egamus igitur pingui Minerua, ut aiunt. Qui ita se  
gerunt, ita vivunt, et eorum probetur fides, integritas,  
aquitas, liberalitas: nec sit in eis villa cupiditas, vel libi-  
do, vel audacia: sintque magna constantia, ut hifuer-  
runt, quos modò nominaui: hos viros bonos, ut habiti  
sunt, sic etiam appellando putemus: qui sequuntur,  
quantum homines possunt, naturam, optimam recte  
vivendi ducem. sic enim mihi perficere videor, ita na-  
tos esse nos, ut inter omnes esset societas quadam, ma-  
ior autem, ut quisque proximè accederet. itaq. cines pa-  
tiores sunt, quam peregrini: & propinqui, quam alieni.  
cum his enim amicitiam natura ipsa peperit: sed ea

non

nón fatis habet firmitatis, namque hoc praestat amici-  
tia propinquitati: quod ex propinquitate benevolentia  
tollit potest, ex amicitia autem non potest. sublata enim  
benevolentia, amicitie nomen tollitur, propinquitatis  
manet. quanta autem vis amicitia sit, ex hoc intelligi  
maxime potest, quod ex infinita societate generis hu-  
mani, quam conciliauit ipsa natura, ita contracta res  
est, & adducta in angustum, ut omnis caritas aut in-  
ter duos, aut inter paucos iungeretur. Est autem ami-  
citia nihil aliud, nisi omniū diuinarū, humanarūq.  
rerum cum benevolentia, & caritate summa consen-  
sio, qua quidem haud scio an, excepta sapientia, quid-  
quam melius homini sit à diis immortalibus datum.  
Divitias alij preponunt, bonam alij valetudinem, alij  
potentiam, alij honores, multi etiā voluptes. belluarum  
hoc quidem extremum est: illa autem superiora  
taduca, & incerta, posita non tam in nostris consiliis,  
quam in fortuna temeritate. qui autem in virtute sum-  
mum bonum ponunt, preclare illi quidem: sed haec ipsa  
virtus amicitiam gignit, & continet: nec sine virtute  
amicitia esse villo patto potest. iam, virtutem ex con-  
suetudine vite, sermonisque nostri interpretemur: nec  
metiamur eam, ut quidam docti, verborum magnifi-  
centia: virōsque bonos eos, qui habentur, numeremus,  
Paullos, Catones, Gallos, Scipiones, Philos, his commu-  
nis vita contenta est. eos autem omittamus, qui omni-  
no nūquam reperiuntur. tales igitur inter viros ami-  
citatantas opportunitates habet, quantas vix quo  
dicere. Principiò, cui potest esse vita vitalis, ut ait En-  
nius, qui non in amici mutua benevolentia conque-  
scat? quid dulcius, quam habere, quocum omnia an-  
deas sic loqui, ut tecum? quis esset tantus fructus in pro-

ſperis rebus, niſi haberes, qui illi aquæ, ac tu ipſe, ga-  
deret? aduersas verò ferre, difficile eſſet, ſine eo, qui illas  
grauias etiam, quām tu ferret, denique cetera res, qua  
expetuntur, opportunity ſunt ſingula rebus ferè ſingula:  
dinitia, vt vicare: opes, vt colare: honores, vt laudare:  
voluptates, vt gaudeas: valetudo, vt dolore careas, &  
muneribus fungare corporis: amicitia plurimas res  
contineat: quoquo te verteris, preſto eſt, nullo loco exclu-  
ditur: numquam intempeſtua, numquam moleſta  
eſt: itaque non aqua, non igni, vt aiunt, pluribus locis  
vitimur, quām amicitia. neque ego nunc de vulgari,  
aut de mediocri, que tamen ipſa delectat, & prodeſt,  
ſed de vera, & perfecta loquor: qualis eorum, qui pau-  
ci nominātur, fuit. nam & ſecundus res plenidiores  
facit amicitia, & aduersas patiens, communicansque  
leuiores. cūmque plurimas, & maximas commodita-  
tes amicitia contineat, tum illa nimirum preſtat omni-  
bus, quod bona ſpe prelucet in posterum, nec debilitati  
animos, aut cadere patitur. verum enim amicum qui  
intuctur, tamquam exemplar aliquod intuetur ſui.  
quocirca & abſentes adſunt: & egentes abundant: &  
imbecilles vident: & quod diſſicilius dictu eſt, mortui  
vivunt: tantus eos horos, memoria, defiderium profe-  
gitur amicorum. ex quo illorum beata mors videtur,  
horum vita laudabilis. Quod si exemeris ex natura  
verum benevolentia coniunctionem: nec domus villa,  
nec urbs ſtare poterit: ne agri quidem cultus permane-  
bit, id ſi minus intelligitur: quanta vis amicitia, con-  
cordieq; ſit, ex diſſenſionibus, atque ex diſcordiis per-  
cipi potest. que enim domus tam ſtabilis, que tam  
firma cinctas eſt, que non odiis, atque diſſidii fundi-  
ſis poſit euerti: ex quo, quantum boni ſit in amicitia,

indr.

indicari potest. Agragantinum quidem, doctum quon-  
dam virum, carminibus Græcis vaticinatum ferunt:  
qua in rerum natura, totōque mundo conſtarēt, queq;  
mouerentur, ea contrahere amicitiam, diſipare diſ-  
cordiam, atque hoc quidem omnes mortales & intel-  
ligunt, & re probant. itaque, ſi quando aliquod offi-  
tium exiftit amici in periculis aut adeundis, aut com-  
municandis: quis eſt, qui id non maximis efferat lau-  
dibus? qui clamores tota cauea nuper, hospitis, & ami-  
ci mei, M. Pacuvij in noua fabula? cūm, ignorante re-  
ge, uter eorum eſſet Orestes, Pylades Orestem ſe eſſe  
diceret, vt pro illo necaretur: Orestes autem, ita vt e-  
rat, Orestem ſe eſſe perſueraret. ſtantes autem plau-  
debant in reficta: quid arbitramur, in vera fuiffe fa-  
turos? facile indicabat ipſa natura vim ſuam: cūm  
homines, quod facere ipſi non poſſent, id recte fieri in  
altero indicarent.

## EXPLANATIO.

**S**PERO item Scœuole, } ſic decem mei. Spero idem Scœuole,  
quinque. Spero & idem Scœuole, vnuſ. Spero item &  
Scœuole, vnuſ, addito tamen } Et ſuperius. Spero itēmque  
Scœuole, vnuſ. Cū m ex te quar. } Quæ, pro, Cum, vndecim.  
Diſputabis, } ſic vnuſ. Diſputaris, nouem. Diſputaueris,  
ſeptem. Diſputaueritis, vnuſ. Diſputabis: rem ordine, ac me-  
thodo certa explicabis, vera conſirmando, contraria refuta-  
ndo. **Q**uid ſentias: } quam rationem putes eius eſſe oport-  
tere, cuiusmodi perſonæ ad eam ſint idoneæ. **Q**uae prece-  
pta des. } quo modo coledam ceneas, & quatenus. Non  
graueat, } vobis obſequi. Si milii ipſe confidere. } ſi  
eam facultatem diſſerendi eſſe putarem in me, vt ex tēpore  
tantam rem poſſem expedire. **P**RAECLARA viſares eſt: }  
vīla, non eſt in duodecim. **D**OCTORVM eſt ita conſue-  
tudo, } Academicorum, quorum patrium, & peculiarem

N. 4.

hunc morem fuisse, alibi testatur. Quem morem in iiii. de Orat. ad Gorgiam refert. His autem Academiae spatiis plus sc̄ eloquentiæ debere fatetur, quām rhetorum scholis. Vt q̄s proponatur, } Anteponatur, quattuor. Anteponetur, vñus. Mālē. Ponatur, tres. Inde, Pōsitiones, idest dīces. Tusc. I. Ponere iubebam, de quo quis audire velleret. Et: Quaestūculam pōnere. I. de Orat. Quānquam satis iis, qui aderant, ad id, quod erat pōstum, dictū videbatur. Et Fam. IX. Quod tu vnum ēr̄m̄us Dionis philosopho posuisti. MAGNVM op̄us est, } requirit magnūm ingenium, multiplicē doctrinā, exquisitā methodum. Nisi in hōc amicitiam esse non posse, } hoc ait & Lærtius in Zenone. Sallust. Iugurtha, in oratione Memmij. Eadem cupere, eadem odiſſe, eadem metucre, inter bonos amicitia, inter malos factio. Plato in Lyſide huius rei rationem reddit, quōd boni sunt similes inter se, ob idque amici: mali autem ne sibi ipſis quidem similes, nedum aliis. Quod & legitur apud eundem I. de Rep. & apud Arist. lib. 8. & 9. Moralium: & apud Isocratem in Parenētico. Nisi in bonis: pro, Inter bonos. Græco more, ILLI, qui &c. } Stoici. SVB TILIVS differunt, } sic vndecim. Tres, Inquirunt. Dūo, Dixerunt. Vnus, Differuerunt. Stultus dixerunt, vñus. Ad communem utilitatem, } officiū, quod ἀδελφοί μέτρον appellant. Off. I. FINGVNTRV, } docendi, & acuendi studij cauſa. SPERARE debemus, } sic vñus, reliqui omnes, Spectare. C. FABRICIVM, } vide Agellium lib. 4. cap. 8. & Valerium lib. 4. cap. 3. M'CVRIVM, } vide Valerium eodem loco. TI. CORINCANISMUS, } de Orat. III. Pomponius de orig. iuris. Florus Epit. 18. INVIDIOSVM, } Pythagoræ, Democriti, & aliorum. OBCSVRVM: } cuius nulla exempla extant, sicut perfecti officij. CONCEDANTQVE, } Que, non est in omnibus, vno excepto, in quo. Concedant tum, &c. Ne id quidem facient: } Nec, tres. PINGVI M̄merua, ut aiunt, } non exquisitis argumentis, rudijs, planis, auctoritatib⁹. FIDES, } quæ ut habeatur, duabus rebus effici potest, si existimabimur adepti coniunctam cum iustitia prudentiam. Off. II. INTEGRITAS, } Integri sunt, qui se corrumpi non sinunt. quod continentia est. adspicere. Vel, ἀγοραδια, sanitas totius animi. AEQVITAS, } Aequalitas, omnes libri mei. Aequalitatem vocat I. Off. cum item semper vultus, eadēmque frons est. LIBERALITAS: } quæ iustitia & ipsa pars est. quæ in dando, & accipiendo ver-

fatur,

satur, sed magis in dando. VLLA cupiditas, } Villa, non est in vno meo. Cupidas: avaritia, cupiditas pecunia, atque opum. LIBIDO, } amores impudici. AVDACTIA: } impetus animi, à rebus iniustis perpetrandi non abhorrens. SINT QVE } Sitque omnes: vno excepto, qui non habet nō Quic. MAGNA constantia, } in virtutis proposito perseverantia. SEQVNTRV, } Sic legendum. sic quinque mei. QVANTVM homines possunt, } quasi prorsus non licet. OPTIMAM rectē viuendi ducem, } omnes mei, Optimam bene viuendi ducem. Fulvij Vrsini liber, Optima rectē viuendi duce. PROXIME accederet, } sic vndecim. Adhæreret, duo. Aderet, deletum in vno, & supra pōstum, Accederet. Adhæreret, vel Accederet, duo. Adhiberet, vñus. Accederet: ad quemque: idest, vt quisque cūquie proximus, & coniunctissimus esset. PEREGRINI: } alterius nationis. PROPINQVI, } ex eadem oriundi familia. ALIENI, } nulla necessitudine naturali coniuncti, non cognati. Ex infinita societate &c. } sic omnes mei libri. EST autem amicitia } Amicitia definita. Est enim amicitia, sexdecim. Est vero amicitia, vñus. Ergo est enim amicitia, vñus. CV M benevolentia, & caritate } mutuo amore. SVMMA consenso. } sic octo. Summa. deest in septem. In duobus additum. Coniunctio, duo. EXCEPTA sapientia, } quæ virtutem omnem in se complectitur: nec ab ea separari potest. QVIDQVAM } Nihil, octo. BELLVARVM, } Epicureorum. de Fin. I. SVPERIORA caduca, } sic duo. Superiora sunt caduca, reliqui: vno excepto, in quo, Superiora sunt & caduca. IN fortuue temeritate, } quæ, cæca, alata, & globo volubili insistens pingitur. de qua Ouidius:

Nempe dat, & quodcumque libet Fortuna, capitque: Irus & est subito, qui modo Crœsus erat.

SVMMV M bonum } ad quod omnia referuntur. Arist. I. Eth. & Cic. de Fin. GIGNIT, & continet } nam amicitia ex virtute oritur & conseruatur. est enim genitrix, & nutritrix amicitia. Ex consuetudine vite, } sic quattuor. additur, Nostra, in reliquis. Nec metiamur eam, ut quidam docti, virorum magnificientia: } Nec eam metiamur, tres. Nec eam, vt q.d. verb. magn. metiamur, quatuordecim. quorum vñus, Ut quidam docti faciunt. Docti: sic omnes mei recte. intelligit Stoicorum imaginariam perfectionem: quos nequaquam pro indoctis habet. Siquidem opinioni illorum derogat,

doctrinæ minimè derogat. **GALLOS**, } C. Sulpitium Gal-  
lum, supra. **PRINCIPIO**, quis potest esse vita vitalis, } pro. Qui  
omnino viuit. Fuluij liber, Cui potest &c. Principio qui-  
dem, q. &c. vnuſ. Qui, septem. in quorum vno additum ſupra,  
S. In vita vitalis, vnuſ. Qui potest esse vitalis, vnuſ. Qui po-  
tent vita vtilis, vnuſ. In amici mutua benevolentia conqueſteat, }  
in extremo hoc Lælio: Vicim ſenes in adolescentium ca-  
ritate acquiescimus. **Quid dulcius?** } Quid enim dulcius,  
quinque. Quid dulcius eſt, tres. **Q u o c v m o m n i a a u d e a**  
**f i c l o g i , v t t e c u m ?** } de cuius fide, & taciturnitate non dubites;  
cuius conſcientiam minūs timeas, quām tuam, ait Seneca. Te-  
rentianus Chremes:

Nemo eſt meorum amicorum hodie, apud quem ex-  
promere omnia mea occulta,

Clitipho, audeam.

Vide Ouidium Trist. lib. 3. eleg. 6. **ADVERSA S vero ferre?**  
Aduersa ſero res ferre, tres. **Q u i illas grau.** } Illas, non eſt  
in duobus. Illa, vnuſ. Qui etiam illas grau. duo. Qui illas &  
graу. vnuſ. **O P P O R T U N A E f u n t s i n g u l e r e b u s f e r e s i n g u l i s ?** }  
ideſt, earum vtilitas non ita late patet, nou habent vſum tam  
multiplicem, quām amicitia. **O p p o r t u n a e f u n t s i n g u l a :** Op-  
portunæ f u n t & singula, vnuſ. Opportunæ f u n t ferē  
singula, vnuſ. **V t r i t a r e :** } nam diuitiarum finis vſus eſt.  
**V t c o l a r e :** } vt habeas plures famulos, multos equos,  
magnificas edes. **V t laudare:** quod fieri non potest ſi  
ne praefanti virtute. **D o l o r e c a r e a s , & m u n e r i b u s f u n-**  
**g a r e corporis :** } Vt mun. duo. Dolore careas: vires, vt  
mun. f. corp. duo. **P l u r i m a s r e s** } immo omnes,  
**N v m Q u a m i n t e m p eſt i a ,** } Plautus Mercatore:

Quamquam negotium eſt, ſi quid vis, Demiphō,  
Non ſum occupatus vñquam operam dare amico.

**N v m Q u a m m o l e ſ t a** } Horatius:

At, pater vt gnati, ſic nos debemus amici  
Si quod ſit vitium, non fastidire. &c.

**D e vulgari,** } quā ex vtilitate tantum, & iucunditate emi-  
mur. **D e vera, & perfecta,** } que ex mutuo bonorum conſenſu  
conſtat: cuiusque cauſa efficiens eſt mera virtutis admiratio.  
**Q u i pauci nominantur,** } Per pauci, vnuſ. in altero addi-  
tum, Per. Numerantur, vnuſ meus. Intelligit autem amico-

rum paria. **SPLENDIDIORES** } vt in nuptiarum apparatus.  
**B O N A ſ p e }** Bonam ſpem, ſex. pro, ſpem oſtendere tam-  
quam lucem quandam prælatam. Sic Lucretius lib. I. Lumen  
præpandere. Bon. ſemper ſp. duo. in quorum vno ſupra addi-  
tum nō Semper. **P R A E L Y C E T** in posterum, non modò pra-  
ſentibus malis medetur, ſed etiam veluti occidentis Solis ru-  
befientes nubes futuram animorum ferentiam pollicetur.  
**C A D E R E** } desperare penitus. **V E R V M enīm amicum qui**  
**i n t u r a t,** } ſic tres. Etiam, pro Enīm, quindecim. Etenim,  
pro, Enīm, Fuluij liber. **E X E M P L A R** } Exemplum, vnuſ.  
Exemplare, vnuſ. **A B S E N T E S adſunt,** } nam amici non  
minūs absentium, quām praefentium, memincentur: eos a-  
mant, colunt, corūnque partes agunt. Inde Iſocrates, ve-  
ros amicos à fictis diſtinguens, ait: *Oι μὲν τοῦτοι ἀνθράκες την πόλιν, οἱ δὲ καὶ παρεχοῦσσιν τὰ πάντα.* **E G E N T E S** abundant: }  
nam, vbi amici, ibi opes: amicorum omnia communia. **I M-**  
**B E C I L L E S valent:** } nam amici id praefant, quod illi ipſi per  
valetudinem non poſſunt. Ouidius lib. I. de Ponto ad Ru-  
ſinum. Et Seneca lib. Epift. 10. Imbecilli, tres. **M O R T V I vi-**  
**u n t :** } quia ab amicis ſuperstitiosus honorantur, deſi-  
derantur, crebra eorum fit mentio: vt non tam eſſe mortui,  
quām peregre abiſſe videantur: & cum quidem in locum,  
in quem non multo pōst & ceteri ſint peruenturi. **T A N T V S**  
**e o s h o n o s ,** } Tantum, tres. Ex quo illorum beata mors } quo-  
rum felicitas etiam poſt obitum duret. **H O R V M** vita lan-  
dabilis. } propter conſtantem amicorum culturam, dem-  
pta omni ſpe vtilitatis. vnde appetat, honeſtate illos, non  
emolumento, duci. Ex naturarerum } humanarum. **B E N E**  
**V O L E N T I A E coniunctionem:** Mentionem, duo. Iunctionem,  
vnuſ, Vincionem, alijs ex ver. lib. Quo verbo vitur Varro  
libro 4. de lingua Latina. **N E a g r i quidem cultus** } fine  
hominum ſtudiis. Off. II. nam ad haec potius referre hoc pla-  
cat, quām ad tempeſtates. cum hic de moribus, non de na-  
tura rerum, diſſeratur. **C O N C O R D I A E Q V A E .** } inde  
Sallustius: Concordia, paruꝝ res crescent: discordia, maximæ  
diſlubuntur. **A T Q U E ex discordia** } nō Ex non eſt in duo-  
decim. **P E R C I P I** } Intelligi, vnuſ meus. Sed glosse-  
maest ad, Percipi. **A G R A G A N T I V M** } Empedoclem. vi-  
de Plut. in libro de Iside, & Osiride: quamquam aliter Aristo-  
teles lib. 8. Ethicorum. & Simplicius lib. I. Phys. & lib. I. de Ca-  
lo. Ambitiosissimus omniū, vt ſe iam ardēntis **A t u a ſ p e c u m**

nocte intempesta deiecerit, ut, cum repente non apparuerit, abiisse ad eos crederetur. Laetantius lib. 3. cap. 18. Strabo lib. 6. Vide de eo & Laetantium de orig. err. cap. 13. Laetitium in Parmenide, Agellium, Plinium, Quint. lib. 3. cap. 1. In serum natura } Vide Plut. in Placitis lib. 1. cap. 3. & cap. 30. Inde Ouidius:

Dissociata locis concorde pace ligavit.

Vide & Eryximachi apud Platone in Conuiuio sententiam. Et reprobant, } sic duodecim. Et approbant, duo. Atque probant, vnuus. Et intelligunt, & reprobant: inde Euripides:

*Tz̄ χρήστ' εἰς τείχεα καὶ γνώμενος εἰς τείχους οὐ.*

Et Senecca: In istum etiam malis, probare meliora. In periculis aut adeundis, aut communicandis, } amicitiae experimenta sunt Isocrati, ἡπειρὸν δέ τινες αὐτούς, καὶ εἰ τοῦ καθεύδει νοεῖν, C A V E A } area in theatro. Ridicule nomen tragœdia non nulli putarunt. Hos p̄it̄is, & amici mei, M. Pacunū in noua fabula: } In hospitio, & amici &c. omnes mei libri. Mei non est in uno. In amici mei, & hospitio, nouem. Nota, vnuus. Ante Hosp. Fuerunt, vnuus. Fuerunt quattuor. PYLADES Orestem & esse } vide Ouidium Trist. lib. 4. eleg. 4. & Manilium. STARES autem plaudebant. } Autem, non est in tribus. Stantes in re sita plaudebant, vnuus. Sunt, qui Flentes, legat, quod fieri solitem, legitur apud Isocratem in oratione ad Nicoclem, & Panegyrico. IN resitā } à minori ad maius. FACIĀ indicabat ipsa natura vnuus suam: } significat, naturam conciliatricem esse amicitia: quia si negligatur, id depravata consuetudine fieri. T V M homines, quod facere ipsi non possent, } sic nouē. Ferē, (pro Facere,) vnuus. Quidem, pro Quod, vnuus. Ipsi facere, vnuus. Cum homines, quod facerent, vnuus. Cum homines quidem quod facere, tres. Possunt, duo. Quod facere ipsi non possunt: propter ~~ca~~z̄w̄t̄ prauā, & animi imbecillitatem. ID recte fieri in altero iudicarent. } sunt hi candidiores, & meliores hominibus, vt ait Comicus, imperitis, qui nihil, nisi quod ipsi faciunt, rectum esse censem. Inuidi vero sunt omnium pessimi, qui etiam præclarisimis facinoribus obtestant, sed que aliqua vitij labe contaminare nituntur.

### C I C E R O.

H Astenus mibi videor, de amicitia, quod sentire, potissimum dixisse. si quæ præterea sunt, (credo autem

tem esse multa) ab iis, si videbitur, qui ista disputant, queritote. FAN. Nos autem à te potius, quamquam etiā ab ipsis sepe quæsini, & audiui, non inutus equidem: sed aliud quoddam experimus filum orationis tue. SCAE. Tum magis id diceres, Fanni, si nuper in horis Scipionis, cum de republica disputatum est, affuisse, qualis tum patronus iustitia fuit contra accuratam orationem Phili? FAN. Facile id quidem fuit, iustitiam, iustissimo viro, defendere. SCAE. Quid amicitiam? nō ne facile ei erit, qui, ob eam, summa pide, constantia, iustitiaque seruatam, maximam gloriam ceperit? LAE. Vm hoc quidem est afferre, quid enim refert, qua ratione cogatis? cogitis certè, studiis enim generorum, praesertim in re bona, cum difficile est, tum ne eorum quidem obſtere. Sapissime igitur mibi de amicitia cogitanti, maxime illud considerandum videri solet, nū propter imbecillitatem, atque inopiam desideranda, sit amicitia, vt in dandis, recipiendisque meritis, quod quisque minus per se posset, id acciperet ab alio, vicissimque redderet: an esset hoc quidem proprium amicitie, sed antiquior, & pulchrior, & magis à natura ipsa profecta alia cauſa esset. amor enim, ex quo amicitia est nominata, princeps est ad benevolentiam coniungēdār, nam utilitates quidem etiam ab iis percipiuntur sepe, qui simulatione amicitiae coluntur, & obseruantur temporis cauſa: in amicitia autem nihil fictum, nihil simulatum: & quidquid in ea est, id & verum, & voluntarium est, quapropter à natura mibi videtur potius, quam ab indigentia, orta amicitia, applicatio magis animi cum quodam sensu amandi, quam cogitatione, quantum illa utilitatis esset habitura, quod quidem, quale sit, etiam in bestiis quibusdam animad-

ueri potest, que ex sensatis ita amant ad quoddam tem-  
pus, & ab eis ita amantur, ut facile carum appareat  
sensus, quod in homine multo est evidenter: primum ex  
ea caritate, que est inter natos, & parentes: que diri-  
mi, nisi detestabilis celere, non potest: deinde, dum simili-  
bus sensus exstiterit amoris, si aliquem natu sumus, cuius  
cum moribus, & natura congruamus: quod in eo quasi  
lumen aliquid probitatis, & virtutis perspicere videa-  
musr: nihil est enim amabilius virtute: nihil, quod magis  
alliciat homines ad diligendum: quippe cum pro-  
pter virtutem, & probitatem eos eriam, quos numquam  
vidimus, quodam modo diligamus. quis est, qui C.Fa-  
bricij, M.Curi cum caritate aliqua, & benevolentia  
memoriam non usurpet, quos numquam viderit? quis  
autem est, qui T Aquinum Superbum, qui Sp. Casiu-  
m, Sp. Malium non oderit? cum duobus ducibus de impe-  
rio in Italia decertatum est, Pyrrho, & Hannibale: ab  
altero, propter probitatem eius, non alienos animos ha-  
bemus: alterum, propter crudelitatem eius, semper hec  
ciuitas oderit. quod si tanta vis probitatis est, ut  
eam vel in eis, quos numquam vidimus, vel, quod  
maius est, in hoste etiam diligamus: quid mirum, si  
animi hominum moueantur, cum eorum, quibus-  
cum usu coniuncti esse possunt, virtutem, & bonitatem  
perspicere videantur? quamquam confirmatur  
amor & beneficio accepto, & studio perspecto, & con-  
suetudine adiuncta. quibus rebus ad illum primum  
motum animi, & amoris adhibitis, admirabilis qua-  
dam exarescit benevolentia magnitudo, quam si  
qui putant ab imbecillitate proficisci, ut sit per quam  
quisque aequatur, quod desideret: humilem sane re-  
linquunt, & minime generosum, ut ita dicam, ortum  
amicitiæ:

amicitiæ: quam ex inopia, atque indigentia n. s. am  
volunt. quod si ita esset: ut quisque minimum in se ef-  
se arbitraretur, ita ad amicitiam esset aptissimus. quod  
longè secus est. ut enim quisque sibi plurimum confidit,  
& vi quisque maximè virtute, & sapientia sic muni-  
tus est, ut nullo egeat suaque omnia in se ipso posita in-  
dicet: ita in amicitiis expedendis, colendi, sive maxime  
excellit. quid enim? Africanus erat indigens mei? mi-  
nimè hercule, at ne ego quidem illius. sed ego, admira-  
tione quadam virtutis eius, ille vicissim, opinione  
fortasse non nulla, quam de meis moribus habebat, me  
dilexit. auxit benevolentiam consuetudo sed, quāquam  
utilitates multæ, & magna consecutæ sunt: non sunt ta-  
men ab earum spe causa diligendi profectæ. ut enim  
benefici, liberalisque sumus, nō ut exigamus gratiam,  
(neque enim beneficium feneramur) sed natura pro-  
pensi ad liberalitatem sumus: sic amicitia, non spe mer-  
cedis adducti, sed quod eius omnis fructus in ipso amo-  
re inest, expedendam putamus. Ab ijs vero, qui pecudie  
ritu, ad voluptatem omnia referunt, longè dissidentius:  
nec mirum: nihil enim altum, nihil magnificum, nec  
diuinum suspicere possunt, qui onnes suas cogitationes  
abiecerunt in rem tam humilem, tamq. contemptam.  
quamobrem hos quidem ab hoc sermone remoueamus:  
ipsi autē intelligamus, à natura gigni sensum diligēdi,  
& benevolentia caritatē, facta significatione probitatis:  
quam qui appetinerunt, applicant sese, & propriū ad-  
monent, ut & usi eius, quae diligere cœperunt, fruatur,  
& moribus: sintq. pares in amore, & aquales, propen-  
sioresq. ad bene merendum, quam ad reposendum:  
atq. hoc inter eos sit honesta certatio. sic & utilitates  
ex amicitia maxime capiuntur: & eru eius ortus a natu

*ra, quam ab imbecillitate, granior, & verior nam, si utilitas amicitias conglutinaret, eadem commutata dissolueret: sed, quia natura mutari non potest, siccirco vera amicitia sempiterne sunt. Orum quidem amicitiae videtis: nisi quid adhuc forte vultus,*

## EXPLANATIO.

**P**O TISSIME dixisse. } omnes mei libri veteres habent,  
Potuisse dicere. EXPETIMVS } sic septem. Nouem,  
Exspectamus, vnum, Petimus, sed sup. additum. Ex, vnum, Epe-  
tēz. Sunt, qui verba hæc expungant. FILVM } sex, sive, (vt  
Quintilianus) corpus eloquentiæ: Elocutionem. nam in-  
uentio est anima. Metaphora sumpta à re textoria. TVM  
magis id dices, Fanni. } est hoc præsumi: auctoritz. vide Ag-  
gellum lib. i. cap. 6. DISPUTATIVM } est, } hanc disputa-  
tionem Cicero sex libris de Rep. complexus est. PATRO-  
NVS } cuius mens etiam in scriptis spirauit, in Bruto. AC-  
CVRATAM orationem Phili. } sic omnes mei. alij scribunt esse  
in vet. libro. Accusatam. ex quo reponunt, Accusant. De  
Philo, in Bruto: L. Furius Philus perbene Latinè loqui puta-  
batur, litteratiisque, quam ceteri. Vide & Laet. lib. 5. cap. 12.  
*Accusatam: ingeniosè cogitatum.* IUSTITIAM *infissimo vi-*  
*ro* } rectius enim artifex de artificio tractabit. AMICI-  
TIAM? } quam cum iustitia in eodē esse, Aristoteles scriptum  
reliquit. NON NE facile erit, } Erit, pro Erit, nouem. Fuit,  
vnum. Erat, duo. In quinque non legitur. In uno erat, sed dele-  
tum. SERVATAM, sic quinque. Decem, Seruata, Vnus, Re-  
seruata. Vnus, Reseruata. Vnus, Seruant. Malè, GLORIAM  
ceperit } Gloria est virtutis ymbra, quæ etiam inuitos sequitur.  
*Quo modo autem Gloria capiatur, vide Off. 2.* STUDIIS  
generorum} vehementi cupiditat. NVM propter ere }  
sic vnum. Vnus, Verum propter. Reliqui, Vtrum propter. DIS-  
SIDERANDA sit amicitia, } Desiderata, sex. Considerata, v-  
nus: malè. VT *indandis*, } In, non est in undecim. In duobus  
additum. QVO D quisque } Quo, sex. Quo, sed additum D,  
in uno. PER se posset, } Per se ipse poss. undecim. Perfe-  
minus

minus poss. quinque. Possit, vnum. AB ALIO, } AB aliquo, vnum.  
AB aliis, duo. AB illo, vnum. Malè. ANTIQVIOR, } amici-  
tiae causa queritur. Antiquior: Inde Præiosæ res Antiquæ  
dicuntur. PROFECTA alia causa esset. } Esset, non legitur in  
septem. in quorum uno additum. Est, pro Erit, undecim.  
Profecta, sive, Perfecta, delendum putat Lambinus. contra  
omnes veteres libros. AMOR enim, &c. } Cic. lib. II. de Fin.  
Quid est autem Amare, è quo nomen Amicitia ductum est;  
nisi, velle bonis aliquæ affici quam maximis, et si ad se ex his  
nihil redeat. PRINCEPS est } principatum obtinet in ami-  
citia concilianda. UTILITATES } ex quibus vulgus amici-  
tias probat. AB indigentia, } AB, non est in uno. AB ipsa in-  
digentia, vnum. AB imbecillitate, alias legebatur. SENSI  
amandi, } ut vterque mutuum amorem sentiat. QUANT-  
ITVM illa utilitatis } Quantum illa res vtil. sexdecim. Quam  
illa res vtil. vnum. Quantum illa res esset vtil. vnum. QUI-  
BVS DAM } sic omnes mei libri. Aliás, Quiddam. ANI-  
MADVERTI } Adverti, vnum. Ex se natos ita amant, } hoc o-  
mnibus animalibus ex aequo naturæ lex dedit. OFF. I. Vide  
& Plinium lib. ix. & ix. AD quoddam tempus, } nam adulos  
negligunt, quod toto die videmus. SIMILIS } Simul, duo.  
Contumilis, tres. IN eo quasi lumen aliquod probitatis, } Fam. lib.  
III. Insignia virtutis multi etiam sine virtute assecuti sunt.  
talium virorum tanta studia assequi sola virtus potest. PERS-  
PICERE } sic vnum meus. Reliqui, Prospicere. NIHIL est  
amabilius virtute: } Virtus maximè omnium rerum bencou-  
lentiam conciliat, sola propter se experitur, reliqua omnia  
propter ipsam. ALLICIAH homines ad diligendum. } Homi-  
nes, non legitur in quindecim. C. FABRICII, M' CURY, }  
& similius optimorum. ET probitatem eos etiam, } Et probi-  
tatem etiam eos, quindecim. Duo Probitatem, & virtutem.  
MEMORIAM non usurpet, } sic vnum. Reliqui non habent &  
Non. QVOS numquam viderit, } sic omnes mei. Aliás, Nu-  
quam. TARQVINIVM Superbum, } qui cognomen traxit ex  
moribus. Florus. De eo vide Liuium lib. 2. Plut. in Publico-  
la, Dionysium lib. IV. SP. CAESIUM, } cui Buscelino cogno-  
men fuit. de quo in or. pro domo, Plin. lib. xxxiv. cap. 4.  
Valer. lib. vi. cap. 3. SP. MALIUM } Liu. lib. iv. Plut. in Bruto.  
Cic. or. pro domo, Valerius ibidem, Off. II. Catil. I. Florus  
lib. i. cap. vlt. CV M duobus ducibus } sic sexdecim. Cum duo:

bus ducibus est in Italia de imp. vnuſ. PYRRHO, } cuiusvitam scribit Plut. Vide Florum. Epit. xiiii. & xv. Oroſium lib. iv. cap. i. Iuſtinum lib. xvii. & xix. Agell. lib. xvii. cap. vii. Plin. lib. ix. cap. 6. HANNIBALE. } Liuſius. PROBITATEM eius, non alienos animos habemus, } ſic quinque. Prob. eius non minis, non alien. an. hab. decem. Prob. ſuam, non minus alien. an. hab. vnuſ. Prob. eius, non nimis alien. an. hab. duo. Quam veram lectionem puto, & inde factum, Nominis. CRYDELI TATEM eius, } Eius, non eſt in quattuor. rectiuſq. abeſt. QVID mirum, ſi } Quid mirum eſt, ſi, quattuordecim. MOVEANTVR, } incitentur ad mutuum amorem. CONIVNCCTI eſſe poſſunt, } ſic omnes, vno excepto, in quo, Poſſim. Alias, Poſſimus. PERSPICERE } Proſpicere, vndeſim. STUDIO perfecto, } benemerendi de nobis. CONSVENTU DINE adiuncta, } quaſi congruant in genia, amicitiam conſiſmat: ſin diſcrepat, dirimit. QVAM ſi qui putant, } Quam ſi quis putat, duo. PER quam quifque aſſequatur quod defideret: } Per quam aſſequatur quod quicquid def. in quoniam. Per quam illud quod qu. def. quattuor. Per quam conſequitur quod qu. def. vnuſ. NATAM volunt. } ſic omnes, excepto vnuſ, in quo Nata. Lambinus, Nasci. Vt quifque minimum in ſe eſſe arbitratur, } virtutis, & probitatis: ideſt, quo quifque egentior eſſet, coetiam aptior foret ad amicitiam. Male alias, Vt quifque valetudinis minimum in ſe eſſe arb. Quo modo & vnuſ ex meis. QVID enim? } vide Agelliū lib. xvii. cap. 5. AFRI CANVS erat indigens mei? } ſic tres. Africanus indigens mei fuit, vnuſ. Africanus fuit indigens mei, duo. Africanus indigens mei, reliqui. HERCULE. } Hercle duodecim. At ne ego quidem illius. } Ac, nouem. An, duo. (NEQVE embeſſum feneramur) } vnuſ meus tollit nō Enira. Sunt, qui parenthesim tollant, & legant, Feneremur. EIVS omnis fructus in ipſo amore inſit, } ad Appium, Fam. lib. iiii. ep. vlt. Itaque mihi propono fructum amicitiae noctrae, ipsam amicitiam, qua nihil eſt vberius, præſertim in iis studiis, quibus vterque noſtrum deuinetus eſt. nam tibi me profiteor & in rep. ſocium, de qua idem ſentimus, & in quotidiana vita coniunctu cum iis artibus, ſtudiisque, quaſi colimus. PE CV DVM ritum } hos, de Officiis, Homines nomine tantum, non re, appellat. SVSPICERE } ſic recte & in duobus meis. A. NATURA gigi &c. A, non eſt in nouem. VT & ſi eius, } Et, non legitur in vno,

vno. Illius, quattuor. AD bene merendum, } Ad bene prome rendum, tres mei. ATQUE hec inter &c. } Atque hoc inter, tres. Atque inter, ſex. Atque ſit inter eos &c. vnuſ. CERTATIO. } Concertatio, quinque. Huiusmodi ſunt illa, Fam. lib. 7. Vide, quanti apud me ſis, etli iure id quidem: non enim amore te vinceo. Alibi dixit, Ut officiis inter ſe certent, quibus alter alterum vel vincat, vel equo animo vincatur. MAXIME capientur: } ut fructus ex arboribus. ET erit eius ortus à natura, } Malè alias, &c. in vno meo. Et erit portiū eius ortus à nat. Et in alio meo. Et erit eius ortus à natura portiū. EADEM contumata } Ilocrates, ad Demonicum: Ταῦτα διὰ τὸν συνθέτον ὀλίγως χρέος δέλνεται, τάξ τε τῶν στραταλεων εἰνὶς αὐτὸν ἐχετέσθε. Vide & Senecam lib. i. ep. 9. NATURA mutari non potest, } quam licet expellas furca, tamen vique recurret, Horatius. NATURA: vniuerſi. ICCIRCO vere amicitie ſem pterne ſunt. } nam natura pulchri desiderio capit, ex Socrate in Platoni Coniuio. VERE amicitie: quas virtus con glutinavit. ADHOC } Adhac, octo mei. Ad hoc, quatuor. FORTE } pro, Fortaffe. ad Attr. lib. 8. ep. 3. & lib. 3. de Orat. Fortaffe, duo mei. VVLTIS. } Veltis, tres mei. Velle tis, vnuſ.

## CICE RO.

FAN. Tu verò perge, Leli, pro hoc enim, qui minor eſt natu, meo iure repondeo. SCAE. Recete tu quidē. quāobrem audiamus. LAE. Audite verò, optimi viri, ea, qua ſapifimè inter me, & Scipionem de amicitia diſſerebantur, quamquam ille quidem nihil diſſicilius eſſe dicebat, quam amicitiam vſque ad extreſum vi ta diem permanere: nam, vel ut non idem expediret vtriſque, incideſe ſape: vel ut de republica non idem ſentirent. mutari etiam mores hominum ſepe dicebat, aliás aduersis relatis, aliás etate ingraueſcente. atque ea rum rerum exēplum ex ſimilitudine capiebat ineun tis etatis: quod summi puerorum amores ſape vna cum praetexta, ſumpta toga, deponebantur: ſin autem ad

adolescentiā perduxissent, dirimi tamen interdum cōtentione, vel luxuria cōdicionis, vel commodi alicuius, quod idem adipisci uterque non posset: quod si qui longius in amicitia proiecti essent, tamen sepe labefactari, si in honoris contentionem incidissent: peste enim maiorem esse nullam in amicitiis, quam in plerisque, pecunie cupiditatem, in optimis quibusque honoris certamen, & glorie: ex quo inimicitiias maximas sepe inter amicissimos exstiterit: magna etiam disfidia, & plerūmque iusta nasci, cum aliquid ab amicis, quod rectum non esset, postularetur, ut aut libidinis ministri, aut adiutores essent ad iniuriam: quod qui recusaret, quamvis honeste id facerent, ius tamen amicitiae defere arguerentur ab ipsis, quibus obsequi nollent: illos autem, qui quiduis ab amico aderent postulare, postulatione ipsa profiteri, omnia se amici causa esse facturos: eorum querella inueterata non modo familiaritates extingui solere, sed etiam odia gigant maxima, atque semipiterna: hac ita multa, quasi fata, impendere amicitias, ut omnia subterfugere, non modo sapientie, sed etiam felicitatis diceret sibi videri. Quamobrem id primum videamus, si placet, quatenus amor in amicitia progredi debeat. Num, si Coriolanus habuit amicos, ferre contra patriam arma illi cum Coriolando debuerent: num Buscelinum amici, regnum appetentem, num Sp. Malium iuuare debuerunt? Tiberium quidem Gracchum, remp. vexantem, à Q. Tuberone, equalibusque amicis, derelictum videbamus. at C. Blossius Cumanus, hospes familia vestra, Scoula, cum ad me, qui aderam Lenati, & Rupilio consulibus in consilio, deprecatum venisset: hanc, ut sibi ignorcerem, causam afferebat, quod tanti Ti. Cracchum fecisset,

vt, quidquid ille vellet, sibi faciendum putaret. tum ego, etiamne, inquam, si te in Capitoliū faces ferre vellet? numquam, inquit, voluisset id quidem: sed, si voluisset, paruisse videtis, quā nefaria vox. & hercle ita fecit, vel plus etiam, quam dixit: non enim paruit ille Ti. Gracchi temeritati, sed profuit: nec se comitem illius furoris, sed ducem, præbuit: itaque hac amentia, quaestione noua perterritus, in Asiam profugit: ad hostes se contulit: pœnas reip. græves, iustasq; persoluit. nulla est igitur excusatio peccati, si amici causa peccaueris. nam, cum conciliatrix amicitia virtutis opinio fuerit: difficile est amicitiam manere, si à virtute defeceris. quod si rectum statuerimus, vel cōcedere amicis, quidquid velit: vel impetrare ab amicis, quidquid velimus: perfecta quidem sapientia sumus, si nihil habeat res vitij: sed loquimur de ipsis amicis, qui ante oculos sunt, quos videmus, aut de quibus memoriam accepimus, quos nouit vita cōmuniſ. ex hoc numero nobis exēplum sumenda sunt, & eorum quidē maximē, qui ad sapientiam proximè accedunt. Vidiimus Papum Aemilium C. Luscinio familiarē fuisse, (sic à patribus accepimus) bis vñā consules, & collegas in cēſura. tum etiam, cum ipsis, & inter se coniunctissimos fuisse Man. Curium, & Ti. Coruncaniū, memoria traditum est. agitur ne suspicari quidem possimus, quemquam horum ab amico quippiā contendisse, quod contra fidem, cōtra iusfirādum, contra remp. esset. nam hoc quidē in talibus viris quid attinet dicere: si cōtendisset, scio impetraturum nō fuisse, cum illi sanctissimi viri fuerint. aquæ autē nefas sit, stale aliquid & facere rogatum, & rogare. At verò Ti. Gracchū sequebatur C. Carbo, C. Cato, & minimē tunc quidem Cainus frater, nūc idem acerrimus hostis.

## EXPLANATIO.

**M**INOR est *sabato*, } in Bruto. **A**VDITE vero, } Ergo, pro  
Vero, quinque. **A**d extremum vite diem } sic tredecim.  
Vnus, Ad extremum vita tempus. Quattuor, Ad extremum  
vita. **Q**uod fortasse rectius. Ut nō Dieri, & Tempus, sint glos-  
semata. **N**on idem sentirent, } sic vñus, vñus, Sentirentur re-  
liqui, Sentiretur. vno excepto, i quo abest. **M**VTARI mores  
*homium*, } Horatius:

Oderunt hilare tristes, tristēmque iocosi,  
Sedatum celeres, agilem, gnatūmque remissi.

**A**LIAS, aliās } sic omnes mei: vno excepto, in quo, Aliis,  
alibus. Lambinus notat esse in vet. libris, Alios, alios. Legitique,  
Aliorum, aliorum. **C**um praetexta toga, } sic recte septem  
mei. Cum praetexta, vel toga, vñus. Cum praetexta, & toga,  
quinque. Cum praetexta & sumpta toga, duo. Cum praetexta  
assumpta toga, tres. **D**E PONERENTVR: } Ponenterunt,  
sex. **S**IN autem ad adolescentiam perduxissent, } duriusculè o-  
mnino, Siamores vtque ad adolescentiam perduxissent: pro,  
Perduti essent. Placeret, Peruenissent: vel, Perdurassen, quod  
olim in Variis Lectionibus à Patre notatum est, sed veterem  
librum, qui ad stipuletur, nullum inuenio. Produxissent,  
duo. **D**IRIMI tamen interdum contentione, vel luxurie condicione,  
& commodi aliquis, } hic ego, quid quisque sentiat,  
non referam: meam ipse breuiter sententiam exponam,  
comprobataam quinque meis veteribus libris. Duas causas  
ponit, cur dirimantur amores in adolescentia, qui fuerunt  
a pueritia summi: vnam, quia propter luxuriam conten-  
dat, quod alius alij preferri velit: alteram, propter com-  
moda, que sibi quisque appetat. Nihil sane, nisi verbum  
Condicio, perturbasse videtur hunc locum. Quod tamen  
aptè, vt opinor, & propriè sic explanatur: *Condicionis luxuria*:  
quod meliore vñus quisque condicione velit esse in luxuria.  
ex quo oritur contentio. *Luxurie condicione*: Luxuria, at  
Festus, morum est solutio. **I**N amicitia proiecti, } In ami-  
citiam proiecti, quattuor. **I**N amicitia, } nō abest a duobus.  
**Q**uod rectum non esset, } quod cum officio pugnaret.  
**L**IBIDINIS ministri, } in prodenda suorum, vel violanda  
aliorum pudiciuia. **A**DIVTORES ad iniuriam: } vel ad  
opprimendos infantes, vel ad opes, & honores per fas,  
& ne-

& nefas consequendos. **Q**VAMVIS honestè id facerent, }  
nam, quod iniuste petitur, iure negatur. **S**ED etiam odia gi-  
gni maxima, atque sempiterna, } vñus, Sed etiam odia gigni  
folere sempiterna, reliqui, Sed etiam odia gigni sempiterna.  
**H**AEC ita multa, } Itaque, quattuor. **Q**VASI fata, } sic  
omnes mei libri. Fato, Langius. **I**MPENDERE } sic omnes  
mei. vñus, Imminere, impendere. Ut alterum, Imminere scili-  
cet, sit glossema. **C**ORIOLANVS } Plutarchus, Halicarna-  
eus lib. 7. & 8. Luius lib. 2. de vir. ill. cap. 19. Val. lib. 5. cap. 2. &  
4. Florus lib. 1. ca. 22. Appianus lib. 1. bell. ciu. **B**VS CELINVM }  
in magna veterum librorum varietate, ex iis elicio conie-  
cturam meam, qui habent, Vulselinus, & Beccelinus, & Visce-  
linus, & ex Dionysio, in quo, Οὐσελίνος. Nam, Buscelinus, vo-  
cabulum est, cuius etymologia cognoscitur: cùm alij, cur a-  
liter legant, certam rationem non afferant, nec, ut arbitror,  
afferre possint. Buscelinus autem à Græca particula *Bou*,  
qua in compositione auget, & à Σιλος, quod est Crus, deduc-  
tur: quod insignis esset magnitudine crurum, vnde notari,  
& disiungi ab aliis proprio cognomine debuerit. Sp. Cassius,  
nec enim arbitror, Cassia gentis commune, sed proprium  
huius Cassij cognomen fusile, qui postea regni affectati cri-  
mine necatus est. Neminem enim, præter hunc, sic appellatum  
reperi. **S**ic Bucephalus, Buccæturus, & alia, de Graco fon-  
te nomina deriuata. Decem mei, Beccellum. Vnus, Beccelli-  
num. Vnus, Beccillum. Tres, Beccilium. Vnus, Beffilium. Vnus,  
Astillinum. Ab vno deest. **I**VARE } Adiuuare, sex. **T**i.  
**G**rachum, } Plutarchus, App. libro 1. de bell. ciu. de vir. ill.  
cap. 64. Flor. lib. 3. cap. 14. Epit. 58. & 59. Oros. lib. 5. cap.  
8. & 9. Sall. Iugurtha, Porcius Latro in Catilinam, Val. lib. 1.  
cap. de Ausp. lib. 3. cap. de Fortitudine, lib. 4. cap. de Amicitia,  
lib. 7. cap. de sapienter dictis, & factis, Aug. de ciu. D. lib. 3.  
cap. 24. **Q**. **T**UBERONE, } homine Stoico, & austero. de  
quo pro Murena, & de claris oratoribus, Valer. lib. 7. cap. 5.  
Pomp. de orig. iuris, Plut. in *Æ*milio, Plin. lib. 8. cap. 17. **Æ**-  
**Q**VALIBVSQ. **a**mici } M. Octavius, Plut. & Appianus. Bl. os-  
sivs } Blosius, tres. Bosius, duo. Blesius, vñus. Glosius, vñus.  
reliqui, Bisius. In Valerio lib. 4. cap. 7. & Plut. Blosius. Antipa-  
tri, Tharsensis philosophi, discipulus. Cic. in Rullu, & Plutar-  
chus in Gracchis, qui tribuit Naïscæ, quod hinc Lelius de senar-  
iat. sed cū Cicerone facit Valerius lib. 4. c. 7. **F**AMILIAE vestre }

Nostræ, nouem. *Qvi aderam* } cuius consilio præcipue  
consules vebantur. Valerius. Quo aderam, nouem, Rupi-  
lio. } si cocto recte. vñus, Rupellio. duo, Rupillo. vñus, Rupi-  
lio. duo, Rupilio. vñus, Rutulo. tres, Rutilo. Malè omnes. IN  
*confilio*, } in quo, quid agendum cōtra socios Ti. Gracchi de-  
liberatur. DE PRECATVM venisset: } vide Agellium lib. 6.  
cap. 16. & Val. lib. 6. cap. 24. VOLVISSET id quidem: sed si vol-  
uisset paruisse. } Id quidem, absunt, ab octo. à quorum uno  
abest & nō. Inquit, quod præcedit. Aliás legebatur, Voluisset,  
si voluisset: paruisse. Ita paruisse, sunt, qui legi dicant in  
vet. libro. HÆC amentia, questione noua pert. } sic nouem.  
Dementia, vñus. Quæstione, vñus. Noua quæstione, vñus. Hæc  
amicitia noua quæstione, duo. Malè. Hæc amentia, & noua  
postulatione, vñus. Malè. Hæc amētia, & quæst. noua pert. tres.  
IN ASIAM profugit: } ad Aristonicum, regis Eunenii filium,  
qui Asiam occupauit, cūm testamento Attali regis legata populo  
Romano libera esse deberet. Rebus autem Aristonici  
profugatis, sibi mortem conseuiuit. Plutarchus, & Florus, Cic.  
in Rullum. GRAVES, instigque. } quia vitam amisit, & seditionis  
supplicium luit. AMICITIAM manere, } Remanere,  
vñus. Permanere, tres. Difficile est amicitiam manere: quia cel-  
fante causa cœsat & effectus. VEL imperare ab amicu, } Ab  
iis, quinque. Ab his, nouem. Ab ipsis, duo. PERFECTA qui-  
dem sapientia sumus, si nihil habeat res vitij: } perfectè sapientes  
fuimus, in eo, cūm statuimus, rectum esse, & cōcedere amicis,  
qua vellet, & ab iisdem impetrare, qua vellemus ipsis: ita ve-  
rò perfectè sapientes fuimus, si nihil ex eo sequitur incōmo-  
di, quod fieri vix potest. Sed ostendit Cicero, vitium in care  
esse: itaque perfecta sapientia minimè nos esse, si rectum sta-  
tuimus utrumque. Hæc est præclara, nec admodū obscura,  
huius loci sententia, confirmata duodecim meorum veterum  
librorum testimonio. Itaque valde mitor, qui venerit in men-  
tem nonnullis, de mutatione cogitare. QVOS videmus: } Vi-  
dimus, vñus, rectiūs. QVI ad sapientiam proximè accedit: } qui  
prauis affectibus minimum indulserūt, & omnis officiū sum-  
mum studium habuerunt: etiam si alicubi errarē, & laberen-  
tur, quod humanū est. VIDIMVS: } Videmus, quatuor. PA-  
RVM Aemilium: } Paullum Aemilium, aliás. P. Aemilium, o-  
mnes libri mei. C. LVSCINO: } Fabrio Lucino. Parad. I. &  
6. MEMORIA traditam est: } Memorix proditum est, tres.

SI contendisset, scio impetraturum non fuisse. } Sic decem. Si enim  
contendisset, &c. quartuor. Contendissent, Impetraturos, v-  
nus. Dico, pro, Scio, vñus. Si enim concedisset, scio impetraturu-  
rum se aliquid non fuisse, vñus. Scio eum impetr. &c. vñus. Si  
quis eorum contrudisset, scio impetraturum non fuisse, vñus.  
FACERE rogatum, } Rogatu, tredecim. C. CARBO, C. Cato, }  
Florus Epit. 59. Fulium Flaccum, & C. Carbonem creatos  
agro diuidendo. Idem tradit Appianus, nisi quod mendosè  
nominat Papirium Carbonem. Plutarchus solius Fulij men-  
tionem facit. de Catone nihildum reperi. In vno certè mœo,  
Sequebatur C. Carbo, & minimè &c. TUNC quidem Caius fra-  
ter, } Tunc quidem carus Caius fr. vñus. Tunc quidem caris-  
simus fr. Tunc quidem Caius fr. duo. Tum quidem acer  
Caius fr. tres, quorum vñus, Tunc. Tunc quidem carissimus  
Caius frater, vñus. NUNC quidem acerrimus hostis. } Hostis, ab-  
est à septem. Inimicus, tres. In vno, superadditum. Hostis acer-  
errimus, tres. Nunc acerrimus hostis, quattuor. Nunc idem  
nobis acerrimus, vñus. Nunc quidem acerrimus, tres. Nunc  
idem, sex. Acererrimus: in tribunatu pl. quem gerebat hoc anno,  
quo dialogus hic à Lælio habitus fингitur. Infra: De C.  
Gracchi autem tribunatu, quid exspectem, non libet au-  
gurari.

## C I C E R O.

Hæc igitur prima lex in amicitia fanciatur, vt  
neque rogemus res turpes, nec faciamus rogati. •  
turpis enim excusatio est, & minimè accipienda cūm  
in ceteris peccatis, tum si quis contra remp. se amici  
causa fecisse fateatur. etenim eo loco, Fanni, & Sca-  
uola, locati sumus, vt nos longè prospicere oporteat fu-  
turos casus reip. deflexit enim iam aliquantulum de  
spatio, curriculoque consuetudo maiorum. Ti. Crac-  
chus regnū occupare conatus est, vel regnauit is qui-  
dem paucos menses. num quid simile populus R. au-  
dierat, aut viderat? hunc etiam post mortem secuti a-  
mici, & propinquí quid in P. Scipionem effecerint. sine

lacrymis non queo dicere. nam Carbonem quoque, quem modò posuimus, propter recentem panam Ti. Gracchi sustinim⁹. de C. Gracchi autē tribunatu quid exspectem⁹. non liber augurari serpū enim deinde res, qua procluis ad perniciem, cūm semel cœpit, labitur. videtis, in tabella, iam antē quantas sit facta labes, pri- mō Gabinia lege, biēnio autem post Cassia. videre iam videor populum R. a senatu disunctum, multitudinisq. arbitrio res maximas agi. plures enim dissent, quā admodum hæc sicut, quām quemadmodum his resistatur. Quorsum hac? quia sine sociis nemo quidquā tale co-natur. Praciendiū est igitur bonis, vt, si tu eiusmodi amicitias signari, casu aliquo, inciderint, ne existimat ita se alligatos, vt ab amicis in magna re aliqua in rep. peccantibus non discedat. improbis autē pœna statuēda est, nec minor verò ijs, qui fecuti erunt alterum, quām ijs, qui ipsi fuerint impietatis duces. Quis clarior in Grecia T̄ hemistocle, quis potētior? qui, cum impera-tor bello Persico, seruitutē Graciā liberaasset, propterq. inuidiam in exsulium pulsus esset, ingratā patrie iniuria non tulit, quam ferre debuit. fecit idem, quod vi-ginti annis ante apud nos fecerat Coriolanus. his adiutor contra patriam inuentus est nemo. itaque mortē sibi utique consciuit. quare talis improborum cōfēnsio non modò excusatione amicitia regenda non est, sed potius omni supplicio vindicanda, vt ne quis sibi cōcessum paret, amicū bellum patrie inferentem, sequi. quod quidē, vt resire cœpit, haud scio, an aliquando futurum sit. mibi autem non minori cura est, qualis resp. post mortē meam futura sit, quām qualis hodie sit. Hac igitur prima lex amicitiae sanciatur, ut ab amicis honesta petamus, amicorum causā honesta faciamus, nec expedit-

mus quidem, dum rogemur, sed studium semper adsit, cunctatio abſit: consilium libere dare gaudemus, plurimum in amicitia amicorū, bene suadentium, valeat auctoritas: cāque adhibeat ad mouendum non modò aperte, sed etiam acriter, si res postulabit, & adhibita pareatur. Nam quibusdam, quos audio sapientes habitos in Gracia, placuisse opinor mirabilia quedam. sed nihil est, quod illi non perseguantur suis argutis: partim fugiendas esse nimias amicitias, ne necesse sit, unum sollicitū esse pro pluribus: satis superque esse sibi suarum cūque rerum curam: alienis nimis implicari molestum esse: cōmodissimum esse, quām latissimas ha-benas habere amicitia, quas vel adducas, cūm velis, vel remittas: caput enim esse ad beatè vivendum securita-tem, qua frui nō poscit animus, si tamquam parturias unus pro pluribus. Alios autem dicere aiunt etiā mul-to inhumanis: quem locum breuiter perstrinxī paullò antē: prasidū, adiumentique causa, non benevolentia, ne-que caritatis, amicitias esse expetendas: itaque, vt quis-que minimum firmitatis habeat, minimumque viriū, ita amicitias appetere maxime: ex eo fieri, vt mulier-cula magis amicitarum præsidia querant, quām viri: & inopes, quām opulēti: & calamitosi, quām ijs, qui pu-tantur beati. O præclaram sapientiam. Solem enim è mundo tollere videntur, qui amicitiam è vita tollunt: qua nihil à diis immortalibus melius habemus, nihil in cūdius. qua est enim ista securitas? specie quidē blāda, sed re ipsa multis locis repudianda est. neq. enim est cō-sentaneū, ullam honestā rem, actionēmne, ne sollicitus sis, aut non suscipere, aut suscepī deponere. quod si cu-rā fugimus, virtus fugienda est: qua, necesse est, vt cum aliqua curares sibi contrarias aſternereetur, atque odi-

rit, ut bonitas malitiam, temperantia libidinem, ignorantiam fortitudo. itaque videas rebus iniustis iustos maximè dolere, imbecillibus fortes, flagitosis modestos. ergo hoc proprium est animi bene constituti, & latari bonis rebus, & dolere contrariis. quamobrem, si cadit in sapientem animi dolor, qui profectò cadit, nisi ex eius animo extirpatam humanitatem arbitremur: que causa est, cur amicitiam funditus tollamus è vita, ne aliquas propter eam suscipiamus molestias? quid enim interest, motu animi sublato, non dico inter pecudem, & hominem, sed inter hominem, & saxum, aut truncum, aut quidvis generis eiusdem? Neque enim sunt isti audiendi, qui, virtutem duram, & quasi ferream esse, volunt, qua quidem est tum multis in rebus, tum in amicitia tenera, atque tractabilis, ut & bonis amici quasi diffundatur, & incommodis contrahatur. quamobrem angor iste, qui pro amico saepe capiendus est, non tantum valet, ut tollat è vita amicitiam, non plus, quam ut virtutes, quia nonnullas curas, & molestias afferunt, repudientur. Cum autem contrahat virtus ac amicitiam, ut supra dixi, si qua significatio virtutis elucet ad quam se similis animus applicet, & adiungat: id cum contingit, amor ibi exoriatur necesse est. quid enim tam absurdum, quam delectari multis inanibus rebus, ut honore, ut gloria, ut adiicio, ut vestitu, cultuque corporis: animo autem virtute prædicto, eo, qui vel amore, vel, ut ita dicam, redamari posse, non admodum delectari? nihil est enim remuneratione benevolentiae, nihil vicissitudine studiorum, officiorumque incundens. quod si etiam illud addimus, quod rectè addi potest, nihil esse, quod ad se rem ullam tantum alliciat, & contrahat, quam ad amicitiam similitudo:

cudo: concedatur profectò, verum esse, ut bonos boni diligant, ad scisciantque sibi quasi propinquitate coniunctos, atque natura. nihil est enim appetentius similiūm sui, nihil rapacius, quam natura. Quamobrem hoc quidem, Fanni, & Scœula, constat, ut opinor, bonis inter bonos quasi necessariam benevolentiam esse: qui est amicitie fons à natura constitutus. sed eadem bonitas etiam ad multitudinem pertinet. non est enim in humana virtus, neque superba: que etiam populos uniuersos tueri, eisque optimè consulere soleat: quod non faceret profectò si a caritate vulgi abhorret.

## EXPLANA T I O.

**H**Æc igitur prima lex } Prima, abest à quatuordecim meis libris. Ergo, unus. PROSPICERE } prudenter est, ex præteriorum memoria, & præsentium conjecturis futura colligere, & prospicere. DEFLEXIT enim iam aliquantulum } Iam, non est in tribus. Defluxit, unus. Aliquantulum, unus. DE SPATIO, CURRICULIQUE } metaphora à stadiis, curruumque certamine. CONSVENTUO MAIORUM. } excelsimus quasi limites honesta disciplina, à maioribus præfinitos. Semel enim labefactata disciplina, licetia crescit in dies, & aliud ex alio facinus oritur. NVMQVID simile &c. } sic omnes mei. Alijs, Numquam. AVT VIDERAT? } regnauit enim nemo, post eius eos reges. IN P. NASICAM } In P. Scipionem, quatuordecim. In Remp. Nasicamque Scipionem, unus. In P. Scipionem Nasicam, unus. In Scipionem Nasicam, unus. EFFECERINT, } Fecerint, unus. Fecerunt, unus. NON quoque } Nequeo, decem. CARBONEM quoque, quem modo potuimus, tres. Carbonem quo modo potuimus, unus. Quoque, nō est in uno. Proposuimus, unus. Carbonē quoquo modo possumus, unus. Carbonem quoque, neque nō possumus, unus. SVSTINVIMVS. } hic postea, caslo C. Graccho, eius interfectorum Opimum defendit, de Oratore. DE C. Gracchi autem tribunatu } sic tre-

decim. Autem, non est in tribus. De Caij autem tribunatu, vnuſ. De Caij tribunatu, vnuſ. Vide Val.lib.4.cap. de Amicitia. **QVID exspecteſ,** { an exitum fraterno ſimile ſit habituſ; cum acerrimus eſſe cceperit. Non libet } ſic tredecim mei. Vnuſ. Non licet. vnuſ. Non l. Alius. Non iuuat. **Avgvſtari.** { caelus eſt ab Optimio conſule, cum ſtatum reip. conuellere conaretur. **Augurari:** ſignis quibusdam reip. perniciem videre. **SERPIT enim deinde res,** { Enim, non eſt in quindecim. **PROCLIVIS** } Proclivius, duo. **COEPIT,** { Carperit, octo. **POPVLVM R.** R. abeſt à quindecim. **AMBITIO** } temeritate, non vero iudicio, & recta ratione. **PLVRES enim difſent,** { plures enim mala exempla imitantur, quād bona. **QUEMADMODVM hec fiant,** } quibus artibus ſit concilanda plebs, & contra ſenatum concitanda. **Vt ab amicis in magna re aliqua in rep. peccantibus** { ſic vnuſ. Vndeſim, Ab amicis in magnam aliquam rem pecc. Duo, Ab amicis in magnam rem aliquam pecc. Duo, Ab amicis aliquam in rem pecc. Vnuſ. Ab amicis in aliquam rem pecc. Vnuſ, Ab amicis in rem pecc. Fuluij liber, Ab amicis in rem pecc. Iis, qui ipſi fuerint } ſic nouem. Iis, qui fuerunt, quattuor. Iiſs, qui fuerunt, duo. Iis, qui fuerint, tres. **THEMISTOCLE,** { cuius res gestas vide apud Plut. in Themistocle, Aristide, & Cimone. de quo Thucyd.lib.1. Herodotus lib.7. & 8. Ilōcrates in Panathenico, Demosthenes pro Ctesiph.lust.lib.2. Oros. lib.2.cap.9.10.11. Æmilius Probus, Val.lib.5. cap.3.lib.6.cap.11.lib.7.cap.2.lib.8.cap.7. & 15. Cicero ſepe, praecepue de Off. II. & III. de Seneſtute, ad Att.lib.10. pro Archia poēta, de Orat.11. & in Bruto, Quinct.lib.4. **GRAECIAM liberaffet,** { eius enim virtute, & confiliis, Persis nauali prelio deuictis, Xerxes, re infecta, pari dāno, & ignominia, ſuo excessu Graeciam bellī moleſtia leuauit. **PROPTER Q. iniſium** { quam effugere non potuit. alibi Cicero. **IN exſulū pulſus eſſet,** } ſic duo. Expulſus, quattuordecimi. Miſlus, duo. **INGRATAE patriæ** { Valer. lib.5. cap. de Ingratis. **QVAM ferre debuit.** } nam patriæ caritas iniuriæ dolorem ſuperare debet. Sic Camillus Romam euersam, qua per iniuriā exfulabat, in integrum reſtituit. **FECIT idem, quod ex.** { ad hostem ſe conculit, de clar.oratoribus. **MORTEM ſibi r̄verque confiuit.** } aliter Liuius, & Atticus, de Coriolano : de Themistocle autem, Clitarchus, & Stratocles. vide in Bruto. **Conſiſit.**

Conſiſit.

Conciuit, vnuſ. Aſciuit, vnuſ. Acciuit, vnuſ. Conquifiuit, vnuſ. Conſtituit, duo. **IM PROB ORVM** { ſic omnes mei. alijs, Imperiorum. **VINDICANDA:** } Vindicanda eſt, vndeſim. Vindicanda ſupplicio, vnuſ. **Vt ne** { Ne, vnuſ. **HAEC igi- tur prima lex** } Prima, abeſt à duobus. Iſpa, pro, Prima, vnuſ. **NEC exspectemus quidem, dum rogemur :** } Seneca: Gratissima ſunt beneficia parata, facile occurrentia: vbi nulla mora fuſt, niſi in accipientis verecundia. Optimum eſt antecedere defiderium cuiusque, proximum ſequi: illud melius, occupare antequam rogemur. quia, cum homini probo ad rogamendum os concurrat, & ſuffundatur rubor: qui hoc tormentum remiferit, multiplicat munus ſuum. non tylit gratis, qui, cum rogarit, accepit. Publius in Mimo:

Bis eſt gratum, quod eſt opus, vltro ſi offeras.

Græcum diſtichon:

Ωκηνος χρείεται γλυκερότεραν δέ βεδωών

Πάσι τοι χρείεται μηδὲ λέγετο χρέος.

Isocrates: Ούτος δὲ εἰς τετραγύμνον τοῖς φίλοις, ἀντὶ μητρικῶν πίστεων ἐκπαιδεύει, αἵνιαν οὐτε πάργαντος εἰ τοις κατεῖται: αὐτοῖς βεδωήσ. Vide Prouerb. Bis dat, qui citò dat. **SED ſtudium ſemper adſit,** { Sed, non eſt in quindecim. **LIBERE** } fine offenſa, aut priuati incommodi metu. E.A.Q.adhibetur admoneñdum, { nam, vt at Homeru: Λαζαρίδης πατέρα φασί, εἰν ταῖς γυναικαῖς. **MIRABILIA que- dam.** } πατέρδηζα Stoicorum, Academicorum, & Epicurea quedam dogmata. **NON perſequantur ſuis argutias,** { quibus ipſi delectantur, & quibus conſidunt: quibus plerunque veritas amittitur. Proſequantur, tres. Aſſequantur, vnuſ. **Suis, non eſt in ſeptem, in quorum vno additum.** **Argutias:** quattuor ex iis, qui non habent τῷ ſuis, habent, Argutias. Vndeſim, Argumentis. **Nihil eſt, q. od illi non perſequantur ſuis argutias:** "nam & otio abundant, & nouitate auditorum faſtidiiſ conuantur occurrire, aut ambitione, & ſpe quæ eſt uſus impulſi, noui aucto- res haberit volunt. **FVGENDAS eſſe nimias amicitias** } de nra- riapta Eurip. in Hipp. Cor.

χρεῖν δὲ μετρίεις εἰς ἀλλήλους οὐδεὶς δινοῦσι αὐτοὶ γε.

Vide & Plutarchum. **SATIS ſuperg. eſſe ſibi ſuarum cinq̄e re- rum curam,** { Curam, abeſt à ſeptem, in quorum vno additum. **QVAM LAXISSIMAS habendas habere amicitie:** } Eutyp. apud Plut. μετα πονηρίας: Απὸ τὸν οὐρανὸν καὶ ζωδίου καὶ θε- τρα πέδια τεῖς, ἐπὶ διδύμη, καὶ οὐρανοπότα ταῖς χρέοις τὴν φύσιν.

**SECURITATEM:** οὐδεποτέ: cùm animus tranquillus est, & in suis rebus acquiescens, nec sperat, nec metuit quidquam, aut certè quam minimum. **FIRMITATIS habeat:** Habet, omnes, vno excepto, in quo, *Hab. 7. APPETERE* { Appeteret, tredecim. Expeteret, tres. Appeteret, vnum. Apperant, vnum. **Quām iij, qui putantur beati:** } Quām qui putantur beati, vnum. Quām iij, qui putantur esse beati, vnde decim. Quām beati, Lambinus. **REAPSE:** Re, vnum. Re ab ipsa, vnum, mendosè, sed, vnde pateat, Re ipsa, quod in aliis est, & aliis in impressis erat, glossema esse. Sic lib. 3. de Leg. lib. 5. de Fin. *Vide Senecam.* **REPUDIANDA est:** } Est, non legitur in decem. **ACTIONEM** re { Actionemque, vnum. **Vt cum aliquam curia:** } Vt, non est in decem, quorum duobus additum. **IMBECILLIBVS:** { sic omnes mei alij, Imbellibus. ANIMI bene constituti, } Sic omnes mei. Fuluj liber, Instituti. ANIMI dolor } sic omnes mei, quidam tollunt nō Animi. CVR amicitiam &c. } sic sexdecim. Vnus, Vt amic. Vnus, Vt cur amic. Mot v animi sublatu, } affectibus sublatis: si homo neque gaudeat, neque doleat, neque amer, neque oderit, neque appetat, neque formidet quidquam. **PECVDEM, & hominem,** } quæ specie differunt. **HOMINEM, & saxum,** } quæ differunt genere. **Et saxum, aut truncum,** } sexdecim, Et truncum, aut saxum. vnum, Et truncum, vel saxum. vnum, Et truncum, aut inter hominem, & saxum. **SUNT isti:** } Sunt, abest à vno. **Vt & bonis amici,** } Vt in bonis amici, vnum. Vt in amicorum bonis amici, vnum. Et in bonis amici, duo. Vt bonis amici, vnum. Vt & bonis amicis, vnum. Vt & ex bonis amicis, vnum. **DIFFUNDATVR,** } lœtitia. Diffundantur, sexdecim. Fundantur, vnum. **CONTRAHATVR,** } marote. Contrahantur, quindecim. Trahantur, vnum. **ANGOR** { aggritudo premens, in Tusculanis. **E vita amicitiam:** } Amicitiam è vita, quattuor. **CONTRAHAT virtus amicitiam:** } Virtus, non est in octo, quorum vni additum. **SIGNIFICATIO virtutis elucet,** } nam virtus, vt ait Seneca, in omnium animalium lumen suum permittit, etiam qui non sequuntur illam vident. **AMOR ibi exoriatur,** } Ibi, non est in decem septem. vnum, Amor vt oriatur. **TAM absurdum,** } Tam absurdum est, vnde decim, quorum vni additum. **INANIBVS rebū,** } quarum possessio neque meliorem reddit, neque beatorem. **Vt honore,** } qui non tam eius est, cui habetur, quām illius, qui

qui habet alteri. Graci diuinum bonum, honorem, & *τιμὴν* dicunt. Apud Euripidem dīj honorem appetunt. *Ἐντὶς γὰρ τοι καὶ δέων φύεται τὸ δέουσθαι χαλεψανταν αἴσπονταν ὑπό.*

**Vt gloria:** quæ est fama de præstanti alicuius virtute, & sapientia. **Vt edificio, &c.** } quæ seruūt necessitatē, & commoditatē corporis. **ANIMO autem virtute predito,** } summum naturæ humanæ in terris bono. **Vt ita dicam,** } excusat verbi nouitatem. nam, Redamo, inusitatum. **Quinct. lib. ix. cap. de Ornatu,** *τροφὴν πατέσσει:* hoc est veniam, captando, præmuniendōque, licentia occurtere iubet, si quid iniustitias sit dictum. **REDAMARE,** } sicut res. Redamari, tredecim. Reamari, vnum. Amari, vnum. malè. **Redamare:** nam amicitia ex amore nascitur. vt ait Pausanias in Coniuio Platonis. **Graci** *ἀνηγόρειν.* **TVM alliat,** } suauitate quadam, & quasi blanditijs. **Et contrahat,** } sic duo. Et tam contrahit quattuor. Tam contrahat, vnum. Tam attrahat, vnum. Atque attrahat, vnum. Et tam attrahat, quinque. Et tam trahat, duo. Extrahat, vnum. Ab vno absunt hæc duo verba. **Et contrahat:** Si, Attrahat, legas, interpr. quadam naturæ vi, cui vel iniuiti homines parere solent: quales sunt amantes. **AD amicitiam similitudo:** } Ad, abest ab vno meo. Inde Proverb. **Aequalis** *æqualem.* **Oueror quoq[ue] p[ro]p[ter]e.** **Similitudo:** ingeniorum, morum, studiorum. Similitudo quoque fortunarum, & corporum, eadem natio, & ciuitas, & alia, quæ in benevolentia, & beneficentia officiis considerantur. **CONCEDAT VR,** } Concedetur, quinque. Concedant, aliás. **AD SCISCANTQ[UE]** } sibi, id est, eorum consuetudinem, & familiaritatem expectant. **NIHIL rapacius,** } Nec, pro Nihil, omnes, vno excepto, in quo, Ac. **Qui est amicitia fons,** } sic quinque. reliqui, Quæ. Vt ad benevolentiam referatur. **IN HUMANĀ virtus,** neque superba: } omnes libri mei veteres addunt, Neque immunis, (sive, vt in vno, Nec) sic: In humana virtus, neque immunis, neque superba. **Immunis:** improba. vide Festum. Plautus. Trinummio. Immune est facinus. Hor. Od. I. 3. Od. 23. Immunis manus.

## C I C E R O.

**A TQVE etiam mibi quidem videntur, qui utilitas causâ fingunt amicitias, amabilissimum** *P*

nondum amicitia tollere, non enim tam utilitas parta per amicum, quam amici amor ipse delebat: tumq. illud sit, quod ab amico est profectum, incundum, si si cum amore, & studio est profectum: tantumq. abest, ut amicitia propter indigentiam colantur, ut i.e., qui opibus, & copijs, maximèq. virtute prediti, in qua plurimum est prasidij, minimè alterius indigeant, liberalissimi sint, & beneficentissimi. atque haud scio, an ne opus sit quidem, nihil unquam omnino deesse amicis. ubi enim studia nostra vigissent, si nunquam studio, nunquam consilio, nunquam opera nostra nec domini, nec militia Scipio egisset? non igitur utilitatem amicitia, sed utilitas amicitiam secuta est. non ergo erunt homines divitias affluentibus audiendi, si quando de amicitia, quam nec vsu, nec ratione habent cognitam, disputabunt. nam quis est, proh deum fidem, atque hominum, qui velit, ut neque diligat quemquam, nec ipse ab illo diligatur, circunfluere omnibus copijs, atque in omnium rerum abundantia vivere? hac enim est tyrannorum vita nimis. in qua nulla caritas, nulla stabilis benevolentia potest esse fiducia: omnia semper suspecta, atque sollicita: nullus locus est amicitia. quis n. eum diligat, quem metuit, aut eum, a quo se metuit putat? coluntur tamen simulatione amicitiae dumtaxat ad tempus, quod si forte, ut sit plerunque, ceciderint: tum intelligitur, quam fuerint inopes amicorum. quod Tarquinium dixisse ferunt, tum, cum exsul esset: se intellexisse, quos fidios amicos habuisset, quosq. infidos, cum iam neutrī gratia referre posset, quamquam miror, in illa superbia, & importunitate si quemquam habere potuit. atque, ut huius, quem dixi, mores veros amicos parare non potuerunt: sic mul-

torum

torum opes prepotentium excludunt amicitias fideles. non enim solum ipsa fortuna caca est, sed eos etiam plerumque efficit cacos, quos complexa est. itaq. illi efferratur fastidio ferè, & consumacia: neq. quidquā insipiente fortunato intolerabilius fieri potest. Atq. hoc quidem videre licet, eos, qui anteā commodis fuerunt moribus, imperio, potestate, prosperis rebus immutari, sperniq. ab ijs veteres amicitias, & indulgeri nouis. quid autē stultius, quam, ut plurimū copijs, facultatibus, opibus possint, cetera parare, quae parant, pecuniā, equos, famulos, vestes egregias, vasa pretiosa, amicos non parare, optimam, & pulcherrimam vitā, ut ita dicā, supelle-ētēlē? etenim, cetera cum parant, cui parant, nesciunt, nec cuius causa laborēt: eius enim est istorū quodque, qui vincit viribus: amicitarum sua cuique permanet stabilis, & certa possessio: ut, etiam si illa maneat, que sunt quasi bona fortuna, tamē vita inculta, & deserta ab amicis, non posse esse iucunda. Sed hac hactenus. Constituendi autem sunt, qui sunt in amicitia fines, & quasi termini diligendi. de quibus tres video ferri sententias, quarum nullam probo: unam, ut eodem modo erga amicū affecti simus, qua erga nosmet ipsos: alterā, ut nostra in amicos benevolentia, illorū erga nos benevolentie pariter, equaliter respondeat: tertiam, ut, quānū quisque se ipse facit, tanti fiat ab amicis, harum trium sententiarum nulli prorsus assentior. nec enim illa prima vera est, ut, quemadmodum in se quisque, sic in amicum sit animatus. quam malitia enim, que nostra causa numquam faceremus, facimus causā amicorum? precari ab indigno, supplicare, tum acerbis in aliquem inuchi, insectarique vehementius: que in nostris rebus non satis honeste, in amicorum fiume

honestissimè. multa quoque res sunt, in quibus de suis  
commodis viri boni multa detrahunt, detrahisque pa-  
tiuntur, ut iis amici potius, quam ipsi, fruantur. Altera  
sententia est, qua definit amicitia paribus officiis, ac  
voluntatibus. hoc quidem est nimis exigùe, & ex filiter  
ad calculos reuocare amicitiam: ut pars sit ratio accep-  
torum & datorum. ditior mihi, & affluentior videtur  
esse vera amicitia, nec obseruare stricte, ne plus red-  
dat, quam acceperit. neque enim verendum est, ne quid  
excidat, aut ne aliquid in terram defluat, aut ne plus  
aquo quid in amicitia congeratur. Tertius vero ille  
finis deterrimus, ut, quanto quisque se ipse faciat, tanto  
fiat ab amicis. Sæpe enim in quibus dā aut animus ab-  
iectior est, aut spes amplificanda fortuna fractior. non  
est igitur amici, talem esse in eum, qualis ille in se est,  
sed potius eniti, & efficere, ut amici iacētem animum  
excitet, inducatque in spem, cogitationēque melio-  
rem. Alius igitur finis verae amicitiae constituendus  
est: si prius, quid maxime reprehendere Scipio solius  
sit, edixero. Negabat, villam vocem inimicorem a-  
amicitia potuisse reperiri, quam eius, qui dixisset, ita a-  
mare oportere, ut aliquando esset osurus: nec vero se  
adduci posse, ut hoc, quem ad modum putaretur, à  
Biante dictum esse crederet, qui habitus esset unus ē  
septem, sed impuri cuiusdam, aut ambitiosi, aut omnia  
ad suam potentiam reuocantis, esse sententiam. quo-  
nam enim modo, quisquam amicus eius esse poterit,  
cuius se putabit inimicum esse posse? quin etiam ne-  
cessē erit cupere, & optare, ut quam sapientiè peccet  
amicus, quo plures det sibi tamquam ansas ad repre-  
hendendum. Rursum autem recte factis, commodis  
que amicorum necesse erit angi, dolere, inuidere.

Qua-

Quare hoc quidem praeceptum, cuiuscumque est, ad  
tollendam amicitiam valet. Illud potius precipien-  
dum fuit, ut eam diligentiam adhiberemus in amici-  
tias comparandis, ut ne quando amare inciperemus  
eum, quem aliquando odisse possemus. quin etiam, si  
minus felices in diligendo fuissimus, ferendum id Sci-  
pio potius, quam inimicitarum tempus cogitandum,  
putabat. His igitur finibus utendum arbitror, ut, cum  
emendati mores amicorum sint, tum sit inter eos o-  
mnium rerum, consiliorum, & voluntatum, sine ullâ  
exceptione, communitas: ut, etiam si qua fortuna ac-  
ciderit, ut minus iusta amicorum voluntates sint ad-  
iuuande, in quibus eorum aut de capite agatur, aut  
de fama, declinandum sit de via, modo ne summa  
turpitudo sequatur. est enim, quatenus amicitiae dari  
venia possit.

## EXPLANATIO.

**S**i cum amore, & studio est prefectum: } Si cum studio est profe-  
ctum, quindecim. Si cum amore, studiōque est prefectum, duo. **O**PIBVS, & copiis, } id est, propter opes, & copias, maxi-  
mique virtutem. **M**AXIMEQVE virtute prediti, } Prædicti,  
non est in quindecim. quorum duobus additum. **B**ENEFIC-  
**E**NTISSIMI. } Beneficentissimi, vñus, reliqui, Beneficen-  
tissimi. **N**IHIL vñquam omnino deesse amicis. } sic quattuor-  
decim. Numquam omni. d.a.vnus. Nihil vñquam d.a.vnus. Ni-  
hil omnino vñquam d.a.vnus. Omnino nihil vñquam deesse  
amicis, vñus. Nihil vñquam indigere amicos, Langius ex vet.  
libro. Notatque Indigere casu accusandi, dictum esse à Plau-  
to, & à Varrone. **S**CIPIO egisset } Scipio, abest à quattuor,  
quorum vni additum. **S**ECVTA est. } Consecuta est, qua-  
tuordecim. Conseguatur, vñus. **D**ELICIS affluentes } Deli-  
cias, omnes libri. Diffuentes, quattuor. Defluentes, duo. Lib. x.  
de Off. Disfluere luxuria. lib. 3. de Or. Otio diffuentes. Ter.  
Heaut. Ut eius animum, qui nunc luxuria, & lascivia difficit,

retundam, redigam, ut, quod se vertat, nesciat. **Affluentes**: qui nihil vñquam incommodi pñsunt: unde fructum aliquem ex amicitia capere potuerint. Inde illud, ad Trebatium, lib.7. Valde iã delicatus es, qui grauere litteras ad me dare, homini præferrim propè domèstico. **Nec r̄ ipsa**, quia ex animo neque amant quemquām, neque amantur. **Nec ratione**, id est, doctrina, & institutione. **Vt negue diligat quemquām**, adeo p̄cūlē degres. **NVLLA stabilit̄ benevolūt̄ e potest esse fiducia**: Nulla sancta societas, nec fides regni est. Et Nicion Terentianus longè currere putat, qui imperium grauius putat esse, vi quod sit, quam illud, quod amicitia adiungit. **SUSPECTA**, atque **solicita**, sic octo, recte decem, Susp. sunt, atque solicita. **Suspecta**, atque **solicita**: Dionyius Siculus barbam ne filiabus quidem tondendam credere ausus fuit. **NVLVS locus amicitiae**, sic quinque, tridecim, N. locus amicitiae. Sed in uno additum. **Qvem metuit**: Quem metuat, nonem. Quem metuet, tres. Quem tantum metuat, vñus. Inde illud Ennij, Quem metuant, oderunt, lib.2. de Off. **SIMULATIONE amicitiae**: Amicitiae, non est in decem. Amici, vñus. **Qvod si forē**: Qui, vñus. Et, vñus. Quid, vñus. **INTELLIGITVR**, Intelligent, tres. **TARQVINIUM dixisse ferunt**: Fertur, quatuor, recte, quorum duo, alter, Ferit: alter, Fertuntur: & suprà, in spatio, versus dirimente. Ab hominibus. **TVM, cùm exsul esset, se intellexisset**, sic vñus. Tunc cùm exsulem se intellexisset, sex. Tum exsulem esse se intellexisset, tres. Cùm exsulem intellexisset, vñus. Exsulante, leterum & additum, Tunc, cùm exsulem se intellex. vñus. Cùm exsulasset se intellex. vñus. Cùm exsulante se intellex. vñus. Tum cùm exsulem esse se intellexisset, tres. Tum cùm exsul intellex. vñus. **Qvō s̄ q̄ infidos**: Que, nō est in sexdecim. **GRATIAM referre**: vide de hoc loquendi modo Agellium lib.7. cap.4. Hoc loco dictum est in malam partem. **Quos filios amicos habuissit, quosque infidos**: vide Halicarn. lib.4. circa finem. **IN illa superbia**, In, non est in quinque, quorum vni additum. **IMPORTVNITATE**, à quo nihil æqui posset impetrari, nihil præsidij sperari, nisi ipsi collibitum esset. **Si quemquām fidum amicum**, cùm præ se omnes despiceret, atque iniuriis afficeret. **PRÆPOTENTIVM**: Præpotentum, nouem. Potentium, vñus. **FORTVN A caca**: vide Aug. de Ciui. Dei, lib.4. cap.18. **ILLI efferuntur fastidio**: Illi, non est in quatuor.

tuor. quorum vni additum. Langius legit, Efferantur: id est, extirpata ex eorum animis humanitate, in feras degenerat: quæ impetu feruntur, non ratione gubernantur. **Fastidio**: metaphora, à stomacho, plerosque cibos, cum nausea quadam, reincidente. Significat morositatem, cui satisfacere nemo potest, nō s̄ ergo, nō s̄ opes. Et **contumacia**: qui se solos sapere putant, aliorum consilia non audiunt, sed derident, atque contemnunt. **PROSPERIS rebus immutari**: Prosperis rebus etiam mutari, vñus. Exemplum est apud Cic. ad Att. lib.13. de Alexander. Aristotelis discipulo. **SPERNI ab eis**: quod sunt imparies dignitate. **INDULGERI**: Indulgere, ex, Indulge. nouem. **Indulgeri nouis**: vt eorum similes. habentur, quorum consuetudine vtuntur. **Vt plurimum**: Cum plurimum, quindecim. Quantum plurimum, male, vñus. **CETERA parare**, que parantur, pecuniam, equos, &c. delendum puto, Pecuniam, vt glossa: ma. est enim in veteri libro, Cetera parare, que parantur, i.e. pecuniam, equos &c. Alijs placet, Que parantur pecunia, cum quibus faciūt sex mei veteres libri. Cùm ipsi quoque viderint, pecuniam non esse numerādum in supellestile, de qua hic Cicero loquitur. Sed ego malo glossam esse: accedente antiqui mei libri auctoritate. **FAMVLOS**: Familiam, duo libri **VESTES egregias**: Vestem egregiam, vndecim. Egregiam vestem, vñus. Vestes prætiosas, vasa egregia, duo. In uno deceat totum hoc. **CVM parant**: Cùm parantur, octo. Que parantur, vñus. **CV parent**: Parentur, tridecim. **Cui parent, nesciunt**: Isocrates in oratione Philippica: Συμβαινει τοι πατρού της τοι διατειχη πολιάρις τοι ἐχθρός υπέρως μήγανθας. τοι διευταξ, τοι μετε τοι πολιάρι, της τοι αλλοι τοι περιεπικουραζοντες αδιανητα ποθει και εγνώμονος: πλὴν τοις εἴς ήμῶν γερνότας. **EIVS enim est istorum quodque**, qui vincit viribus: sic decem. Eius est enim, antiquus liber. Est, abest ab uno. Etenim est istorum, quidquid vincitur viribus, aliás. Eius enim est istorum, quidquid vincit viribus, sex. Istorum quæque, vñus. Istorum, quod quis vincit vir. vñus. **Vincit**: Vincat, vñus. Vincer, vñus. Vicit, tres. **Eius enim est istorum &c.** Xenophon: Τὰ τῶν ἱππαρίων τῶν κεραύνων γίνεται. **AMETIARYM**: Amicitia, duo. Amicitia, vñus: male. **PERMANET**: sic omnes mei. Langius, ex vet. libro, Nam amicitiarum sc. pertinet. **STABILIS, & certa posseſſio**: duo, Certa, & stabilis posseſſio. **DESERTA ab amicis**, Ab, non.

est in duobus. **Possit** } Poteſt, tres. **DEDICENDI** } De-  
ligendi, vnuſ. & aliás. **VIDEO** } è doctorum scriptis cognou-  
ui. **ERGA amicu**m. } Erga amicos, duo. Se ipſe facit, } Se fa-  
cit, ſex. Seipſum facit, quinque. **IN amicu**m fit animatus. } In  
amico fit an. vnuſ. In amicos fit an. vnuſ. **PRECARI ab indi-**  
**gnō**, } ſic duodecim. Precari pro amicis ab indigno, vnuſ.  
Precari pro amico ab indigno, tres. Precari ab amico, vnuſ.  
Precari veniam ab indigno, vnuſ. Aliás, Precari amicis ab indi-  
gnō. **MVLTA detrahunt**, } ſic omnes mei. **Detrahunt**: vi-  
tro concedunt amicis ea, qua ad iſpſos potius pertinent. **DE-**  
**TRAHIQ** patiuntur, } ab iis, qui in partem amicorum ſunt  
propenſiores. **NIMIS exiguē**, } Minus exiguē, duo. Exiguē,  
eſſe in vetere librō, notatum vidi. **AD calculos renocare** } ra-  
tionem inire, & cœſtimare. **ACCEPTORVM**, & datorum, }  
accepti, & expensi. pro Rofcio Comedo. **DITOR mihi**, } Mihi, non eſt in meo. Enim, pro Mihi, eſſe in vetere libro,  
notatum eſt. **VIDETVR eſſe vera**, } Eſſe, non eſt in vno.  
**PLVS reddat**, } ſic omnes mei. **NEQVE enim verendum eſt**, } alludere videret ad illud Heliodi:

Aυτῷ τῷ μέτρῳ καὶ λίστῃ εἶτε σύνει.

**IN amicitia congeratur**, } In amicitiam cong. ſexdecim. Fi-  
niſis deterrimus, } Tæterrimus, vnuſ. Finis eſt deterr. vnuſ. Se  
ipſe faciat, } Se faciat, tres. Seipſum faciat, quatuor. Sed po-  
tius eniti, } Sed potius debet eniti, vnuſ, male, & aliás. **INDUCA TQ. in ſpem**, } In, non eſt in vndecim. **EDIXERO**, } expoſuero, præcepero. vnde Edicta. Alij, Differo. vel, Differo:  
quod non placet. **INIMICIOREM**, } Inimiciorem, no-  
uem. **ITA amara oportere, ut aliquando eſſet oſurus**, } Ar. Rhet.  
II. Ou δεῖ, ὡς μερισσαῖ, φελεῖν ἀπομονωτα, ἀλλά μάλιστα μεττοῖ. ou φε-  
λεῖν. Eadem ſententia viſus eſt & Sophocles in Ajace.  
**Vt aliquando**: Vt ſi quando, vnuſ. Vt ſi aliquando, tres. A  
**Bianti**, } hoc non Bianti, ſed Chiloni, tribuit Agellius lib. I.  
cap. 3. Bianti Aristot. Rhet. II. Κατὰ τὴν Βιάντος ὑπερβιανοῦ καὶ πο-  
λεῦσθαις μακρινοτέρες καὶ μακρούντις φολεύσθαις. Vide & Val. Max.  
lib. 7. cap. 3. **VNVS è ſepem**, } is tripoda aureum, ab Athe-  
niensibus pifcaroribus inuentum, ad ſe, tamquam ſapientem,  
delatum repudians, ad Apollinem deferri iuſſit. **IMPVR**, } improbi. vide Donatum in Terentium. fordini, auri, qui lu-  
cro omnia poſtponat. **Avt ambitioſi**, } ſic omnes mei: v-  
no excepto, in quo, Aut, deſtit. Et amb. aliás. **Ambitoſi**: qui glo-  
riolam,

riolam, & honores pluris faciat, quam virtutem. **OMNIA ad ſuam potentiam revocantis**, } hominis oligarchici, & tyrannici. **CUPERE, & optare**, } Et, abeſt ab uno meo. Aliás, Cu-  
pere, etiam optare. **RVR SVM**, } Rursus, tredecim. **RE-  
CTE factū**, } Rectis factis, duo. **DOLERE, inuidere**, } Do-  
lere, & inuidere, vnuſ. **Invidere**: πονοὶ δὲ ἀτυχῶν τοῖς φίλοις  
ουωχθόντες, καὶ τὸς δὲ αγράτοντος φύρονται. **IN amicitia comparan-**  
**do**, } In amici: comp. quatuor. **VTENDVM arbitror**, } ſic  
omnes mei. **VT, cùm emendati mores amicorum ſint**, } Vt, cùm  
emendati ſint, int mores amicorum, vnuſ. Vt, cùm amicorum mores em.  
ſint, vnuſ. Vt, cùm emendati mores amicorum ſint, vnuſ. **E-  
mendati mores**: ab iis vitiis alieni, que amicitiae aduersantur. vt  
perfidia, leuitas, avaritia, ambitione, & ſimilis praui affectus;  
quos qui exſtirpare nō poſſunt, moderari ſaltem, & velare stu-  
deant. **CONSILIORVM, & voluntatum**, } Et, non eſt in A-  
gellio, hæc recitante, lib. I. cap. 3. nec in quindecim meis. **Con-  
ſiliorum, & voluntatum communitas**: vt conferant confilia inter  
ſe: & vt idem velint, atque idem nolint. **VT, etiamſi qua fort.**, }  
Et ſi qua fort. aliás, & vnuſ. **AMICORVM voluntates ſint ad-  
iuuande**, } Voluntates amicorum, in Agellio. Adiuuandæ  
ſint, in Agellio, & duodecim. Sunt, duo. **AVT de capite aga-  
tur, aut de fama**, } Aut caput agatur, vnuſ. Agatur aut capite,  
duo. Aut fama, ſexdecim. Vel fama, vnuſ. Cic. Papirio: Priuatæ  
cauſas, & eas tenues, agimus ſubtiliūs, capitatis, aut famæ ſcili-  
et ornatiū. **DECLINANDVM fit de via**, } à ſummo iure  
non nihil recedendum.

**N**ec verò negligēda eſt fama: nec mediocre telum  
ad res gerendas existimare oportet benevolentiam  
ciuum: quam blanditiis, & affectionibus colligere,  
turpe eſt virtus, quam ſequitur caritas, minimè repu-  
dianda eſt. Sed (ſape enim redeo ad Scipionem, cuius o-  
mnis ſermo erat de amicitia) querebatur, quod in o-  
mnibus rebus homines diligenteres eſſent: capras, &  
oves

oues quot quisque haberet, dicere posse: amicos quo  
haberet, non posse dicere: & in illis quidem parandis  
adhibere quasi signa quadam, & notas, quibus eos,  
qui ad amicitiam essent idonei, indicarent. Sunt igitur  
firmi, & stabiles, & constantes deligendi: cuius generis  
est magna penuria: &, indicare, difficile est sane, nisi  
expertum: experiendum autem est in ipsa amicitia: ita  
praecurrit amicitia iudicium, tollitque experiendi poten-  
tiam, est igitur prudētis, sustinere, ut cursum, sic im-  
petum benevolentia, quo vitamur, quasi aquis tentati,  
sic amiciis, aliqua parte periclitatis moribus amico-  
rum. Quidam sepe in parua pecunia perficiuntur,  
quam sint leues, quida autem, quos parua mouere non  
potuit, agnoscuntur in magna. si vero erunt aliqui re-  
peri, qui, pecuniam preferre amicitia, sordidum exi-  
stiment: ubi eos inueniemus, qui honores, magistratu, i-  
mperia, potestates, opes amicitia non anteponant: ut,  
cum ex altera parte proposita hæc sint, ex altera vis  
amicitia, non multo illa malint: imbecilla enim natura  
est ad contemnendam potentia: quam etiam si, negle-  
cta amicitia, cōsecuti sunt, excusari se arbitratur, quia  
no sine magna causa sit neglecta amicitia, itaque ve-  
ra amicitia difficillimè reperiuntur in ijs, qui in hono-  
ribus, rēque publica versantur. ubi enim inuenias, qui  
honore amici anteponat suo? Quid? (hec vt omittam)  
quam graues, quam difficiles plerisque videntur ca-  
lamitatum sociates: ad quas, non est facile inueniri,  
qui descendat. quamquam Ennius recte.

“ Amicus certus in re incerta cernitur.  
tamen hec duo lenitatis, & infirmitatis plerosque con-  
uincunt: aut si in bonis rebus contemnunt: aut si in ma-  
lis deserunt. qui igitur utraque in re granē, constaret,

stabili-

stabiliēmque se in amicitia praefiteris, huc ex maxime  
raro hominum genere indicare debemus, & pane di-  
uino, firmamentum autem stabilitatis, constantiaq; e-  
ius, quam in amicitia quarimus, fides est. nihil enim sta-  
bile est, quod infidum est. simplicem preterea, & com-  
munem, & consentientem, idest qui rebus ipsis mo-  
neatur, eligi par est: qua omnia pertinent ad fidelitatem.  
neque enim fidum potest esse multiplex ingenium, &  
tortuosum, neque vero, qui non ipsis rebus monetur,  
& natura consentit, aut fidus, aut stabilis potest esse.  
Addendum eodem est, ut ne criminibus aut inferendis  
delectetur amicus, aut credat illatis, que pertinent o-  
mnia ad eam, quam iamdudum tracto, constantiam.  
ita fit verum illud, quod initio dixi, amicum nisi inter  
bonos esse non posse. est enim boni viri, quem eundem  
sapientem licet dicere, hac duo tenere in amicitia: pri-  
mū, ne quid fictum sit, nére simulatū: (aperie enim  
vel odisse, magis ingenuum est, quam fronte occultare  
sentientiam) deinde non solum ab aliquo oblatas cri-  
minaciones repellere, sed ne ipsum quidem esse suspicio-  
sum, semper aliquid existimatē ab amico esse viola-  
tum. Accedat huc suavitas quedam, oportet sermonū,  
atque morum, haudquam mediocre condimentum  
amicitia. tristitia autem, & in omni re seueritas absit.  
habet illa quidem gravitate: sed amicitia remissor esse  
debet, & liberior, & dulcior, & ad omnem comitatem  
facilitatemq; proclivior. Exsistit autem hoc loco quedā  
questio subdifficilis: num quando amici noui, digni a-  
amicitia, veteribus sint anteponēti: ut equis veteris te-  
neros anteponere solemus. indigna homine dubitatio.  
non enim amicitiarum esse debent, sicut aliarum re-  
rum, satietates, veterrima quaque ( ut ea vina, que

vetustatem ferunt) esse debent suauissima. verumque illud est, quod vulgo dicitur, multos modios salis simul edendos esse, ut amicitia munus expletum sit. non utes autem, si spem afferunt, ut tamquam in herbis non fallacibus fructus appareat, non sunt illæ quidem repudianda: vetustas tamen suo loco conservanda est: maxima est enim vis vetustatis, & consuetudinis. atque in ipso equo, cuius modo mentionem feci, si nulla res impedit, nemo est, qui non eo, quo consuevit, libenter utatur, quam intrectato, & nouo. nec modo in hoc, quod est animal, sed in ipsis etiam, quæ sunt inanimata, consuetudo valet: cum locis etiam ipsis montuosis delectemur, & silvestribus, in quibus diutius commoratis sumus. Sed maximum est in amicitia, superiorem parem esse inferiori. Sape enim excellentie quedam sunt: qualis erat Scipionis in nostro, ut ita dicam, gregè, numquam se ille Philo, numquam Rupilio, numquam Mummio anteposuit, numquam inferioris ordinis amicis. Quintum vero Maximum fratrem, egregium virum, omnino sibi nequaquam parem, quod is antebat etate, tamquam superiorum colebat: suoque omnes per se esse posse ampliores volebat: quod faciendum, imitandumque est omnibus: ut, si quam præstantiam virtutis, ingenij, fortuna consequi sunt, impartiant eam suis, communicentque cum proximis: ut, si parentibus nati sunt humilibus, si propinquos habeant imbecilliores vel animo, vel fortuna, eorum angeant opes, eisque honoris sint, & dignitati: ut in fabulis, qui aliquandiu, propter ignorantiam stirpis, & generis, in famulatu fuerint, cum cogniti sunt, & aut deorum, aut regum filii inuenti, retinent tamen carieatem in pastores, quos patres suos multos

annos

annos esse duxerunt, quod quidem est multò profectè magis in veris patribus, certisque faciendum. fructus enim ingenij, & virtutis, omnisque præstantia tum maxime capitur, cùm in proximum quemque confertur.

## EXPLANATIO.

**N**EGLIGENDA effama: } propter amicum: non est infamia suscipienda, quam hominum odium sequitur. nam sic plus tibi noceres, quam amico prodessey. MEDIOCREM telum } inde, Ingens telum, Necesitas. **BENEVOLENTIAM** ciuium: } quam beneficiis conciliari, ait lib.2. de Off. vel saltem beneficia voluntate. **BLANDITIIS**, & assent. } quibus populares populi auram captabant. Videntus Plutarchus in libello de discrimine Adulatoris, & Amici. Et assentationibus: sic tres mei. Et assentando, reliqui Ad Scipionem} pro, apud: vel, coram. Ad Sulpicium: Quod ad te delatum diceret se se contra dignitatem tuam. **QVASI signa quedam**, & notas, } nam Virgilius generosi pecoris signa enumerat. Euripi des autem, Bonum virum ab improbo nullo signo internosci, queritur.

Ο τοι τετράδεν δει κανοῦ διειδέναι.  
Ουδεὶς χρεώκητο ιμπέρικε σώματι.

**MAGNA penuria:** } ergo non temere fidendum. SANE } castigantis hoc esse, alij notant. 111. de Leg. Quæ res cùm sapientissimè, modestissimè constituta esset à maioribus, nihil habui: sanè non multum, quod putarem nouandum in Legibus. **EXPERIENDVM** autem est in ipsa amicitia: } non in ipsa amicitia, sed antè, experiri amicum nos debere, Plutarchus scribit in libello de discrimine Adulatoris, & Amici. & Theophrastus apud Plutarchum περὶ φιλαθλότας, ait, non oportere amantem iudicare, sed iudicantem amare. Vide & Isocratem in Parænetico, apud quem probandæ amicitiæ regulæ quedam sunt. Quod est & apud Xenophonem sub Solonatis persona. Est igitur prudentis, sustinere, ut cursum, sic imperium benevolentiae, quo viamur, quasi aquis tentatis, sic in amicitia &c. } hic libri veteres ita dissentunt, ut probabilia ramen-

afferant. Alij enim habent, Cursum, (& ita nouem mei) ut est in vulgata lectione: in qua verbum, Cursum, referri potest ad cursum nautis, cum aquarum sequatur mentio. Alij, Cursum nautis, & (ita sex mei) quod aptam sententiam habet. Nisi si Nautis glossemata fuit ad Cursum. Alij, & (ita duo mei) Equi cursum. Quod si probatur, infra, legi poterit. Equis tētatis: vt ipsa sibi translatio congruat. Docti viri libros esse testatur, in quibus pro Cursum, Curru: & infra, Equis tēperatis, legatur. Quem mihi sanè lectio admodum arridet. Nec tamen à vulgata disticteo: cum ita propriè dicatur, Sustinere cursum, idest nautis: vt, Sustinere currum, ita verò tētantur aquæ, vt equi tēperantur: vel, vt aliis placet, tentantur. Vnus meus, Cursum nautis, vel aquæ. Malè: sed vnde tamen eliciatur glossemata esse, Nautis, vel Aquæ. Septem, Equis temperatis. Nouem, Aquis tēpestat. Vnus, Equis tempestatis. Vnus, Aquis tempestantibus. *Aquis tentatis*: vt in transitu fluminis. De Leg. lib. 2. Nec enim vnum hoc frigidius flumen attigi, cùm ad multa accesserim, vt vix pede tentare possim. *AMICITIIS*, Amicitia, quinque. *ALIOV A parte* Sex, Aliqua ex parte. *PERICLITATIS moribus amicorum*: probatis, periculo facto. Si vero? Sin verò, octo. Siri verò, vnu: malè. Sint verò, vnu: malè. *EXCVSARI se arbitrantur*: Se, abest ab uno. Duo, Excusatim iri arbitri. in quorum uno emendatum, Obscur. Quattuor, Obscuratum in arb. Vnus, Obscuratum iri arb. Vnus, Obscurari arb. & suprà, Obscurari. Vnus, Obscurari se arb. Duo, Obscurari se arb. Quattuor, Obscurari arb. Vnus, Exerutari arb. Vnus, Obscurari peccatum arb. *QVI A non sine magna caesa si neglecta amicitia*: Amicitia, suis pectori abundare. In honorib, re que publica versantur. In honoribus reipub. vers. quinque. Reique pub. vnu. (*Hanc vt omittam*): Dimitram, duo. Obmittam, vnu. *NON est facile inventus*: Inventu, duo. Recte. Sic Crispus lib. 3. hift. apud Carissim lib. 2. Non tu scis, si quas ades ignis carpit acriter, haud facile sunt defensu, quia & comburantur proximæ: *AMICVS certus in re incerta cernitur*: tres mei, In re certa. Plautus Amicum in re dubia nosci dicit. *In re incerta*: in periculo. *PLEROSQUE coniuncti*: in uno vetere, Pleros, esse, alij notarunt. *IN bonis rebus*: suis. *CONTREMVT*: quod est levitatis. *IN malis*: amicorum. *DESERVNT*: amicos, qui fidem cum fortuna mutant. *IN amicitia querimus*: In amicitiam

primitam querimus, vnu. *SIMPLICEM*, } qui tamen prudens sit. *COMMVNEM*, } κανονικούς φίλους, Ilōcrates: Commune in amicis: qui facilis sit. *CONSENTIENTEM*, } nam consensum præcipue requirit amicitia. Græcis, οὐρανία, καὶ εὐρωπία. *ELIGI par est*: } si sit facultas, & optio detur. *ADDENDVM eodem est*, } Addendum in eodem est, tres. *VT ne*: } Ut nec, duo. Ut non, vnu. *DELECTETVR amicus*, } Amicus, abest à sex. *ILLATIS*, } Oblatis, oīnames mei. *APERTE enim vel odisse &c.*, } Horatius sat. 4. libro I.

--absentem qui rodit amicum,  
Qui non defendit, alio culpante: solutos  
Qui captat risus hominum, famamque dicacis:  
Fingere qui non visa potest, commissa tacere  
Qui nequit, hic niger est, hunc tu, Romane, cauet.

*MAGIS in enum est*: } Ingenui, omnes mei. (*QVAM fronte occultare sententiam*) deinde } Nouem, Quām fronte occultare sententiam, iam deinde. *REPELLERE*, } Depellere, vnu, & aliás, malè. *TRISTITIA autem*, } in omni re seueritas abfit, habet illa quidem granitatem: } Abfit, non est in undecim. in quorum duobus additum. *SED amicitia remissior esse debet*, } Sed in amicitia, duo. Hoc, & cetera, quæ sequuntur, referruntur non ad Seueritatem, vt alij putant, sed ad Amicitiam. *Remissior*: non rigida, aut intenta, sed lido magis vinculo colligata. *NVM quando amici noui, digni amicitia, veteribus sint anteponendi*: } inde adagiu, Nouos parans amicos, veterum ne obliuiscere. *EQUIS vetulisti et novos anteponere solemus*: } Virg. Georg. III. *INDIGNA homine dubitatio*: } Indigna est homine dubitatio, duo. Indigna dubitatio homine hæc est, duo. Indigna dubitatio homine est, tres. Indigna dubitatio hæc est, quinque. Indigna est hæc dubitatio in homine, vnu. Indigna dubitatio homine, quattuo. *Esse debent*, } Debent esse, nouem. *Debet esse*, duo. Deberet esse, duo. Dicunt esse, vnu. *Sicut vlt aliarum rerum*, } Sicut belluarum aliarum, vnu. & suprà, Rerum. *SATIETATES*, } Societas, tres. Satietas, quinque. Societas, vnu. *Satietas*: odium, quo modo interpretatur Donatus in Terentiū, *VETERRIMAE, suauissime*: } omnes mei, Veterrima, suauissima. *Vt amicitia munus expletum sit*: } vt amicitia perficiatur, certoque constet, neque de fide mutua dubitetur. *NOVITATES*, } amici-

608 ALDI MANN. COM M.  
tiarum:nouæ amicitiaæ:noui amici. IN *herbū* } Ouidius in e-  
pist.Helenes ad Paridem:

Sed nimium properas,& adhuc tua mesisis in herba est.  
**M A X I M A** vis retusatis, & consuetudinis. } id Ouidius de a-  
more venero præcepit,2.de Arte:

Fac tibi consuescat: nil affuetudine maius.

**A T Q U E** in ipso equo, } Atqui,quattuor. Quia vt in ipso e-  
quo,vnus. Vt in ipso equo,sex. Quo in ipso equo,tres. Quod  
in ipso equo,duo. Qui in ipso equo,vnus. Quando ipso equo,  
vnus.& suprà,Vt in ipso equo. **Q V I** non eo, } Qui non illo,  
vnus. **I N T R A C T A T O**. } sic sexdecim,duo,Intacto. Nec  
verò in hoc tantum,quod est animal, } sic quinque mei. Tantum,  
non est in quinque. Tantum in hoc, vnus. Nec vèo in hoc  
solo,&c.tres.Nec verò in eo,quod &c.vnus.Nec modò in hoc,  
quod &c.tres. **I N A N I M A**, } Inanimata, sexdecim. In ami-  
citia,duo:malè. Cv m locis ipfis delectetur montuosis etiam, & fili, }  
sic sex. Locis in ipfis, tres. In locis ipfis, quinque. Quin, pro;  
Cùm, tres. Cùm in locis montuosis delectemur, vnus. Sic  
Homerus:

—εὐδέ τε εἰ  
He πατρέός γαίης γλυκερή τε γε ἀποιθεῖ.

Neque enim patrio solo dulcius quidquam nouimus.

**S C I P I O N I S**, } sic omnes mei. Aliás,Scipioni. IN *nōstro*,  
vt ita dicam,grege. } Ter. Adelph.

At hic hercule de grege illo est.

**N V M Q Y A M** se ille Philo, } Ille,non est in vno. **R U P I L I O**, }  
sic rectè legendū.contra omnes veteres libros:ex historia te-  
stimonio. Amici enim Lælij & Rupilius, & Rutilius fure:  
quorum nominū similitudo peperit errorem:sed Rupilius,e-  
ius æqualis:Rutilius,adolescens. De Rutilio,infrā. De Rupilio  
autem,eodem loco,& ep.16.lib.4.ad Att. **Q. V E R O** *Maxi-  
mum*, } eiusdem Paulli filium,sed à Q.Fabio Max.adoptatum.  
**Q u o d** is antebat estate, } Quia ; vnus. **P E R** se esse posse  
ampiores volebat. } Posse,non est in vno. Per se posse, ampl.  
vol. vnus. Per se esse ampiores, vol. vnus. Post se esse posse  
amp.vol.vnus. Per se posse,esseque amp.vol.scriptum esse in  
vetere libro,notatum video. **N A T I** sunt } Sint,duo. Sint

609  
**I N** *L A E L I V M .* **609**  
nati,quinque.Sunt,deest in vno. **V T** in *fabulā*, } sic quindecim  
mei,rectè. Vnus,Vt in fabulis videri potest. Vnus,vt in  
fabulis dicitur. Vnus.Vt in fabulis de illis audiuimus. **I G N O-  
R A N T I A M**. } Ignorationem,quatuor.quo modo legitur in  
Nonio,Familatus. **A v t** deorum,aut regum fili, } vt Telephus,  
Herculis,& Auges: Ägyptus,Theyestis,& Pelopiae filij: alter  
à cerua,alter à capra nutritus,à pastoribus inuenti. vt Romu-  
lus,& Remus à Faustulo educati. vt Cyrum,Regem Medo-  
rū,expostum ab Astyage,pastor Mithridates aluit. vt Semi-  
ramis,diu ab aubis alita,à pastoribus sublata,regia cōiuro fa-  
ctuuit. **P A T R E S** suos } sic vnus,vnus,Patres sibi.A sexdecim  
abest,& Suos,& Sibi. **C E R T I S Q**, } Ceterisque,duo. **F R V-**  
**C T V S** enim ingenio, & virtutis, omnisque præstantie tum maximus  
capitur,cum in proximum quemque confortur. } sic sexdecim.Duo,  
Tum permaximus. Aliás ,Carpitur. Fructus autem virtutis  
est caritas.

## C I C E R O .

**V T** igitur ijs, qui sunt in amicitia, coniunctionis-  
que necessitudine superiores, exequare se cum  
inferioribus debent: sic inferiores dolere non debent, se  
à suis amicis aut ingenio, aut fortuna, aut dignitate  
superari. quorum plerique aut queruntur semper ali-  
quid, aut etiam exprobrant, eoque magis, si aliquid  
habere se putant, quod officiosè, aut amice, & cum la-  
bore aliquo suo factum queant dicere. ódiosum sane  
genus hominum, officia exprobratiū: qua meminisse  
debet is, in quem collata sunt: non commemorare, qui  
contulit, quamobrem, vt ijs, qui superiores sunt, submit-  
tere se debent in amicitia: sic quodam modo inferiores  
extollere, sunt enim quidam, qui molestas amicitias fa-  
ciunt, cum ipsi se contemni putant, quod non ferè con-  
tingit, nisi ijs, qui etiam contemnendos se arbitrantur:  
qui hac opinione non modò verbis, sed etiam opere, le-  
uandi sunt, tantum antem cuique tribuendum est.

primum, quantum ipse efficere possis: deinde etiam, quantum ille, quem diligas, atque adiuves, possit sustinere. non enim tu possis, quantumuis licet excellas, omnes tuos ad honores amplissimos perducere: ut Scipio P. Rupilius potuit consulem efficere, fratrem eius Laciū non potuit. quod si etiam possis quidvis deferre ad alterum, vidēdum est tamen, quid ille possit sustinere. Omnino amicitiae, corroboratis iam, confirmatisq; ingenitis, & atibus, iudicandas sunt: nec si qui, ineunte aetate, venandi, aut pila studiosi fuerint, eos habere necessarios oportet, quos cum eodem studio præditos dilexerunt. isto enim modo nutrices, & pedagogi iure vetustatis plurimum benevolentia postulabunt: qui negligendi quidem nō sunt: sed alio quodam modo colendi. aliter enim amicitie stabiles permanere non possunt. disparens enim mores disparia studia sequuntur. quorum dissimilitudo dissociat amicitias. nec ob aliam causam ullam boni improbis, improbi bonis amici esse non possunt, nisi quod tanta est inter eos, quanta maxima potest esse, morum studiorumq; distantia. Reclamet etiā præcipi potest in amicitiis, ne quis intemperata quadam benevolentia, quod persape fit, impedit magnas vilitates amicorum: nec enim (ut ad fabulas redeam) Troiam Neoptolemus capere potuisset, si Lycomede, apud quem erat educatus, multis cum lacrymis iter suum impudentem, audire voluisse: & saxe incidente magna res, ut discedendū sit ab amicis: quas qui impedit vult, quod desideriū non facile ferat, & infirmus sit, mollisq; natura, & ob eā ipsam causam, in amicitia parum iustus. Atque in omni re, considerandū est, quid postules ab amico, & quid patiare à te impotest. Est etiam quasi quedā calamitus in amicitiis dīmittendis

mittendis nonnūquam necessaria, iam enim à sapientiū familiaritatibus adulterios amicitias oratio nostra delabitur. erumpūt saepe vitia amicorum tum in ipsos amicos, tum in alienos: quorū tamen ad amicos redundet infamia. tales igitur amicitia sunt remissione v̄sus eleuanda, & ut Catonem dicere audiui, dissēda magis, quam discindenda sunt: nisi quædam admodū intolerabilis iniuria exarserit: ut neque rectum, neq; honestum sit, neq; fieri posse, ut non statim alienatio, disjunctione facienda sit. sin autem morū, aut studiorum commutatio quadā, ut fieri solet, facta erit, aut in rep. partibus dissensio intercesserit: (loquor enim, ut paulò antè dixi, non de sapientum, sed de cōmunitib; amicitiis) cauendum erit, ne non solum amicitiae deposita, sed inimicitia etiam suscepta videantur. nihil enim turpis, quam cum eo bellū gerere, quicū familiariter viixeris. ab amicitia Q. Pœpī meo nomine se remouerat, ut scitis, Scipio: propter dissensionē autem, que erat in rep. alienatus est à collega nostro Metello. utrumque egit grauter, auctoritate, & offensione animi nō acerba. quamobrem primū dāda opera est, ne qua amicorum dissidia fiant: sicut tale aliiquid euenerit, ut extincta potius amicitiae, quam oppressa videantur. Cauendū verò est, ne etiam in graues inimicitias conuertant se amicitiae: quibus iurgia, maledicta, contumelia, gignūtur: que tamen si tolerabiles erunt, ferendas sunt: & hic homines veteri amicitia tribuendus est, ut is in culpa sit, qui faciat, non qui patiatur iniuriam.

## EXPLANA TIO.

Sic inferiores non dolere, se &c. } sic decem septem. quorū v-  
nus supra addit, Debent. Vnus, Sic inferiores non debet,  
Q 2

se &c. Hoc autem est inuidorum: qui alienis rebus marcescunt opimis. A suis amicis } Amicis, non est in decemseptem. Querunt, vnuis. Queruli autem homines amicitiae idonei non sunt. Proverbium Graecum: Οι φιλομηθεῖς εἰς φίλουν οὐκ εἰσφένεις. Si aliquid habere se put. } Si se habere put, decemseptem. OFFICIOSE, } Officiofissimè, vnuis. Offensiose, Lambinus. Et amic, } sic omnes mei. Aliis. Aut amicè. FACTVM } Facto, vnuis. male. ODIOSVM geniu hominum, officia exprobrantium: } vide Senecam, lib. 2, de Beneficiis. Commemoratio etiam, exprobationis vim habet. Sosia apud Terentium. QVAE meminisse debet is, in quem collata sunt, non commemorare, qui contulit. } Proverbium Graecum: ξέρετα βάθω μέμνοντος: δύος δ' ἐπιθέου.

Qui etiam contemnendos se arbitrantur: } nihil arroganter de se lidentes. QVANTVM ipso efficere posse: } Sic omnes mei: vno excepto, in quo, Poteſt. Lambinus, Posſit. Non enim tu posſis, quamtumuis? Non enim tu posſis, vel quamtumuis, tres. Quamuis, duo, vnuis. Quamtūquamuis. EXCELLAS, } sic omnes mei. Alij notant esse in quibusdam veteribus, Excelles. EFFICERE, fratrem eius etc. } Efficere, sed fratrem eius &c. vnuis. male. Fratrem eius: Tusc. 4. & Pli. lib. 7. cap. 36. Eius: pro Suum. vt Liuius lib. 33. T. Luuentiū, & C. Labeonem, eius fratem, idest, C. Afinii Labeonis, supra nominati. Sic & in antiquis inscriptionibus.

L. MAELIVS . L. TARNITAS  
VASCVLARIVS  
SIBI . ET . DVRDENAE. P. L.  
CYTHERIDI  
ET. L. MAELIO . L. F. ANI  
FLACCO  
FILIO . EIVS  
SCR. AED. CVR. ET . SCR  
ET . LIBERTIS  
ET . LIBERTABVSQ. SVIS

Et:

D. M  
T. FLAVIVS . VITALIS

FEC.

FEC. SIBI. ET. POSTERISQ. EIVS  
LIB . LIBERTABVSQVE  
QVORVM NOMINA. I. S. S.  
POSTERISQVE . EORVM  
MERCVRIALI . HILARI  
CINNAMO . SATVRNINI  
CRESCENTI. SER. RESTITVTAE  
FORTVNAT . FESTAE  
COETONIDI . ANCILLAE. I

Et ingenius, } Et, abest à nouem meis. Eo DEM studio. } sic decemseptem. recte. Malè alijs, Eorum. A duobus abest. male. NvTRICES, } Sic Aeneas pius in Nutticē, lib. 7. Aen: PAEDAGOGI } serui. vide Valerium lib. 6. cap. I. Sic in Aristotlem Alexander primum, postea refriguit amor. Sed alio quodam modo, } hoc placet, vt est in nouem meis. duo suprà habent, Diligendi. vnius, Amādi. reliqui, Colendi. Vt facile appareat, omnia esse glossemata. Alio quodam modo: qui multo minore culpa negligantur, quam veteres amici. ALITER enim amicitia stabiles } Enim, non est in tredecim. Alter: si vetustatis ratio potius habeatur, quam morum. Ne quis intemperata quadam benevolentia, } Ne intemperata quadam benevolentia, duo. Ne OPTOLEMVS } immo Achilles. Ciceronis igitur hoc est πανηγυρίζειν. Homerus in. x. Hyginus cap. 96. Plinius lib. 35. cap. II. DESIDERIVM non facile ferat: } absentiam. PARVM iufus. } Parum est iustus, vnuis. Parum iufus: quod plus delectationi sua tribuit, quam aut utilitati, aut officio amici. EST etiam } Est enim, tres. REMISSIONE v̄sus eleuanda, } Ita crebro usurpat hoc verbum à Cicerone, & ab aliis, vt in dubium eius v̄cire significatio non possit. est enim, in inuere, & extenuare. Vt infra: Cauffas suspicionum, offensionāque tum euitare, tum eleuare, tum ferre, sapientis est. Tueor igitur vulgatam lectionem, dislentientes ab iis, qui mutant: cùm eū p̄fertim vndeclim veterum librorum auctoritas fulciat. Vnus, Leuandæ. Duo, Eluendæ. Vnus, Eludendæ. Vnus, Elidendæ. Vnus, Elueandæ, & supra, Eleuandæ. Vnus, Eluente. DISCENDENDAE: } sic omnes mei. Discutiendæ, esse in vno vetero, notat Langius. COMMUTATIO quadam } non tanta, neque tanti momenti, vt odium mereatur. LoqYOR enim, } Loquor enim iam, tredecim. Q. 3

NIHIL enim turpius, } addunt, Est, tredecim. COLLEGA in-  
sbro Metello. } Macedonicus: Collega autē Scipionis, & Lelij in  
auguratu. Vide Plinii lib. 7. cap. 43. GRAVITER, auctorita-  
te, } Graui auctoritate. vnus. Grauiter: ratione in consi-  
lium adhibita. EXSTINCTAE, } oppresse } vide No-  
nium. CAVENDVM vero est, } Verò, abest à nouem. Vnus,  
Cauendum vero, ne &c. MALEDICTA, contumelia } Male-  
dicta, & contumeliaz, quattuor. Maledicta contumeliarum, v-  
nus. IN culpa } in vitio.

## C I C E R O.

**O**MNINO omnium horum vitiorum, atque in-  
commodorum una cautio est, atque una prouisio,  
vt ne nimis cito diligere incipiamus, né ve indignos.  
digni autē sunt amicitia, quibus in ipsis inest causa,  
cur diligentur, rarum istud genus: & quidem omnia  
praetara rara, nec quicquam difficius, quām reperire,  
quod sit omni ex parte in suo genere perfectum. sed  
plerique neque in rebus humanis quidquam bonū no-  
runt, nisi quod fructuosum sit: & amicos, tamquā pe-  
cudes, eos potissimum diligunt, ex quibus sperat se ma-  
ximum fructū esse capturos: itaque pulcherrima illa,  
& maximè naturali carent amicitia, per se, & pro-  
pter se, expetenda, nec ipsi sibi exemplo sunt, hec vis a-  
micitiae qualis, & quāta sit. ipse enim se quisque diligit,  
non ut aliquam a se ipso mercedem exigat caritatis  
suis, sed quod per se sibi quisque carus est. quod nisi idē  
in amicitiam transferatur, verus amicus numquam  
reperiatur. est enim is amicus quidem, qui est tāquam  
alter idem. quod si hoc apparet in bestiis, volucribus, a-  
grestibus, natātibus, cicuribus, feris, primum, vt se ipsa  
diligat: (id enim pariter cum omni animāte nascitur)  
deinde, vt requirant, atque appetant, ad quas se appli-  
cate

cent eiusdem generis animātes: idque faciunt cum de-  
siderio, & cum quadam similitudine amoris humani:  
quanto id magis in homine fit natura? qui & se ipse  
diligit: & alterū acquirit, cuius animum ita cum suo  
commisceat, vt efficiat pene unum ex duobus. Sed ple-  
rique peruerse, ne dicam impudenter, amicum habere  
talem volunt, quales ipsi esse non possunt: quaq. ipsi nō  
tribuunt amicis, hec ab ijs desiderant. par est autem,  
primum, ipsum esse virum bonum: tum, alterum simi-  
lem sui querere. in talibus ea, quam iamndudum tracta-  
mus, stabilitas amicitiae confirmari potest: cum homines,  
benevolentia coniuncti, primum cupiditatibus ijs, qui-  
bus ceteri seruunt, imperabunt: deinde aequitate, iusti-  
tiāque gaudebunt: omniāque alter pro altero suscipiet:  
neque quidquam umquam, nisi honestum, & rectum,  
alter ab altero postulabit: neque solū colēt se inter se,  
ac diligent, sed etiam verebuntur. nam maximum or-  
namentū amicitiae tollit, qui ex ea tollit verecundiam.  
itaque in iis perniciosus est error, qui existimant libidi-  
num, peccatorūmque omnium patere in amicitia lice-  
tiā. virtutum enim amicitia adiutrix à natura data  
est, non vitiorum comes: vt, quoniā solitaria non pos-  
set virtus ad ea, que summa sunt, peruenire: coiuncta,  
& consociata cum altera, perueniret. que si quos inter  
societas aut est, aut fuit, aut futura est, eorū est haben-  
dus ad summum naturā bonum optimus, beatissimus  
que comitatus. hac est, inquam, societas, in qua omnia  
insunt, quae putant homines expetēda, honestas, gloria,  
tranquillitas animi, atque iucunditas: vt, cum hac ad-  
sint, beata vita sit, & sine his esse non possit. quod  
cum optimū, maximūmque sit: si volumus adipisci, vir-  
tuti opera danda est: sine qua neque amicitiam, neque

villam rem expetendam consequi possumus, ea verò neglecta, qui se amicos habere arbitratur, tum se deinde errasse sentiunt, cùm eos grauis aliquis casus experiri cogit. Quocirca, ( dicendum est enim sapius) cùm iudicaueris, diligere oportet: non, cùm dilexeris, iudicare. sed, cùm multis in rebus negligentia plectimur, tum maximè in amicis & deligidis, & colendis. propositeris enim utimur consiliis & acta agimus: quod vetamur veteri proverbio. nam, implicati ultra & citro vel vsu diurno, vel etiam officiis, repente in medio cursu amicitias, exorta aliqua offensione, di- rumpimus. quo etiam magis vituperanda est rei maxime necessaria tanta incuria. una est enim amicitia in rebus humanis, de cuius utilitate omnes uno ore consentiunt. quamquam à multis ipsa virtus contemnitur, & venditario quedam, atque ostentatio esse dicitur: multi dinitias despiciunt: quos, parvo contentos, tenuis virtus, cultiusque delectat: honores verò, quorum cupiditate quidam inflammantur, quam multi ita contemnunt, ut nihil inanius, nihil esse leuius existiment? itēmque cetera, quæ quibusdam admirabilia videntur, permulti sunt, qui pro nibilo putent, de amicitia omnes ad unum idem sentiūt, & ij, qui ad rem. se contulerunt: & ij, qui rerum cognitione, doctrināque delectantur: & ij, qui suum negotium gerunt otiosi: postremo ij, qui se totos tradiderunt voluptatibus: sine amicitia vitam esse nullam: si modo velint aliqua ex parte liberaliter vivere. serpit enim nescio quo modo per omnium vitam amicitia: nec villam atatis degenerationem patitur esse expertem sui.

## EXPLA-

## EXPLANATIO.

**O**MNINO omnium horum viatorū, } Omnia, abest à quat-  
tuor meis. CAVTIO } Ter. And. Puerum ne resciscat  
mihi esse ab illa, cautio est. PROVISIO: } Q. Curt. lib. 10. Se-  
ditione promissa. VT ne } Ter. Eun. Itaque, vt ne id videam  
misera, huic effugiforas. VT ne nimū cito: Iosocrates: Βε-  
δεῖος περὶ φίλων γένους. γνώμην δε περὶ στρατεύεν. διάλογος περὶ στρατεύεν. INCIP-  
IANT, } sic tredecim, quinque, Incipias. Aliás, Incipiamus.  
NEVE indignos } Neue nos dignos, vnus meus. RARVM  
istud genus: } Rarum id genus, vnus, reliqui decēseptem, Ra-  
rum genus. OMNI ex parte in suo genere perfectum: } non vi-  
deo, cur assentiar iis, qui auferunt illud, In suo genere, ex in-  
genio, cùm & legatur in omnibus antiquis libris, & sententia  
obscuritatis, aut vitij nihil habeat. Est enim diuersarū rerum  
perfectio, propterea dixit eleganter, In suo genere, vt singula-  
ria omnia notaret, ac distingueret. Horatius, Nihil est ab o-  
mni parte beatum. QVIDQVAM bonum, } Boni, decem.  
NATVR ALI } sic omnes mei. Naturabili, alij scriptum esse  
dicunt in quibusdam veteribus. A se ipso } Ipse, septem. Est enim  
is quidem tamquam alter idem: } sic tredecim, vnus. Est enim  
is amicus quidem, qui est tamquam vnus. Est enim verus co-  
mitus is quidem tamquam vnus. Est enim is, qui est amicus  
tamquā, duo. Est enim verus amicus, qui est alter idem. Aliás,  
Est enim is amicus quidē, qui est tamquā. ARESTIBVS,  
natantibus, cicuribus, } sic nouem. Natantibus, agrestibus, ci-  
cur, quattuor. Natantibus, non est in duobus. Agrestibus,  
natantibus quibus feris, & cicuribus, vnus. Cucuris, pro Cicu-  
ribus, vnus. Agrestibus, natantibus, suibus, cicuribus, vnus, &  
aliás. AD quos } Ad quos, duo. CVM quadam similitudine: }  
Cum, abest à quattuor. FIT natura? } non opinione, non  
ex inopia, aut necessitate, aut spe commodorum. ANQVI-  
RIT } sic legendum. Antea, Acquirit, quō modo in duode-  
dim. Adquirit, duo. Acquirat, vnus. Aquiritur, vnus, Inquirat,  
vnus. Quod corrumptum est ex Anquirit. CVIVS animu-  
itacum suo commisceat, } quocum consilia communicat. PER-  
VERSE } vitium in amicitia. TRACTAMVS, } Tractau-  
mus, quinque. Tractabamus, duo. COLENT se inter se } Co-  
lent inter se, tredecim. Sicalibi: pueri nostri ameat inter se,

ac discunt. Ac *diligent*,<sup>3</sup> Sic omnes mei, vno excepto, in quo At. ex quo alij libri, Atque. *CONIVNCITA*, & *conficiata*<sup>3</sup> Coniuncta, & sociata, septem. Et conficiata, vnum. Et cum sociata, vnum. Et cōsonata, vnum. Mendosē. Qv AE si quis inter &c<sup>3</sup> respexit ad verbum, Conficiata. Q<sup>3</sup>, vnum. Alij scribūt esse in vetere, Quare, pro Quæ. Vt, cumbec adint,<sup>3</sup> Et, pro, Vt, tredecim. *EXPERIRI cogit*,<sup>3</sup> fidem eorum, quos fibi amicos esse, falsò putabant. (*DICENDVM est enim sepius*) sic quinque. Erian, pro, Enim, nouem. Et, vnum. Dicendum est sepius, vnum. Dicendum & cùm sepius, vnum. *DILIGERE oportet*,<sup>3</sup> Diligere oportere, vnum. *ACTA egimus*. Ter. Phorm. Actum, aiunt, ne agas. Qv O retamur<sup>3</sup> Quæ, duo. *IMPLICATI*,<sup>3</sup> Impliciti, vnum. *VLTRO & citro*,<sup>3</sup> Vlro, citróque duo. Vlroque citróque, vnum. Vlroque citro, vnum. Vs v diurno,<sup>3</sup> Diurno, vnum. Diurno, duo. Diurno, vnum, & sup. add. Tu. Diuno, duo. *DIRVM PIMVS*,<sup>3</sup> Dirumpimus, tres. Dirumpimus, vnum. REI maximè necessaria tanta incuria,<sup>3</sup> magna est hoc in loco (quod alij scribunt: nam mei quindecim faciunt eum impressa lectione, duo, Rei tam max. nec. tanta inc.) antiquorum librorum varietas, nec tam satis appetet, quos sequi debeas. Nam, quocumque modo legas: Rei maximè necessaria tanta incuria. vel: Rei maximæ, tam necessaria tanta incuria. vel: Rei tā maximæ necessaria tanta incuria: recte legi puto. Primum est apertum. Alterum non obscurum: & interdum coniungit Cicero rem maximam, maximeq. necessariam, plus est enim, necessariū quiddam esse, quam maximum. vt in epistola ad Curionem: Non dubitau id à te per litteras petere, quod mihi animum esset maximum, maximeq. necessarium. Postremum videri potest durius, coniuncta particula. Tam cum aduerbio Maxime, sed hoc ipso vereor, ne reiectū sine causa sit, ignoratione antiquitatis. Mihi enim displicere non potest, cum in illud Plauto in Aulularia non dissimile intueor:

Quām ad probos propinquitate proxime te adiunxeris,  
Tam optimum est.

Et in illud Ter. Heaut. act. 5, sc. 2.

Adolescens, quām minima in spe fitus erit,  
Tam facillimè patris pacem in leges conficiet suas.

Et eiusdem, Adelph. act. 3, sc. 5.

Quām vos facillimè agitis, quām estis maxumē

Poten-

Potentes, dites, fortunati, nobiles,  
Tam maxumē vos æquo animo æqua noscere.  
Oportet, si vos voltis perhiberi probos.

Et Varronis, de re rust. Quām paucissimos reliqueris, tam optimi in alédo fiūt. Et Sallustij, in lugurta: Itaq. quām quisq. pessimè fecit, tam maximè tutus est. Nec illa diuersa, Catulli, & Velleij. Catulli, ad Ciceronem:

Tanto pessimus omnium poëta,  
Quanto tu optimus omnium patronus.

Velleij, lib. 2. de Mario: Quantū bello optimus, tantum pace pessimus. Possem afferre multa de Græcis: sed Latina sufficiat. *VITILITATE*,<sup>3</sup> non fine, nam alij alium statuant. *NAMQÆ à multis*,<sup>3</sup> Quamquam, pro, Namque, est in omnibus. IPSA *virtus*,<sup>3</sup> ord. præp. res. *VENDITATIO*,<sup>3</sup> Vendicatio, omnes. *OSTENTATIO esse dicitur*,<sup>3</sup> Ostentatio conceditur, Langius. Esse, non est in vno meo. omnes, Dicitur, non Conceditur. *MULTI dimitias despic*,<sup>3</sup> Multi etiam diu. desp. duo. Multi diu. desp. vnum, & supr. add. Autem. *NEGOTIVM gerunt otiosi*,<sup>3</sup> quod attinet ad resp. Sic omnes mei. *VITAM effe nullam*,<sup>3</sup> sic tres. recte. vndecim addunt, Sentient. tres, Dicunt. *PER omnium vitam*,<sup>3</sup> Vitas, decem septem,

### C I C E R O .

**Q**uin etiam, si quis ea asperitate est, & immani-  
tate nature, vt congressus, societatemque homi-  
num fugiat, atque oderit, quallem fuisse Athenis Ti-  
monem nescio quem accepimus: tamen is pati non pos-  
sit, vt non acquirat aliquem, apud quem enomat vi-  
rus acerbatis suæ, atque hoc maximè iudicaretur, si  
quid tale posset contingere, vt aliquis nos deus ex hac  
hominum frequentia tolleret, & in solitudine vspiam  
collocaret, atque ibi suppeditanus omnium rerum, quas  
natura desiderat, abundantiam, & copiam, homi-  
nis omnino adspiciendi potestatem eriperet: quis tam  
esset ferrenus, qui eam vitam ferre posset? cuique non  
auferrat fructum voluptatum omnium solitudo? verum

igitur illud est, quod à Tarentino Archita, ut opinor, dici solitum, nostros senes commemorare audiuit, ab alijs senibus auditum, si quis calum adscendisset, naturamque mundi, & pulchritudinem siderum perspexit, insuauem illam admirationem ei fore, que tuncundissima fuisset, nisi aliquem, cui narraret, habuisset. sic natura solitarium nihil amat: semperque ad aliquod, tamquam adminiculum, annuitur: quod in amicissimo quoque dulcissimum est, sed, cum tot signis eadem natura declareret, quid velit, ac querat, quid desideret: obsurdesimus tamen nescio quo modo, nec ea, quae ab ea monemur, audimus. est enim varius, & multiplex usus amicitiae: multaq; caussa & suspicionum, offensionumque dantur, quas tum evitare, tum eleuare, tum ferre, sapientia est. tna illa sublevanda offensio est, ut & utilitas in amicitia, & fides retineatur. nam & monendi amici sepe sunt, & obiurgandi: & hoc accipienda amice, cum beneuole fiunt. sed nescio quo modo verum est, quod in Andria familiaris meus Terentius dixit.

“ Obsequium, amicos: veritas, odium parit. molesta veritas est: siquidem ex ea nascitur odium, quod est venenum amicitiae: sed obsequium multo molestius: quod peccatis indulgens, precipitem amicum ferri sinit. maxima autem culpa in eo est, qui & veritatem affernatur, & in fraudem obsequio impellitur. omnis igitur hac in re habenda ratio, & diligentia est, primum ut monitio acerbitate, deinde obiurgatio contumelia careat. in obsequio autem (quoniam Terentiano verbo libenter vitimur) cornitas adsit: assentatio, vitiorum adiutrix, procul amoneatur, que non modo amico. sed ne libero quidem digna est. aliter enim

nun cum tyranno, aliter cum amico vititur. cuius autem aures clausae veritati sunt, ut ab amico vera audiire nequeant, huius salus desperanda est. scitum est enim illud Catonis, multo melius de quibusdam acerbos inimicos mereri quam eos amicos, qui dulces videantur: illas verum sape dicere, hos numquam. atque illud absurdum est, quod i, qui monentur, eam molestiam, quam debent capere, non capiunt: eam capiunt, qua debent carere. peccasse enim se, non anguntur, obiurgari, molestie ferunt: quod contra oportebat, delicta dolere, obiurgatione gaudere. Ut igitur, & monere, & moneri, proprium est vere amicitiae: & alterum libere facere, non asperere: alterum patienter accipere, non repugnanter: sic habendum est, nullam in amicitiis pestem esse maiorem, quam adulacionem, blanditiias, assentationem. quamvis enim multis nominibus est hoc vitium notandum, leuum hominum, atque fallacium, ad voluntatem loquentium omnia, nihil ad veritatem. cum autem omnium rerum simulatio est vitiosa, tollit enim indicium veri, idque adulterat) tum amicitiae repugnat maxime. delet enim veritatem, sine qua nomen amicitiae valere non potest. nam, cum amicitiae vis sit in eo, ut unus quasi animus fiat ex pluribus: qui fieri poterit, si nec in uno quidem unus animus erit idem semper, sed varius, commutabilis, multiplex? quid enim potest esse tam flexibile, tam deuium, quam animus eius, qui ad alterius non modo sensum ac voluntatem, sed etiam vultum, atque nutum, conuertitur?

Negat quis nego: ait, aio: postremo imperani ego met mihi.

Omnia assentari:  
ut ait idem Terentius: sed ille sub Gnathonis persona:

quod amici genus adhibere, omnino leuitatis est. multi autem Gnathorum similes cum sint, loco, fortuna, fama superiores, horum est affensio molesta, cum ad vanitatem accessit auctoritas. secerni autem blandus amicus à vero, & internosci tam potest adhibita diligentia, quam omnia fucata, & simulata à sinceris, atque veris.

## EXPLANATIO.

**Q**VIN etiam, si quis ea asperitate est, & immanitate nature, vt congressus societ. q. hom. fug. } Quin etiam, si quis asperitatem eam, & immanitatem naturæ congressus, vt societatem hom. fug. septem, quorū duo, Societates vt hom. vñus, Si quis esset asper, & imm. vñus, Inhum. Fortasse pro Cōgressus, Consecutus, legendū, si veteres hosce libros sequamur in aliis. **T**IMONE M *nescio quem* } Timonē quendā, esse in vetere libro, ait Lambinus. De Timone Tusc. 4. Plu. in Alcibiade, & Antonio, & Sudas, & Lucianus. **A**NQVIRAT } Inquirat, vñus. Quod factū est ex Anquirat. **I**VDICARETVR, } Diudicaretur, duo. **I**n solitudinem } In solitudinem, tres. In sollicitudinem, vñus. **T**ARENTINO *Archytas*, } Pythagorico, de quo Laertius lib. 8. Vide Plut. in Bione. **A**b alii sensibus auditum: } æqualis enim Platonis Archytas fuit. de Senectute. **S**i quis calum ascendit, } Si quis in calum adsc. quindecim. Si quis ad calum adsc. vñus. **N**isi aliquem, cui narraret, habuisset. } Cui ea narr. vñus. Non habuisset duo. **T**ot signis } argumentis evidentibus. **A**c querat, } Aut quod requirat, vñus. An querat, duo. Quid querat, quattuor. Acquirat, duo. Aut querat, duo. Aut requirat, vñus. Desunt hæc in quatuor. Anquirat, Labinus. **M**ULTAEQ. *causæ suff. off. inf. sionumque*, } Multæq. suspicionū causæ, offenditionumque, duo. **E**LEVARE, } pro minuere, extenuare. suffr. **S**APIENTIS est, } iuxta naturæ præscriptum viventis. **V**ITILITAS in amicitia, } Veritas, duo. **A**CCIPENDA amicè, } Accipienda sunt amicè, nouem. **A**ccipenda amicè, ab eo, qui monetur, & obiurgatur. **N**ESCIO quo modo verum est, } Nescio quomodo hoc verum est, vñus. Nescio quo modo id verū sit, vñus. Nescio quo modo verum sit,

sit, vñus. **F**AMILIARIS *meus*, adeo familiaris, vt à Lælio scriptæ putentur, quæ Terentij nomine comedie circumferuntur. ad Att. lib. vii. ep. 3. **T**ERENTIVS, } abest à quatuordecim. vñus, r. **M**VLTO *molestius*: Multo molestius est, sex. in quorū vno additū, in vno deletum. **P**RAECIPITEM *ferri*, } in periculum agi. **M**ONITIO, } Admonitio, quatuor. **O**BSEQUIO, } vide Quiquit. lib. 8. ca. 3. de hoc verbo. **N**EQUEANT, } Nequeat, tridecim. **I**L V D *Catonis multo melius*. } sic quinque. Illud Catonis, vt multa, Melius, duo. Illud Catonis, vt multa, Multo melius, duo. Illud Catonis vt multo melius, septem. **Q**VA *debeat carere*, } sic quinque. Qua debeat vacare, quinque. **Q**VO *D contra oportebat*, } similiter locutus in extremo de Senectute. **O**BIVRGATIONE gandere, } Correctione, octo. Correptione, octo. Correctore, sed sup add. Correctione, vñus. **E**t monere, & moneri, } οὐαῖς τραπέσαις ἐν τείχῳ. Non asperè, alterum &c. } Non alperè, & alterum, vñus. **A**DVLATIONEM, *blanditiæ*, } Blanditiam, octo. Blanditionem quatuor. Et blanditiæ, vñus. **Q**VAM V I S *enim multis nominibus*, } sic vndecim. Quam multis enim nom. vñus. rectè. Quamuis enim hoc multis nom. vñus. **E**nim, nō est in vno. Quamuis autem multis nom. vñus. **A**D voluntatem, } Ad voluptatem sex. **T**Y M *amicitiae repugnat* maximè, } Repugnat abest ab vno. Rectè. **S**i nec in vno quidem vñus animus, } Si ne in vno quidem quoque vñus an. quinque. Si nec in vno quoque vñus an. tres. Si nō in vno quoque animus erit vñus, duo. Si non in vno quidem quoque vñus an. duo. Si in vno quoque vñus an. vñus. **V**T *ait idem Terentius*, } Idem, abest ab vno. Eun. act. 3. sc. 2. **L**OCO, } dignitate, ad Terentiam, lib. xiv. ep. 18. Videte, quid alia faciant isto loco feminæ.

## CICERO.

**C**ONCIO, que ex imperitisimis constat, tamen iudicare solet, quid inter sit inter popularem, id est assentatorem, & leuem cīnem: & inter constantem, severum, & grauem. Quibus blanditiis C. Papirius consul nuper influebat in aures concionis, cum ferret

legem de tribunis pl. reficiendis? dissuasimus nos. sed nihil de me, de Scipione dicam libentius. quanta illi, dicit immortales, fuit granitas, quanta in oratione maiestas? ut facile ducem populi R. non comitem, diceres. sed affustis, & est in manibus oratio. itaque lex popularis suffragii populi repudiata est. Atque (ut ad me redeam) meministis, Q. Maximo, fratre Scipionis, & L. Mancino cos. quam popularis lex de sacerdotiis C. Cicini Crassi videbatur. cooptatio enim collegiorum ad populi beneficium transferebatur. atque is primum instituit in forum versus agere cum populo. tamen illius vendibilem orationem reuigio deorum immortalium, nobis defendantibus, facie vincebat. atque id actum est pretore me quinquennio ante, quam consul sum factus. itaque re magis quam auctoritate, causa illa defensa est. quod si in scena, id est in concione, in qua rebus fictis, & adumbratis loci plurimū est, tamen verum vale. si modo id pates factum, & illustratum est: quid in amicitia fieri oportet, que tota veritate perpenditur? in qua nisi, ut dicitur, apertum peditus videoas: tuumque ostendas: nihil fidum, nihil exploratum habeas: ne amare quidem, aut amari posis, cùm, id quam verè fiat, signores. quamquam ista assentatio, quamvis pernicioſa sit, nocere tamen nemini potest, nisi ei, qui eam recipit, atque ea delectatur. ita sit, ut is assentatoribus patefaciat aures suas maxime, qui ipse sibi assentetur, & se maximè ipse delebet, omnino est amans sui virtus: optimè enim se ipsa nouit: quamque amabilis sit, intelligit. ego autem non de virtute nūc loquor, sed de virtutis opinione. virtute enim ipsa non tam multi prediti esse, quam videris, volunt. hos delectat assentatio, his fictis ad eorum voluntatem

sermo

sermo cùm adhibetur, orationem illam vanam testimonium esse laudum suarum putant. Nulla est igitur hec amicitia, cùm alter verum audire non vult, alter ad mentiendum paratus est. nec parasitorum in comedys assentatio nobis faceta videretur, nisi essent milites gloriosi.

“Magnas verò agere gratias Thais mibi?

satis erat respondere, Magnas: Ingentes, inquit, semper auget assentatio id, quod is, cuius ad voluntatem dicitur, vult esse magnum. quamobrem, quamquam blanda ista vanitas apud eos valet, qui ipsi illam allestant, & inuitant: tamen etiam grauiores, constantioresque admonendi sunt, ut animaduertant, ne callida assentatione capiantur. aperte enim adulantem nemo non videt, nisi qui admodum est excors: callidus ille, & occultus ne se insinuet, studiōsè cauendum est. nec enim facilimè agnoscitur, quippe qui aduersando sape assentetur: & litigare se simulans, blandiatur, atque ad extremum det manus, vinciique se patiatur, ut is, qui illusus sit, plus viciſſe videatur. quid autē turpis, quam illudi? quod ne accidat, magis cauendum est: ut in Epicureo,

“Hodie me ante omnes comicos stultos senes

“Versaris, atque luseris lautissimè:

hac enim in fabulis stultissima persona est, imprudentrum, & creditorum senum.

### EXPLANATIO.

C. PAPIRIUS consul { abest, Consul, à decem meis. & recte abest, nam trib. pl. erat. epit. Liu.lib.59. QVANTA illi, &c. } Illi, abest à duobus. Illa, septem. QVANTA in oratione maiestas? { sic omnes mei. Quantum in oratione maiestatis, esse in quibusdam, scripsi Lambinus. VIDEBATVR. } sic

B

omnes mei. Iubebatur, aliâs. Lambinus, Ferebatur. Cooperatio } Coaptatio, oëto. Capratio, vñus, addita sup. O. Capratio, tres. Coaptio, duo. Coactatio, duo. Cohactatio, vñus. Ad populi beneficium trâferrebatur, } vt populus sacerdotes crearet, cùm ea potestas antea ipsorum sacerdotiū fuisse. Atque à Gracchis hoc Plutarchus C. Graccho tribuit, in Ghracchis. alteruter igitur errauit. Versus } Versu, vñus. Versibus, vñus. Tamen illius vend. or. } Tum, duo. Tantum, vñus. Venerabilem, duo. Vendibilem: plausibilem, popularem, qua laudetur in vulgus. Nobis defendantibus, } male alii, Defrentibus: còtraveteres omnes meos. Quasi ad augures, ad quos antiquandæ legis potestas non pertinuit, sed ad populum, ad quem Lælius dissuasit eam legem. De hac oratione in Bruto. Praetore me, } sic quatuor. Per me prætorem, duo. Per me PR. vñus. Per me, decem: in quorum uno sapp. add. Prætorum. Consul sum factus. } Sim, nouem. Factus essem, duo. Quam auctoritate, } Quam summa auctoritate, quattuordecim. Quid si in scena, sic decem. Scenis, duo. Scamna, tres. Scamna, duo. In istamna, vñus. Id est in concione, } sic undecim. Vel in conc. tres. Idem in conc. vñus. In, non est in uno. Ut dicitur, aperium pectus rideas, } sic duodecim. Ut dicitur, aut apertum pectus vid. quinque. quorum vñus, Opertum. Aut amari possis, } Possis, abest à sex meis. Quamvis, abest à quatuor. Perniciose nam iudicium corrumpit. Recipit, } Recepit, quinque. Non de virtute vnde loquor, } sic duodecim. Nunc, non est in duobus. De virtute nunc non loquor, vñus. MAGNAS &c. } Eun. act. 3. sc. 1. SEMPER auges assentatio } sic vñus. Assentator, reliqui. Qui ipsi illam, } Qui illi ipsam, quatuor. Qui ipsam illam, vñus. Ipsi, abest à duobus. INSINVET, } irrepat in finum, penetratique amicitiae. FACILLIME } Facile, duo. Faciliter, vñus. PIUS vidiſſe } ex contentione, vnde maior vistoria. Illusſſe, quinque. Lufiſſe, quinque. Vidisse, vel valuiſſe, vñus. Plus vidiſſe: sapientius iudicasse, Fam. lib. 7. Vidisse mihi multum videris. Ut in Epicuro, } numquam credidi, nec legendo reperi, fabula nomē fuisse, Epicureus. Ut in Epicuro, rectè legendum putauit Pater. Epiclerus autem Cæcilij fuit comedia, teste Prisc. lib. 6. & 10. Cæciliique hos versus esse, ait idem Cicero in Catone. Quod certè, quamquam dissentientibus antiquis libris, nostram conjecturā approbat.

Nec

Nec tamen ignore, Turpilii quoque comediam hoc nomine fuisse, vt est apud Priscianum, & Nonium. Sed hæc Cæcilijs esse, non Turpilijs, locus in Catone iam citatus perspicue declarat. Vertit fortasse eam comediam ex Menædro. nam Stoibæus eius exemplum adducit ex Epiclero. Ut in Epicurio, duo. Pacuino, quinque. Pacunio, vñus. Pacuuij, vñus. Pacuuij, vñus. Mendosè omnia. Me hodie ante omn. } sic nouem. Ut in eodie ante omn. septem. Vno dit ante omn. vñus. Comiticos } sic duo. Comitos, vñus. Amicos, quinque. Coamicos, decem. Atque iſeris } sic vñus. Arque vt disferis, vñus. Atque vt luxeris, tres. Atque vt iuſſeris, duo. Atq. iuſſeris, vñus. Atque vt vixeris, duo. Atque iuſſeris, vñus. Vferis atque, vñus. Atque illuſſeris, vñus. Ac viferis, vñus. Arque vt illuſſeris, vñus. LAVTIS S V M E: } Laudatissime, tres. Latissime, vñus. Malè, lautissime, omnes.

## C I C E R O.

**S**ed nescio quo pacto ab amicitiis perfectiorū hominum, id est sapientum, (de hac dico sapientia, qua videtur in hominem cadere posse) ad leues amicitias defluxit oratio. quæ obrem ad illa prima redemus: eaque ipsa concludamus aliquando. Virtus, inquam, C. Fani, & tu. Q. Muci, & conciliat amicitias, & conservat. in ea est enim conuenientia rerum, in ea constantia. qua cùm se extulit, & ostendit lumen suum, & idem ad pexit, agnouitque in alio, ad id se admouet, viciſſimque accipit illud, quod in altero est. ex quo eorum exardescit sine amor, sine amicitia. utrumque enim dictum est ab amando: amare autem, nihil aliud est, nisi cum ipsum diligere, quæ ames, nulla indigètia, nulla utilitate quaesta: qua tamē ipsa efflorescit ex amicitia, etiā si tu cā minus fecutus sis. hac nos adolescentes benevolentia seres illos L. Paullū, M. Catonem, C. Gallum, P. Nasicam, T. i. Gracchum, Scipionis, nostri

R 2.

sacerdotum, dileximus. huc etiam magis elucet inter e-  
quals, ut inter me, & Scipionem, & L. Furium, P.  
Rupilium, Sp. Mummiūm: vici sim autem seneſ in a-  
dolescentium caritate acquiescim⁹, ut in vestra, &  
Q. Tuberonis: equidem etiam admodum adolescentis P. Rutilij, & A. Virginij familiaritate de-  
lector.

## EXPLA N A T I O.

**D**EFLVXIT oratio. } Deflexit, duo. Ad illa prima red.  
et que ipsa. } Ad illam primam red. cāmque ipsam, quin-  
decim. quorum vnuſ. Ipsiſumque. AGNOVIT Q. } Cogno-  
uitque duo. Et agnouit, vnuſ. L. PAVLLVM, } patrem Scipi-  
onis. SP. Mummiūm: } Lucij fratrem. de quo in Bruto, &  
ad Att. lib. 13. Vt in vestra, & Q. Tuberonis: } vnuſ. Vt ego in  
vestra, & Q. Tub. Vt in vestra, vt in Q. Tub. tres. Vt in vestra,  
atque in Q. Tub. vnuſ. Vt in vestra, vt in Tub. duo. Vt in ve-  
stra, & in Q. Tub. octo. Vt in vestra, vt Q. Tub. vnuſ. Vt in ve-  
stra, & Vbi Q. Tub. vnuſ. EQVIDEM etiam admodum } sic  
quinq̄ue. Et quidem etiam adm. nouem. Et quidem adm. duo.  
Evidem & adm. vnuſ. P. RUTILII, } ad Att. lib. 4. ep. 16.  
Et A. Virginij } Et, abest ab octo. Et, A. abest à duobus.

## C I C E R O.

**Q**uoniamq. ita ratio comparata est vita, naturaq.  
noſtræ, vt alia etas oriatur ex alia: maxime qui-  
dem optandum est, vt cum equalibus possis, quibus-  
cum tamquam e carceribus emissus sis, ifsdem ad cal-  
cem, vt dicitur, peruenire: sed, quoniam res humane  
fragiles, caducæq. sunt, ſemper aliqui acquirendi sunt,  
quos diligamus, & à quibus diligamus. caritate enim,  
benevolentiaque ſublata, omnis est è vita ſublata in-  
cunditas. mibi quidem Scipio, quamquam est ſubito  
preptus, viuit tamen ſemperque viuet. virtutem enim  
amauis

## IN LAELIVM.

629

amauis illius viri: qua exſtincta non eſt: nec mihi ſoli  
verſatur antè oculos, qui illam ſemper in manib⁹ ha-  
biui, ſed etiam posteris erit clara, & insignis. nemo una-  
quam animo, aut ſpe maiora fuſcipiet, qui ſibi non il-  
lius memoriam, atque imaginem proponendam putet.  
Equidem ex omnibus rebus, quas mihi aut fortuna,  
aut natura tribuit, nihil habeo, qd cum amicitia  
Scipionis poſsim comparare. in hac mihi de rep. con-  
ſensu, in hac rerum priuatarum conſilium, in eadem  
replies plena oblationis fuit. nūquam illum, ne mi-  
nima quidem re, offendit, quod quidem ſenſerim: nihil  
auditis ex eo ipſe, quod nolle⁹. una domus erat, idem  
victus, ſque communis. neque ſolum militia, ſed etiam  
peregrinationes, rufſicationes ſque communes. nam, quid  
ego de studiis dicam cognoscendi ſemper aliiquid, atque  
diſcendi? in quibus, remoti ab oculis populi, omne o-  
tium, tempusque contriuimus. quarum rerum recor-  
datio, & memoria, ſi una cùm illo occidiffet, deſide-  
rium coniunctiſimi viri, atque amatiſimi ferre nul-  
lo modo poſſem, ſed nec illa exſtincta ſunt, alunturque  
potius, & augentur, cogitatione, & memoria, & ſi pla-  
ne illis orbatus eſſem, magnam tamen afferret mihi  
at as ipsa ſolatum. diutius enim iam in hoc deſiderio  
eſſe non poſſum: omnia autem brevia tolerabilia eſſe  
debet, etiamſi magna ſunt. Hac habui, de amicitia  
qua dicerem. vos autem hortor, vt ita virtutem lo-  
cetis, ſine qua amicitia eſſe nō poſteſt, vt ea excepta, nihil  
amicitia preſtabilius eſſe putetis.

## EXPLA N A T I O.

**V**T alia etas oriatur ex alia: } Ex alia, abſunt ab omnibus  
meis. Ex alia: natura ſuppediat nobis, vnde ſemper

amicos parare possumus ex quacumque atate: cùm veteres  
sepe morte eripiantur: vt cum iis ad eundem vitæ exitum  
peruenire nequeamus. **I I S D E : I }** Cum iissem, quindecim.  
**A C Q V I R E N D I** sunt, } Exquirendi, duo. Adquirendi, qua-  
tuor. Requirendi, vnum. Acquirendi, vnum. Anquirendi, legen-  
dum. **A N T E o c u l o s , }** præsens, nam caro ob oculos versan-  
tur. **S V S C I P I E T , }** conabitur. **N A T V R A , }** à qua sunt  
animi quoque bona. **I N h a c m i h i &c. , }** perfectæ amicitiae  
descriptio. **N e m i n a g u i d e m r e , }** Nec, quattuor. **N I H I L**  
**e n i m a u d i u i , }** Enim, non est in septem. & rectè. **N U L L O**  
**m o d o , }** quando illa cum ipso mihi essent prorsus eretta. **A T -**  
**Q V E d i s c e n d i : }** quod homini à natura insitum, scribit Off. I.  
**M E M O R I A : }** Memoria mea, quattuordecim. Memoria  
mei, vnum. **A F F E R R E T , }** Affert, nonquem. Offert, vnum. **P R E -**  
**S T A B I L I V S e s s e p u t e t i s , }** Esse, abest à sex meis.



NOBI-

# NOBILISSIMO

## IVVENI IACOBO

Critonio Scoto.



V M nihil in te sit summissum, &  
populare, (mi Iacobe Critoni) qui  
omnia tam ampla, excelsa, atque ad-  
miranda, ut elapsi temporis viris il-  
lustribus, ac sapientissimis gloriam,  
futuris verò etiam spem tua amplitudo auferat,  
nostro autem sæculo singulare afferat ornamen-  
tum: cùmque nō minus opiniones tibi, quām vita  
sint admirabiles: sententias illas, quæ Paradoxa  
vocantur, quæ non sanè probantur in vulgus phi-  
losophorum, in Stoicorum scholis natas, nudas  
admodum, & squalidas, nunc verò M. Tullij Ci-  
ceronis eloquētia exornatas, & auctoritate, meis  
Commentariis illustratas nomini tuo dicare vo-  
lui: cui ista maximè conueniunt, non tantum, vt  
amoris erga te mei indicium præbeam, qui nisi  
iam antea tibi ex tantis constituit argumentis, nū-  
quam ex vlo patebit officio, quām vt animi  
grati pro Carmīnibus, quæ in tuo ad urbem Ve-  
netam appulsi mihi dedisti. Nunc verò etiam læ-  
tor, toti Italiz, & Orbi fortasse terrarum vniuer-  
so perspectum esse iudicium de te metum, & ea,  
quæ, cùm hue venisses, scriptis commendaui. quæ  
tibi ipsi, ac nonnullis accerimis césoribus, aspe-

ra, atque iniucunda videbantur. nam, licet tum a morem malui ostendere, quām prudentiam, nāc ambo cūm amicis tuis, tum inimicis, si qui amplius tam feri, atque inhumani reperiuntur, manifesta sunt, postquam tua virtus tam clarum sui splendorem diffudit. ego enim iunctam inuidia, ac multorum inimicitiis eximiam quandam, atquē immortalem gloriam sum consecutus. nam, quid illustrius, quid honestius, quid verò etiam gloriōsius ad nomen meum accedere potuit, quām ut à me prolatā παραδεξότα primū, tū εἰναυπασινά viderentur, nunc verò ισοειώτατα ab omnibus habeantur. cūm multi homines sui iudicii leuitatem, infirmitatēmque, cūm essent stultitia obcæcati, mei verò constantiam, veritatemque perspiciant, poteram enim (εὐπεπτωτοὶ μοναχοί) Illustriss. Critoniam, & Serenissimam Stuardam, quibūs oriundus es, familias extollere. Sed, quid Reges tui maiores, (licet ea laus Scotorum Regibus meritò tribui possit, quod inter omnes Europæ Reges vetustissimi Christiani sint) quos nunquam Romani imperio suo subegere: cum Cæsar, propter tumultus excitatos, & res in Gallia fluctuantes, exercitum à Regni expugnatione reuocaret: Quid, inquam, isti, tuis virtutibus, animique dotibus amplius solidæ laudis afferunt? Quid Critonij, qui cūm Scotorum militiæ Imperatores summi plerumque essent, Anglos è Galliæ Regno, & Scotiæ finibus toties, ac tanta virtute eiecerunt? Quid Robertus Critonius, pater tuus, Fifensis in Scotia, & Stormondensis, Elioki, & Clunæ, tot opidorum, tot præsidiorum

dominus, qui longo tempore inter omnes Regni proceres ærumnosissimæ simul, & beatissimæ Reginæ, quæ apud Anglos (pro dolor) iam captiua est, & Christianæ religionis acerrimus exstigit propugnator, præsertim qui copias ad præclium, quod Langsydium vocant, duxisset, quid ille tibi splendoris veri afferit? Non tatum illi fortasse debes, quod te genuerit, quod maximos huius tempestatis viros, Buchananum, Heppurnium, Robertonium, & Rhetorfortem præceptores tibi dederit, quod tam amplas pecunias fortunásque in te erudiendo insumpserit, & omnes vires animi, atq. ingenij in educando profuderit, quantum quod ob intestinas seditiones, & præcia domestica, contra te suscitata, quæ cum patre gessisti, Regno discedere, & Regem relinquere, coëgit. Sed laudem, quæ à maioribus ad nos deriuatur, ne laudem quidem esse, sapientissimus ille vir Vlices existimauit. Neque te verò multum commendo, quod specie, & corporis viribus polleas. fateor tamen aliquid esse in his, quod non tam à fortuna, quantum ab animo pendet, immortalitatis memoria præsequendum: quod scilicet Regno, patria, domoq. ob Catholice fidei ardorem tam longè abes, nec ullum ex his ærumnis dolorem, sed incredibilem animo-sentias voluptatem: neque Regis in consobrinum tuum Iacobum Stuardum clementia, cui cūm Morauia Principatu suam consobrinam vxorem dedit: neque communis cum Rege edutatio per-mouent, immo ne mouent quidem: putas enim, maiores quasdam opes, & firmiora, quām que-

amisisti, præsidia esse querenda. In corporis verò bonis id habes, quod effigies oris, atque sermonis animi nobilissimi filia sit. Sed belli studia in ipsis ephebis inire, cadem animo, atque amore prosequi, & cum litteris, & Philosophia, tamquā alter Brutus, coniungere, nemini vñquam ab initio humani generis obtigit. Magna sunt ista profecto, & inaudita: mediocria tamen, si cetera spe-  
temus. quòd scilicet decem linguarum, multorum idiomatum, omnium disciplinarum cognitionem ànte vigesimum primum ætatis annum sis adeptus. & digladiandi, saltandi, omniū gymnasticarum exercitationum, & equitandi studia tanta cum alacritate ingenij, animique humanitate, mansuetudine, & facilitate cōiunxeris, vt nihil te admirabilius, nihil etiam amabilius reperi possit. Sed non innumerabiles vitę tuę trans-  
cę laudes: non mirificam illam coram Serenissimo Principe, ac Illustrissimis Venetę Reip. proceribus actionē: non subtilissimas tuas de Theologia, Philosophia, & rebus Mathematicis disputationes in plerisque maximorum hominū confessibus recensebo: non tantorum hominum ad te vidéndūm concursum, vt olim Platonī à Sicilia reuertenti, relicto Olympico spectaculo, tota Atheniensium celebritas occurrisse fertur: cùm te omnes signo rubeę Rose, quod tibi natura circa dextrum lumen impressit, tamquam uniacam, & raram in terris auem homines cognescerent. Quę enim gentes tam ferę sunt, quę, te cùm adspexerint, non maximum cepisse fructum putent? Sed, his pr̄termisis, nunc propria  
marra-

narrabo: quę scilicet in Patauina Academia fecisti, tum quę in hac Vrbe, totius Orbis nobilissima: cuius amplitudinem, & augustissimam maiestatem inter omnes alias ciuitates te accipere, fouere, atque amplecti decuit: te verò etiam, humani generis miraculum, admirandam Vrbem incolere, amare, & omnibus aliis anteponere. Nam, postquam aduersa valetudine iam quatuor menses laborasses, priusquam in integrum pristinę sanitatis statum redires, amicorum consilio ad Patauinam Academiam, tanquam ad Sapientię Officinam, profectus es, vbi Idibus Martii in diem sequentem, suscepto consilio omnes omnium disciplinarum professores in ædibus Clarissimi viri Iacobi Aloisij Cornelij, eius auctoritate, & pr̄cibus, vt conuocarentur, petiisti. cùm autem maximus doctissimorum hominum cœtus, & omnes ex insperato pene studiosi, & nobiles Gymnasii iuuenes vna conuenissent, statim in primi ingressus vestibulo elegantissimo carmine Patauinas laudes (nam ea tibi proposita erat ad dicendum materia) ex tempore decantasti: deinde cum celeberrimis illis doctribus multa ex variis disciplinis tam acutè exagitasti, tam docte pertractasti, errorēsque Aristotelis, ac interpretum tam solidè refutasti, tanta denique cùm maximis viris modestia egisti, vt omnes in virtutis admirationem, & morum suavitatis auctorē simul allegeris. Neque id silentio prettereundum est, quòd ex tempore etiam, post seū horarum de re litteraria colloquia, & disputaciones, cùm oblata tibi esset Ignorationem laudādi

occasio, tam ornatè de ea re dixisti, vt illi ipsi, qui intererant, potius somnia fouere, quām rem veram, & presentem videre se putasse mihi postea affirmarint. Alium postea diem indixisti in adiūbus Illustrissimi Patauini Episcopi, non vt altius ingenij tui specimē p̄eberes, quod profectō fruſtra feciſſes, ſed vt eorum, qui primis diſputatiōnibus non interfuerant, obnixis precibus ſatisfaceres. varię res huic proposito obſtaculo fuere, ad ſecundum certamen ventum non eſt. ſed plerique cum primis Europę viris ſermones habiti ſunt. nonnumquam hominū expeſtationes, licet propter facta tam illuſtria de te maximas, plerūmque etiam & te ipsum ſuperaffe dictus eſt. ex quibus actis cum illico ſurrexiſſet magna fama, obtrexatores aliqui, quibus ex aliorum bene geſtis, & rebus ſecundis inuidentia eſſe ſolet, homili, nescio quid dicam, tuę virtuti aliiquid deroga- re fruſtra tentauerunt. oſtententes in obſcuero odio apertas inimicitias, & , in quo nihil nocere poterant, ſuimam voluntatem nocendi. Tum tu, vt iſtas obtrexationes maleuolentiffimas puſſillorum, maleuolorūmque proſterneres, atque obtereres, duo hec Theoremat̄a in hac Vrbe edidiſti:

*Vit. iiii. qui (virtute, verāq; animi nobilitate aliis praeſuſentes) bene de Virtutis amatoribus ſentire conſuerunt, gratias agat immortales, IACOBVS CRITONIVS SCOTVS, proſigatīſ que Ⓛ perdit is hominibus, omnem in posterum ia-ctandi occaſionem auferat : errores Aristotelis pen-*

*lis panè innumerabiles, & omnium Latinorum Phi-losophorum, ſive cūm de ipſius mente diſputant, ſive cūm res Theologicas attingunt, & nonnullorum quoque Matheſeos professorum ſomnia refutabit, & ad obiecta reſpondebit.*

*Liberam ad huc in omnibus disciplinis, ſive illa pu- blicē doceri ſoleant, ſive ſapientiſſimis tantū homi- nibus peruiā ſint, arguendi occaſionem dat. reſponsu- rus, ſive Logicis, & conſuetis reſponsionibus, ſive per Secretam Numerorum rationem, aut figurās Ma- thematicas, ſive per aliquod ex centum carminum ge- neribus: ex proponentium arbitrio,*

*In DD. Ioannis, & Pauli aede ſacra, in ipſo San- clissimo Pentecostes die, poſt Meridiem,*

## EXORDIVM SVMET.

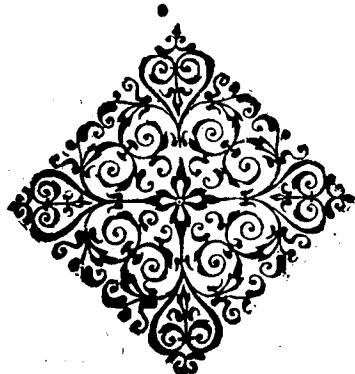
& per triduum indefeffus ſuſtinuisti, & quamdiu tua auctoritas tibi defendenda fuit, ſic acriter, & vehementer p̄ciliatus eſt, vt clamor, concurſusque inſolitus ad ſtudia tua lenienda, tanta cum laude fieret, vt nihil umquam magnificenter ab hominibus auditum fit. Tu verò me non ſolūm auctorem conſiliorum, ſed ſpectatorem pugna- rum mirificarum habuisti. Nunc, quoniam laudis ſemper audiſſimus fui, & preter ceteros φιλοκε- τόνος ab omnibus habeor, multorūmque odia pro tua cauſa ſuſcepi, cura obſecro, & effice, vt facis, vt, quia veram virtutem cognoui, ab omni- bus ameri, amari, & laudari poſſim, & vt major in-

ea mihi in dies spes resideat. Meas igitur in Ciceronis Paradoxa lucubrations, hoc ipso, quia in Paradoxa sunt, sub tuo nomine prodire volui, quod veteribus gratiam, nouis fauorem cōciliare solet. Tu autē has nostras vigilias, & Stoicorum opiniones simul (quoad veritas patitur) tuebere. id enim tibi admodum erit facile. iam enim pene omnes homines aut gratiam, aut eloquentiam, aut tantarum rerum, ne dicam omnium scientiam suspiciunt.

Viue nostri memor,  
& vale.

Venetiis, XIV. Kal. Iun. eo D XXCI.

M. TVL-



M. T V L L I I  
C I C E R O N I S  
P A R A D O X A  
S E X,

*Ad M. Brutum.*

C I C E R O .

**A**NIMADVENTI, Brute, sapè Catonem, auunculum tuum, cum in senatu sententiam diceret, locos graues ex philosophia tractare, abhorrentes ab hoc usū forensi, & publico: sed dicens do consequi tamen, ut illa etiam populo probabilia viderentur. quod eo maius est illi, quam ante tibi, aut nobis, quia nos ea philosophia plus utimur, quæ peperit dicens copiam, & in qua dicuntur ea, quæ non multum discrepant ab opinione populari: Cato autem, perfectus, mea sententia, Stoicus, & ea sentit, quæ non sanè probantur in vulgus: & in ea heresi, quæ nullum sequitur florem orationis, neque dilatat argumentum, sed minutis interrogatiunculis, quasi

punctis, quod proposuit, efficit. sed nihil est tam incre-  
dibile, quod non dicendo fiat probabile: nihil tam hor-  
ridum, tam incultum, quod non splendescat oratione,  
& tamquam excolatur. quod cum ita putarem, feci  
etiam audaciū, quam ille ipse, de quo loquor. Cato  
enim dumtaxat de magnitudine animi, de continen-  
tia, de morte, de omni laude virtutis, de diis immor-  
talibus, de caritate patria Stoicē solet, oratoriis orna-  
mentis adhibitis, dicere. ego verò tibi illa ipsa, que  
vix in gymnasii, & in otio Stoici probant, ludens  
conieci in communes locos. que quia sunt admirabili-  
lia, contrāque opinionem omnium, ab ipsis etiam  
Παρδοξα appellantur: tentare volui, posse nre pro-  
ferri in lucem, id est in forum, & ita dici, ut proba-  
rentur: an alia quedam esset erudita, alia popularis  
oratio. eoque scripsi libentius, quod mihi ista, Παρ-  
δοξα qua appellantur, maximè videntur esse Socrati-  
ca, longèque verissima. Accipies igitur hoc paruum  
opusculum, lucubratum his iam cōtractioribus nocti-  
bus: quoniam illud maiorum vigiliarum munus in  
tuo nomine apparuit. & degustabis genus hoc exerci-  
tationum mearum, quibus vt confuei, cum ea, que  
dicuntur in scholis Ἑρικα, ad nostrū hoc oratorium  
transfero dicendi genus, hoc tamen opus in apertum  
vt referas, nihil postulo. non enim est tale, vt in arce  
poni possit, quasi illa Minerva Phidias: tali tamen est  
et ex eadem officina exisse videatur.

A R G V.

## ARGUMENTUM.

**N** E T E R V M Stoicorum sapientia in  
eo posita erat, (vt Plutarchus in libel-  
lo aduersus Stoicos testatur) vt no-  
num aliquid, inauditum, & admirabi-  
le in vulgus proferrent, quod ipsis tamquam pecu-  
liare sibi vindicabant. Quorum princeps fuit Xe-  
nocrates. Sed istorum opinio de anima admo-  
dum futilis fuit. nam eam omnes antè Socratem,  
cum circulos aliquos consecisset, deficere, ac ve-  
luti conteri affirmabant. Sic idem Xenocrates, &  
Zeno, illius sectæ principes primùm elementa, &  
id quod est secundùm naturam, putabant esse  
summum bonum: Deum dicebant esse mentem  
corpus habentem, cui insit tamquam materici  
admistus, diuersam tamen, licet non multò, So-  
crates, recentiorum Academicorum facile pri-  
mus, ab hac philosophandi rationem iniuit. nam,  
cum multi sua tempestate sophistæ ( quod no-  
men primùm veris sapientibus, deinde vanis suis  
ostentatoribus tributum erat ) Græciam totam  
peragrarent, pecuniam à iuuenibus magnam  
erogantes, qui stulta scientiæ persuasione obtu-  
mescabant, eorum Socrates fastum comprimens,  
( sed eo fortasse modo, quo Platonis sedem con-  
scendens præ indignatione Cynicus ille philo-  
sophus fastum suum conculcabit ) interrogabat  
semper, & veritatem, tamquam Pirastes, ( quo no-  
mine Interrogantem Aristoteles XI Topico-  
rum appellat ) sedulò indagabat, nihil ex sua o-  
pinione dicere visus, vt auram popularem faci-

lius consecaretur. nam magni interest in disputando, ambiguos videri, anticipites, & in neutram propositæ quæstionis partem vergentes. Sic optimos Olympici certaminis iudices Elæos fore aiebant, si nemo Elæus certaret. nam nostrarum opinionum, ut aliarum rerum, amor nos plerumque cæcos facit. Sed, quid est, per Deum, milatrice Critoni, quod Socratis disputandi modum in sophistas lacesſis, aut, si non lacesſis, sanè non satis approbare videris? Sanè me fateor non hoc abs te planè intellexisse. num quia in bonos viros, qui iuuentutem venali scientia exacuebant, dicere nimium scuerè solitus erat? an quia nihil proprium, cum alios reprehenderet, vniquam dicebat? ad aliorum inuenta refutanda, quam ad sua statuenda, paratior. Profectò, vt mihi videatur, eius, & aliorum omnium Stoicorum philosophia etiam reprehensione penitus non vacat. nam Aristotelem in Physicis fecatus, neque sensu solo fidentes, neque omnem illi fidem adimentes, sed à sensu incipientes, & ad altiora proficiscentes, approbo. Sed Stoici omnem sensibus fidem derogabant. Quid enim magis ridiculum audiri potest, quam quod de homine duplice, & bicorpore, dicebant? in uno quoque nostrum duo corpora, quorum unum, alterabile: alterum, quod alterari nequeat: unum, quod crescat: alterum vero, quod excretionis sit expers, ponentes. Sic enim Pentheus in Euripidis Bacchylide insaniens dicebat: Ego me duos iam videre Soles puto, duplicesq. Thebas. Ait, Puto. nam sensus illius hercle delusus erat vana quadam spe cie. Isto-

cie. Istorum præterea de vniuerso, de elementis, de habitibus, & affectionibus animi: de tempore, contacto, infinito, incremento, & alijs plerique rebus, opiniones, quamvis absurdæ sint, tamen ex, quæ ad mores spectant, nisi tantum ijs rigoris inesset, ( quo nomine à D. Hieronymo taxantur) per pulchræ essent: neque verò id negari potest, quantum ad exercitationem ingenij, & animorum conducant. & eas iccirco noster Ciceron, potius, quam quod veras esse existimaret, pertractauit. Nam, vt Theodoretus putat, in eo genere quoque animos exercitandi admodum recentiores Academiam pollebant: cuiuscunque quæstionis probabilis alteram se posse ex tempore partem sustentare, aut refutare profitentes. quibus præterea, potius quam Peripateticis, quod magis rigidus est philosophandi modus, adhesisse Ciceronem crediderim, neque enim satis eum intelligunt, qui putat, ipsum maiorem ingenij subtilitatem, & mentis acumen in Platone, quam in Aristotele, fuisse, existimasse. Nam cum ait, Aristotelem omnes alias, præter Platonem, vincere, id ita intelligendum est, quod Aristoteles Platonem non longo, vt ceteros, interuallo superauerit, cum tamen aliquo modo euicerit. Sic, benigne Lector, à Peripateticis exacta sapientia, à Stoicis, & recentioribus Academicis ( præsertim cum de moribus tractant ) sumenda est illa, quam Logici vocant, sollertia, & perspicacitas.

**P**ARADOXA } Acad. quæst. 4. vocat Admigabilia: Quin-  
ctilianus lib. 9. Inopinata. AD **M. Brutum.** } cuius vitam  
Plutarchus litteris mandauit. Fam. lib. 2. Brutum à me amari  
intelligis. quid est caußæ, cur mihi nō in optatis sit, comple-  
tū hominem florentem aetate, opibus, hominibus, ingenio,  
liberis, propinquis, affinibus, amicis: collegam meum præ-  
sertim, & in ipsa collegij laude, & scientia studiosum mei? Et  
lib. 9. Semper amauit M. Brutum propter eius summum in-  
genium, suauissimos mores, singularem brobitatem, atque  
constantiam. Eius nomine inscripta à Cicerone oratorum  
catalogus libri de finibus honorum & malorum: & de nat-  
deorum, & Tusculane quæstiones, & epistolarum libri, Bru-  
tus autem Ciceroni librum dedit de virtute, cuius de Finibus  
mentionem facit. **A N I M A D V E R T I,** } Animaduorti, quar-  
tuor mei. **C A T O N E M.** } frater Seruilia Bruti matri: qui  
postea cùm se Uticæ occidisset, Uticensis est appellatus. nunc  
autem vivere viderunt, cùm hæc Cicero scribit. **S E N T E N-**  
**T I A M** diceret, } qualis eius oratio contra coniuratos, apud  
Sallustium. Vide Plutarchum. **M A R V S** } grauius, difficilius.  
Discrepant Discrepent, duo. **P H I L O S O P H I A** } Academica. Non sanè } sic quattuor, quattuor, Non plane,  
decem, Non recte. IN **vulgu:** } In vulgo, tres. **N V L L V M**  
sequitur **f l o r e m o r a t i o n i s,** } Stoicos eloquentia non dedisse o-  
peram, scribit Quinctilianus lib. 10. & 11. Florens orationis  
genus vocat in Oratore. **S E D** minuta interrogatunculus, } Sed,  
abest à quinque, in quorum tribus additum. **Q V A S I** pun-  
elis, } metaphora à Geometris, qui Puncta onus dicunt,  
partes, ex quibus linea conficiuntur minutissima. **I I .** de Ora-  
tore, Puncta argumentorum oculere, dixit. **Q V O D** pro-  
positum, } propositionem. Non fiat probabile: } non verisimile  
videatur. **S P L E N D E S C A T**, } Explendetcat, unus.  
**Q V O D** cùm ita putarem, } Ita abest à duobus, in quorum uno  
add. De magnitudine animi, } quæ cernitur in humanarum  
rerum despicientia, & in unius virtutis admiratione. De  
continentia, } De constantia, unus. De continentia: ne propter  
voluptatem, aut utilitatem, iustitia, & modestia relinquantur.  
De morte, } non esse forti viro metuendam, sed fortiter,  
propter honestum, oppetendam. De omni laude virtutis, }  
virtutu-

virtutem solum summum bonum esse, nec aliud quidquam  
laudandum. De diis immortalibus, } corū prouidētia mundum  
regi, & omnibus consuli. De caritate patriæ } omnibus com-  
modis, etiam vitae, anteponendam. **S T O I C E** } quod attinet  
ad opiniones, verū adhibitis oratoriis ornamentis, dicendo  
consequitur, vt illa etiam populo probabilia videātur. ORA-  
TORIIS ornamenti adhibita, } non dubito, quin hæc verba  
vacent omni mendo. Sed, quoniam dubitare video homi-  
nes eruditos, & addere negationem, Nullis, (quæ est & in sex  
meis) non faciam, si modò consequi potero, vt quisquam,  
auctoritate commotus, in errore versetur. **C A T O N I** non mo-  
dò Cicero & alibi, & hoc ipso in loco, sed Sallustius, & Plu-  
tarchus, & alij eloquentiam tribuunt, qua quidem in senatu  
ita disputabat de magnitudine animi, de continencia, de mor-  
te, alijisque rebus, quas probare pauci solent, vt id ipsum, quod  
ipse sentiebat, populo etiam probabile videretur. In quo tan-  
to maiorem eloquentia gloriari obtinebat, quanto difficultius  
est, multitudini persuadere, quæ Stoici probant, vt, de patriæ  
salute, vel cum omni periculo, tuenda, de criminibus acerrimè  
vindicatis, de virtute denique ipsa rebus omnibus præferen-  
ti. Cicero autem maius quiddam suscipit, cùm non illa, quæ  
splendore ab oratione possunt accipere, quæ peregregiè Ci-  
cero in senatu, è Stoicorum sententia, tractabat, sed illa ipsa  
brobaturum se esse, aut certè conaturum vt probet, que Stoicæ  
ipsi in suis gymnasii non facile probant. Hæc est huius lo-  
ci sententia, magna cum Catonis laude expresa, aliquato tam  
men maiore Ciceronis. quamquam ipse, cùm dicat, Tentare  
volui, arrogantiæ culpavit. Ego vero tibi &c. } sic nouem.  
A nouem abest, Tibi. QVAE vix in gymn. } quo maior est  
mea laus, quam Catonis, ille enim ornat ea, quæ ornari facile  
possunt: ego autem probanda, laudandaque suscepit, quæ Stoicæ  
ipsi, nedum ceteri philosophi, vix in gymnasii disputantes  
probant. **O P I N I O N E M** omnium, } Hominum, duodecim.  
**T E N T A R E** volui, } sic decem septem. unus. Et tentare volui.  
Alias, Ac tentare volui. IN **l u c e m**, id est in forum, } Et in forum,  
duo. Vel in forum, sex. A tribus absunt, id est in forum. Eoq.  
**s c r i p s i** libentius, } Eoque hos locos scripsi libentius, quattuor-  
decim. Locos scripsi libentius, tres. Eoque hos locos scripsi lu-  
bentius, unus. QVAE **a p p e l l a n t**, } sic duo. **S O C R A T I C A**,  
non modo Stoica. His iam contrarioribus nostris, } astius:  
S 3

QVONIAM } Quando, quatuor. MAIORVM vigilarum  
munus } de Finibus, & de nat. deorum. EXERCITATIO-  
NVM mearum, } Mearū, abest à duobus, in quorum uno add.  
Ω̄nū. } Quinctil.lib.x. cap.5. In hoc optimè facient infinitae  
quæstiones, quas vocari s̄unt diximus, quibus Cicero iam  
princeps in rep. exerceri solebat. Cicero ad Att.lib. ix. Sed  
tamen, ne me totum ægritudini dedam, sumpsi mihi tam-  
quam θ̄s, quæ & politicæ sunt, & temporum horum, vt &  
abducant animum à querellis, & in eo ipso, de quo agitur, ex-  
erceat. Ω̄nū: positiones in Lælio. Tusc.I. & IV. IN apertum  
vt refaras, } Proferas, vñus. Deferas, vñus. IN arce } In arcem,  
quinque. In arce: Atheniensī.ILLA Minerua Phidie: } Illa  
Minerua, (line, Phidie,) vñus. Illa, abest a vno. Minerua  
Phidie: ex ære. Plin.lib. xxxiv. cap.8. nam aliam non ita lauda-  
tam fecerat ex ebore. Plinius ibidem, & lib. xxxvi. cap.5. Vide  
Plut.in Pericle, Thucydidem lib. ii. Pausanias, & Cic. in Tusc,  
quæst & Arift. de Mundo. TALE tamen est, } Sed tale tamen  
est, quinque. Sed tamen tale est, tres. Sed tamen, vt ex quinque.  
Sed tantum, vt ex, vñus. Exisse appareat. } sic omnes mei.

## P A R A D O X O N . I.

ὅτι μόνον οὐδὲ τὸ καλὸν: quod honestum sit,  
id solum bonum est.

VEREOR, ne cui vestrum, ex Stoicorum homi-  
num disputationibus, non ex meo sensu, depro-  
pta hac videatur oratio: dicam tamen, quod sentio: &  
dicam brevius, quam rem tanta dici possit. Numquam  
mehercule ego neque pecunias istoru, neque tecta ma-  
gnifica, neq; opes, neq; imperia, neque eas, quibus maxi-  
mè adstrati sunt, voluptates in bonis rebus esse nume-  
radas duxi: quippe cū videre, homines rebus his circu-  
fluentes, ea tamen desiderare maximè, quibus abunda-  
rent. neque enim unquā expletur, nec satiatur cupiditi-  
atis sitis: neque ea solum, quæ habent, libidine augen-  
di cru-

di cruciantur, sed etiam amitendi metu. in quo equi-  
dem continentissimorum hominum maiorum nostrorum  
sepe requiro prudentiam, qui hæc imbecilla, &  
commutabilia pecunia membra, solo verbo bona puta-  
uerunt appellanda, cū re, ac factis longè aliter indi-  
cassent. potest enim bonum cuiquam malo esse aut po-  
test quisquam in abundantia bonorum ipse esse non  
bonus? at qui ista omnia talia videmus, vt etiam improbi  
habeant, & obsint probis. Quamobrem, licet irri-  
deat, si quis vult: plus apud me tamen vera ratio va-  
lebit, quam vulgi opinio. neque ego unquam illum bo-  
na perdidisse dicam, si quis pecus, aut supellectileū a-  
misit. nec non sepe laudabo sapientem illum, Bian-  
tem, vt opinor, qui numeratur inter septem: cuius cū  
patriam Prienem cepisset hostis, ceteriq; ita fugerent,  
vt multa de suis rebus secum asportarent: cū esset  
admonitus à quodam, vt idem ipse faceret: ego vero,  
inquit, facio: nam omnia mea mecum porto. Ille hec  
ludibria fortuna ne sua quidem putauit, quæ nos ap-  
pellamus etiam bona. quid est igitur, queret aliquis,  
bonum? si quid rectè sit, & honestè, & cum virtute, id  
bene fieri verè dicitur: & quod rectum, & honestum,  
& cum virtute est, id solum opinor bonum. sed hac vi-  
deri possunt obscuriora, cū sine appositione exem-  
plorum lentius disputantur: vita, atque factis illustra-  
da sunt summorum virorum hac, quæ verbis subtilius,  
quam satis est, disputari videntur. Quero enim à vo-  
bis, num ullā cogitationem habuisse videantur ij, qui  
hanc remp. tam præclarè fundatā nobis reliquerunt,  
aut auri, atque argenti ad auaritiam, aut amicitatum  
ad delectationē, aut supellectilis ad delicias, aut epularum  
ad voluptates ponite ante oculos unumquemque

regum, vultis incipiam à Romulo? vultis, post liberam cūitatē, ab ijs ip̄is, qui liberauerunt eam? Quibus tandem Romulus gradibus ascendit in cūlum? iſne, quæ iſi bona appellant: an rebus gestis, atque virtutibus? Quid autem Numa Pompilius? minuſne gratas diuis immortalibus capides, ac fītiles venulas fuisse, quām filicatas aliorum pateras, arbitramur? omitto reliquos. sunt enim omnes pares inter ſe, prater Superbum. Brutum verò ſi quis roget, quid egerit in patria liberanda: ſi quis reliquos item, etiudem consiliū ſocios, quid ſpectarint, quid ſecuti ſint: num quis exiſtat, cui voluptas, cui diuitia, cui denique, prater officium fortis, & magni viri, quidquam aliud propositum fuſſe videatur? Quares ad necem Porsena Q. Mucium impulit, ſine villa ſpe ſalutis ſua? quæ viſ Horatium Coclitem contra omnes hostium copias tenuit in ponte ſolum? quæ patrem Decium, quæ filium deuouit, ac immisit in armatas hostium copias? quid continentia C. Fabricij? quid temeritas vičius M. Curiy ſequebatur? quid duo propugnacula belli Punici Cn. & P. Scipiones, qui Cartaginensium aduentum corporibus suis intercludendum putauerunt? quid Africanus maior? quid minor? quid inter horum etates interiectus Cato? quid innumerabiles alij? nam domesticis exemplis abundamus. an putamus quemquam horum cogitaffe quidquam in vita ſibi expetendū, niſi quod laudabile eſſe, & praeclarum videretur? veniant igitur irriſores huius orationis, ac ſententiae: & iam vel ipsi iudicent, utrum ſe horum alicuius, qui marmoreis teſtis, ebore & auro fulgentibus, qui ſignis, qui tabulis, qui calato auro, & argento, qui Corinthiis operibus abundant: an C. Fabricij, qui nihil eorum habuit,

nihil

nihil habere voluit, ſimiles eſſe malint. Atque hæc quidem, quæ modo huc, modo illuc transferuntur, facile adduci ſolent, vt in rebus bonis eſſe negent: illud tamen arte tenent, accuratèque defendunt, voluptatem eſſe ſummum bonum. quæ quidem mihi vox pecudum videtur eſſe, non hominum. tu, cum tibi ſine deus, ſine mater, vt ita dicam, rerum omnium natura dederit animum, quo nihil eſt preſtantius, neque diuinius: ſicut te ipſe abūties, atque proſternes, vt nihil inter te, & quadrupedem aliquem putes inter eſſe? quidquam ne bonum eſt, quod non eum, qui poſidet, meliorem faciat? vt enim quisque eſt maximè boni particeps, ita & laudabilis maximè: neque eſt ullum bonum, de quo non is, qui id habeat, poſit honeſtè gloriari. quid autem eſt horum in voluptate? meliorem ne efficit, aut laudabiliorē virum? an quidquam in potiundis voluptatibus gloria ſeſe, & prædicatione, effert? Atqui, ſi voluptas, quæ plurimorum patrociniiſ defenditur, in rebus bonis habenda non eſt: eaque, quo eſt maior, eo magis mentem ex ſua ſede, & ſtatu dimouet: profeſtō nihil eſt aliud bene, & beatè viuerē, niſi honeſtē, & rētē viuere.

PRIMVM, sex opinionum admirabiliū, quæ in hoc libello à Cicerone nostro, comprobantur, eſt, ὅτι μόνον ἀγαθὸν, τὸ καλὸν: quodd ſolum bonum, honestum. & hic ſtatus eſt quæſtio- nis, hæc primæ diſputationis ſumma. Sed Ciceronis argumentandi modum, qui iuniores for- tasse dialekticos latet, quodd cum dicendi flore coniunctus fit, hoc pacto in ratiocinationem re- digemus. Solum id, quo adepto, mens noſtra ac-

quiescit, nil amplius desiderans, est bonum. solum  
vero honestum est tale. ergo solum honestum est  
bonum. Sic, sumpta eadem propositione, à cōtra-  
rio, Nullis opibus, diuitiis, tectis magnificis, aut  
huiusmodi, mens expletur. ergo non sunt bona.

*Ἐτιμόνος ἀγαθὸν, τὸ νερὸν:* Græcis vtitur inscriptionibus, quod declamationum themata sint hæc, à Græcis sumpta. Ex Stoicorum hominum. } sic quindecim. Vnus, Ex Socraticorum hominum. Vnus, Exaëticorum hominum. Vnus, Exoticorum hominum. Exoticum autem est, quidquid peregrinum est. Nonius, ex Plaute. Placer, Stoicorum. Non enim de Græcorum omnium, idest peregrinorum hominum, disputationibus licet accipere: quod alij arbitrantur. sed hoc disputat Cicero è Stoicorum dumtaxat sententia. atque etiam illa ipsa tantum, quæ nec Stoicis ipsis probare facillimum est. quod supra dixit. *Quam res tanta poscit, alij legunt. Tanta res, nouem. Potest, quinque.* PECVNIAE } M. Crassi, Istorvm, } cum contemptu dictum. TECTA magnifica, } L. Luculli. Alibi Insanas villarum substructiones dicit. OPERIS imperia, } Cn. Pompeij. AD STRICTI sunt, } Stricti, vnuus: male. Aliás, Affecti. IN bonis rebus esse numerandas duxi. } In bonis rebus, aut expetendis, esse num. duxi, quindecim: à quo- rum séptem abest Numerandas. In bonis rebus, aut in exp. es- se num. duxi, vnuus. In bonis rebus, aut appetendis esse num. produxi, vnuus. In bonis rebus, aut petendis, desiderandis esse duxi, vnuus. *Quippe cùm viderem, homines rebus his circumst.* Quippe cùm viderentur, duo. Homines, abest à duobus. EA tamen desiderare } Tantum, pro Tamen, duo. Ea tamen, non legi- tur in vno. Inde Amicitia confertur Hydropisi. Horatius:

Crescit indulgens sibi dirus hydrops,  
Nec sitim pellit, nisi caussa morbi  
Fugerit venis, & aquosus albo  
Corpore languor.

*Neque enim vnuquam expletur, nec satiatur cupiditatis situs.* } Aristoteles lib. II. Polit. cap. 6. Erit ἡ πονηρία ἀνθρώποι, ἀντανο- ρεῖτο μηδέ τοι μηδέ ισχυρή, σταθεῖτο μόνον. ὅταν δὲ ἦδη οὐτὶ ποτε πει-

aei fortas, ne πλεῖστοι εἰς εἰς αὔτερον ἀπέτελον γέρητον θεματικας φύσις. Neque ea solum, que habent } Neque solum ea quæ, hab. sex. Nec ea solum quæ hab. sex. SAEPE requiro, } Semper, octo. HAEC imbr. } sic omnes. IMBECILLA. } Imbe- cillia, quattuor. PECVNIAE membra solo verbo bona putauerunt appellanda, } Bona non recte dicuntur, quæ fortuna tribuit. D. Aug. in serm. v. in Euang. sec. Matth. Ipsæ ergo diuitiae bonæ sunt: sed ista omnia bona, quæ cominemoravit, à bonis, & malis haberi possunt: & cùm bonæ sint, bonos tamen facere non possunt. Solo, abest à septem, in quorum vno add. IV DIC AVISSENT. } Iudicassent, octo. Alij legunt, Indicauissent, ostendissem, demonstrassent. ATQVI isti omnia } sic tredecim. tres Atque i. o. vnuus, Aut qui i. o. vnuus, An i. o. ETIAM improbi } Ut improbi, sex. ETIAM improbi: Diues enim aut iniquus est, aut iniqui heres. D. Hieronymus. OBSINT probis } Obsint bonis, octo. Vnus, Absint à bonis. ( idest, vt boni non haheant. ) QVAM OBA- REM, licet irrideat, si quis vult: } Licet, abest à quatuor, in quo- rum vno add. Alij scribunt esse in quibuidam, Quamlibet ir- rideat, &c. Quod tamen non probant. PLVS apud me tam- vera ratio } Tamen, abest ab vno. VERA RATIO: Oratio, duo. ILLVM bona perdidisse } Illum, abest à duodecim. BIA- TEM, } cuius multa apophthegmata leguntur. apud Plutar- chum, Laertium, Stobæum. IN TER septem: } In septem, vnuus. PRIENEM } Ionię vrbum, Thebarum coloniam. Lacrius. ab Ægypto, Nelei filio, conditam, & postea à Philo- ta Thebano coloniam eo eductam, atque ab eo etiam Cad- men dictam. Strabo. qui ait, cùm prius maritima esset, alluvio- ne limi, continenti iunctam, ad stadia CCC. & ab Helice ori- ginem traxisse. Hanc Ardy, Gygis, v. Lydorum Regis, filius expugnauit. Herodotus. Scribit Laertius, eam ab Aliatte, Ar- dyis filio, iux Lydorum rege, bellis, cùm hic Bias floret, afflictam. Thucydides eam bello Euboico esse afflictam dicit. SECVM asportarent: } Secum, abest à quattuor- decim, in quotum vno add. OMNIA mea mecum porto. } virtutem, & sapientiam, quæ homini non nisi cum vita eripi possunt. vide Valerium Maximum. LIBRA fortune } ludit enim fortuna, diuitiis nunc tribuen- dis, nunc eripiendis. De Officiis: Diuitiæ, nobilitates, ho- nores, magistratus, imperia, & quæ sunt his contraria, in casu

posita temporibus gubernantur.

Ouidius:

Nempe dat, & quodcumque libet fortuna, rapido  
Irus & est subito, qui modo Crœsus erat.

Horatius:

Sifortuna volet, fies de rhetore consul:  
Si volet hæc eadem, fies de consule rhetor.

Et alius:

Ludit in humanis diuina potentia rebus.

**V E R E** dicitur: } Vére, abest ab uno. Et rectè dicitur, Lam-  
binus impressit. Et, quod rectum, } Et, abest ab octo. Ob-  
SCVRIORA. } Obscura, vñus. Odiosiora, esse in quibus-  
dam libris, alij scribunt. Cv m sine appositiōne exemplorum Len-  
tius disputant: } Positione, vñus. Oppositione, vñus. Sine  
app. exempl. absunt à decem, in quorum duobus add. in uno  
deletum. SVBTLIVS, } more Stoicorum. QVAM satū  
est, } Est, abest ab uno. Malè alij legunt, Quām factis. NVM  
vllam cogitationem } Illam, tredecim. Malè. Vllam: Non  
modò non maximam, vt plerique: aut aliquam, vt non pauci:  
sed nec vllam prorsus. ATQVE argenti } Aut, quindecim.  
Et, tres. AMENITATVM } quarum complura sunt ge-  
nera: Amenitatis, quinque. Amenitates, vñus. AD volu-  
ptates. } sic omnes mei. Alij legunt, Aut voluptatis. LIBE-  
RAM ciuitatem, } sic omnes mei. Malè alij, Liberaram. LI-  
BERAVERVNT eam: } Eam, abest à sex. ROMVLVS  
Ennius, apud Cic. Tusc. i.

Romulus in celo cum diis agit æuum.

AD SCENDIT in celum? } quia, subito exstinctus, non ap-  
paruit, adscendisse in celum creditus est. QVID autem Numa? } Autem, abest ab omnibus. rectè. POMPILIVS? } abest  
ab uno. Quid Numa Pompilius? quia verbum subauditur,  
vereor, ne quis temere locum mutarit: cùm in quiquisdam li-  
bris impressum hoc modo legatur: Quid? à Numa Pompilio  
minus ne gratas &c. Quod mihi quidem, pace dixerim do-  
ctorum hominum, haud satis probatur. Subaudiri & hoc vi-  
detur posse, & alia cōsimilia: Quid Numa Pompilius? videtur  
ne vobis, aut videri cuiquam potest, deorum benevolentiam  
ideo non esse consecutum, quia non filialis pateris, vt luxu-  
riosa posteritas, verūm fūtilibus vñulis, & capidibus in fa-  
erificanda vñtererunt. Ne c dubito, quin huius generis exem-

pla

pla inter legendum alia occurrant. CAPIDES, de fūtilibus vñ-  
lis, } Capedes, omnes mei, Atque, duo. Capedineisque ac f.  
vñs, vñus. Vasis genus, à Numa sacris adhibitū. III. de nat. dc.  
Docebo meliora me didicisse de colendis diis immortalibus,  
iure pontificio, & more majorum, capedunculis, quas Numa  
nobis reliquit &c. Vide Varonem lib. 4. & 8 de ling. Lat. Fe-  
stus autem, Capis, poculi genus, à Capiendo dictum. Vñlulas  
Vñs, septem. Lambinus, Hirnulas. FILICATAS } Delicatas,  
omnes. Delicas, quidam legunt. Filicatas: à Filice herba, cuius  
imago in poculis, & pateris cælari solita fuerit: quæ Felix, &  
Felicia Catoni. BRVTVM vero } Lucium, non Marcum. Va-  
lerius Max. lib. 5. cap. de pietate erga Patriā. Verò, abest à sex,  
decim. Si quis } sic omnes. EIVSDEM confilij socios, } Sp.  
Lucretium, P. Valerium Tricipitimum, Collatinum, &  
alios, De Romulo, Numa, Superbo, Litius lib. 2. Dionys. lib.  
lib. 5. Plut. in Valerio Poplicola. QVID speltarint, } Quid ex-  
pectauerint, nouem. Quid Exspectarint, duo. Quid expetie-  
rent, quattuor. Quid exspectauerint, vñus. Quid expotauerint,  
vñus. Quid computauerint, vñus. malè. QVID secuti sunt, } Co-  
secuti, quattuor. Alij notant esse in q.l. Assediti. NVM quis ex-  
sistat, eu } Num quis ex iis, cui, vñus. Existet, quattuor decim.  
Existit, duo. Existimet, mendose, vñus. Q. MCVIVM } Vale-  
rius lib. 3. cap. de Patientia. HORATIVM Coctitem } Valerius  
lib. 3. cap. de Fortitudine. QVAE patrem Decium, que filium }  
Liuius lib. 8. Valerius lib. 5. cap. 6. Quæ vis patr. Dec. quæ fil.  
sexdecim. DEVOVIT, } Deuotavit, octo. Ac immisit } Immi-  
sitq., quattuor. Et immisit, quattuor. Misitque, vñus. CONTRI-  
NENTIA C. Fabricij? } Plut. in Pyrrho, Valer. lib. 4. cap. de Pa-  
upertate, Agell. lib. 1. cap. 4. Plin. lib. 33. cap. 12. TENVTAS vi-  
ctus M. Curij } Valerius lib. 4. cap. de Paupertate, Plin. lib. 18.  
cap. 3. & lib. 19. cap. 5. Columella lib. 1. in Præf. & cap. 3. Plutar-  
chus in Apophthegm. DVO propugnacula belli Punici Cn. & P.  
Scipiones, } Virg. 6.

Scipades duo fulmina belli.

Et Silius Italicus:

Belligeri Mauortia pectora fratres.

Vide Liuium lib. 21. 22. 23. CORPORIBVS suis interfidi. }  
vide, quām eleganter eamdem rem expressit in Catone Ma-  
iore. DOMESTICIS exemplis abundamus, } nam nulla resp.  
bonis exemplis ditor fuit. Liuius in Praefatione. AN puz-

*mus quemquam horum cogitasse quidquam in vita sibi exp. } Putamus nos quidquam illos cogitasse in vita s. e. quatuor. Putamus ne illos in vita quidquam s. cogitasse exp. quinque. An putamus nos illos cogitasse quidquam in vita s.e. tres. Putamus nos illos quidquam in vita s. e. vnuus. Putasne non illos cogitasse, quidquam in vita s. e. vnuus. Putamusne illos cogitasse quidquam in vita s. e. duo. An cogitasse aliquid in vita s.e. & additum, Putamus, post, An, vnuus. An cogitasse sibi in vita quidquam exp. & additum, Putamus illos, vnuus. EXPETENDVM, nisi quod } Expetendum esse, nisi quod nouem. LAUDABILE esse, } Esse, abest ab uno, sed additū postea, Eset, quomodo est & in sexdecim aliis. VENIANT &gutur irrisores } Veniant isti igitur irrisores, vnde cjm. Veniat istius igitur irrisores, duo. VE L ipsi iudicent, } Ipsi, abest a duobus. CORINTHIIS operibus } ex aere Corinthio post ipsum Corinthum a L. Mummo euersam. Sic sex-duodecim. Opibus. Aes Corinthium Virg. Georg. II. Ephryea aera appellat. ATQVE hec quidem, } aliis Atque hi quidem, quo modo vnuus meus. Atque hoc quidem, vnuus. Atque hachī quidem, vnuus. Atque ad hæc quidam, vnuus. Modo huc, modo illuc } nō adiungere. VOLVPTATEM esse summum bonum, } quod senserat Epicurus. MATER, } aliquando nouerca. INTER te, & quadrup. } sic nouem. Inter te, atque quadr. septem. Inter te, inter quadr. duo. QVADR V P R E D E M aliquem } Aliquem, abest a sex. Aliquando, vnuus. Aliquid, duo. Aliquam, tres. Malè, Quadrupedem: voluptas homini cum brutis communis est. QVID QVAM nō bonum est, } An quidquam bonum est, vnuus. Sunt, qui legant, Quidnam nō bonum est. Qui possidet, } Qui id possidet, decem. FACIAT, } Facit, quindecim. GLORIANDO se, } Sic decem septem. Gloria, vnuus. ET } sic omnes mei. Etiā, Fuluij liber. PR A E D I C A T I O N E extollit, } Et prædicatione effert, quatuordecim. Et prædicando effert, duo. Effert in prædicationem, vnuus. Et in prædicationem extollit, vnuus. Quo est maior, } voluptas quod maiore, eo turpior. STATV } Statione, vnuus. DIMOVET, } sic quindecim. Demouet, vnuus. Mover, duo.*

## PARADOXON. II.

ὅτι αὐτάρκης οὐ δέρπη πρὸς ἐνδαιμονίας:  
in quo virtus sit, ei nihil deesse  
ad beatē viuendum.

NEc verò ego M. Regulum arum nosum, nec infelicem, nec miserum umquam putavi. non enim magnitudo animi eius cruciabatur à Pænīs, non granitas, non fides, non constantia, non villa virtus, non denique animus ipse: qui, tot virtutum praesidio munitus, tantóque comitatu circumscriptus, cum corpus eius caperetur, capi certe ipse non potuit. Caium vero Marium vidimus: qui mihi secundis in rebus vnuus ex fortunatis hominibus, in aduersis vnuus ex summis viris videbatur: quo beatius esse mortali nihil potest. Nescis, insane, nescis, quantas vires virtus habeat. nomen tantum virtutis usurpas: quid ipsa valeat, ignoras. nemo potest, non beatissimus esse, qui est totus aptus ex se se, quique in se uno sua ponit omnia. cuius autem spes omnis, & ratio, & cogitatio pendet ex fortuna, huic nihil potest esse certi, nihilque, quod exploratum habeat permansurum sibint vnum quidem diem. cum tu hominem terreto, si quem eris natus istiusmodi, mortis, aut exsiliij minis. mihi verò quidquid acciderit in tam ingratia ciuitate, ne recusanti quidem euenerit, non modo repugnanti. quid enim ego laborau, aut quid egi, aut in quo enigilauerunt cures, & cogitationes meæ, siquidem nihil peperi tale nihil consecutus sum, ut in eo statu essem, querere neque fortune temeritas, neque inimicorum labefactaret iniuria? Mortemne mihi minitaris, ut omnino ab hominibus, an exsiliu, ut ab improbis

demigrandum sit? mors terribilis est ius, quorum cum vita omnia extinguuntur: non ius, quorum laus emori non potest: Exstadium autem teribile illis, quibus quasi circumscripsus est habitandi locus: non ius, qui omnem orbem terrarum unam urbem esse ducunt. te miseria, te etrumque premunt omnes, qui te beatum, qui te florentem putas: tua libidines te torquent: tu dies, noet esque cruciaris: cui nec satis est, quod est: Et id ipsum, quod habes, ne non diuturnum sit futurum, times: te conscientia stimulant maleficiorum tuorum: te metus exanimant iudiciorum, atque legum: quounque adspexisti, ut furia, sic tua tibi occurrunt iniuria, qua te respirare non sinunt. Quamobrem, ut improbo, Et stulto, Et inerti nemini bene esse potest: sic bonus vir, Et fortis, Et sapiens miser esse nemo potest. nec vero, cuius virtus, moresque laudandi sunt, eius non laudanda vita est: neque porro fugienda vita, qua laudanda est, effet autem fugienda, si effet misera. Quamobrem quidquid est laudabile, idem Et beatum, Et florens, Et expetendum videri debet.

**N**O MINIS virtutis definitionem pro medio termino accipit, sed quae ex se omnia facere, & in seipso ponere omnia potest. nam ea est virtutis propria, & maximè lata significatio, ut Aristoteles in 11. Rhetoricoru notat, omnem alicuius rei in suo genere excellētiam denotare, ut equi, bene incedere: canis, currere, &c. Sic igitur conficienda est, totum robur, ac fundatum huius disputationis complectens, ratiocinatio. Nemo potest non beatissimus esse, qui in seipso, & ex se facit omnia. Nemo virtute prædictus potest

poteſt non esse talis. Ergo, Nemo virtute prædictus potest non esse beatissimus. Nunc Logici obſtupescūt, Ciceronem necessariò, & ex omnibus negantibus concludere. Mirantur quidem, & meritò: cùm cauſas ignorent. Sic contrarium de eo, qui non tam virtute, quā fortuna deleſtatur, concludit. De fortunę verò, & virtutis adiuvicem comparatione vide plura apud Plutarchum in commentariolo, quem de virtutis, & fortune Romanorum inter se collatione scribit; qui soliti erant Virtutem placida effigie, non nihil in vultu roboris habentem, ob gloriæ studium, & victoriæ desiderium, pingere: Fortunam quoque feroci gestu, & adſpectu ſpeſ arrogan-tem præ ſe ferenti, virtutem poſt ſe relinquētem. At nostrum eſt, prætermiſſo Fortunę, quam non agnoscimus, nomine, de Dei, & noſtra voluntate in vite noſtræ actionibus loqui.

**N**EC verò } ex abrupto, exordio proſus diſsimulato. **MAGNITVDO animi** } lib. III. de Fin. in extremo. Laert, μεγαλοψύχα. Tot virtutum preſidio munitus, } Munitus, abeft à quatuor, in quorum duobus add. **TANTOQVE comitatu septus,** } ſic septem. Tantóque comitatū virtutum septus, nouem. Sæptus, non eſt in vno. Tantóque conatu, comitatūque virtutum ſæptus, duo. **CAPERETVR, capi** } ſic omnes mei. Non potuit, } cùm eſſet munitus, ac ſæptus tot virtutum præſidio, tantóque comitatu. **C. Marium** } Plutarchus, & Valesius, & Cicero in Pifonem, & poſt red. ad Quir. **QVI mihi secundis in rebus** } Mihi, deletum eſt in vno meo. **FORTVNATIS** } Fortiſimis, vnuſ. **FORTVNATIS hominibus, in aduersis, &c.** } Fortunatis, omnibus in adu. &c. vnuſ. **IN aduersis** } quas constantiſimè pertulit. Ex ſummis viris } Recte, Vir, in perferendis aduersis. Cicero in Bruto: Vidi Mitylenis virū, & vidi planè virū. **Esſe** } id eſt, cōtingere. **IN SANE,** } ad Antonium hoc refertur, in quem tota oratione inuehit.

**C**VIVS autem spes omnis. Cui verò spes omnis, tres. Cui spes omnis, vnde eccl. Cuius spes omnis, tres. Cuius spes omnis, vnuis, vnuus, male. **P**ERMANSVRVM. incerta, & instabilita Fortunæ bona. **S**ibi diem vnum. sic vnuus. Sibi vnum diem, octo. Sibi ne vnuum quidem diem, quatuor. Vnum diem sibi, tres. Sibi quidem diem, duo. **E**V M. qui à fortuna pendet. **M**ORTIS. vt Reguli. **E**X SVLII. ve Marij. **N**O N modo repugnanti. pro Nedium. sic & locutus & in epistola ad Lentulum, Fam. lib. I. Vbi vide Patris Commentarium. Sic est & in duobus meis, & in uno doctissimi viri, Caroli Sigonij. **A**VT IN QUO. Aut, abest à tribus. **E**VIGILAVER VNT. sic duo. Euigilarunt octo. Vigilauere, vnuus, tres, Elaborauerunt, tres, Vigilauere, vnuus, Elaborauere. **A**B HOMINIBUS. Ab omnibus sex. **M**ORS terribilis est iis, &c. Turpis mors forti viro non potest accidere, neque immatura consulari, neque misera sapienti. In Catil. 4. **E**X SVLIVM autem terribile illis. Exsul enim nomen calamitatis est, non turpitudinis, pro domo. Terribile, abest à decem, in quorum uno add. **T**VAE libidines te torment. Te tuæ libidines torquent, quinque. Tu libidines' torques: vnuus, male. Et id ipsum, quod habes, ne non diuturnum. Quod habes, absunt à decem. **T** E conscientie stimulant. Te conscientia tua stim. tres. **V** T furia. Cic. Sex. Roscio: Nolite purare, quemadmodum in fabulis sè penumero videtis, eos, qui aliquid impie, sceleratè que commiserint, agitari, & perterriti furiarum rædis ardentibus: sua quemque fraus, & suus terror maximè vexat: suum quemque scelus agitat, amentiaque afficit: suæ malæ cogitationes, conscientiaq. animi terrent. hæ sunt impiæ assidue, domesticæ que furiae, quæ dies nocte que parentum pœnas à conseleratissimis filiis repeatant. Et de Leg. I. & in orat. in Pisonem. Vide Adag. Conscientia, mille testes. Alludit ad Orestis fabulam, à poëtis descriptam, quem fingunt oceurus furiarum exagitari, ardentes faces quatentium: vnde exclamat.

A, μνια πτω δεδε τερπε.

Et Virg. 4. AEn.

Aut Agamemnonius scenis agitatus Orestes.

Et 3. AEn.

Et scelerum furii agitatus Orestes.

QV AE respirare non sinunt. Suspirare, omnes. Quæ suspi-

Suspirare te non sinunt, vnuus. IMPROBO, vbi non sit felicitas. **N**EMINI bene esse potest. sic quindecim. Nemini felicitas esse potest, vnuus. Nemini bonū esse potest, duo. **B**ONVS vir, vbi non sit miseria. **E**I VS non laudanda vita est. Eius, non est in vno. Eiusdem esse in quibusdam, alijs notarunt. **V**IDERI debet. sic nouem. Decet, sex. Licet vnuus. Solet, vnuus. Dicet, vnuus: male,

### PARADOXON III.

ὅτι ἴση τὰ ἀμαρτήματα:  
quod æqualia peccata.

**N**ec enim peccata rerum carent, sed vitijs hominum, metienda sunt. in quo peccatur, id potest aliud alio maius esse, aut minus: ipsum quidem illud, peccare, quoquo te verteris, vnum est. Auri nauem euertat gubernator, an palea, in re aliquantum, in gubernatoris inscitia nihil interest. lapsa est libido in muliere ignota: dolor ad pauciores pertinet, quam si petulans fuisset in aliqua genorafa, ac nobili virgine: peccauit verò nihil minus: si quidem est, peccare, tamquam transire lineas: quod cum feceris, culpa commissa est: quam longè progrediare, cum semel transieris, ad augendam transiendi culpam nihil pertinet. peccare certè licet nemini. quod autem non licet, id si nec maius, nec minus unquam fieri potest: (quoniam in eo est peccatum, si non licuit: quod semper vnum, & idem est) quæ ex eo peccata nascantur, æqualia sint oportet, quod si virtutes pares sunt inter se: paria esse etiam vitia, necesse est. atqui pares esse virtutes, nec bona vira meliore, nec temperante temperantiora,

nec fortiorum, nec sapiente sapientiorem posse fieri, facile potest perspicere. An virum bonum dices, qui depositum nullo teste, cum lucrari impunè posset, aurum pondo decem reddiderit, si idem in decem millibus non idem fecerit? aut temperanter, qui se in aliqua libidine continuerit, in aliqua effuderit? una virtus est consentiens cum ratione, & perpetua constantia. nihil huic addi potest, quod magis virtus sit: nihil deminatur, ut virtutis nomen relinquatur. etenim, si bene facta, res esse facta sunt, & nihil recto rectius: certè nec bono quidem melius quidquam inueniri potest. sequitur igitur, ut etiam vicia sint paria. siquidem prauitates animi recte vicia dicuntur. atqui, quoniam pares virtutes sunt: restat etiam facta, quando à virtutibus proficiuntur, paria esse debent: itēmque peccata, quoniam ex viciis manant, sint aqualia, necesse est. A philosophis, inquis, ista sumis, metuebam, ne, à lenonibus, diceres. Socrates disputabat isto modo. bene hercule narras nam, istum doctum, & sapientem virum fuisse, memoria traditum est. sed tamen quero ex te, (quādo verbis inter nos contendimus, non pugnis) verum potius de bonis est querendum, quid batuli, atque operarij, an quid homines doctissimi senserint? preferim cum hac sententia non modo verior, sed ne utilior quidem hominū vita reperiri vlla possit. qua vis enim, qua magis arceat homines ab improbitate omni, quam si senserint, nullum in delictis esse discrimen? aquę peccare se, si primatis, ac si magistratibus manus inferant? quamcumque in domum stuprū intulerint, eandem esse labem libidinis? Nihil ne igitur interest, (nam hoc dicet aliquis) patrem quis necet, an seruum? Nuda ista si ponas: indicari, qualia sint, non

non facile possunt patrem vita priuare, si per se scelus est. Saguntini, qui parentes suos, liberos emori, quam seruos vivere, maluerunt, parricida fuerunt. ergo & parenti nonnumquam adimū vita sine scelere potest: & seruo sine iniuria non potest. causa igitur hec, non natura, distinguit: que quando alteri accessit, id sit propensius: si utriq[ue] adiuncta sit, paria fiant, neesse est illud tamen interest, quod in seruo necando si adiut iniuria semel peccatur: in patris vita violanda, multa peccantur: violatur is, qui procreavit: is, qui aluit: is, qui erudit: is, qui in sede, ac domo, atque in rep. collocavit. multitudine peccatorum prestat, eoque pena maiore dignus est. sed nos in vita, non qua cuique peccato pena, sed quantum cuique liceat, spectare debemus. quidquid non oportet, scelus esse, quidquid non licet, nefas putare debemus. etiam ne in minimis rebus: etiam siquidem rerum modum fingere non possumus, animorum tenere possumus. his tristis paulò semouit extra numerum, aut si versus pronunciatus est syllaba una brevior, aut longior, exhibilatur: & exploditur in vita, que omni gestu moderatior, omni versu aptior esse debet ut in syllaba, te peccare dices? poetam non audio in nugis: in vita societate audiām cīnem, digitis peccata dimetentem, sua? quae si visa sint breviora, leviora qui possunt videri? cum, quidquid peccatur, perturbatione peccetur rationis, atque ordinis: perturbata autē ratione semel, & ordine, nihil possit addi, quod magis peccari posse videatur.

**H**AEC sententia omnium maximè probari nequit, nostræque fiduci aduersatur. sed recē fenda est Ciceronis ratiocinatio. Non ex rerum euentu, sed ex vitiis hominum metienda sunt peccata, vitia vero, licet id, in quo peccatur, maius plerumque, aut minus sit, simul & equalia. ergo & peccata, cuius si assumptionem, aut minorem negauerimus, numquam pro illo quispiam probabit.

*τὸν τὰ τὰ ἀμεριπήτα.}* addunt Lambinus, καὶ τὰ κατορθώματα Langius, καὶ τὰ ὅπλα περίτα. Persius sat. 5.

--dixit exere, peccas.

Et quid tam paruum est? Sed nullo ture litabis,

**N**ec enim peccata &c. præponuntur hac verba in meis vñdecim libris, eaque confirmantur doctorum virorum iudicio Parua, inquit, est, ut magna culpa. Mihi non constat, scipræ sint à Cicerone, an ab aliquo, cui hoc initium Parodoxi, ut abruptum, non placaret: Nec enim peccata rerum euceptu: cum non intelligerer, ex inscriptione Græca aptè pendere. Si quis tamen earecipiat, non pugnabo. modò sciat, in quinque aliis meis, separatum esse scripta, & in quatuor quidem ex quinque, miniatulis litteris. Quod magis glosoam olet. Vide Plut. de virt. mor. Hor. Ser. lib. i. tab. 2. Pers. sat. 5. *Quo quo vertentis,* & sic omnes mei. Absolutè dictum. *Vnum est.* peccatur enim semper ex inscita, vel ex incontinentia. *Vnum:* generi: sed species diuersas continet. **A**LIQVANTVM, &c. Aliquantulum, quindecim. **I**N SCITIA &c. sic decem, septem, vñus, Inscita, Lambinus, Iuſcientia. **L**APS A est libido &c. sic quatuordecim. vñus, Lapsa est eius libido. vñus, Lapsa est illius libido. duo, Lapsa est ipsius libido. **P**EC CAVIT vero &c. Peccatur, vñus. Peccatum, octo. **T**R A N S I R E linearis: &c. sic omnes mei. Linearis: Modum.

Horatius. Est modus in rebus, sunt certi denique fines,

Quos ultra citriique nequit confitente rectum.

**C**VM semel transferis, ad &c. &c. Transferis hunc, ad &c. octo. Hic, duo. Id hoc vno tenet. Id, non est in vno. In, vñus. Id si ne maius, &c. sic omnes mei: vno excepto, in quo, in margine add.

Quidem;

Quidem: Id siquidem nec maius. **T**EMPERANTE temperatio rem, &c. Temperato, quatuordecim. Temperatiorem, decem. Octo. **P**O TEST perspici. &c. Poteſt percipi, septem. quorum duo, ord. præp. vñns, prius, Persici, postea emendatum, Percipi. AN virum bonum dices, &c. &c. semel enim qui peccat, vir bonus non est, quacumque in re peccet. **N**ON idem fecerit &c. Idem, abest à decem. **T**EMPERANTEM &c. Temperatum, duodecim. **V**IR TUTIS nomen. &c. perfectax. **N**ec bono qui. lem &c. Ne, duo. **Q**UANDO &c. Quoniam, quindecim. **I**N QVIS, &c. Inquit, duodecim. Inquit, duo. Inquit aliquis, vñus. **N**e, à Lenonibus, ista dices, quinque, in quorum vno add. **Q**UANDO verbi &c. contendamus, licet, non enim pugnis inter nos, sed verbis res agitur. **V**TRUM potius de bonis &c. Vtrum bonis, octo. Vtrum de bonis, septem. Vtrum potius bonis, tres. **Q**VAE vis enim, &c. Qua vis enim est, sexdecim. **M**AGISTRATIBVS &c. Magnis reatibus, duo. **I**NFERANT? &c. Afferant, quatuordecim. Afferant, vñus. Inferant, vñus. **Q**UAMCVM Q. &c. Et quacumque tres. **N**VD A &c. remota à circumstantiis. **N**ON facile possunt. &c. Possum, tredecim. Possem, duo. **S**AGVNТИ, &c. ab Hannibale obliſsi, Liuius lib. xxI. Polybius lib. III. Val. lib. vi. cap. 6. Silius lib. II. Cic. in Philipp. Inde Pro. Saguntina fame. **P**ARRICIDAE &c. Patricida, septem. **C**VM vtro accessit, &c. pro, Vtroidis. Ita locutus lib. III. de Off. Quæ quando vni accessit, vñus. Quæ quoniam vltro accessit, nonem. Quæ quia vltro accessissent, vñus. Quæ quando vltro accessit, quatuor. Quæ ipsum vltro accessit, vñus. Quæ quia vltro sponte accessit, vñus. **V**TRIQE adiuncta &c. Vtroque, nouem. Vtraque, duo. Vterque, vñus. Vtramque, vñus. Vtrobisque, tres. Coniuncta decem. **S**i adsit iniuria, &c. Si id fiat ini. vñus. Si id sit ini. sex. Si sit ini. vñus. Si adsint iniuriæ, vñus. Is, qui in sede, ac domo, atque in rep. &c. Is, qui in domo, ac sede, & in rep. quatuor. Is, qui in domo, ac sede, ac in rep. duo. Is, qui in sede, ac domo, ac rep. duo. Is, qui in domo, ac sede, atque in rep. duo. Is, qui in sede, ac in domo, atque in rep. duo. Is, qui in domo, in sede, atque in rep. vñus. Is, qui in domo, in sede, atque in rep. vñus. **P**RÆSTAT, &c. Peccatur, octo. Peccat, vñus. Peccauit, vñus. **E**OQ. &c. Ergo, vñus. **A**NI M O R V M tenero possimus. &c. Animorum modum ten. poss.

T iiiij

omnes mei. PAVLLO} Paulum, octo. Pannum, vnum. Paululum, septem. Movit} Moueat, septem. Mover, duo, Moverit, vnum. Mouet, vnum, & sup. A. Remoueat, vnum. Si versus pronunciatus est, &c.} cum tamen in verso peccatum sit poëta, non histrionis. sed quia histrio pronunciat absente poëta, ei plausus datur. AVT longior,} Vel longior, vnum. Breuiori, & longiori, esse in quibusdam libris, notatum video. IN vita tu, que omni gestu mod. Omni verso aptior esse debet, vt in syll. te peccasse dices.} In vita, tu, qui o. g. m. o. v. a. e. debes, vt in s. t. p. d. quatuordecim. in quorum uno. In vita tua itaque o. g. & c. Gestu. Versu. histrionis virtut in gestu, poëta in verso. sed poëta non prodibat in scenam, dabat vero poëma suum agendum histrioni. propterea solus histrio nominatur: qui & gestum agebat seruato numero, & poëta versus pronunciabat. POETAM non audio.} Se excusantem. non fero, si peccat. MODERATOR,} Modulatior, quidam legunt. contra omnes mei libri. DIGITIS peccata dimitem. sua.} Dimetitur digitis peccata, qua ratione leuiora videri posint, si visa sint breuiora. Digitis: Alludit, quod Poëta carminis pedes digitis metiri soleant.

Horatius in Arte:

Legitimūmque sonūm digitis callemus, & artic.

#### P A R A D O X O N I V.

ὅτι πάντες οἱ μωροὶ μαζούνται:  
quod omnes stulti insaniant.

EGO vero te non stultum, ut sape: non improbum, ut semper sed dementem, & insanum, rebus addiccam necessarijs. Sapientis animus magnitudine consilij, tolerantia rerum humanarum, contemptione fortuna, virtutibus denique omnibus, ut mænibus, septus, vincetur, & expugnabitur? qui nec ciuitate quidem pelli potest. qua est enim ciuitas? omnis ne conuentus ferorum. & immanium? omnis ne etiam fugitiuorum, ac latronum, congregata unum in locum multitudine certe negabis. non igitur erat illa tum ciuitas, cum le-

ges

ges in ea nihil valebant, cum iudicia iacebant, cum mos patrius occiderat, cum, ferro pulsis magistratis, senatus nomen in rep. non erat, predonum ille concursus, & te duce latrocinium in foro constitutum, & reliquia coniurationis, à Catilina furys ad tuum scelus furorēmq. conuersa, non ciuitas erat, itaque pulsus ego ciuitate non sum, quem nulla erat. accerfus in ciuitatem sum, cum esset in rep. consul, qui tum nullus fuerat: esset senatus, qui tum occiderat: esset consensus populi liberi: cum esset iuris, & aequitatis, que vincula sunt ciuitatis, repetita memoria. At vide, quam ista tui latrocinij tela contempserim. iaetam, & immisgam, à te nefariam in me iniuriam semper duxit peruenisse ad me nūquam putauis. nisi forte, cum parietes disturbabas, aut cum testis sceleratas faces inferebas, tunc meorum aliquid ruere, aut deflagrare, arbitrabare. nihil neque meum est, neque cuiusquam: quod auferri, quod eripi, quod amitti, potest. si mihi eripuisses diuinā animi mei constantiam, meas curas, vigilias, consilia, quibus resp. iniulta stat: si huius aterni beneficij immortalem memoriam delouisses: multo etiam magis, si illā mentem, unde hac consilia manarent, mihi eripuisses: tum ego accepisse me confiterer iniuriam: sed si hac non fecisti, nec facere potuisti, redditum mibi gloriosum tua dedit iniuria, non exitum calamitosum: ergo ego semper ciuis eram, & tum maxime, cum meam salutem senatus exteris nationibus, ut ciuis optimi, commendabat: ut ne nunc quidem es ciuis. nisi forte idem hostis, & ciuis esse potes. an tu ciuem ab hoste natura, ac loco, non animo, factisque, distinguis? cadem in foro fecisti, armatis latronibus templa tenuisti, priuatorum domos: adēsq. sacras incendisti. cur hostis Spartacus, si tu ciuis? potes autem esse tu,

civis, propter quem aliquando ciuitas non fuit? Et me exsulem, tuo nomine, appellas? cum omnes meo discessu exsulasse remp. patent. numquamne, homo a-mentissime, te circumspicies? numquā ne, quid facias, considerabis, nec quid loquare? nescis, exsilium scele- rum esse pñnam, meum illud iter, ob præclarissimas res à me antè gestas, esse suscepimus? omnes scelerati atque impij, quorum tu te ducem esse profiteris, quos leges exsilio affici volunt, exsules sunt, etiam si solum non mutarunt. an, cum omnes leges te exsilem esse inbeant, non eris tu exsul? non appellatur inimicus, qui cum telo fuerit? ante senatum tua sica deprehensa est: qui hominem occiderit? tu plurimos oscidiisti: qui incen-dium fecerit? ades Nymphaeum manu tua deflagra-runt: qui templo deorum occupauerit? in foro etiam castra posuisti. Sed, quid ego communis leges profero, quibus omnibus es exsul? familiarissimus tuus de te priuilegium tulit, vt, si in operi Bona deæ accessisses, exsulares. at, se id fecisse, etiam gloriari soles. Quo-modò igitur, tot legibus electus in exsilium, nomen ex-silis non perhorrescis? Roma sum, inquis: Et tu quidem in opero fuisti. non igitur, ubi quisque erit, eius loci ius tenebit: si ibi eum legibus esse non oportebit.

**S**I Ciceronis vagā argumentandi rationem colligo. Quicunque non sépit animum magnitudine consilij, rerum aduersarum toleratia, & fortunę cōtemptione, insanus est. Omnis stultus est huiusmodi. ergo omnis stultus est insanus. Nota duos pulchros stultię effectus, quos ita animaduertit, quod si in præpotentum animis re-peritur, eas exitus desiderio in concitatum furo-

rem

rem impellit, si in humilium verò, & plebeiorum mentibus stultitia imbecillitati coniuncta sit, vanis eos insomnijs exagitat, quoniam vires desunt.

61. τετρας οἱ μωροὶ μαίνονται. } ἀσπερεῖ, Diog. Laert. Cic. Tusc. 11. ex Alcibiade altero Platonic. Ego verò } pro-positione aspera, & vehementi, irrumpit in hanc causam fine exordio. TE } Clodi, nam in eum inuehitur. DEMENTEM, } & inf. Dementem iudico, & inf. vnum. Et, non est in duobus. REBUS addicam necessarii. } Rebus, pro Causis, posuit. Addicam, autem, quia parum visitatum verbum est, in qua significazione hic à Cicerone usurpat, propterea multos errores, magnamque opinionum varia-tatem inficitia peperit. Quod si, Addicam, dictum esse patuisset, pro Probabo, profclò sibi à veteribus libris, quiplerique (8.) habeat, Addicam, discedendū non putassent. Huius autem verbi vim Festus ostendit, his verbis: Addicere, est propriè idē dicere, & approbare dicendo. alijs, Addicere, damnare est. Alij, Euincam, quod non reicio: sed veteres libri dissentunt. alij habent, Vincam: alij, Adiuncam: pro quo quidem reponēbat, Coniuncam. Mei, vnum, Adducam. Dicam, duo. Ad victū vnum. Abdicam, vnum. Additam, vnum. Additiam, tres. Compel-lam, addicam, vnum. Lambinus, Rationibus adiuncam. NE CUI quidem } Neque, vnum. QV A E stenim ciuitas? } Ciuitas est eorum, quilegiis obtemperant. Cic. off. u. & de Somn. Scip. Ciuitates dicuntur, concilia, & cœtus hominum iure for-mat. Plato de Leg. vi. NON igitur } Non enim, duo. Non ergo, vnum. Abest a tribus, in quorum uno add. CV M leges in ea nihil valebant: } imaginem ostendit illius temporis, cum à Clodio tribuno pl. electus est. IV DICIA iacebant: } subla-ta vetere illa magistra pudoris, & modestiæ severitate Censoria, in Pisonem. PR AE D. O N V M illi concursus: } in Pisonem: Delectus seruorum habebatur ab eo, qui nihil sibi vñquam nec facere, nec pati turpe esse dixit. Atma in templo Caistoris, ò proditor templorum om-nium, vidente te, constituebantur, ab eo latrone, cui tem-plum illud fuit, te cōsule arx ciuium proditorū, receptaculum

veterum Catilinae militum, castellum forensis latrociniij, blitnum legum omnium, ac religionum. **N**o n*civitas erat.* Num civitas erat? duo. **Q**uae tum nulla erat? Tum, abest ab omnibus. **C**vm effet in rep. confus. **P**. Lentinus, auctor, & princeps in reuocando Cicerone. Vt pro, Cum, quindecim. Maſe. Occiderat? quod nihil eius valeret ad cōfitoritas. **C**ONSENSUS populi liberis? Liberi, abest ab uno. Liber, sexdecim. Lib. unus. Populi Romani, unus. **C**vm effet iuris? Cūm, abest à sexdecim. Vt, pro, Cūm, unus. **V**INCULA civitatis, pro Cēcina, Ius cuius le dicit Vincula non modò iudiciorum, sed etiam vita, sociatique communis. **R**EPE TITA memoria. sic mei. Aliás, Receptra. A t<sub>u</sub> vides? ac, duo. Ad, unus. Alios, Tu vide. IA CTEM, illatam, quidam legendum putant. Factam, duo mei. Latam, aliás. **P**ERVENISSE tamen, non est in quatuordecim. Peruenisse cam ad me, unus. Tamen, add. sup. ante, Peruenisse, in uno. **P**ARIETES disturbabas, euerla enī domus Ciceronis est in Palatio, de quo queritur saepē in Orationibus. Alii **Q**uid ruere, aut deflagrare arb? Aliiquid ruri, aut in vrbe, defl. arb. unus. Aliiquid aut rure, aut in vrbe defl. arb. tres, quorum unus, Rure, aut vrbe. Aliiquid aut ruere, aut defl. arb. nouem, in quorum uno add. Aut, Alruere, atque defl. arb. duo. Deflagrati, unus. **D**eflagrare: absolut. Vt infra: Aedes Nymphaeum tua manu deflagravit. Deflagrari, unus, malè. **N**IHL neque meum est, sic nouem. Nihil nec meum est, tres. Nihil enim meū est tres. Nihil meum est, duo. Nihil neque meum est, unus. **N**E QYE cuiusquam, Nec quinque. Cuiquā, in veterē libro esse, alij volunt. Si mihi eripuisse, sic decem/ceptem. Si mihi hoc erip. unus. Aliás, Si mihi hoc erip. **Q**y ibv s resp. iniuncta stat? Quibus resp; te inuitissimo stat, Langius. Quibus resp; stat, sexdecim mei. Recte. Stare enim, firmitudinem quandam habet. Quo modo, Critoni usurpati in iis versibus, quos ad me in tuo, ad vrbe Venetam appulsi superiore anno scripsi, cum in extremo Venetas laudes recenseret.

Placuit autem eos hoc loco describere, ne homines eorum desiderio teneantur.

Dum procul à Patria, Hadriaci prope litora Ponti,  
Confidi, mediis celſam miratus in vndis  
Stare vrbe, ſequi obtingunt cui iura Tridentis,  
Et Pelagi imperium constans, ceternáque ſceptra:

Sæpe

Sæpe meos animo casus meditabar iniquos,  
Sæpe humectabam guttiſ stillantibus ora,  
Cum mihi ſeſe offert Diua veneranda figura  
Naias, Eridabi quandam prope cognita ripas,  
Naias, vna quidem doctis gratissima Muſis.  
Principio robur ſimulacrum, aut vana videre  
Soſnia, (nulla fides oculis) cum protinus illa  
His me vltro aggreditur dictis: Non te tua fallunt  
Luminæ: nec noſtis vana eſt, quam cernis, imago.  
Nam mandata ferō Muſarump, & iuſſa facetto  
Palladio armifone, quibus vna eſt cura ſalutis  
Certa tuæ: nec te per tanta pericula veſtum  
Vrbem in preclarum tumido ſub pectore curas  
Fas premere eſt: meliora iubent ſperare, monentque.  
Non hæc iſta tibi tantum infortunia nota  
Contingunt: ne cede malis: neu te ſine vinci.  
Cernis enim, vt latè terras Saturnus in omnes  
Acer agit peſtem, que fibris cæca ſub ipſis  
Conditur, atque alias magno iam turbine clades,  
Haud ſecus, ac Phœbi iuratos Aulide Graios  
Quando Agamemnonio terigit pro criminе dexta.  
Hic natos vitę exforſtes, aſt ille parentem  
Grandezuum deflet, vel matris triste pheretrum,  
Proq. viro coniux, aut vir pro coniuge luget.  
Aſt alios volucris fortunę incommoda tangunt,  
Reges, indomitas gentes, populosq. rebelles,  
Aut vrbes domini terrarum, atque oppida cernunt,  
Erepta, hic auri fuluum ſibi pondus ademptum:  
Morborumq. cohors alios immiſſa fatigat:  
Namque in Hyperboreis tabes quæ cœperat oris  
Materiem inueniens primū, dehinc viribus illa  
Senſim fota ſuis, Europam irrepit in omnem:  
Non ſecus, ac lentus flatu ſuccenditur ignis,  
Paullatimq. alimenta trahit, mox flamma per auras  
Illa crepat, ſeſeq. inuoluit lumine fuluo  
Fumida, Vulcanum latè per inania iactans,  
Primū exorta quidem flaues infausta Britannos,  
Germanos tum cæruleos, Gallosq. ferocios,  
Hinc etiam atra lues calidos infecit Iberos,  
Fertilis Italiæ dehinc altas fuſa per yrbes

Inualuit sensere omnes, (miserabile dictu)  
 Aut pauci euafere mali exitiale venenum.  
 Torquet adhuc primo pueros in lamine vita.  
 Inualidosq. senes extremo in limite vita.  
 Et iuuenes rapido firmissima pectora bello,  
 Difficit: infraet & languent ad prælia vires.  
 Vna etiam matres petit, iotonatq. puellas,  
 Parcere nec formæ, nec parcere sueta iuuentæ:  
 Nec non armenta in campis errantia cernas,  
 Quæ vix ægra caput fessa ceruice rentant,  
 Horribilisq. feras, picturatásq. volucres  
 Languere, vt Lasso demissa papauera collo.  
 Nam circumfusus cunctis animantibus æther  
 Concepit nocuos gremio, denosq. vapores.  
 Vtq. aliquæ, leges, æternaq. fæderæ rebus  
 Imposuit Natura patens, sine nomine multa  
 Sic in principiis latitant, discriminâ rerum &  
 Mille mouent, nam, ni Veneris placidissimus ignis  
 Sedaret variis infausti luminis ignes,  
 Discuteretq. potens radiis contraria Phœbus,  
 Mille malis rueret seuis obnoxius orbis:  
 Namque intemperiem ostedit modò marcidus ær,  
 Sæpeq. mutatus, præfens occasio morbi est.  
 O genus humanum, quantos te audacia fecit  
 Iapeti proles, species perferre malorum,  
 Cum noua supplicia, & pœnas immisit acerbæ  
 Iuppiter omnipotens subductum infensus ob igne  
 Curribus ætheriis, perfectaq. corpora Limo:  
 Quisque deos, & fata vocat crudelia: culpa  
 Nemo suæ iustum capit imo in corde dolorem.  
 At placanda foret diuum inclemencia ture,  
 Et precibus sic mortales, sic vivere dignum est.  
 Dixerat, & pressis tacuit formosa labellis.  
 Tum me luminibus tacitis intenta pererrat,  
 Vt responsa petens. Trepidanti ego pectora tandem  
 Verba coacta dedi: Fateor me, candida Nais,  
 Promeritum quæcumque fero: nec turpis egestas,  
 Infandumve scelus serui mea pectora vexat.  
 At me quis miserum magna cognoscit in Urbe,  
 Aut quis ad equoreas flentem solatur arenas?

Cumq.

Cumq. sinum irroto lacrimis, verba irrita ventis.  
 Trado, nec quisquam est, gemitus qui sentiat imos.  
 Colludunt vitreo auricomæ sub gurgite Nymphæ,  
 Absiduq. nouos Glaucus meditatur amores,  
 Alma latet Doris, latet & Panopeia virgo,  
 Quas Siren blando mulcat sub gurgite cantu  
 Nec me Carpathijs vates in fluctibus audit  
 Cærulus, & variis assuetus ludere formis,  
 Ac fœse in rerum miracula vertere cuncta,  
 Sed nec equos bipedes tangunt tam parua furætes,  
 Quæ siccis oculis turpes in gurgite Phocas  
 Depasci humanos puitantes dentibus artus,  
 Cernunt Scylla vorax, aut nauifragum Scylacæum,  
 Cum riapiunt frætas sinuofa sub equora puppes,  
 Numina nil nostros miserantur torua labores.  
 Ergo preces scopulis, monstrisq. natantibus vtro  
 Fundimus, heu nimium surdenter inmania saxa.  
 At vos, assuetæ nostras audire querelas,  
 O Nymphae, ad sacros latices quæ dulcia rura  
 Incolitis, gelidunq. nemus, placidosq. recessus,  
 Cur me numinibus disflungant equora vestris?  
 Cur non virginæs patiuntur cernere Musas?  
 Poenarum exhaustum satis est, heu parcite, fata,  
 Tûq. graues, & diua, meos miserere labores.  
 Illa autem roseo rursus sic ore locuta est:  
 Ipfa tibi expediens calus, si scire cupido est.  
 Auxiliūmq. feram certum modò rebus egenis.  
 Non te diuinis, diuissq. parentibus orti,  
 Aldi fama latet, totum diffusa per orbem?  
 Hunc Asia gentes norunt, & Cantaber atrox,  
 Decolor atque Indus, vel qui colit incola terras  
 Extremas penitus, siue auro insignis Orion,  
 Siue hyades pluviae, seu septem aduersa Trioni  
 Sidera clara caput semper sublime coronant.  
 Huic (pharetræ tantum insignis) crinitus Apollo  
 Se Tritoniæ confessus arundine victum,  
 Atque lyra credit, nec se negat esse secundum,  
 Formosus natus Maius; neque docta Minerua  
 Dignata parem est: tantum nitet aurea virtus.  
 Hunc pote, namque regens filo vestigia cæca  
 Diriget ille tuos optato in tramite gressus:

Inde viā pandet. sequere hunc quæcumq. iubentem  
 Sic te Diua monet sœuum quæ Gorgona gestat.  
 Quæ plerumque tuis præsens erit optima votis.  
 Namque hic cōtemptis tandem dominatur Athenis:  
 Nec te tam longè disiungunt æquora Musis,  
 Immo haec indigenæ veniunt ad litora Musæ,  
 Necnon & Drymo, Lygeaque, Cymodocæque,  
 Nymphaque Iunonis pulcherrima Deiopeia,  
 Quæq. illas superant, atque Oceanitides ambas.  
 Haec eadem Hadriaca fulgent ad litora Nymphæ,  
 Doctæ Palladias Veneri coniungere curas.  
 Ipsa etiam spretis Cnidóque, Paphoqué, Cytheraque,  
 Aurea collucens Venetas Venus incolit arcæ.  
 Præterea summo coram te Principe ducer,  
 Quem tibi Diua dedit comitem, sacrûmq. Senatum  
 Adspicies, diuñsq. omnes longo ordine Patres.  
 Non ita Tantalides Regum cingente corona  
 Argolicas folio eniuit sublimis ab alto,  
 Atque orbis dominos inter, patréisque Latinos,  
 Augustus Cæsar, qualem fulgere videbis  
 Grandævum, atque annis, & maiestate verendum,  
 Eximios inter proceres, gentémque rogatam,  
 Patrem Vrbis Venetæ, diuñmq. vt Iuppiter ipse  
 Consilio in magno teëtum omnipotentis Olympi  
 Concutit, ac terras humiles, Erebūmq. sonantem,  
 Apparens cælo, ac terris, Erebóque tremendum:  
 Diisque etiam fulgent reliqui splendore perenni:  
 Sic Patri ætherio modo Principis ænula virtus,  
 Semideumque, deis prædatur fidera & altum  
 Religione polum, hinc terras ditione, opibúsque,  
 Et bello quatit, ac sœuum pietate Acheronta.

**D**O NEC nocturnis Dictyna inuecta quadrigis  
 Cum Phœbo alterno lustrabit lumine terras,  
 Pulchraque per tacitum labentur fidera mundum,  
 Stabunt res Venetæ, & præclaræ gloria gentis,  
 Æternum positis tutissima fundamentis.  
 Dixerat, & leuibus yix æquoratingere plantis  
 Visu, petit binis propius de cornibus vnum,  
 Quo pater Eridanus violentibus influit vndis  
 In mare purpureum, & vitro caput abdidit amne.

Manet

Manet autem me φιλωτία, cuius maximam esse vim, sensio, vt Oden etiam, quam ad me scripsisti, hoc loco inferam.  
 Ea autem haec est.

Intermissa diu Chelys,  
 Nec Lydiis cecini carmina tibiis,  
 Nec molles cithara modos,  
 Carmen perpetuo flebile personans.  
 Sed nunc mente feror noua,  
 Per sacrûmq. trahit Melpomene nemus  
 Lauro tempora Delphico  
 Cinctum Pierius me rapit, & chorus  
 Phœbo, quæ tumidus sequor,  
 Te clarum recinens, Alde, in Apollinis  
 Arte, & conspicuum, tuae  
 Laudes latitiam, dulcæque gaudium,  
 Solaménque dabunt mihi,  
 Et mentem eripient tristibus è malis,  
 Syren carminibus truces  
 Seu mulcet pelagi præcipitis minas  
 Cantu, vel fide Lesbia,  
 Dum lenit virides Nericidum choros,  
 Et Theris cupidè sonos  
 Dulces sub vitro gurgite concipit.  
 Sic laudes quoties ruos  
 Pulsis experior corde molestiis,  
 Non suspiria ab intimo  
 Ducam corde dolens, vt soleo, mimis,  
 Sed Phœbus facilis meæ  
 Erranti iniiciens frena licentiæ  
 Permittet pede candido  
 Errare, & gelidos visere liberum  
 Nympharum latices finet.  
 Tunc ipse ex adytis rite Heliconiis  
 Metrum grandius eloquar,  
 Candoremq. canam semper amabilem.

MENTEM, } quam se accepisse à diis immortalibus, dicit Catil. III. MIHI eripi posses: } absunt à vetere meo,  
 Mihi, deest in uno. CIVIS eram, } sic vnu. Ero duo,

Fui, adde in vno. Eram, abest à quatuordecim. **E X T E R I S nationibus,** } Plut. & ipse in orat. post red. in sen. Eas autem ciuitates, quæ ipsum fouerant, senatus ornauit laudibus. **Vt ciuiis optimi;** } Vt, add. in vno cùm prius non esset. **COMMENDABAT.** } hoc & in oratione pro Sextio. **NATVRA, ac loco,** } Ac, non est in duobus. An, septem. Et, duo. **NON animo,** } An animo, vnum. **CAEDEM in foro fecisti:** } hēc omnia manifestè in Clodium conticuntur. **TEMPLA tenuisti:** } Castoris, & Pollacis. in Pisonem. **AEDES sacras incendiisti.** } templum Nymphaeum. pro Sextio, & pro domo. **HOSTIS sparacus,** } vide Plut. in Crasso. **Potēs autem esse tu ciuis,** } Potest autem esse ciuis, vnum. Potes autem esse ciuius, quattuor. Putas autem te ciuem esse, quatuor. **Me exsulem, tuo nomine,** } Exsulem, abest ab vndecim in quorum duobus add. **Tuo nomine:** quod in te potius, quam in me, conuenit. quod infrā probatur argumentis. **Nec quid loquare?** } Nec etiam quid loq. vnum, addito sup. Etiam. Vel quid loquare, octo. Quid loquare, vnum. Quid loquaris, duo. **SOLVM non mutarunt,** } id est, verterunt. **ANTE senatum tua sica deprehensa est:** } collocauit enim cum sica Clodius feruum suum in vestibulo Curiaz, qui Cu. Pompeium occideret. vide Pedianum in orationem pro Milone. **AEDES Nymphaeum manu tua deflagravit:** } sic quinque Deflagravit, octo. Deflagraverūt, duo. Deflagrasti, tres. **TEMPLA deorum occup.** } Deorum, rectè abest ab octo in quorum uno add. **IN foro etiam** } Etiam, abest à quatuordecimi. in quorum uno add. **FAMILIARISSIMVS tuus,** } Sic sexdecim mei. vnum. Familiarissimus ciuis de te. vnum. Familiarissimus nimirum ciuis de te. Addunt alij, Cornificius: historia parum diligenter inspecta. nam de Clodij incestu mentionem quidem fecit in senatu Cornificius, rogationem tameo, id est pri uilegiū in Clodium, ipsius familiarissimus tulit M. Piso consul. Totam hanc rem Cicero patefacit ep. xi. lib. i. ad Att. his verbis: Credo te audisse, cum apud Cæsarem pro populo fieret, venisse eō mulierei vestitu virum, idque sacrificium cum virginis initiauerat, mentionem à Q. Cornificio in senatu factam. is fuit princeps ne tu forte aliquem nostrum putas. Et infra: In hac causa Piso, amicitia P. Clodij ductus, operam dat, vt ea rogatio, quam ipse fert, & fert ex S. C. & de religione, antiquetur. **Quod autem Cornificius,** esse

esse in plerisque veteribus libris idem dicant, incidisse constat eos in libros parum emēdatos, nam nostri quidem Cornificij nomen non habent. **PRIVILEGIUM tulit,** } sic omnes mei. **IN operitum** } sic omnes mei. **BONA EDEO,** } Gracis *Thessal.* Phryges, Midæ regis matrem fuisse dicunt. Romani nympham *Δρυάδα*, Fauni coniugem. Græci, aliquam ex Liberi matribus, *τύλη ἀρπάτων*, quam nominare nefas sit. **FECTUS,** } de quo Plut. in Cæs. & Cicerone, & Cicero ipse de harusp. resp. & in Pisonem, & ad Att. lib. i. ep. 7. & seq. **IN operto,** } Bona dea: quod proximè dixit. **SIC vnum meus.** In Ponto, quidam legunt, in portu, reliqui omnes mei. **NoN igitur,** } Num igitur, quatuor mei, in quorum uno pater is erat. Duum. **Si ibi cum legibus esse non oportebit.** } Sit deē. Si ibi cum legibus esse non oportebit, duo. Si cum legibus non oportebit esse, vnum. Si cum ibi legibus esse non oportebit, tres. Si cum tibi legibus esse non oportebit, vnum. Si id eum legibus esse non oportebit, vnum. Alijs, Apparebit,

## PARADOXON V.

*ὅτι οἱ ἡρῷοι ἐλεύθεροι, καὶ οἱ μαρτῦρες θύλακοι  
καὶ σαφίτεοι, λιβεροί & στυλτοί, σερναῖται.*

**L**audetur verò hic imperator, aut etiam appelletur, aut hoc nomine dignus putetur: quo modo? aut cui tandem hic libero imperabit, qui non potest cupiditatibus suis imperare? refrenet prius libidines, spernat voluptates, iracundiam teneat, coercent auaritiam, ceteras animi labes repellat: tum incipiatur alijs imperare, cum ipse improbissimus dominus, dedecoris, ac turpitudini, parere desierit: dum quidem his obdedit, non modò imperator, sed liber habendus omnino non erit. præclare enim est hoc usurpatum a doctissimis: quorum auctoritate non vterer, si mibi apud aliquos agrestes hac habenda esset oratio: cum verò apud

prudentissimos loquar, quibus hac inaudita non sunt: cur ego simile me, si quid in his studijs opera posuerim, perdidisse? dictum est igitur ab eruditissimis viris; nisi sapientem, liberum esse neminem. quid est enim libertas? potestas vivendi, ut velis. quis igitur vivit, ut vult, nisi profecto, qui recta sequitur: qui gaudet officio, cui vivendi via considerata, atque prouisa est: qui legibus quidem non propter metum, paret, sed eas sequitur, atque colit, quia id salutare maxime esse indicat: qui nihil dicit, nihil facit, nihil cogitat denique, nisi libenter, ac liberè: cuius omnia consilia, resq. omnes, quae gerit, ab ipso proficiscuntur, eodemq. referuntur: nec est villa res, quæ plus apud eum polleat, quam ipsius voluntas, atque iudicium? cui quidem etia, quæ vim habere maximam dicitur fortuna ipsa cedit: quæ, sicut sapiens poeta dixit, suis ea cuncte fingitur moribus. solum igitur hoc contingit sapienti, ut nihil faciat inuitus, nihil dolens, nihil coactus. quod et si, ita esse, pluribus verbis differendum est: illud tamen breui conficiendum est, nisi qui ita sit affectus, esse liberum neminem. igitur omnes improbus serui: nec hoc tam re est, quam dietu, inopinatum, atque mirabile. non enim ita dicunt eos esse seruos, ut mancipia, quæ sunt dominoru facta, nexus, aut aliquo iure ciuili: sed, si seruitus sit, sicut est, obedientia fracti animi, & abieicti, & arbitrio carentis suo: quis neget, omnes leues, omnes cupidos, omnes denique improbos esse seruos? An ille mihi liber videatur, cui mulier imperat? cui leges imponit, prescribit, iubet, vetat, quod videtur? qui nihil imperanti negare potest, nihil audet? poscit, dandum est: vocat, veniendum: cœxit, abeundum: minatur, extimescendum. ego vero istum non modo seruum, sed nequissimum seruum;

seruum, etiam si in amplissima familia natus sit, appellandum puto. atque, ut in magna familia stultorum, sunt alij lautiiores, ut sibi videtur, serui, sed tamē serui, atrienses, ac topiarij, stultitiae sua: quos signa, quos tabule, quos calatum argentum, quos Corinthia opera, quos adficia magnifica nimio opere delectant. At sumus, inquit, ciuitatis principes. vos vero nec seruorum quidem vestrorum principes estis, sed, ut in familiâ, qui tractant ista, qui tergunt, qui ungunt, qui verunt, qui spargunt, non honestissimum locum seruitutis tenent: sic in ciuitate, qui se istarum rerum cupiditatibus dediderunt, ipsius ciuitatis locum penè insimum tenent. Magna, inquis, bella gesti: magnus imperijs, & prouincijs præfui. gere igitur animum laude dignum. Acteonis tabula te stupidum detinet, aut signum aliquod Polycleti. omitto, unde susstuleris, & quomodo habebas. intuentem te, admirantem, clamores tollentem cum video, seruum te esse ineptiarum omnium iudico. Nonne igitur sunt illa festina? sunt: nam nos quoque oculos eruditos habemus: sed, obsecro te, ita venustra habeantur ista, non ut vincula virorum sint, sed ut oblectantæ puerorum. quid enim censes? si L. Mummius aliquem istorū videret matellionem Corinthium cupidissime tractantem, cum ipse totam Corinthum contempset, utrum illum ciuem excellētem, an atrensem seruum diligentem, putaret? reuiniscat Man. Curius, aut eorū aliquis, quorū in villa, ac domo nihil splendidum, nihil ornatum fuit, preter ipsos, & videat aliquem, summis populi beneficijs usum, barbatulos mululos exceptantem de piscina, & pertrectantem, & murenarum copia gloriantem. nonne hunc hominem in seruum indicet, ut ne in familia quidem dignum

maiore aliquo negotio putet? An eorum seruitus dubia est, qui cupiditate pecunij nullam cōdicionem recusant durissima seruitutis? hereditatis spes quid iniquitatis in seruendo non suscipit? quem nutum locupletis orbisensis non obseruat? loquitur ad voluntatem quid nuntiatum sit, facit, assentatur, assides, miratur, quid horum est liberi? quid denique non serui inertis? Quid iam illa cupiditas, qua videtur esse liberior, honoris, imperii, prouinciarum? quam dura est domina, quam imperiosa, quam vehemens? Cetero homini non probatissimo, seruire coegit eos, qui sibi esse amplissimi videbantur, mittere munera, noctu venire domum ad eum, precari, denique supplicare. quia seruitus est, si haec libertas existimari potest? Quid? cum cupiditatem dominatus excessit, & alius est dominus exortus, ex conscientia peccatorum, timor: quam est illa misera quam dura seruitus? adolescentibus paulò loquacioribus est seruendum: omnes, qui aliquid scire videntur, tamquam domini, timentur: inde verò quantum habet dominatum? quo timore nocentes afficit? an non est omnis metus seruitus? quid valet igitur illa, eloquentissimi viri, L. Crassi copiosa magis, quam sapiens oratio? Eripite nos ex seruitute. que est ista seruitus tam claro homini tamq; nobili? omnis enim animi debitati, & humilis, & fracti timidus, seruitus est. Nolite sinere nos cuiquam seruire, in libertatem vindicari vult? minime: quid enim adiungit? nisi vobis viuieris. Dominum mutare, non liber esse, vult. Quibus & possumus, & debemus. nos verò, si quidem animo excuso, & alto, & virtutibus exaggerato sumus, nec debemus, nec possumus. tu posse te dicio: quandoquidem potes: debere ne dixeris:

ris: quoniam nihil quisquam debet, nisi quod est turpe non reddere. Sed hoc haec tenus. Ille videat, quo modo imperator esse possit, cum, cum ne liberum quidem esse, ratio, & veritas ipsa conuincat.

**I**TÀ in argumentationis formam redige, quæ à Cicerone, in huius Paradoxi confirmatione dicuntur. Quicumque animi libidinibus non obtemperat, liber est: qui verò paret, seruus. Sapientis autem animi libidinibus non obtemperat, & stultus paret. Ergo sapiens liber est, stultus verò seruus. Et hoc est, quod Homerus (quem citat ad hanc rem in Civitate Dei Augustinus) ait, seruos dimidiā habere animam, quia animū minus liberum habent. Idem quoque primo Politicon Arist. de Barbaris dicit, eos naturā seruos appellans. Non seruitutem modò, sed tyrannidem Plato appellat, cum mens, ira, aut cupiditati inferuit, iustum imperium, cum ratio, & mens animi perturbationibus imperat.

**H**ic imperator, } contra L. Lucullum, qui de Mithridate, & Tigrane triumphauit. **N**OMINE } sic omnes mei. Aliás, Cognomine. **Q**uo modo aut an, } Quo modo autem aut aut septem. **R**E<sup>F</sup>EREN<sup>T</sup>ET prius libidines, } sic tres rectè. Primum, tredecim. Primò, vrus. Abest ab uno. **I**RACUNDIAM teneat, } Finiat, vrus. Terreat, vrus. Contemnat, v. . Temperet, esse in quibusdam lib. notatum video. **C**OERCET anaritiam, } sic omnes mei. Arrebat, in quib. lib. esse notatum video. **C**ETERAS } Et ceteras, decem. in quorum uno add. **I**MPROBISSIMIS dominis. Dederat, ac turpitudini, } de Senectute, Libidinem veneram, agrestem dominum dixit. **N**ON modò imperator, }

Non modò non imp.duo. Malè. Non modò imperator } pro; Non modò non imperator sic Græci, οὐχ ὅπας, Μὴ τι, Μὴ  
τίτης, Μὴ τι θι, Μή πη, Μήτι τι, Μήτι τι θι. SED liber ha-  
bendus omnino non erit. } Sed omn. lib.hab. non erit, quatuor-  
decim. Sed liber omnino non erit,vnus. Sed liber habendus  
modò non erit,vnus. PRAECLARE enim est, } sic omnes  
mei. Etiam,pro Enim aliás. QVORVM auctoritate, } Quo-  
rum ego auct. omnes. in quorum vno add. in marg. PRV-  
DENTISSIMOS, } sic omnes mei. Aliás,doctissimos. Ego  
stimulem me, } sic omnes mei. Me stimulem, nouem. QVID  
est enim libertas potestas &c. } Quid est enim libertas illi po-  
testas, septem. VT relis, } vt velle debeas, vt ratio præcri-  
bit. VT vult, } nou vt libido, suader, sed, vt ratio dictitat.  
nam Voluntas, ait Tusc.4. est quæ, quid cum ratione deside-  
rat, βούλωσ. Nisi i projecto, } Projecto, abest à quindecim.  
QVI legibus quidem non propter metum, } sic vndecim, tres. Qui  
nec legibus quidem propter metum. vnus, Qui legibus non  
propter metum. Metum, magistratum, & suppliciorum.  
ATQVE colit, } Eas & colit,vnus. Et superaddito. Et colit, no-  
uem. Ac colit, vnus. QVIA id salutare maximè } Id quod  
salutare maximè,octo. Quod id salutare maximè,tres. Id quod  
est max. sal. vnus. Nisi libenter, } non muneribus corruptus,  
non gratia victus,aut odio. Hecuba apud Eurip.

φιῦ φεῦ,

ἐν ἐστὶ θνητῶν, οὐ πειθεῖσθε γο. οὐ γενεσάσθε τὸν γένος  
η̄ γενεσάσθε τὸν γένος ιστον, η̄ τυχῆς:  
η̄ κακός ξενὸν πόλεως, η̄ νέμων γενεσα  
εργασιοι γενεσα μη κατα γνώμην εποιει.

APVD eum } sic omnes mei. Langius ord.præp. Sit vt  
Sapiens poeta dixit. Suis ea quique fungitur moribus. } Pulcherrima  
sententia,quam & Nepos in Attici vita sic expressit: Sui cuique  
mores fortunam,fingunt. Quod fortasse à Plato sumptum,  
qui in Trin. ait:

Sapiens ipse fingeit fortunam sibi.

Hæc idè dixi,ne quis de mutatione cogitaret, ob varieta-  
tem veterum librorum. Qui, si multos habeas, nullus est tam  
emendatus,tamq. apertus locus,in quo non differentiant. Cum  
delectu igitur obseruandi. Mei,octo,Suis quisque fungitur  
moribus.

moiib. duo, Suis ea quique fungitur moribus. duo,Suis e-  
nim quisque fungitur moribus.vnus, Suis quisque ea forte  
fungitur moribus.vnus,Suis ea cuique fungitur moribus:&  
deletum,Iacuitque,& add. Quisque.vnus,Suis ea cuique fun-  
gitur moribus.vnus,Quis cuique fruitur moribus. vnus,Suis  
enim quisque viritur moribus,vnus,Suis quisque singulatur mo-  
ribus. SOLO igitur hoc contingit sap. } Hoc, abest à duobus.  
ILLUD tamen brevi confidendum est, } Illud tamen breui con-  
fidendum est,nouem,quorum quinque , Breue. Illud tamen,  
& breue confidendum est,octo, quorum quartuor add. Et  
ante Conf. In vno desunt omnia. Igitur omnes improbi  
serui: nec hoc tamen re est,quād &c. } sic quattuor,octo, Serui  
igitur omnes improbi:nec hoc tam re est,q. duo, Serui ergo  
omnes improbi.hoc non tam re est,q.vnus, Omnes improbi  
serui,ne tam re est,q.vnus,Serui igitur omnes improbi, nec  
tam hoc in re est,q.vnus,Omnès improbi serui vom.hoc tanti  
est re,q.vnus,Quis igitur omnes improbi seruire, nec hoc  
tam re,Est,qui legendum putat: Igitur omnes improbi ser-  
ui.seruine hoc non tam re est,q.vel.Serui seruire hoc tam re  
est,q.d.miserabile. DICTU, } Dictum, tres.Dicto, aliás.  
MIRABILE. } sic omnes mei. DICO, } Stoici. SER-  
VOS, } seruitus,duplices:corporis, & animi. MANCIPIA, }  
Cic.Fam.lib.vii.ep.30. NE X V, } sic sexdecim mei.duo, A-  
erre. Si seruitus sit,sicut est,obedientia } sic octo, siuorum vnus, Est,  
pro Sit.Si seruitus est obced.vnus. Si seruitus sit est, vt obced.  
tres.Si seruitus eis sit,sicut est obced.vnus.add.sup. Sit, & Est.  
Si seruitus sit,est obced.vnus.Si seruitus sit qua,obced.vnus.Si  
seruitus est sint obced.vnus.Si seruitus est vt obced.vnus. Si  
seruitus sit ab obced.vnus. ARBITRIO Carentis suo, } qui non  
recta sequitur,nec officio gaudet.LEVES, } quorum appeti-  
tus impletat menti. CUPIDOS, } non tantum pecunias,  
sed aliarum quoque rerum. IMPROBOS } virtutis expertes,  
vitiis quibuscumque præditos, φαύλους. CIVILIS, } imperat, }  
Vxorius,yos.Græci, fūtakorpatōμενος. NIHIL audet? } Nihil  
negare audet,octo.Nihil recusare audet,decem. POSCIT, }  
sic decem septem,recte vnus.Si poscit,sic voe.malè. Emissio:  
natur:sic omnes mei.Vide Ter.Eun act.i.sc.1.

Quid igitur faciam?non eam?ne nunc quidem,  
Cum accersor vtrō?an potius ita me comparem,

Non perpeti meretricum contumelias?  
Exclusit, reuocat, redeam? non, si me obsecret.

**A T Q U E**, ut in magna familia &c. } hunc locum egregie restituit excellenti vir ingenio, Obertus Gifanius: & in eo sibi opem tulisse veterem librum testatur: cuius ego fidei non minus, quam iudicio, doctrinæque tribuo. Nam certe pro glostata ab imperitis inuulcata totam sententiam perturbabant. Ex meis, pro Magna, vnuis habet Maximè: vnuis nihil habet post Familia, decimoseptem add. Stultorum: vnuis, Seruorum. Alij sunt, sexdecim. Octo, Sed tamen sunt serui atrientes actu pari stultitiae sua, q. duo, Sed t. serui atrientes sunt, ac copiarum stultitiae sua, q. vnuis, Sed t. serui a. sunt, atque pari stultitiae sua, q. vnuis, Sed t. serui a. actu pari stultitiae sua illuc, q. vnuis, Sed nec t. serui a. sunt, atque pari stultitiae sua, q. vnuis, Sed t. serui a. sunt actu stultitiae pari sua, q. vnuis, Sed t. serui a. ac actu sui stultitiae sua, q. vnuis, Sed t. serui a. occupari stultitiae sua, q. vnuis, Sed t. serui a. ac pari actu copiarum stultitiae sua, q. vnuis, Sed t. serui sunt, & si atrientes, actu pari stultitiae sua, q. A T sumus, inquit, ciuitatis principes, vos vero } sic septem. Ex summis, inquit, principibus ciuitatis sumus. &c. sex. quorum quartuor At, pto Et: & non habeantur, Nati. Ex summis, inq. ciuitatis principes sumus, duo. E summis, inq. principibus ciuitatis sumus, duo. E summis, inq. principum ciuitatis sumus, vnuis. Vos vero ne seruorum quidem vestrorum pr. } sic duo. Conseruorum, decem. Nec, quatuor. Nec, & Eorum, pro Vestrorum, vnuis. Nec conseruorum principes, vnuis. **T E R G V N T**, } Tergent, tres. DEDIDERUNT, } sic sex. Dederunt, quatuor. Dederunt, vnuis. Crediderunt, duo. Dederint, vnuis. Dedicarunt, vnuis. Dedidere, vnuis. Dediderunt, (Dij sup. add.) vnuis. Deterunt, vnuis. Declinet, vnuis. I P S I V S CIUITATIS } Ipsius seruitur, tres, fortasse non male. **T E N E N T**. } Obtinent, duo. Tenent pñm insimum, duo. Pñm tenent insimum. **M A G N A**, inq. } Sed magna, inq. alias, contra omnes mei. Inquit, duo, Inquid, vnuis. **G E R E** igitur animum laude dignum. } de Off. lib. I.

Vos etenim, juuenes, animaum geritis muliebrem,  
Illa virago vñri.

**A C T A E O N I S** tabula. } Echionis, legerem. de quo Plinius lib. xxxv. cap. 7. & 10. Cicero quoque in Bruto cum tum

Apollo

Apollo coniungit, malè enim apud eum legebatur, Actionis. Ex meis, quatuor, Actionis: septem, Actoris: vnuis, Ethionis: vnuis, Ethionis: duo, Actiois: vnuis, Actioi: vnuis, Acto nis, & Actionis add. in margine: vnuis, Achionis, prius, sed add. Acto ris. **P O L Y C L E T I**. } du Polycleti. Plin.lib. xxxiv. cap. 4. OBLECTAMENTA puerorum. } Puppe, Satyrico. **M A T E L L I O N E M** **C O R I N T H I U M** } Varro de ling. Lat.lib. 1. Matellio, à Matula dictus: & dictus, posteaquam longius à figura matula, discensit. **C O R I N T H U M** } vide Velleium lib. II. **P R A E T E R** ipso: } præter eorum animos, Platonicō more. **B A R B A T V L O S** } in labro inferiori. Plin.lib. ix. cap. 17. & Festus. **M U L L E V L O S** } ad Att.lib. 2. ep. 1. Mullos, omnes. Venetie, Barboni, Romané, Triglia. **E X C E P T A N T E M** } sic quindecim. Es factantem, vnuis. Expectantem, vnuis. Receptantem, vnuis. Alij, Captantem. **H E R E D I T A T I S** spes } sic omnes mei. Alijs, Quid her. spes. Ad voluntatum: } sic nouem. Ad voluptatem, iex. Ad voluptates, duo. Ad voluntates, vnuis. **N V N C I A T U M** sit, } Denunciatum, omnes mei: in quorum vno add. ASSIDET, miratur. } Assidet, numerat, octo. Assidet, numeratur, quatuor. Es sidet, numeratur, vnuis. Muatur, assidet, duo. Assidet, mutat, vnuis. Nutat, assidet, vnuis. Assidet, narrat, vnuis. Quid denique non serui inertis? } tres, Quid denisi serui inertis? duodecim, Quid den. serui non inertis? duo, Quid den. serui non meritis? Quid iam illa? } Illa, abest à quinque. **L I B E R I O R**, } Liberalior, quatuor. Liberatior, duo. malè Liberatorum, vnuis. **C E T H E G O**, } non est is, qui cum Catilina coniurauit: sed is, de quo Plutarchus in Lucullo, SERVIRE res cogit eos, } verbum, Res, tollendum, subintellecnum, Cupiditas honorum, sic & quindecim mei. **V E N I R E** domum } Domum, add. in vno, cum prius non esset. Quid? cùm cupiditatem } sic vnuis. Quid? cùm cupiditatis, octo. Quid? cùm cupiditas, septem. Quid? cùm cupiditates, vnuis. Quid dicam, cùm cupiditas, vnuis. Quid am est illa miseria, } sic quindecim. in quoru vno decet, illa. Quam est illa miseria, vnuis. Quid est ista miseria, vnuis. Quid est illa miseria, vnuis. IVDEX vero } sic omnes. Lambinus legit, Index. ORATIO. } qua siasit legem Seruiliam, egisque senatus caufsum, contra iudicium, & accusatorum factionem. vide in libro de claris orat. & lib. III. de claris orat. vbi eadem Crassi verba recitantur. **E R I P I T E** } Crasso hoc tribuitur,

lib. i. de Oratore. **Q**UAE est ista scrutus tam claro homini, tamque nobili: &c. { Thucydides: καὶ τὸν ἐπειδὴς ἀρχούτε εὐθὺν  
ἰνίστων, καθ' εἴ τινες τῆς ἐκτάντης πολέμου αὐτοῖς ταῦτα περιέστησαν, οὐ μόνον τοῖς εὐτελεῖς καταστροφαῖς, οὐδὲ διαδόσεις, μεταρρήσεις  
& ἀγωνίστηκεν κατεξωτήτων τοῖς δέ. **O**MNIS animi debil. } duo,  
& aliis, Omnis enim animi debil. **D**E<sup>2</sup>BILITATIS, } Debi-  
litas, omnes mei. Debilitatis alij. **M**URITARE } sic omnes mei.  
Muritare, Langius: cit. atque Agellium lib. 2. c. 24. **Q**VIBVS  
& possimus, } Et, abest à sex. **Q**uibvs & possimus, & debemus:  
octo, Quibus & debemus, & possimus. Hoc totum sic legit  
quidam: *Nolite sinere nos cuiquam servire. In libertatem vin-  
dicari vult: Minime: quin enim adiungit: Nisi vobis vniuersis,  
quibus & possimus, & debemus. dominum mutare, non liber  
esse, vult.* **Q**UANDO QVIDEM potes: } Quoniam quidem  
potes, decepsim septem. Qz quidem potes, unus.

## PARADOXON. VI.

**N**ota, Ciceronem ad erotema illud, à quo  
disputationem orditur, Solusne tu diues?  
tamquam per aliud erotema respondit: Quid, si  
ne tu diues quidem? vbi multi sunt, qui Cicero-  
nis mentem non assequuntur, inter quos Humæus  
ille Louaniensis aberrauit. Putant enim eum fa-  
teri stultos diuites esse, Sed non solos eos, cuius  
rei cōtrarium patet, nam Cicero ne diuites qui-  
dem eos vlo modo esse vult. Statum huius que-  
stionis ita ille probat, quasi du&tio à Diuitis defi-  
nitione argumento: Solus is, cui tanta possessio  
est, vt ad liberaliter viuendum contentus sit, qui  
nihil querat, nihil appetat, nihil optet amplius,  
est diues. Solus sapiens est huiusmodi. Ergo solus  
sapiens est diues. Propositio patet, nam oportet  
animum esse, qui se diuitem existimet. De stulta-  
tia pulchrè dixit Euripides, quod stultorum a-  
nimos rapiat, & futuris inhiare semper efficiat;  
aut inquam presentibus contentos.

ὅτι μόνος Θεός πλούσιος:  
quid solus sapiens, diues.

**Q**UAE est ista in commemoranda pecunia tua tam  
insolens ostentatio? solusne tu diues? pro dij immor-  
tales, ego ne me audisse aliquid, & didicisse non  
gaudeam? solusne tu diues? quid, si ne tu diues qui-  
dem? quid, si pauper etiam? quem enim intelligimus  
diuitem? aut hoc verbum in quo homine ponimus? op-  
pinor in eo, cui tanta possessio est, vt ad liberaliter vi-  
uendum facile contentus sit, qui nihil querat, nihil ap-  
petat, nihil optet amplius. animus oportet tuus se in-  
dicet diuitem, non hominum sermo, neque possessio-  
nes tuae. qui si sibi nihil deesse putat, nihil curat am-  
plius, satiates est, aut contentus etiam pecunia: con-  
cedo, quies est. sin autem, propter audiitatem pecu-  
nia, nullum quantum turpem putas, cum isti ordinis ne  
honestus quidem esse possit ullus, si quotidie fraudas,  
decidis, poscis, pacisceris, aufers, eripis: si socios spoliis,  
ararium expilas: si testamenta amicorum exspectas,  
aut ne exspectas quidem, atque ipse supponis: bac u-  
trum abundantis, an agentis signa sunt? animus ho-  
minis diunes, non arca, appellari solet. quamuis illa sit  
plena: dum te inanem videbo, diuitem non putabo.  
etenim ex eo, quantum cuique sat est, metiuntur ho-  
mines diuitiarum modum. filiam quis habet, pecunia  
est opus: duas, maiore: plures, maiore etiam: si, vt  
aiunt, Danai quinquaginta sint filiae: tot doles ma-  
gnam querunt pecuniam. quantum enim cuique satis  
est, ad id accommodari, vt antè dixi, diuitiarum  
modus. Qui igitur non filias plures, sed innumerabiles  
cupiditates, habet, qua brevi tempore maximas copias  
exhaustire possunt: hunc quo modo ego appellabo diui-

tem, cùm ipse, egere se, sentiat? multi ex te audierunt, cùm diceres, neminem esse diuitem, nisi qui exercitum clere posset suis fructibus: quod populus R. ex tantis veltigis libe*ri* iam pridem vix potest. ergo, hoc propositio, numquam eris diues ante, quam tibi ex tuis possessiōnibus tantum reficiatur, ut ex eo sex tueri legiones, & magna equitum, ac peditum auxilia possis. Iam fate-ris igitur, te non esse diuitem, cui tantum desit, et ex-pleas id, quod exoptas. itaque istam paupertatem, vel potius egestatem, ac mendicitatem tuam numquam obscure tulisti. nam, ut ijs, qui honeste rem querunt mercaturis faciendis, operis dandis, publicis sumen-dis, intelligimus opus esse quo<sup>s</sup>ito: sic, qui videt domi-nus pariter accusatorum, atque iudicium consociatos greges: qui nocentes, & pecuniosos reos, eodem te au-ctore corruptelam iudicij molientes: qui tuas merce-dam pactiones in patrocinijs, intercisa pecuniarium in-coitionibus candidatorum, dimissiones libertorum ad fenerandas, diripiendasque prouincias: qui expulsiones vicinorum, qui latrocinia in agris, qui cum seruis, cum libertis, cum clientibus societates, qui possessiones vacuas, qui proscriptiones locupletum, quicades munici-piorum, qui illam Syllam temporis messem recorde-tur: qui testamenta subiecta, qui sublatos tot homines, qui denique omnia venalia, delictum, decretum: alienam, suam sententiam forum, domum, vocem, silen-tium: quis hunc non putet confueri, sibi quo<sup>s</sup>ito opus esse? cui autem quo<sup>s</sup>ito opus sit, quis umquam hunc vere dixerit diuitem? est enim diuitiarum fructus in copia: copiam autem declarat satietas rerum, atque abundatia: quam tu quoniam nūquam assequere, num-quam,

quam omnino es futurus diues. Meam autem quo-niam pecuniam contemnis, & recte est enim ad vulgi opinionem mediocris, ad tuam nullus, ad meam modi-ca) de me filebo: de te loquar. Si censenda nobis, atque estimanda res sit: utrum tandem pluris estimabimus pecuniam Pyrrhi, quam Fabricio dabant: an continen-tiam Fabricij, qui illam pecuniam repudiabat: utrum aurum, Samnitum, an responsum Man. Curi<sup>y</sup> heredi-tatem L. Paulli, an liberalitatem Africani, qui eius hereditatis Q. Maximo fratri partem suam cōcessit: huc profecto, quae sunt summarum virtutum, pluris a-stimanda sunt, quam illa, quae sunt pecunia. Quis igit-ur (siquidem, ut quisque, quod plurimi sit, possideat, ita ditissimus habendus sit) dubitet, quin in virtute di-uitia positae sint: quoniam nulla possessio, nulla vis auris, & argenti pluris, quam virtus, estimanda est? O dij immortales, non intelligunt homines, quam magnum veltigal sit parcimoniu! venio enim ad sumptuosos, relinquo istum questuosum. Capit ille ex suis pradys sexena sēfertia, ego centena ex meis, illi aurata tecta in villis, & sola marmorea facienti, & signa, tabulas, supellectilē, & vestem infinitè cōcupiscēti, nō modo ad sumptum ille fructus est, sed etiā ad fenus, exiguis: ex meo tenui veltigali, detractis sumptibus cupiditatis aliquid etiā redundabit, uter igitur est ditior, cui deest, an cui superat? qui eget, an qui abundat? cuius posse-sio quo est maior, eo plus requirit ad se tuendā: an que suis se viribus sustinet? Sed, quid ego de me loquor, qui, morum, ac temporum viuo, aliquam tum etiam ipse fortasse in huic seculi errore versor? M. Manilius, patrum nostrorum memoria (ne semper Cu-rios, & Luscinos loquamur) pauper tandem fuit;

*habuit enim ediculas in Carinis, & fundum in Libicano. nos igitur ditiores, qui plura habemus? utinam quidem esse mus: sed non estimatione census, verum viatu, atque cultu terminatur pecunia modus. non esse cupidum, pecunia est: non esse emacem, vestigia est: contentum vero suis rebus esse, maxima sunt, certissimeq; diuitiae. etenim, si isti calidi rerum estimatores prata, & areas quasdam magni estimant, quod ei generi possessionum minimè quasi noceri potest: quanti est estimanda virtus, qua nec eripi, nec surripi potest umquam: neque naufragio, neque incendio, amittitur: nec tempestatum, nec temporum, permutatione mutatur: qua qui prediti sunt, soli sunt diuitiae: soli enim possidentes & fructuosas, & sempiternas? solique, quod est proprium diuitiarum, contenti sunt rebus suis: satis esse putant, quod est: nihil appetunt, nulla regent, nihil sibi deesse sentiunt, nihil requirunt: improbi autem, & auari, quoniā incertas, atque in casu positas, possessio- nes habent, & plus semper appetunt, nec eorum quisquam adhuc irucentis est, cui, quod haberet, esset satis: non modo non copias, ac diuitiae, sed etiam iuspes, ac pauperes, existimandi sunt.*

**C**ONTRA M. Crassum, omnium Romanorum, excepto Sulla, ditisimum. Plin. lib. xxxiiii. cap. 10. Dives? pro, dī imm. } sic omnes mei. Aliás, Diues? Quid, pro, dī imm. IN eo, } Diuitis Definitio. NIHIL optet amplius. } Horatius: Quod satis est, cui contigerit, nil amplius optet.

**Q**ui si sibi nihil deesse putat, nihil curat amplius, satiatus est, } sic duo, quinque, Qui nihil sibi deesse putet, nihil curer a, s.e. Duo, Et qui nihil s.d. putat, n.amplius curat, s.e. Vnus, Qui nihil sibi deesse putat, nihil curer amplius, satiatus est. Tres, Nihil sibi deesse putat, & nihil curer amplius, satiatus, est. Vnus, Qui nihil sibi deesse putet, nihil curer amplius,

saturatus

Lituratus est. Duo, Nihil sibi deesse putet, nihil curer amplius, satiatus est. Vnus, nihil sibi deesse putet, nihil curer amplius, satiatus est. Vnus, Qui nihil sibi dicere putet, nihil curer amplius, satiatus nihil est. **C O N T E N T U S** etiam pecunia: } sic decem. Etiam, abest à quatuor. Etiam contentus pecunia, v-nus. Duo, Contentus etiam pecunia. Vnus, Contentus in pecunia: & sup. Contemptus. Aliás, Contentus etiam sine pecunia. **Q**U A E S I T V M turpem putas, } Turpe, v-nus. Turpem quæstum put, v-nus. **I**S T I ordinis } senatorio, quo ex ordine Crassus erat. Isto ordine, quatuor. **F R A V D A S**, decipis, } sic omnes mei. Aliás, Fraudas, concutis, decipis. **A V T** ne expectas quidem, } Aut ne expectis, Langius: id est actu quodam extorquet. **I P S E** supponis, } Ipsa, tredecim. **V I D E B O**, } Video, quatuor. Aliás, Videro. **I**n anem video: Lucanus:

Semper inops, quicumque cupit.

**S A T I S** est, } sic sexdecim. duo, Sat est. **E T I A M** maiore. } Etiam, abest à septem. in quorum uno add. Maiore etiam, nouem. Maiori etiam, v-nus. **Q**UINQ<sup>U</sup>A GINTA sint fidei: } quæ omnes, præter Hypermenstram, viros suos occiderunt. Seruus in Virgo. **Q**UANTVM enim cuique satis est, } Opus est, decem septem. Sat est, v-nus. **C U P I D I T A T E S** habet, quæ brevi tempore: } Cupiditates habet, quæ quidem brevi temp. duo. **N E M I N E M** esse diuitem, } Esse, abest ab uno. Aliás, Neminem hominum esse diuitem. **E X E R C I T U M** } legione in, ait Plin. lib. xxxiiii. cap. 10. sed Plutarchus exercitū nominat. Ex tantis rectigibis, } Ex, abest à decem meis. **R E F I C I A T U R**, } Refici dicitur id, quod capit: & Reficere est Restituere. Exemplis intelligitur. Lib. xi. in Verr. Dominus, ignarus incommodi sui, gaudeat, villicoque delectetur, quod tanto sibi plus mercedis ex fundo refectum sit. Et ibidem: Agere reficit cum octauo. sic enim legendam. Et Varro lib. i. de rust. Dixit etiam Celsus Iurise. in Pandectis, lib. xix. Quantum ex bonis eius refici potest. Ex eo tueri } Ex, abest à decem. Se x Legiones } sic omnes mei. Dixi, lib. i. Off. iv. legiones, non vi, fusse exercitum P.R. & ita puto legendum. Fluxit error è similitudine, quæ est inter i.v. & vi. **I**AM fateris igitur non esse te diuitem, } sic quatuordecim. Duo, iam f.i. te es se non diuitem. Vnus, iam f.i. non esse diuitem. Vnus, iam f.er go non esse diuitem. **O**PERIS dandis, } mercedis caussa, inser-

uiendo aliis. Sicut omnes mei. Aliás Locandis. i. operariis. **PUBLICIS sumendis.** } Publicis tributis sumendis, quattuor. **Publis** dandis, sumendis esse in quadam vetere, alij scribunt. **Publis sumendis.** conducendis veitigalibus, quod publicanorum erat. **INTELLIGIMVS opus esse queso:** } eos non contentos esse re sua familiari, non habere satis. **ACCVRATORVM,** } quoſ Crassus tubornabat, ad homines locupletes criminados. **IVDICVM** } quoſ Crassus corrumpebat, ut fontes absolucrent. **CONSOCIATOS** } sic omnes mei. Aliis, consuetos. **JUDICUM.** Sicut omnes mei. Iudicium, aliás. **AUCTORE** } Auctore, vñus. **INTERCISAS pecuniarum** } libri veteres, Intercisas, aur, Intercissas. Pater ante multos annos reponendum putauit, Intercessiones. Quam docti viri probarunt, & sibi illam, tamquam suā, vindicarunt, aliquique tamquam illorum agnouerunt. Visitatum est Ciceroni, verbum, Intercedendi, ad pecuniam accommodare, tum scilicet, cum spōndemus nos aliquid pro aliquo futuros esse. Phil. ii. Orabat Curio, vt te contra suum patrem, si HS sexages peteret, defendarem: tantum enim se pro te intercessisse dicebat. Et ad Att. lib. i. ep. 14. Accersuit ad se, promisit, intercessit, dedit. Et lib. vi. ep. 1. Adfribit etiam, & quasi calcar admovet, intercessisse se pro iis magnam pecuniam. Quæ partim ad hanc diem obseruata non sunt, partim intellecta perperam. Cum purauerit nefcio quis, Intercedere, in his quidem locis, esse, pro, Rogando impertrare. **AD fenerandas,** } sic duo. Ad defenerandas, septem. Ad differendas, duo. Ad uferandas, deletum, & add. Ad defendendas, vñus. Ad deuenerandas, vñus. Ad deferendas, tres. Ad deferendas, duo. Ad differendas, vñus. **MUNICIPIORVM,** } quattuor mei. Manci piorum. Sunt, qui legant, Municipium. **MESSEM** } non segetum, sed ciuium Romanorum. **RECORDETVR.** } sic omnes mei. Recordatur, legunt alij. **SUBIECTA,** } falsa pro veris supposita. **DELEGVM, decretum:** } sic decem. Et, addunt tres. Tres, Deletum, vñus, Dilectum, vñus, Delictum. Pater, Decretum, edictum. **ALIENAM suam sentent.** } sic omnes mei. vñus, Alienam sent. Aliás, Alienam, suámque sent. **Alienam:** Crassi gratiam, auctoritate, largitione corruptis judicibus, & senatoribus. **FORVM, domum:** } domi, & publica pecunia cauſa omnia facta esse à Crasso. **Quis hunc non putes?** Hunc, abest à duobus. in quorum uno add. **Sibi quarto opus esse?** } Sibi, abest à duobus. **NVMQVAM omnino futurus eris diues.** } qui cupit, diues nō est. **De te loquar.** } sic tres. recte, reliqui, De te lo-

quar. **CENSENDAS** } sic decem septem. vñus, Pensanda. Aliás, Recensenda. **LIBERALITATEM** } Libertatē, quinque. **Qui eius hered.** } cuius hered. vñus. Eius, abest à duobus. **Q. MAXIMO fratri** } cùm & ipse à Paullo genitus esset, sed adoptionis iure à Q. Fabio Maximo traditus. **Quod plurimi sint,** } Sic omnes mei. Fit, sunt, qui legant. **DITISSIMVS** } sic omnes mei. alij, Diuitissimus. **DIVITIAE posse sint:** } sic duo. Positq, abest à sexdecim. **PARCIMONIA.** } Cicero iv. de Rep. apud Non. Portitor. Optimum, & in priuatis familiis, & in rep. veitigal duo esse Parcimoniam. **VENIO enim ad sumpt.** } sic duo. Venio enim iam ad sumpt. quindecim. Venio iā ad sumpt. vñus. **SEXCENTA** } Sexcenta, decem septem. Sexcentas, vñus. In **villis,** } abest ab uno. **SOLA** } Palatia, dno. Solaria, duo. Solia, tres Solo marmore paucamenta facient, & signum, tab. vñus. Et **signa,** } Et, abest ab uno. **TABULAS,** } Et tabulis, tres. Et signatas tabulas, vñus. **NON modo ad sumptum ille est fructus, sed etiam ad senus, exiguis:** } ne cui post hac de huius loci sententia dubitare necesse sit, mentem Ciceronis aperiā. Ille, inquit, fructus, qui capitur ex prediis, id est sexcenta aurea HS, tantum abest, vt sumptui sufficiat, qui sit in auratis testis, ceterisque rebus magni pretij, vt eti imm, si fenore augeatur, exiguis sit: id est, sumptui tanto non sufficiet. Approbat hanc lectionē meā antiquis liber. Ex mortuī ret. } sic omnes mei. Aliás, diuitior. **SUPERAT?** } pro, Supereſt, vt alibi. **CIVIS possesso?** Cui quid possesso est mai. vñus. Qui, quid poss. est mai. vñus. **PARVM nostrorū memoria?** Memoria patrū, vñus. **LUSCINOS** } C. Fabri cū Luscinū significat, quē ter in his Paradoxis iā nominauit. **LABICANO,** } sic nouem recte. Larecupo, vñus. Locopio, vñus. Lácupo, vñus. Larcapo, duo. Laropo, vñus. Larcopo, vñus. Labicano, duo. **DITIORES,** } sic omnes. Ditores sumus, qui, decē. **VITINAM quidem effemus?** Effemus, abest à quindecim. **PECVNIA est?** } Pecunia est, decem septē. **NON esse emacera,** } Mala emptio semper exprobrit stultitiae, Plinius. **PRATA, & areas quasdam magni estimant,** } Cato non affligi tēpestabilibus prata, vt alias ruris partes dicebat, vt ait Columella, quanti extimarētur prata, indicat lib. iii. cap. 3. cū ait: Omnes istos, qui fenum suum, & olera amplexantur, in cremento patrimonij facile superabant. Varro, ex persona Scrofae, lib. i. cap. 7. dissentit à Catone, qui pratis non primū locū, nec secundū, sed quintū

inter prædia rustica tribuerat: Scio, inquit, scribere illum. sed de hoc non consentiunt omnes, quod alij dant primatum bonis pratis, ut ego quoque: à quo antiqui Prata, P. rata appellabantur. Et cum Varro sentit Cicero, in eo loco, ep. 3, lib. 1. ad Att. Quod si asequor, superero Crassum diuitiis, atque omnium vicos, & prata contemno. Arcæ vero inter urbana prædia magni aestimabantur, propter angustias soli. propterea dixit Cicero, Areas quasdam, id est urbanae, & in urbis nobisioribus locis, ne quis de areis omnibus acciperet. Tredecim faciūt cū impressa lectio: Quattuor add. Prætij post Magni. vnum, Et areas, & quædam magno rest. Est, qui legat Quiddam magni. Quidam pro, Ferè. Vt in Acad. Sol mihi quasi pedalis videatur. Et ibidem: Illa exponunt duo, quæ quasi contineant omnem hanc questionem. In Oratore: Est enim quasi in extrema pagina. Ter. Heaut. Quasi talenta ad quindecim coegeri. Sall. Iulius, Hora quasi septima. Potest, Posit, sex. Est estimanda virtus, sic sex. Estimanda virtus est, tres. Estimanda est virtus, duo. Estimanda virtus, duo. Prætij estimanda est virtus, duo. Potest, inquam: Vnquam, abest ab omnibus meis. Nec naufr. quinque. Nec incend. quinque. Nec temp. Nec vi temp. quattuor. Nec intemp. (male) duo. TEMPORVM permutatione: Perturbatione, decem septem. Turbatione, vnum. Et fructus, Et, abest a duobus. Ei, aliás. SATIS esse possum. Esse, abest ab uno. Satisque, aliás. Nvlla re regent, Indigent, tres. ATQVE in casu positas possessiones habent, Et casui suppositas possessiones habent, vnum. Ac pauperes, sic septem. Atque, vnum. Etiam, tres. Et, quattuor. Aut, vnum. Deest in uno. Deletur in uno. Pauperes: improbi pauperes. EXISTIMANDI, sic nouem. Estimandi, nouem.

PRAE-

# P R A E S T A N- T I S S I M O V I R O Bartholomæo Capræ.



P O R T V N E cecidit, vt, quo ego tempore de te cogitabam, tuique dulcem memoriam recolebam, Lælius Gauricus, amicorum optimus, eximia virtute præditus, tuusne, an meus? noster, dicam: me conuenerit. Bone Deus, quam iucundos sermones habuimus! quam suaves iij nobis dies euenerunt! Vt nescio quomodo participes esse videremur diuinæ illius fruitionis: quum tuam virtutem maius quiddam esse, quam quod mente comprehendi posst, ingenuè fatremur. Fit igitur à me libenter, vt, cùm nulla re alia possim meum apud te animum testatum relinquere, minimo hoc meo scripto, si volumen, maximo, si rem ipsam, & animum meum perpendas, preste. Et sane, quo ego testimonio possum, & tuam eximiam & singularem præstantiam, & meam in te obseruantiam proferre? que, orta à tuis virtutibus, multis postea in Patrem meum méque ipsum collatis beneficiis, eò peruenit, vt facilius animo, quam verbis, exprimi possit. Ne te igitur, tuamque naturam offendam, paucæ hec dixisse, sat habeo, in quibus tamen cùm multum sit atqué adeò plurimum, multaque, atque

X

aded̄ plurima dicenda supersint, potius censu  
mihi esse faciendum, vt de te pauca dicerem,  
quām vt materiem viribus meis imparem nactus  
succumberem. alij, maiore ingenij vi, fateor, ani-  
mi ardore non dicam, sua scripta laudibus illu-  
strabunt tuis. Vale. Venetijs, 111. Kal.  
Quinct. D. Petro sacro, c Iɔ Iɔ xxci.  
quo ego dic, & qua hora in Illyricum publico  
nomine proficiscens, extremam huic operi  
manum imponens, nominis tui iucundissima  
memoria oblectabar.



M. T V L L I I  
CICERO N I S  
S O M N I V M  
S C I P I O N I S,

*Ex lib. VI. de Rep.*

Scipio loquitur.



*V M in Africam venisse Manio  
Manilio Confule, ad quartam Legio-  
nem, vt scitis, Tribunus militum, nihil  
mihi potius fuit, quām vt Massanisam  
cōuenrem, Regem familiæ nostra iustis  
de causis amicissimum. ad quem vt vent, complexus.  
me senex collacrymant: aliquandisque pōst suū pexit  
in cœlum, & grates, inquit, tibi ago, summe Sol,  
vobisque reliqui calites, quod, antequam ex hac  
vita migro, conspicio in meo regno, & his testis P.  
Cornelium Scipionem, cuius ego nomine ipso re-  
creor. itaque numquam ex animo meo discedit illius  
optimi, atque inuictissimi viri memoria. Deinde ego  
illum de suo regno, ille me de nostra rep. percunctatus  
est: multisque verbis ultro citroque habitis, ille nobis  
consumptus est dies. pōst autem regio apparatu acce-*

pi, sermonem in multam noctem produximus, cum  
senex nihil nisi de Africano, loqueretur, omniaq. eius  
non solum facta, sed etiam dicta meminisset. deinde,  
ut cubitum discessimus, me, & fessum de via, & qui  
ad multam noctem vigilasse, avior, quam solebat,  
somnus complexus est. hic mihi (credo eisdem ex hoc,  
quod eramus locuti: sit enim ferè ut cogitationes, ser-  
monesq. nostri pariant aliquid in somno tale, quale de  
Homero scribit Ennius, de quo videlicet sapissime, vi-  
gilans solebat cogitare, et loqui) Africanus se ostendit illa forma, qua mihi ex imagine eius, quam ex  
ipso, erat notior. quem ut agnoui, eisdem cohorrui:  
sed ille, ades, inquit, animo, & omittet timorem, Scipio,  
& qua dicam strade memoria. Vides ne illam urbem,  
qua parere populo R. coacta per me, renouat pristina  
bella, nec potest quiescere? ostendebat autem Carthaginem de excuso, & pleno stellarum, illustri, & claro  
quodam loco) ad quam tu oppugnandam nunc venis  
panè miles: hanc hoc biennio consul euertes: eritq. ca-  
gnomen id tibi per te partum, quod habes ex nobis  
adhuc hereditarium. cum autem Carthaginem de-  
leueris, triumphum egeris, consorq. fueris, & obieris  
legatus Aegyptum, Syriam, Asiam, Graciam, delege-  
re iterum absens consul, bellumq. maximum conficies.  
Num tam excides. sed, cum eris curru Capitolium  
inuestus, offendes remp. perturbatam consilijs neporis  
mei. hic tu, Africane, ostendus, oportebit, patrie lumē  
animi, ingenij: consilijs tui. sed eius temporis ancipiē  
video quasi Factorum viam. nam, cum etas tua septen-  
nos octies solis anfractus, redditusq. conuerterit, duoque  
bi numeri, quorum uterque plenus, alter altera de-  
causfa, habetur, circuus naturalis summam tibi fata-  
lent

leni confecerint: in te unum, atque tuum nomen se tota  
conuerteret ciuitas: te senatus, te omnes boni, te socij  
& Latini intuebuntur: tu eris unus, in quo nitatur  
ciuitatis salus. ac, ne multa, Dictator remp. constitutas  
oportet, si impius propinquorum manus effugeris. Hic  
cum exclamasset Latinus, ingenuissimq. ceteri vehe-  
mentius, leniter arridens Scipio, Queso, inquit, ne me  
è somno excitetis, & pax sit rebus. audite cetera. Sed,  
quo sis, Africane, alacrior ad tutandam remp. sic has-  
beto, omnibus, qui patriam conservauerint, adiuuerint,  
auxerint, certum esse in Cælo, ac definitum locum, ubi  
beati quo sempiterno fruantur. nihil est enim illi  
principi Deo, qui omnem hunc mundum regit, quod  
quidem in terris fiat, acceptus, quam concilia, cœtusq.  
hominum iure sociati, que Ciuitates appellantur. ha-  
rum rectores, & conservatores, hinc profecti, buc reuer-  
tentur. Hic ego, et si eram perterritus non tam metu  
mortis, quam insidiarum à meis, quæ sui tamen, vi-  
ueret ne ipse, & pater Paullus, & alij, quos nos extin-  
ctos arbitraremur. Immo vero, inquit, iij vivunt, qui  
è corporum vinculis, tamquam è carcere, euolauen-  
runt: vestra vero, quæ dicitur vita, mors est. quin  
tu adspicias ad te venientem Paullum patrem.  
Quem ut vidi, eisdem vim lacrymarum pro-  
fudi. Ille autem, me amplexus, atque oscu-  
lans, flere prohibebat. Atque ego, ut primum, fle-  
tu represso, loqui posse cœpi, Queso, inquam, pater  
sanctissime, atque optime, quando hac est vita, ut A-  
fricanum audio dicere, quid moror in terris? quin hoc  
ad vos venire proprio? Nō est ita, inquit ille, nisi enim  
Deus, is, cuius hoc templum est omne, quod conspicis,  
istis te corporis custodis liberauerit: hic tibi adiun-

patere non potest. homines enim sunt hac lege generali, qui tuerentur illum globum, quem in hoc tempore medium vides, quæ dicitur terra: hisq; animus datus est ex illis semperernis ignibus, quæ sidera, & stellas vocatis: quæ, globa sed, & rotunda, diuinis animatae mentibus, circulos suos, orbésq; conficiunt celeritate mirabili. quare & tibi, Publi, & pīs omnibus retinendus est animus in custodia corporis: nec iniussu eius, à quo ille est nobis datus, ex hominum vita magnitudinem est: ne munus humanum, assignatum à Deo, defugisse videamini. sed sic, Scipio, ut annus hic tuus, ut ego, qui te genui, iustitiam cole, & pietatem: quæ cùm sit magna in parenib; & propinquis, tum in patria maxima est: & ea vita via est in cañum, & in hunc cœtum eorum, quicquam vixerunt, & corpore laxati, illum incolunt locum, quem vides: (erat autem is splendidissimo candore inter flamas circulus eluens) quem vos, ut à Graiis acceperitis, Orbem luctuum nuncupatis. ex quo omnia mibi contemplanti, præclarar cetera, & mirabilia videbantur. erant autem et stelle, quas numquam ex hoc loco vidimus: & eam magnitudines omnium, quas esse numquam suscipiati sumus. ex quibus erat illa minima, quæ ultima caelo, citim a terris, luce lucebat aliena stellarum autem globi terrarum magnitudinem facile vincebant. Iam vero, ipsa terra ita mibi parua visa est, ut me imperij nostri, quo quasi eius punctum attingimus, paniteret. quam cùm magis intuerer, quaso, inquit Africanus, quousque humi desixa tua mens erit? nonne adspicis, que in templo veneris? nouem tibi orbibus, vel potius globis, connexa sunt omnia: quorum unus est celestis extimus, qui reliquos omnes complectitur, sum-

mus ipse Deus, arcens, & continens ceteros: in quo infixi sunt illi, qui voluuntur, stellarum cursus sempiterni: cui subiecti sunt septem, qui versantur retro, contrario motu, atque calum. ex quibus unum globum posset illa, quam in terris Saturniam nominant. deinde est hominum generi prosperus, & salutaris, ille fulgor, qui dicitur Louis. tum, rutilus, horribilisq; terris, quem Martem dicitur. deinde subter medianam ferè regionem Sol obtinet, dux, & princeps, & moderator luminum reliquorum, mens mundi, & temperatio, tanta magnitudine, ut cuncta sua luce lustret, & compleat. hunc, ut comites, consequuntur alter Veneris, alter Mercurij cursus. in infimoq; orbe Luna, radijs Solis accensa, conuertitur. infra autem iam nihil est, nisi mortale, & caducum, præter animos generi hominum munere deorum datos. supra Lunam sunt omnia eterna. nam ea, quæ est media, & noua, tellus neque mouetur, & infima est, & in eam feruntur omnia nutu suo pondera. Que cùm intuerer stupens, ut me recepi, quis hic, inquam, quis est, qui complet aures meas, tantus, & tam dulcis sonus? Hic est, inquit ille qui interuallis coniunctus imparibus, sed tamen pro rata portione distinctis, impulsu, & motu ipsorum orbium efficitur: & acuta cùm grauibus temperans, varios aquabiliter concentus efficit. nec enim silentio tanti motus incitari possunt: & natura fert, ut extrema ex altera parte grauter, ex altera autem acutè, sonent. quam ob causam summus ille quidem flelligeri calicurus, cuius conuersio est concitator, acuto, & ex citato mouetur sono, grauissimo autem hic lunaris, atque infimus. nā terra nona, immobilis manēs, imasē de semper haret, complexa medium mundi locum, illi-

autem octo cursus, in quibus eadem vis est duorum, septem efficiunt distinctos interuallis sonos: qui numerus rerum omnium ferè nodus est, quod docti homines meritis imitati, atque cantibus, aperiuerere sibi redditum ac hunc locum: sicut alij, qui praestantibus ingenii in vita humana diuina studia coluerunt. hoc sonitu complete aures obsurduerunt: (nec est ullus hebetior sensus in vobis) sicut, ubi Nilus ad illa, que Catadupa nominantur, precipitat ex altissimis montibus: ea ges, que illum locum accolit, propter magnitudinem sonitus, sensu audiendi caret. hic vero tantus est totius mundi incitatissima conuersione sonitus, ut eum aures hominum capere non possint: sicut intuerti Solem nequiritis aduersum, eiusq. radijs acies vestra, sensuq. vincitur. Hac ego admirans, referebam tamen oculos ad terram identidem. Tum Africanus, Sentio, inquit, te sedem etiam nunc hominum contemplari, aeternum. qua si tibi parua, ut est, ita videtur: huc cœlestia semper spectato, illa humana contemnito. tamen quam celebritatem sermonis hominum, aut quam experendam consequi gloriam potes? vides habitari raris, & angustis in terra locis, & in ipsis quasi maculis, ubi habitatur, vastas solitudines interierat, hostique, qui incolunt terram, non modo interruptos ita esse, ut nihil inter ipsos ab aliis ad alios manare possit, sed partim obliquos, partim transuersos, partim etiam aduersos stare vobis: à quibus expectare gloriam certe nullam potestis. Cernis autem terram eandem, quasi quibusdam redimitam, & circumdatam cingulis: è quibus duos maximè inter se diuersos, & cali verticibus ipsis ex utraque parte subnixos, obriguisse primita vides: medium autem illum, & maximum solis

ardore

ardore torreri. duo sunt habitabiles: quorum australis ille, in quo qui insistunt, aduersa nobis urgent vestigia, nihil ad vestrum genus: hic autem alter, subiectus Aquiloni, quem incolitis, cerne. quam vos tenui pars contingat. omnis enim terra, qua colitur vobis, angusta verticibus, lateribus latior, parua quedam insula est, circa cufusa illo mari, quod Atlanticum, quod Magnum, quod Oceanum, appellatis in terris: qui tamen, tanto nomine, quam sit parvus, vides. Ex his ipsis cultis, notisq. terris, num aut tuum, aut cuiusquam nostrum, nomen, vel Caucasm huc, quem cernis, transcendere potuit, vel illum Gangem transnare? quis in reliquis orientis, aut obeuntis solis ultimis, aut Aquilonis, Austrive partibus tuum nomen audiet? quibus amputatis, cernis profecto, quantis in angustijs vestra gloria se dilatari velit. Ipsi autem, qui de nobis loquentur, quā diu loquentur? quin etiam, si cupiat proles illa futurorum hominum deinceps laudes uniuscuiusque nostrū, à patribus acceptas, posteris prodere, tamen, propter elusiones, exustionesq. terrarum, quas accidere, tempore certo, necesse est, non modo non aeternam, sed ne diuturnam quidem, gloriam assequi possumus. quid autem interest, ab ijs, qui postea nascuntur, sermonem fore dete, cum ab ijs nullus fuerit, qui ante nascunt: qui nec pauciores, & certè meliores, fuerunt viri? cum præservit apud eos ipsis, à quibus nomen nostrum potest audiiri, nemo unius anni memoriam consequi possit. homines enim populariter annum tantummodo Solis, idest unius atri, reditu metiuntur. cum autem ad idem, unde semel profecta sunt, cuncta astra redierint, eandemq. totius cali descriptionem longis interuallis retulerint: tum ille vere vertens annus appellari

potest: in quo, vix dicere audeo, quam multa secula  
hominum teneantur. namque, et olim deficere Sol  
hominibus, extinguiq. visus est, cum Romuli animus  
hac ipsa in templo penetrauit: quandoque eadem par-  
te Sol, eodemq. tempore, ierum defecerrit, tum, signis  
omnibus ad idem principium, stellisq. renocatis, exple-  
tum annum habeto. hucus quidem anni nondum vi-  
gesimam partem scito esse conuersam. quo circa, si re-  
ditum in hunc locum desperaueris, in quo omnia sunt  
magnis. & præstantibus viris: quanti tandem est ista  
hominum gloria, qua pertinere vix ad unius anni  
partem exiguum potest? igitur, alè spectare si voles,  
atque ad hanc sedem, & aeternam domum contueri:  
neque sermonibus vulgi dederis te: nec in premijs hu-  
manis spem posueris rerum tuarum, suis te illecebris,  
sopportet ipsa virtus trahat ad verum decus. quid de te  
alij loquantur, ipsi videant: sed loquentur tamen, ser-  
mo aniem omnis ille, & angustijs cingitur ijs regioni,  
quas vides: nec vñquam de ullo perennis fuit, & obriui-  
tur hominum interitu: & obliuione post eritatis extin-  
guitur. Quia cum dixisset, ego vero, inquam, o Africanae,  
siquidem bene meritis de patria quasi limes ad  
caeli aditum patet, quamquam à pueritia, vestigijs in  
gressus & patris, & tuis, decori vestro non defui, nunc  
tamen, tanto premio proposito, emitas multo vigilan-  
tius. Et ille, Tu vero emitere, & sic habeto, te non esse  
mortalem sed corpus hoc. necenim is es, quem forma  
ista declarat: sed mēs cuiusque is est quisque, nō ea figura,  
qua digitō demonstrari potest. Deū te igitur scito es-  
se: siquidem Deus est, qui viget, qui sentit, qui memi-  
nit, qui præuidet, qui tā regit, & moderatur, & mouet  
id corpus,

id corpus, cui præpositus est, quam hunc mundū prin-  
ceps ille Deus: & ut ipsum mundum ex quadam par-  
te mortalem ipse Deus aeternus, sic fragile corpus ani-  
mus sempiternus mouet. nam, quod semper mouetur,  
eternum est: quod autem motum afferat aluci, quodq.  
ipsum agatur aliunde, quando finem habet motus,  
vnuend: finem habeat necesse est. solum igitur, quod se-  
se mouet, quia numquam deseritur à se, numquam nec  
moueri quidem desinit. quin etiam ceteris, qua mo-  
uentur, hic fons, hoc principium est mouendi. princi-  
pio autem nulla est origo. nam ex principio oriuntur  
omnia: ipsum autem nulla ex re fieri potest. nec enim  
est hoc principium, quod gignetur aliunde. quod si  
numquam oritur, nec occidit quidem vñquam. nam  
principium existet, nec ipsum ab alio renascetur,  
nec ex se aliud creabit: siquidem necesse est, à princi-  
pio omnia oriri. ita sit, ut motus principium ex eo sit,  
quod ipsum à se mouetur. id autem nec nasci potest,  
nec mori: vel concidat omne calum, omnisq. natura co-  
sistat, necesse est, nec vim ullam nanciscatur, qua pri-  
mo impulsu moueatur. Cum pateat igitur, aeternum  
id esse, quod à se ipso moueatur: quis est, qui hanc na-  
turam animis tributā esse neget? inanimatum est enim  
omne, quod impulsu agitur externo: quod autem a-  
nimā est, id motu citetur interiore. nam hec est natura  
propria anima, atque vis, quasi est una ex omnibus,  
qua se moueat: neque nata est certè, & aeterna est. hac  
tu exerce optimis in rebus sunt autem optima cura, de  
salute patriæ: quibus agitatus, & exercitatus animus,  
velocius in hanc sedem, & dominum suam, periuolabit:  
idq. ocios faciet, si iātū, cū erit inclusus in corpore, emi-  
nebit foras, & ea, qua extra erunt, contemplans, quart

maximè se à corpore abstrahet. nam eorū animi, qui se corporis voluptatibus dediderunt: earūq. sequasi ministros prabuerunt: impulsūq. libidinum, voluptatibus obedientium, deorum, & hominum iura violauerunt: corporibus elapsi, circum terram ipsam voluntantur, nec in hunc locum, nisi multis exagitati sculis, reuertuntur. Ille discessit: ego somno solitus sum.

**N**Afīgam} Ad Africam, vnum. **M**ANIO **M**ANILIO **c**onsuli,} Manilio consuli, in Africa, tribum mil. fuisse P. Scipionem, Appianus in Libico ostendit. **V**t scitis, tribunus militum,} duo, Tribunus, ut fatis, vnum, Tribunus militum, ut scitis. **A**d quem ut venis,} ab ipso Massinissa aceritus. Valerius Max. lib. 5. **S**UMME **S**ol, vobisque, reliqui, cœlestes,} vnum, Reliqui, cœlestes. Reliquis, vnum. Cœlestes, aliás fortasse fragmentum ex vetero poëta. **D**ISCEDESIT, duo. **V**IRI,} cum quo militauerat bello Punico secundo. **F**ESSVM de via,} sic locutus Acad. I. Fessum abest ab uno. **A**RTIOR,} vnum, Acrior. **F**it enim fere,} Sapè, pro Ferè, vnum. **S**CRIBIT **E**nnius,} Mihi visus Homerus adesse poëta, Ennius dixit, Cicero dixit in Lucullo. **Q**uæ mibi,} Quæ, tres mei. **E**x imagine eius,} maiorum enim imagines domi habere, easque in funere præferre, veteres Romani filebant. **V**t agnoui,} tres mei, Vbi agnoui. **P**ARERE,} tributum pendere. **P**AENE **m**iles,} nam in militia primus est honoris gradus tribunatus mil. **L**EGATVS,} ad Ptolomeum Phrynonem. Iustinus lib. xxxix. **A**BSENS,} non petens. Valerius enim lib. lxx. cap. io. presentem eum dicit: & Lælius apud Cic. de Amic. Scipionem numquam petiisse confirmat. **C**APITOLIVM,} In Capitolium, Langius. **R**EM P. Rem, vnum. **P**ERTVRBATAM **c**onsiliis,} ord. præp. duo. **N**EPOTIS **m**ei,} Ti. Gracchi, tribuni pl. Cornelii natu, Africani maioris filia. **A**TQ<sup>UE</sup> **e**t tuum nomen,} Atque in tuum nomen, duo. **T**e **s**ocij,} sic duo. recte, vnum. **T**e omnes boni socij. **S**i **i**mpias propinquum manus effugeris,} nō effugit. mortuus enim in cubiculo inuentus est, cum pridie optimè valuerit, creditum est ab vox Sempro-

re Sempronia, Gracchorum sorore, veneno necatum. **P**AX **f**it **r**ebus,} sic duo. Sit, non est in uno. **A**c **d**efinitum **l**ocus,} Ac, non est in duobus. **D**estinatum, Fuluij liber. **C**ONCILI<sup>A</sup>, cœtusq. hominum,} Cœtitatis definitio. **R**EVERTENTVR,} Reuertuntur, tres. Et pater Paulus,} Et Paulus pater, duo. Vt Paullus pater, vnum. **A**RBITRARE MVR,} Arbitrabamur, vnum. Arbitramur, vnum. **E**x corporum vinc. E, tres. **V**incula: Plato in Phedone scribit, animum cum corpore colligatum, & nexus. **V**ESTRA **v**erò, &c. sumptum ex Gorgia Platonis. **A**DSPICIAS **a**nde **v**enientem,} Adspicias venientem ad te, vnum. **A**MPLEXVS,} Complexus, duo. **O**SCVLANS,} Osculatus, duo. **Q**UANDO **h**ec est vita,} Quādo tres. **I**NQVIT ille,} Paulus, non Africanus. **C**IVIS hoc templum est omne, quod,} sic duo, vnum, Cuius est templum omne, quod. **I**N hoc templo,} vniuerso mundo. **Q**uae dicitur terra,} Quæ terra dicitur, tres. **C**IRCVLOS,} Circos, vnum. **N**OBIS,} sic duo, vnum, Vobis. **N**ec iniuncti in eins, à quo ille est nobis datus, ex hominum vita migrandum est:} eadem sententia apud Platonem in Phedone. **A**VVS hic vnuus,} Africanus. **C**IRCVLVS elucens,} Circus, duo. **E**x hoc loco,} absunt à vetero Fuluij libro. **O**MNIVM,} abest à Fuluij libro. **E**SSÈ,} abest à Fuluij libro. **I**LLA **m**inima,} Ea, in Non. Marcello. **L**VC<sup>E</sup> tacebat aliena,} Lunam significavit, lucē à Sole mutuantem. **T**ERRAE magnitudinem,} sic tres mei. **I**AM **v**erò ipsa terra,} Verò, abest à duobus. **C**ONNEXA,} non displicer, Connexa, ut est in quibusdam scripsis libris. **I**NIFI<sup>I</sup> sunt,} abest ab uno. Insunt fixi illi, qui volvuntur, stellarum curius septentrionali. **S**EPTEM,} nam nonus terra non mouetur. **C**ONTRARIO motu, atque calorem,} Contra cælum, Fuluij liber. **P**ROSPERVS,} ita legendum ex duobus meis, & Prisc. lib. vi. non Prosper, ut ante. **M**ARTIUM dicitur,} Martiūm, vnum. **E**t temperatio,} Et moderatio, vnum. **I**LLUSTRET, & compleat,} absunt ab uno, Illustret, &. **C**ONSEQVNTVR,} Sequuntur, vnum. **E**t in eam feruntur omnia suo nutu pondera,} duo, Et in eam feruntur omnia suo nutu pondera, vnum. **Q**uis hic in qua quis est, vnum, Quid hic in qua quis est. **C**ONIVNETVS,} Iunctus, vnum. **I**nteruallis coniunctua imparibus, quia videntur interualla disiungere potius, quam coniungere, venit in men-

di suspicionem nescio quis, cui placuit, Disiunctus, potius, quām Coniunctus: non recte, nam, ut ex pluribus vocibus, iisq. diuersis, concentus fit suauissimus: sic ex interuallis imparibus coniungitur sonus ille caelestis, quo sibi aures compleri dicebat Scipio. PRO RATA PARTIONE } Pro rata partium ratione, vnuſ. Pro rata parte ratione, duo. STELLIFERI tali cursus, } Cæli stellifer cursus tres. vide Boëtium lib. i. de Musica, cap. 27. placet, Stelliferi, feruntur enim stellæ summo cælo, eius complexuſ reliquæ continentur orbes. DVORVM, } subaudi, Mercurii, & Veneris. quod cūm glossa fuerit, irrepit, ut à Cicero dictum, in libros impresos. Censorinus in libro de die Natali. MODVS est, } ne dissoluantur alij. Modus: quo modo vnuſ meus. male. APER VERE } Aperuerit, duo. AD HUNC LOCUM, } In hunc locum, tres. HO C SONIU } idem Aristoteles in libro de somniis. COMPLETAE } Oppletæ, vnuſ. AVRES obfurduerunt, } Aures hominum obfurduerunt, duo. CATADVPA } Plinius lib. v. cap. 9. Catadupi etiā gens Arabiae: idem lib. vi. cap. 29. QVAE ILLUM LOCUM ACCOLIT, } Quæ illum accollit locum, duo. Quæ illum locum incolit, vnuſ. ETIAM NUNC, } licet me audias, longè præstantiora narrantem. ITA VIDETUR, } Ita, abest ab uno. TV ENIM QUAM CELEBRITATEM SERMONIS HOMINUM, aut quam expetendam consequi gloriam potes, } hoc dicit: Nullam neque celebritatē sermonis hominum, neque gloriam, quæ sit experenda, si terræ paritatem, cælorum magnitudinem spectes, consequi potes. Cur locus hic aut mutari, aut aliter intelligi debuerit, equidem non intelligo. CONSEQ VI gloriAM, } GloriAM consequi, duo. VIDES habitari raris, & angustis in terra locis, } duo. Vides in terra habitari raris, & angustis in locis, vnuſ. Vides habitare in terra raris, & angustis in locis. MANARE posſit, } Queat, vnuſ. Manere, duo. TRANSVERSOS, } sic vnuſ. Aduersos, duo. ADVERSOS, } aduersis vestigis stantes contra nostra vestigia, vnde Antipodes dicti. Acad. lib. ii. NIHIL ad vestrum genus, } non enim aut vos ad illos, aut illi ad vos commendi facultatem habent. verūm hoc fuit Ciceronis aetate, nō item. CAVCASVM hunc, } quia propior celo videbatur, cūm sit mons altissimus, quam Ganges fluuius. TRANSNARE, } Trasnatare, duo. OBEVNTIS SOLI, } Sic tres. Abeuntis, alijs. QVI de nobis, } Vobis, duo. NOSTRVM, } Vestrum, duo. NOMEN nostrum, } Vestrum, tres. POPVLARITER, } Leg' la- riter,

riter, vnuſ. Loquelariter, Langius. Ioculariter, Turnebus. VERTENS annus, } quasi non vere Vertens is sit annus, qui appellatur lib. ii. de Fin. & Censorinus. QUANDOQUE eadem parte sol, eodemq. tempore iterum deserit, } constat, accipi Quandoque non posse, pro Interdum, nam Quandoque, pro Interdum vno verbo contentum esset. At Quandoque, pro Quandoquecumque, duo requirit, itaque sequitur: Explerum annum habero. Nec tamen insolēs est in hac significatione. Horatius Od. lib. iv. od. i.

-- quandoque potentior

Largis munieribus riserit æmuli, &c.

Et ibidem, Od. 2.

-- quandoque trahet feroceſ

Per sacrum diuūm, mērita decorus

Frondē, Sicambros.

Suetonius, in Iulio. Tabula ænea in monumento inuenta est, conscripta litteris, verbisq. Græcis, hac sententia. Quandoque ossa Capys detecta esſent, fore, ut Iulo prognatus manu consanguineorum necaretur. Luius, lib. i. ab V. C. Quandoque pars maior eorum, qui aderant, in eandem sententiam ibat, bellum erat consenuſ fieri solitum. &c. Et L. Soluto matrimonio, 2. ff. sol. matrim. Dotis actio, filie non erit adempta, quandoque sui juris filia fuerit facta. Et L. Si fundus, 13. de reb. cor. qui sub tut. Quandoque domino prædium cum fratribus vindicanti doli non inutiliter opponitur exceptio, &c. Et L. In substitutione, 31. ff. de vulg. & pup. Quæritur, quis quis heres, quandoque fuerit, intelligatur? Et L. Is cui ita, 18. ff. quando dies leg. vel fideic. ced. Is, cui ita legatum est, quandoque liberos habuerit, &c. Et L. Rogo, 29. ff. eod. Rogo, quandoque heres meus Titio decem det, utique decem heres debet. Et L. Quod pupille, 30. ff. eod. Quod pupillæ legatum est, quandoque nupserit, &c. Et L. Continuus, 37. §. item, qui ff. de verb. obl. Liberatur, qui se daturum spopondit, si quandoque tradit. Quo in loco nō si, abūdere puto. Et L. Et per ius iurandum, 13. ff. de Acceptilat. Quandoque ei creditum fuerit, tenerit. In Institutionibus item Iustiniani, lib. 3. tit. 15. Quibus modis re contr. oblig. legendum, Et quandoque nobis non eadem res, sed alia eiusdem naturæ, & qualitatibus redduntur: inde etiam Mutuum appellatum est. Non, ut in vulgatis, Et quoniam &c.

In antiqua quoque Inscriptione ideam loquendi genus obseruauit, cuius exemplum sequitur.

Brundisij, extra Vrbem.

M . LOLLIVS . ARPHOCRAS  
 V . F . S . ET . PÆLINÆ . VXORI  
 V . ET . LIB . LIBERTAB . POSTQ  
 EORVM . M . S . S . E . H . N . S .  
 NEQVE . VLLI . LIQVEBIT . LOCATIO  
 NIS . CAVSA . IN . ANNIS . CENTVM . QVAN  
 DOQ . TRANSVENDERE . QVOD . SIQVI  
 ADVERSVS . IT . FECERINT . EORVM  
 BONA . PERTINERE . DEBEBVNT  
 AD . REMPVBLICAM . BRV . N  
 DISINORVM .

Neque solum, Quandoque, pro, Quandocunque, sed & Vbi  
 que, pro, Vbicunque, scriptum apud veteres obseruauit. L. In  
 Lege fundi, 77. ff. de contr. empt. In lege fundi vendundila-  
 pidicinæ in eo fundo, vbiique essent, exceptæ erant. Et L.  
 Quod nisi fiat, 20. ff. de oper. libert. Non esse injungendam  
 necessitatem liberto, vbiique eum sequi. Iterum defecerit: quod  
 futurum est, vt ait Macrobius, quindecim annorum millibus  
 ab interitu Romuli. Quando ab eadē parte Solis, vnum. Quan-  
 do ab eadem parte Sol, vnum. Ad idem principium, } Idē, non est  
 in tribus. ALTE spiculae } ord. præp. vnum. Ad hanc se-  
 dem, } Ad, non est in tribus. AETERNAM domum } Dominus  
 æterna, alibi dicitur Monumentum.

DOMVM . AETERNAM  
 IVLIA . AGAPÆ . POSVIT  
 OBSEQVENTI . MARITO

Est & antiqua inscriptio de Domo æterna, in Orthogra-  
 phia mea, in LACRVM AE, 3, in Insula Tiberina. & in, PAV-  
 IUS, io, Monti, plani, in agro Brix. ad D. Antonij. Ditis, æter-  
 na domus in LETVM, i, in adibus Atilij Delphinij.

Neque te sermonibus vulgi dederis te: } Te, abest ab uno: in  
 quo, Dederis, duo, Neque te sermonibus vulgi dederis,

SVIS

SVIS te illecebris oportet, } duo, Svis te oportet illecebris, vnum,  
 Svis tam en te oportet illecebris. O. AFRICANE, } O, abest  
 à tribus. QVASI limen } Limes, tres. PATRIS, } Paulli.  
 TVIS, } Tu, duo. PROPOSITO, } Exposito, tres. NEC  
 enim is es, &c. } eadem sententia cit Platonis in Axiocho:  
 H pñs πάντα ἵπποι φύγειν εἰσείναι, &c. DEMON-  
 STRARI } Monstrari, duo. QVIPROUDET, } sic mei. Aliás,  
 Præuidet. PRINCEPS ille } ord. præp. vnum. IPSVM  
 mundum } Ipse mundum, vnum. Ipsum, abest ab uno. QVOD  
 semper mouetur, } ex Phœdroni Platonis. vide Cic. Tusc. i. Malè  
 Macrobius ex Phœdone sumpta hæc scribit. AGITATVR  
 aliunde, } Agitat aliquid, vnum. QVOD se-  
 ipsum mouet, vnum. PRINCIPIO autem } Principii, vnum.  
 NVLLA ex re. } Nulla ex alia re nasci potest, vnum. Nulla ex  
 realia fieri, nascive potest, vnum. Ex nulli alia re nasci potest,  
 vnum. NEC } Neque, vnum. Nec enim id effet princ. duo.  
 Hoc princip } Id, pto, Hoc, vnum. ALIVD credit. } Aliquid,  
 vnum. OMNIA oriri } Oriri omnia, tres. A se, } Ex se, vnum.  
 OMNISQ. natura confusat, } Omnisq. natura & confusat, vnum.  
 Confusat, abest ab uno. Omnisq. natura: Πάντων τίχελων, Plato in  
 Phœdron. Vnde sunt, qui Terra, pro, Natura, reponant. Ego  
 nihil muto. nec mutant veteres libri. mos hic enim Cicero-  
 nis est, vt Græcorum sententias paullò liberius in sua scripta  
 transferat. QVA primo impulsu moueat, } Qua mouetur à  
 primo impulsu moueantur, vnum. Qua à primo impulsu re-  
 moueatur, vnum. Qua à principio impulsu moueatur, vnum.  
 INANIMATVM } Inanimatum, vnum: male. In anima, vnum: male.  
 Inanimatum, legendum. ANIMA est, } Est anima, duo. Est ani-  
 mal, vnum. ANIMAE, } Animi, aliás. VELOCIVS, } sic  
 in nostris libris ante me natum legitur. sicq. tres mei. A cor-  
 pore abstrahet, } disce rationem aperiendi aditus ad cælestem  
 vitam. Ego sompo statim solitus sum, } Statim, abest à tribus.

FINIS.

V 3



RESONANTIA  
INDEX RERUM  
ET VERBORVM LO-  
CVPL ETISSIMVS

*Quae in hoc volumine continentur.*

- A**bduci à rebus academici veteres, & Peripateticici, honesta anteponunt. 335  
agendis studio veri vestigādi cōtra officiū est. 69  
ashorrere à litibus. 286. & 287  
ashorrentes ab vsu forensi, & publico loco 639  
abiecta omni cūstatione. 119  
abiector est animus in quibusdam. 596  
abrogare alicui imperiū. 351  
abstergere — abstesit omnes senectutis molestias. 438  
abstinens — laudat Africanum Panetius, quod fuerit abstinentis. 301  
absum propiū à morte, quam vos. 525  
abundare omnibus copiis. 337  
abundans — egenus opp. 685  
academia nostra nobis magnā lice ntiam dat. 335  
academici alia probabilia, alia improbabilia esse dicunt. 211  
academici non multum à Peripateticis dissident. 28
- accipere in ciuitatem. 67.  
accipere injuriam — at verò ille, qui accipit iniuriam, & meminit, & præfert dolorem suum. 305  
accepti regio apparatu. 695 & 696  
acceptius — nihil est deo, quod quidem in terris fiat,  
acceptius, quām concilia, cœrūs; hominum iure sociatis, quæ ciuitates appellantur. 697  
acceptorum benefiorum dilectus, seu delectus sunt habendi. 99.  
acceptorum, & datorum ratio pat sit. 596  
accubationem epularem amicorum, conuiuium nominantur Romani, melius, quæ Græci, qui tum comportationem, tum concenatio-

## I N D E X.

- nem vocant, quia vita con-  
junctionem haberet. 846  
accusare alterum non oportet,  
nisi aut resp. causa, aut vl-  
ciscendi , aut patrocinij.  
268  
accusatio duri hominis, vel  
potius vix hominis videtur,  
periculum capit is inferre  
in multis. 268  
accusatio persæpe probata est,  
vt in Crasso Antonio, Sul-  
picio. 267 & 268  
accusator — tum periculosum  
ipsi est, tum folidum ad  
famam, committere, vt ac-  
cusator nominere : quod  
contigit M. Bruto, sum-  
mo genere nato, &c. 268  
acquiescere—vici simili senes in  
adolescentium caritate ac-  
quiescimus. 628  
acres animaduersores vitio-  
rum. 84  
acriores sunt morsus inter-  
missæ libertatis , quæm re-  
tentæ. 238  
actio — in omni actione suæ  
piéda tria sunt tenenda. 182  
actio — omnis actio vacare  
debet temeritate, & negli-  
gentia. 149  
actus — non est verisimile,  
cum à natura ceteræ partes  
ætatis bene descriptæ sint,  
extremum actum, tāquam  
ab inertii poëta, esse negle-  
ctum. 442  
actum cum illo optimè est:  
me cum autem incommo-
- diùs. 558  
actum est cū illo preclarè 256  
acuere — due res, quæ lan-  
guorem afferunt ceteris  
illum auebant. 322  
adhibenda cura est laxitatis in  
domo. 178  
addictus morti. 352  
addiscentem multa in dies se-  
nescere. 500  
addubitat in rebus aliqui-  
bus. 334  
adducere alterum in inuidiâ  
falso criminis. 401  
adducere habendas — remit-  
tere. 585  
adduci nullo frigore posse,  
vt &c. 474  
adducta res in angustum. 365  
adelphi — duo fratres dissimili-  
bus moribus. 516  
ades animo , & omittit timo-  
rem. 696  
adhibemus quedam tormenta.  
349  
adhibuit in consilium quin-  
decim principes. 307  
adhibere ad considerandas  
& tempus, & diligētiā. 68  
adhibere curam in ouibus, &  
capris parandis, in amicis  
eligidis negligentes. 601  
adhibere doctos homines de-  
bemus ad ea eligenda, quæ  
dubitatem afferant. 185  
adhibere iudicium, & diligen-  
tiam debemus in diligen-  
dis idoneis, quibus benignè  
faciamus. 185  
adhibere modum, & ordinem  
iis

## I N D E X.

- ijs rebus, quæ tractantur in  
vita. 67  
adhibere orationis vanita-  
tem. 382, & 383  
adhibere periculosas curatio-  
nes, & ancipites grauiori-  
bus moribus. 129  
adhibenda diligentia est ami-  
citiis comparandis, vt ne  
quando amare incipere-  
mus eum, quem aliquid  
odisse possemus. 597  
adhibenda est ruerentia op-  
timi cuiusque & reliquo-  
rum. 145  
adhibenda fortassis scutitia est  
ijs, qui imperio oppressos  
coercent, vt heris in famu-  
los. 238  
adhibenda in hac ratio, &  
diligentia est. 610  
adegit illum, arbitrum. 388  
adipiscitur magnam & gra-  
tiam, & gloriam cum sum-  
ma utilitate reip. 309  
adiuuare iniuriam — nou-  
modò non repellere , sed  
etiam adiuuare iniuriam. 396  
adiuuaretur grandi pecunia.  
307  
adiumenta hominum omnis  
institutio vita desiderat.  
257  
adiumenta rerum gerenda-  
rum habere à natura. 119  
adiutores ad iniuriam. 578  
adminiculum — natura sem-  
per ad aliquod tamquam  
adminiculū admittitur. 620  
adminiculorum ordines. 501
- admirabilitatem magnam fa-  
cit hæc animi despicien-  
tia. 255  
admirat̄ur homines ea omnia,  
quæ magna , & præter opi-  
nionem suam animaduer-  
terunt. 254  
admiratione afficere. 255  
admouentur dolorum faces  
— dolorum cùm admouē-  
tur faces, præter modum  
plerique exterruntur. 255  
adolescentia — cùm est ma-  
xima imbecillitas con-  
sili. 163  
adolescentia libidinosa, & in-  
temperans effetum corpus  
tradit senectuti. 469  
adolescentia maximè à libi-  
dinibus arcenda est, exer-  
cendaque in labore, patien-  
tiāque & animi , & corpo-  
ris. 167  
adolescentia multò plures,  
quæ nostra, mortis casus  
habet. 116  
adolescentia — petulantia, &  
libido magis est adolescen-  
tium, quæm scenum, nec ta-  
men omnium adolescentium, sed non proborū. 475  
adolescentia sœpe in ea , quæ  
non vult, incurrit. 463  
adolescentia certa sunt stu-  
dia. 525  
adolescentia non modò non  
inuidetur , verum etiam  
fauetur. 262  
adolescens, in quo senile est  
aliquid , probandus: & se-

## I N D E X.

- nex, in quo aliquid adolescentis. 475  
adolescens sperans se diu esse victum, insipienter sperat. 520  
adolescentis est maiores natu vereri. 167  
adolescentes faciliter in morbos incident, grauius ægrotant, tristius curantur. 516  
adolescentes sic mori videntur, vt cum aquæ multitudine flammæ vis opprimitur. 521  
adolescentibus vitam vis afferit, senibus maturitas. 521  
aduersum solem intueri nequimus. 700  
adulterare — assentatio iudicium veri adulterat. 621  
aduocatum te in rem præsentem esse venturum constituer. 65  
æacus & Minos iusti fuisse dicuntur. 144  
æacidarum genus. 68  
ædes male materiaæ, ruinosa. 380  
ædes pestilentes — salubres, 380  
ædificandi descriptio ad usum accommodanda est. 177  
ædilitatis prætermisso Mamerco ditissimo homini consulatus repulsam attulit. 280  
ædilio maximo munere qui functi sint. ibidem  
ægina nimis imminuebat propter propinquitatem
- Pyræo. 376  
æginæ — Atheniæ scire ruit, vt Æginetis, qui classe valebant, pollices præcederentur. 376  
æmilius Papus C. Luscino familiaris bis vna coss. & collegæ in censura. 579  
æquabile, & temperatum orationis genus. 28  
æquabilis prædæ partitio. 257  
æquabilitas cum vniuersitate, tum singularum actiōnum. 159  
æquabilitas in omni vita præclara, & idem semper vultus, eadēmq. frons, vt de Socrate, itēmq. C. Lælio accepimus. 138  
æquabiliter prædam dispertere. 238  
æquitas luet ipsa per se. 64  
æquitas tollitur omnis, si habere suum cuique noulicer. 302  
æquus, facilis, multa de suo iure concedens in omnire contrahenda. 286  
ærumnosus — M. Regulus non fuit ærumnosus. 655  
æs alienum cōsule Cicерone fuit maximum, & optimè dissolutum. 307  
æsopus non sæpe Aiacem sumebat. 161  
æstimatores rerū callidi. 688  
ætas — cursus est certus atat. 474  
ætas ingrauescens. 474  
ætas quiete, pure, atque ele-

## I N D E X.

- ganter acta. 450  
ætate ingrauescente. 577  
æthereum est id, quod à se ipso mouet. 703  
æctionis tabula stupidum detinet. 248  
affabilitas sermonis magnopere conciliat animos. 267  
affectionata. 487  
afferre caussam — hanc, vt fibi ignoscere, caussam afferret. 579  
afferre dubitationem — quid est ergo, quod nonnumquam dubitationem afferre soleat, considerandumq. videatur? 334  
afferre manus socio. 73  
afferre vim. 572  
afferre opinionem populo, fore, &c. 267  
afferendum semper aliquid est ad communem utilitatem. 102  
afficiuntur admiratione ij, qui anteire ceteros virtute putantur. 254  
affirmatè — quod affirmatè, quasi deo teste, promiseris id tenendum est. 420  
afflictis rebus — rebus afflictis ex celso animo fuit populus Rom. 427  
africanus eloquentia cumulauit bellicam gloriam. 163  
africanus nihilo locupletior Carthagine euersa. 301  
africanī dictum — vt equos propter crebras contentiones præclitorum, &c. sic homines secundis rebus effre
- natos, &c. 138  
africanum laudat Panætius, quod fuerit abstinent. 301  
africanus P. Fil. in re militari excellere studuit. 163  
agamemnon deuouit Diana, quod in regno suo pulcherrimum natum esset illo anno &c. 412  
ager Arpinas. 72  
ager consæprus diligenter confitus. 509  
ager Tusculanus 72  
agricolendi studium — nihil tam regale, quam studium agri colendi. 509  
agri fossiones, & repastinaciones. 501  
agro bene culto, nihil potest esse nec vsu vberius, nec specie ornatus. 506  
agros fertiles imitari debeamus, qui multò plus afférunt, quam acceperunt. 98  
agrariae contentiones Gracchos perdidunt. 306  
agricola quamuis sit senex, non dubitat quærenti cui ferat, respondere, Dijs immortalibus. 463  
agricolarum voluptates. 500  
agricultura laudatur à Xenophonte in eo libro, qui est de tuenda re familiari. 509  
agricultura nihil melius, nihil vberius, nihil dulcius, nihil homine, nihil libero dignius. 188  
aggrediat dicere de ijs rebus, &c. 209  
agin regem Lacedæmonij,

## I N D E X.

quod numquam antea apud eos acciderat, nec auerūt. 306  
aḡatio studiorum. 462  
agere — cumpublicanis sic debent agere ciuitates, vt nos cum colonis solemus. 408  
agere cuniculos in erariū. 409  
agere — nihilagi debet, cuius non possis caussam probabilem reddere. 749  
agere suum negotium. 64  
agere triūphum — cūm trium phum egeris, &c. 696  
agatur caput, aut fortuna. 597  
agrestes — si mihi apud aliquos agrestes habenda esset oratio. 675  
agrigentinorū multitudo vniuersa in Phalaridem impetum fecit. 241, & 242  
ajax quo animo traditur, milles oppere mortē, quā illa perpeti, (quæ Ulysses) maluisset. 160  
alexander magnus rebus gestis & gloria Philippo patre superior, facilitate & humanitate ab eo superatus. 138  
alexander Pheraeus ab uxore propter pellicatus suspicione interfecetus. 241  
alexander Pheraeus cūm uxorem Theben admodū diligenter, tamen ad eam ex expulis in cubiculū veniens, barbarum quendā districto gladio iudebat anteire. 241  
alienatio disiunctiōque statim facienda. 611  
aliud agentes, aliud simulan-

tes, perfidi, improbi, mali-  
tiosi. 384  
allicere multitudinis animos ad benevolentiam. 267  
aluntur, & augentur cogitatione, & memoria. 629  
amarē nihil aliud est, nisi eum ipsum diligere, quē ames, nulla indigentia, nulla vtilitate qualita. 627  
amarē ita oportere — vt si aliquid esset osurus — Biatis. 596  
ambitio honorūque contentio miserrima est. 133  
amicitia bonam spem in posterum prælueret. 566  
amicitia — de amicitia aholi- bro dictum est, qui int̄cribitur Lælius. 250  
amicitia digni sunt, quibus in ipsis cauſa est, cur diligantur. 614  
amicitia & secundas res splendidores facit, & aduersas partiens, communicansque, leviores. 566  
amicitia — huius scio, an excepta sapientia, quidquam sit homini amicitia melius à Dijs immortalibus datum. 565  
amicitia h̄c præstat propinquitati, quod ex propinquitate benevolentia tolli potest, ex amicitia non potest. 565  
amicitia — in amicitia, nihil si-  
stum, nihil simulatum est;  
& quidquid est, id verum, & volun-

## I N D E X.

voluntarium est. 573  
amicitia — lex prima in ami-  
citia sanctiō, vt neque ro-  
gemos res turpes, neque fa-  
ciamus rogati. 585  
amicitia nihil aliud est, nisi  
omnium diuinarum, huma-  
narūque rerum cum be-  
nevolentia, & caritate con-  
fessio. 565  
amicitia — in amicitia debet esse omnium rerum, consili-  
orum, voluntatum sine vi-  
la exceptione communica-  
tas. 597  
amicitia nihil est tam natu-  
ræ conueniens, tam aptum  
ad res vel secundas, vel ad-  
uersas. 564  
amicitia non nisi in bonis esse  
potest. 564  
amicitia — non vtilitatem ami-  
citia, sed vtilitas amici-  
tiam sequitur. 594  
amicitia nullo loco excludi-  
tur. 566  
amicitia numquam imtem-  
pestiu, numquam molesta  
est. 566  
amicitia oritur à natura po-  
tiū, quā ab imbecilli-  
tate. 573  
amicitia — plurimum in ami-  
citia amicorum bene suau-  
dentium valeat auctoritas. 587  
amicitia serpit per omnium vitam. 616  
amicitia — solem è mundo tol-  
ere videntur, qui amici-

tiam è vita tollunt. 585  
amicitia — tres sententiae de finibus diligendi, quarum nullam probat Lælius. 595  
amicitia — & monere & mo-  
neri proprium est verē ami-  
citie. 621  
amicitia virtutum adiutrix à  
natura data est, non vitorū  
comes. 615  
amicitiæ maximum orname-  
tum tollit, qui ex ea tollit  
verecdiam. 615  
amicitiæ — vtilissimum in ami-  
citia putauit Pythagoras, si v-  
nus fiat ex pluribus. 603  
amicitiæ — de amicitiæ vtilitate  
omnes uno ore conser-  
tent. 616  
amicitiæ vtrum propter im-  
becillitatem atque inopiam  
desiderata sit, nec ne, &c. 573  
amicitiæ nomen sine veritate  
valere non potest. 621  
amicitiæ — sine veritate neque  
amicitiam, neq; villam rem ex  
petendam consequi possum-  
imus. 615, & 616  
amicitiæ opportunitates. 565  
amicitiæ vis in eo est, vt vnu-  
sus quasi animus frat ex pluri-  
bus. 621  
amicitiæ vis quanta sit, vel ex  
hoc intelligi maximè po-  
test, quod ex infinita socie-  
tate generis humani, quam  
conciliauit ipsa natura, ita  
contrafacta res est, & adducta  
in angustum, vt omnis cari-  
tas, aut inter duo, aut inter

## I N D E X.

- paucos iungeretur. 565  
 amicitia v̄sus varius est, &  
 multiplex. 620  
 amicitiam manere difficile  
 est, si à virtute defeceris. 579  
 amicitiam omnibus rebus hu-  
 manis esse anteponēdā. 564  
 amicitiam summa fide, con-  
 stantia, iustitia seruare. 573  
 amicitiam usque ad extremū  
 vitæ diem permanere diffi-  
 cillimum est. 577  
 amicitiam—in amicitia supe-  
 rior par debet esse inferio-  
 ri, id quod maximū est. 604  
 amicitia—fugiendas esse ni-  
 mias amicitias, ne necesse  
 sit vnum sollicitum esse pro  
 pluribus. 587  
 amicitia deposita—non so-  
 lum amicitia deposita, sed  
 etiam inimicitia suscep-  
 t. 611  
 amicitia numquam sunt ante  
 ponenda ea, quæ videntur  
 utilia. 351  
 amicitia plerique anteponunt  
 honores, magistratus, im-  
 peria, potestates. 602  
 amicitia præsidij, adiumenti-  
 que cauſa, an benevolentia,  
 & caritatis sint experen-  
 de. 587  
 amicitia verè difficillimē re-  
 periuntur in his, qui in ho-  
 noribus, req̄ publica versan-  
 tur. 602  
 amicitia propter indigentia  
 non coluntur. 594  
 amicitarum non debent esse
- satiates. 603  
 amicitia—veterissimæ quæque  
 amicitia (vt ea vina quæ ve-  
 tustatem ferunt) debent esse  
 suauissimæ. 603, & 604  
 amicitarum pestis, quæ ma-  
 xima. 578, & 611  
 amicitia stabilitas quando co-  
 firmari potest. 615  
 amicitarum sua cuique per-  
 manet stabilis, & certa pos-  
 sessio. 595  
 amicitias, quæ minus dele-  
 cant, & minus probantur,  
 magis decere censem sapientes  
 sensim diffidere, quæ  
 repente præcidere. 165  
 amicus certus in re incerta  
 cernitur. 602  
 amicus—quid dulcius, quam  
 habere quocum omnia au-  
 deas sic loqui, vt tecum? 66  
 amicus verus tamquam alter  
 idem. 614  
 amici cauſa neque contra  
 remp. neque contra infi-  
 randum, ac fidem virbo-  
 nus faciet. 352  
 amici—multa, quæ nostra  
 cauſa numquam facere-  
 mus, facimus cauſa amico-  
 rum. 595  
 amicū bellum patriæ infe-  
 rentē sequi non oportet. 586  
 amici—ab amicis in magnâ re  
 aliqua in rep. peccantibus  
 discedere licet. 586  
 amici firmi, & constantes, sunt  
 eligendi. 601  
 amici noui.—sunt ne amici  
 noui

## I N D E X.

- noui digni amicitia veteri-  
 bus anteponendi. 603  
 amici, qui ante oculos sunt, &  
 quos nouit vita commu-  
 nis. 579  
 amici ſepe & admonendi &  
 obiurgandi sunt. 620  
 amici—ti omnia facienda fint,  
 quæ amici velint, non ami-  
 citie tales, sed coniuratio-  
 nes putandæ sunt. 352  
 amicorum bene suadentium  
 plurimum valere debet au-  
 thoritas. 587  
 amicorum esse communia  
 omnia. 102  
 amicorum paria vix tria, aut  
 quattuor ex omnibus ſæ-  
 culis numerantur. ali. nomi-  
 nantur. 558  
 amicis non est concedendum  
 quidquid velint, neque ab  
 iis impertrandum est quid-  
 quid velimus. 579  
 amici—plerique amicos, tam-  
 quam pecudes, eos potissi-  
 mum deligunt, ex quibus  
 sperant se maximum fru-  
 etum esse capturos. 614  
 amicos non parare optimam  
 & pulcherrimam vitæ (vt  
 ita dicā) ſupelleſtitem. 595  
 amilcar Hannibalis pater. 415  
 amissimus penitus remp. 243  
 amittere penitus confuetudi-  
 nem & disciplinam. 242  
 amor confirmatur & benefi-  
 cio accepto, & studio per-  
 ſpecto, & conſuetudine ad-  
 iuncta. } 574
- amor, ex quo amicitia nomi-  
 nata est, princeps est ad be-  
 nevolentiam coniungen-  
 dam. 573  
 amor in amicitia quatenus  
 progredi debeat. 578  
 amorem præcipuum in eos,  
 qui procreati sunt, ingene-  
 rat natura. 60  
 amplificatio rei familiaris ne-  
 mini nocens non est vitu-  
 peranda. 74  
 amplissima familia natus. 677  
 amputatio ſarmentorum, aut,  
 immiffio. 501  
 angor, qui pro amico ſepe  
 capiendus est, non tamen  
 valet, vt tollat è vita ami-  
 citiam. 588  
 angi ſuis incommodis—ſuis  
 incommodis grauitate angi,  
 non amicū, ſed ſeipſum a-  
 mantis est. 556  
 anguiflissimi animi est amare  
 diuitias. 116  
 anhelitus mouentur, vultus  
 mutantur, ora torquentur,  
 cum in festinationibus ni-  
 miæ celeritates, ſuscipiuntur.  
 172  
 anienus, & anio, Flu. 424  
 animaduertſio & caſtigatio co-  
 tumelia vacare debet. 137  
 animaduertſorēs atres vitio-  
 rum. 184  
 anima—quod anima est, id  
 motu cietur interiore. 703  
 animantium omni generi à  
 natura attributum est, vt ſe,  
 vitæ, corpùſque tueatur. 53

I N D E X.

- animatus — vt quicquidmodum in se quisque, sic in amicum sit animatus. 595  
 animus bene à natura informatus nemini vult parere, nisi praecipienti, aut docenti, nisi utilitatis causa iuste, legitimèque imperanti. 60  
 animus caelestis est, ex altissimo domicilio depresso, & quasi demersus in terrā. 528  
 animus, Deus est, si quidem Deus est, qui viget, qui sentit, qui meminit, qui praeuidet, qui tam regit & moderatur, & mouet id corpus, cui prepositus est, quā hunc mundum princeps ille Deus. 702, & 703  
 animus excelsus, & altus, & virtutibus exaggeratus. 678  
 animus hominis diues, non arca, appellari solet. 685  
 animus hominibus datus est ex illis sempiternis ignibus, quæ sidera, & stellas vocatis. 698  
 animus in quibusdam est abiectior. 596  
 animus optimi cuiusque in morte facilimè euolat, tanquam è custodia, in clinique corporis. 557  
 animus retinendus est in custodia corporis, nec iniussu eius, à quo datus est ex hominum vita migradū. 698  
 animus semper agitatur, nec principium motus haberet, quia ipse se moueat, &c. 528

- animus tuus oportet se iudicet diuitem, non hominum sermo, neque possessiones tue. 685  
 animi bene constituti proprium est, & letari bonis rebus, & dolere cōtrarijs, 588  
 animi magnitudo vera & sapiens, honestum in factis positum, non in gloria iudicat. 109  
 animi naturam esse simplicem, neque habere in se quidquam admixtū disparsum, atque dissimile. 528  
 animi opera maiora sunt, quā corporis. 266  
 animum esse immortalem demonstrat Cicero lib. 6. de rep. 703  
 animum esse sapientem cum omni admixtione corporis liberatus, purus, & integer esse cœpisset. 530  
 animum non posse esse mortalem, & quam ob causam non possit. 518  
 animo cœnare. 531  
 animi dormientium maximè declarant diuinitatē suā. 531  
 animi multò magis vivunt, vbi exierint ē corporibus, quam dum in corporibus sunt. 530  
 animi se exercendo leuantur. 475  
 animorum vis, atque natura, duplex. 149  
 animos esse diuinos, iſq. cum ē corporibus excessissent,

I N D E X.

- reditum ad celum patrē, anteire ceteros virtute. 254  
 dicebat semper Socrates. 557  
 animos ex voluntate diuina esse delibatos, dixerūt Pythagorei. 528  
 animos immortales esse credo — quod si in hoc erro, libenter erro, nec mihi hunc errorem, quo delector, dum viuo, extorqueri volo. 534  
 animos sparserunt in corpora humana dij immortales, ut essent, qui terrastuerentur, &c. 528  
 annibal, crudelis. 68  
 annibal callidus. 155  
 annibal octo hominum militia tenebat, post Cannēsem pugnam. 427  
 annibalem propter crudelitatem semper odit populus R. O. 574  
 annicerij & Cyrenaici philosophi. 428  
 annonæ caritas. 379  
 annus vertens quando verè possit appellari. 701  
 annum ioculariter homines tantum modo solis, idest vnius astri reditu metiuntur. ibid.  
 anquiro — cogitando semper aliquid aut anquirit, aut agit mens hominis. 150  
 anquiritur in eum quo modo vivat. 262  
 ante oculos — amici, qui ante oculos sunt, & quos nouit vita communis. 579  
 anteuertere atque id ipsum cū tecum agere conarer, Fannius anteuerterit. 563  
 antiqui ad Philippum epistolæ. 267  
 antipater, homo acutiss. Diogenis Babylonij Stoici discipulus. 379  
 antipater Tyrius Stoicus. 311  
 antipatri epistolæ ad Cassanum. 267  
 appelles Veneris partem inchoatam reliquit. 328  
 aperte odisse, magis ingenui hominis est, quam fronte occultare sententiam. 603  
 apertus, simplex, ingenuus, iustus, bonus. 382  
 apertum amici pectus videre oportet in amicitia, sūmque ostendere. 624  
 apex senectutis est auctoritas, 510  
 apium examina. 501  
 apollo Pythius oraculum edit, Spartam nulla re alia nisi auritia esse peritaram. 301  
 ἀποθέματα à sene Catone collecta. 150  
 apparatus magnifici. 74  
 apparatum opipare coniuui. 383  
 apparuit in tuo nomine munus illud. 640  
 appellare eum, quicun bella geras tā molli nomine. 67  
 appetere alienum, & id quod alteri detraxeris, sibi assu-

## I N D E X.

- mere. 336  
 appetitus—efficiendum est,  
   vt appetitus rationi obedi-  
   ant, eamque neque præ-  
   currant, neque propter pi-  
   gritiam, aut ignauiam, de-  
   ferant. 149  
 appetitus impellit ad agen-  
   dum. 173  
 appetitus—pars animorum  
   posita est in appetitu, quæ  
   ōpia Græcè, quæ hominem  
   huc & illuc rapit. 149  
 appetitus rationi parere de-  
   bet. 183  
 appetitus rationi obedien-  
   tem præbere debemus. 173  
 appetitus omnes contrahendi,  
   & sedandi, excitandaque a-  
   nimaduersio, & diligentia,  
   &c. 149  
 app. Clodius Cæcus. 460  
 appius senex & cæcus ma-  
   gnam domum regebat. 475  
 applicare se ad—bestiae re-  
   quirunt, atque appetunt, ad  
   quas se applicent eiusdem  
   generis animanteis. 614, &  
   615  
 applicare—cūm similis ani-  
   mus se ad virtutem alterius  
   applicat, & adiungit. 588  
 applicatio animi. 573  
 apponere licitatem—ven-  
   ditor licitatem non ap-  
   ponet. 286  
 apponere qui contra liceatur  
   —empor non apponet, qui  
   contra liceatur. 286  
 aptus totus ex sese, qui in se
- vno ponit omnia. 655  
 aqua, & ignis—non aqua, nō  
   igni pluribus locis utimur,  
   quam amicitia. 566  
 aqua hæret, vt aiunt. 430  
 aqua inter cutem—medica-  
   mentum ad aquam inter-  
   cutem. 410  
 aquæ tentatae—quo utramur  
   in amicitia quasi aquis ten-  
   tatis, sic aliqua ex parte pe-  
   riclitatis moribus amico-  
   rum. 602  
 aquatio—hic aquatio: hac  
   villa iti carere non pos-  
   sunt. 383  
 aquillius collega & familiaris  
   Ciceronis protulit de dolo  
   malo formulas. 383  
 aquilliana definitio dolimali.  
   383  
 aratus Sicyonius iure lauda-  
   tur—multa hic de Ara-  
   to. 306  
 arbitrium rei vxoria—in  
   quo additur Aequius me-  
   lius. 383  
 arbitria, in quibus additur ex  
   fide bona. 290  
 arcessere capitis innocentem  
   in iudicium. 268  
 arcessitus in ciuitatem Cice-  
   ro, non ciuitate pulsus. 665  
 archipirata, nisi æqualiter  
   prædam dispertiat, aut occi-  
   detur à socijs, aut relinque-  
   tur. 258  
 archytas Tarentinus. 620  
 archytæ Tarentini, magni in  
   primis, & præclarí viri ora-  
   tio.

## I N D E X.

- tio. 480  
 artior me, quam solebat, som-  
   nus complexus est. 696  
 arganthonus quidam fuit Ga-  
   dibus, qui octoginta re-  
   gnauit annos, centum vi-  
   ginti vixit. 520  
 argentaria facere. 383  
 argentum calatum. 677  
 ariopagus à Solone constitu-  
   tus. 122  
 aries—juamuis murum ries  
   percussit. 67  
 aristides iustus nominatus. 332  
 aristides consilium Themisto-  
   clis, quod utile videbatur,  
   inhonestum iudicavit, at-  
   que iccirco à populo impro-  
   batum est. 377  
 aristides talis Athenis, qualis  
   Roma Fabricius. 407  
 aristio Chius Tithonum facit  
   de sene cture disputaté. 438  
 aristoteles, & Isocrates vi-  
   terque suo studio delecta-  
   tus contemptus alterum. 29  
 aristotelis sententia laudatur  
   de effusionibus pecuniarū,  
   quæ fuit ad multitudinem  
   deliniendum. 279  
 arma—parui sunt foris ar-  
   ma, nūi est consilium do-  
   mi. 123  
 arma senectutis apertissima. 448  
 arpinates. 72  
 arripere—pueri cūm artes  
   difficiles discant, ita celeri-  
   ter res innumerabiles arri-  
   piunt, vt eas non tum pri-  
   mū accipere videatur, sed
- reminisci, & recordari. 528  
 arripere audiē litteras. 463  
 arripere—non cani, non ru-  
   gæ repente auctoritatem  
   arripere possunt. 514  
 artis præcepta nihil profundit  
   sine viu, & exercitatione.  
   107  
 artes, quæ in veri vestigatione  
   verlantur. 69  
 artes, quibus aut prudentia  
   maior ineft, aut non me-  
   diocris utilitas queritur, vt  
   medicina, vt architectura,  
   vt doctrina rerum honesta-  
   rum. 188  
 artes voluptatum ministrae,  
   non sunt probandæ. 188  
 artium multitudo ab homi-  
   nibus inuenta. 223  
 artificia, quæ liberalia, quæ for-  
   dida. 187  
 ascendere ad altiorem gra-  
   dum. 284  
 ascendere in equum. 474  
 asciscere—bonos boni dili-  
   gunt, asciscunt, quasi pro-  
   pinquitate coniunctos, at-  
   que natura. 589  
 ascribere ad amicitiam—pe-  
   tituit, vt se ad amicitiam ter-  
   tium ascriberent. 352  
 assentatio quamuis pernicio-  
   sa sit, nemini nocere potest,  
   nisi ei, qui eam recipit. 624  
 assentatio vitiorum adiutrix,  
   procul amouenda est. 620  
 assentatoris callidi descriptio.  
   621 & 625  
 assentatoribus non esse pa-

I N D E X.

- refaciendas aures. 138, & 139  
 assentiri omnia. 621  
 assequebatur maiorem laudem. 322  
 assequi licentiam—maguis & diuinis bonis hanc licentiam assequabantur Socr. & Aristippus. 185  
 astrologiae studiosus C, Sulpicius. 69  
 astus non placuerunt veteribus Rom. 289  
 astutiae tollendæ sunt. 289  
 athenienses cùm Persarum impetum nullo modo sustinere possent, virbe relieta, coniugibus & liberis Træzene depositis, naues consenderunt, &c. 376  
 athenienses durius, qui sciuerunt, vt Æginetis, qui classe valeant, pollices præciderunt. 376  
 athenienses scire quæ recta sunt, sed facere nolle. 515  
 athletæ se exercentes in curriculo. 272  
 atilius Calatinus. 510  
 atilius Græcè scriptis historiam. 427  
 atreo dicente oderint dum metuant plausus excitantur. 144  
 atrienses serui. 677  
 attendere animum—cùm animum attenderis. 344  
 attinet—neque enim naturæ repugnare attinet. 159  
 attingere—cognitio veri maxime naturam attingit hu-
- manam. 68  
 auaritia—caput est in omni procreatione negotij, & muneris publici, vt auaritiæ pellatur etiam minima fulpicio. 300  
 auaritia—nullum vitium trius, quæm auaritia, præfertia in principiis, & gubernantibus. 301  
 auaritia senilis quid sibi velit, non intelligo, potest enim quidquam esse absurdius, quam, quod minus via restat, eo plus viatici querere. 516  
 auctoramentum—in mercenarijs ipsa merces est auctoramentum seruitur. 187  
 auctoritas aduersus hostem æterna auctoritas. 67  
 audacia in multis, in paucis facultas. 292  
 auditus, sensus in hominibus maximè hebes. 258  
 auertere aliquem ab err ore obiurgatione, aut conuicio. 405  
 auertere animum ab aliquo —tu velim animum à me parumper auertas: Lælium loqui ipsum putes. 547  
 auferre spem rei alicuius faciendæ. 328  
 augere, & sollicitum habere. 516  
 augere suum commodum alterius incommodo, magis est contra naturam, quam mors, quam pauperitas &c.

I N D E X.

- tas, &c. 335  
 augere te scientia potest—  
 augere exemplis. 27  
 augere verbis suum munus—extenuare. 293  
 augur—est boni auguris, meminiſſe, se maximis reip. temporibus præsto esse debere, solumque optimo maximo ſe confiliarium, atque administrum datum, ſibi eos, quos in auxilio eſſe iuſcerit, augurium facturi erant augures. 288  
 auitus—hoſpes tuus auitus. 477  
 auocat à rebus gerendis ſenatus. 451  
 aurata tecta. 687  
 aures—hoc ſonitu oppletæ aures obsurduerunt. 700
- B
- B** accx arborum, & fruges terræ. 443  
 baiuli, atque operarij. 660  
 barbatulos mullos exceptare de piscibus. 677  
 bargulus Illyricus latro, magnas opes habuit. 258  
 bellicæ res—adolescenti pri-macommendatio ad gloriâ, si qua ex bellicis rebus comparari potest. 262  
 bellua tantum, quantum ſenſu mouetur, ad id ſolūm, quod adeſt, quodque præſens eſt, ſe accommodat, &c. 59
- bellū ita ſuscipi debet, vt nihil aliud, niſi pax quæſita, videatur 124  
 bellum Italicum propter iudiciorum metum excitari. 301  
 bellum nullum eſt iustum, niſi quod aut rebus repetitis geratur, aut denuntiatum antè fit, & indicitum. 67  
 bellum Pyrrhi. 407, & 460  
 bellum Punicum ſecundum. 376  
 bellum tertium Punicum M. Catonis confilio illatū. 124  
 bellum—temere in acie versari, & manum cum hoſte configere, immane quidam, & belluarum ſimile eſt. 124  
 bella cur ſuscipienda. 66  
 bella, quibus imperij gloria proposita eſt, minus acerba gerenda ſunt. 68  
 bellorum exitus erant aut mites, aut necessarij. 242  
 benefacta male locata, malefacta arbitror. 284  
 beneficentia, & liberalitate nihil eſt naturæ humanae accommodatius. 95  
 beneficentiaz, & liberalitatis ratio duplex eſt. 275  
 beneficium collocare—in beneficio collocando, & in referenda gratia, ſi cetera paria ſunt, hoc maximè officij eſt, vt quisque maximè opis indigeat, ita ei potissimum opitulari. 99

## I N D E X.

- beneficium melius apud bonos, quam apud fortunatos, collocatur. 296  
 beneficium potius conferendum in virum bonum inopem, quam in opulentum. 293  
 beneficium — spectandi mores, in quem beneficium eō feratur, &c. 95  
 benefici, & liberales sumus, non ut exigamus gratiam, sed natura propensi ad liberalitatem sumus. 575  
 beneficij immemorem omnes oderunt. 286  
 beneficia collocare — in beneficiis collocandis mores hominum, non fortunam sequi oportet. 293  
 beneficia, quæ opera, non largitione dantur, hæcum in vniuersam rem publicam in singulos ciues conferuntur. 287  
 beneficia vltro & citro data, acceptaque. 103  
 benevolentia fidelis est vel ad perpetuitatem. 238  
 benevolentia non ardore amoris, sed stabilitate potius, & constantia iudicari debet. 98  
 benevolentia sublata, omnis è vita sublata iucunditas. 628  
 benignus fit hominibus indigentibus aut opera, aut pecunia. 275  
 benignitas, quæ constat ex opera, & industria, & honestior
- est, & latius patet, & potest prodesse pluribus. 275  
 benignitas non debet esse maior, quam facultas. 25  
 benignitas reip. utilis, quæ: 246  
 benignitas quænam largitioni munera anteponenda. 286  
 benignitate benignitas tollitur. 275  
 bestia ex se natos ita amant ad quoddam tempus, & ab eis ita amantur, ut facile carum sensus appareat. 574  
 bias sapiens habitus unus ex septem. 598  
 bias, qui numeratur inter septem, laudatur, cuius cum patriam Prienam cepisset hostis, ceterique ita fugeret &c. Ego vero inquit, omnia mea tecum porto. 647  
 biantis sententia, ita quemque amare oportere, ut si aliquando esset osurus. 596  
 blandus amicus à vero secerne, & internosci potest. 622  
 bona ætas. 497  
 bona ðæx opertum. 666  
 bona fidei nomen latissime manat, versatürque in tuteulis, societatisbus, fiducijs, mādatis, rebus emptis, venditis, conductis, locatis, quibus vita societas continetur. 290  
 bonitas — sumi cuiusque bonitas perfugium est omnium. 284

bonum

## I N D E X.

- bonum — quidquænam bonum est, quod non eum, qui id possidet, meliorem facit? 649  
 bonum — id solum bene fieri quod rectè sit, & honestè & cum virtute: id solum bonū, quod rectū, & honestum, & cum virtute est. 647  
 bonum non potest cuiquam malo esse. ibid.  
 bona non perdidit, si quis pecus, aut supellecītem amiserit. 647  
 bona quæ dicuntur, & improbi habent, & absunt probis. 647  
 bona — sape maiorum nostrorum requiro prudentiam, qui hæc imbecilla, & commutabilia pecuniæ membra verbo bona putauerunt appellanda. 647  
 bonus vir est, qui prodest quibus potest, nocet nemini. 286  
 bonus vir, inops, etiā si referre gratiam non potest, habere certè potest. 293  
 bono viro, & grato benignè faciendum. 284  
 bonum virum esse, semper est utile quia semper honestū est. 286  
 bonis viris honesta, non occulta queruntur. 348  
 bonos alios, alios sapientes existimant. 286  
 breue tempus ætatis satis longum est ad bene honestē-
- que viuendum. 520
- C Adit in nostram intelligentiam. 335  
 cælla vinaria, olearia, penaria. 506  
 cælum — certum esse in cælo locum, vbi beati ævo sempiterno fruantur, qui patriam conseruarint, &c. 697  
 cæli stelliferi cursus aceto, & excitato mouetur sono. 699  
 capio, & Philippus iterum cess. 481.  
 cæsar Catuli patris frater, sale, & facetijs vicit omnes. 173  
 cæsar — Ecce tibi, qui rex populi Ro. dominusque omnium gentium concupierit, idque perfecerit. 405  
 cæsar — Hunc tu quas conscientiae labes in animo censes habuisse, quæ vulnera? 406  
 cæsar inuidiose carpitur & notatur. 307. & 308  
 cæsar — secutus est, qui in causa impia, victoria etiam fœdiore, vniuersas provincias, regionesque uno calamitatis genere comprehendenteret. 242  
 cæsar semper habebat in ore Gracos versus Euripidis de Phœmissis. 404  
 cæsar, tyrannus — quem armis oppressa pertulit ciuitas. 238

## I N D E X.

- C.Blosius Cumanus hospes  
Scæuolarum,Ti.Cracci a-  
ninus. 578
- c.Canius eques R. 383
- c.Cæsar L.filius—magnus le-  
pos erat in C. Cæsare L.  
filio. 155
- c.Cæsaris temeritas:qui omnia  
diuina , & humana iura per-  
uerit,&c. 74
- c.Claudius App.silius magnifi-  
centis,adilitate functus est.  
280.
- c.Curio dicebat,se , sine ullo  
munere adeptum esse maxi-  
mos honores. 283
- c.Duillius , qui Poenos primus  
classe deuicit, delectabatur  
crebro funal , & tibicine à  
cena rediens. 486
- c.Fabricij continentia. 653
- c.Fannius. 546.& 547
- c.Gracchi frumentaria magna  
largitio. 297
- C.Gracchi tribunatus. 586
- C.Lælius—in C.Lælio multa  
erat hilaritas. 155
- C.Lælius,qui sapiens vsuper-  
tur,prætor Viriatum Lusitan-  
num fregit. 258
- C.Licinius Crassus. 624
- C.Mancinus. 423
- C.Marius Q.Metellum,cuius  
legatus erat, apud populum  
Rom. criminatus est. 400.  
& 401.
- C.Marius secundis in rebus v-  
nus ex fortunatis homini-  
bus,in aduersis vnus ex sum-  
mis videbatur. 655
- C.Papirius influebat in aures  
concionis miris blanditijs,  
&c. 623
- C.Pontius Samnis. 300.&481
- C.Pontius Samnis, C.Pontij  
Samnitis optatum. 300. &  
301
- C.Salinator. 446
- C.Sergius Orata. 289
- C.Seruilius Ahala Sp. Melium  
regnum appetentem occu-  
parum interemit. 505
- C.Sulpicius astrologiæ studio-  
sus. 69
- C.Sulpicius Gallus,astrologus  
498
- calamitatum societas, diffi-  
ciles plerisque videtur. 602
- calculi—vocare ad calculos a-  
micitiam. 595
- callida consilia quibusdam vi-  
dentur quieris cogitationi-  
bus splendidiora, & maiora.  
129.
- callicratidas, apertissimus , &  
simplicissimus. 156
- callicratidas Lacedemoniorū  
dux Peloponensi bello,cum  
multa fecisset egregiè, ver-  
tit ad extremum omnia. 130
- callipho & Dinomachus cum  
honestate voluptatem copu-  
larunt. 430
- calumnia , & nimis callida , &  
malitiosa iutris interpreta-  
tio. 65
- campus rhetorum de Mara-  
thonē,Salamine,Platæis,&c.  
108
- campus—suppedant & cam-

## I N D E X.

- pus noster , & studia venan-  
dij,honesta exempla luden-  
di. 150
- canorum — omnino canorū  
illud splendescit etiam ne-  
scio quomodo in senectute.  
468
- cani,rugæ — non cani , non  
rugæ repente auctoritatem  
arripare possunt. 514
- cannensis pugna. 427
- cannensi calamitate accepta  
maiores animos habuit po-  
pulus R. quam vñquam re-  
bus secundis. 376
- cantare in foro. 184
- capedines , & fistiles vrnule  
Numæ Pompilij. 2,8
- capit ex suis prædijs sexcenta  
sestertia : ego centena ex  
meis. 251
- capiebat earum rerum exem-  
plum ex similitudine ineu-  
tis ætatis. 578
- capere consilium — cùm  
consilium principes cepi-  
sent , cognationem Super-  
bi, nomenque Tarquinio-  
rum , & memoriam regni  
esse tollendam. 351
- capere laudem maximam ex  
aliqua re. 243
- capere molestiam. 228
- captus,& fraudatus. 290
- captivi decem,quos post Can-  
nensem pugnam iuratos ad  
Senatū misit Hannibal se in  
castra reddituros ea quorum  
erant potiti Pœni,nisi ,&c.  
427
- caput ad beatè viuendum, fe-  
curitas. 587
- caput est in omni procuratio-  
ne negotij , & muneris pu-  
blici,vt avaritiae pellatur e-  
tiam minima suspicio. 300
- capitum iugatio , & religatio;  
& propagatio. 501
- capitalis L.Philippi oratio ad  
æquationem bonorum per-  
tinens. 297
- capitalis Ereocles. 405
- carceres — è carceribus emis-  
sus. 231
- carere—satiatis , & expertis  
iucundius est carere,quam  
frui. 487
- caritas inter natos,& parentes;  
dirimi,nisi detestabilis cele-  
re non potest. 574
- caritas—quibus rebus possi-  
mus facilissime eam , quam  
volumus,ad ipsi cum hono-  
re & fide caritatem. 243
- caritate,benevolentiaque su-  
blata,omnis è vita sublata iu-  
cunditas. 618
- carpere fructus—honestè æta  
superior ætas fructus æcta  
ritatis carpit extremos. 510
- castigandi vinculis , & carcere  
sicarij,&c. 395
- castigatio contumelia vacare  
debet. 137
- castigatione clementi magnâ  
partem licet vti. 177
- catadupla — sicut ubi Nilus  
ad illa, quæ Catadupa nomi-  
nantur,præcipitat ex altissi-  
mis montibus,e a gens, quæ

## I N D E X.

- illum locum incolit, sensu audiendi caret. 318  
 cato apud Ciceronem de se dicit. 473  
 cato cum Socrate comparatur. 556  
 cato Bruti auunculus. 639  
 cato & diutissimè senex fuit, & ipsa senectute, pro certis floruit. 546  
 Cato Fil.—proficisci car ad Catonem meum, quo nemo vir melior natus est, nemio pietate præstantior. 533  
 cato maior—de agricultura in Catone maiore satis multa dixit Cicero. 188  
 cato nimis præfracte defendere videbatur ærarium & vettigalia. 408  
 cato perfectus Stoicus, ea sentit, quæ non probantur in vulgus.  
 cato perstudiosus in senectute fuit Græcarum litterarū. 438  
 cato, senex Græcas litteras dedit. 463  
 catonis dictum scitum, Melius de quibusdam acerbos inimicos mereri, quam blandos amicos. 621  
 catonis disputandi genus. 639  
 catonis sensis responsum, cum esset ab eo quæstum, quid maxime in re familiaris expedire. 310  
 catoni moriendum potius, quam tyranni vultus adspiciendus fuit. 160
- catuli optimè vti lingua Latina videbantur. 173  
 caucasicus—num aut tuum, aut cuiusquam nostrum nomine vel Caucasicum trascendere potuit, vel Gangem tranare. 701  
 caudium—malè pugnatum apud Caudium. 413  
 cauea—qui clamores tota cauea, &c. 567  
 caueant intemperantiam adolescentes. 167  
 cauere in iure. 287  
 causa, non natura, distinguunt hominum facta. 661  
 causarū plurima genera, quæ eloquentiam desiderant. 267  
 cautiones multas habet liberalitas. 94  
 celare Deos, & homines—lati enim nobis, si modò in philosophia aliquid profecimus, persuafum esse debet, si omnes Deos hominemque celare possimus, nihil tamen auarè, nihil iniuste, nihil libili nosē, nihil incontinenter esse faciendū. 347  
 celare—tacere—aliud est celare, aliud tacere. 379  
 celare quid sit. 382  
 celandi, & occultandi spes, opinio que remouenda est, in omni deliberatione. 347  
 celeberrimi dies—ex multis diebus, quos in vita celeberrimos, letissimosque vidit Sei-

## I N D E X.

- Scipio, ille dies clarissimus fuit, &c. 556  
 celsitas animi, & magnitudo, itemque communitas, justitia, liberalitas, magis est secundum naturam, quam voluptas, quam vita, quam diutina. 336  
 celtiberi, Cimbri inimici populi R. 84  
 censorum notationes, & animaduersiones. 424  
 cethego, Tuditanoque cos. 498  
 cernimus in alijs magis, quam in nobis, siquid delinquitur. 184. & 185  
 cernere animo. 532  
 cernere vitam ferro. 68  
 certare armis cum hoste vtilius Fabricio fuit, quam venenis. 407  
 certarij, lanij, coqui, fartores, &c. 188  
 cethego homini non probatis simo spes imperij seruire coegerit eos, qui sibi esse amplissimi videbantur. 678  
 chorus virtutum. 156  
 cibi, & potionis tantum sumendum est, vt reficiatur vires, non oprimentur. 475  
 cicero—Occurrunt autem nobis, & quidem à doctis, & eruditis, quærentibus, satissime cōlantar facere videamur: qui, cum percipi nihil posse dicamus, tamen hoc tempore præcepta officij persequamur. 211  
 cicero ad suam utilitatem semper cum Græcis Latina coniunxit. 28  
 cicero adolescens contra L. Sulla dominantis opes pro Sex. Roscio Amerino dixit. 268  
 cicero cum rebus suis gestis in consulatu nullum triumphum esse conferendum dicit. 123  
 cicero de se in paradox. 2. & paradox 4. 655. & 665  
 cicero ea philosophia plus vtebatur, quæ peperit dicendi copiam. 639  
 cicero honores amplissimos cunctis suffragijs adeptus est suo anno, quod contigit preterea nemini. 284  
 cicero lamentatur, & deplorat reip. statum, & temporum calamitatem. 322  
 cicero, quidquid ad rem. attulit, à doctoribus, & à doctrina instructus ad eam, & oratus accessit. 192  
 cicero Xenophontis Oeconomicum adolescentis, è Græco in Latinum sermonem conuertit. 309  
 ciceronis libri Academicī. 272  
 ciceronis libri de rep. 284  
 ciceronis pecunia ad vulgi opinionis mediocris. 687  
 ciceronis sententia in philosophia. 210  
 ciceronem F. in bello ciuili a. læ alteri præfecerat Brütus. 262

## I N D E X.

- cineas Thessalus. 484  
 circe, & calypso. 160  
 circulus clucus—orbis lacte<sup>o</sup>.  
     <sup>garambas.</sup> 698  
 circuli—sermo in circulis, disputationibus, congregacionibus familiarum versari debet. 173  
 circumfluere omnibus copijs, atque in omnium rerum abundantia viuere. 594  
 circumscriptio adolescentium. 385  
 circumsonare aures tuæ talibus vocibus debent. 323  
 circumspicere—numquam ne homo ametissime te circumspicis? 666  
 circumspicere—hac talia circumspicienda sunt. 107  
 circumueniri—ne tenuiores propter humilitatem circumueniantur. 309  
 circumueniri, virginique potentis alicuius opibus. 268  
 ciues—ciuium rationem esse habendam, non solum propinquorum. 340  
 ciuibus multa sunt inter se communia. 102  
 ciuitas non est omnis conuentus etiam ferorum, & immannium, &c. 664  
 ciuitas sine seueritate administrari non potest. 137  
 ciuitates—concilia, cœtu<sup>s</sup> que hominum iure sociati, quæ ciuitates appellantur. 697.  
 claudere rem familiarē—non
- ita claudenda est res familiaris, vt eam benignitas aperire non poscit. 276  
 claudicare in officio. 164  
 clauum tenere. 460  
 claviculi—vitis claviculis suis quasi manibus, quicquid est nact<sup>s</sup>, complectitur. 501  
 cleombrotus inuidiam timet, temere cum Epaminonda confixit. 130  
 en. & P. Scipiones duo propugnacula bellī Punici. 648  
 en. Octavius primus ex illa familia cōsul factus est ei honor fuit, quod plenam dignitatis adificasset in Palatio domum. 177  
 en. Pompeius abundans bellīcis laudibus. 123  
 coagmentare—cūm eadem, quæ coagmentauit, natura, opus ipsa suum dissoluit. 523  
 cocles, Decij. Cn. & P. Scipiones M. Marcellus. 108  
 coelitem contra omnes hostiū copias tenuit in ponte, solū officium fortis, & magni viri. 648  
 cœtus, & frequentia hominū—a cœtu, frequentiā; hominum se in solitudinem, tanquam in portum, recipiebat. 322  
 cogitatio in verò exquirendo maximè versatur. 173  
 cogitatio omnis, motuque animi in duobus versatur. 69  
 cogitatio tacita—tantum rationis

## I N D E X.

- boris non habemus, vt cogitatione tacita à solitudine abstrahamur. 322  
 cognovit caussas & eorum, qui aliena tenebant, & eorum, qui sua amiserant. 307  
 cognitionis, & scientia—omnes trahimur, & ducimur ad cognitionis, & scientiae cupiditatem. 68  
 cognitionem rerum aut occultarum, aut admirabilium ad bene, beatęque viuendum necessariam ducimus. 60  
 colere officium—negligere opp̄n. 44  
 colere virtutem—colendam virtutem diceret, quod ea efficieas virilitatis esset. 328  
 colligata sunt inter se, & implicata. 66  
 colligo omnia antiquitatis monumenta. 479  
 colligere—bene etiam colligit, hac pueris, & c. grata. 280  
 colligere benevolentiam ciuium blanditijs, & afflentionibus. 601  
 collocare se totum in cognitione, & scientia. 192  
 colluvio—cūm ex hac turba, & colluvione discedam. 533  
 color excitationibus corporis twendus est. 172  
 comes—dux—non se committit illius furoris, sed dum præbuit. 579  
 comitatu nobilium iuuenium fortunati Scipiones. 469  
 comici, stulti sepes al. coamicati. 228  
 comis erga Lylandrum, & humanus. humanus Cyrus. 509  
 comitas—affabilitaque fermonis difficile dictu est, quantopere concilier amicos. 267  
 comitate condita grauitas. 449  
 commendatio prima adolecentis proficiscitur à modestia, &c. 266  
 commentandi caussa in horos D. Brutii auguris veneficimus. 551  
 communis—nec communis gladijs vteretur. 461  
 commissa culpa. 659  
 commodare alteri—quidquid fine detimento commodari possit, id tribuatur vel ignoto. 102  
 commode, quicumque dixit—Pecuniam qui habeat, &c. 293  
 commode dicta—breuiter, & commode dicta. 545  
 commodi mores. 594  
 commorandi nobis natura diuersiorum, non habitandi locum dedit. 533  
 commouet omnium animos specie sua honestum. 251  
 communitas, & societas cum hominibus non est propter necessitatem vitæ. 149  
 compages—inclusi in his corporibus corporis. 527  
 comparata vitæ ratio—ita

## I N D E X.

- vitæ; natura quæ ratio compara-  
rata est, vi alia actas oriatur  
ex alia. 628
- comparatio vtilitatum. 309
- compendium --- compendij  
sui causa. 286
- competitor --- aliter si est ini-  
micus, aliter si est competitor  
contendimus. 68
- compescenda virtus senectutis.  
178
- complector animo. 451
- complecti animo, & cogita-  
tione. 163
- complexus--- me artior som-  
nus complexus est. 696
- compositum edictum. 401
- compunctus notis Threicijs,  
al. Thraeicijs, al. Threiciis. 241
- compta, & mitis oratio diserti  
senis. 468
- concentus actionum multo  
maior, & melior est, quam  
sonorum. 184
- conciliatio, & consociatio ge-  
neris humani. 186
- conciliatrix amicitia virtutis  
opinio. 579
- concilium, & cœtus animorum.  
533
- concipit dedecus ipsa sene-  
ctus, si libidinosa sit. 167
- concipere verbis iuslurandum  
421
- confiscere sibi mortem aliis  
debet in eadem causa, aliis  
non debet. 160
- concordia res omnes contra-  
hit, discordia dissipat. 566
- concrepare digitis--- si vir bo-
- nus habeat hanc vim, vt, si  
digitis concreperit, possit  
in locupletium testamenta  
nomen eius irrepere, hac vi  
non vtatur. 396
- concurrus prædonum. 663
- condimentum amicitia non  
mediocre, sermonum, atque  
morum suauitas. 603
- conditus--- comitate condita  
grauitas. 210
- confecisti longam viam. 445
- confectus seneccute. 416
- conferebam omnes meas cu-  
ras, cogitatione que in rep.  
210
- conferamus in pauca. 430
- conferre aliquam discrepan-  
tiam in actiones, omnem  
que vitam. 160
- conferre cum aliquibus fami-  
liares sermones. 257
- conferre--- fructus præstan-  
tia cum maximè capit, ut  
cum in proximum quem-  
que confertur. 605
- conferre--- nihil conferunt in  
vitæ societatem studij, nihil  
opera, nihil facultatum. 64
- conferre nimis magnum stu-  
dium, multamque operam  
in res obscuras, atque diffi-  
ciles, easdemque non necel-  
larias. 68. & 69
- conferre officia in eos, quos  
speramus nobis profuturos.  
98
- conferre pecuniam in magnū  
aliqd tempus rep. 412
- confinia--- in vicinitatibus, &

con-

## I N D E X.

- confinijs aequus, facilis, siul-  
ta de suo iure concederas.  
286
- cōfari--- quibus ex rebus con-  
flatur, & efficitur id, quod  
quærimus honestum. 61
- cōgerere--- non est verendū  
ne plus æquo in amicitiam  
congeratur. 595
- cōglutinatio--- omnis con-  
glutinatio recens, ægræ, in-  
ueterata, facile diuellitur.  
524
- cōneci illa ludens in commu-  
nes locos. 550
- cōneci sunt omnium in te  
oculi. 550
- cōniugium--- prima societas,  
in coniugio est, proxima in  
liberis, deinde vna domus,  
communia omnia: id autem  
est principium vrbis, & quasi  
seminarium reip. 102
- cōniunctionis appetitus pro-  
creandi caussa, omnium a-  
nimantium commune est.  
59
- cōnniti animo--- quantum  
cōnniti animo potes, quant-  
um labore contendere. 323
- cōnnubia, & affinitates. 103
- conscientia bene actæ vitæ,  
multorūmque benefacto-  
rum recordatio iucundissi-  
ma est. 448. & 449
- conscientia peccatorum--- ex  
conscientia peccatorum ti-  
mor, dominus fæuissimus.  
678
- conscientia labes--- hunc tu-
- quas conscientia labes in a-  
num censes habuisse? 406
- conscientia--- te conscientia  
stimulant malefactorū tuo-  
rum. 656
- conscripterunt edictum. 401
- consensio improborum con-  
tra patriam, non modò ex-  
culatione amicitia regen-  
da non est, sed portius omni  
supplicio vindicanda. 586
- consensio voluntatum, studio-  
rum, sententiarum. 558
- consentaneum--- non est spe  
Etandum quid dicat Epicu-  
rus, sed quid consentaneum.  
ei dicere. 430
- consenserunt vires. 469
- consequi gratiam--- ne illam  
quidem consequuntur, quam  
putant, gratiam. 306
- consequi imitatione tan-  
tam ingenij præstantiam  
non possumus. 321
- conservare iuslurandum. 416
- confilium fidele deliberanti  
dare. 102
- confilium verum dare gaudea-  
mus liberè. 587
- confilij capiendi deliberatio  
triplex. 57
- confitiones--- infistiones. 501
- consociati accusatorum, atque  
iudicium greges. 686
- consociatio hominum, atque  
communitas, vincit cogni-  
tionis studium. 193
- constat inter omnes philoso-  
phos, qui vnam virtutem ha-  
beat, omnes habere. 252

## Í N D E X.

constare in vita perpetuitate nobismetipſis vt poſſimus, cura multo maxima adhibenda. 164  
cōſtare ſibi—parum ſibi conſtare in rebus contrarijs. 119  
conſtantis aetas, quaꝝ media diſtitur. 525  
conſtantī homini non arbitror hoc poſſe contingere, vt vla intermisſio fiat officij. 555  
conſtantia tenenda ei eſt, qui conſilium vita, ad naturaſuꝝ non vitioſa genus conſulerit. 164  
conſtituere — ſi conſtitueris te cuiquam aduocatum in rem p̄ſentem elle venturum. 65  
conſtituendi ſunt in amicitia fineſ, & quaſi termini dili- gendi. 594  
conſtitutio firma corporis. 428  
conſtituta resp. 258  
conſuetudo auget benevolen- tiam. 575  
confuſio, & cogitatio facere in- iuriā. 74  
contagioneſ malorum. 306  
contaminare ſe ſcelere ſcien- tem. 345  
contemplatio rerum, & cogni- tio, inſtuaſiſ ſine ſocio, aut amico. 620  
contemnuatur ij, qui nec ſibi, nec aliter, vt dicitur. 254  
contendimus inter nos verbis, non pugniſ. 660

contendere ad magna rectis ſtudijs. 262  
contendere ciuiliter. 68  
contendere labore. 323  
contendendum non eſt quid- quam contra æquitatem, neque pro iniuria. 296  
contentio orationis vbi loci habeat. 173  
contentum ſuis rebus eſt, ma- ximae ſunt, certiſſimaeque diuitiae. 688  
contineſe in ſuis finibus. 142  
continentia in vietu omni atq; cultu, corporis tuendi cauſa. 309  
contrarijs rebus dolent ij, qui contrarias amant, vt iuſti maximè dolent rebus iniuiſt, &c. 588  
controverſia inter Oratam, & Gratidianum: Oratam Cralfus, Gratidianum defendebat Antonius. 289  
conuenienter naturaſe viuere, Stoicis ſummi bonum. 327  
conuertere omnium heredita- tes digitorum percusſione. 400  
conuertere ſe ex homine in belluam. 404  
conuiuium — accubationem epularum amicorum, qua vita coniunctionem habe- ret, conuiuium nominarū R. melius quam Græci, qui hoc idem tum compotatio- nem, tum concenationem vocant. 296

## Í N D E X.

vocant. 486  
conuiuiata tempeſtiua. ibidem.  
conuiuiorū delectationes non corporis voluptatibus magis, quam cœtu amico- rum, metiebatur Cato. ibi.  
cooptatio collegiorum ad po- puli beneficium tranſfere- batur. 624  
corinthia opera. 648  
corinthi diſturbatio. 376  
coriolanus ingratæ patriæ in- iuriā non tulit: bellum ei intulit. 586  
coriolanus mortem ſibi con- ciuīt. ibidem.  
coriolanus — ſi Coriolanus ha- buit amicos, ferre contra pa- triam arma illi cum Corio- lano non debuerunt. 578  
corporis noſtri magnam na- ra ipſa videetur habuisse ra- tionem. 168  
corpora exercitatione, & defa- tigatione ingraueſcant. 475  
corroboratiſ iam, confirmatiſ que & ingenij, & aetatiſ. 610  
corruere in extremo actu. 515  
corruptelam iudiciiſ modiſ. 251  
corrupti mores, deprauatique ſunt admiratione diuitiarū. 296  
cralfus dicere solebat, diuitem eſſe neminē, niſi qui exer- citum alere poſſet ſuis fru- etibus. 676  
cralfus negabat, villam ſatis ma- gnam pecuniam eſſe ei, qui

in rep. princeps vellet eſſe, cuius fructibus exercitum alere non poſſet. 74.686  
cralfi oratio — in oratione Cralfi scriptum copioſe fuit, locupletari tenuiores, redimiſ ē feruitate captos à ſenatorio ordine. 286  
cratippus Peripateticus. 212  
crematum à Catone corpus filii. 533  
criminib⁹ inferendis delecta- ri non debet amicus, aut credere oblatiſ. 603  
cruelitas — hominum natu- re, quam ſequi debemus, ma- xime inimica eſt crudeli- tas. 376  
cultri tonforij. 241  
cumulauit eloquentia bellī- cam gloriam 163  
cunæ — vagire in cunis. 533  
cuniculos agere in ærarium. 409

cupiditas principatus facile re- naſcitur in animi magnitu- dine. 109

cupiditatis fitis nunquam ex- pletur. 646

cupiditatis honoris, imperij, potentiæ, gloriæ plerumque exiſtunt in maximis ani- mis, ſplendidiffimisque in- genij. 74

cupiditas honoris, imperij, &c. quā dura eſt domina, quam imperiosa, quam vehe- niens

678  
cupiditatis innumerabilis — qui cupiditatis innumerabili-

I N D E X.

- biles habet, quæ breui tempore maximas copias exhauiare posint, si diues nullo modo appellari potest. 685 cupiditates—qui non potest cupiditatibus suis imperare, cui tandem hic libero imperabit? 675 cura rerum alienarum difficilis. 64 curam non esse fugiendam: alioqui enim virtutem quoque esse fugiendam. 587 curatio valetudinis, nauigatio, agricultura sine opera hominum nulla esse potuisse. 222 curatio valetudinis, & pecunia. 309 curio ad focum sedenti cùm Samnites magnum auri pôdus attulissent, repudiati ab eo. 505 curio, cùm caussam Transpadanorum defendebat, addebat, vincat reip. vtilitas. 409. curiosum esse non oportet peregrinum in aliena rep. 168 curricula mentis. 480 cursus honorum. 510 cursus—naues in cursu frumento onustas petentes Rhodum viderit. 379 cursus totius vitæ facilè videt homo. 60 custodia rei suæ—vt sit libera, & non sollicita suæ rei cuiusque custodiæ. 302 custodia rerum suarum—spe

- custodiæ rerum suarum vrbiuum præfida quæreabant homines. 297 cymbarum ante oculos multitudine. 383 cynici non sunt audiendi, qui, &c. 171 cynicorum ratio tota est ejcienda. 185 crenaci, & annicerij philophi, ab Aristippo nominati, omne bonum in voluprate posuerunt. 428 cyrus apud Xenophontem eo sermone, quem moriens habuit, cùm admodum senex esset, &c. 469 cyri maioris mortentis apud Xenophontem oratio ad filios. 530 cyrillum suadentem, vt Xerxem recipierent, Athenienses lapidibus obruerunt. 376

D

- Damni rei capitalis. 483 Damon, & Pythias Pythagorei quæ animo inter se fûrint. 352 Danai quinquaginta filia. 685 dare fidem—fide neque dedi, neque do in fidei cuiquam. 418 dare manus—litigare se sumus blanditur, arque ad extremum dat manus, vincitq; se patitur. 625 dare sè iucunditati. 167 dandis, recipiendisque meriti,

I N D E X.

- tis. 573 tem pertinet. 144 decadere nonnunquâ paullum de suo iure, non modò librale est, sed etiam fructuose. 287 decere—id quemque, quod est cuiusque maximè suum. 160 decere—in omnibus, quæ aguntur, ex eo, quo quicunque modo natus est, (vt supra dictum est) quod deceat, exquirimus. 464 decem captiui post pugnam Cinnensem iurati ad senatum missi, &c. 427 decertandi duo sunt genera. 82 decij duo. 332 decij duo ad voluntariam motem cursum equorum incitauerunt. 524 decij se deuouerunt, atque immiserunt in armatas hostiū copias. 648 D. Brutus augur. 551 decipere, non iudicare. 66 declinandum est de via. 597 declinare ea, quæ nocitura videantur. 59 decori descriptio duplex—decorū generale, & huic subiectum, quod pertinet ad singularis partes honestatis.—ibidem vtriusque definitio. 144 decori, & honesti qualis differentia facilius intelligi, quæ explanari potest. 143 decorum ad omnem honestat-
- em pertinet. 144 decorum latine, Græcè φερον. 143 decorum, & honestum—decorum ab honesto non potest separari. 143 decorum in omnibus factis, dictis, in corporis denique motu, & statu cernitur, idq; positum est in tribus rebus. 168 decorum, quod poëte sequuntur. 144 decorum, quod elucet in vita, mouet approbationem eorum, quibuscum viuit, ordine, & constantia, & moderatione dictorum omnium, atque factorum. 145 dedecus, & flagitium. 407 dedere se angoribus—nec me angoribus dedidi. 210 defendere iniuriam—is, qui non defendit iniuriam, neque propulsat à suis cùm potest, iniuste fecit. 396 defendere—vua vestita Pamphilis, nimios solis defendit ardores. 501 defendantur plurimorum patrocinij voluptras. 649 defensio laudabilior est, quam accusatio. 228 defensitare caussas. 166 deferre—quæd si possis quiduis deferre ad alterum, vindendum est tamen, quid ille possit sustinere. 224 deficere à virtute. 579

## I N D E X.

- defectio virium, adolescentiae  
vitij efficitur sapientia, quam  
senectus. 467
- definitio — omnis, quæ à Ca-  
tione suscipitur de aliqua re  
institutio, debet à defini-  
tione proficiisci. 45
- deflexit aliquantum de spatio,  
curriculoque consuetudo  
maiorum. 585
- deflexit oratio ab amicitijs  
perfectorum hominum, ad  
leues amicitijs. 627
- defluere — non est verendum,  
ne quid in terram defluat.  
596
- defugere munus sibi assigna-  
tum — ne munus humanum  
assignatum à Deo defugisse  
videamini. 698
- degustabis genus exercitatio-  
num earum, quibus vti con-  
sueui, &c. 640
- dclabitur ad vulgares amici-  
tias à sapientium familiaris-  
taribus oratio nostra. 611
- deliberanda non sunt ea, in  
quibus est turpis ipsa deli-  
beratio. 345
- deliberatio — in omni de-  
batione celerandi, & occultan-  
di spes, opinioque remouen-  
da est. 347
- deliberatio omnium difficil-  
lima, quos nos, & quales esse  
velimus. 163
- delinire aliquos blandè appellando. 267
- deliquerere — cernimur in alijs  
magis, quam in nobis, si
- quid delinquitur. 185
- demersæ leges alicuius opibus.  
238
- demetere fructus. 520
- demetrius Phalereus disputa-  
tor subtilis, orator parum ve  
hemens: dulcis tamen, vt  
Theophrasti discipulum pos-  
sis agnoscere. 28
- demetrius Phalereus Periclem  
principem Græciæ vitupe-  
rat, quod tantam pecuniam  
in præclarilla propylæa con-  
iecerit. 286
- demetrium Macedones reli-  
querunt, vniuersisque se ad  
Pyrrhum contulerunt. 242
- demigrare ab hominibus, mo-  
riendo: ab ini probris, exfulan-  
do. 655, & 656
- democritus senex. 462
- demosthenes exercebatur —  
vt Demosthenē accepimus.  
267
- demosthenes, si illa, quæ à Pla-  
tonे didicerat, tenuisset, &  
pronunciare voluisset, or-  
natè, splendidèque facere  
potuit. 29
- demouet mentem de sua sede  
& statu voluptas. 649
- deplorare vitam. 533
- depositum non semper redi-  
endum. 80
- depositum nullo teste nō redi-  
dere, non est viri boni. 660
- deprauatio consuetudinis. 289
- deprompta ex Stoicorum di-  
putationibus oratio. 646
- derelictio communis utilita-

## I N D E X.

- tis, contra naturam est. 341
- derivationes fluminum. 222
- descendere in rostra. 401
- descendere — non est facilis  
inuentu, qui descendat ad  
calamitatum societas. 602
- descriptio ædificandi, in v-  
sum accommodanda est. 177
- descriptio — iuris æqua descri-  
ptio. 223
- descriptus — partes etatis bene  
à natura descriptæ. 442
- deserere ius amicitiae argue-  
rentur. 578
- desiderare, non desiderare vo-  
luptates iucundius est, quæ in  
frui. 487
- desiderium coniunctissimi vi-  
ri, atque amantisissimi ferre  
nullo modo possum. 629
- desistere à sententia. 331
- despicunt eos, & contemnūt,  
in quibus nihil virtutis, ni-  
hil animi, nihil neruorum  
putant. 254
- despiciencia rerum externarū.  
116
- destinare diem necis alicui.  
352
- destitutum se queritur. 65
- destrinxit gladium. 424
- destruere, cōstruere — nauem,  
ædificium idem destruxit  
facillimè, qui construxit.  
524
- defudare, atque elaborare in  
re aliqua. 480
- detrahere alteri sui commodi
- caussa, magis est contra na-  
turam, quam mors, quam  
dolor, &c. 335
- detrahere multa de suis com-  
modis virorum bonorum  
est. 596
- detrahere aliquid alteri. 336  
& 340
- detractio, & appetitio alicui  
magis est contra naturam,  
quam morbus, aut egestas,  
&c. 340
- deuincire hominum inter ho-  
mines societatem artibus,  
opera, facultatibus. 73
- deuinciri firma societate. 103
- deus — siue Deus, siue mater  
( vtiam dicam ) rerum o-  
mnium natura, animum ti-  
bi dederit, &c. 649
- deum adhibere testem, id est  
mentem, qua nihil homini  
dedit ipse Deus diuinus.  
352
- deum nihil habere ipsum ne-  
gotij, nihil exhibere alteri.  
418
- deum nūquam nec irasci nec  
nocere. ibid.
- deum semper agere aliquid, &  
moliri. ibid.
- dij meliora, inquit Sophocles.  
487
- deos placatos pietas efficient,  
& sanctitas. 222
- dicere de seipso, senile est.  
469
- dictorum cōmemoratorūm-  
que constantia & veritas. 73
- dicere sapienter, & copiosè —

## I N D E X.

- magna est admiratio copiosè sapienterque dicendi. 267  
 dies celeberrimi. 556  
 differenda in aliud tempus cō solatio,&c. 438  
 differentia naturarum quantum habeat vim. 160  
 diffuentes delicijs homines. 524  
 diffluere luxuria,& delicate, ac molliter viuere, turpe. 154  
 diffundi—contrahi—ex bonis amici quasi diffundi, ex incommodis contrahi. 588  
 digladiari—de quibus plerique inter se digladiari solent. 63  
 dignitas pulchritudinis virilis ducenta est. 172  
 dignus, quicum in tenebris mices. 400  
 dijudicare—vt sine vlo errore dijudicare possimus, si quando,&c. 335  
 dilaberetur resp. præclarissimè constituta. 306  
 dilabi sinere rem familiarem flagitiosum est. 287  
 diligere—ipse se quisque diligat, non vt aliquam mercedem exigat caritatis suæ, se quod per se sibi quisque carus sit. 614  
 diligere oportet cum iudicaris, non cum dilexeris iudicare. 616  
 diligi—omnium rerum nec aptius est quidquam ad opes tuendas, auctenandas, quæ
- diligiri, nec alienius, quamti meri. 238  
 diligentia caussæ grauissimæ, qua. 251  
 dilinire multitudinem effusionibus pecuniarum. 279  
 dimensa, atque descripta. 509  
 dimicare cum aliquibus de im perio. 68  
 dinomachus. 430  
 dinumerare stellas, metiri mū di magnitudinem. 189  
 diogenes Babylonius, Stoicus. 379  
 dion Syracusius à Platone eruditus. 192  
 dionysius superior: quo cruciatu angi solet. 241  
 dionyfius superior cultros metuens tonsorios candente carbone sibi adurebat capillum. ibid.  
 dirigi officium vtilitate magis quam humanitate. 409  
 dirigenda honestate vtilitas. 405  
 directi in quincuncē ordines. 509  
 dirimere communem humani generis societatem. 340  
 dirimere cōiunctionē ciuiū — qui dirimunt ciuiū cōiunctionē, eos morte, exsilio, vinclis, dando coercent. 336  
 dirimere controuersiam. 439  
 dirimi interdum amicitias, vel contentione vxoris cōdicionis, vel commodi alii cuius, quod idem adipisci vterque non possit. 573  
 dirimi

## I N D E X.

- dirimi non potest caritas, quæ est inter natos & parentes, nisi detestabili scelere. 574  
 diritas—comitas—opp. al. duritas. 516  
 discedo ex hac vita tamquam ex hospitio, non tamquam ex domo. 533  
 discessit à fide, & iustitia. 401  
 discessit terra—cūm terra discessisset magis quibusdam imbribus,&c. 348  
 discedere à latere—à sensu latere numquam discederem. 545  
 discederent omnes concordia constituta sine querela. 307  
 discedere à naturæ statu—nihil discedere à naturæ statu. 116  
 discebant fidibus antiqui. 464  
 discere—facile corrigitur in discendo, quorum via imitantur imitandi caussa magistrorum. 185  
 discendi labor—si discendi labor est potius quam voluptas. 323  
 discidia—landa opera, ne quæ discidia amicorum fiant. 611  
 discrepancia—in actiones, omnemque vitam nullam discrepaniam conferre debemus. 160  
 dispares mores dissparia studia sequuntur. 610  
 disrumpimus repētē in medio cursu amicitias, exorta aliqua offenditione. 616  
 disrumpi necesse est humani generis societatem, si sic erimus affecti, vt propter suū quisque commodum spoliat, aut violat alterum. 335  
 dissenso inter P. Africanum, & Q. Metellum sine acerbitate. 133  
 dissimilitudo morum dissiciat amicitias. 610  
 dissociare—morum dissimilitudo dissociat amicitias. ibid.  
 dissoluetur omnis humana cō sortio, si ad se quisque rapiat vtilitatem vniuersorū. 339  
 diffundere magis, quam discindendæ amicitia, al. deluendæ. 611  
 distanta morum, & studiorū. 610  
 disturbare parietes. 665  
 disturbance Corinthi. 376  
 diuellere non oportet commoda ciuium. 307  
 diues quis. 685  
 diues appellandus non est, qui cupiditates habet innumerabiles. 685  
 diuitem esse neminem, nisi qui exercitum alere possit suis fructibus, dicebat Crassus. 686  
 diuites esse volumus non solum nobis, sed liberis, propinquis, amicis, maximèque reip. 286  
 diuites, & fortunati efferūtur fastidio, & contumacia. 594

I N D E X.

- diuitiae—corrupti mores, de-  
pravatique sunt admiratio-  
ne diuitiarum. 296  
diuitiae expetuntur tum ad v-  
sus vita necessarios, tum ad  
perfruendas voluptates. 73  
diuitiae expetuntur, ut vtare.  
566  
diuitiae—animus hominis di-  
ues, non arca appellari solet.  
685  
diuitiae—animus tuus opor-  
tet se iudicet diuitem, non  
hominum sermo, neque  
possessiones tuae. 685  
diuitiae—ex eo quantum cui-  
que satis est, meriuntur ho-  
mines diuitiarum modum.  
685  
diuitiae maxime, & certissime  
sunt, contentum suis rebus  
esse. 688  
diuitior est, cui supetat, quam  
cui deest, qui abundat, quam  
qui eger. 687  
diuitior, & affluentior videtur  
esse vera amicitia. 596  
diuidere—præterire aliquid  
maximum vitium est in di-  
uidendo. 57  
diuisione tripartita—qui è diui-  
sione tripartita duas partes  
absoluere, huic necesse est  
restare tertiam. 327  
diurnum mihi nihil videtur  
in quo est aliquid extreñū.  
520  
docere—docuit fabulam. 498  
docti non solum viti, atque  
præsentes, studiosos discen-  
di erudijunt, atque docent,  
sed hoc idem etiam post  
mortem monumentis litté-  
rarum assequuntur. 192  
doctorum consuetudo, eaque  
Græcorum, ut iis ponatur,  
de quo disputatione, quamvis  
subito. 563  
doctos homines, aut vslu perito-  
s adhibere debemus ad ea  
eligenda, quæ dubitationem  
afferant. 185  
doctrina, & cognitione rerum  
—ille, quorum studia vita-  
que omnis in rerum cogni-  
tione versata est, tamen ab  
augendis hominum utilita-  
tibus, & commodis non re-  
cesserunt. 192  
doctrinæ studijs, & sapientiæ  
dediti ad hominum utilita-  
tem, suam sapientiam, pru-  
dentiam, intelligiāmque  
potissimum conferunt. 192  
dolor cadit in sapientem. 588  
dolor non modò non summū  
malum, sed ne malum qui-  
dem est. 420  
dolorem summum malum qui  
iudicat, apud eum nullum  
locum habere potest fortis-  
tudo, neque ceteræ virtutes.  
430  
dolus malus est, cum est aliud  
simulatum, aliud actum. 384  
dolus malus legibus erat vin-  
dicatus. 389  
dolus malus simulatione, &  
dissimulatione continetur.  
ibidem. dolus

I N D E X.

- dolo deceptus, metu coactus.  
65  
domesticæ fortitudines non  
sunt inferiores militaribus.  
123  
domus hominis honorati, &  
principis qualis esse debeat.  
177  
domus—ornanda est digni-  
tas domo, non ex domo ro-  
ta querenda, nec domo do-  
minus, &c. ibid.  
dormientium animi maximè  
declarant diuinitatē suam.  
531  
dubitatio cogitationem signi-  
ficat iniuria. 64  
ducere bellum. 401  
ducuntur homines aut benu-  
uelentia, aut beneficiorum  
magnitudine, aut dignitatis  
præstantia, aut spe sibi id v-  
tile futurum, aut metu, ne  
vi parere cogantur, &c. 235  
duces, & principes res magnas,  
& salutares sine hominum  
studijs gerere non possunt.  
223  
duo genera sunt decertandi.  
66  
duodecim tabulae—aut status  
dies cum hoste. 67  
duri hominis, vel potius vix  
hominis videtur, periculum  
capitis inferre multis. 268  
E  
Ecce tibi, qui rex populi  
Ro. dominusque omniū  
gentium esse concupierit  
idque perfecerit. 405  
eclogum—in quem illud e-  
clogum est. 510  
eclogum Solonis, quo se ne-  
gat velle suam mortem do-  
lore amicorum, & lamenta-  
tis vacare. 524  
efferre aliquid maximis laudi-  
bus. 567  
efferre homines aliquos maxi-  
mis laudibus. 254  
efferre mirificos fructus. 448  
efferruntur fastidio, & cōruma-  
cia diuities & fortunati. 594  
efferriri studio videadi, &c. 533  
effutum corpus tradit senectu-  
ri libidinosa & intemperans  
adolescentia. 469  
efflorescit utilitas ex amicitia,  
etiam si tu eam minus secu-  
tus sis. 627  
effrenatos rebus secundis ho-  
mines, sibique præfidentes,  
tamquam in gyrum ratio-  
nis duci oportet. 138  
effugere—si impias propin-  
quorum manus effugeris.  
697  
elati—voluptate. 150  
eloqui copiosè, modò pruden-  
ter, melius est, quam vel &  
acutissimè sine eloquentia  
cogitare. 193  
eloqui—vtérque ( venditor,  
& empor) si ad eloquendū  
venerit, non plus quam se-  
mel eloquetur. 385, & 386  
eloquentia quid præstabilius  
vel admiratione audiētum

## INDEX.

- vel spe indigentium, vel eorum qui defensi sunt, gratia. 292  
eloquentiam, à natura, ad salutem hominum, & ad conseruationem datam, ad bonorum pestem, perniciēmque conuertere. 268  
eloquenti im desiderant causarum plurimū genera. 267  
eloquentia intermixta, ne dicam interitum. 292  
elucebit omnis constantia, omnisque moderatio ex eo, si appetitus sicut tranquilli, atque omni animi perturbatione careant. 149  
elucere non potest id, quod est probabile, nisi ex utraque parte causarum facta sit contentio. 212  
eluviones, exustionēsque terrarum accidere certo tempore necesse est. 701  
emancipata— si nemini emancipata est senectus. 475  
emax—non esse emacem vegetal est. 251  
emergit— ex quo magis emergit, &c. 159  
eminus—nec eminus hastis viceretur. 159  
emeritis stipendiis libidinis. 498  
empedocles Agrigentinus carminibus Græcis varicinatus est: quæ in rerum natura, totoque mundo constarent, quæque mouerentur ea contrahere amicitiam, dissipare discordiam. 567  
emptori notum vitium esse oportet, quod nosset venditor. 389  
eneruare, affligere—non me planè eneruauit, non affixit senectus. 473  
ennius duo quæ maxima putavunt onera, paupertatem, & senectutem ita ferebat, ut eius pæne delectari videtur. 451  
ennius recte—Amicus certus in re incerta cernitur. 602  
ennius fit ut cogitationes, sermonesque nostri pariant aliquid in somno tale, quale de Homero scriptū Ennius, de quo videlicet sapissime vigilans solebat cogitare, & loqui. 696  
ennius quibus consulibus mortuus fit. 450, & 451  
ennij carmen sepulcro incisum eius, Nemo me lacrymis decoret. 524  
ennius—vnum homo nobis, &c. 449  
ennij versus. Sicut fortis equus &c. 450  
epaminondas Thebanus à Lyside Pythagoreo eruditus. 192  
epicurus—esse quandam Athenis, qui se sapientem esse profiteretur, cūque dicere omnia, quæ faceremus ad voluptatem esse referenda. 484  
epicurus floret Cyrenaicis ob soletis.

## INDEX.

- soletis. 428  
epicurus multis locis satis fortiter dicit de dolore: tamen non id spectandum est quid dicat, sed quid consentaneū sit ei dicere, &c. 430  
epicurum nihil dicere posse de virtutibus, aut si quid dicat, non dicere consentanea. ibid.  
epigoni, Medea—al. Medus. 160  
epistola Philippi ad Alexandrum fil. 275  
epitolæ trium regum prudenterissimorum ad filios, quibus præcipiunt, ut oratione benigna multitudinis animos, ad benevolentiam allificant. 267  
epula, & viscerationes. 279  
equus intra statuus est nouus. 604  
equos propter crebras præliorum contentiones ferocitate exultantes domitoribus tradere solent ut his facilitibus ut possint. 138  
eripere aliis, quod aliis largiare. 95  
erranti comiter monstrare viā. 102.  
erranti viam non monstrare: quod Athenis execrationibus publicis sanctum est. 380  
erraticus—multiplici, & erratico lapsu. 501  
error hominum non proborum secernit utile ab honesto. 344  
errore duci. 185  
erumpunt spevitia amicorum, tum in ipsis amicos, tum in alienos. 616  
escam malorum voluntatem appellat Plato, quod ea videbilec homines capiantur ut hamo pilces. 485, & 486  
esse foluendo—non esse foluendo. 305  
esse in maxima gratia, & gloria. 407  
euagari—appetitus longius euagantes, & tamquam exultantes siue capiendo, siue fugiendo. 149  
euertere nauim—auri nauem euertat gubernator, an pale, in re aliquantum, in gubernatoris inscientia nihil interest. 659  
euersa resp.—stans—oppo. 323  
euagaria, tēpus actionis opportunum. 183  
euolat facillimē ē custodia corporis optimi cuiusque animus. 557  
euoluere animi sui complicatam notionem. 399  
euomere virus acerbatis suis apud aliquem. 619  
euripides—iurauilingua, mēte, &c. 421  
euagaria Latinē appellatur occasio. 183  
euagaria—in qua intelligitur ordinis conservatio. 182  
exacta ætas —cām exacta

## INDEX.

- iam ætate in agris esset, &c. 510  
**exequare** se cum inferioribus debent, qui sunt in amicitia superioribus, &c. 609  
**exaggerare** rem suam familiarem omniratione. 142  
**exaggeratus** virtutibus animus. 678  
**examina apium** non fingen-dorum fauorum caussa con-gregantur, sed &c. 193  
**examina apium.** 501  
**exanimare** — te metus exanimat iudiciorum tuorum. 656  
**exardescit** admirabilis quædam benevolentia magnitudo, his rebus ad illum pri-mum motum animi, & a-moris adhibitis. 574  
**exardescit** ex eo siue amor, si-ue amicitia. 627  
**exardescere** — nisi quædam admodum intolerabilis in-iuria exarserit. 621  
**excedere** — excessit è vita. 557  
**excelsos** animos, magnosque despicer vitam, mortem, diuitias, paupertatem. 255  
**excerpere** ex malis si quid in-sit boni. 322  
**excidere** — neque enim veren-dum est, ne quid excidat, aut ne quid in terram de-fluat. 596  
**excipere** — memoriam illius viri excipient omnes anni con sequentes. 461  
**excitauerunt** complures ad le-
- gendis studium libri nostri. 209  
**excitare** amici iacentem ani-mum. 596  
**excitare**, & agitare feras. 289  
**excitanda** animadiversio, & diligentia est, vt ne quid temerè, ac fortuito, inconfi-deratè, negligentèque aga-mus. 149  
**excludant** amicitias fideles multorum opes præpoten-tium. 595  
**excludere** alios sermone, tam-quam in possessionem ve-n'erit. 174  
**excludere** suos ab vsu rei sua familiaris. 142  
**excors** — apertè adulante nemo non videt, nisi qui ad-modum est excors. 625  
**excusatio** peccati nulla est, si amici caussa peccaueris. 579  
**excusatio** turpis, & minimè accipienda, cùm in ceteris peccatis, tum si quis contra rem se amici caussa fecisse fateatur. 585  
**excusatione** vtendum est aduersus eos, quos iniuitus of-fendas. 292  
**exemplum** earum rerum capiebat ex similitudine in-eu-tis ætatis. 577  
**exemplum** — multum mali in exemplo est, si quis adficiat vltra modum sumptu pro-deat. 179  
**exempla** — hæc videri possunt obscuriora, cùm sine expo-sitio-

## INDEX.

- sitione exemplorum len-tius disputantur. 647  
**exempla** nobis ex hoc nume-ro sumenda sunt. 579  
**exhaustiebat** ararium C. Graci-hi domus. 297  
**exhaustire** sentinam. 460  
**exhibere** negotium alteri. 418  
**exhiberi** negotium patri cùm audiuisset, &c. 424  
**exigere** gratiam. 575  
**exigere** mercedem — ipse se quisque diligit, non vt ali-quam mercedem exigat ca-ritatis suæ, sed quod per se sibi püsque carus est. 614  
**exigere** promissum ab aliquo. 412  
**existimare** — bene de se exi-stimans, sc̄eque diligens. 341  
**existimare** — non omnes eos contemnimus, de quibus male existimamus. 254  
**existimationem** suam negli-gere quid de se quiique sen-tiat, non solum arrogantis est, sed etiam dissipati. 145  
**expedit** — eos lœdūt, aut quos non debent, aut quos non expedit. 292  
**expedit** — est istud quidem ho-nestum, verūm hoc expedit. 396  
**expedit** — quamuis hoc turpe sit, tamen, quoniam expedit, faciam. 380  
**expedire** — nihil expedire, quod non deceat. 400  
**expedire** rem, & consilium ex-
- tempore capere. 251  
**expeditior**, & celerior remu-neratio. 293  
**expilas** ætarium. 685  
**explēbimus** hanc partem re-lictam. 344  
**explere** cupiens diuturnam si-tim. 463, & 464  
**explere** — non diues, cui tan-tum deest, vt expleras id, quod optas. 686  
**explica**, atque excute intelli-gentiam tuam. 402  
**explicare** rem — re explicata — re addubitata. 130  
**exponere** — explicare — non enim vt quereremus, ex-po-suimus, sed vt explicare-mus. 382  
**exprobare** — odiosum sanè genus hominum officia ex-probrantium. 609  
**exquisito** iudicio vti littera-rum. 173  
**exquisita** supplicia. 416  
**excōndo** — de Carthaginē antè vereri non desinam, quām illam excissam co-gnouero. 461  
**exsecrationes** — Athenis ex-secationibus publicis san-ctum est, erranti viam non monstrarere. 380  
**exsequi** munus — ita imbe-cilli, vt nullum officij, aut omnino vitæ munus exse-qui possint. 474  
**exsequi** omnia regis officia, & munera. ibid.  
**exsoluere** id, quod quis pro-

## INDEX.

- misit, nec exsoluit id, quod promiserat. 327  
 exspectare testamenta amicorum. 685  
 exstingui solere familiaritates. 578  
 exsules—omnes scelerati exsules sunt, etiam si solum non mutarunt. 666  
 exsulium—necis exsulium scelerum esse pœnam. ibid.  
 exsulium terribile est iis, quibus circumscriptus est habendi locus: non iis, qui omnem orbem terrarum, vna urbem esse ducunt. 656  
 exultans iuueniliter. 449  
 exuscitat hæc cura animos. 60  
 extimus—globus extimus, qui reliquos omnes complectitur, summus ipse Deus 698  
 extinctæ amicitiæ, non oppræſſæ. 611  
 extirpata non est humanitas ex animo sapientis. 588  
 extorquere alteri errorem—nec mihi hunc errorem, quo delector, dum viro; extorqueri volo. 534  
 extremo tempore ætatis. 469

## F

- Fabricius iustus. 332  
 Fabricius perfugam, qui pollicitus erat, se Pyrrhum veneno necaturum, ad Pyrrhum reducendum curauit. 407

## INDEX.

- fabricij continentia cum pecunia Pyrrhi comparatur. 687  
 fabulam—ij mihi videntur fabulam etatis peregisse, si facit sibi audientiam distri senis compta, & mitis oratio. 468  
 facere alteri iniuriam, magis fugienduine est, quam mors, paupertas, dolor, &c. 337  
 facere in quepiâ impetu. 73  
 factiosi—lærgitores, & factiosi. 109  
 factitata—hæc apud majores nostros sunt factitata. 309  
 fallax—hærbæ non fallaces. 604  
 fallo—nec eum fecellit. 241  
 falli, errare, labi, decipi, tam de- deceat, quam delirare, & men- te captum esse. 54  
 fama non est negligenda. 601  
 familia amplissima natus. 248  
 familiarites fidas habere amantium nos amicorum, & nostra mirantium. 243  
 f. stigium imponimus operi inchoato. 343  
 fenerari beneficium. 575  
 fenerari, hominē occidere. 310  
 ferax—nullus in philosophia feracior locus est, nec vbe- rior, quam de officiis. 313  
 ferre faces in Capitolium. 579  
 ferri multitudinis iudicio. 164  
 ferre nomen alieuius—cum Basilux M. Satrium, so- roris filium, nomen suum ferre voluisse. 395  
 ferre

## INDEX.

- ferre obscurè—istam pauper- tatem, vel potius egestatè, nunquam obscurè tulisti. 686  
 fibrae stirpium. 500  
 fidas familiarites habere amantium nos amicorum, & nostra mirantium. 243  
 fides—discebat fidibus antiqui. 464  
 fides—O fides alma, apta pîn- nis, & iusiurandū Louis. 420  
 fides est firmamentum eius stabilitatis, constantiaque, quam in amicitia querimus. 603  
 fides in Capitolio vicina Louis optimi maximi fuit. 420  
 fides iusfurandi sepe cum ho- ste seruanda. 421  
 fides iustitiae fundamentum. 73  
 fides, quia fiat quod dictum est, appellata. 73  
 fides rerum contractarum. 66  
 fides vt habeatur, duabus rebus effici potest. 251  
 fidem dare—fidem neque dedi, neque do infideli cui- quam. 418  
 fidem quibusnam habeamus. 251  
 fiducia—in qua additur, vt inter bonos bene agier. 285  
 fidum non potest esse multi- plex ingenium, & tortuo- sum. 603  
 figere modum rerum non possumus, animorum tenere possimus. 661  
 figuram corporis nostri, in qua species est, aliqua ho- nestas, et natura posuit in promptu. 168  
 filicata pateræ. 648  
 filius patrem fanâ explantem aut cuniculos in ærarium a- gentem, debeatne arguere, aut iudicare? 409  
 filii puberes cum parentibus non laubant, nec cum so- ris generi. 172  
 fimbria consularis, index M.  
 Lutatio Pinthia datus: cum is sponsionem fecisset, ni vir bonus esset. 400  
 fingimus sapietem, & bonum virtutem. 379  
 finixerat sibi principatum opinionis errore Cæsar. 74  
 ficta omnia, tamquam flosculi, decidunt. 261  
 firma corporis constitutio. 428  
 flagrantes in studiis senes. 498  
 flaminius & M. Atilius col. 451  
 flaminium T. Flaminini fra- trem eiecit è senatu Cato. 483  
 flexibile ac deuium. 621  
 flosculi—ficta omnia tâquani flosculi decidunt. 261  
 forense dijedi genus—pie- tum disputandi genus—opp. 28  
 fori—per foros cursare. 460  
 forma—omnis à forma re- moueatur non viro dignus ornatus. 172  
 formæ dignitas coloris boni- tate tuenda est. ibid.

I N D E X.

- f**orma—in formis alijs dignitas inest, in alijs venuſtas. 155  
formula quædam constituenda est. 335  
formulæ de dolo malo ab Aquillio prolatæ. 383  
fors—quid ferat fors. 68  
fortis animus, & excelsus duabus rebus maximè cernitur. 96  
fortis animus, & magnus in homine, non perfecto, nec sapiente seruentior plerūq; est. 96  
fortis animi, & constantis est non perturbari in rebus aſperis, nec tumultuantem de gradu deicisti. 124  
fortes, & magnanimi sunt habendi, non qui faciunt, sed qui propulsant iniuriam. 109  
fortes, & magnanimi iidem fortis viri, & simplices. 108  
fortitudō—animus paratus ad periculum, si sua cupiditate, non vtilitate communī impellitur, audacia potius nomen habeat, quam fortitudinis. 108  
fortitudo definitur à Stoicis, virtus propugnans pro aquitate. 108  
fortuna cæca est, & eos efficit cæcos, quos complexa est. 595  
fortuna—non multa patent in vita philosphorum, que
- fortuna feriat. 119  
fortunæ casus rariores, procellæ, tempestates, naufragia, ruinæ, incendia, &c. 238  
fortunæ temeritas. 565, 633  
fortunato insipiente nihil intollerabilius fieri potest. 193  
fragile corpus—in fragili corpore odiosa omnis offendio est. 515, & 516  
fraudare—quotidie fraudas, decipis, &c. 685  
fraudandi ſpe sublata, ſoluendi necessitas conſecuta eſt. 308  
fraudus adſtrigit, non diſſoluit per iurum. 427  
fraudus, vulpeculae videtur. 94  
fregisti ne fidem? 419  
fronte occultare ſententiam. 603  
fructuofum—pleriq; in rebus humanis nihil bonum oportunt, niſi id fructuofum. 614  
frugifera & fructuosa tota philosophia eſt. 323  
frumentarius ille R hodius. 382  
fucata, & ſimulata internosci poſſunt à ſinceris, & veris. 622  
fundamenta naturæ peruerunt homines, cum vtilitatem ab honestate ſeiungit. 416  
fundamenta iuſtitiaz. 81  
furia—quocumque adſpexisti, vt furiae, ſic tibi occurront iniuriae, que te respirare non ſinunt. 636

GALACTIA

- I N D E X.
- G**—circulus eluciſ—orbis lacteus. 698  
gaza—omni Macedonum gaza potitus eſt Paulus, quæ fuit maxima. 301  
gemma—exituit tamquam ad articulos ſarmentorum ea, quæ gemma dicitur, 501 generi cum ſoceris non laubant. 172  
geniculatus—calamo erecta geniculato viriditas. 500  
geometræ ſolent non omnia docere, ſed postulare, vt quædam ſibi concedantur quo facilius, quæ volunt explicant. 343  
geometriae ſtudioſus Sex. Pöpeius. 69  
gerebant ſimilitudinem quan dam, ſpeciemque ſapien tium. 332  
gere animum laude dignum. 677  
gerere in hominis figura im manitatem belluae. 404  
gerere—natura docet nō negli gere, quemadmodum non aduerſus homines geramus 144  
gerere nos debemus tāto ſum miſſius, quanto ſuperiores ſumus. 138  
gerere personam ciuitatis. 168  
gerere res—non enim viribus, aut velocitate, aut cele ritate corporis res magno geruntur, ſed confilio, au
- eroritate, ſententia. 460  
germana iuſtitia, verum viſ. 290  
gigantum modo bellare cum Diis. 443  
gigni oda ſempiterna. 580  
gladiatorum munera. 279  
globi—nomen tibi orbibus, vel potius globis connexa ſunt omnia. 698  
gloria—de gloria duo Ciceronis libri. 259  
gloria, & gratia maximè patritur defensionibus. 268, & 269  
gloria—gloriā ab hominibus nullam eſſe sperandā. 700  
gloria hominum magnis anguſtiis vult ſe dilatari. 702  
gloria non terminatur iſdem finibus, quibus vita. 531  
gloria—ſumma, & perfecta gloria conſtat ex tribus. 250  
gloria—vera gloria radices agit, atque etiam propagatur. 261  
gloria—via ad gloriā pro xima, & quaſi compendia ria. 261  
gloriae cupiditas eripit libertatem. 116  
gloriam veram adipisci qui volet, iuſtitiaz fungatur officiis. 262  
gnathonis persona. 621  
gorgias Leontinus cum ex eo quereretur, cur tamdiu vel let eſſe in vita: Nihil habeo, inquit, quod accuſem ſene

E b

I N D E X.

- etutem. 450  
 gorgias Leontinus Isocratis magister centum & septem compleuit annos. ibidem gracchos Ti. Gracchi, summi viri, filios, Africani nepotes, agrariae contentiones perdidunt. 306  
 gradus officiorum in communitate. 198  
 græca verba inculcare. 160  
 grandis natu—estate proueretus. 449  
 gratiosus apud omnes ordinates. 383  
 grauarer—ego verò non grauarer, si mihi ipsi confidem. 563  
 grauare ille primò. 383  
 gyges à Platone inducitur. 348  
 gyrum rationis—in gyrum rationis, & doctrine duci oportet homines rebus secundis effrenatos. 138  
 gytheū—classis ad Gytheum subducta. 377
- H
- Abenas amicitia, quām laxissimas habere, esse commodissimum. 587  
 habere delectum ciuis, & peregrini debemus. 185  
 habere quæstui rem, non modo turpe est, sed sceleratum etiam, & nefarium. 301  
 habere religioni—non est habendum religioni no-
- centem aliquando, & nefarium impiūmque defendere. 268  
 habere speciem—quod haberet speciem honesti. 327  
 habere speciem utilitatis. 431  
 habuisse nullam cogitationem auri, atque argenti. 647  
 habenda est ratio rei familiaris. 289  
 hæret—aqua hæret, ut aiunt. 430  
 hæretis—Catō in ea est hæret, quæ nullum sequitur florem orationis, neque dilatat argumentum, &c. 639  
 hasta cruenta, quam P. Sulla vibravit dictatore propinquo suo. 243  
 hastam in foro ponere, & bona ciuium voci subiicere praconis. 307  
 hastæ—nec eminus hastis vice retrur. 461  
 haud sciā, an ne opus sit quidem, nihil vñquam deesse amicis. 594  
 haud scio, an aliquando futurum sit. 586  
 haud scio, an excepta sapientia quidquam melius sit hominī à Diis immortalibus amicitia. 565  
 haud scio, an nemini potius, quim tibi sit faciendum. 323  
 haud scio, an satis sit, &c. 82  
 haud scio, an vlla vita beatior esse possit. 505

I N D E X.

- hecatonis liber de officijs, ple commodatas. 160  
 nus quæstionum, &c. 409  
 hecate Rhodius. 286  
 hemicyclum—in hemicyclo sedens. 546  
 herbæ non fallaces. 604  
 hercules pro omnibus gentibus conseruandis, & iuuandas, maximos labores molestisque suscepit. 337  
 herculem hominem fama be neficiorū memor in cōcluū caelestium collocauit. ibid.  
 herculem Prodicus dixit existēre in solitudinem, &c. 163  
 hereditas cupiditatū ab eo venit ad multos improbos. 243  
 hereditas optima quæ liberis à patribus tradatur. 167  
 hereditatis spes quid iniquitas in seruiendo non iuscipit? 678  
 hesiodus de stercoretione ne verbum quidem fecit. 501  
 hesiodus iubet eareddere maiore mensura, quæ vtenda acceperis, modò possis. 98  
 hesiodus sénex. 462  
 hilaritas multa erit in C. Lælio. 155  
 histrio si paullum se mouit extra numerum, aut si verius pronunciatus est syllaba vna breuior, aut longior, exsibilatur, & exploditur. 661  
 histrioni ut placeat nō est per agenda fabula, modò in quocumque fuerit actu, probetur. 520  
 histriones fabulas sumunt ac-
- ommittentes. 160  
 histriones inexercitati in extremo actu corrunt. 515  
 histriorum nonnulli gestus ineptijs non vacant. 171  
 homerus multis antè Hesiodum sacerulis fuit, sententia Ciceronis. 501  
 homo, & bellua,—inter hominem, & belluam quid intersit. 59  
 homo naturæ obediens homini nocere non potest. 337  
 homo nec infaceret, & satis literatus. 383  
 homo non est, quem forma declarat, sed mens cuiusque, is est quisque, non ea figura, quæ digito demonstrari potest. 702  
 homo, qui rationis est participes, principia, & causas rerum vider, &c. 60  
 homo—semper in promptu habendum est, quantū natura hominis pecudibus, reliquisque bestiis antecellat—al. antecedat. 150  
 homo, vnum hoc animal tentit quid sit ordo: quid sit, quod deceat in factis dictisque, qui modus. 60  
 hominis in primis propria est veri inquisitio, & inuestigatio. 60  
 hominis mens discendo aliar & cogitando: semper aliquid aut inquirit, aut agit, &c. 150  
 hominis natura dissoluta, perspicuum est quò quæque res

## I N D E X.

- earum, ex quibus constat, discedat animus solus, nec cùm adeat, nec cùm discedit appetit. 531
- hominem homini detrahere sui commodi caussa, magis est contra naturam, quam omnia incommoda subire, vel externa, vel corporis, vel etiam ipsius animi, quæ nacent iustitia. al. iniustitia. 340
- homines diligentiores sunt omnibus in rebus, quam in amicis. 601
- homines hominibus plurimum obesse, vel prodesse arbitratur. 231
- homines ita nati sunt, ut inter homines esset societas quædam, &c. 564
- homines quæ hominibus tribuunt ad eum augendum, atque honestandum, propter aliquam è sex causis faciunt. 234
- homines sunt hac lege generati, qui tuerentur illius glorium, quem in hoc templo medium vides, quæ terra dicitur. 698
- hominum adiumenta omnis ratio, & institutio vita defiderat. 257
- hominum labor & manus—sine hominum labore, & manu lapides è terra non exciderentur, autem, &c. non effoderetur penitus abditum. 222.
- hominum vita artibus exculta tantum distitit à victu, & cultu bestiarum. 223
- honesta oratio est. 293
- honesta, quædam secunda. 321
- honestas aut sola expetenda est, vt Zenoni est vifum, aut certè omni pondere grauior est habenda, quam reliqua omnia. 344
- honestas, & officium manat ex quatuor generibus. 107
- honestas omnis manat è quatuor partibus, quarum una est cognitionis, &c. 188
- honestatis, & utilitatis eadem est regula. 396
- honestum animos omnium natura, & specie sua commoneat maximèque quasi perlungat ex iis, quas dixi, virtutibus. 251
- honestum illud, quod propriè verèque dicitur, id in sapientibus est solis. 329
- honestum, ita summum bonum est, Peripateticorum sententia, ut omnia ex altera parte collocata vix minimi momenti initar habeant. 328
- honestum nihil esse potest, quod iustitia vocat. 104
- honestum, quatuor partium, quæ paulò antè dictæ sunt, oritur ex aliqua. 66
- honestum totum est positum in animi cura, & cogitatione. 123
- honestum, vtile—nihil vtile, quod

## I N D E X.

- quod non idem honestum: hostis—foederibus, etiam cù nihil honestum, quod non idem vtile sit: negat Panætius villam pestem maiorem in vitam hominum inuasisse, quam eorum opinionem, qui ista distraxerunt. 344
- honesti forma si oculis cerneatur, mirabiles amores, vt ait Plate, excitaret sapientiam. 68
- honesti vis tanta est, ut specie utilitatis obscureret. 376
- honesta bonis viris queruntur, non occulta. 348
- honestorum contentio, & comparatio incidere potest. 188
- honorabilia—salutari, appetiti, decedi, assurgi, deduci, consuli. 515
- horæ cedunt, & dies, & menses, & anni: nec præteritum tempus reuertitur. 520
- hortensius, Crassus: alterum amauit Cicero viuum, alterum non odit mortuum. 395
- hortum, succidiam alteram agricolæ appellant. 506
- hospitalitas à Theophrasto ladata. 287
- hostis dicebatur apud maiores nostros, quem nunc peregrinum dicimus—aut status dies cùm hoste—aduersus hostem eterna austoritas. 83
- hostes—fides iuris iurandi sive cùm hoste seruanda. 420 & 421
- hostis—foederibus, etiam cù nihil honestum, quod non idem vtile sit: negat Panætius villam pestem maiorem in vitam hominum inuasisse, quam eorum opinionem, qui ista distraxerunt. 424
- hostibus dediti vinclati à senatu clari viri. 423
- humani casus virtute sunt inferiores. 550
- Hippolytus—Neptunus optavit interitum Hippolyti filij sui. 412
- I
- Acere—valere, opp. 352
- Iacturā facere equi pretiosi, an seruuli vilis. 409
- ianus medius—optimi viri ad medium sedentibus. 312
- idonea persona mihi visa est, quæ de amicitia ea ipsa differeret, quæ, &c. 546
- ignari qui in vnaquaque re vitij sit, nequeunt iudicare. 331
- ignoratio stirpis, & generis—qui propter ignorationem stirpis, & generis in famulatum fuerunt, cùm cogniti sunt, & aut Deorum, aut regum filij inuenti, retinēt tamen caritatem in pastores. 604
- imbecillitas rerum humanarum, varietatesque fortunæ. 138
- imitatio factorum, & hereditatis gloriæ ad liberos nostros pertinet. 123
- imitatione consequi tantam ingenij præstantiam non possumus. 321

I N D E X.

- immemorem beneficij omnes  
oderunt. 288  
immunis—virtus non est in-  
humana, neque immunis.  
—al. immanis. 589  
impelli in fraudem obsequio.  
620  
impensæ quæ optimæ in rem-  
pub. 286  
imperatoris, id est Dei, iniussu  
de præsidio, & statione vitæ  
decedere vetat Pythagoras.  
524  
imperatores clariss. sine adiu-  
mentis hominum tantas res  
gerere non potuissent. 223  
imperiti laudant ea, quæ lau-  
danda non sunt. 331  
imperium debet esse fultum  
gloria, & benevolentia fo-  
ciorum. 408  
imperia non esse expectanda.  
116  
impertire—si quam præstan-  
tiam virtutis, ingenij, forti-  
tudinis consecuti sunt ami-  
ci, impertire eam debent  
suis, & communicare cùm  
proximis. 604  
impertiendum est hominibus  
indigentibus re familiari,  
sed diligenter, atque mode-  
rata. 276  
implicari aliquo certo genere  
cursuque viuendi. 163  
implicari contrahendis nego-  
tis. 258  
implicati vtrō, & citro vel vsu  
diurno, vel etiam officijs.  
616
- imposuit nobis personam na-  
tura, magna cùm excellen-  
tia, præstantiæque animan-  
tium reliquarum. 144  
imponere fatigium operi in-  
choato. 343  
imponere leges alicui. 676  
improuiso Nicoclem tyran-  
num opprescit Aratus. 306  
impunitate, & ignoratione o-  
minum proposita, vix quis-  
quam est, qui abstinere iniu-  
ria possit. 395  
in luce, & in oculis. 450  
in manibus est oratio. 624  
in manibus semper habui il-  
lius viri virtutem. 231  
in ore esse—incidere in ser-  
mone, qui tum multis erat  
in ore. 546  
inimum est omne, quod pul-  
su agitur externo. 703  
incredibile—nihil est tam in-  
credibile, quod non dicendo  
fiat probabile. 640  
inculcaentes Græca verba, iure  
optimo irridentur. 160  
incurrere in odia hominū. 187  
incurrere in iniustitiam. 80  
incensus Canius cupiditate.  
383  
incidit in eam ipsam mentio-  
nem. 546  
incidimus in has clades. 243  
inciderunt in honoris conten-  
tionem. 580  
incidere in plagas. 289  
incidere in sermonem. 246  
incidere in perturbationes, at-  
que exanimationes. 172  
inci-

I N D E X.

- incisum carmen in sepulchro. da prudentia est. 167  
510 inferre facies sceleratas tectis.  
incitatus aliqua perturbatio-  
ne. 73 inferre sermonem conuiatio-  
dignum, aut delicatum in  
re secura, turpe, valdeque  
vitiosum est. 183  
incitati repente quodam a-  
nimis impetu, atque vento.  
99 infidū—stabile nihil est, quod  
infidum est. 603  
infirmus, mollisq; natura. 610  
inflammati honorum cupidi-  
tate. 616  
inflammati plerique audita-  
te rapiuntur ad fortunæ bo-  
na, ad voluptrates. 255  
inflati opinionibus homines  
turpiter irridentur, & in  
maximis versantur errori-  
bus. 139  
influere certis blanditijs in au-  
res concionis. 623  
influere—vt in vniuersorum  
animos tamquam influere  
possimus. 251  
ingrauescens ætas. 445  
ingressus—al. gressus—cauen-  
dum est, ne vramur tardita-  
tibus, in ingressu molliori-  
bus. 172  
ingredi via longa—al. viam  
longam. 445, & 446  
ingredi vitam—qui vitam ho-  
nestam ingredic cogitant.  
446  
inimici—meliùs de quibus  
dam acerbi inimici meren-  
tur, quam ij amici, qui dul-  
ores videntur, illi sàepe ve-  
rum dicunt hi numquam.  
621

## I N D E X.

- inimicis non esse grauiter irascendum. 137  
 iniure gratiam—non ineunda gratia, sed referenda. 98  
 iniure p̄fēlūm. 83  
 iniuria fit dñobus modis: vi, aut fraude. 94  
 iniuria maximē capitalis eorum, qui tum cūm maximē fallunt, id agunt, vt virti boni esse videantur. 94  
 iniuriæ s̄pē existunt calumnia quædam, & nimis callida iuris interpretatione. 81  
 iniuriosi in proximos. 95  
 iniussu populi, & senatus pacem fecerunt cūm Samnitibus. 423  
 iniustitia duo genera sunt, vnum eorum, qui inferunt, alterum qui ab iis, quibus infertur, si possint, non propulsant iniuriam. 73  
 innocens—hoc præceptum officij diligenter tenendum est, neque vñquam innocenter in iudicium capitis arcessas. 268  
 inopes amicorum—si crediderunt tyranni, tum inteligitur, cūm fuerunt inopes amicorum. 594  
 inopina —nec noctam in re est, quām dictu, inopinatum, atque mirabile. 676  
 inquam, & inquit,—ne inquam, & inquit s̄pēius interponeretur. 546  
 inquinatum tot vitijs factum, vtile esse non potest. 384  
 inferire honoribus. 210  
 insidiosè, simulatè, fallaciter. 289  
 insinuare se—callidus ille, & occultus ne se insinuet, studiosè caendum, &c. 625  
 insitio[n]es—conditiones. 501  
 insitio[n]ibus nihil inuenit agricola sollertia. ibidem, insitum—vt esset insitum militibus nostris aut vincere, aut emori. 427  
 instar—mortis instar putant. 293  
 instar—vt omnia ex altera parte collo cata, vix minimi momenti instar habeant. 328  
 instillare oleum menti tamquam—lumini. al. elychnio. 475  
 institutio vitæ communis. 55  
 instruere ad omne officij munus. 469  
 instructos ad iniuriam faciendam. 254  
 instructi horti—emit ortos instructos. 383  
 intemperata benevolentia. 610  
 intentum animum, tamquam arcum, habebat. 475  
 intercessiones pecuniarum in pactionibus candidatorum —al. intercessus. 686  
 interdici bonis patriis solet male gerentibus. 462  
 interior est eorum societas, qui sunt eiusdem gentis. 289  
 internosci possunt fucata, & simulata à sinceris, atque veris.

## I N D E X.

- ris. 622  
 interrogatiunculae minutæ, quasi puncta. 640  
 inuadere—modo hoc malum in hanc remp. inuasit. 301  
 inualetudinem, cauſsam, non mæſtitiam fuisse. 551  
 inuehi in aliquem acerbius, insectariq; vehemētius. 595  
 inuestio earum rerum, quibus egemus. 222  
 inuestus curru in Capitolium. 696  
 inuenit cognomen tōrque detrac[t]o, &c. Torquatus. 425  
 inueterauit iam bonis temporibus in nostra ciuitate, vt splendor ædilitatum ab optimis viris postuletur. 280  
 inuidia metu nonnulli, quod sentiunt, et si optimum sit, non audent dicere. 130  
 inuita Minerua—nihil decet inuita Minerua, id est aduersante, & repugnante natura. 159  
 iocandi genus duplex. 150  
 iocandi genus profumum, & immodestum, ingenuum & modestum oppon. ibid.  
 ioci ingenui, & illiberalis, facilis distinctio est. ibid.  
 iphigeniam immolauit Agamenon pater. 412  
 ira in puniendo maximē est prohibenda. 138  
 ira procul absit, cūm qua nihil recte fieri, nihil considerare potest. 177  
 iracundiam laudant Peripatetici, & dicunt utilem à natu ra datam. 138  
 Iratus Iuppiter nō est metuendus, 419  
 iratus, qui accedit ad peccatum, numquam mediocritatem illam tenebit, quæ est inter nimum, & parum. 138  
 iratorum ora, qualia. 149  
 irreperere possit nomen eius in testamento locupletium. 396  
 isocrates eum librum, qui Pānthenaicus inscribitur, quarto & nonagesimo anno scripsisse dicitur, vixisse quinquennium postea. 450  
 isocrates senex. ibid.  
 index—cūm iurato sententia dicendas sit, meminerit Deū se adhibere testem, id est mentem suam, &c. 352  
 index ponit personam amici, cūm induit iudicis. ibid.  
 iudicis est semper in causis verum sequi. 268  
 iudicis rogandi mos præclarus. Quæ salua fide facere possit.  
 iudicia, in quibus additur, Ex bona fide. 385  
 iudiciorum duplex, est ratio, nam ex accusatione, & defensione constant. 267  
 iugatio capitum. 501  
 iugum—legionibus nostris sub iugum missus. 423  
 iouis stella—prosperus hominum generi, & salutaris

## INDEX.

- fulgor. 699  
 iurau lingua, mentem iura tam gero. 421  
 iurare—quod ita iuratum est, vt mens conciperet fieri oportere, id obseruandum est. ibid.  
 ius augurium, pontificium, ciuile. 479  
 ius bellicum. 420  
 ius feciale. 83, & 421  
 ius gentium, ius ciuile differunt inter se. 290  
 ius gentium omne, est & ciuile, sed non quod ciuile est continuo est & gentium. ibid.  
 ius prætorium — quæ quis promiserit, metu coactus, aut dolo deceptus, iure prætorio liberantur. 81  
 iuris æquabilitas. 137  
 iuris ciuilis summo semper in honore fuit cognitio, atque interpretatio. 187  
 iurisperiti omnes esse non possunt. 292  
 iure gentium—neque natura, id est iure gentium, neque legibus populorum licet sui commodi causa nocere alteri. 336  
 iura belli in rep. maximè sunt conseruanda. 82  
 iusfirandum est affirmatio religiosa. 420  
 iusfirandum—in iurefirando, non qui merus, sed quæ vis sit, debet intelligi. ibid.  
 iusfirandum—nullum vin-
- culum ad astringendam fidem iurefirando artius. 424  
 iusfirandi religio quanta a pud veteres Rom. 425  
 iusta præbenda seruis. 94  
 iustis, & fidis hominibus, id est viris bonis, ita fides habetur, vt nulla sit in his fraudis, iniuriaeque suspicio. 251  
 iustitia ad fidem faciendam plus pollet, quamprudenter ibidem  
 iustitia, & liberalitas omnium virtutum maximè nos ad felicitatem allicit. 103  
 iustitia, & verecundia—inter iustitiam, & verecundiam interest in hominum ratione habenda. 145  
 iustitia—ex iustitia viri boni appellantur. 255  
 iustitia, fundamentum est perpetuæ commendationis, & famæ: sine qua (iustitia) nihil potest esse laudabile. 296, & 297  
 iustitia—honestum nihil esse potest, quod iustitia vacat. 108  
 iustitia—in iustitia virtutis splendor est maximus. 71  
 iustitia intelligentia, seu prudenteriæ coniuncta, quantum volet, habebit ad faciendam fidem virium. 252  
 iustitia—nec iij quidem, qui maleficio, & scelere pascatur, sine villa particula iustitiae possunt vivere. 258  
 iustitia—nullum est tempus, quod

## INDEX.

quod iustitia vacare debeat.

109

- iustitia omni ratione colenda, & retinenda est. 261  
 iustitia vna hæc tria conficit, quæ ad gloriam proposita sunt, benevolentiam, fidem, admirationem. 255  
 iustitiae genera. 73  
 iustitiae fundamentum. 73  
 iustitiae fundamenta. 281  
 iustitiae munera. 72  
 iustitiae partes sunt, non violare homines. 145  
 iustitiae primum munus. 72  
 iustitiae tata vis est, vt ea etiam latronum opes firmer, atque augent. 258  
 iustus nemo esse potest, qui mortem, qui dolorem, qui exsulium, qui egestatem timet, &c. 255  
 iuuenum, iusiones. 506

## K

- K *Ἄρχοντα*—officium medium, & commune.  
 55  
 Karthago coacta parere populo R. per Scipionem, renouat pristina bella, nec potest quiescere. 696  
 Karthaginem, & Numantiam cur Ro. funditus sustulerat. 82  
 Karthropus, officium perfectum, & rectum 55

## L

- Labes libidinis eadē. 660  
 labi, errare, nescire, decipi. 68  
 lapsa est libido in muliere ignota. 659  
 lacedæmone esse honestissimum domicilium senectutis. 515  
 lacedæmonij—apud Platonem est, omnem morem Lacedæmoniorum inflamatum esse cupiditate vindendi. 109  
 lacedæmoniorum opes corrueunt, cum Cleombrotus temere cum Epaminonda conflixisset. 130  
 lacedæmonios iniuste impetrantes repente omnes loci deseruerunt. 242  
 lacerarūt omni scelere patriā. 104  
 lælius—liber de amicitia, qui inscribitur Lælius. 250  
 lælius sapiens est habitus. 547  
 lærans & Rupilius cos. 580  
 laerem leniterem desiderium, quod capiebat è filio, colentem agrum & eum stercorentem, Homerus facit. 591  
 largiri inconsultè—multi patrimonia effuderunt inconsultè largiendo. 276  
 largitio—largitionem corrumptelam dixit Philippus in epistola quadam ad Alexandrum. 275

## I N D E X.

Lægitio fundum non habet.

279

Lægitio, quæ fit ex re familia-  
ri, fontem ipsum benignita-  
tis exhaustit.

275

Lægitionem sequuntur rapine  
276

Lægitores cum dando egere  
experunt, alienis bonis ma-  
nus afferre coguntur. ibid.

Lægorum duo genera sunt:  
quorum alteri prodigi, alte-  
ri liberales.

279

Iatebra per iurio queratur.

420

Iatrocinari, fraudare, adultera-  
re, re turpe est, sed dicitur  
non obsecne.

171

Iatrocinium te duce in foro  
constitutum.

665

Iaudabile—quidquid est laudabile, idem & beatum, &  
florens, & experendum vi-  
deri debet.

656

Iaus abstinentia non hominis  
(Africani) est solum, sed e-  
tiam temporum illorum.

301

Iaxati vinculis.

446

Iaximissimas habenas amicitia-  
habere commodissimum  
esse, quas vel adducas cum  
velis, vel remittas.

587

Iegiones R. in eum locum sepe  
profectæ sunt (quas scripsit  
Cato in Originibus suis.)  
vnde se numquam redditu-  
ras arbitrarentur.

524, &

525

Iepos est adhibendus, si quis  
seris de rebus loquatur.

174

Iepos multis inerat in L. Cras-  
so, L. Philippo, C. Cæsare,  
L. Filio.

155

Ieuari onere senectutis virgin-  
tis, aut aduentantis.

438

Ieuistica calamitas—socij La-  
cedæmoniorum spectato-  
res se præbuerunt otiosos.

Leuistica calamitatis.

242 lex amicitia prima sanciri de-  
bet, vt & ab amicis honesta  
petamus, & amicorum caus-  
a honesta faciamus.

587

lex Cinciae donis & mune-  
ribus, cuius suasor fuit Q.

Maximus.

449 lex de pecunijs repetundis à  
L. Pisonे lata est.

301

lex de sacerdotijs.

624

lex de tribunis pleb. reficien-  
dis.

ibidem.

lex Gabina & Cassia.

586

lex Gabinia & Cassia. videtis  
quanta sit facta labes in ta-  
bella.

586

lex Lætoria.

385

lex naturæ—vna continetur  
omnes, & eadem lege natu-  
rae.

339

lege naturæ rationi subiecti  
sunt appetitus.

149

lex prima in amicitia sancien-  
da, vt neque rogemus res

turpes, neque faciamus ro-  
gati.

585

legem Voconiam voce ma-  
gna, & bonis lateribus sua-  
sit Cato.

451

leges ad puniendum non ira-  
cundia.

## I N D E X.

cundia, sed æquitate dicun-  
tur.

138

leges aliter tolluat astutias, ali-  
ter philosophi.

289

leges xij.tab. leges sacrate.

424

leges hoc spectant, hoc vo-  
lunt, in columem esse ciuiū  
coniunctionem.

336

leges sacrate.

424

legum constituedarum eadē  
causa, quæ regum.

258

liberalitas habent multas cau-  
tiones.

94

liberauit se magna, & inuerata  
inuidia, nec turpi iactura,

nec maxima.

280

liber quis, ex sententia Stoico-  
rum.

676

liber nemo, nisi sapiens.

676

liber non est, cui mulier impe-  
rat, cui leges imponit.

676

libri Ciceronis de rep.

286

liberale nihil est, quod non sit  
idem iustum.

95

liberales non sunt, qui gratifi-  
cantur cuiquam, quod absit

illi, cui prodeste vellevidean-

tur, sed pernicioſi affen-  
tores.

95

liberales, qui.

279

liberalitas duo genera sunt.

98

liberalitas, & beneficentia  
duplex ratio est.

275

liberalitas, seu benignitas pro-  
pensior esse debet in cala-  
mitos, quam in eos, qui

res meliores querunt nullis  
suis rebus aduersis.

286

liberalitate nihil est naturæ ho-  
minis accommodatius.

94

libertas, est potestas viuendi ve-  
tus.

676

libertatis proprium est, sic vi-  
tare ut velis.

117

libidine aut metu commoto-  
rum ora qualia.

145

libidine dominante tempera-  
tia locum non esse, nec o-  
mnino in voluptatis regno

virtutem posse consistere.

480

libidines consecratrices volu-  
ptatis.

430

licere—vt his ingratias esse  
non liceat.

285

limatur veritas—alia est illa

cum veritas ipsa limatur in  
disputatione subtilitas, alia

cum ad opinionem com-  
munem omnis accommo-  
datur oratio.

252

litteræ neque expressæ, neque  
oppreſſæ.

173

liuius poëta.

498

loci graues ex philosophia.

639

loci, & temporis magna vis  
est.

184

locuples testis.

327

locupletes auctores.

415

locupletes, & honorati, & bea-  
ti, ne obligari quidem be-  
neſicio volunt.

293

longinquus—non longin-  
quus inter nos erit digre-  
sus, difceſſus.

533

loqui ad voluptatem omnia,  
nihil ad veritatem.

621

lubricus locus.

109

I. Acilius appellatus Sapiēs.

550

## I N D E X.

- I. Brutus in liberanda patria est interfectus. 524  
 I. Cæcilius Metellus. 510  
 I. Camillo, P. Claudio cos. Tarrentum venit Plato. 181  
 I. Crassus & Q. Mucius magni fæcissima ædilitate functi sunt. 280  
 I. Crassus, L. Philippus—in his erat multus lepos. 155  
 I. Crassus non aliunde mutuatus est, sed sibi ipse peperit maximam laudem ex vlla accusatione nobili, & glorijs, Carbonis. 276  
 I. Crassi eloquentissimi viri copiosa magis, quam sapiens oratio. 678  
 I. Crassi vberior, quam Catulorum nec minus faceta oratio. 173  
 I. Fafij in accusando M. Aquilio cognita industria est. 268  
 I. Luculli villarum magnificientiam multi sunt imitati. 178  
 I. Minucij Basili falsum testamentum Romanum allatum è Græcia. 395  
 I. Mummius totam Corinthum contempserit. 677  
 I. Mummius nihil copiosior cum copiosissimam vrbem funditus sustulisset. 301  
 I. Paullus morte huius collegi in Cannensi ignominia temeritatem. 524  
 I. Piso legem tulit de pecuniis repetundis. 301  
 I. Quintio Cincinnato aranti
- nuntiatum est eum dictatorem esse factum. 505  
 I. Sulla, C. Cæsar's pecuniarum translatio à iustis dominis ad alienos, non debet liberalis videri. 95  
 lucubratum opusculum his iam contractioribus noctibus. 640  
 luculenter—hoc quidem sane luculenter, ut ab homine perito definiendi. 384  
 ludendi quidam modus est retinendus. 150  
 ludus & iocus—neque enim ita generati à natura sumus, ut ad ludum & iocum facti esse videamur, sed ad seueritatem portiùs, & quedam fidia grauiora, atque maiora. 149  
 ludo & ioco vti illis quidem licet, sed sicut somno, & quietibus ceteris, &c. 150  
 ludorum, venationumque apparatus. 279  
 ludibria fortunæ, quæ nos appellamus bona, ne sua quidem putauit. 647  
 lumen accendere de suo lumine. 180  
 lumen alterum ciuitatis extixisset. 474  
 luna—ex stellis erat illa minima, quæ vltima cælo, citima terris, luce lucebat aliena. 698  
 luna in infimo orberadii solis accessa conuertitur. 699  
 lunaris, & infimus cursus gravitati-

## I N D E X.

- uissimo mouetur sono, ibid. benda est capessentibus rebus, nihilo minus quam philosophis. 119  
 lustre ratione, & animo. 103 magnas vero agere gratias. 625  
 luxuria cum omni ætati turpis, tum senectuti foedissima. 167  
 lycomedes—Neoptolemus Troiam capere potuisset, si Lycomedem apud quem erat educatus, multis cum lacrymis iter suum impediens audire voluisset. 610  
 lysander Lacedæmonius. 509  
 lysander Lacedæmonius, ver-sutissimus, & patientissimus. 156  
 lysandrum Ephorum expulerunt Lacedæmonij. 156  
 lysis Pythagoreus Epaminondam Thebanum erudiit. 192  
 malitia ea, quæ vult illa quidem fei videri prudentiam, sed abest ab ea longissime. 290  
 malitia—nec vlla penicies vita maior inueniri potest, quam in malitia simulatio intelligentia. 145  
 malitiosa iuris interpretatio. 81  
 mala—ex malis minima eligere oportere. 322  
 mala—non solum ex malis eligere, sed etiam exciperre ex his ipsis si quid ineffet boni oportere. ibid.  
 mamerco homini ditissimo prætermisso ædilitatis, consuls repulsam attulit. 280  
 manare—latissime eorum manat industria. 292  
 mancipium—Marius venditor in macipio Sergio Oratè emptori non dixerat, sed,
- M

## I N D E X.

- quas ab eodem paucis ante  
annis emerat, Sergio serui-  
re. 289
- mancipia dominum facta ne-  
xu, aut aliquo iure ciuilis.  
676
- mandabam memoriae multa  
ab eo prudenter disputata,  
&c. 545
- mandata litteris, ingenij mo-  
numenta, agitatio mentis. 322
- manu cum hoste configere, &  
temere in acie versari, im-  
mame quiddam, & belluarū  
simile est. 124
- m.Curius consumpsit extre-  
mum tempus ætatis in vita  
rustica. 505
- m.Curius, & Coruncanus, in-  
ter se coniunctis. 581
- m.Curius vixit cùm P.Decio.  
484
- m.Curius—in M. Curij villa  
nihil splendidum, nihil orna-  
tum fuit præter ipsum. 677
- m.Curius, Ti. Coruucanius.  
484
- m.Curius victus tenuitas. 648
- m.Manilius pauper—habuit  
ædiculas in Carnis, & fundū  
in Labicano. 687, & 688
- marathon—campus rethorū  
de Marathōne, Salamine,  
Plateis, &c. 108
- m.Marcelli interitum ne cru-  
delissimus quidem hostis ho-  
nore sepulturae carere passus  
est. 524
- m.Atilius Regulus consul ite-  
rum, in Africa ex insidiis ca-
- ptus, &c. 415
- m.Brutus summo genere na-  
tus, illius filius, qui juris ciui-  
lis in primis peritus fuit, ac-  
cuzator nominatus. 268
- m.Cato, & C. Lælius, Sapien-  
tes. 332
- m.Cato, M. Catonis pater, à fi-  
lio M. dictus. 388
- m.Cato Sapiens appellatus.  
550
- m.Catonis epistola ad M. Fil.  
83
- m.Crassus & Q. Hortensius ho-  
mines eiusdem ciuitatis, al-  
eiusdem ætatis, potentissi-  
mi. 395
- m.Lepidus pontifex max. 510
- m.Octauij frumentaria largi-  
tio. 297
- m.Pacuuij in noua fabula. 567
- m.Pomponius tribunus pleb.  
diem dixit L. Manlio A.F.  
424
- m.Marius Gratidianus. 289
- m.Regulus, nec ærumnosus,  
nec infelix, nec miser. 655
- m.Scaurus C. Mario non cede-  
bat. 122
- m.Scaurus, M. Drusus adoles-  
scens valde severi. 155
- m.Valerius Coruinus. 510
- m.Seio non est vitio datum,  
quod in caritate annonæ  
esse modium populo dedit.  
280
- mare Atlanticum, mare ma-  
gnum, Oceanus. 701
- marius Gratidianus. 401
- marmorea sola. 687
- nostro.

## I N D E X.

- Mars—rutilus, horribilis que  
terris Mars. 699
- marte nostro—nullis adini-  
niculis, sed, ut dicitur marte  
nostro. 344
- massanissa hospes autius Sci-  
pionis. 474
- massanissa rex familiæ Scipo-  
num amicis, &c. 695
- massilia in triumpho portata.  
242
- matellio Corinthius. 677
- materiæ—ædes malè mate-  
riatæ, ruinosa. 380
- mauult libi quisque, quod ad  
vsum vita pertinet, quam  
alteri acquirere: idque con-  
cessum est non repugnan-  
te natura. 336
- medici ad vrendum, & secan-  
dū raro, inuitique veniunt.  
177
- medici leuiter ægrotantes le-  
niter curant: grauioribus au-  
tem morbis pericolosæ cu-  
rations, & ancipes adhi-  
bere coguntur. 129
- medicorum consuetudo in a-  
deundis periculis imitanda  
est, qui leuiter ægrotates, le-  
niter curant, &c. ibid.
- mediocritas placet Peripareti-  
cis, & rectè placet, modò ne  
laudarent iracundiam, & di-  
cerent ut ille à natura da-  
tam. 138
- meditatum nobis ab adolescentia  
esse deber morte ut ne-  
gligamus, sine qua medita-  
tione tranquillo esse ani-  
mo nemo potest. 524
- meditata & preparata. 74
- meminisse—omniæque ciuis  
non solum facta, sed etiam  
dicta meminisset. 696
- memoria—numquam ex a-  
nimô meo discedit illius  
optimi, atque vicit illius vi-  
ri memoria. ibid.
- memoria minuitur, nisi exér-  
ceas eam. 461
- menalippa, Clytemnestra. 160
- mendatiū omne ex rebus con-  
trahendis tollendum est.  
285
- mens cuiusque is est quisque,  
non ea figura, quæ digito  
monstrari potest. 702
- mentis agitatio numquam ac-  
quiescit. 69
- mente nihil præstabilius ho-  
mini dedit Deus. 480
- mercatura bonarum artium—  
ad quem cùm tamquam ad  
mercaturam bonarum ar-  
tium sis profectus. 323
- mercatura si tenuis est, fordi-  
da putanda est, si magna,  
& copiosa, multa vndique  
apportans, multisque fine  
vanitate impertiens, nō est  
admodum vituperanda. 188
- mercenariorum omni i quæ-  
stus sunt illiberales. 187
- mercurij, & Veneris stell. vis  
eadem est. 699
- messis Sullani temporis. 686
- metiri debemus nostra studia

I N D E X.

- naturæ regula. 159  
 metiri omnia emolumens, & commodis. 334  
 metiri res expetendas vel voluptate, vel indolentia. 327  
 metiri sumnum bonum suis commodis, non honestatæ. 45  
 metrodorus scripsit, vitam omnem beatam firma corporis constitutione, eiisque constitutionis spe explorata contueri. 428  
 metuentium ora qualia. 149  
 metui—Quem metuunt, oderunt: Quem quisque odit, perisse expertit. 238  
 metui—qui se metui volent, à quibus metuuntur, eosdem metuant ipsi necesse est. 241  
 metus absit, caritas retineatur. ibid.  
 metus—malus custos diuturnitas metus. 238  
 metus omnis, est seruitus. 678  
 metus—quis aut eum diligat, quem metuit, aut eum, à quo se metui putet. 594  
 metum premente nulla imperij vis quamcumuis magna, potest esse diuturna. 241  
 migrare quæ pertinent ad veritatem, & ad fidem, & non seruare. 80  
 militem gloriosum imitari.
- 177  
 milites gloriösi. 625  
 milo Olympiæ per studium ingressus esse dicitur, cum humeris bouem sustineret. 473  
 milonis Crotoniatæ vox valde conœpta. 468  
 miloni summo honori fuit, quod gladiatoriis emptis reip. caussa, quæ salute Ciceronis continebat, omnes P. Clodij conatus, furorē que compresur. 281  
 minerua Phidix. 640  
 minima de malis. 418  
 minima ex malis eligere oportere. 322  
 minister, & præbitor, non rex. 275  
 minuere sensim alienam consuetudinem, & disciplinam. 242  
 minutæ interrogatiunculae, quasi puncta. 633, & 640  
 minutii philosophi. 534  
 mittere sub iugum leonis. 155  
 missus factus miles ab imperatore. 83  
 mixta modestia grauitas in oratione. 267  
 moderatio animi, & æquitas. 437  
 moderatio, temperantia, aliae virtutes. 183  
 modestia, scientia opportunitatis idoneorum ad agendum temporum. 183  
 mo-

I N D E X.

- modestia, scientia est earum terrum quæ aguntur, aut dicuntur, loco suo collocandrum. 182  
 modios multos salis simul endendos esse, vt amicitiæ munus expletum sit. 604  
 modus adhibetur largitioni, isque referatur ad facultates. 276  
 modus optimus, decus ipsum tenere. 182  
 moles oppositæ fluctibus. 222  
 moliri iudicij corruptelam. 686  
 mollire aliquem iuueniliter exsultantem, sua patientia. 449  
 mollis—infirmitas, mollisque natura. 610  
 mollem, & iucundam, efficit senectutem. 438  
 molliter ferendum sapientiæ atatus extreum. 443  
 monere, & moneri proprium est veræ amicitiae, & alterum liberè facere, non asperre. 621  
 monitio acerbitate carere debet. 620  
 monumenta ingenij mandata litteris. 322  
 mori suo tempore, homini optabile est, homini extinguigi suo tempore optabile est. 534  
 moriendi sensus si aliquis esse potest, is ad exiguum tempus, praesertim ieni. 524  
 moriendi sensum celeritas mortis aufert. 556  
 moriendum certè est, & id incertum an eo ipso die. 524  
 morositas inutilis, & odiosa—non incidamus in morositatem inutilem, & odiosam. 137  
 morositas & quædam alia via senilia habet aliquid excusationis. 515  
 mors aut plene negligenda est, si omnino extinguit animum, aut etiam optanda, si aliquo eum deducit, ubi sit futurus æternus. 516  
 mors omni ætati communis est. 520  
 mors terribilis est iis, quorum cum vita omnia extinguntur, non iis, quorum laus emori non potest. 239  
 morti nihil tam simile, quam somnus. 538  
 mortem esse negligendam—meditatum nobis ab adolescentia esse debet, mortem vt negligamus: sine qua meditatione tranquillo esse animo nemo potest. 524  
 morte omnibus horis impeudentem timens qui poterit animo confistere? ibid.  
 mortem—post mortem sensus aut optandus, aut nullus

## I N D E X.

- est. ibid. ginta annorum. 306  
mortui—viuunt, iij qui ex cor- mouere veros heredes, in eo-  
porum vincis, tamquam è rum locum succedere.  
399  
mortuorum clarorum viro- moueri desiderio alicuius.  
rum honores post mortem 555  
permanent. 530  
mortuis religiosissima iura motus animorum, duplices  
tribuerunt antiqui. 557 sunt. 172  
morsus aciores sunt intermis- motus corporis, apti ad natu-  
ram—motus animi accom- modati ad naturam pro-  
bandi. 149  
motus palæstrici sunt sape o-  
diofiores. 172  
motu animi sublato, nihil in- terest, non dico inter pecu-  
dem, & hominem, sed inter  
hominem, & truncum, aut  
saxum. 588  
mucius Porfennam interfecit  
sine spe salutis suæ. 648  
mulierculæ magis amicitia-  
rum præsidia querunt, quæm  
viri: & inopes, quæm opulen-  
ti, &c. 587  
mullos barbatulos de piscina  
exceptare. 677  
multiplex ingenium & tortuo-  
sum, fidum esse non potest.  
603  
multiplicata domus. 177  
multitudo imperita — Qui  
ex errore imperitæ multitu-  
dinis pendet, hic in ma-  
gnis viris non est habendus.  
109  
multitudinis amor quibus re-  
bus maximè commoueatur.  
251  
mouere possessiones quinqua-

## I N D E X.

- multitudinis benevolentiam  
facillimè conciliare possunt  
ij, qui rcp. præsunt, abstinen-  
tia, & continentia. 302  
multos modios salis simul e-  
dendos esse, vt amicitiæ mu-  
nus expletum sit. 604  
munditia non odiosa, neque  
nimis exquisita est adhuc ben-  
da. 172  
munificum esse conuenit in  
dando, non acerbum in exi-  
gendo. 288  
munitus tanto præsidio. 655  
munus officij — ad omne  
officij munus instruere.  
469  
munus proprium magistratus.  
167  
murenarum copia gloriari.  
677  
musicorum aures vel minima  
sentient. 184  
mutuatio officiorum — alias  
mutatio. 73  
mutare dominum, non liber  
esse vult. 678  
mutatio morum, instituto-  
rumque facienda est, si quis  
intelleixerit, se errasse in de-  
ligendo genere vita. 164  
N  
NÆ ille non magno desi-  
derio viriū tenebitur.  
473  
nati sumus non ad ludum, &

iocum, sed ad seueritatem  
potius. 149  
natura — à natura gignitur sen-  
sus diligendi, & beneuelen-  
tiæ caritas. 575

natura — aliquid esse natura  
pulchrum, atque pre-  
clarum, quod sua sponte pe-  
teretur. 484  
natura hoc præscribit, vt ho-  
mo homini, quicunque sit,  
ob eam ipsam caussam, quæd  
is homo sit, consultum velit.  
339  
natura imbecilla est ad con-  
temnendam potentiam.

602  
natura — in omnibus, quæ a-  
guntur, ex eo, quo quisque  
modo natus est, vt supra di-  
ctum est, quid decet, exqui-  
rimus. 164

natura iuri scons est. 395  
natura — maior pars homi-  
num eo ferè deferri solet,  
quò à natura ipsa deducitur.  
185

natura multò firmior, & con-  
stantior est, quæm fortuna.  
164

natura mutari non potest, id-  
circo vera amicitiæ semp-  
ternæ sunt. 576  
natura — omnia, quæ secun-  
dum naturam sunt, sunt ha-  
benda in bonis. 520

natura rerum omnium mater.  
649  
natura solitarium nihil amat,  
Cc 3

## INDEX.

- semperq; ad aliquid, tanquam  
adminiculum, annititur. 620
- natura vniuersa—contra vni  
uersam naturam non est con  
tendum. 159
- naturae tam diligentem fa  
bricam hominum verecun  
dia est imitata. 168
- natura ratio, est lex diuina, &  
humana. 336
- naturae repugnare non attinet.  
159
- natura duce congregabantur  
homines. 297
- naturam imitari aliorum, o  
mittere suam. 159
- naturam optimam ducem, tan  
quam Deum, sequamur,  
eique pareamus. 442
- naturam optimam viuendi du  
cem sequi. 564
- naturam sequamur, & ab om  
ni, quod abhorret ab ocul  
orum auriūmque approba  
tione, refugiamus. 171
- natura nihil appetentius simi  
lum sui, nihil capacius.  
589
- nauis conducta, quod peruen  
tum sit eò quo sumpta est,  
nō domini est, sed nauigant  
ium. 409
- nearchus Tarentinus Catonis  
hōspes. 481
- necessitati esse parendum.  
298
- necessitati vt quam occultissi  
mē pareant, omnes operam  
dant. 169

- necessitudinum gradus non  
iidem sunt, qui temporum.  
107
- nefas dictu. 450
- negat quis nego, &c. 621
- neoptolemus Troiam capere  
non potuisse, si Lycheme  
dem, apud quem erat educa  
tus, multis cum lacrymis i  
ter suum impedientem, au  
dire voluisse. 610
- nepronus tres optationes. al  
optiones Theseo dedit. 412
- neptunus, quod Theseo promi  
serat, facere non debuit. 81
- nequissimus seruus. 677
- neruosiūs differere—remis  
fius, oppon. 420
- nestor—dux ille Græciā nū  
quam optat, vt Aiacis similes  
habeat decem, at vt Nesto  
ris. 469
- nestor tertiam iam aetatem  
hominum viuebat, ibid.
- nestor sēpissimè apud Home  
rum de virtutibus suis pr  
dicat. tertiam enim iam aet  
atem hominum viuebat.  
ibidem
- nestoris eloquentia—ex ore  
Nestoris melle dulcior flu  
ebat oratio. ibidem,
- nexus—mancipia, quæ sunt fa  
cta dominorum nexus, aut  
aliquo iure ciuili. 676
- nicocles tyranus improuiso  
oppressus ab Arato. 306
- nihil est omni ex parte perfe  
ctum. 614
- nihil stabile est, quod infidum  
est.

## INDEX.

- est. 603
- nihil est tā incredibile, quod  
non dicendo fiat probabi  
le. 640
- nitor corporis. 510
- niti—tu eris vñus, in quo ni  
tatur ciuitas. 697
- nocere alteri sui commodi  
causa non licet. 336
- nodus amabilissimus amici  
tiae. 594
- nomina facere. 383
- non putaram—magni inge  
nij est non committere, vt  
aliquando dicendum sit, nō  
putaram. 124
- norma—ad normam istorum  
(Stoicorum) non fuerunt sa  
pientes. 564
- nota turpis—ō turpem no  
tam temporum illorum. 396
- notationes, animaduersionē  
que censorum. 424
- notionem animi sui compli  
cata euoluere. 399
- notitia antiquitatis. 450
- nouus homo—Cn. Octavius  
nouus homo. 177
- nugator—Milo Crotoniata.  
468
- numæ Pompilij capedines, ac  
fictiles vrnulae non minùs  
gratæ Dijs immortalibus  
fuerunt, quam filicatae isto  
rum patere. 648
- numatia ab Africano excisa.  
122
- numero iudicare—pondere  
—non enim numero hæc  
iudicantur, sed pondere.  
est.
- numerous omnes habere—o  
mnes numeros habere. 331
- numimi adulterini. 410
- nuncupare—quaæ essent lin  
gua nuncupata, satis erat pre  
stari. 388
- nutrices, & paedagogi negli  
gendi quidem non sunt, sed  
alio quodam modo amandi.  
610
- nutus—quem nutum locuple  
tis orbi senis non obseruat?  
678
- nympharum ædes manu Clo  
dij deflagravit. 666

## O

- O Tite, si quid ego. 437
- Obiecta aliqua specie vti  
litatis. 344
- obire—cūm obieris legatus  
Ægyptum, Syriam, Aliam,  
&c. 696
- obire diem, & munus—qui  
diligentissimè illum diem  
semp̄, & illud munus so  
litus esſe obire. 551
- obiri—vt hominum cœtus  
à se obiri velit. 60
- obiurgatio contumelia carere  
debet. 620
- obiurgatio—id ipsum, quod  
acerbitatis habet, obiurgatio  
significandum est ipsius  
causa, qui obiurgeatur, esse  
suscepit. 177
- obiurgationes nonnumquam  
incident necessariae. 176

## I N D E X.

- obligare aliquem militiae sacramento. 83  
 obmutescere in suis studijs neminem vñquam coëgit senectus. 462  
 obrepit quibusdam senectus citius quam putarant. 442  
 obrepere—semper in his studijs, laborib[us]que viuenti non intelligitur quando obrepit senectus. 480  
 obtriguerant pruina duo terræ cinguli. 700  
 obruere thesaurum—nec vero quemquam senum audiui oblitum, quo loco thesaurum obruisset. 462  
 obsequium amicos, veritas odiū parit. 620  
 obseruare, & colere debemus bene de rep. sentientes, ac bene meritos, aut merentes, aliquo honore, aut imperio affectos. 185  
 obseruare strictè, ne plus redat, quam acceperit. 596  
 obseruare nutum locupletis letis. 678  
 obfessi ab hostibus si aquæ sextarium emere mina cogentur, hoc primo omnes mirari, deinde, vbi attendent, veniam necessitati dare. 279  
 obstringere beneficiis homines. 290  
 obstringere se parricidio patriæ. 405  
 obstringere se scelere. 334  
 obsurduerunt hoc sonitu cōpletæ aures. 700  
 obtinere locum non honestissimum seruitutis. 677  
 obtusior acies—animus, cui fit obtusior acies, non videt se, cum à corpore discedit. 533  
 obuenire—sin qua necessitas huius munieris obuenirerit, &c. 297  
 occæcatus—occæcatum femen cohibet, vnde occasio. 500  
 occasio—occæcatum femen cohibet, ex quo occasio, quæ hoc efficit, nominata est. ibid.  
 occupare tyrannidem. 409  
 occupatum Malium interemit Seruilius Ahala. 505  
 occurrit nobis à doctis, &c. 211  
 oceanus—mare Atlanticum, mare magnum. 701  
 oculi abstinentes—prætorem non solum manus, sed etiam oculos, abstinentes habere oportet. 184  
 oculi in eum coniiciuntur, qui ab inuite ætate cauſam habet celebritat[is], & nominis aut à patre acceptam, aut aliquo casu, & fortuna. 262  
 oculorum obtutus. 184  
 oculos eruditos habemus. 677  
 oculos omnium in te contectos esse existimare debes. 550  
 officia aperte magis ingenui hominis est, quam fratre oc

## I N D E X.

- cultare sententiam. 603  
 odia hominum—multorum odiis nullas opes posse obſistere, nuper est cognitum. 238  
 odia hominum multum valent ad pestem. 238  
 economicus Xenophontis. 509  
 economicum Xenophontis Cicero è Græco in Latinum sermonem conuertit, cum esset adolescens. 311  
 oedipus Colonus, tragœdia Sophocli. 462  
 offendio—in fragili corpore odioſa omnis offendio est. 516  
 offendio—turpitudo in deformitate corporis habet a liquid offendionis. 420  
 offerre se periculis sine causa. 129  
 officina nihil ingenuum habere potest. 188  
 officere—demoliri ea, quorum altitudo officeret auctiſcias. 388  
 officium aliud medium, aliud perfectum. 55  
 officium commutatur fundamentis iustitiae communatis. 81  
 officium magistratus. 167  
 officium—nulla vitæ pars officio vacare potest. 44  
 officium—omnis de officio duplex quæſtio est. 55  
 officium peregrini, & incolæ. 168  
 officium, quod ad coniunctionem hominum, & ad ſocietatem tuendam valet, anteponendum est illi officio, quod cognitione, & scientia continetur. 194  
 officium rectum, perfectum, atque abſolutum. 331  
 officia—latifimè patent ea, quæ de officijs tradita à philosophis, & præcepta sunt. 44  
 officia media appellant Stoici, communia, quæ latè patent, & ingenij bonitate multi aſſequuntur, & progressionē discendi. 331  
 officia naturæ sunt aptiora ea, quæ ex cōmunitate, quām ea, quæ ex cognitione diſcuntur. 188  
 officia non eadem disparibus aetatis tribuuntur. 177  
 officia quædam alijs magis, quām alijs debentur. 107  
 officia ſeruanda etiam aduerſus eos, à quibus iniuriam acceperis. 82  
 officiorū genera, quæ pertinēt, ad vitæ cultum perſequitur Cicero lib. 1. de offic. 29  
 officijs scientiæ, præponenda ſunt officia iustitiae. 189  
 ominari—malo alij reip. quām noſtre ominari. 297  
 omnia præclarā rara. 614  
 onera duo quæ putantur maxima. 451  
 onus Aetna grauius ſustinet. 442

## I N D E X.

- operabemigè facere indigen  
tibus debemus potius, quam  
pecunia. 275
- opera prodesse multis licet.  
292
- opes cum infamia non sunt  
utiles. 407
- opes expetuntur ut colare. 566
- opifices omnes in sordida arte  
versantur. 188
- opinionis error. 74
- opipare à Pythio apparatus  
erat conuiuum. 383
- oportet—quidquid non oper  
tet, scelus est. 661
- opportunitas est locus actio  
nis. 183
- opportunitas temporum. 182  
183
- opposuit muri causam Romu  
lus. 351
- oraculum Apoll. Pythij, Spar  
tā nulla re alia, nisi auaritia,  
esse peritaram. 301
- orbatus tali amico, qualis nū  
quam fuit. 556
- orbēs—nouem orbibus, vel  
potius globis connexa sunt  
omnia. 698
- ordo actionum qualis adhi  
bendus. 183
- ordo rerum. 182
- ordinis definitio. 182
- Orestes, Pylades—cūm Pyla  
des Orestem se esse diceret,  
vt pro illo necaretur, Ore  
stes autem ita vt erat, Ore  
stem se esse perseueraret,  
&c. 567
- Orestes prandia in semitis decu

- mæ nomine magno hono  
ri fuerunt. 280
- orichalcum— si quis aurum  
vendens, Orichalcum se  
putet vendere. 410
- originum liber septimus. 479
- oratio Architè Tarentini, ma  
gni in primis, & præclarí  
viri. 480
- oratio compta, & mitis deser  
ti senis. 468
- oratio erudita—popularis. 649
- oratio hæc mihi suscepta est  
non de te, sed de genere to  
to. 263
- oratio—nihil tam horridum  
tam incultum, quod non  
splendescat oratione, & tam  
quam excolatur. 640
- oratio Philippi, capitalis, ad  
æquationē bonorum pert  
inens. 297
- orationis contentio plus po  
test, maiorēmque vim ha  
bet, & ad gratiam, & ad glo  
riam, quam sermo. 267
- orationis duplex ratio est. 267
- orationis magna vis est, & eaque  
duplex, altera contentionis,  
altera sermonis. 173
- orationis vocem indicem ha  
bemus. ibid.
- orator lāguescātne senectute.  
468
- orator munus non ingenij so  
lum est, sed etiam latērum.  
ibid.
- oratoris proprium aptè, distin  
cte, ornate dicere. 28
- ortus amicitiæ à natura est, nō  
ab

## I N D E X.

- ab imbecillitate. 574, &  
575
- ortus nostri partem patria vin  
dicat pārem amici. 73
- ortum amicitiæ reliquunt hu  
miliem sanè & minimè ge  
nerosum. 575, & 576
- ostendo—nisi, vt dicitur, aper  
tum pectus videas tuumqùe  
ostendas. 624
- ostendere patriæ lumen ani  
mi, ingenij, consiliique sui.  
696
- orientatio insolens in comme  
moranda pecunia. 685
- otium, & solitudo plerisque  
languorem afferunt. 321
- otiosi homines contenti suo,  
& paruo. 118
- P
- Pabulum studij atque do  
ctrina. 498
- paci, quæ nihil habitura sit insi  
diarum, semper est consulē  
dum. 82
- pace vel Quirini, vcl Romuli  
dixerim. 351
- pactum prædonibus pro ca  
pite pretium. 421
- pacta, & promissa sempérne  
seruanda sint, quæ nec vi,  
nec dolo malo facta sint.  
410
- pænuria—amicorum firmo  
rum stabilium, constantium  
magna est pænuria. 602
- pala anuli. 348
- palestrici motus sunt sæpe o  
diolores. 172
- pauætius—de duobus hone  
stis, vtrum honestius, quæ  
ri potest: qui locus à Panæ  
tio est pratermissus. 188
- panætius sine controversia de  
officijs accuratissimè dispu  
tauit. 327
- panætius triginta annos vixit  
postquam tres libros de of  
ficiis edidit. ibid.
- papius peregrinos urbis vsu  
prohibuit. 376
- par sit ratio acceptorum, & da  
torum. 596
- pares cum paribus veteri pro  
uerbio facilè congregantur.  
446
- Paædæcia dicta sunt, quia sunt  
admirabilia, contrâque opi  
nionem omnium. 640
- Paædæcia videntur maximè  
esse Socratica, longèque ve  
risimilà. ibid.
- parenti nonnumquam adimi  
vita sine scelerē potest.  
661
- parentes, & filii—caritas, quæ  
est inter natos, & parentes,  
dirimi nisi derestabilis scle  
re non potest. 574
- parentiores—quin etiam ob  
has ipsas causas parentiores  
habuerunt exercitus, & for  
tiores. 122
- parietes urbis modo stant, &  
manent. 243
- pario—qui quandam pepe  
risset otium ciuitati. 322

I N D E X.

- Parti ciuum consulentes, partem negligentes, rem perniciosissimam in ciuitatem inducunt, seditionem atque discordiam. 133  
 partes à natura occultatas, omnes, qui sana mente sunt, remouent ab oculis. 168  
 parcimonia, magnum vestigium. 687  
 partes, quarum vsus sunt necesse sarij, neque eas partes, neque earum vsus suis nominibus appellant. 169  
 pasci maleficio, & scelere. 258  
 patetacere aures assentatori bus nō oportere. 138, & 139  
 parco—res familiaris ne libidini potius, luxuriæque, quam liberalitati, & beneficentia pateat. 142  
 patere domos hominum illustri hospitibus illustribus valde decorum est. 287  
 pater sanctissime, atque optimae. 697  
 patrem fana expilantem, aut cuniculos agentem in ærarium debeatne arguere aut indicare filius. 409  
 patrem necare—in patris vita violanda multa peccantur: violatur is, qui procreavit: is, qui in sede ac domo ac rep. collocavit. 661  
 patrem vita priuare, per se non est scelus. ibid.  
 patrum gloriae æmuli filij— quorum patres aut maiores aliqua gloria præstiterunt,
- student plerumque eodem in generc laudis excellere. 163  
 pati iniuriam. 611  
 patienter, non repugnanter. 221  
 patria præstat omnibus officijs. 409  
 patria vna omnes omnium caritates complexa est. 103  
 patriæ conductus pios cives in parentes habere. 409  
 patriæ, & parentibus primo loco tribuendum officium est, quorum beneficijs maximè obligati sumus. 104  
 patriæ, parentis, amici periculum si sapienti allatum sit, subueniat eis, si possit, relictis, & abiectis studiis suis, etiam si, &c. 189  
 patricidium patriæ. 409  
 patrocinij orbis terræ, quam imperium. 242  
 patrocinij plurimorum defudit voluntas. 238  
 patroni caussarum est, non numquam verisimile, etiæ animus sit, verum defendere. 649  
 patroni—qui ciuitates, aut nationes bello deuictas in fidem receperunt, earum patroni sunt more maiorum. 83  
 paulus potitus est omni Macedonum Gaza, quæ fuit maxima. 301  
 paupertas, & senectus duo maxima onera. 451

I N D E X.

- peccare est tamquam transire lineas. 659  
 peccare licet nemini. ibid.  
 peccare numquam est vtile. 286  
 peccare quoquæ te verteris, vnum est. 659  
 peccatum— quidquid peccatur, perturbatione rationis peccatur. 661  
 peccata, & recte facta esse aqualia. 660  
 peccata ex vitiis manant. 660  
 peccata, seu delicta esse paria—quæ vis est, quæ magis aereat homines ab omni improbitate, quam si senserint nullum in delictis esse discrimen? ibidem.  
 peculij cupiditate nullam conditionem recusare durissimæ seruitutis. 678  
 pecunia—malè se res habet, cum id quod virtute effici debet, tentatur pecunia. 235  
 pecunia—non esse cupidum pecunia est. 688  
 pecunia cupiditas, & honoris certamen, & gloriæ, amicitiarum pestes. 580  
 pecunia cupiditas quamobrem sit infinita apud plerosque. 74  
 pecuniae fugienda cupiditas est. 116  
 pecuniae modus—non æstimatione sensus, verum vietu acque cultu terminatur pecuniae modus. 688  
 pecuniae non querendæ solū ratio est, verum etiam collaudandæ. 261  
 pecuniae repet.—lex de pecunia repetundis lata à L. Pisone. 301  
 pecuniam qui habet, non reddit: qui reddidit, non habet: gratiam & qui retulit, habet, & qui habet, retulit. 293  
 pelias—quo me proficisci tem haud sane quis facile retraxerit, nec si tamquam Peliam recoxerit. 538  
 pellicatus suspicio. 244  
 pendere ex fortuna—cui spes omnis, & ratio, & cogitatio pendet ex fortuna, huic nihil potest esse certi, &c. 655  
 penitus amittere. 242  
 pennus peregrinos urbis via prohibuit. 376  
 peperit sibi maximam laudem ex illa accusatione nobilità Carbonis. L. Craflus. 267  
 percrebruisset—quod cum percrebruisset, &c. 383  
 percussione digitorum. 396  
 percussione digitorum, hereditates omnes posse convertere. 400  
 perduellis, hostis olim vocabatur. 83  
 perduelles—pirata non est ex perduellum numero definitus, sed communis hostis omnia. 421  
 peregrisse ætatis fabulam. 515  
 peregrinations, rusticationes, nescie mihi cum eo erant communes. 629

## I N D E X.

- peregrini & incolæ officium  
168
- peregrini — malè qui peregrinos vrbibus vti prohibent.  
376
- peregrini — vsu vrbis prohibere peregrinos, sane inhumantum est, quod fecerunt Pennus, & Papius. ibid.
- perfectum omni ex parte nihil est.  
614
- Perfuga à Pyrrho rege venit in castra Fabricij. &c. 407
- perfuga à Pyrrho senatui est pollicitus, se venenum regi daturum, & eum necaturum. ibid.
- pericles à Demetrio Phalereo reprehenditur, quòd tantam pecuniam in præclara illa propylæa coniecerit. 286
- pericles Sophoclem collegam reprehendit.  
184
- periculosa, & ancipites curationes grauioribus morbis adhibendæ. 129
- perimere — huiusmodi credores Panætium persecuturum fuisse, nisi aliqui casus confitum peremissaient. 343
- peripatetici — honestum, ita sumnum bonum est, quemadmodum Peripateticis videtur, vt omnia ex altera parte collocata vix minimi momenti instar habeant.  
238
- peripatetici laudant iracundiā, &c. 138
- pe. ipatetica, & Academica si-
- millima inter se sunt, & ferè eadem.  
28
- periurare non est falsum iurare, sed quod ex animi tui sententia iuraueris, id non facere.  
421
- perlucere — honestum maximè quasi perlucet ex iis, quas commemorauit, virtutibus.  
251
- permanere semper in proposito, susceptoque consilio.  
160
- permulcere — nulla consolatio permulcere potest stultam senectutem.  
442
- perrumpere poenam legum.  
345
- perscrutari arculas muliebres.  
241
- persequi alterius reliquias.  
461
- persoluit recip. poenas graues, & iustas.  
581
- persona tertia, quam casus nobis imponit.  
162
- persona quarta, quam nobis meti ipsi iudicio nostro accommodamus. ibid.
- perstringere — quem locum breuiter ante perstrinx.  
587
- pertinere — dolor ad pauciores pertinet, quasi petulans fuisse in aliqua generosi ac nobili virgine.  
659
- perturbare conditiones, passionesque bellicas periurio.  
421
- perturbata ratione semel, &

## I N D E X.

- ordine nihil potest addi, phaëtō ictu fulminis deflagratuit.  
412
- quo magis peccati posse videatur.  
661
- perturbatio animi, plerumque breuis est, & ad tempus. 74
- perturbatio — quę cum aliqua perturbatione sintea nec constanter fieri possunt, nec iis, qui adsunt, probari. 177
- perturbatione omni animi va- candum est.  
116
- perturbations fugere debemus in omni vita: id est motus animi nimios rationi non obtemperantes. 176
- peruenire — ad Satrium nihil præter nomen peruenire.  
396
- peruersè imitari — stulta calliditas peruersè imitata prudentiā.  
427
- perueritas — si quis in foro cantet, aut si qua est alia magna perueritas.  
184
- peruidere — qui nō peruident, eadem esse vtilitatis, atque honestatis regulam, ab hoc nulla fraus aberit, nullum facinus.  
396
- pestilentes ædes — salubres.  
380
- pestis in amicitia maxima adulatio, blanditia, assentatio.  
621
- pestem nullam maiorem esse amicitias, quam in plerisque pecuniae cupiditatem, in optimis quibusque honoris certamen, & gloriæ.  
580
- phaëton solis filius.  
412
- phalaris cuius est præter carceros nobilitata crudelitas: qui non ex insidiis interiit, vt Alexander Pheræus: sed in quæ vniuersa Agrigentinorum multitudo impetum fecit.  
241
- phidiae Minerua.  
640
- phili accurata oratio contra iustitiam.  
573
- philippus Alexandrum filium accusat in epistola quadam, quòd largitione benevolentiā Macedonum consecetur.  
275
- philippus Macedonum rex rebus gemitis, & gloria superatus à filio, facilitate & humanitate superior.  
138
- philippus perniciose in tribunatu, cum legem agrariam ferret: dixit, non esse in civitate duo millia hominum, qui rem haberent.  
297
- philippus Q. Filius, magno vir ingenio, imprimitisque clarius, gloriari solebat, se sine ullo munere adeptum esse omnia, quæ haberentur maxima.  
285
- philippi epistolæ ad Alexandrum.  
287
- philosophia nihil aliud est, si interpretari velis, præter studium sapientiæ.  
210
- philosophia tota frugifera, &

## I N D E X.

- fructuosa est, nec villa pars eius inculta, ac deserta. 322, & 323
- philosophi minuti. 534
- philosophi—non multa patient in vita philosophorum, quæ fortuna feriat. 119
- philosophi, quia in veri inuestigatione versantur, quodque ea, quæ plerique vehementer expetunt, contemnunt, propterea iusti sunt. 79
- philosophos, prudentia, rerum expertendarum, fugiendarumque scientia. 189
- picens—agrum Picentem, & Gallicum viritim dividenti C. Flaminio restituit Q. Maximus. 449
- pictores, & qui signa fabricantur, & poëtæ suum quiske opus à vulgo considerari vult, vt si quid reprehensum sit à pluribus id corrigatur. 185
- pietas Deos placatos efficiet. 222
- pingui Minerua agere. 564
- pirata non est perduellium numerо definitus, sed communis hostis omnia. 421
- pisistrato tyranno querenti ex Solone qua tandem re fretus sibi tam audacter obsesteret, respondit, senectute. 521
- placabilitas, & clementia magno, & praeclaro viro dignissima. 137
- plato Atheniensis Archytæ Tarentini sermoni de volutate interfuit, cum Tarentinum venisset L. Camillo, P. Claudio col. 481
- plato Dionem Syracusum eradiit. 192
- plato in philosophos—eos se iustos, quia ea contemnunt, quæ plerique vehementer expetunt. 79
- plato—præclarè scriptum est à Platone, non nobis solum nati sumus, ortusque nostri partem patria vindicat, partem amici. 72, & 73
- plato senex. 462
- plato si genus forent se tractare volueret, grauissime & copiosissime potuit dicere. 28, & 29
- plato—similiter facere eos, qui inter se contendenter, uter portius remp. administraret, vt si naute certaré, quis eorum potissimum gubernaret. 133
- platonis dictum præclarum. 108
- platonis præcepta duo tenenda ab iis, qui recip. præfuturi sunt. 132
- plaudite—neque sapienti via ad Plaudite veniendum. 520
- plausus multiplex Lacedamo niis datus à cuncto confessu. 515
- plautus delectabatur suo bello Punico, Truculento, Pseudodo.

## I N D E X.

- duo. 498
- plautus, & antiqui comici Attici, facetiarum pleni. 150
- num venisset L. Camillo, P. Claudio col. 481
- plato Dionem Syracusum eradiit. 192
- plato in philosophos—eos se iustos, quia ea contemnunt, quæ plerique vehementer expetunt. 79
- plato—præclarè scriptum est à Platone, non nobis solum nati sumus, ortusque nostri partem patria vindicat, partem amici. 72, & 73
- plato—pœnitere—num eum senectutis sue pœnitiret, si ad centesimum annum vixisset. 461
- plato senex. 462
- plato si genus forent se tractare volueret, grauissime & copiosissime potuit dicere. 28, & 29
- plato—similiter facere eos, qui inter se contendenter, uter portius remp. administraret, vt si naute certaré, quis eorum potissimum gubernaret. 133
- platonis dictum præclarum. 108
- platonis præcepta duo tenenda ab iis, qui recip. præfuturi sunt. 132
- plaudite—neque sapienti via ad Plaudite veniendum. 520
- plausus multiplex Lacedamo niis datus à cuncto confessu. 515
- plautus delectabatur suo bello Punico, Truculento, Pseudodo.
- duo. 498
- plautus, & antiqui comici Attici, facetiarum pleni. 150
- ponite ante oculos unumquemque regum. 647, & 648
- plectimur—iure plectimur. 242
- pleximur multis in rebus negligentia. 616
- pocula minuta, atque rorantia. 486
- pœni foodifragi. 84
- pœnitere—num eum senectutis sue pœnitiret, si ad centesimum annum vixisset. 461
- pœnitere—tam diu discere velle debebis, quoad te, quam tum proficias, non pœnitabit. 28
- poëtam non audio in augis: in vita societate audiam ciuem digitis peccata dimittentem sua? 661
- poëtæ decorum tum seruare dicuntur, cum id, quod quaque persona dignum est, & fit & dicitur. 144
- polybius bonus auctor in primis. 427
- polycleti signum. 677
- poma cruda, ex arboribus evolutum: matura, & cocta decidunt. 521
- pomparum fercula. 172
- pompeium Cæsarem vocerum habere voluit, cuius audacia potens esset. 404
- pompeius in bello ciuili Ciceronem F. aliae alteri prefficerat. 262
- ponipej magnificentissima
- munera secundo consulatu. 280
- ponere—Græcorum consuetudo, vt iis ponatur de quo disputatione, quamvis subito 563
- ponere operam in studijs aliquibus—cur ego dissimulem, me, si quid in his studijs operæ posuerim, perdidisse? 676
- ponere personam—induere personam, opp. 352
- ponere—quod operæ, cura q; ponetur in rebus honestis, &c. 69
- ponere plus operæ in agendo, quam in scribendo. 210
- positis armis—qui armis possitis ad imperatorem confungi. 83
- popularis, id est assessor, & leuis ciuius. 623
- populares—qui populares esse volunt, ob eamque causam, aut agrariam rem tentant, vt possessores pellantur suis sedibus, aut pecunias creditas debitoribus condonandas putant. 302
- popularibus verbis est agendum & visitatis. 252
- populus R. animi magnitudine excellit. 108
- populo R. non videtur is se obstringere scelere, si quis tyrannum occidit. 335

Dd

I N D E X.

- porsenam Mucius interfecit  
sine spe salutis suæ. 648  
portitorum, & feneratorum  
quæstus. 187  
posidonius Panetij discipulus.  
337  
possessiones incertas, atque in  
casu positas habent impro-  
bi. 688  
possessionum genus, cui mini-  
me quasi noceri potest pra-  
ta, areas. ibidem.  
posteritas ad nos pertinet. 531  
potentia—imbecilla est na-  
tura ad contemnendam po-  
tentiam. 602  
potitus est urbem clandestino  
inroitu. 306  
preferre speciem boni viri.  
257  
præbere—villicis imperasse,  
vt omnia præberentur, qui-  
cumque Laciades in villain  
suam deuerterent. 289  
præcidere—sciuerunt Athene-  
nienses, vt Æginetis polli-  
ces præciderentur. 376  
præcipere cogitatione futura,  
& aliquanto ante constitue-  
re, quid accidere possit in  
utramque partem, ingenij  
magni est. 124  
præcipere hostium consilia.  
155  
præcipere—si ipse exequi  
nequeas, possis tamen Sci-  
pioni præcipere & Lælio.  
468  
præclarè agitur, si in iis, qui-  
buscum viuimus, insunt si-
- mulacra virtutis. 96  
præco prædicat—quid tam  
absurdum, quam si domini  
iussu præco ita prædicet, do-  
mum pestilentem vendo?  
382  
præconis voci bona ciuium  
subiicere. 307  
præcurrat amicitia iudicium,  
tollitque experiendi pote-  
statem. 602  
prædari ex alterius inscientia.  
395  
prædicare de seipso, deforme  
est. 177  
prefactè defendebat orarium  
& vestigalia Cato—nimis,  
præfractè. 408  
prægressus rerum, & quasi  
antecessiones homo non i-  
gnorat. 60  
prælucet bonam spem in fo-  
sterum amicitia. 566  
præponderari—qui omnia  
metiuntur emolumentis, &  
commodis, neque ea volunt  
præponderari honestate, &c.  
334  
præpostoris utimur consiliis,  
& acta agimus. 616  
præripere collegis popularem  
gratiæ. 401  
præfigire—quasi præfigaret  
Scipio per paucis ante morte-  
tem diebus triduum dispe-  
ravit de rep. cuius disputatio  
nis fuit extremum ferè de  
immortalitate animorum.  
557  
præfensia manu quo datur,

gra-

I N D E X.

- gratum est. 286  
præstare—non omne dictum  
præstandum est. 382  
præstare omnibus—difficile  
est seruare æquitatem, cum  
præstare omnibus concu-  
pieris. 109  
præstare—qui scire debuit de  
sanitate, de fuga, de fortis,  
præstare dicto ædilium. 395  
præstare—quid si cuique quæ-  
que præstare oporteat, stu-  
tuere magni iudicij est. 390  
præstari emptori damnum o-  
portere. 388  
præstari—ex 12. tabulis satis  
erat ea præstare, quæ essent  
lingua nuncupata. ibid.  
præstari—quidquid esset in  
præcio vitij, id statuerunt  
si venditor iciret, nisi nomi-  
natum dictum esset, præstari  
oportere. ibidem.  
præstinguit mentis oculos vo-  
luptas. 483  
præuertere nulla vis fuit reli-  
gionis, quæ tantam præuer-  
teret virilitatem. 418  
prauitates animi, rectè virtus di-  
cuntur. 660  
precari ab indigno. 595  
prefe loqui, & leniter. 173  
prima luce Pomponij domum  
venisse.  
principum facta studiosè ple-  
riique imitantur. 178  
principium nūquam occidit.  
703  
principio nulla est origo, &c.  
ibid.
- principia rerum—concordia,  
& discordia. 566  
priuata nulla sunt natura. 72  
probatio athletarum.  
184  
probitatis vis tanta est, vt eam  
vel in eis, quos numquam  
vidimus, vel, quod maius est  
in hoste etiam diligamus.  
574  
procedere ætate—cum ætate  
processisset, &c. 461  
procluvis ad perniciem res.  
586  
procreandi libido—commu-  
ne est omnium animantiū,  
vt habeant libidinem pro-  
creandi. 102  
procreata—amorem præci-  
puum in eos, qui procreati  
sunt, ingenerat natura. 60  
prodere memoriam—quo-  
rum memoria liberis, po-  
sterisque prodatur. 288  
prodere posteris laudes alio-  
rum à maioribus acceptas.  
701  
prodelle quid sit. 286  
prodicuſ dicit Herculem exiſ-  
ſe in ſolitudinem, &c. 163  
prodigi, qui. 279  
prodire extra modum sumptu-  
& magnificientia. 178  
produxiſ ſermonem in  
multam noctem. 696  
producere conuiuum vario  
ſermone ad multā noctem.  
487  
profette in lucem, id est in fo-  
rum. 233

Dd 2

## I N D E X.

- profugere ab aliquo, tanquam ab agresti, & furioso domino. 487
- profundere ludum, aut iocum. 150
- profundere pecunias in eas res quarum memoriam aut brem, aut nullam sit relicturus. 279
- progredi longius—non progredi longius modò. 102
- profundere vitam pro patria parati. 130
- progredilongè. 659
- progressio—si qua ad virtutem est facta progressio. 332
- prohibere---non prohibere aqua profluente. 192
- proles futurorum hominum. 701
- promissum facere—non facere. 413
- promissum non semper facendum. 80
- promissa seruanda non sunt ea, quæ sunt iis, quibus promiseris, inutilia. 81
- promptiores debemus esse, ad nostra pericula, quam ad communia. 130
- pronunciare — is iudex ita pronuntiavit. 388
- propagatio, & soboles. 103
- propensior nostra voluntas est in eum, à quo expeditio, & celerior remuneratio fore videtur. 293
- propinquitas—sublata benevolentia, amicitiae nomen tollitur, propinquitas manet 565
- propinquū potius, & amicum, quām vicinum defenderis, si lis in iudicio sit. 107
- propinquorum societatis collegatio arctior est. quām alienorum. 102
- proponere alias largitiones. 235
- propugnacula duo belli Punici, Cn. & P. Scipiones, qui Carthaginem sum aduentū corporibus suis intercludendū putauerunt. 648
- propylaea — in qua Pericles tantam pecunia cōiecit. 286
- proscriptiſt — ille, quod non placebat, proscriptiſt. 380
- proscribere aedes. 386
- proscribere — qui proscriptūt villam bonam, bene ædificatam, non existimantur fefellisse, etiam si illa nec bona est, nec ædificata ratione. 392
- prosperae res — qui antea cōmodis fuerunt moribus, videre licet, eos prosperis rebus immutari: spernique ab iis veteres amicitias, indulgeri nouis. 595
- prospiciebat prosperitatem animus. 531
- prospicere futura. 251
- prospicere longè futuros casus reip. 585
- prouehi longius in amicitia. 580
- prouectus — atate prouectus. 449

pro-

## I N D E X.

- prouectus sum studio rerum. 252
- ruficarum. 505
- prouerbium—apertum amici pectus videre, suūmque ostendere. 624
- prouerbium—secum esse, scūcūque (vt dicitur) viuere. 498
- prouerbium sermone tritum, summi ius, summa, &c. 81
- prouerbii vet, aëta agere. 616
- prouerbium vetus & laudatum, matrē fieri senem oportere, si diu velis esse senex. 473
- prouerbium vetustate contritum, dignum esse aliquem, qui cum in tenebris mices. 400
- prouisa prudenter. 550
- prouocati beneficio. 98
- proximus — fructus ingenij, & virtutis, omnisque præstantiæ tum maximè capitur, cum in proximum quēque confertur. 605
- prudentia quid. 189
- prudentia est locata in delectu bonorum, & malorum. 390
- prudentia futurorum. 528
- prudentia—in prudentia ineſt indagatio, atque inuenitio veri. 66
- prudentia sine iustitia nihil vallet ad faciendum fidem. quid enim quis versutior, & callidior est, hōc inuisitor, & suspectior est, detracta opinione probitatis. 251, &
- proloemus alter post Alexandram conditam regnabat, cūm Aratus ad eam venit. 306
- publica sumere. 686
- P. Africani filius, valde imbecillus fuit. 474
- P. Cafur, Lanarius. 388
- P. Crassus iuriscons. 468
- P. Crassus pontifex maximus. 510
- P. Crassus cūm cognomine Diues, tum copijs, functus est ædilicio maximo munere. 280
- P. Decius quinquennio ante M. Curium consulem se pro rep. deuouerat. 484
- P. Lentulus Cicerone consule ædilitatis magnificentia vicit omnes superiores. 280
- P. Mucij domus. 267
- P. Nasica priuatus Ti. Gracchū interemit. 122
- P. Nasica—quid in P. Nasicam effecerit amici, & propīqui Gracchi, sine lacrymis non quoē dicere. 585, & 586
- P. Rutilius Panætium audirerat. 327
- P. Rutilij adolescentiam ad opinionem & innocentiam, & iuris scientiæ P. Mucij commendauit domus. 266
- P. Scipio Nasica, eius filius, qui Ti. Gracchi conatus perditos vindicauit. 156
- P. Scipio, qui primus Africanus appellatus est, dicere so-

Pd 3

## I N D E X.

- litus erat, numquam sc̄e minus esse otiosum, quām cū otiosus, nec minus solum, quām cūm solus esset. 321  
 P. Sulpicius seditionis, & inutilem ciuem C. Norbanum in iudicium vocauit. 268  
 P. Sulpicius tribunus pleb. capitali odio à Q. Pompeio consule dissidebat. 546  
 P. Sulla hastam cruentam vibravit dictatore propinquo suo 243  
 pueritiae certa sunt studia. 525  
 pulchritudo corporis apta compositione membrorum non uet oculos, & delectat hoc ipso, quod inter se omnes partes cum quadam lepore consentiunt. 144, & 145  
 pulchritudo corporis secerni non potest à valetudine. 143  
 pulchritudinis duo genera. 172  
 pulsus in exsulium Themistocles. 586  
 punitur — qui punitur aliquem, aut verbis castigat. 137  
 putidum — obscurum, aut putidum. 173  
 pyrrhus — à pyrro propter eius probitatem non nimis alienos animos habebant Romani. 574  
 pyrrhus, & Hannibal — cū duobus ducibus de imperio in Italia decertarū est, Pyrro, & Hannibale. ibid.  
 pyrrhus rex populo R. bellum
- vitro intulit. ab eo perfuga venit in castra Fabricij. 407  
 pyrrhi bellum. 460  
 pythagoras, & Pericles summa auctoritatem consecuti sine villa hilaritate. 155  
 pythagoras, & Pythagorei incole prop̄e Romanorum, quia sunt philosophi Iracui nominati: nūquā dubitarent, quia ex vniuersa mente diuina delibatos animos haberemus. 528  
 pythagoras vetat, iniussu imperatoris, id est Dei, de praesidio, & statione vita decedere. 524  
 pythagoras ultimum in amicitia putauit, vt unus fiat ē pluribus. 103  
 pythagorae vires ingenij Milonis viribus corporis opribiliores. 473  
 pythagorei magnam Gr̄eciam institutis, praeceptisque suis erudierunt. 557  
 pythagoreorum mos, exercenda memoria causa commeniorare vesperi qd quoque die dixissent, audiuisserint, egissent. 479, & 480  
 pythus quidam, qui argentiariam faciebat Syracusis. 383
- Q
- Værere rem honestam mercaturis faciendis, operis dādis, publicis sumendas. 686  
 quæ-

## I N D E X.

- quæsito sibi opus esse contentur, qui omnia habēt ve nalia. ibid.  
 quæsito iis opus esse intelligimus, qui mercaturis facien dis, & c. rem querunt. ibidem.  
 quæstione noua perterritus. 581  
 quæstiones quæ tractantur ab Hecatone libro de officiis. 409  
 quæstus ordini senatorio honestus nullus est.  
 quæstus qui liberales, qui for didi. 187  
 quatenus amor in amicitia progredi debeat. 580  
 quatenus — est quatenus amicitia dari uenia possit. 596  
 quid enim censes? 677  
 qui enim adiungit, &c. 278  
 quid enim? Africanus indige bat mei? 575  
 quid ergo? hic non noceat, &c. 399  
 quid multa? 404  
 quid igitur? possemus ne, &c. 401  
 quid multa? sic mihi persuasi, &c. 528  
 quid potest esse tam flexibile, tā deuiū, quām animū eius, qui ad alterius nō modō sen sum, ac voluntatem, sed etiā vultum, atque nūcum conuertitur? 621  
 quies — quæ se in quiete per visum ex Africano audisse dicebat. 557
- quietum disputandi genus. 28  
 quincunx — directi in quin cuncem ordines. 509  
 Q. Catulus Cn. Pompeio cede re non videbatur. 122  
 Q. Fabius Labeo, arbiter No lanis & Neapolitanis datus, de finibus à senatu. 81  
 Q. Maximus æquo animo mortem filij tulit, clari viri, & consularis. 449, & 450  
 Q. Maximus callidus. 155  
 Q. Maximus Cunctator, lauda tur. 130  
 Q. Maximus suasor fuit legis Cincis de donis & muneri bus, idem Hannibalem iuueniliter exultantem patientia sua molliebat. 449  
 Q. Maximus Tarentum rece pit. ibidem  
 Q. Maximus laudatio. 450  
 Q. Maximi responsū falsum Salinatori. 449  
 Q. Maximo, L. Mancino cos. 229  
 Q. Mucius augur. 545  
 Q. Mucius Mancia. 156  
 Q. Mucius Porfennam inter fecit. 648  
 Q. Mucius P. Fil. iurisconsultus. 163  
 Q. Pompeius — à Q. Pompeij amicitia se remouerat Scipio Lelij nomine. 611  
 Q. Scœula P. Filius, cū pos tulasset, vt sibi fundus, cuius emperor erat, semel indi caretur, idq; vēditor ita fecis

## I N D E X.

- set dixit se pluris aestimare. 587  
 286  
 quirinus, vel Romulus. 351  
 quoquate verteris, amicitia  
 præsto est. 566  
 quotus quisque reperierit, qui  
 impunitate, & ignoratione  
 omnium propolita abstine  
 re possit iniuria. 395
- R
- R** Apax—nihil appeten  
 tius similium sui, ni  
 hil rapacius natura. 589  
 rapinæ largitione sequuntur.  
 276  
 rara—omnia præclara rara.  
 614  
 ratio, & oratio vinculum socie  
 tatis vniuersi generis huma  
 ni. 101  
 ratio præst, appetitus obtem  
 perat. 149  
 ratio sordidissima, & inquinat  
 issima. 235  
 ratione, & oratione longissi  
 mè absimus à feris. 101  
 ratione stabili, & firma quæ  
 plerisque eximia, & præcla  
 ra videntur, contemnere.  
 116  
 ratiocinatores—vt boni ra  
 tiocinatores officiorum esse  
 possimus. 187  
 ratum esse non debuit, quod  
 erat actum per vim. 423  
 reapse—securitas blanda, re  
 apse multis locis repudian
- da. 587  
 recedere à natura—elaboran  
 dum est, ne animi motus à  
 natura recedant. 172  
 recedere ab officio—ab offi  
 cio nūquam recedemus. 335  
 recipiebat se interdum à cœtu  
 frequentiaque hominum  
 in solitudinem tamquam  
 in portum. 322  
 recipere aliquem sessum. 515  
 recipere se—quæ cum intue  
 rer stupēs, vt me recepi, &c.  
 699  
 recipere—Tarentini qua vi  
 gilantia, quo consilio rece  
 pit Q. Maximus? 449  
 recouere aliquem tamquam  
 Peliam. 533  
 rectam vitæ secuti sunt viam  
 nonnulli siue felicitate, siue  
 bonitate naturæ. 164  
 redeo in memoriam mortuo  
 rum sepulcris legendis. 462  
 redeamus in gratiam cum vo  
 luptate. 506  
 redhibeatur mancipium iure  
 ciuili. 410  
 redundabit aliquid ex meo te  
 nui vestigali detractis sum  
 ptibus cupiditatis. 687  
 redundare—quorum ad ami  
 cos redundet infamia. 611  
 referebam oculos ad terram  
 identidem. 611  
 referre gratiam—nullum of  
 ficium referenda gratia ma  
 gis necessarium est. 98  
 referre—hoc tamen opus in  
 apertum vt referas. 640

## I N D E X.

- reficiatur—numquam eris di  
 ues antequam tibi ex tuis  
 possessionibus tantum refi  
 ciatur, vt ex eo tueri sex le  
 giones, & magna equitum,  
 ac peditum auxilia possis.  
 686  
 refrenare suas libidines. 247  
 refrigerari vimbris, aquisue.  
 506  
 refrigeratio æstate. 487  
 regnare—inutile regnare ei,  
 qui id iniuste confecutus sit.  
 495  
 regnum à Tantalo, & Pele  
 proditum, iure obtripeba  
 tur. 406  
 regnum—multi iniqui, at  
 que infideles regno. 406  
 regnum—nulla sancta socie  
 tas, nec fides regni est. 74  
 reguli est eadem utilitatis, que  
 honestatis. 396  
 regulus captus à Pœnisi primo  
 bello Punico, &c. 84  
 regulus cum captus esset mis  
 fuis est in senatum. 415  
 relaxauerint se animi vincu  
 lis corporis. 531  
 relaxare animos, & dare se iu  
 cunditati. 167  
 relegasset filium ab homini  
 bus. 424  
 relinquere, & abiicere obœ  
 dientiam. 149  
 reliquum—videre, quæ reli  
 qui summa fiat. 107  
 reliquia coniurationis. 665  
 remuneratione benevolentiae  
 nihil iucundius. 588
- repastinationes. 501  
 repellere criminationes, ab  
 liquo illatas. 603  
 repetendum altius. 101  
 reperita memoria iuris, &  
 æquitatis. 665  
 repressit Viriathi ferocitatem  
 Lælius. 238  
 repudiauerunt eam rē, quam  
 ne audierunt quidem, au  
 ëto Aristide. 377  
 repudiare munusculum—  
 lieni facinoris munusculum  
 non repudiaretur. 395  
 repudiaretur pax Samnitium.  
 423  
 repuerascere—si quis mihi  
 largiatur, vt ex hac ætate re  
 puera scam, &c. 533  
 requiescens à reip. pulcherri  
 mis muneribus. 322  
 res familiaris primùm bene  
 parta sit, nullo neque turpi  
 questu, neque odioso, dein  
 de augetur ratione, diligenc  
 ia, parcimonia. 142  
 res familiaris quibus rebus  
 queri debeat. 311  
 res nummaria—vt res num  
 maria de communi sententia  
 constitueretur. 401  
 rem gerere—ad rem geren  
 dam qui accedit, cauere de  
 bet, ne id modò consideret,  
 quam illa res honesta sit: sed  
 etiam, vt habeat efficiendi  
 facultatem. 119  
 res prosperæ, & ad voluntatem  
 nostram fluentes. 138  
 res urbanae multæ existiterunt

I N D E X.

- maiores, clariorēque quam  
bellicē. 122  
res bellicas non esse maiores,  
quam vrbanas. 122  
res aduersas, & secundas immo-  
deratē ferre, leuitatis est.  
138  
refecare ad viuum. 664  
referanda non est res familia-  
ris ita, vt pateat omnibus.  
276  
respirare — iniuriæ tuæ, vt fu-  
riæ, te inspirare non sinunt.  
656  
respondere — vt nostra in  
amicos benevolentia illo-  
rum erga nos benevolen-  
tiae pariter, æquabiliterque  
respondeat. 595  
responsa acutæ. 550  
resp. — qui reip. præfuturi  
sunt, duo Platonis præcepta  
teneant, vnum, vt vtilitatem  
ciuium sicutueantur, vt, quid-  
quid agunt, ad eam referant,  
obliti commodorum suo-  
rum : alterum, vt to-  
tum corpus reip. curent, ne,  
dum partem aliquam tuer-  
tur, reliquas deserant.  
132  
resp. — qui reip. præsunt, de-  
bent esse legum similes: que  
ad puniendum non iracun-  
dia, sed æquitate ducuntur.  
138  
resp. — res maximas geri ab  
iis, qui resp. gerunt. 142  
reip. causa adhibenda est fe-  
uerita, sine qua administra-  
ri ciuitas non potest. 137  
reip. procuratio, ad vtilitatem  
eorum, qui commissi sunt,  
non ad corum, quibus com-  
missa gerenda est. 133  
rempl. gerentibus maiores an-  
morum motus concitantur  
majoraque efficienda sunt,  
quam quietis. 119  
rempl. non capessentibus qui-  
busdam esse veniam dan-  
dam, non omnibus. 118  
restricti esse non debemus in  
eos, qui se adiuuari volent,  
vt ad altiorem gradum ad-  
scendant. 286  
reticentia omnes iure ciuili  
comprehendi non possunt.  
389  
reticentia pœna constituta est  
à iuris consultis. 388  
retinere modum ludendi. 150  
reuerentia optimi cuiusque  
est adhibenda. 145  
reuocauit me patria de medio  
cursu. 431  
reuocare rationem ad verita-  
tem. 406  
reuocare modum villarum ad  
mediocritatem. 178  
reuocans omnia ad suam po-  
tentiam. 596  
reuocari debet oratio ad ea,  
vnde alia aberravit. 176  
reges bene morati olim con-  
stituti sunt, non solùm apud  
Medos, sed etiam apud Ro-  
manos, fruēdē iustitię cau-  
sa. 258  
rēthorū campus de Maratho-

I N D E X.

- ne, Salamine, &c. 108  
samnitium aurum cum M. Cu-  
rii responsō comparatur.  
687  
sancire legem. 585  
sanciri lege, aut iure ciuili. 389  
sanctam seruare societatem  
difficile est in eo, in quo no-  
possint plures excellere. 74  
sanctum est iure ciuili de iure  
prædiorum. 388  
sanctum est lege naturæ. 389  
sanguinis cōiunctio & bēne-  
volentia deuincit homines  
caritate. 103  
sapiens — cadit in sapientem  
animi dolor. 588  
sapiens in solitudine tanta, vt  
hominem videre non pos-  
sit, excedat è vita. 189  
sapiens si ei patriæ, parentis, a-  
mici periculum allatum sit,  
iis subueniat, si possit, cogni-  
tionis studiis abiectis, etia  
si se dinumerere posse arbit-  
ratur. ibid.  
sapiens si fame conficiatur, y-  
trūmne abstulerit cibum  
alteri homini ad nullā rem  
vtili? 340  
sapiens, si Gygis anulum ha-  
beat, nihilo plus fibi licere  
putet peccare, quam si non  
habeat. 348  
sapientis animus. virtutibus  
omnibus sæptus, vt mœni-  
bus, neque vinci, neque  
expugnari potest. 664  
sapientis esse nihil contra mo-  
res, leges, instituta facientes,  
habere rationem rei fa-

## I N D E X.

- miliaris. 286  
 sapienti soli contingit, ut nihil faciat inuitus. 676  
 sapientem ne quidquam sapere, qui ipse sibi prodeesse nequirit. 286  
 sapientes, boni—hæc igitur est illa pernicias, quod alias bonos, alias sapientes existimant. ibid.  
 sapientes habitu sunt C. Fabri-  
 cius, M. Curius T. Corunca-  
 nus. 564  
 sapientes habitu, & appellati, L. Atilius. M. Cato, C. La-  
 lius. 550  
 sapientes, M. Cato, C. Lælius,  
 septem sapientes. 332  
 sapientes—quibusdam, qui sapientes habitu sunt in Græcia, placuerunt mirabilia quædam. 587  
 sapientissimus quisque æquif-  
 simo animo moritur, stultissimus iniquissimo. 532  
 sapientia est rerum diuinarum & humanarum, causarumque, quibus hæc res continentur, scientia. 189, & 211  
 sapientia nihil optabilius, nihil præstantius, nihil melius. 210  
 sapientia princeps omnium virtutum, quæm ~~so~~ Græci vocant, rerum diuinarum atque humanarum scientia, &c. 189  
 sapientia vera, omnia sua in seipso posita ducere, huma-
- nosque casus virtute infe-  
 riores putare debet. 550  
 sapientia studij laus. 210, &  
 211  
 sapientia eam interpretantur Stoici, quara adhuc mortali nemo est consecutus. 564  
 sardi—Iulius, pro Sardis di-  
 xit. 268  
 satiatis, & expletis iucundius est carere, quam frui. 487  
 satietas omnium rerum vita facit satietatem. 525  
 satietas vita tempus maturum mortis afferit. ibid.  
 satis supérque esse sibi suarum cuique rerum curam. 587  
 saturnia stella cælo proxima, altissima, & nobis stellarum omnium errantium ultima. 699  
 scalnum nullum videt. 384  
 scandere malos. 460  
 scaurus demolitus Cn. Octa-  
 uiij domum accessione adiunxit ædibus, &c. 177  
 scaurus P. Lentulum magnificencia ædilicij muneris est imitatus. 280  
 scenici non optimas, sed sibi accommodatas fabulas eli-  
 gunt. 160  
 scire esse meminisse—homi-  
 nes pleraque sciunt, antequā natī sint, &c. 528  
 scientia—omnes trahimur, & duci mur ad cognitionis, & scientiæ cupiditatem. 68  
 scientia remota à iustitia, cal-  
 liditas

## I N D E X.

- liditas potius, quam sapien-  
 tia est appellanda. 108  
 scipio—in scipione Lælii fa-  
 miliari ambitio maior, vita  
 tristior, quam in Lælio. 155  
 scipio summa spem ciuium,  
 quam de eo iam pueri ha-  
 buerant, continuo adoles-  
 cens incredibili virtute su-  
 perauit. 556  
 multa de scipione. ibid.  
 scipionis laus. 556  
 scipiones duo. 332  
 scipiones iter Poenæ, vel cor-  
 poribus suis obstruere vo-  
 luerunt. 524  
 secerni potest amicus blandus  
 à vero. 622  
 secum esse, secumque ut dici-  
 tur viuere. 498  
 secundum naturam—omnia,  
 quæ secundum naturam sunt, sunt habēda in bonis.  
 520, & 521  
 securitas, caput est ad beatè vi-  
 uendum. 587  
 securitas specie quidem blan-  
 da, sed reapse multis locis re-  
 pudianda. ibid.  
 seditiones, & bella ciuilia ex  
 eo quod parti ciuium con-  
 fultū fuerit, pars neglecta. 133  
 semen, & causa bellorum ci-  
 uilium. 243  
 senatu dimisso—dimisso se-  
 natu. 556  
 senatus regum, populorum, na-  
 tionum portus erat, & per-  
 fugium. 242  
 senatus sæpe claros viros hosti-
- bus vincitos dedidit. 421  
 senatus—summum consilium  
 cur R. veteres senatum ap-  
 pellarunt. 461  
 senecta—tum equidem in se-  
 neccta hoc deputo miseri-  
 um, sentire ea ætate esse  
 se odiosum alteri. 463  
 senectus ætatis est peractio  
 tamquam fabulæ. 534  
 senectus animosior est, quam  
 adolescentia & fortior.  
 521  
 senectus est natura loquacior.  
 505  
 senectus iners, ignava, somni-  
 culosa. 475  
 senectus ita honesta est, si se-  
 ipsi defendit. ibid.  
 senectus—legibus, & institu-  
 tis vacat senectus muneri-  
 bus ijs, quæ non possunt sine  
 viribus sustineri. 474  
 senectus—cur senectus mi-  
 sera videatur. 451  
 senectus misera est, quæ se o-  
 ratione defendit. 514  
 senectus non coegeret doctos vi-  
 ros in studijs suis obmuta-  
 scre. 462  
 senectus non modò languida,  
 & iners non est, verum etiam  
 operosa, & semper a-  
 gens aliquid, & moliens.  
 463  
 senectus—non sunt in sene-  
 ctute vires: ne postulan-  
 tur quidem vires in sene-  
 ctute. 474  
 senectus, quæ sit fundamentis

## I N D E X.

adolescentiæ constituta, laudanda. 514  
 senectus quamuis non sit gravis, aufert tamen eam viriditatem, quæ est in etate media. 556  
 senectus tantam habet auctori-  
tatem, ut ea pluris sit, quam omnes adolescentiæ volunta-  
tes. 514  
 senectus versatur in re geréda. 460  
 senectutis arma aplissima. 448  
 senectutis fructus antè parto-  
rum bonorum memoria. 520  
 senectutis incommoda. 451  
 senectuti magnam habeo gra-  
tiā, quæ mihi sermonis a-  
uditatē auxit, potionis, &  
cibi sustulit. 486  
 senectuti magna habenda gra-  
tiā est, quæ efficiat, ut non li-  
ceat, quod non oporteat. 483  
 senectuti maximè caendum  
est, ne languori se, desidiaq; dedit. 167  
 senectuti multum tribuere de-  
bemus. 185  
 senectuti plurimum tribuitur  
Lacedæmone. 515  
 senectuti quæ tribuenda. ibid.  
 senex agricola quarenti cui se-  
rat, non dubitat respondere;  
diis immortalibus. 463  
 senex eo meliore conditione  
est, quam adolescens, quod id  
quod ille sperat, hic consecu-  
tus est. 520  
 senex—nemo tam senex, qui

se annum non putet posse  
vivere. 463  
 senex—ò miserum senem,  
qui mortem contemne-  
dam esse in tam longa æ-  
tate non viderit. 516  
 senem mature fieri oportere,  
si diu velis esse senex. 473  
 senes appellantur apud Lacea-  
dæmonios ij, qui amplissi-  
mum magistratum gerunt. 461  
 senes bonarum artium stu-  
diosi. 498  
 senes, comici, stulti, creduli, ob-  
liviosi, dissipati. 475  
 senes etiam si corporibus sint  
infirmis, agunt tamen mul-  
ta. 460  
 senes—manent ingenia seni-  
bus, modo permaneat stu-  
dium, & industria. 462  
 senes—maximas resp. ab ado-  
lescentibus labefactatas, à  
senibus sustentatas, & resti-  
tutas reperiens. 461  
 senes—mens, & consilium,  
& ratio in senibus est, quæ si  
nulli fuissent, nullæ omnino  
ciuitates fuissent. 516  
 senes, morosi, & anxi, iracun-  
di, difficiles. 515  
 senes—nec verò quemquam  
senum, audiui oblitum, quo  
loco thesaurum obruiisset. 462  
 senes sapientes adolescentibus  
bona indole delectatur. 463  
 senes sic mori videtur, ut cum  
sponte, nulla adhibita vi,

con-

## I N D E X.

sumptus ignis extingui-  
tur. 521  
 ignis extinguitur. 521  
 senum querellæ. 446  
 senibus' labores corporis mi-  
nuendi, exercitationes ani-  
mi etiam augendæ viden-  
tur. 167  
 senibus vitam aufert maturi-  
tas. 521  
 senilis avaritia quid sibi velit,  
non intelligo. 516  
 senile est, de seipso dicere. 469  
 seniles quedam res sunt. 448  
 sensu amissi, sit idem homo  
quasi natus non esset omni-  
no. 557  
 sentire—quæ adspectu sen-  
tiuntur. 61  
 septem sapientes Græcia qui  
appellantur, sintne habēdi in  
numero sapientum. 550  
 septem—septem distincti in-  
teruallis foni: qui numerus  
rerum omnium fere nodus  
est. 700  
 sepulcta—nec sepulcta legens  
vereor ne memoriam per-  
dam. 462  
 seriphio respondit Themisto-  
cles. 448  
 sermo omnis de nobis obrui-  
tur hominum interitu. 702  
 sermo—proudendum, ne ser-  
mo vitium aliquod indicet  
inesser in moribus. 174  
 sermo quietus, & remissus.  
468  
 sermo—nec verò tamquam  
in possessionem venerit, ex-

cludat alios: cùm reliquis in  
rebus, tum in sermone com-  
muni, vicissitudinem non i-  
niquam putet. 174  
 sermo ubi locum habeat.

173  
 sermone debemus uti eo, qui  
notus est nobis. 160  
 sermones quibus de rebus ple-  
rumque habeantur. 174  
 sermonibus vulgi se dare non  
oportet. 702  
 serpit deinde res: quæ procli-  
uis ad perniciem, cùm serpel  
cepit, labitur. 586  
 serpit per omnium vitas ami-  
citiae. 616

seruare æquitatē difficile est,  
cùm præstare omnibus con-  
cupieris. 109  
 seruare amicitiam summa fi-  
de, constantia, iustitia. 573  
 seruare constantiam in omni-  
re gerenda, consilioque ca-  
piendo, maxime decet. 168  
 seruare patris mortui memo-  
riam piè, & inuiolatè. 531  
 seruare promissa. 412  
 seruire—ædes Sergio seruie-  
bant. 389

seruendum personæ. 420  
 seruitus est obœdientia fracti  
animi, & abiecti, & arbitrio  
carentis suo. 676  
 seruus ineptiarum. 677  
 seruus nequissimus. 677  
 seruus sepe iniuria vita non po-  
test adimi. 661  
 serui atrienses. 677  
 serui non honestissimum fer-

I N D E X.

- nituis locum obtinentes. 51  
ibidem.  
serui—omnes improbi serui. 676  
seruorum conditio, & fortuna, infima. 94  
seueritas reip. caussa adhibenda est ab iis qui reip. præfunt, sine qua administrari ciuitas non potest. 137  
seruitatem in senectute probbo, & eam modicam, acerbitatem nullo modo. 576  
sex. Elius. 468  
sex. Pompeius geometriæ studiosus. 69  
ficatij, beneficij, testamentarij, fures, peculatores, vinculis & carcere castigandi: al. fatigandi: non verbis philosophorum. 395  
filuescere fermentis. 501  
simile à corporum dissimilitudinibus. 155  
simile à fidibus, aut tibijs. 184  
simile à gubernatore. 460  
simile à medicis, imperatoribus, & oratoribus. 107  
simile à membris corporis sanguinis ad se traducentibus proximi membra valetudinem. 335  
simile à membris—vt membra quædam amputantur, &c. 341  
simile à pictoribus, & iis, qui signa fabricantur, & poëtis. 185  
simile à pomis, quæ cruda ex arboreis auelluntur, ma-
- tura & cocta decidunt. 51  
simile à pueris. 150  
simile à pulchritudine corporis, quæ apta compositione membrorum mouet oculos, &c. 144, & 145  
simile à tutela. 133  
simile à Venere Apellis inchoata, quam nemo pictor. absoluere conatus esset. 327, & 328  
simile à venustate, & pulchritudine corporis. 143  
simile à vino—vt non omne vinum, sic non omnis natura coacescit vetustate. 516  
simile ab eo, qui stadium currit. 351  
simile ab equis propter crebras præliorum contentiones ferocitate exultantibus. 138  
simile ab operibus animi. 266  
similitudo maximè ad amicitiam allicit. 588  
similitudine morum nihil amabilius, nihil copulatius. 103  
simonides senex. 462  
simplices & aperti sunt verutis & callidis multum disperses. 155  
simplicem, & communem, & consentientem, & qui rebus iisdem moueatur, amicum eligi par est. 603  
simulactra virtutis—præclarè agitur, si in iis, quibuscum viuimus, insunt simulactra vir-

I N D E X.

- virtutis. 96  
simulare—omnes aliud agentes, aliud simulantes, perfidi, improbi, malitiosi. 384  
simulatio, dissimulatioque ex omni vita tollenda est. 385  
simulatio intelligentiæ in militia vita perniciose maxima. 595  
simulatio omnium rerum virtuosa est, & amicitiæ reputat maximè. 621  
simulatum nihil potest esse diuturnum. 261, & 262  
singularum facultates, & copiae, diuinitæ sunt ciuitatis. 286  
sitis cupiditatis numquam excpletur. 646  
sociatus—nihil est Deo acceptius quam concilia, cœrûs que hominum iure sociati. 697  
societas est omnium hominum inter omnes, atque hec latissimè patet: inter eos, qui sunt eiusdem gentis. 389  
societas generis humani, quæ maximè est secundum natum, disruptetur, si sic erimus affecti, vt propter suum quisque commodum spoliem, aut violet alterum. 335  
societas hominum, & coniunctio quo modo optimè servari possit. 99  
societas hominum—ratio, quæ societas hominum inter ipsos, yitque quasi communitas continetur. 72  
societas in qua omnia insunt, quæ putant homines esse expertanda virtus cum amicitia. 615  
societas—ita nos esse natos, vt inter omnes esset societas quædam: maior autem, vt quisque proximè accederet. Itaque ciues potiores sunt, quam peregrini, propinquique quam alieni, &c. 564  
societas prima in coniugio est proxima in liberis, deinde vna domus, &c. 102  
societas vniuersi generis humani. 101  
societatis hominū plures gradus. 102  
societatum inter homines à Diis constitutam euertunt qui beneficentiam, liberalitatem, bonitatem, iustitiam tollunt. 340  
societatem omnium nulla est grauior, nulla carior, quam ea, quæ cum rep. est vnicuique nostrum. 103  
societatum omnium nulla præstantior, nulla firmiter, quam cum viri boni moxibus similes sunt familiaritate coniuncti. 103  
socrates Apollinis oraculo Sapientissimus iudicatus. 528  
socratis Apollinis oraculo Sapientissimus est iudicatus. 550, & 557  
socrates dicebat semper, ani-

I N D E X.

- mos hominum esse diuinos,  
iisque cum corporibus ex-  
cessissent, redditum ad cælum  
patere, &c. 557  
socrates *ēp̄os*, dissimilator in  
omniratione. 155  
socrates & Aristippus—non  
si quid Socrates, & Aristip-  
pus contra morem, consue-  
tudinemque ciuilem fece-  
runt, idem nobis licet. 185  
socrates quæ supremo vitæ dñe  
de immortalitate animo-  
rum differuerit. 528  
socrates solitus est exsecrari  
eos, qui primùm hæc (hoe-  
stum, & vtile) naturæ cohe-  
rentia, opinione distracti-  
sent. 328  
socratis & C. Lælij idem sem-  
per vultus, & eadem frons.  
138  
socratem doctum, & sapien-  
tem virum fuisse traditum  
est. 660  
socratici, & Platonici: iidem  
sunt. 28  
fodalitates Catone questioe  
constitutæ. 480  
sol—medium ferè regionem  
Sol obtinet dux, & princeps  
& moderator lumen re-  
liquorum, &c. 699  
sol olim deficere, & extingui-  
visus est, cum Romuli ani-  
mus hæc ipsa in templo pe-  
netrauit. 702  
sol Phæronti filio facturum se  
esse dixit quidquid optasset.  
412
- soli—si hoc vno sol quidquam  
vidisset indignius. 242  
solem aduersum intueri ne-  
quit, erūsque radiis acies  
vestra, sensuque vincitur.  
700
- solem è mundo tollere viden-  
tur, qui amicitiam è vita tol-  
lunt. 87
- sola marmora. 687
- soida, & expressa effigies ge-  
manæ iustitiae. 390
- solitaria virtus ad ea, quæ sum  
ma sunt, peruenire non po-  
test. 615
- solitarium nihil habet natura.  
620
- solitarius—etiam solitario ho-  
mini, atque in agro vitam  
agenti necessaria est op-  
nio iustitiae. 257
- soltudo aufert fructum volu-  
ptatum omnium. 619
- soltudo—viuere in solitudi-  
ne non modò sine yllis mo-  
lestiis, sed etim in maximis  
voluptatibus. 336, & 337
- solutudinem fugit, & socium  
studij querit sapiens. 193
- soliuaga cognitio, & ieuna.  
193
- sollertia—fugienda est talis  
sollertia. 82
- solicitorum habere—angere,  
& sollicitum habere. 516
- solon adiuit Themistoclem;  
Themistocles Solonem nul-  
la in re adiuit. 122
- solon Pisistrato tyranno, que-  
renti, qua tandem re freus  
sibi

I N D E X.

- sibi tam audacter obſūteret  
respondit, seneſtute. 521
- ſolon veribus gloriatur, & ſe  
quotidie aliquid addiſcen-  
tem dicit ſenem fieri. 463
- ſolonis eclogium, quo ſe ne-  
gat velle ſuam mortem do-  
lore amicorum, & lamentis  
vacare. 524
- ſolonis factum versutum, &  
callidum, qui furere ſe ſimu-  
lauit, &c. 155
- ſolonis illud, honestum eſt,  
ſeneſcere ſe multa in dies  
addiſcentem. 500
- ſolusſe ab Alexandria. 379
- ſolutio rerum creditarum niſi  
erit necessaria nulla fides eſ  
ſe poteſt. 307
- ſomnus—ſit, vt cogitationes  
ſermonesque noſtri pariant  
aliquid in ſomno tale, quale  
de Homero ſcriptū Ennius,  
&c. 696
- ſomnus—morti nihil tam fi-  
mille, quam ſomnus. 531
- ſonare vnum—vtilitas, & ho-  
nestas verbo inter ſe diſcre-  
pant, re vnum ſonant. 405
- ſonus cæli, & totius mundi  
incitatissima conuersione,  
vt eum aures hominum ca-  
pere non poſſint. 700
- ſonus dulcis ex conuersione  
globorum cæleſtium. 699
- ſonus interuallis coniunctus  
imparibus, impulſu, & motu  
orbium cæleſtium effectus.  
699
- ſono acuto, & excitato moue-  
tur ſummus ille cæli ſtelliſe  
11 cursus. 699
- ſophia ſapientia, princeps omi-  
nium virtutum. 189
- ſophocles à Pericle reprehen-  
ſus. 184
- ſophocles ad ſummam ſene-  
ſtutem tragicdias fecit—  
462. a filiis in iudicium vo-  
catus eſt. ibid.
- ſophocles, cum ex eo quidam  
iam affeſta ætate quæreret:  
vitereturne rebus Veneriis,  
Dij meliora, inquit. 487
- ſophocles recitata tragicdia  
Oedipo Colon ſententijs iu-  
dicum eſt liberatus. 462
- ſorte, aut micando vietus. 409
- ſpartacus. 665
- ſpartam nulla alia re, niſi auari-  
tia eſſe perituram, Apollo  
Pythius vaticinatus eſt. 301
- ſpes vtilitatis animum pepulit  
regis eius, qui urbem con-  
didit. 351
- ſpecies vtilitatis falsa. 415
- ſpecie vtilitatis in rep. ſapit-  
ſime peccatur. 376
- ſpectare altè—altè ſpectare  
ſi voles, &c. 702
- ſpectare, in—liberi ſpectant  
in nos ſolos, neque aliud vi-  
lum poſſunt, habere perfu-  
gium. 104
- ſpectare magna, &c. ad ea re-  
ſtituſtudis contendere. 262
- ſpectare—officia, quæ ad in-  
ſtitutionem vita commu-  
nis magis ſpectare viden-  
tur. 55

## I N D E X.

- spectatus igni. 255  
spes amplificandæ fortunæ in  
quibusdam fractior est. 596  
spem auferre rei alicuius fa-  
cienda—oris enim pulchri-  
tudo reliqui corporis imi-  
tandi spē auferebat. 328  
spicum—pro spica—fundit  
frugem spici ordine stru-  
ctam. 500  
sponzionem fecit M. Lutatius  
Pinthia, ni vir bonus esset.  
400  
spurina interpres, & coniector  
ostentorum, & haruspex. 81  
sp. Albinus. 446  
sp. Melium regnum appeten-  
tem amici iuare non de-  
buerunt. 580  
stabile nihil est, quod infidum  
est. 603  
stabilitas amicitiae. 615  
stadium currere—qui stadiū  
currit, enī & contendere,  
quād maximē possit, vt  
vincat: supplatere eum, qui  
cum certet, aut manu de-  
pellere nullo modo debet.  
351  
stare conuentis. 413  
stare suo iudicio—suo iudi-  
cio non stetit. 423  
standum non esse illis promis-  
sis, quād coactus aliquis me-  
tu, aut deceptus dolo promi-  
serit. 81  
stans resp.—euersa—opp. 322  
statius Synephebis. 463  
statue omnibus vicis Ma-  
rio: ad eas tus & cerei. 401
- statuæ ornatu fere militari  
sunt. 108  
stellarum minima, luna. 698  
stercorandi vtilitas. 501  
stefchorus senex. 462  
stipatus—ſenectus stipata stu-  
diis iuuentutis. 468, &  
469  
stoicē dicere: id est nullis ora-  
toriis ornamentiſ dicere.  
340  
stoici ita affensi sunt Peripate-  
ticis de honesti præstantia  
præutili, vt etiā quidquid  
honestum esset, id vtile esse  
censerent: nec vtile quid-  
quam, quod non honestum.  
328  
stoici si qui fuerunt pāne Cy-  
nici, nou sunt audiendi, qui  
reprehendunt, & irrident,  
quōd ea, quā turpia re non  
sunt, verbis flagitiosa dicam-  
bus: illa autem, quā turpia  
sunt, nominibus appelle-  
mus suis. 371  
stoicorum, Academicorum, Pe-  
ripateticorum propriæ est  
præceptio de officiis. 45  
stoicis placet, quād in terris gi-  
gnantur, ad vsum homini-  
num omnia creari, homi-  
nes aut hominum cauſa es-  
se generatos, &c. 73  
stoicis summum bonum, na-  
turæ conuenienter, iuere.  
328  
stomachari Canius. 383  
studia doctrinae prudentibus,  
& bene institutis pariter

cum

## I N D E X.

- cum ætate crescunt. 500  
studia hominum diuersa. 163  
studiis generorum, præsertim  
in re bona, difficile est obſi-  
stere. 573  
studiosi venandi, aut pilæ. 610  
ſtultissimum est, incerta pro-  
certis habere, falsa pro ve-  
ris. 520  
ſuadæ medulla M. Cethegus.  
499  
ſuafor, & auſtor alicuius rei.  
423  
ſuāz cuique vtilitati seruen-  
dum est, quod sine alterius  
iniuria fiat. 351  
ſuauitas odorum, qui afflaren-  
tur è floribus, al. efflarentur.  
ſuauitas sermonum, atque mo-  
rum, haud quaquam medio  
cre condimentum amicitię.  
603  
ſubacta humus, atque pura.  
509  
ſubducere—classis Lacedæ-  
moniorum ad Gytheum  
subducta. 377  
ſubigere—cūm gremio mol-  
lito, ac ſubacto ſparſum fe-  
men excepti terra, &c. 500  
ſubiiciunt ſe homines alterius  
imperio, & potestati pluri-  
bus de cauſis. 235  
ſubiicere bona ciuium voci  
præconis. 307  
ſubiecta testamenta. 686  
ſubire tot vitiorum nomina.  
382  
ſubterfugere quāſi fatalia, quā  
impending amicitii. 580
- ſubterfugere militiam. 414  
ſubtilitas—alia est illa cūm  
veritas ipſa limatur in di-  
ſputatione ſubtilitas, &c.  
252  
ſuccidia—hortum, ſuccidiam  
alteram agricolæ appellant.  
506  
ſuffragata eſt Cn. Oſtauio, no-  
uo homini, domus ad con-  
ſulatum. 177  
ſulla, & M. Crassus omnia per-  
petientes cuiuis deseruen-  
tes, dum quod vellent con-  
ſequerentur. 155  
ſullani temporis mesiis. 676  
ſumebat ſibi otium. 322  
ſumere publica. 686  
ſumma fatalis—cūm ſum-  
mam fatalem ſibi confe-  
rint. 697  
ſummittere—extollere.  
609  
ſummiſus, ſumma iniuria.  
81  
ſummuſum bonū ſic instituē-  
re, vt nihil habeat cum vir-  
tute coniunctum, &c. 45  
ſumptus in rem. qui optimi.  
286  
ſumptus nō ſolum neceſſarios  
ſed etiam liberales. 261  
ſunt ista. 550  
ſuperauit incredibili virtute  
ſumma ſpe ciuium, quā  
de eo iam puero habuerant,  
Scipio. 556  
ſuperbiā, fastidium, arrogan-  
tiam fugere debemus in re-  
bus prosperis. 138

## INDEX.

- superiores summittere se debent in amicitia, inferiores extollere. 609  
 superesse—quantum mihi su perfuerat amicorum, & resp. temporis, tantum erat philosophia loci. 210  
 superuacanea opere. 506  
 supplancare—qui stadium currit, supplancare eum, quicū certet, aut manu depellere nullo modo debeat, 351  
 supponis testamenta. 685  
 supremum tempus ætatis. 520  
 sulcepisti onus graue, & Athenarum, & Cratippi. 323  
 suscipere aliquas propter rem aliquam molestias. 588  
 suspexit in cælum. 695  
 suspicere—eos viros suspiciunt, maximisque efferunt laudibus, in quibus existimant, se excellentes qualidam, & singulares virtutes perspicere. 254  
 suspicere—nihil altum, nihil magnificum, nihil diuinum suspicere possunt, qui omnes suas cogitationes abiecerunt in voluptatem. 575  
 sustines non paruam expectationem imitandæ industrie nostræ. 323  
 sustinere dignitatem, & decus ciuitatis. 167  
 sustinere onus Aetna grauius. 442  
 sustinere se suis viribus, cuius possessio quo est maior, eo plus requirit ad secundam,

is minus diues est, quam cuius possessio suis se virtibus sustinet. 687  
 sustinere—senectus vacans muneribus, que non possunt sine viribus sustineri. 474  
 sustinere—tantum cuique tribuendum, primum quantum ipse efficere possum, deinde quantum ille, quem diligas, atque adiuuus sustinere. 609, & 610  
 sustinere, ut cursum, sic imperium benevolentiae, prudenter est. 602  
 suum cuique incommodum fermentum est potius quam de alterius commodis detrahendum. 341  
 sylla ausus est dicere, hasta posita, cum bona in foro venderet, & bonorum virorum, & locupletum, & certè ciuum, prædam se suam vendere. 242  
 symposium Xenophontis. 486

## T

**T**Abulæ nouæ quid habent argumenti, nisi ut emas mea pecunia fundum, eum tu habeas, ego pecuniam non habeam? 307  
 tali, & tesseræ. 506  
 tantalus, & Pelops.—regnum à Tantalo, & Pelope proditum. 406  
 tanti est—estne villa restanti,

&amp;c.

## INDEX.

- &c. 404  
 tarquinius Collatinus Bruti collega. 351  
 tarquinius exsulans dixisse fertur se tum intellexisse, quos fidos amicos habuisse, quos infidos, cum iam neutrals gratiam referre posset. 594  
 tertiiorum regis ætas. 520  
 tecta marmorea, ebore, & auro fulgentia. 648  
 tecta, quibus & frigorum vis pellitur, & calorum molestiae seduntur. 222  
 tegere improborum confectionem contrapatriam, excusatione amicitæ. 586  
 telum—benevolentia ciuum non est mediocre telum ad res gerendas. 601  
 temperans acuta cum grauius sonus, varius æquabiliter concentus efficit. 699  
 temperantia, modestia, verecundia, & quasi quidam ornatæ vita. 143  
 tempestatem aduersam in trâquillo optare, dementis est: subuenire autem tempestati quavis ratione, sapientis. 129  
 tempestiuia conuiuia. 486  
 tempus actionis oportunum, Græce *ισχεία*, Latinè appellatur occasio. 183  
 tempus præteritum non reuertitur. 520  
 temporis, & loci magna vis

est. 184  
 temporis inscientia. ibid.  
 tempore—ad cenam tempore re venit Canius. 383  
 tempora—laus non hominis, sed temporum. 424  
 tendere plagas. 389  
 tenebat non modò auctoritatem, sed etiam imperium in suos. 475  
 tenere iracundiam. 675  
 tenere manu: tenere ratione, & intelligentia. 389  
 tenere populum concionibus. 166  
 tenere sua, hanc ob causam maximè ut sua teneretur, resp. ciuitatisque constitutæ sunt. 297  
 tenere suum—in primis videndum erit ei, qui remp. administrabit, ut suum quisque teneat. 297  
 teneat suum—operam dabunt iij, qui remp. tuebuntur, ut iuris, & iudiciorum æquitate suum quisque teneat. 310  
 tenetur—quod non licet, id non vno tenetur, si arguitur non licere. 659  
 tenebatur imperiū populi Romani beneficijs, non iniurijs. 242  
 tenebatur multa hereditatibus, multaemptionibus, multa dotibus. 306  
 tenebantur omnia dominatu. 210  
 terentianus Chremes humani

I N D E X.

nihil à se alienum putat. 80  
terentius in Andria—obse-  
quium amicos, &c. 620  
terentius—vt ait Terentius.  
188  
tergiuersari — non incallidè  
in his tergiuersatur. 430  
terminare gloriam iisdem fi-  
nibus, quibus vitam. 531  
terra nona, immobilis manes,  
ima sede temper hæren, cō  
plexa medium mundi lo-  
cum. 699  
terra numquam recusat impe-  
rium, nec vñquam sine vñ-  
ra reddit, quod accepit, sed  
alias minore, plerunque  
maiore cum fenore. 500  
terra omnis, quæ colitur à no-  
bis, angusta verticibus, late-  
ribus latior, parua quædam  
insula est, circunfusa illo  
mari, quod Atlanticum,  
quod magnum, quem Ocea-  
num appellamus. 701  
terra quæ parua sit è cælo de-  
spicienti. 698, & 701  
terra — qui incolunt terram,  
non modò interruptos ita  
esse, vt nihil inter ipsos ab  
aliis ad alios manare possit,  
sed partim obliquos, partim  
traversos, partim etiam ad-  
uersos stare nobis. 700  
terra, seu tellus, quæ est media,  
& nona, neque mouetur, sed  
infirma est, & in eam ferun-  
tur omnia suo nutu ponde-  
ra. 699  
terra — vides habitari in ter-  
ris. 741

ra raris & angustis in locis,  
& in ipsis quæ maculis, va-  
stas solitudines interiectas,  
&c. 700  
terram videre, & aliquando in  
portum ex longa nauiga-  
tione venturum esse. 521  
testamentum L. Minucii Batili  
fallum è Græcia Roman à  
quibusdam allatum. 395  
testamenta subiecta. 686  
testis locuples. 327  
thebe Alexandri Pheræi vxor.  
241  
thenistocles, & Iason pheræus  
callidi. 155  
thenistocles, imperator bello  
Persico Græciam seruitute  
liberavit: idem cùm propter  
inuidiam in exsultum pul-  
sus esset, ingratæ patriæ in-  
iuria non tulit, quam fer-  
re debuit. 586  
thenistocles, consultus vtrum  
bono viro pauperi, an mi-  
nus probato diuini filiam  
collocaret: malo, inquit, vi-  
rum, qui pecunia egeat,  
quæ pecuniam, quæ viro.  
296  
thenistocles mortem sibi con-  
ciuit. 586  
thenistocles omniam ciuium  
perceperat nomina. 461  
thenistocles post victoriæ  
ad Salaminem, consilium,  
quod erat reip. salutare, cùm  
Aristide cōmunicauit, quod  
cùm ei visum esset inhone-  
stum, à populo repudiatum  
est.

I N D E X.

est. 376, & 377  
themistoclis nomen illustrius,  
quæ Solonis. 122  
themistoclis responsum Seri-  
phio cuidam. 448  
theophrastus multus est in lau-  
danda magnificentia, & ap-  
paratione popularium mu-  
nerum. 279  
theophrastus — rectè à Theo-  
phrasto laudata est hospita-  
litas. 287  
theophrastus scribit Cimonē  
Athenis etiam in suos curia-  
les Laciadas hospitalem fui-  
se. ibidem  
theopompus historicus. 258  
theseus exegit promissum à  
Neptuno. 412  
theseus filio suo Hippolyto  
non esset orbatus, si Neptu-  
nus promissum non fecisset.  
81  
thesæ — quæ dicuntur in scho-  
lis. 640  
threiciæ nota — compunctus  
notis Threicijs, al. Threcijs.  
al. Threcidicis. 241  
ti. Gracchus P. Filius tamdiu  
laudabitur, dum memoria  
rerum R. manebit, at eius  
filij nec viui probabantur à  
bonis, & mortui nōmē ob-  
tinent iurè cæsorum. 262  
ti. Gracchus regnum occupa-  
re conatus est, vel regnauit  
is quidem paucos menses.  
585  
ti. Gracchum remp. vexantem  
Q. Tuber, & qualèque ami-

ci dereliquerunt. 580  
ti. Gracchum sequebantur C.  
Carbo, C. Catō. 581  
ti. Numicius, Q. Melius tribu-  
ni pleb. dediti. 423  
timefacta libertas. 238  
timiditas omnis animi debili-  
tati, & humili, & fracti, fer-  
uitus est. 248  
timon Atheniensis. 619  
timotheus, Cononis filius. 163  
tithonus — Aristo Chius Ti-  
tonum facit de sene & tute di-  
sputantem. 438  
titillantes — multitudinis le-  
uitatem voluptate quasi ti-  
llantium. 288  
t. Claudio Centumalus. 388  
t. Coruncanus. 176  
t. Manlius Torquatus. 425  
t. Pontius Centurio, viribus  
corporis pollens. 73  
t. Veturius, & Sp. Postumius  
cos. hospitibus dediti.  
423  
toga — nec verò in armis pre-  
stantior, quæ in toga. 449  
tollerabilia esse debet omnia  
brevia, etiam si magna sunt.  
629  
tolleratia rerum humanarum.  
664  
tollere clamores. 677  
tollere hominem ex homine.  
337  
tolleretur in currum. 412  
tortuosum ingenium, & mul-  
tiplex. 603  
tractare — cùm tractaretur A-  
treus, personæ seruendum

I N D E X.

- fuit. 420  
 tradidit reliquis bellum facile. 258  
 tradiderunt se totos voluptatibus. 616  
 trade memoriae quæ dicam. 696  
 traducere otiosam ætatem, & quietam sine vlo aut labore, aut contentione. 531  
 traducere otiosam ætatem, & quietam sine vlo labore aut contentione. ibid.  
 tranare Gangem, transcedere Caucatum non potest cuiusdam nomen. 701  
 tranquillitas—multi sunt, & fuerunt, qui tranquillitatem animi expertentes a negotiis publicis se remouerunt. 117  
 tranquillum—in tranquillo tempestatem aduerlam optare, dementis est. 129  
 transcedere Caucatum, Ganges tranare. 701  
 transire finem, & modum. 149  
 translatio pecuniarum L. Sulæ, C. Caesaris à iustis dominis ad alienos, non debet liberalis videri. 95  
 tribuit adolescens philosophie Cicero multum temporis. 210  
 tribuere libris aliquantum temporis. 431  
 tribuendus est hic honos veteri amicitiae, vt is in culpa sit, qui faciat, non qui patiatur iniuriam. 611
- tribuendum est officium primo loco patriæ, & parentibus, quorum beneficiis maxime obligati sumus. 104  
 tributum conferre — danda opera est, ne propter ærarij tenuitatem, assiduitatemque bellorum tributum sit conferendum. 297  
 tristitia in omni re, & seueritas habet illa quidem gravitatem, sed in amicitia remissior esse debet. 603  
 tudinano, & Cethego cos. 449  
 turpe—quod turpe est, id quæuis occuletur, tamen honestum fieri nullo modo potest. 400  
 turpificati animi fœditas. 420  
 turpio Ambiūns. 498  
 turpitudine nullum maius malum est. 420  
 tyrannus ferè nullus similem exitum effugit, cædis à Caesaris. 238  
 tyrannus—hoc omne genus pestiferum, atque impium ex hominum communitate exterminandum est. 341  
 tyranus—nulla nobis societas cum tyranis, sed potius summa difficultas est. ibid.  
 tyrannus—num se obstrinxit scelere, qui tyrannum occidit, quamvis familiarem? 334, & 335  
 tyrannorum vita, in qua nulla fides, nulla caritas, nulla stabilis benevolentia potest esse fiducia. 594

Vacandum

I N D E X.

- V 610  
 venditatio, atque ostentatio. 616  
 venenum amicitiae odium. 620  
 venenum fugiens. al. vinum. 410  
 venire aduocatum cuiquam in rem præsentem. 81  
 venire in contentionem—si res veniet in contentionem. 296  
 veneris fulgor alter, alter Mercurij, Solem vt comites consequuntur. 699  
 veneris partem ab Apelle inchoatam nemo pictor est inuentus, qui absolucret. 327, & 328  
 venustas, muliebris dicenda est. 172  
 ver tamquam adolescentia, significat, ostenditque fructus futuros. 520  
 verba iuris civilis ex naturæ principiis orta. 390  
 verecundia hominum naturaliter imitata. 168  
 vereri, & diligere eos, quibuscum sermone conferimus, curandum est, vt videamus. 176  
 veritas—cuius aures ita daturæ veritati sunt, vt ab amico verum audire nequeat, huius salus desperanda est. 621  
 veritas—molesta veritas est, siquidem ex ea nascitur odio,
- VAcandum est omni ani-  
 mi perturbatione. 117  
 vagari errore—non sumus iij, quorum animus vagetur errore. 211  
 vagire in cunis. 533  
 valuit Reguli auctoritas. 416  
 valere—hoc præceptum ad amicitiam valet. 597  
 valere—iacere—opp. iaceat virilitatis species, valeat honestas. 352  
 valere—hoc verbum quid valeat, non vident. 348  
 valetudinis, & pecunia curatio. 311  
 valetudo experitur, vt gaudeas & muneribus fruare corporis. 566  
 valetudo sustentatur notitia sui corporis, & obseruatione quæ res aut prodeste soleant, aut obesse, & cötinentia in vieti, &c. 311  
 vallo aristarum munitur contra misorum auium mortuum. 500  
 vanitate nihil turpius. 188  
 vadimonia constituta. 462  
 vestigal—non esse emacem, vestigal est. 688  
 vestigal—magnum vestigal est parcimonia. 687  
 vestigalis—piratas immunes, socios vestigales habemus. 377  
 venandi, aut pile studioſi.

## I N D E X.

- quod est venenum amici-  
tia. 620  
veritas—sine veritate nomen  
amicitiae valere non potest.  
621  
veritas, quasi materia, pruden-  
tiae subiecta est, quam tra-  
et. 66  
versatur mihi ante oculos il-  
lius viri virtus. 628, &  
629  
versari in clarissima luce. 262  
versari in hominum ignora-  
tione. ibidem  
versari in saeculi praesentis er-  
ore temporum vitio. 687  
vertices caeli duo. 700  
verto—amicitia, quoquo te  
verteris, presto est. 566  
vertens annus quādo verē pos-  
sit appellari. 701  
versutus, obscurus, astutus, fal-  
lax, malitiosus, callidus, ve-  
terator, vafer. 382  
versus si pronunciatus est vna  
syllaba aut breuior, aut lon-  
gior, exfibilatur, & explodi-  
tur histrio. 661  
versutos homines, & callidos  
quidam admirantes, mali-  
tiā, sapientiam iudicant.  
221  
verum audire nolle. 625  
verum, simplex, sincerum na-  
turæ hominis aptissimum.  
60  
veri inquisitio, & inuestigatio  
in primis hominis propria.  
ibid.  
veseris fl.—Latini ad Vesce-
- rim fusi. 425  
vestigatio veri. 69  
vestita pampinis sua, nec mo-  
dico tempore caret, & nimios  
solis defendit ardores. 501  
vestitus—in vestitu vt in ple-  
risque rebus mediocritas  
optima est. 172  
vestitus quānam ratio sit ad-  
hibenda. ibid.  
veterator & callidus. 427  
vetulus equis teneros antepo-  
nere solemus. 603  
vetustatis, & consuetudinis ma-  
xima vis est. 604  
via ad gloriam proxima, &  
quasi compendiaria. 261  
viatores unde nominati sunt.  
505  
vicinum citius adiuueris in  
fructibus percipiendis, quā  
aut fratrem, aut familiarē.  
107  
vicissitudine studiorum, offi-  
ciorūmque iucundius. 588  
videri—quomodo consequi  
possumus, utræles esse videa-  
mur, quales sumus. 262  
vietum, & caducum. 443  
vigere—vbi studia nostra vi-  
guissent, &c. 594  
vilitas tritici. 380  
vincat recipit utilitas. 409  
vincam rationibus necessariis  
te insanum esse. al. aduinca.  
664  
victus tenuis, cultusque. 616  
victus—etiam victis consu-  
lendum. 82  
victio benevolentia. 566  
vin-

## I N D E X.

- vincula virorum—non vincula  
virorum, sed oblectamenta  
puerorum debent esse ta-  
bulæ pictæ. 677  
vindicare—videor id meo iu-  
re quodam modo vindica-  
re. 28  
vindicare—ne senectutem  
ab oranibus vitiis videar  
vindicare. 505  
vindicari in libertatem. 678  
violare alterum—qui alterum  
violat, vt ipse aliquid com-  
modi consequatur, &c. 337  
violare alterum lege naturæ  
prohibemur. 339, & 340  
vir bonus est, qui prodeat qui-  
bus pōt, nocet nemini. 399  
viris, equisque decertandum  
cum Cyrenaicis. 428  
virum bonum esse aliquem  
statuere difficile est, cūm  
ea res innumerabilibus offi-  
ciis, & laudibus contineatur.  
400  
virum bonū negant esse quē-  
quam, nisi sapientem, Sto-  
ici. 564  
viros bonos quos appellando  
putet Laelius apud Cicero-  
nem. ibid.  
virago—vos etenim iuuenes  
animum geritis muliebri,  
illa virago viri. 108  
.virgula diuina—si omnia no-  
bis, quæ ad viictum, cultum  
que pertinent, quasi virgu-  
la diuina suppeditarent, &c.  
193  
viriathus Lusitanus. 258  
virtitum—agrūm Picentem,  
& Gallicum virtitum diui-  
denti Caruilio resistit Q.  
Fabius Maximus. 449  
virtus à multis contemnitur,  
& venditatio quodam, ar-  
que ostentatio esse dicitur.  
616  
virtus amicitiam gignit, &  
continet. 505  
virtus—nec sine virtute ami-  
citia esse vlo pacto potest.  
565  
virtus cùm multis in rebus, tū  
in amicitia, tenera est, & tra-  
ctabilis. 588  
virtus est amans sui. optimè  
enim se ipsa nouit, quām p-  
amabilis sit intelligit. 624  
virtus, & recte facta—tantum  
remanet id quod virtute, &  
recte factis consecutus sis.  
520  
virtus & conciliat amicitias, &  
conseruat. 527  
virtus—humanos casus esse  
inferiores virtute. 350  
virtus—in virtute est conue-  
nientia rérum, in ea stabili-  
tas, in ea constantia. 627  
virtus non est dura, & quasi  
ferrea. 588  
virtus non est inhumana, ne-  
que immanis (aliás immu-  
nis) neque superba. 589  
virtus—nulla possessio, nulla  
vis auri, & argenti pluri,  
quām virtus, æstimanda est.  
687  
virtus omnis nos ad se alli-

## INDEX.

cit. 103  
 virtus—qui vnam virtutem habet, omnes haber. 252  
 virtus solitaria ad ea, quae summa sunt, peruenire non potest, coniuncta, & consociata cum altera potest. 615  
 virtus te trahat oportet suis illecebris ad verum decus, al- tè spectare si voles. 702  
 virtutis disciplina est aliqua, ea autem philosophia est. 211  
 virtutis laus omnis in actione consistit. 69  
 virtutis miserrimus famulatus seruientis voluptati. 428  
 virtutis opinio, amicitiae conciliatrix, est inter viros bonos. 581  
 virtutis significatio aliqua e- lucens amicitiam contrahit. 588  
 virtutis vires quantæ. 655  
 virtuti opera danda est: sine qua neque amicitiam, neque ullam rem experientam consequi possumus. 615, & 616  
 virtutem ex consuetudine vi- ta, sermonisque nostri interpretemur: nec eam, vt quidam docti, verborum magnificientia meriamur: virosque bonos, &c. 565  
 virtute nihil est amabilius, nihil quod magis alliciat ad diligendum. 574  
 virtute non tam prædicti multi esse volunt, quam videri volunt. 624

virtutes in se paries sunt: ergo & virtus paria sunt. 659  
 virtutes leniores, modestia, tē- perantia, iustitia. 96  
 virtutes quatuor, ex quibus conflatur honestum. 66  
 virtutes, quæ pertinent ad ve- recundiam, & ad eorum ap- probationem, quibuscum viuimus. 183  
 virtutes, quæ pertinent ad man- suetudinem morum, & fa- cilitatem. 251  
 virus acerbitatis suæ apud ali- quem emouere. 619  
 vis adhiberi forti viro non po- test. 423  
 vis est maior dicendi in ora- tionibus, quam in libris phi- losophicis. 28  
 vis, & fraus ab homine alieni- nissima, sed fraus odio di- gna in aiore. 94  
 vis, quasi leonis videtur. ibid.  
 via lachrimarum profudi. 697  
 virium moderatio. 473  
 viscelinum amici regnum ap- petentem amici iuware non debuerunt. 580  
 viscerationes, gladiatorū mu- nera, ludorum, venationum que apparatus. 279  
 vita brevis—breue tempus ætatis satis longum est ad bene honestaque viuedum. 520  
 vita—discedo ex hac vita tā- quam ex hospitio, non tam quam ex domo. 533  
 vita inculta; & deferta ab ami- cis.

## INDEX.

cis. 595  
 vita omni gestu moderior, omni versu aptior esse de- bet. 661  
 vita—quid est in hominis vi- ta diu? 520  
 vita—vestra quæ dicitur vi- ta, mors est. 697  
 vita vitalis—quæ potest esse vita vitalis, vt ait Ennius, quæ non in amici mutua be- neuolentia conquiescat? 565  
 vita, natura quæ nostræ ratio- ita comparata est, vt alia èta- oriantur ex alia. 268  
 vitæ tempus incertum. quis est tam stultus, quamuis sit ado- lessens, cui sit exploratum se ad vesperum esse viuctu- rum? 516  
 vitis natura caduca est, & nisi fulta sit, fertur ad terram. 501  
 vitia duo, quæ vitanda sunt ei, qui cognitionis, & scientiæ studio ducitur. 68  
 vitia, quæ nota essent vedorí in prædiis vendidis, dicen- da fuisse emptori. 388  
 viximus quondam in maxima celebritate, atque in oculis ciuium. 322  
 vixerat cum eo coniunctissi- mè, & amantissimè. 546  
 vivere—quamdiu viucturi si- mus, incertum—quis est tam stultus, quamuis sit ado- lessens, cui sit exploratum se ad vesperū esse viucturū. 516  
 vivere vitam, quæ est sola vita nomināda, claros viros, mor- tuos. 527  
 viuitur non cum perfectis ho- minibus. 96  
 viuendi finis optimus, quis. 523  
 viuiradices, propagines, &c. 500  
 vlysses simulatione insanie militiam subterfugisse in- simulatur à tragœdiis. 415  
 vmbra, & imaginibus, iustitiae vitimur. 390  
 vnguentarij, saltatores, totū- queludus talarius. 188  
 vñus de multis. 156  
 vocare aliquem in odium, aut inuidiam criminibus falsis. 133  
 vocare nimis exsiliter ad cal- culos amicitiam. 596  
 voluptas condimenti fortalle nonnihil, vtilitatis certè ni- hil habet. 431  
 voluptas consilium impedit, rationis inimica, ac mentis vt ita dicam, præstinguit o- culos. 483  
 voluptas corporis—nulla ca- pitalior pestis, quam volu- ptas corporis, hominibus à natura est data—multa hic ibidem de voluptate. 480  
 voluptas cum maior est, atque longior, omne animi lumē extinguitur. 481  
 voluptas esca malorum, quod- ea homines capiantur, vt ha- mo pisces. 485  
 voluptas—in voluptatis re- gno virtutē non posse con-

## I N D E X.

- sister. 481  
 voluptas—multi diuitias amicitiae præponunt, alij potentiam, alij voluptatem. belluarum hoc quidem extreum est. 565  
 voluptas neque meliorem, neque laudabiliorem efficit quemquam. 649  
 voluptas non satis digna est hominis præstantia. 151  
 voluptas nullum habet cum virtute commercium. 483  
 voluptas omnis, honestati contraria est. 430  
 voluptas—pecudum ritu omnia ad voluptatem referre. 575  
 voluptas—quā miser virtutis famulatus seruientis voluptatē. 428  
 voluptas quō est maior, eo magis mentem ē sua fede, & statu dimouet. 649  
 voluptatis appetitum occultant, ac dissimilant omnes propter verecundiam, nisi quis sit ex pecudum generē. 150, & 151  
 voluptatis quidam fortasse est naturalis modus. 486  
 voluptatem esse summum bonum—vox pecudum, non hominum. 649  
 voluptas agricolarum. 500  
 voluptates blandissimae dominæ, saepe maiores partes animi à virtute detorquent. 254, & 255  
 vox amicitiae inimicissimajita
- amare oportere, vt si aliquando sis osurus. 596  
 vox clara, & suauis esse debet. 173  
 vox magnifica, & magno viro & sapiente digna. 321  
 vox Milonis Crotoniatae valde contempta. 468  
 vox nec languens, nec canora. 173  
 vox nefaria C. Blōsij Cumani, 580, & 581  
 vox, orationis index. 173  
 vrbes—de euerterdis, diripiendisque vrribus valde considerandum est, ne quid temerē, ne quid crudeliter. 129  
 vrbes sine hominum cœtu nō possent, nec ædificari, nec frequentari. 223  
 vrgerc—ius Craffus vrgebat. 389  
 virgentis, aut certè aduersantis īnechtūs onus. 438  
 vrre, & secare—ad vrendum & secundum raro, inuitique veniunt medici. 177  
 vsura—terra numquam sine vsura reddit quod accepit. 500  
 vsurpare alicuius memoriam, cum caritate aliqua, & benevolentia. 574  
 vsus summi populi beneficiis. 677  
 vt inter bonos bene agier. 285  
 vt quisque ætate antecellit, ita sententia principatum reper-

## I N D E X.

- net in collegio augurum. 515  
 vt quisque sibi plurimum confidit, & vt quisque maximè virtute, & sapientia sic munitus est, vt nullo egeat, &c. ita in amicitiis expetendis, colendisque maximè excellit. 575  
 vt quisque animi magnitudine maximè excellit, ita maximè vult princeps omnium esse, vel potius solus. 109  
 vt quisque est maximè boni particeps, ita & laudabilis maximè. 649  
 vtcumque aederunt. 176  
 vtendus, a, vīm—de vtenda pecunia. 312  
 vtendum accipere—ea, quæ vtenda acceperis, maiore mensura iubet reddere Hesiodus, modò possis. 98  
 vtendū est ea liberalitate, quæ profit amicis, noceat nemini. 95  
 vtendum est excusatione aduersus eos, quos inuitus offendas. 292  
 vtile—in hoc verbo lapsa cōfuetudo deflexit de via. 221  
 vtile nihil est, nisi quod honestum. 424  
 vtile non debet videri, quod turpe est. 400  
 vtile — numquam est vtile peccare, quia semper est turpe: & quia semper est honestum, virum bonum es-
- fe, semper est vtile. 386  
 vtilia—quaæ ad hominum vitam tuendam pertinent, partim sunt inanima, partim animalia. 221  
 vtilitas—honestas—incidūt saepe caussæ, cùm repugnare vtilitas honestati videatur, &c. 379  
 vtilitas honestate dirigenda est. 405  
 vtilitas non conglutinat amicitias, aliqui eadēmque cōmutata dissolueret. 576  
 vtilitas—omnes expetimus, vtilitatem, ad eam rapimur. 416  
 vtilitas parta per amicum. 594  
 vtilitas—vincat vtilitas. 409  
 vtilitatis specie in rep. saepissime peccatur. 376  
 vtilitatem ab honestate seiuientes, fundamenta naturæ peruerunt. 416  
 vtilitate magis putat Hecato officium dirigi quam humanitatem. 409  
 vtilitates nostræ nobis non sunt omitæ, aliisque tradidæ. 351  
 vua à gemma oriēs se se ostendit. 592
- X
- X Anthipus Lacedæmonius. 416  
 xenocrates senex. 462
- F f

I N D E X.

xenocrates seuerissimus philo  
sophorum. 156

xenophon Socratus eas res  
perfecutus est in Oecono-  
mico, quibus rebus res fa-  
miliaris queritur, conserua-  
tur, augetur. 311

xenophontis libri multas ad  
res perutiles sunt. 509

Z

Z Onæ — terram quasi  
quibusdam redimi-  
tam, & circumdatam cingu-  
lis: è quibus duos maxime  
inter sè diuersos, & cali ver-  
ticibus ipsis ex vtraque par-  
te subnixos, obriguisse prui-  
na vides: medium autem il-  
lum, & maximum, solis ar-  
dore torri. 700

I N D E X

I N D E X

R E R V M E T V E R B O -  
R V M L O C V P L E -  
T I S S I M V S

*Quæ in his Commentarijs continentur.*

A

<b>A</b> Brogari. 299	adolescens officij colendi no- titia erudiendus. 46
academia cum Platone inter- dū sensit, in- terdum dis- sensit, & quibus in rebus. 47	adolescentes cupidi, & incon- stantes. 99
academicæ disciplina finitima Peripateticae 220	adolescentes sperant sè diuictu- ros. 521
academicorū mos in dispu- tando. 641	adolescentes vim potius, quæ ius spectant. 519
academicorū proprium. 220	adsciscere fibi. 593
accubatio. 494	adstringere sceleri. 337
accuratissimè disputare, subti- llissimè, diligentissimè, cum veritate congruenter. 329	aduenis, pro aduenoris. 467
accusare, & reprehendere. 411	adulari, passiuè. 141
acraonis tabula. 632	æacus, & Minos, Iouis filij. 147
actio redhibitoria. 391	ædilium officia. 284
actum agere. 618	ægina. 377
ad Capuam. 455	æpol, pro ædepol. 467
addiccam pro probabo. 667	æquitas. 568
adiuro. 439	æs Corinthium. 654
adminiculorum ordines. 603	æschinæ dictum præclarum. 46
	ætas militaris. 513
	ætas alia, & alia oritur. 630
	ætas feneicit, sensim sine sen- su. 482
	ætas senilis his vacat muneri- Ff. 4

I N D E X.

- bus, quæ laborem exigunt. amicitiæ veræ sempiternæ sūt  
478 580  
ætatis constantis grauitas. 477 amicitia, & odium abesse de-  
affabilitas, & comitas conci-  
liant animos. 271 bent à iudice. 354  
affectionatate. 497 amicitiæ esse nisi in bonis. 568  
affici &c. 256 amicitia molesta numquam.  
afflare è floribus. 512 amicitia numquam intempe-  
stiuæ. 570  
affluere deliciis. 597 amicitia remissior. 607  
africanus laus. 504 amicitia vera. 563  
africanus minor. 127, 137 amicorum mores. 601  
africanus minoris mors. 550 amicorum paria. 354  
agendum bene inter bonos. 387 amicus certus in re incerta cer-  
nitur. 606  
agis Rex. 307 amicus verus. 563  
aglaus Arcas pauperrimus præ-  
latus Gygi Lydorum Regi  
ab oraculo. 349 amici definitio. 106  
agricultura laus. 191 amor ex adspicere nascitur. 62  
agri fossiones. 504 amplissima qua: habentur. 287  
ala equestrium turmarum au-  
xiliarium. 266 anacharsidis dictum, de Solo-  
nis legibus. 347  
aldus Mannuccius quo libris  
scriptis vñs fit in emenden-  
do libro Officiorum. 40.  
&c. 29  
alexander. 231 alexander Pheræus. 244. &  
nex. 246  
amare oportere ita, vt aliquan-  
do osñri simus. 600  
amare quid. 577  
ambitiosi. 600  
ambrosius D. 146  
amici. 571  
amicitiæ diffundæ, potius, quā  
discindendæ. 166  
amicitiæ fructus omnis in a-  
more. 578  
amicitiæ nimia fugiendæ. 591  
amicitiæ veræ sempiternæ sūt  
580  
amicitia, & odium abesse de-  
bent à iudice. 354  
amicitiæ esse nisi in bonis. 568  
amicitia molesta numquam.  
amicitia numquam intempe-  
stiuæ. 570  
amicitia remissior. 607  
amicitia vera. 563  
amicorum mores. 601  
amicorum paria. 354  
amicus certus in re incerta cer-  
nitur. 606  
amicus verus. 563  
amici definitio. 106  
amor ex adspicere nascitur. 62  
amplissima qua: habentur. 287  
anacharsidis dictum, de Solo-  
nis legibus. 347  
animi cœlitas, & magnitudo.  
339  
animi voluptas. 118  
animi exercendo leuatur. 478  
animi opera sunt maiora, quā  
corporis. 269  
animorum immortalitatem  
sex probat argumentis Ci-  
cero. 529, & 532. quatuor. 530  
animus caelitus est nobis. 529  
animus cum corpore colliga-  
tus est & nexus, ex Platonis  
sententia in Phædone.  
animus elatus. 110  
annicerides Platonis redēptor.  
429  
anni militares. 513  
anno non tantum frumenti,  
sed quidquid ad victu atti-  
net.

I N D E X.

- net. 413 argumenta cur indubii adhi-  
bentur. 522  
annus vere vertens. 707 argumenta 4. Platoni ad ani-  
anticato Cæsaris. 439 morum immortalitatem  
antipater Iolai filius. 271 probandam. 530  
antipater, præceptor Panætij. 381 argumenta sex Xenophontis  
pro animorum æternitate.  
antipater Tyrius. 313 531  
antiquari. 299 argumentum à minori. 147  
antiqui fidibus discebant. 468 aries à quibus inuentus. 89  
antonius princeps eloquétix. aristippus, vir integerrimus.  
394 187  
apelles duas Veneres pinxit se  
dicitur. 329, & 330 aristo Chius. 441  
apex senectutis auctoritas. 514 aristonis, Pyrrhonis, & Heril-  
li sententia quare explosa.  
52 aristo Stoicus. 282  
aristotelis, & Isocratis æmula-  
tio. 44  
aristo, Zenonius auditor 48. qua:  
in re ipsi inter se dissentient.  
381 49  
arrogantia. 38, & 39, & 141  
artificium quo Cicero vñtit  
in cohortando filio ad Phi-  
losophiam. 29  
atia, Augusti mater. 287  
athenarum laus. 30  
athletæ cur nudi certarent.  
186  
atque. 161  
atilius Calatinus. 514  
atteus vnde dicitur. 147  
attici cognomen. 440  
auritia confertur hydropisi.  
650  
auctor bonus est, maximè di-  
gnus, cui aliiquid narranti,  
fides habeatur. 428  
auctores qui de senectute scri-  
193 F f 3

## I N D E X.

pserunt.	439	bilis esse potest.	598		
audacia sua quemque à mente deturbat.	347	benevolentia in suos,	269		
audientia.	471	bernardini Rutilij laus.	274		
augurari.	590	bias. 600. tripoda aureum repudiauit.	ibid.		
augustinus D. cùm audisset Ci ceronis Hortensium, ad Phi losophiq amorem accensus fuit.	219	blofius.	583		
augustinus inuehitur contra pladiatores.	281	bona ætas.	498		
aurum & argentum per se nec bona nec mala sunt, sed &c.	226	bona dea.	675		
aurum, æs, argentum non hominum vñi.	229	bona spes.	571		
aurum spectatur igni.	257	bona interdicta malè rem gerentibus.	465		
auxiliarium turmarum equestrium ala.	266	boni ciuii officium.	170		
 <b>B</b>		bonitas apud rusticos laudem habet.	402		
Barbari natura serui.	679	boslaboris socius, & alia.	227		
barbatuli inulli.	683	vnde dicitur.	ibid.		
basillus.	397	bonus, id est, iustus.	259		
beati, qui nulla regent.	295	brevis vita hominis.	522		
bella ciuilia qui gesferint.	1:6	bruti dictum ad Antonium ter rendum.	239		
belli, pro in bello.	312	bruti facinus contra ius, & bonum factum.	353		
benefactorum recordatio iucundissima.	454	bruti omnem regnandi consuetudinem, sustulit.	ibid.		
beneficentia doctrinæ anteponenenda.	85	Bouz'nos.	680		
beneficiaparata gratissima.	591	bucellinus.	583		
beneficium accipere libertatem vendere est.	295	 <b>C</b>			
beneficium maiore mensura reddendum.	100	Æcilij comedia Epicles.			
beneficis qui.	97	rus.	626		
benificiustrucidator, adagium.	288	cæcilius.	467		
benevolentiae fiducia nulla sta		cæli stelliferi cursus.	706		

## I N D E X.

cundus Romæ.	65, 79	capitum iugatio.	503
cæfaris crudelitas.	247	carthaginenses Arietem inueniunt.	89
cæfaris nex.	245	carthago.	88
cæfaris quinque triumphi.	248	catadupa.	706
cæsar rerum omnium quando potitus.	310	catilinae coniurationis origo fuit immoderata largitio.	278
cæsar vno die centies sextertium cenauit.	97	cato.	551
cæfurinus.	391	cato Censorius, à censura severissimè gesta appellatus.	
c. Aquilij laus.	392	324	
c. Carbo 385. consularis vir, & eloquentia clarus.	270	cato didicit senex Græcas litteras ab Ennio.	467
c. Duilius delectabatur cereo funali, & tibicine.	488	cato intulit sibi manum, ne seruitem patriam videret.	
c. Fabricij continetia.	653	394	
c. Fabricius.	568	cato maior.	439
c. Gracchus frumentariam legem tulit.	299	cato maior cur malè audierit.	
c. Lælius.	547	170	
c. Marius.	126, & 657	cato M. & alia.	161
c. Pontius Samnis.	482	cato natu grandior Græcas litteras Sardinate didicit.	441
c. Pontius Samnis aduersus Romanos imperator.	302	& 442	
c. Sergius Orata.	394	catonis cognomen Sapientis.	
c. Sulpicius Gallus.	569	552	
calamitas, & felicitas maxima ex parte in animis, & moribus sita est.	378	catonis filius à Catone patre crematus.	536
callidi qui.	226	catonis laus, & eloquentia.	
calumnia.	87	645	
camillus Romæ eversam exul in integrum restituit.	590	catonis magna vox, & latera.	
campus Martius.	154	459	
candales Rex à Græcis Myrtilis dictus.	349, & 350	catonis sapientia.	444, &
cani, non rugæ auctoritatem afferre senectuti possunt.	517	445	
capedo, vasis genus.	652, & 653	catonis senis iocus.	154
capides.	552, & 553	cato scriptor de re rustica.	
capiendi verbis.	253, & alia,	504	
		catonis tribunus militum depungavit ad Thermopylas.	
		476	

I N D E X.

- cato vir maximus, & spectatus. 559  
 cato Uticensis. 644  
 caudium, Apuliae vicus. 425  
 causæ iustæ bellorum. 91  
 causæ sex, quæ homines commouent, cur aliis faueant. 236  
 causam qui ignorat, nihil scit. 39  
 cautio est, forma dicendi. 617  
 celebrari. 63  
 celeritas. 561  
 cella vinaria, olearia, & penuaria. 808  
 celtiberi. 91  
 censendi verbum. 244  
 censere. 33  
 cereum funale. 488  
 certatio in amicitia officiorū. 579  
 certo scio. 441  
 cetarij. 190  
 cethagus. 683  
 charon portitor. 190  
 cicero à Peripateticis dissentit in honesto. 36. Stoicorum probat honestum. 37  
 cicero Aësopum in pronuntiatione imitatus. 162  
 cicero Aristotelem imitatur. 236  
 cicero Aristotelis verbum vertit. 229  
 cicero Cæsarem, & Antonium carpit. 106  
 cicero defenditur. 56  
 cicero definitionem virtutis accipit pro medio termino. 656
- cicero in ea philosophorum secta fuit, quæ deos admitti strare, & scire omnia sentiebat. 351  
 cicero in reip. & amicorum causis occupatus. 214, & 215  
 cicero Isocratis locum imitatus. 46  
 cicero magis adhæsit Academicis, quam Peripateticis. 643  
 cicero magis oratoris, quam philosophi, nomen amplius est. 39  
 cicero maximè legendi cupidus. 217  
 cicero multa scribere ruri solitus. 325  
 cicero necessario, & ex omnibus negantibus concludit. 656, & 657  
 ciceronianæ sententiae inconstantia. 87  
 cicero nimia gloriæ amans. 197  
 cicero pater patriæ. 285  
 cicero Platonis sententiam interpretatur. 217  
 cicero Platонem imitatus est in Theateo. 549  
 cicero pacis auctor. 89  
 cicero Platonis, quam Aristotelis lectione delectatus est. 38  
 cicero quare in lib. Off. Stoicos vel maximè sequitur. 54. Stoicos amicos vocat. ibidem  
 cicero tres partes officij in procēmio lib. II. complectitur.

I N D E X.

- tūr. 212  
 ciceronis argumentandi modus, iuniores Dialecticos latet. 648  
 ciceronis iudicium de Platone, & Aristotele. 643  
 ciceronis orationes elaboratæ. 215  
 ciceronis sententiam multi nō assequuntur in Paradoxis. 684  
 ciceronis summa laus, & res gestæ. 127  
 chilonis pulchrum dictum. 141  
 cimbri à quo deuisti. 91  
 eimonis liberalitas. 291  
 circulum absoluere. Adagium. 332  
 ciues in alios ciues officiosi esse debent. 187  
 ciuius à dignitate. 403  
 ciuitas, multitudo ciuum est. 305  
 ciuitates quæ. 230  
 ciuitates, quæ Ciceronem followerant, Senatus laudavit. 674  
 ciuitatis felix administratio quando. 121  
 ciuitatum. 399  
 ciuum benevolentia quomodo paretur. 605  
 cybelæ epitheta. 149  
 cybelæ simulacrum. 149  
 cymbæ, dictæ à velocitate. 384  
 cynici vnde dicti, & dia. 174  
 cyrus filius. 378  
 cyrus Persarum rex. 231  
 clam furari. 259
- clauiculæ. 503  
 cleanthes. 466  
 clementia magis hominem decet, quam crudelitas. 234  
 clementia, quid. 139  
 clementia victorem decet. 131  
 clodius in curia seruum ad occidendum Pompeium collocauit. 674  
 clodius téplum Nympharum incendit. ibid.  
 clælia, eiisque virtus. 110  
 cn. Papirius Carbo. 270  
 cn. Pompeius, & eius laus. 126  
 cocles mortis discrimen adiuit. 113  
 collatinus, patriæ studiosus. 333  
 collocare, pro elocare. 281  
 comedia antiqua. 153  
 comitium, pars fori Romani. 41  
 communere suos, quid communis utilitas priuatæ anteponenda. 342  
 comparatio aptissima. 186  
 comparatio apum, & hominū. 194  
 concoquio. 439  
 conditores iuris singularis, seditionis verius sunt, quam ciues. 261  
 congressus viri, & feminæ, opus diuinum. 62  
 conscientia. 347  
 conscientia bene actæ vita. 455  
 conscientia furia. 658  
 consilium calidum. 131  
 conspiratio. 232

## I N D E X.

constans.	367	disciplina floruerit, ciuis R. adscriptus.
constantia.	569	crimina aliena magis quam propria cernuntur.
consulatus eiusdem.	512	critolai Peripatetici libri.
consulere est, à iurisconsultis litigandi viam petere.	294	critonius Socratis disputandi modum lacessit.
consuli est, de iure consulenti- bus respondere.	ibid.	culmus.
contentnere, & malè existima- re, non idem.	255	curio.
contumacia quæ.	599	curiales.
conueniens.	346	D
conuicia indigna homine in- genuo.	180	D Amon, & Pythias.
conuiuum.	494	decij.
copiosè, & ornatè dicere sine fententia, insania est.	271	d.Iunius Silenus
copiosi, & vñque ad delicias a- bundantes, non subueniunt vltimè necessitatì.	277	decius vterque.
corinthus.	89	declinare de via, pro, à summo iure recedere.
corinthus prædiues.	304	decumani fructuum vel præ- de Romani alicui Deo vo- uebant, vt &c.
coriolanus.	583	deduci.
cornificij nomen non recte in aliquibus libris positū.	675	defectus anni.
cotte, tres fratres fuere.	287	defendere ardores solis.
crasti cognomen, Diues.	283	defensionibus maximè gloria paritur, & gratia.
classi laudes.	ibid.	deflagrare, absolutè.
crasti oratio.	683	delectum rerum nullum relin- quere, quid. 52. bis.
crastus iudices corrumpebat, vt fontes absoluissent.	690	delibatus animus.
crastus, M.	158	delictis etiam occultis abili- nendum.
crastus L.	156	delinquitur plurimū propter amicos.
crastus princeps in eloquen- tia.	394	deliratio.
crastus subornabat accusatores, ad homines locupletes cri- minandos.	690	demens ruina.
cratippus.	432	demetrius Phalereus de sene- cute scripsit.
cratippus cujas fuerint, qua in		de-

## I N D E X.

demetrius Palerçus in quo di- cendi genere excelluerit.	181	diogenes, præceptor Antipa- tri.
42. vnde dictus. ibid. apud Macedones gratiosus. ibid.		dionyssius tyrrannus, Hermo- cratis filius, & alia.
Bibliothecæ Alexâd. à Pto- lemeo præfectus. eius mors.	244	diribitor, id est, qui diuidit.
ibid.	278	dirus, & durus, quomodo dif- ferunt.
democritus.	466	discedere. i. hiare.
demostenes industria natu- ram emendauit.	270	discendum à bonis doctori- bus.
demostenis in dicendō vis.		discrepare.
42		disertus, & eloquens, nō idem.
deorum, an regum filii.		271, 294
609		dissensio Ciceronis.
depromptum ex arca non con- ferendum est cum eo, quod		dissimulare, & simulare, quid
ex virtute depromptum est.		differant.
276		disolutus.
desiderium pro absentia.	613	distinctè dicere.
deterere.	290	distringit, & dissoluit, nō idem
dicæarchus.	232	sunt.
dic meliora.	497	diuñio eorum, qui imperant.
dicendi genera tria.	41	135
diæteria.	153	diuñie.
dies status.	91	diues, aut iniquus, aut iniqui
dignitas.	156	heres.
dignitas quid.	181	diuinare.
dignitas priuata inferior pu- blica.	187	diuitis definitio.
digniteate qui se abdicarunt.	118	doctorum consuetudo.
dij profunt. 228. non nocent.	228	dolum Danaidum.
dilabi, id est consumi, dissipari.		domui.
291		domus æterna, pro monumen- to.
diligenter, cum delectu.	278	dubitatio homine indigna.
diogenes.	466	670
diogenes, Cynicorū princeps.		ducere.
381		duo Scipiones.
		dupli pena.

## INDEX.

- E
- E**quid. 439  
elephantorum, & leonum pugnæ, venationes dicuntur. 281  
eleuare, pro minuere. 613 & 622  
eloquens, & disertus, nō idem. 271, 294  
eloquens præstat diserto. 271  
eloquentia, cur iuriisprudenteritiae anteposita. 293  
eloquentia in philosopho requiritur. 33  
eloquentiam tenere principatum in iis, quæ dignitatem pariant, maioribus placuit. 294  
empedocles Agragantinus. 571  
eneruare. 476  
ennio viſus adesse Homerus. 704  
ennius. 132  
epiclerus, Cæcilius comœdia. 626  
equitari. 266  
equitum, & senatus dissensio- ne fractæ sunt opes reipub. 410  
eripere, aut furari. 259  
escendere. 403  
esse odiosum alteri. 467  
ethionis tabula. 682  
euander, imperfecto Caco, Herculi vouere decumā boum instituit. 284  
euertere aliquem per ludum & iocum. 152
- excutere intelligentiam. 404  
exercitus R. quo leg. erat. 78  
exigit pro postulat. 338  
exitimare male, & contemnere idem. 255  
exoticum, id est peregrinum. 650  
expertendum nihil, nisi honestum. 345  
explicare intelligentiam. 404  
exprobratio odiosa. 612  
exstitit, id est, clarus euasit. 266  
extremum. 562  
extremus actus vita. 191
- F
- F**abulæ, quæ philosophis cœlestiæ. 357  
facilè laborans, laborum tolerantissimus. 294  
fama negligenda propter amicum. 605  
familia. i. mancipia. 411  
familia R. permulta nomina bestiis sumpserunt. 384  
fartores. 190  
fastidio effterri. 598  
fatigare. 397  
felicitas, & calamitas maxima ex parte in animis, & moribus sitæ sunt. 378  
ferè, pro laxe. 703  
fetiale ius. 90  
fetialis. ibid.  
fidem qui violat, omne commune præsidium oppugnat. 353  
fides quid. 169  
fides. 568

## INDEX.

- fides cum hoste seruanda. 93  
fides hominem homini conciliat. 76  
fides iustitiae fundamentū. 76  
fides non est dea, ait Aug. 423, & 422  
fides perpetua ex benevolentia. 240  
fide, pro fidei. 417  
fides Punica. 93  
fides seruanda etiam infideli. 442  
fides vnde datur. 76  
filiorum à parentibus degeneratio. 165  
filius, pro elocutione. 576  
fimbria. 402  
finitimus, id est, simillimus. 293  
fœdare. 247  
fœdum opponitur pulchro. 347  
fœdus. 406  
foris utimur modestia. 269  
fortes, qui pro Repub. mortem libenter oppetunt. 333  
fortitudinis descriptio & laus. 110  
fortitudinis est, nec dolore, nec voluptate vinci. 120  
fortitudo, & temperantia, iustitia comites. 226  
fortuna. 235  
fortunæ bona, non recte bona. 651  
fortunæ, & virtutis comparatio. 657  
fortunæ ludibria. 651  
fortunæ temeritas. 569  
fortunam sui cuique mōres fin-
- gunt. 680  
fratrum gratia rara. 342  
fraudium. 399  
frontes punctæ apud Thraces nobilitatis signum, & contraria. 245  
fructus ad fenus exiguum, quis sit. 691  
fulvius Vrbinus. 282  
fundum non habere. 281  
furari clam aliquid. 259  
furiæ conscientia. 658
- G
- G** Salinator per Sp. Albinus querelas deplorare solitis. 447  
G. Setulius Ahala Sp. Melium interemit. 507  
Gallus. 499  
guzam, regiam pecuniam vocant Perſæ. 303  
geometrae non persuadent, sed omnia, quæ describunt, probant. 345  
gerere animalium. 110  
gerundium, in dum, absolute. 447  
gigantomachiam qui scribunt. 445  
gigantum mos. ibid.  
gladiatorum munera in funeribus potissimum edebantur. 281  
gloriæ descriptio. 250  
gloria est virtutis umbra. 576  
gratiæ, & gloriam tyrannici dæ consequuntur. 408  
gratiæ referre. 598

I N D E X.

- gratidianus. 142  
grau onus. 326  
græcia dux Agamemnon. 472  
gremium mollitum, atque subactum. 502  
guilhelmus Sirletus Cardinalis. 181  
gyges imperauit apud Lydos. 349
- H**  
Abere quæstui remp. est, ex reip. muneribus quæstum facere. 305  
habere rationem cum terra. 502  
habere religionem est, cauere. 274  
hannibal. 158  
hemicyclus. 548  
hera. 92  
hercules vnde dictus. 339  
hereditas optima, quæ à patribus filijs relinquatur. 169  
herillus, & eius opinio. 49  
hernici. 88  
hesiodus doctus. 504  
hippolytus. 87  
homeri lingua melle dulcior. 472  
homerus ante Hesiodum. 504  
homerus Ennio visus adesse. 704  
homerus optimus auctor fabularum. 417  
homines ad cælestium ordinem creati. 529  
homines plures, quam vnu, magis videant. 186, & 187
- 142 homines statim non sunt improbi. 225  
homines suorum malorum commemorationem abhorrent. 246  
hominibus quæ utilia, quæ nova. 226  
homini fidendum. 161  
hominis docere, & discere proprium. 104  
hominis inanis gloria. 141  
homo corpore, & anima constat. 69  
homo homini Deus. 76  
homo homini Deus, & lupus. 228  
homo homini nocet. 232  
homo hominis incommodo suum auget commodum. 338  
homo nouus. 180, & 181  
homo oratione, & ratione à brutis differt. 104  
homo Romanus. 458  
homo /pecie differt à pecude, gencre à lasso. 592  
hominum proprium errare. honesti, & decori discrimen. 146  
honestum, ex quatuor virtutibus. 212  
honestum per se, lucet. 59  
honestum secundum naturam in quatuor partes diuiditur. 67  
honor dininum bonum. 592, & 593  
honoris contemptus maximus honor. 117  
horatius Cocles. 651

horten-

I N D E X.

- hortensius Ciceronis æmulus. 397  
hortensius pauonem in augurali adiiciali cena primus posuit. 283  
horti luculliani. 182  
hostimentum. 91  
hostire. 90  
hostis. 90  
hostiorum. 91  
humani casus. 552  
humanitas. 440  
humanitas quid ferat. 274  
humæus Louaniensis aberrat à Ciceronis sententia. 684
- I**
- Aculari. 266  
Janus Medius. 316, & 317  
iasón Phereus. 158  
idoneis de re familiari imperiendum. 277  
imagines domi habere, eisque in funere præferre veteres Romani solebant. 703  
imagines opidorum, quæ bello capta fuerant, in triumpho portari solitæ. 248  
immunis, pro improbus. 593  
imperio animi vtimur, seruicio corporis. 269  
importunitas. 598  
in amicitia experiendum. 605  
in amicitia quæ requiruntur. 605  
in collegio adesse, vetus formula. 152  
indigere casu accusandi dictū. 597
- indicari, i. estimari. 387  
industria, & virtus præstant diuinas. 298  
inhumana virtus, neque superba. 593  
inhumanum, & nefarium male arcum quam iustitiam. 277  
in luce. 457  
in manu. 287  
in oculis ciuium. 457  
inops multitudo. 260  
inops potest esse gratus animal, non re. 295  
inscriptiones veteres de Cibele. 489, & 490  
inscriptiones veteres, quæ Romæ, & alibi leguntur. 536  
instat. 295  
instituere. 30  
insula quæ dictæ. 391  
integritas. 568  
intemperans adolescentia. 471  
intercessio, & intercedendi verbum ad pecuniam accommodatum, pro spondere. 690  
intus. 458  
iphigenia. 414  
iracundia sepe prodest. 140  
ira nulla Deis, vt Philosophi affirmant. 421  
ira tempore mitigatur, odium minimè. 239  
isocratis, & Aristotelis æmulatione. 44  
italicum bellum. 303  
iudices inferiorum. 147  
iunia familia, illo oriunda. 274

## INDEX.

- iuppiter iratus. 419  
 iurati dicuntur, qui in leges ante quam iudicarent, iurare consueuerunt. 354  
 iurisfulti domus, oraculum ciuitatis. 517  
 iuris singularis conditores, verius sunt seditionis, quam cives. 261  
 ius augurij. 458  
 ius ciuale vinculum ciuitatis. 668  
 ius feriale. 423  
 ius gentium.i.natura. 381  
 ius gentium patet latius, quam ius ciuale. 394  
 ius summum, iniuria summa, & alia eiusdem proverbia. 87  
 iustitia quid. 169  
 iustitia, mater principeque virtutum. 277  
 iustum, vtile, honestum, inter se coniuncta. 225  
 iuuenium ferocitas. 477
- L**  
 Aborandi verbi vis. 41  
 lacedæmonij iniusti, & alia. 246  
 lacedæmonij senectutem honорabant. 517  
 lacedæmonij tyrannicidis premissa decreuerunt. 337  
 laciadæ. 291  
 Iactantius Firmianus. 276  
 Ielius habitus est sapiens. 547  
 Laertes cultor agrosrum apud Homerum. 504  
 Lambinus. 227. 248. 253. 259. 270
- 496  
 lanij. 190  
 langij lapsus. 239  
 largiendum quibus. 277  
 largitio ex refamiliari fontem benignitas exhaustit. 276  
 largitio causa. 287  
 largitionem immoderata duo sequuntur virtus, inopia, & rapinae. 278  
 largitio pecuniae minuit rem domesticam. 277  
 laterum vis in pronunciacione. 470  
 latrocinium non fuit semper infame, sed periculosem potius. 259  
 laudium. 399  
 legati. 90  
 legati sacrosancti. 187  
 leontinus Gorgias vixit annos. 459  
 leuassio. 439  
 leuætræ. 112. & 113. 246  
 lex. 140  
 lex Cincia. 455  
 lex diuina est, quæ diuinitus insita mentibus hominum est. 339  
 lex humana est, quæ consenserunt generis humani comprebatur. ibid.  
 lex Lætoria. 387  
 lex naturæ. 394  
 lex puniit, iudicium damnat. 387  
 lex Voconia. 459  
 liberalis, & benignus officiū non fructum sequitur. 277  
 liberalitas. 568

## INDEX.

- liberalitas, iustitiæ pars. 74  
 liberalitas non potest nolenti acquiri. 276  
 liberalitatis intermissæ effetus. 88  
 liberalitas quid. 169  
 libertas maximè popularis. 117
- libra Critolai Pe ripateticæ. 346  
 lilius Gregor. Gyraldus. 106  
 linea, i.modus. 662  
 linguae præsentes metu continentur. 176  
 liuius Andronicus. 499  
 locis delectamur montuosis, & filii. 608  
 locuples tabellarius, id est, cui litteræ credi rectè possint. 417  
 locuples testis. 122. 329. 417  
 locus celebris. 64. desertus. ibid.  
 locus, pro dignitate. 623  
 L. Acilius. 551  
 L. Brutus, & eius consilij socij. 653  
 L. Cæcilius Metellus. 514  
 L. Crassus Mucianus. 499  
 L. Flaminius consul in Gallia à scorto exoratus. 484  
 L. Lucullus Mithridatem, Tigranemque devicit. 272  
 L. Mummius Corinthum spoliavit, spolijs Italiam ornauit. 304  
 L. Paullus. 526. 528  
 L. Quinctius Cincinnatus. 507  
 L. Quintius Flamininus. 439  
 luculli fratres, 283
- lurgi leges quamdiu vigere. 125  
 lysander. 307  
 lysander Lacedæmonius. 519  
 lysis Pythagoræ discipulus. 194
- M**
- Mæcellum. 190  
 Magisteria. 496  
 magistratus, lex loquens. 140  
 magistri non boni. 471  
 magistrorum virtutes imitanda. 169  
 magister conuiuij. 496  
 magna Gracia. 562  
 magna mater. 489  
 magnitudo animi, qua in re perspicitur. 120  
 maiorum consuetudo. 589  
 mala emptio semper exprimat stultitiam. 691  
 mala omnia ex homine. 226  
 mala existimare, & contemne re, non idem. 255  
 malleoli. 502  
 malum, aduerbum indignantis. 278  
 mamercurus, Æmilia gentis. 284  
 manare. 308  
 manica, familiæ Helviorum cognomen. 159  
 man. Curius de Samnitibus, de Sabinis, de Pyrrhotrium phauit. 506. 507  
 manilius, consul in Africa. 704  
 maratho, & eius historia. 119

Gg

I N D E X.

marcellus.	114	mercatura.	326
m.Curij viētus tenuitas.	653	metaphora.	128
m.Antoniū Muretus.	282,302	metellus,eiūsque cum Africano contentio, & æmulatione.	
m.Atilius Regulus.	526		
m.Brutus.	644	137	
m.Cethagus.	499	metellus Macedonicus,Scipio nis & Lælij collega.	614
m.Crasfus, Ciceronis imitator.	397	metrodorus.	129
m.Craffus,omnium Romano-rum,excepto Sulla, ditisimus.	688	metus neminem diu custodit.	239
m.Curius.	568	migrare, eiūsque vis.	86
m.Lutatius Pythia.	402	miſo Crotoniata.	470
m.Marcellus.	526	miſo patrimonium effudit.	278
m.Valerius Corinthus vitam ad centesimum usque annū perduxit.	512	mina, centum drachmis constat, sicutatis duodecim.	282
marius criminatus est Q.Metellum.	404	minerua inuita.	161
marius V.consul Cimbros deuicit,eiūsque consulatus, & triumphi, & alia.	91	minerua Phidiae.	646
massanissa, hospes Scipionis.	477	mirabilia,paradoxa.	591
massanissa nonaginta annos natuſ.	ibid.	missiones à bello tres.	90
massilia,& eius alia.	248	modestia.	169
matellio Corinthius.	693	modestia foris vtimur.	269
maturè fieri senem.	476	modicē pro modestē.	441
maximam partem, valet, ple- rique homines.	77	modiū libras ferē habet xxx.	285
maximē necessarium , forma antiqua loquendi.	618	mollire.	456
medicina.	569	molonem,& Posidonium Ciceri Rhodi audiuit.	329
meditari.i. meditando exerceri.	270	monumenta.	432
melioreſcere.	287	morbis.	391
memoriam perdere.	465	moriendum esse certē.	526
mens paucorum, vita omniū.	219	morti nihil tam simile, quam somnus.	532
		mortui viuunt.	571
		mulier.	66
		nulli barbatuli.	683
		multitudo inops.	260
		multa peccas pro,multis in rebus.	87
		munditiæ mulieres decēt.	174
		munifi-	

I N D E X.

munificus dando quis.	290	O	Bertus Gifanius.	682
mutationes omnes rerump.		obſcurus,qui suam volun-	obſcurus,	391
sanguinolentæ.	170	tatem non facile ostendit.		
N		384		
NÆuij ludus.	465	obſtringere sceleri.	337	
nafica.	127	obſtruere luminibus.	391	
natura bonum suadet.	47	octauij tribunus quid dixerit.		
natura,dux optima.	445	115		
naturæ lex.	396	octauius de metu primus legem tulit.	87	
naturæ vis.	61,& 62	octauius Panthagatus.	90	
naturales motus.	499	odisſe aperte, ingenuum.	607	
naturam non retinentes , dum perdere timent , perdunt.	277	œconomicus Ciceronis.	314	
natura mutari non potest.	579	œconomicus Xenophontis , à Cicerone iuuene versus è Graco.		
natura omnia nobis viuendi præcepta tradit.	403	œdipus Coloneus.	510	
natura rerum stat amicitia.	572	officere auspicijs.	391	
nauicularius , magister nauis.	411	officij definitiones, & diuītiones.		
necessitas,& vtilitas , largitionis cauſæ probantur.	287	officium , & honestum , non idem.	56	
necessitati parendum.	300	officiorum libri , quantum à Peripatetica doctrina dissi-deant.	333	
necinhumanus.	448	officium medium qui facit.	333	
nemo tā ſenex,quin annum vi uere poſſe putet.	466	officium nascitur ex honesto.		
neoprotlemus.	613	ibid.		
ne futor vltra crepidam.	187,	officium perfectum qui facit.		
333	56,57,333	opem ferre.	58	
nicoles.	308	opera.	72	
non modo,pro nedum.	658	opera animi ſunt maiora , quā corporis.	269	
non modo,pro nō modo non.	680	opera largitioni antepoſita.	391	
non putaram.	129	opes.	58,77	
noſtris,i.Latinis.	217	opes magnæ periculosa.	236	
numantia.	88,127	opificina.	190	
numerous omnes habere.	332	opiniones variz diuersorum		

I N D E X.

- philosophorum. 49  
 optimates. 46  
 opus, opera. 227  
 orator philosophia instructus  
     esse debet. 33  
 oratio honesta. 295  
 orationes quo in loco Romæ  
     habeantur. 41  
 oratio omnis ex re, & verbis  
     constat. 175  
 orationis genera duo, sermo,  
     & contentio. 270  
 oratoris descriptio. 271, & 272  
 oratoris proprium. 39  
 ordines in quincuncem dire-  
     cti. 511  
 ordo nobilior, quam genus.  
     310  
 orestes, & Pylades. 354. 572  
 ornare dicere. 39  
 ouidij locus ex Euripide ex-  
     pressus. 59  
 o uocalis vigesies à Cicerone  
     duabus lineis usurpata. 254
- P
- Pædagogi. 613  
 Pænitere quid. 35  
 palà, funda, vacuum illud in a-  
     nulo, quo gemma includi-  
     tur. 349  
 palatum vnde dictum, & vbi  
     sit. 180  
 panætij, Polybiique laudes.  
     324  
 panætius, præceptor Posido-  
     nij. 381  
 panætius, Rhodi natus, magi-  
     ster minoris Africani. 54.

I N D E X.

- iure à Cicerone reprehendi-  
 tur, quod officij definitio-  
 nem pretermisit. ibid.  
 paradoxa. 644  
 parcimonia. 691  
 pares cum paribus. 447  
 partim. 195  
 partim, pro alia. 299  
 pascere. 230  
 pascua veteres pluris aestima-  
     bant, quam vineas, & arua.  
     315  
 patriæ, plus, quam parentibus,  
     debemus. 195  
 patria omnibus rebus præfe-  
     renda. 106  
 patrimonia effunduntur faci-  
     lius, quam homini benevolen-  
     tia comparatur. 281  
 pauporis effectus. 175  
 paullus Æmilius Macedones  
     vicit. 300  
 paullus Æmilius quattuor filijs  
     orbatus. 568  
 pax in terris inanis. 89  
 peccata digitis dimetiri. 664  
 peculatus, est furtum pecuniæ  
     publicæ. 272  
 pelias recocitus. 534  
 pellis vulpina quo modo assu-  
     menda. 94  
 pennius Iuliæ, familiae cogno-  
     men. 377  
 peragrare. 325  
 perduxissent, pro perdusti es-  
     sent. 582  
 peregrini honore afficiendi.  
     187  
 perfecta sapientia in amicitia.  
     584
- perfidiosum, & nefarium, fran-  
     gere fidem. 353  
 pericles. 157  
 pericles, Anaxagoræ auditor.  
     186  
 perimere. 345  
 perinde vt. 432  
 peripatetici, & Stoici præfe-  
     runt honestatem utilitati.  
     345. 346  
 peripateticorum doctrinæ.  
     232  
 peripateticorum rigidus philo-  
     sophandi modus. 643  
 perotti error. 62  
 pertinacia. 260  
 pertinere, est perfectè contine-  
     re. 261  
 perueritas. 444  
 pestibilis fundus, qui letiferæ  
     herbam habet. 381  
 petrarcha suam Bibliothecam  
     Recip. Venetæ dono dedit.  
     363  
 petrus Alcyonius Ciceronis  
     libros de Gloria furto auer-  
     tit. 252  
 petrus Nannius. 105  
 phaëton. 414  
 phalaridis nex. 245. 246  
 phalereus D. dulcis, primus in-  
     flexit orationem, & eam te-  
     neram, mollémque reddi-  
     dit. 42  
 phidiae Minerua. 646  
 philii oratio accurata. 576  
 philosophia ante Ciceronis e-  
     tatem latebat. 214. 217  
 philosophia effectus. 216  
 philosophia medetur conser-  
     vare. 283. 287
- natis animis. 432  
 philosophy, vita lex. 47  
 philippi Alexandrum admo-  
     nentis verba. 278  
 philippi regis Macedonum in  
     filium præclarum dictum.  
     237  
 philippus versutus. 226  
 φύσις. 151  
 pietas. 228  
 pietas in parentes. 269  
 pingui Minerua. 568  
 pirithous, & Theseus. 354  
 piscatores. 190  
 pisistratus. 523  
 platæz. 111  
 plato Diuinus, escam malorū  
     appellat voluptatem. 488  
 plato fabulis vsus est. 350  
 platonis in compositione di-  
     ligentia & vis. 43. eidem  
     dormienti apes in labellis  
     confederunt, & id quid si-  
     gnificaret. ibid. aliq; de eo.  
     ibid.  
 platonis resp. notatur. 153  
 platonis senectus lenis. 439  
 plautus. 153  
 plutarchi error. 426  
 plutarchus Ciceronem imita-  
     tur. 110  
 poena dupli, & reticentia. 391  
 poeni. 92  
 pollucere populum, i. viritim  
     aliquid largiri. 284  
 polybij laus. 261  
 polybij, Panætiique laudes.  
     324  
 pompeius theatrum ædifica-  
     uit. 283. 287

## I N D E X.

- pompelius, vt augeret poten-  
tiam suam, Cæsar's filiam  
duxit vxorem. 405
- polidorium, & Molonem a-  
pud Rhodum Cicero audi-  
uit. 329
- postulata Geometrarum. 345
- potentia. 58
- præbitor. 278
- præcidere. 508
- præcipere. 30
- prædones. 259
- prædones semper infesti hu-  
mano generi, idco ius hu-  
manum eos iuuare non de-  
bet. 422
- pré manu. 287
- præparatio in negotijs adhi-  
benda. 121
- præ se ferre speciem boni viri.  
259
- grandij populo ab Oreste dati  
causa. 284
- prata parata. 692
- pratis nominis inditi à Roma-  
nis ratio. 315
- pratorum estimatio. 691, &  
692
- princ, Ioniae vrb, 651
- prochue est dictu. 295
- prodigi populi gratiam, hono-  
rum sp, aucubabantur. 281
- præcium Caudinum. 483
- propagatio vitium. 504
- prope intuens. 449
- proprius abesse. 527
- propylea. 287
- proscriptio ciuium R. 248
- pro se quisque. 385
- prudentia. 233
- prudentia definitio. 253
- prudentia quid. 192
- prudentis est, sustinere, vt cur-  
sum, sic impetum beneuo-  
lentia, &c. 605
- prudentiam vult imitari mali-  
tia. 397
- p.Africani filius. 478
- p.Mucius, iurisconsultus, & o-  
ptimus vir. 270
- p.Natice. 589
- p.Rutilius. 628
- p.Rutilius à Scæuola edoctus.  
329
- p.Scipio Nasica Corculum.  
499
- p.Scipio tr.Mil.in Africa. 703
- p.Sulpicius. 549
- puerorum infirmitas. 477
- pulchr:tudo. 146, & 147
- puncti, i. disputationes meta-  
phoricae. 644
- pylades, & Orestes. 354, 572
- pylades Orestem se esse dice-  
bat. 572
- pyrrho ab Aristone dissentit.  
50
- pyrrhoni quid senserint. 220
- pyr:rus. 578
- pythagoras. 466
- pythagoras, & eius auctoritas.  
157
- pythagoras fabri filius. 529
- pythagorei, incolæ Italiae. ibi.
- pythagorei non dubitarunt,  
quoniam homines animum ha-  
berent ex vniuersa morte  
delibatum. 354
- pythagoreorum mos. 481
- Pythias, & Damon. 354

Quæ-

## I N D E X.

- redamare. 592
- referre gratiam. 598
- reficere, pro restituere. 689
- reges, qui Romanorum openi  
implorarunt in sua egestate.  
246
- regnare simul qui nequierūt.  
78
- rei militari primæ, secundæ  
eloquentiæ, tertiæ iurispru-  
dentia tribuuntur. 294
- religatio. 503
- rem habere, facere rem, augen-  
re, ad rem attentiorē esse,  
300
- res familiaris, fons est, cuius ri-  
uuli sunt largitiones. 276
- res incerta, pro periculum. 606
- res meliores, incrementa dju-  
tiarum, veldignitatis sunt.  
287
- resp. post Cæsar's mortem  
quasi restituta videbatur.  
214, & 215
- res rustica proximè ceteris vi-  
uendi rationibus prefer-  
tur à Columella. 502
- res secundæ difficultius, quam  
aduersæ feruntur. 140
- res urbane an bellicis antepo-  
nenda. 124
- resp. Romana se senatui po-  
puloque commiserat. 214
- eius potestas ad vnum transla-  
ta. ibid.
- reticentiæ poena. 391
- reuocare. 59
- reuocare ad calculos. 600
- rebus pro causis. 667
- ritus faciēdi veteris testamen-  
tū. 533
- Q** Væsita sunt conseruanda.  
114, 68, 314
- quaestiones infinitæ. 646
- quandoque, pro interdum, &  
pro quandocumque. 707
- quasi, pro ferē. 692
- quinquæ. 511
- quinquennium postea vixit,  
dura constructio. 459
- q.Fabij maximi mores. 455
- q.Fabij præstantia. ibid.
- q.Fabius Max. Hannibalem  
exultantem patientia mol-  
lit. ibid.
- q.Fabius Max. Tarentum rece-  
pit. 456
- q.Maximus. 132, 608, 691
- q.Mucius. 613
- q.Mucius Scæuola augur. 547
- quirinus. 353
- quod contra, modus loquendi.  
536
- R** Atio, & oratio, hominis  
arma, ferro accutiora.  
63
- ratio temporis interdum ma-  
ior, quam necessitudinis, ha-  
benda est. 109
- rationes quinque officiū per-  
sequendi. 224
- rationis inimica voluptas. 484
- reaspe, pro re ipsa. 592
- rebus pro causis. 667
- ritus faciēdi veteris testamen-  
tū. 533

Gg 4

## I N D E X.

- romuli fratricidium. 353  
 romulus. 353. 652  
 romulus legem tulit, ne quis  
     mœnia transiret. 353  
 torantia pocula. 496  
 rupilius, & Rutilius, Lælij ami-  
     ci. 608  
 rustici antiqui in militiam  
     proficiscebantur. 527  
 rustici Romani. 466

S

- Sabinii. 88  
 Sacra publica, & priuata cu-  
     iusque familie. 105  
 sæculum. 302  
 sagum, hoc est bellicum tem-  
     pus, spernit oratore bonum,  
     amat horridum militem. 293  
 salamis. 111  
 salinator. 447, & 456  
 fallutius Xenophontem imi-  
     tatus. 239  
 sanctitas. 228  
 sanè. 240  
 sapiens qui ex Stoicorum sen-  
     tentia. 57  
 sapientes omnes boni sunt. 387  
 sapientiae, & philosophiae di-  
     scrimen. 217  
 sapientiae diffinitiones. 218  
 sardi. 511  
 satrius. 397  
 scalmus. 385  
 scauri grauitas summa, & con-  
     stantia, & alia eiusdem orna-  
     menta. 126  
 scaurus princeps fuit senatus.  
     383  
     384
- sceleris est aliquis mōdus. 419  
 scientiae definitio. 183  
 scipio. 441  
 scipio Aemilianus, eiūsque  
     laus. 165  
 scipio ab vxore Sempronia,  
     Gracchorū sorore, veneno  
     necatus. 704, & 705  
 scipio à Masinissa accersitus.  
     704  
 scipio ante tempus consul fa-  
     etus. 560. ciudem facilissimi  
     mores, ibidem, pietas in ma-  
     trem, liberalitas in forores,  
     benignitas in suos, iustitia  
     in omnes. ibid.  
 scipio ciuitati carus. ibid.  
 scipionem suspicari veneno  
     sublatum. 561  
 scipio, & Lælius. 354  
 scipio legatus ad Ptolemaeū  
     Physiconem. 703  
 scipio mortuus in cubiculo in-  
     uentus. 704  
 scipiones. 458  
 scipiones duo. 653  
 scipiones Cn. & P. 113  
 scipionis dictum. 131  
 scipionis exercitationes. 324  
 scipionum interitus. 471  
 scipio numquam petiit consu-  
     latum. 560  
 sectæ philosophorum tres. 220  
 secta Peripatetica vetustior  
     Stoica, & ab Aristotle nobilitata.  
     ibid.  
 securitas ex mansuetudine tu-  
     tor. 238  
 sedere ad medium Ianum, id  
     est

## I N D E X.

- est fenerari. 316  
 senectus caret vinolentia, cru-  
     ditate, & insomnijs. 487  
 senectus Catonis non grauis.  
     443  
 senectus natura loquacior. 506  
 senectus obrepit. 444  
 senectuti aflaregebatur anti-  
     quitus. 517  
 senectutis nullus certus termi-  
     nus. 523  
 senectutis vita. 518  
 senes coli. 467  
 senes diliguntur. ibid.  
 sententia septem sapientum.  
     333, & 334  
 sententiosè, sine verborum  
     modo, & ordine dicere, in-  
     fantia est. 271, & 272  
 septem sapientes Gracia. 333  
 sermo, societatis instrumentum.  
     105  
 serui dimidiā habent ani-  
     mam, secundūm Homerum.  
     678  
 seruitio corporis, animi impe-  
     rio vtimur. 269  
 seruitus duplex. 681  
 seruulus vilis, qui non magni-  
     vendi possit. 411  
 sextarius vñcias habet xx. sex-  
     ta congregpars. 282  
 sex. Aelius. 470  
 filuesco. 503  
 similitudo conciliat amici-  
     tiam. 593  
 simonides. 465  
 simulacrum Fidei almae, e-  
     rat in templo Capitolino.  
     421
- simulandi verbi vis. 157  
 socrates. ibid.  
 socrates Academicorum pri-  
     mus Sophistas exagitabat.  
     641  
 socrates eodem vultu semper  
     fuit. 141  
 socrates fidibus didicit. 468  
 socrates exlectari solitus cum,  
     qui primus utilitatem ab  
     honestate sciunxisset. 330  
 socrates sapientiss. 529  
 socrates vir integrerrimus. 187  
 socrates vñus sapientissimus  
     Apollinis oraculo iudica-  
     tus. 552  
 sodalitates. 489  
 solon, & eius factum. 158  
 solonis eulogium. 525  
 solonis gloratio. 467  
 soluere, est, solutis anchoris na-  
     vigationi se committere.  
     381  
 sonare. 406  
 sophistæ à Socrate exagitati.  
     641  
 sophoclis Apologia. 465  
 fors, idem propemodum, quod  
     micare, quod talos iacere,  
     quod tesseras. 402  
 speciem boni viri præ se ferre.  
     259  
 specimen innocentia. 270  
 spectatus igni. 257  
 spes. 521  
 spinther, cognomen Lenculi.  
     283  
 sp. Cassius. 577  
 sp. Melius. ibid.  
 sp. Mummius. 628

## I N D E X.

- stare remp. 668 talus. 509  
 stercorare agrum. 504 tarquinius Superbus. 577  
 steschorus. 466 Tauricæ. 482  
 stoici eloquentiæ operam nō temeritas florentis ætatis, pru-  
     dederunt. 644 dentia senectutis propria.  
 stoici omnia bona sita in ho- 465  
     nesto esse dicebant, 346, &c.  
 stoici, & Peripatetici, qua in re tempora bona quæ sunt. 283  
     conueniebant. 37 temporum disciplina. 507  
 stoici omnem sensibus fidem temperantia quid. 169  
     derogant. 642 temperantia. 23  
 stoicoru opiniones. 641, &c. tempestiu conuiua. 494  
 stoicorum philosophia repre- tempus omnia reuelat, ada-  
     henfione penitus non vacat. gium. 350  
     642 tentare aquas. 666  
 stoicorum veterum sapientia. terentij sententia, audiui accla-  
     641 matum esse à populo R. 85  
 stultitiae effectus duo. 242, 243 terentius, Lælij familiaris. 623  
 studium quid. 217 terentius Plautum imitatur.  
     190, & 191 testamentum Iouita Rapicij  
 studiū quale vituperatur. 666 Brixienfis. 369  
 suadæ medulla. 499 testamentum Iacobi Picolo-  
 sub pectore. 439 ne Cardinalis Papiensis.  
 succidia. 508 364  
 succurrere perituro qui po- testamentum Io. Beccacij. 372  
     test, si non succurrerit, occi- testamentum L. Cuspidi. 355  
     dit. 277 testamentum Petrarchæ. 358  
 sullæ crudelitas, & libido. 247. thebe, Iasonis Pheræ filia, &  
     249 alia. 244  
 sumere sibi. 422 themistoclis memoria, & e-  
 superat, pro superest. 691 iudem reponsum Simoni-  
 supplici genera quatuor. 338 nidi. 465  
 suscipere as alienum amici causa, est, pro amico debi- themistoclis responsum, Seri-  
     tum soluere. 281 phio datum. 451, & 452  
 suscipere, pro conari. 630 themistoclis res gestæ. 590  
 sustinere cursum. 605, & 606 theophrasti in dicendo suaui-  
     tas. 42. vnde dictus. ibid.  
 T Ætrum opponitur cla- thermæ, Herculi sacræ. 112  
     ro. 347 thermopylae. ibid.  
     theclus, & pirithous. 334 thef.

## I N D E X.

- thef filius Cyneæ. 485 vbique pro vbi cumque.  
 Setig, siue, siue. 646 708  
 threicæ nota. 245 venationes. 281  
 thucididis de Egæstæ Siciliæ venditio mancipiorum qualis.  
     populis commentum. 384 396  
 timo. 622 venustas. 156. vnde dicta.  
 timefactus, & alia. 240 174  
 timotheus & eius felicitas. 165 veriniens. 503  
     174  
 titillare, commouere est. 290 vera hereditas, quæ. 398  
 tithonus. 441 verbis cõceptis iurare, siue pe-  
 Ti. Coruncanius. 470, 568 ierare. 422  
 Ti. Gracchus. 583 verecundia. 146  
 toga virili. 548 vereri. 169  
 tollere hominem ex homine. 339 versuti, qui. 226  
     vertens vere annus. 707  
 veseris. 426  
 vetustatis, & consuetudinis vis  
     maxima. 608  
 vicini. 466  
 vicinorum conuiuum. 497  
 vicit Olympia. 459  
 victoriæ incruentæ quaren-  
     dæ. 128  
 viuendi participium. 65  
 videri. 33  
 virtus. 445  
 vilis seruulus. 411  
 villa locuples. 508  
 vindicare. 49  
 vindiciæ, quid, & vnde. ibid.  
 vinum fugiens, quod ætatem  
     non fert. 411  
 vir, à virtute. 403  
 vir bonus, aliis natus. 181  
 vir fortis temperans est. 117  
 viri boni actio quantum Reip. 213  
     profit.  
 vas, id est, sponsor datus in re  
     capitali. 375 viri boni ad magistratum co-  
     gendi. 120
- V
- V Alerius Poplicola legem  
     tulit de occidendo, in-  
     dicta causa, tyranno. 337  
 vanitate in orationi adhibere,  
     est, falso dicere. 384  
 varietas opinionum de suppli-  
     cio Reguli. 526  
 vas, id est, sponsor datus in re  
     capitali. 375

I N D E X.

viri boni speciem pre se ferre.	259	viscerationes.	281
viri iusti fortitudine non e- gent.	114	vita.	61
viri magnanimi est, bonam, & malam fortunam ferre.	128	vita nihil habet commodi.	335
viri sapientis dictum.	129	vita nulla est sine amicitia.	250
viri simplices, veritatis amici.	114	vita periculosa nauigatio.	136
vir nullus vitij expers.	139	vitire, an vestire, sit idem.	315
vir, qui ab ira recedit, facile à iustitia recedit.	ibid.	vitium.	391
virorum bonorum conuer- sationis vis.	31	viuere ingenio.	269
virorum potentiorum, & te- niorum eadem voluntas esse debet.	170	viuere recte quando quis di- citur.	115
viris equisque.	429	viui radices.	503
virtus.	237	vltimus.	106
virtus amanda, non gloria.	120	vlixes versutus.	236
virtus in omnium animos lu- men suum permittit.	592	vnguentarij puls.	191
virtus non est mercenaria.	277	voci viuæ vis maior inest, quam priuatis studijs.	29
virtus non minor est in rebus paradisi, quam tuendis.	68	vocum inuerstiones quâdo ma- ximè fiunt.	225
virtus, id est prudentia.	213	voluntas.	683
virtus pro philosophia.	233	vox canora.	470, & 471
virtus sibi prætium.	115	vrbs, ciuitati præsidium est.	305
virtute, atque industria necef- saria vitæ comparantur.	298	vrbes duæ, Carthago, & Nu- mantia euersæ.	560
virtute nihil amabilius.	577	vsum habere.	551
virtutis, & fortunæ compara- tio.	657	vsurpare.	260
virtutis monumenta perma- nent.	522	vsurpare, pro obire.	558
virtutis significatio propria.	656	vter, pro vteruis non dicitur.	411
vis omnis in animo, & corpo- re sita est.	269	vtilitas aliquando cum hone- state pugnat.	330
		vtilitas esse non potest, vbitur pitudo.	346
		vtilitas propria, vi, aut iniuria quærenda non est.	342
		vtilitas omnis ab homine.	228
		vtilitas publica, vel si cum al- terius damno coniugatur, non est reprehendenda.	344
		vtro, pro vtrovis.	663
		vulnus	

I N D E X.

vulnus immedicabile ampu- tandum.	131-343	lationis studio dehortari so- lebat.	263
vxores esse dotatas, expedire reipub. olim creditum est.	510	xenophontis libri perutes.	
281		xenophontis Symposium.	
vxorius, cui mulier imperat.	496		
	681		

Z

Zeo.	466
Zeno Citiæus Stoicæ di- sciplinæ princeps.	346
X Anthippus Lacedæmo- nius.	417
xenocrates.	466
xenocrates, princeps Stoico- rum.	641
xenophon discipulos à simu- plinam instituit.	ibid.

F I N I S.

